श्रीनाथजी.

श्रीनृत्यगोपालो जयतितराम् ।

श्रीकृष्णगढाधीश श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजा
जी श्री श्री श्री १०८ श्री श्री सावन्तसिंहजी
द्वितियहरिसंबंधनाम नागरीदासजीकृत–

# नागरसमुच्चय:

जिस्को

श्रीमन्महाराजाधिराज श्री श्री श्री १०८ श्री श्री शार्दू
लसिंहजी महाराज जी. सी. आई. ई.
कृष्णगढाधिपतिके आज्ञानुसार

मुंबईमें.

पं० श्रीधर शिवलालजीनें अपने स्वकीय

## ज्ञानसागर

पं० श्रीधर[illegible]के प्रसिद्ध लील ग

श्रीनाथजी

# अर्पणपत्रिका.

श्रीमान् क्षत्रियकुल तिलक, राठोर वंशावतंस, वीर पुंगव महाराजाधिराज, गोब्राह्मण प्रतिपालक श्री श्री श्री १०८ श्री श्री शार्दूल सिंहजी महाराज जी. सी. आई. ई. धीर वीर चिर प्रतापी सदा समरविजयी कृष्णगढाधीश तथा श्रीमानके लघु भ्राता श्रीमान दीक्षितादि पदवी प्राप्त श्रीयुत महाराजाधिराज श्री श्री श्री १०८ श्री श्री जवानसिंहजी महोदयकी सेवामें श्रीयुतकी गुणग्राहकता, परोपकार, स्वधर्म परायणता, प्रजापालनता, प्रभृति अनेक सद्गुणोंके तथा श्री महाराज के यहां विद्या ओर लक्ष्मी सदैव निवास करतीहै जिन्होंके पूर्वज श्रीयुत् महाराजाधिराज नागरीदासजी कृत नागर समुच्चयको श्रीमहाराज के आज्ञानुसार छापके नम्रता पूर्वक अर्पण करता

महाराजकी प्रज ... राज्यभक्त,

पं० श्रीधर ...सनलाल ग...

उनके रित्रका स्तक एक म्य रत्नों जैसे तुच्छ म था परंतु

श्रीनाथजी.

# भूमिका.

उस सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर करुणा वरुणालय श्रीकृष्ण चंद्र आनन्द कन्द विविधगुण विशिष्टको कोटिशः धन्यवादहै जिसके कृपासागरके एक बिंदुमात्रपर प्राणीमात्रका कल्याण निर्भरहै. उसी कृपा समूहके आधारपर अवलंबन कर सृष्टिके आरंभसे लेकर आज तकमें अनेक भगवद्भक्त इस असार संसारमें जन्म ग्रहणकर अपने सुललित उपदेशों और अपने सद्गुणोंसे प्राणीमात्रका उपकार करगये हैं. यों तो कृष्ण गढका राज्य वंश आरंभसे लेकर आज तक प्रजा पालनादि सद्गुणोंमें और न्याय परायणता तथाच दया धर्म में विख्यात हो गया और होते जाता हैं पर जिसकी समता इस समयभी अन्य राज्य वंशोंमेंसे कोई भगवद्भक्ति नहीं कर सकता परंतु अहाहा! इस ग्रंथके रचयिता श्रीमान् महाराजा धिराज सावन्तसिंहजी द्वितिय हरिसंबंध नाम नागरीदासजी महाराज महोदयकी अपूर्व भक्तिका तो कहना ही क्याहै!! जिन्होने केवल ईश्वर भक्तिके लिये राज्यको छोड संसारसे विरक्त हो श्रीवृंदावन धाममें वास कर अपनेको इस घोर कलिकालमें एक उदाहरण बनादिया. ऐसे महात्माका जीवन चरित्र और उनकी कतिपय कविताओंका संग्रह प्रिय हिन्दी रसिकोंके [illegible]त रखना कितना आवश्यक है इस बातका विचार प्रिय पाठकों ही करना चाहिये. उन भगवद्भक्ति परायण महानु भावके जीवन चरित्रसे शिक्षा प्राप्त करने और उनके सदुपदेशोंसे अपने चारित्रका संशोधन करनेके लिये यह पुस्तक एक उत्तम मार्गहै. ऐसे अलभ्य रत्नों का संग्रह करनाभी मेर जैसे तुच्छ मनुष्यके लिये महाकठिन था परंतु

धन्यहै श्रीमान् महाराजा धिराज श्री श्री श्री १०८श्री श्रीशार्दूल सिंहजी महाराज जी. सी. आइ. ई. धीर वीर चिर प्रतापी कृष्ण गढाधीश एवं उनके लघु भ्राता श्रीयुत श्रीश्रीश्री १०८श्रीश्री दीक्षितजी महाराज श्री जवान सिंहजीको सो जिनकी कृपासे मुझको यह बहु मुल्यरत्न आज पाठकोंके दृष्टि गोचर करनेके लिये प्राप्त हुवाहै. इस बातसे उक्त श्रीमानोंनें हिन्दी रसिकोंके लाभ एवं मनोरंजनके लिये मुझको इस पुस्तकके छापनेकी आज्ञा देनेके सिवाय धनसंबंधी सहायता देकर प्रथम आवृत्तिके लिये इसका मूल्य केवल, दो ( २ ) रुपैये अंदाजन रखनेकी आज्ञा दी है. क्योंकि भाग्यवान तो चाहेसो द्रव्य खचके ले सक्ता है परंतु साधु माहात्मा या साधारण को कष्ट न होनेके लिये.

यदि हिन्दीके रसिक जन इसको आश्रय देकर कुछभी लाभ उठावैंगे तो मैं अपनेको कृतार्थ समझूंगा.

| मुंबई<br>श्री ज्ञानसागर यंत्रालय<br>चैत्रशुक्ल १ ॥ संवत् १९५५ | कृष्णगढकी प्रजांमे से<br>राज्यभक्त<br>और हिन्दीका हितैषी प्रकाशक |
|---|---|

पंडित श्रीधरात्मज

**किसनलाल गौड**

सलेमाबाद निवासी.

श्रीनाथजी ॥

# सूचना

-इस पुस्तकमें खकार दोनों तरहके छपे हैं सो पाठक-
ापर ध्यान देके समझ लेवें ।

तहा, जहा, जिहि, इहि इत्यादि शब्दोंपर अनुस्वार
ई सो भी पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें ।

कोऊ, इत्यादि शब्दोंमें गुरुका लघु पढा जाता है
। पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें ।

भाषा–यह पद जहां है वहां वचनिका चाहिये सो भी पाठ-
कगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें ।

ध, ध–ये अक्षर भी वहुतसे समान हैं सो भी पाठकगण अ-
र्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें ।

श, ष, स–इनको भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें ।

व, ब,–इनको भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें ।

सो वानैं, सो; वानैं–ऐसे कई स्थानपर पद मिल रहे हैं सो
भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें ।

को, कौ, टो, टौ–इत्यादि शब्दोंको अर्थांशसे पाठकगण स-
मझ लेवें ।

ऱ्हैं–इसको (ह्रैं) समझना चाहिये

१४० के पृष्ठसे बहुतसे अक्षरोंके व्यंजनका चिन्ह नीचे लगाया है। उसका तात्पर्य यह है कि, ग्रंथ कर्त्ताने उनका पूरा उच्चारण नहीं किया हैं। कदाचित् इनका पूरा एक मात्रिक उच्चारण किया जाय तो छंद् भंग होता है। और जिनके नीचे व्यंजनका चिन्ह किया है उनका उच्चारण पूर्वअक्षरके साथ होता है। सो पाठक गणको उच्चारण करनेमें विदित होगा।

ग्रंथ संशोधक–

**कवीश्वर जयलाल.**

श्रीनाथजी ।

# नागरसमुच्चयके ग्रंथोंका सूचीपत्र.

## वैराग्यसागरे ।

## शृंगारसागरे।

# उत्सवमालाके उत्सवोंका सूचीपत्र।

# उतसवमालामें रागहैं जिनके नाम ।

ये राग कई वार आगये हैं । परन्तु पाठक गणोंके जाननेके लिये एक वार लिखे हैं कि इस ग्रंथमें इतने राग हैं ॥

# पद मुक्तावलीमें रागहैं जिनके नाम.

ये राग कईबार आगये हैं। परंतु पाठकगणोंके जाननेके लिये एक एकबार लिखे हैं कि इस ग्रंथमें इतने रागहैं।

# उत्सवमालाके पदोंका सूचीपत्र।

# पदमुक्तावलीके पदोंका सूचीपत्र

| संख्या | पृष्ठ | पं | |
|---|---|---|---|
| १५ | ४९४ | | |
| १६ | ५२१ | | पंक्ति दो चौ. |
| १७ | ८-८ ४६ | १ दो | हूंहरिहेरनमांझठगी |
| १८ | ५२१ | ४ | हूंतोवारीहौंवारीगईदेषिहिंडोरैं |
| ५९ | ४७२ | २० | हेमातीनंदकीअंषियांसो |
| ८६० | ४७२ | १७ | हेलीम्हारोमोहनमीतमिलाय |
| ९१ | ४७१ | १२ | हेलीमुरलीधुनिसंकेत |
| ९०० | ४९६ | ४ | हेआजरंगहैंनिहुरनापै |
| १ | ४७३ | ८ | हेलीमोहनमुरलीधुनिसुनि |
| २ | ४१८ | ५ | ह्नैगईभेटअचांनकवनमें |
| ३ | ४०७ | १८ | दोहा—ह्नैठाढोछबिसौंरहै |
| ४ | ३१७ | ८ | होकांन्हजीरातराउणींदा |
| ५ | ४१२ | ९ | होसांवरेग्वारमेरीसौंइतआ |
| ६ | ४४१ | १ | होमेरोमनमोहल्यो |
| ७ | ४०६ / ५२९ | २ / ५ | दोहा—होतरागसारंगधुनि ४९०।१० |
| ८ | ४४२ | १५ | होरंगीलीबाजीलगिरहीछैनैणांमें |
| ९ | ४४७ | १४ | होसांवलियोम्हांनैंसैंनाहींसमझावें |
| ९१० | ४५६ | १ | होप्यारीजूमोहिदीजैयह |
| ११ | ४५६ | १२ | होस्यामाप्यारीवोमैंडीजिं |
| १२ | ४६५ | १ | होकहारंगभीनीरीतहैसांवनकी |
| १३ | ५२७ | ५ | होलालझूठीझूठीवातानिचितचोरचो |

# श्रीनाथजी ।

# महाराज श्रीनागरीदा-
# सजीका जीवनचरित्र ।

॥ श्रीनाथजी ॥

॥ श्रीनृत्यगोपालोजयति ॥ श्रीयज्ञनारायणोजयति ॥

॥ सर्बसके शिर धूरदे ॥ सर्बस की व्रज धूर ॥



तसवीर कृष्णगढाधीश माहाराजाधिराज माहाराज श्री

न्तसिंहजी तद्द्वितीयहरिसम्वंधि नाम माहाराज श्रीनागरीदासर्ज

श्रीः।

( बाबू राधाकृष्णदास लिखित )

# श्रीनागरीदासजीका जीवन चरित्र*.

पिय प्यारी अनुराग मधु, मत्त मधुप सुखरास।
गुप्त प्रेम अनुभव छके, जयति नागरीदास॥

आज हम उस महानुभाव भगवदंश महात्माके चरित्र लिखनेमें प्रवृत्त हुए हैं जिसके गुप्त प्रेमानुभव भाव को स्मरण करतेही सहृदय रसिक मात्र को

* मेरी इच्छा बहुत दिनों से श्रीनागरीदासजीका जीवनचरित्र लिखनेकी थी परन्तु ठीक २ पता न लगनेसे न लिखसका, मित्रवर बाबू अमीरसिंहजी द्वारा कई ग्रन्थोंके मिलने से वह इच्छा पूरी हुई और एक जीवनी लिखीथी जो कि "नागरीप्रचारिणी सभा"के उत्साही सभ्योंकी इच्छानुसार ता०२४ मार्च सन १८९४ ई० को सभामें पढ़ीगई थी। सभाके अनुरोधसे "खड्गविलास यंत्रालय" के स्वामी महाराजकुमार बाबू रामदीनसिंहजी ने अपने यंत्रालयमें उसको छाप कर प्रकाशित किया था। परन्तु उससे मुझे संतोष न हुआ [illegible] अपने मित्र कुंअर जोधसिंह जी मेहता की कृपा से कृष्णगढ़ के दीवान राव-[illegible]दुर श्यामसुन्दरलालजी द्वारा कृष्णगढ के कवीश्वर जयलालजी से नाग-[illegible]सजी के वृत्तांत मँगाए, उसके देखने पर मेरे हृदय में कई सन्देह हुए और [illegible] लिखकर उन सभों के उत्तर मँगाए और तब जीवनी लिखनी आरम्भ [illegible]इसी बीच में पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजीने इनकी जीवनी पर [illegible]लेख एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में छपवाया, जिसे देख कर और भी [illegible]ढ़ा और यह जीवनी लिख आप लोगों के सन्मुख उपस्थित करता हूं [illegible]क्त महाशयों को धन्यवाद देता हूं।

इसके पहिले संस्करणमें भ्रम से महाराज सावंतसिंह के स्थानपर महाराज [illegible]सिंह छप गया था।

॥ श्रीनृत्यगोपाल ॥ सर्वस्व ! ...जिसे भाषा का जयदेव कहने पर भी हृदय को संतोष ... हमारे प्यारे नागरीदासजी के प्रेम रंग रँगे चित्र का ...न करेंगे वे अनुरागरसमत्त झुके और डबडबाए नेत्रों में अलौ-... झलक से अवश्य मोहित से होजांयगे और जैसा महानुभाव ... के दर्शन मात्र से अपने चित्त का विलक्षण परिवर्तन होता है उसका ...वे प्राप्तकरसकेंगे। हम यहां उनके हृदय के चित्रस्वरूप इस पद को अपने ...प्रय पाठकों को सुनाये विना आगे नहीं बढ़सक्ते—

"गावनि रोवनि मौनहिमें व्है मौनहि मांझ सराहनि। रोके ऊर्द्ध उसास मौन में यह दुख कठिन निबाहनि॥ बरे विजाती निकट काठ से लगे रहे हियदाहनि। नागर सुखसागर किन मेटौ यह अब दुख अवगाहनि॥ १॥"

नागरीदास इस नाम के चार महात्मा हुए हैं। सबसे प्रथम श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु के शिष्य आगरा में रहते थे जिनकी कथा "चौरासी वैष्णवों की वार्त्ता" में है और जिनके विषय में गोस्वामि श्रीहितहरिवंशजी के शिष्य श्री-ध्रुवदासजी ने अपने ग्रन्थ "भक्तनामावली" में लिखा है।

"नेही नागरिदास अति, जानत नेह की रीति
दिन दुलराई लाड़िली, लाल रंगीली प्रीति॥ २॥"

ध्रुवदास जी ने सम्वत १६८६ में "श्री वृन्दावन सतक" और सम्वत १७०२ में "रहसि मंजरी" बनाई थी परंतु "भक्त नामावली" में सम्वत नहीं लिखा।

इन्हीं बड़े नागरीदास जी के विषय में भारतेन्दु श्रीहरिश्चन्द्र ने अपने "उत्त-रार्द्ध भक्तमाल" में लिखा है।

"हिय गुप्त वियोगहि अनुभवत बड़े नागरीदास हे।
वारवधू ढिग वसत सबै कछु पीयो खायो॥
पै छनहूं हिय सों नहिं सो अनुभव बिसरायो।

---

१ "इन नागरीदासजी का नाम चौरासी वैष्णवोंकी वार्त्ता में तथा दोसो... न वैष्णवों की वार्त्ता में नहीं मिला। परन्तु ग्रंथकर्ता बाबूराधाकृष्ण दासज... लिखने से लिखा।

सुनतहिं विट्ठल नाम भक्त मुख श्रवन मझारी ॥
प्रान तज्यो कहि अहो अजौं सुधि तिन्हें हमारी ।
दरसनहीं दे हरि भक्त अपराध कुट जन दुख दहे ॥"

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य का जन्म सम्वत १५३५ में हुआ था अतएव उसी के लगभग इनका भी काल है ।

दूसरे नागरीदास जी श्रीस्वामी हरिदासजी के शिष्य परंपरामें हुए हैं। मिस्टर ग्रोस साहब अपने "मथुरा" नामक ग्रन्थ में यह परंपरा यों लिखते हैं- श्री स्वामी हरिदास के शिष्य विट्ठलविपुलजी (जो कि उक्त स्वामी के चाचा थे) उनके बिहारिनिदास और उनके नागरीदासजी । सम्वत १५३७ में श्रीस्वामीजी लीला में प्राप्त हुए और उनकी गद्दी पर विट्ठल विपुलजी विराजे । यदि २० बर्षकी अवधि महंती की मानली जाय तो श्री नागरीदासजीका सम्वत १५७७ के लगभग होता है । इनके विषय में ध्रुवदासजी लिखतेहैं ।

' नागरि अरु हरिदास मिलि, सेये नित हरिदास ।
वृन्दावन पायो दुहुनि, पूजी मन की आस ॥ १ ॥

तीसरे नागरीदास जी श्री गोस्वामी हितहरिवंशजी वा श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुके सम्प्रदाय में हुए हैं इनका काल भी १५५० सम्वत से १६०० के लगभग समझना चाहिए । इनके विषय में ध्रुवदास जी लिखते हैः—

" रमन दास अद्भुत हुते, करतकबित्त सुढार ।
बात प्रेमकी सुनतही, छुटत नैन जलधार ॥ १ ॥
बोरोरस में फिरै सो, खोजत नेह की बात ।
आछे रस के बचन सुनि, बेगि बिवस व्है जात ॥ २ ॥
कहा कहौं मृदुल सुभाउ अति, सरस नागरीदास ।
बिहारी बिहारिनि को सुजस, गायो हरषि हुलास ॥ ३ ॥

इन दोनों नागरीदासजी के विषय में भारतेंदुजी लिखते हैं ।

"श्रीवृन्दावन के सूरससि, उभय नागरीदास जन ।
*निज गुरु श्रीहरिवंश कृष्णचैतन्य चरनरत ॥

---

* यहां भ्रम होता है ।

हरि सेवा में सुदृढ़, काम क्रोधादि दोष गत ।
अद्भुत पद बहु किए दीनजन है रस पोषे ॥
प्रभु पद रति विस्तारि भक्त जन मन संतोषे ।
दृढ़ सखी भाव जिय में बसत सपनेहुं नहिं कहुं औरमन ।

चौथे नागरीदासजी हमारे ग्रन्थ के नायक महाराज सावंतसिंह कृष्णगढ़ (राजपूताना) नरेश उपनाम श्रीनागरीदासजी हैं । ये महाप्रभु वल्लभाचार्य संप्रदाय के शिष्य थे । इनके विषय में भारतेंदुजी लिखते हैं ।

"हरिप्रेममाल रस जाल के नागरिदास सुमेर भे ।
वल्लभ पथहिं दृढ़ाइ कृष्णगढ़ राजहिं छोड्यो ।
धन जन मान कुटुम्बहिं बाधक लखि मुख मोड्यो ॥
केवल अनुभव सिद्ध गुप्त रसचरित बखाने ।
हिय सँजोग उच्छलित और सपनेहुं नहिं जाने ।
करि कुटी रमण रेती बसत संपति भक्ति कुबेर भे ॥"

भाषा कवि चूडामणि श्री आनन्दघनजी से इनसे बड़ाही प्रेमथा । हमारे यहां एक अत्यंत प्राचीन चित्र[1] है जिसमें नागरीदासजी और घनआनंदजी एक साथ विराजते हैं । घनआनंदजी के विषयमें भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्रजी "सुजानशतक" की भूमिका में लिखते हैं:—

"आनंदघनजी जाति के कायस्थ थे और मुहम्मदशाह के मुन्सी थे ज्ञान-विद्या और कविता दोनों विषयों में अति कुशलथे और सच्चे प्रेमीथे अंतसमय में घर छोड़ कर श्री वृन्दावन बास करतेथे । नादिरशाहने जब मथुरा लूटी तो उसी मार काट में ये भी मारे गए ।"

"शिवसिंह सरोज" में इनका समय सम्वत् १७१५ लिखाहै ।

ठीक यही बात नागरीदास जी के विषय में भी प्रसिद्ध है कि मथुराके कत्लेआममें कट गए परन्तु श्रीवृन्दावन बास न छोड़ा, परन्तु "बनजनप्रशंसक" ग्रन्थ में जिसे नागरीदासजी ने सम्वत १८१९ में बनाया वे लिखते हैं:—

"अष्टादश शतदश जु नव, सम्वत माघसुमास ।
बनजनप्रसंस ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास ॥"

---

[1] बाबू राधाकृष्ण दासजीके यहां

इससे प्रमाणित हुआ कि सम्वत १८१९ तक नागरीदासजी वर्तमान थे और सम्वत १८१४ [ सन् १७५७ ई० में ] शाह आलम सानी के समय में अहमद दुर्रानी ने मथुरामे कत्लेआम किया था। इस विषय में कवीश्वर जयलालजी ने मुझे* यंह लिखा है:—

"कत्लेआम होने की खबर यहां कृष्णगढ़ रूपनगर में गुप्त आ पहुंचीथी, नागरीदासजी के छोटे भाई बहादुरसिंहजी और नागरीदास जी के पुत्र सरदारसिंहजी ने इनको अर्ज़ी लिखीथी कि कुटुम्बयात्रा के लिये यहां अवश्य पधारें तब इसधोखा दई से यहां आगए थे फिर छ महीने रह कर पीछे वृन्दावन ही पधार गए।

सं० १८२१ की भादव सुदी ३ को वृन्दावनही में परलोक निवासी हुए वहां उनकी छतरी है जिसमें लेख भी है।"

चारों नागरीदास जी कविता करते थे और ये सब कविता ऐसी मिल जुल गई हैं कि कुछ पता नहीं लगता कि कौन कविता किसकी है परंतु यह भ्रम व्यर्थ है क्यों कि कृष्णगढके पुस्तकालयमें श्रीनागरीदासजीके वर्त्तमान समयके सर्व ग्रंथ उनके हस्ताक्षरोंसहित अद्यापि हाजिर है इससे इनकी वाणीका दूसरे नागरीदासजी- की वाणीमें मिल जुल जाना यह भ्रम व्यर्थ है और राजा नागरीदास जी की अलौकिक कविता में कुछ ऐसा माधुर्य और गूढ भाव भरा है कि थोड़ेही काल में इसकी झनूकार सहृदय मात्र के हृदयमें गूंजउठी और हिन्दीभाषा के कवियों के मुकुटमणि का स्थान इन्हों ने पाया।

हमको खेद है "शिवसिंहसरोज" मे शिवसिंहजी ने इनका सम्वत बहुत ही अशुद्ध लिखा है। उन्हों ने सम्वत १६४८ लिखा है। यदि कहा जाय कि उन्होंने पहिले के नागरीदास में से किसी का वर्णन किया है तो यह इससे अशुद्ध ठहरता है कि निम्न लिखित सवैये जो "शिवसिंह सरोज" में उक्त कवि की कविता में लिखे गये हैं वे महाराज सावंतसिंह उपनाम नागरीदासजी के ग्रन्थो में पाये जाते हैं और यदि इनके समझे जायँ तो समय ठीक नहीं है, क्योंकि इनका जन्म सम्वत १७५६ का है—१०८ वर्ष का अन्तर है और इसी

---

* राधा कृष्णदासजीके नाम

विश्वास पर डाक्तर ग्रियर्सन साहब ने * इनके जन्म का समय सन् १५९१ ई० अपने ग्रन्थ The Modern Vernacular Literature of Hindustan में दिया है. पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंडचार्जीने अपने लेख Antiquity of the poet Nagari Das* में इनके जन्म का समय ठीक दिया है परंतु शिवसिंह+ और डाक्तर ग्रिअर्सन के भ्रम को स्पष्ट नहीं दिखलाया हैं, क्योंकि यदि समय के अनुसार इन्हें छोड़ पहिले नागरीदासों में से कोई माने जांय तो कविता नहीं मिलती और यदि कविता के अनुसार ये माने जाय तो समय ठीक नहीं।

" भादो की कारी अंध्यारी निसा लखि बादर मंद फुही बरसावै । श्यामाजी अपनी ऊंची अटा पै छकी रस रीति मलारहि गावै ॥ ता समै नागर के दृग दूरि तें चातिक स्वाति की बूंद यों पावै । पौन मया करि घूंघट टारै दया करि दामिनी दीप दिखावै ॥ १ ॥ "

" देवन की औ रमापति की दोउ धाम की बेदन कौन बडाई । संखरु चक्र गदा पुनि पद्म सरूप चतुरभुज की अधिकाई ॥ अमृतपान विमानन बैठिबो नागर के जिय नेक न भाई । स्वर्ग बैकुंठ में होरी जो नाहीं तौ कोरी,कहा लै करै ठकुराई ॥ २ ॥ "

" गांस गंसोलिये बातें छिपाइये इश्क ना गाईये गाईये होलिआं । गेंद बहाने न बीरा चलाइए सूधे गुलाल उड़ाइये झोलियां ॥ लोग बुरे चतुरे लखि पावैंगे दाबे रहो दिल प्रीति कलोलियां ॥ पाइ परों जू डरौ टुक नागर हाइ करौ जिनि बोलियां ठोलिया ॥ ३ ॥

इन कविताओं में कुछ पाठांतर नागरीदास जी के ग्रन्थों से हैं जिसे पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंडयाजी ने लिखा है उसका आशय नीचे प्रकाशित करते हैं।

" हमारी पास इनके ग्रन्थों के संग्रह में नम्बर ३८ पत्र १९२ में एक अ-

---

*डाक्तर ग्रिअर्सन का The Modern Vernacular Literature of Hindustan नम्बर ९५ पृष्ट ६३८ और नंबर ३३ पृष्ट १३८ देखो। *Journal Asiatic Society Of Bengal Vol LXVI Part 1 No 1—1897 Page 63 देखो। +शिवसिंह सरोज—नं० ११ पृष्ट १७२ देखो

धुरा ग्रन्थ " वर्षा के कवित्त " है जिसमें केवल ८ कवित्त हैं, उसका सातवां कवित्त यह है इसमें बड़ा पाठांतर यही है कि शिवसिंह ने जहां नागर लिखा है वहां इसमें ' मोहन ' है:—

भादों की कारी अंध्यारी निसा झुकि बादर मन्द फुही बरसावै । स्यामा जू आपनी ऊंची अटा पै छकी रस रीत मलारहि गावै ॥ ता समै मोहन की दृग दूरि ते आतुर रूप ( रूप ) की भीख यों पावै । पौन मया करि घूंघट टारे दया करि दामिनि दीप दिखावै ॥ ७ ॥

उसी संग्रह में नम्बर ३५ पत्र १८४ में " होरी के कवित्त " नामक ग्रन्थ है जिसमें १९ कवित्त हैं, उसका १९ वां कवित्त यह है, इसमें भी बड़ा अंतर यही है कि नागर के स्थान पर भावते लिखा है ।

गास गसीलीये बातें छिपाइये इश्क न गाइये गाइये होलियां । गैर ब-हाने न बीरा चलाइये सूधे गुलाल चलाइये झोलियां ॥ लोग बुरे चतुरे लखि पावेंगे दावे रहो दिल प्रीति कलोलियां । पाय परों ज डरो टुक ( टुक ) भावते हाथ करो मति बोलियां ठोलियां ॥ १९ ॥

उसी संग्रह में नम्बर ४१ पत्र २९६ " फाग विहार " नामक ग्रन्थ है उसमें यह सवैया ८ वां है ॥

देखन केरु रमापति के दोऊ धाम को देवनि कोनी बड़ाई । संखरु चक्र गदा अरु पद्म सरूप चतुर्भुज की अधिकाई ॥ अमृतपान बिमानन बैठिबो जेती कही तेती एक न भाई । स्वर्ग वैकुंठ में होरी जो नाही तौ कोरी कहा लै करै ठकुराई ॥ ८ ॥

कविता में नागरि, नागर, नागरीदास और नागरिया नाम रखते थे ।

इनका कुल सदा से वीर वैष्णव चला आता है । इनके हृदय में राज-काज में फँसे रहने पर भी सदा उज्वल प्रेमशिखा प्रदीप्त थी और श्रीवृन्दावन के लिये तरसा करते थे जैसा कि उनके पदों से झलकता है ।

" ज्यों ज्यों इत देखिदत मूरख विमुख लोग त्यों त्यों सुखरासी ब्रजवासी सुधि भावै है । खारे जल छीलर दुखारे अंधकूपचितै कालिन्दीके काज महामन ललचावै है ॥ जैसी अब बीतत सु कहत न आवै बैन नागर न चैन परै प्रान अ-

विश्वास पर डाक्टर ग्रियर्सन देखि देखि कै बबूल बुरे हाय हरे हरे वे तमाल सुधि
अपने ग्रन्थ The Mode
है. पण्डित मोहनलाल ज्यका ७२४ मील मुरब्बा है। सन १८८१ ई० में इसमें
Nagari Das* में योंकी बस्ती थी, जिनमें ५९०९८ पुरुष और ५३५२५ स्त्रियां,
डाक्टर ग्रिअर्सन
नुसार इन्हें छो गर और २१० गावोंमें रहते हैं, और सब २४९२८ घर हैं; जिनमें
लती और हिन्दू ८४९२ मुसलमान और ६२९५ जैन रहतेथे। इस राज्यमें कृष्ण-
(राजधानी) रूपनगर और सरवार ये तीन नगर हैं।

जी इस राज्यको जोधपुरके महाराज उदैसिंहके द्वितीय पुत्र कृष्णसिंहने पैतृक अधिकारको छोडकर अब जिस देशमें कृष्णगढराज्य है उसे विजय किया.

कृष्णगढ़ नगर बहुतही सुन्दर गूंदोलाव नामकतालाव के किनारे पर बसा है, जिसके बीचमें महाराजका बाग गुहकमविलास बना हुआ है, नगरमें श्रीमदन मोहनजी श्रीव्रजराजजी श्रीद्वारकानाथजी श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा मोहनलालजी सुखनिधानजी नरसिंहजीका मंदिरहैं और जैनके मंदिरोंमेंभी चिन्तामणिजीका मंदिर मकराणेके पत्थरका बहुत अच्छाहै। कृष्णगढसे १२ मीलपर सलीमाबादमें एक निम्बार्क संप्रदायका मन्दिर है जिसमें उस प्रान्तके बहुतसे हिन्दू यात्री दर्शनके लिए आया करते हैं और निम्बार्कोंमें यहगद्दी सबसेबडीहै जैसे कि वल्लभकुल संप्रदायमें श्रीनाथद्वाराकी गद्दीहै और सलीमाबादमें ठाकुरजी विराजतेहैं जिनका नाम श्रीराधामाधवजी है यह स्वरूप कविचूडामणि जयदेवजीके मस्तकके हैं मूर्ति अति विसाल मनोहर है। और श्रीसर्वेश्वरजीका स्वरूपभी वहीं विराजताहै जो कि सनकादिकोंके सेव्य है ऐसी प्रसिद्ध ख्याति है।* और सलेमाबादग्रामके दक्षिण दिशामें पंडित श्रीधरकी १ छोटीसी वाटिकाहै जिसमें हनुमानजीकी मूर्ति अति विसाल है. इस लघु ग्रामका नाम बहुत देशांतरोंमें फैला है कारण **पं०श्रीधरके ज्ञा० सा० छा०** की पुस्तकें या पंचांगों मात्रमें सर्वत्र इस ग्रामका नाम लिखाजाता है इस्से

कृष्णगढ राज्यके स्थापनाके विषयमें कृष्णगढ दर्बारके कवेश्वर जयलालजी ने मेरे प्रश्नके उत्तरमें यह लिखा है:—

---

* ( Dr Hunter's Imperial Gazetteer of India Volume VIII Page 223 )

"सम्वत १६५४ में जोधपुरसे प्रथक राज्य, प्रथम तो 'हिंडोण' § में हुआ और फिर 'सेठोलाव' में जो कि कृष्णगढसे पश्चिम तरफ २ मीलके लगभग दूरी पर है वहां हुआ और महाराज श्रीकृष्णसिंहजीने सम्वत १६६८ में कृष्णगढ बसाया"

ये महाराज कृष्णसिंहजी श्रीवल्लभकुलके अनुयायी वैष्णव थे और तबसे बराबर यह कुल उन्हींका अनुयायी चला आता है इस विषयके प्रश्नोत्तरमें उक्त कवीश्वरजी लिखते हैः—

"यह कृष्णगढकी राजधानी नियत करने वाले जो महाराज कृष्णसिंहजी थे जबहीसे वल्लभाचार्यजीके अनुयायी हैं० और उनके मस्तकपर दो स्वरूप श्री नृत्यगोपालजीके विराजते थे, वे दोनों स्वरूप अद्यापि यहां विराजते हैं, जिनमें एक स्वरूप श्रीदाऊजीका और दूसरा श्रीकृष्णजीका है, और महाराज श्रीकृष्णसिंहजी नरवरगढके कछवाहा राजा आसकरणजी + जो श्रीवल्लभाचार्यजीके अनुयायी महा वैष्णव थे और जिनका प्रसंग वैष्णवोंकी वार्तामें है जिनके भानजे थे।०"

---

§ हिंडोण–पहिले अच्छा नगर था महाराष्ट्रों ने उसे नष्टकर दिया प्राचीन प्राचीर टूटी फूटी पडी है। अब यह जयपुर राज्यान्तर्गत है।

( Dr. Hunter's Imperial Gazetteer Vol. V Page 414 )

+ नरवरगढके कछवाहा राजा आसकरणजी—डाक्तर ग्रिअर्सन लिखते हैं. Askaran Das, the Kachhwaha Rajput of Narwargarh, in Gwaliyar Fl. C. 1550 A. D.

Rag; He was son of King Bhim Singh See Tod II 392 Calc. Ch. II 390—The Modern Literature of Hindustan page 31 No. 71

यही शिव सिंहभी सरोजमें लिखते हैं। ( पत्र ६ न० ३७ )

यह गोस्वामि श्रीविट्ठलनाथजीके शिष्य थे, इनका चरित्र "दो सौ बावन वैष्णवकी वार्ता" में ( नं० २०२ ) जो लिखा है हम उसका संक्षेप यहां देते हैं:–

इन्हें रागपर बडी आसक्तिथी, देश देशान्तरके गवैयोंका आदर सत्कार करते थे. एक समय तानसेन इनके यहां आए और उन्होंने "कुंवर बैठे प्यारीके

महाराज रूपसिंहजीने ' रूपनगर ' बसाया और उसे राजधानी बनाया इस विषयमें उक्त कवीश्वर जी लिखते हैं.—

" सम्वत १६६८ में महाराज श्रीकृष्णसिंहजीने कृष्णगढ बसाया और राजधानी नियत की फिर सम्वत् १७०० में महाराज श्रीरूपसिंहजीने रूपनगरको राजधानीका मुख्य स्थान नियत कियाथा जबसे वहीं रहतेथे फिर महाराज नागरी-

---

संग अंग अंग भरे रंग बलि बलि बलि त्रिभंग युवतिन मनभाई " गाया । राजा प्रेमसे मत्त हो मूर्च्छित होगए । चैतन्य होनेपर पूछा यह किसका पद है ? तानसेनने बताया गोकुलके गोसाईं विठ्ठलनाथजी के शिष्य गोविन्दस्वामीका । राजा तानसेनको दो सहस्र रुपैया देने लगे पर उन्होंने नहीं लिया कहामैं रुपयेका भूखा नहीं, गुण ग्राहक ढूंढता हूं सो जैसा सुनाथा वैसा पाया " तानसेनको संग ले राजा गोकुल आए और श्रीगोशांईजीके सेवक हुए श्रीगोशांईजीकी आज्ञासे गोविन्दस्वामीजीने रमणरेती पर लिवाजाकर राजाको सेवाकी रीति तथा कीर्तन आदि सिखाये । तदनन्तर राजा श्रीगुशांईजीकी आज्ञा ले और श्रीमदनमोहनजी ठाकुरको सेवाके लिये पधरा अपने देश आये एक समय दक्षिण देशका कोई राजा इनपर चढआया, इन्होंने सेवामें विघ्न न पडै इसलिये विचार किया कि राज्य इसे सौंप आप गोकुल चल बसें. परंतु स्वप्नमें आज्ञा हुई कि मानसी सेवा कर और शत्रुसे लड, ऐसाही किया और प्रभुकी कृपासे जयी हुए । एक दिन जाडेकी ऋतुमें राजा चार घडीके तडके सेवामें नहाये, वहां चार चोर छिपे थे, उन सभोंने राजाको तीर मारी जो पीठको छेद बाहर निकलगई, भितरियोंने पट्टी बांध दी, परंतु राजा सेवामें ऐसा देहाध्यास भूलगए थे कि कुछ खबरही न हुई । जब सेवासे निकले पट्टी बँधी देखी लोगोंने सब वृत्त कहा, राजाने सोचा कि सब अनर्थ का मूल धन है, राज अपने भतीजेको दे ठाकुरजीका वैभव श्रीगुशाईंजीके यहां भेज. एक झांपीमें श्रीठाकुरजीको केवल गुंजा मोरपंख धरा अपने साथ ले श्रीगोकुल चले आये, और विरक्त भावसे रहने और लीलाका अनुभव करने लगे ।

यह वार्ता श्रीगोस्वामी गोकुलनाथजीकी बनाई बताते हैं जिनका जन्म सम्वत १६०८ मि० माघ सु० ७ का है ।

दासजीके एक पीढीपीछे अर्थात् सम्वत् १८२३ के पीछे कृष्णगढहीको पीछा राजधानीका मुख्य स्थान नियत किया सो अद्यापि है। और उक्त महाराजको कृष्णगढाधिपति इस कारणसे लिखते हैं कि अब प्रसिद्ध राजधानीका स्थान कृष्णगढही है नहीं तब ये तो रूपनगरकेही राजा थे. ॥ "

नागरीदासजी किन वल्लभकुल गोस्वामीके शिष्य थे इसके उत्तरमें उक्त कविराजाजी लिखते हैं:—

" महाराज श्रीकृष्णसिंहजीके पौत्र रूपसिंहजी थे वे श्रीवल्लभाचार्यजी* के पुत्र विठ्ठलनाथजी÷ जिनके पुत्र टीकैत ( बडे ) श्रीगिरिधरजी † थे जिनके तृतीय पुत्र दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजी‡ थे जिनके शिष्य हुए थे उन्हींके पास ब्रह्म संबंध भी लिया था और श्रीकल्याणरायजीका स्वरूप दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजीने इन ( रूपसिंहजी ) के मस्तकपर पधराया था वह स्वरूप अद्यापि यहां विराजता है । और इन्हीं ( रूपसिंहजीने ) । श्रीवल्लभाचार्यजीके उस चित्रको जो बादशाह अकबरने बनवाया था जो बादशाह शाहजहांसे मांगके ले लिया था। वह चित्र अद्यापि यहां है और श्रीकल्याणरायजीके समीप सेवामें विराजता है। पूर्वोक्त श्रीनृत्यगोपालजीके दो स्वरूप थे जिनमें एक स्वरूप बडा श्रीदाऊजीका सो तो श्रीकल्याणरायजीके गोदमेंहीं विराजता है और दूसरा छोटा स्वरूप श्रीकृष्णजीकासो वर्तमान महाराजाधिराज महाराज श्रीशार्दूलसिंहजी बहादुर जी. सी. आई. ई. के अनुज महाराज दीक्षितजी श्रीजवानसिंहजीके मस्तकपर विराजता है।"

"जो कि महाराज श्रीरूपसिंहजीके गुरू गोस्वामी दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजी थे जिनके प्रपौत्र गोस्वामी श्रीरणछोडजी+ नागरीदासजीके गुरू थे इनका स्थान कोटेमें श्रीबडे मथुरेशजीका है और श्रीरूपसिंहजीसे लेकर अबतक उसी

---

* श्रीवल्लभाचार्य—जन्म सम्वत १५३५ मि० वैशाख कृष्ण ११

÷ श्रीविठ्ठलनाथजी—जन्म सम्वत १५७२ मि० पौष कृष्ण ९

† श्रीगिरिधरजी टीकैत—जन्म सं० १५९७ कातिक व० १२

‡ श्रीगोपीनाथजी—जन्म संवत १६३४ माघ कृष्ण ६

\+ गोस्वामी श्रीरणछोडजी—जन्म सम्वत १७७७ ज्येष्ट कृष्ण ५

स्थानके शिष्य होते हैं और उनका मन्दिर कृष्णगढमेंभी श्रीमदनमोहनजीका है जिनके भेट यहांकी तरफसे ग्रामभी हैं और लगान सहित दस सहस्रके लगभगकी जीविका है.

नागरीदासजीके सेव्य ठाकुरके विषयमें उक्त कवीश्वरजी लिखते हैं:-

"नागरीदासजी स्वयं पूर्वोक्त श्रीकल्याणरायजीकी सेवामें उपस्थित रहते थे और प्रदेश जाते तब श्रीनृत्यगोपालजीका स्वरूप साथमें रखते थे। वृन्दावनमें रहे तबभी श्रीनृत्यगोपालजीकीही सेवाकी।"

नागरीदासजीका जन्म सम्वत १७५६ पौष कृष्ण १२ को हुआ। इनके पिताका नाम महाराज श्रीराजसिंह था। इनका विवाह भानगढ नामक नगरके राजा राजावत (राजावत कछवाहोंकी एक शाखा है) यशवंतसिंहजीकी कन्यासे सम्वत १७७७ के ज्येष्ठ सुदी ९ को हुआ था। इन्हें ४ संतति हुई। प्रथम पुत्र जिनका जन्म सम्वत १७८३ में हुआ था बाल्यावस्थाहीमें परलोक गामी हुए। दूसरे कुमार सरदारसिंह जिनका जन्म सम्वत १७८७ के भाद्रपद शुक्ल २ को हुआ था। यही इनके उत्तराधिकारी हुए। पहिली कन्या किशोर कुंवरिजीका विवाह बूंदीके हाडा दीपसिंहजीसे हुआ था और दूसरीका नाम गोपाल कुंवरिजी था। इनका संबंध जयपुरके महाराज श्रीमाधोसिंहजीसे निश्चय हुआ था, परन्तु परम वज्र हृदय विधातासे यह सुखमय संबंध न देखा गया. उक्त महाराज विवाहके पहिलेही सुरधाम गामी हुए। इनके भ्राता महाराज सरदारसिंहजीने इनका विवाह दूसरे कहीं करनेका उद्योग किया, परन्तु जिस सती रमणी रत्नके शरीरमें परम भगवदीय महानुभाव नागरीदासजीका पवित्र रक्त संचालित होता था, जिसने पवित्र कुलकी शोभा बढायी थी, वह क्या कभी सांसारिक सुखोंके लोभमें फंसकर अपने परम पवित्र सतीत्व धर्मको तिलांजलि दे सक्ती थी? प्रातस्मरणीया गोपालकुंवरिजीने दृढता पूर्वक दूसरा संबंध अस्वीकार किया और कहा जो होना था हो चुका क्या एक शरीर दो पतिको अर्पण हो सकता है? और संसारके सुखोंसे मुख मोड भगवच्चरणारविंदमें मन लगाया अपने सिरपर एक स्वरूप श्रीठाकुरजीका पधराया जिनका नाम श्रीरामलालाजी रक्खा और इन्हींके प्रेममें मगन रहकर अपने इस क्षणस्थायी जीवनको परम संतोष पूर्वक व्यतीत किया। धन्य राजपूत कुल कमलिनी! धन्य सतीत्व मान संवर्धिनि!! धन्य नागरीदास यशोविस्तारि

नि !!! धन्य आज कलिकी कुल बालाओंको इनका उदाहरण लेना चाहिये, उन्हें हृदयकी आंखोंसे देखना चाहिये सती साध्वी पतिव्रताओंके लिये पति कैसा आदरणीय देवता है. उन्हें चाहिये कि गोपाल कुंवरिके आदर्शमय चरित्रको रात्रि दिवस अपने गलेका हार बनावें । कहां हैं गोपाल कुंवरि और कहां गए महाराज नागरीदास ? परन्तु यह उनका उज्वल चरित्र आजतक यश फैला रहा है और अनन्त कालतक ऐसेही महानुभावोंके चरित्र भारतवर्ष तथा क्षत्रिय कुलका गौरव सारे संसारमें स्थिर रक्खेंगे । कहिये संसारमें कितनेही इनके ऐसे तथा इनसे बढ-कर लोग जन्मे और कालके कराल गालमें विलीयमान हुए परन्तु किसका नाम कौन लेता है ! किसका चिन्ह पृथ्वीपर वर्तमान है ? परन्तु हां.—

कीर्तिर्यस्य सजीवति ।

महाराजा सावंतसिंह संस्कृत, फारसी अच्छी पढे थे भाषा पिंगल और डिं-गलके तो पण्डितही थे, राग, चित्र और शस्त्र विद्यामें परम प्रवीण थे । एक दिन जब कि ये श्रीवृन्दावनसे घर आए थे इनके भ्रातृपुत्र कुमार बिरदसिंहजीने कहा कि 'मैंने सुना है कि आप शिकार अच्छा खेलते हैं मुझेभी दिखाइए, आपने उत्तर दिया कि "अब मुझे शिकारसे क्या प्रयोजन परन्तु तुम कहते हो तो दिखाऊंगा एक हिरनके पीछे आपने घोडा डाला और थोडी दूर जाते जातेही उसकी सींगमें अपनी कुबडीको लगाकर उसे रोक रक्खा । चित्रमें ऐसे निपुण थे कि कई एक भाव प्रिया प्रीतमके चित्रका आपने नयाही निकालाथा । और विद्याका परिचय तो उनके काव्योंहीसे मिलता है ।

ये परमशूरवीर थे और बचपनहीसे परम निर्भय थे । संवत १७६६ में जब कि ये केवल १० ही वर्षके थे, एक दिन दिल्लीमें राज्यदर्बारसे लौटती समय एक मस्त हाथी जो कि महावतोंके काबूसे बाहर था, इनपर टूटा, महावत लोग लाख पुकारते रहे इधर मत आओ भागो, परंतु वीर बालकने पीठ देना सीखाही न था, इन्होंने हाथीसे मुठभेड होतेही एक हाथ तलवारका ऐसा मारा कि वह चु-पचाप दुम दबाकर पीछे भागा और आप अपने घर आये, उससमयका चित्र कृ-ष्णगढ दर्बारमें है ।

संवत १७६९ में जब कि इनकी अवस्था केवल १३ वर्षकी थी इन्होंने अ-

अकेले ही बूंदीके हाडा जैतसिंहको मारा था जिसमें इन्हें कुछ घावभी लगे थे।

इसी संवतमें दिल्लीके बादशाह बहादुरशाह मरे और गद्दीके लिये जहांदारशाह और फरुखसियरसे लडाई हुई और फरुखसियरने विजयी होकर दिल्लीके तखतपर अधिकार किया इस लडाईका वर्णन श्रीधरकविने बहुत सुंदर लिखा है। यह श्रीधर कवि जिसका नाम मुरलीधरभी था प्रयागका रहनेवाला था इसने इसी "जंगनामा" में लिखा है।

"श्रीधर मुरलीधर उरुफ, द्विजवर बसत प्रयाग।
रुचिर कथा यह शाहिकी, बढ्यो कथन अनुराग॥

यह शृंगार और वीर रस दोनोंही कविता सुंदर करता था। उस समयके अमीर उमराओंका बहुत कुछ गुणानुवाद किया है और पारितोषिक पाया है जिसने कुछ दिया नहीं है उसकी ऐसी हजो की है कि अश्लीलताके कारण वह कविता प्रकाशित करने योग्य नहीं है॥

शिवसिंहने अपने ग्रंथमें चार श्रीधर लिखे हैं। जिनमेंसे एकका नाम राजा सुब्बासिंह चौहान था और ओयल जिला खीरीके रहनेवाले थे। इनका समय संवत १८७४ दिया है जिन्होंने "विद्वन्मोद तिरंगिनी" नामक साहित्य ग्रंथ बनाया दूसरे श्रीधर राजपुताना वाले इनका समय १६९० दिया है जिन्होंने "भवानी छंद" नाम एक दुर्गाकी कथाका ग्रंथ बनाया है। शेष दोनो श्रीधर निश्चय एकही हैं क्योंकि दोनोंकी कविता जो दी है वह श्रीधर उर्फ मुरलीधर कविहीकी है। शिवसिंहने एक श्रीधर (जिनके नाममें मुरलीधर नहीं लगाया है) का समय १७८९ संवत दिया है और लिखा है कि "शृंगाररसमें सरस कवित्त हैं" और कवित्त इनका यह दिया है:—

"श्रीधर भावत प्यारो प्रवीनके रंग रंगे रथ साजन लागे।
अंग अनंग तरंगनिसों सब आपने आपने काजन लागे॥ १॥
किंकिनी पायल पैजनियां बिछिया घुंघरू घन गाजन लागे।
मानो मनोज महीपतिके दरबार मरातिबे बाजन लागे॥ २॥

यह कविता श्रीधर उर्फ मुरलीधरके ग्रंथमें मुझे ढूंढनेपर मिली, यह प्राचीन हस्तलिखीत पुस्तकके ७७ पन्नेमें ३१ अंकका कवित्त है और प्रथमके एक पादमें कुछ पाठांतर है। हस्त लिखित पुस्तकमें यह पाठ है:—

श्रीधर भावतो प्यारी प्रवीनसों रंग भरे रति साजन लागे । हम इस कवित्तके ऊपर नीचेका एक एक कवित्त उद्धृत कर देते हैं:—

" ठाढेही साढेही साजसों आजु उछाह भरी मद सीतिको खूंदिकै । आंचर खूंटि खुल्यो अचका निकसे कुच कोरक कंजसी दूंदिकै ॥ छाति छपावति भाय भरी तकि श्रीधर लाल रहे रसगूंदिकै । हेरि इतै दृग फेरि गई हँसि घूंघटके पटसो मुख मूंदिकै ॥ ३० ॥

मेरे जबै आवतहौ हंसत हंसावतहौ रीझत रिझावतहौ रंगनि रंगतहौ ॥ और कें पधारतहौ ताहिउर धारतहो छलनि सुधारतहौ प्रेमसों पगतहौ ॥ श्रीधर अहिरा कछु जानत न पीरा सदा खीरा चार हीरा मीले जगत ठगतहौ । मीतकी प्रतीति होति देखें रीति रावरेकी नेक भीति ओट है अमीतसे लगतहौ ॥ ३२ ॥

समय तो ठीक मिलताही है क्योंकि संवत १७६९ में इन्होंने जंगनामा बनाया यथा:—

" संवतसो सत्रह से उन्हत्तरि पूसपून्यो बुध तहीं ।
सनसो अग्यारह तेतिसा माहे मोहर्रम चौदहीं" । १ ।
अरू पातसाही माहे आजर बाएसी श्रीधर कही ।
सफजंगकी साएति सधी साहेबजहां कीनो सही ॥ २ ॥

अब यहां हिजरी सनमें भ्रम है क्योंकि फर्रुखसियरकी जहांदारशाहसे लडाई सन् ११२४ में हुई है यह भूल लेखककी प्रतीत होती है ।

दूसरे श्रीधर मुरलीधरका संवत शिवसिंहने नहीं दिया है. लिखा " कवि विनोद नाम पिंगल बनाया" और कवि विनोद पिंगलके ये दोहे उठाये हैं:—

" श्रीधर मुरलीधर सुकवि मानि महा मन मोद ।
कवि विनोद मय यह कियो उत्तम छंद विनोद । १ ।
श्रीधर मुरलीधर कियो निज मतिके अनुमान ।
कवि विनोद पिंगल सुखद रसिकनके मन मान " । २ ।

यही भ्रम डाक्तर ग्रियर्सनकोभी हुआ है ।

अस्तु यह तो निश्चय है कि यह दोनों एकही श्रीधरथे ।

सम्भव है कि इस संवत् १७६९ की लडाई में महाराज सावंत सिंहजीभी रहे हों क्योंकि कृष्णगढसे आये हुए इतिवृत्तमें लिखा है कि " इन साहिबोंपर

बादशाह फर्रुखसियरकी बहुत मेहरबानीथी इन साहबोंके पास घोडे फिरवाके बहुत देखता" और इधर श्रीधर अपने "जंगनामा में लिखते हैं किः—

"सब मीर जुमिला संग व्है। द्वै लाख स्वार उमंग है ॥
यह बंक कोतल फौज है। सावंत उरमें ओज है ॥"

परन्तु अधिक सम्भव यही है कि कवि ने सावंत शब्द बीरके लिए लिखा हो, क्योंकि प्रायः ऐसाही किया है जैसेः—

"समसेर सरकि सिरोहकी सावंत ए दोऊ लरे।
घनघाइ खाइ अंगाइ अंगनि अटल व्है दोऊ अरे ॥"

सम्बत १७७१ में जबकि आप १५ वर्षकेथे, जलूस महफिल हो रहीथी. उस समय इनके पिता महाराज श्रीगजसिंहजी कोटाके महाराज श्रीभीमसिंहजी, सोपर के महाराज श्रीराजसिंहजी, और महाराज भदोरिया श्रीगोपालसिंहजी प्रभृति बैठे थे। उस समय अकस्मात इनके जामाके दामनमें एक विषधर सर्प आगया आपने इसकी किसीकोभी खबर न होने दी, चुपचाप उसके फनको पकडकर मसल दिया और किसी बहानेसे उठकर मृतक सर्प बाहर फेंक आए इस भेदको उनके खिद्‌मतगारोंके अतिरिक्त और किसीनेभी न जाना।

सम्बत १७७४ में जब किये १८ वर्षके थे थूणकी गढी को फतह किया। थूणकी गढीके स्वामी जाट बदनसिंहको पराजित करनेके लिये फर्रुखसियरने नब्बाब मुजफ्फरखां* जयपुरके महाराज जयसिंह, और कोटाके महाराज भीमसिंहको भेजा था, थूणकी गढी जो मेवासामें है वहां लडाई हो रहीथी, परन्तु गढी कब्जेमें नहीं आती थी क्योंकि जगह बेढंगथी चढनेका रास्ता न था, तब नब्बाब नौलादखां खानदौरा+ बख्शीके भाई ने अर्ज करके इन्हें भेजवाया, यह वहां

---

* नबाब मुजफ्फरखांकी वीरताके विषयमें श्रीधर लिखते हैंः—
"सज्यो मुजफ्फरखां फतह कर। समसामुद्दौला सुबीर बर"

\+ खानदौरा—पूर्व नाम ख्वाजा मुहम्मद आसिन, उसके पीछें अरफ़ा तत्पश्चात शमसामुद्दौला, अमीरुल्‌उमरा खानदौरा बहादुर मनसूरजंगकी पदवी मिली इनके पिता ख्वाजः कासिमनकश बंदीथे। खानदौरा नादिरशाहकी लडाईमें २३ फर्वरी सन १७३९ में जखमी हुए और चारही दिन पीछे २७ तारीखको ६८ वर्षकी अवस्थामें मरे।

पहुंचतेही बख्तर पहिरे हुए, गोलियोंकी वर्षाके बीच हाथीपर सवार घुस पडे और गढीके फाटक पर पहुंच हाथियोंसे फाटक तोडवा गढी भेल दी पीछेसे सारी फौज भी आ पहुंची यह दिन सम्वत १७७४ वैशाख वदी ६ था। इस समय एक गोली इनके शरीरसे भिडती हुई निकल गईथी परंतु कुछ गहरी चोट नहीं लगी; वहांसे पालकीमें सवार हो डेरे पर आए, उस समय नवाब और महाराज जयसिंह उनके डेरे पर आए और कहा कि यह आपहीका काम था, और नवाबने बादशाहके पास अर्जी भेजी उसमें फतह इन्हीके नाम लिखी। बादशाहने प्रसन्न हो बडीही प्रशंसाकी और खिलत शमसेर आदि भेजा।

सम्मत१७७६वीस वर्षकी अवस्थामें अकेलेही सिंहका शिकार किया जिसका चित्र कृष्णगढ दर्बारमें है।

सम्वत १७९३ में दक्षिणी मल्हार राव गुजरातसे मारवाड आया। इन्होंने उसे खिरणी ( कर ) नहीं दिया, कुछ लडाई भी हुई। अन्तमें बाजीराव पेशवाने मल्हार रावसे कहाः-

" *बाजेराय मल्हारसौं कहतो गयो कथाह।*
और राव सब राव है सांवत बात अथाह ॥ "
यह दोहा उस देशमें अत्यन्त प्रसिद्ध है।

सम्वत १८०४ में जब कि मुहम्मदशाह दिल्लीके तख्त पर बैठ चुके थे, पठानोंने दिल्ली पर चढाईकी, उस समय मुहम्मद शाहने यहां भी फर्मान भेजा था, इनके पिता श्रीमहाराज राजसिंहजी जानेकोप्रस्तुत हुए. परन्तु इन्होंने कहा कि आप बहुतेरी लडाइयें लड चुकेहैं इसपर हमें जाने दीजिये, निदान पिताकी आज्ञासे ये अपने पुत्र सरदारसिंहके साथ दिल्लीगए परंतु बादशाहने इन्हें मुहिम

---

See Journal Asiatic Society Bengal Part 1 No. I
Vol. LXVI page 57.

यह खानदौरा फर्रुखसियरके भी सर्दारोंमें था। श्रीधर लिखते हैं:
" सज्यो खानदौरा सुबहादुर। समसामुद्दौला सिपाहपुर।
उतहि उनको खानदौरा। इतहि सजि यह खानदौरा ॥
संग केतिक खानदौरा। मनहु उनको खान दौरा ॥ १३ ॥
ऐसेही अनेक स्थानपर लिखा है।

पर नहीं भेजा, अपनेही पास रक्खा विदित होता है कि इसी समयसे इनसे आनँदघनजीसे मित्रता हुई। सम्वत १८०५ में मुहम्मद शाह मर गए और उसी समय इनकेपिता महाराज राजसिंहजीकाभी परलोक हुआ और सम्वत १८०५ वैशाख सुदी ५ को ये गद्दीपर बैठे।

इस घटनाको एक वर्षभी न वीता था. ये इधर दिल्ली आए थे उधर इनके छोटे भाई वहादुरसिंहजीने राज्यपर अधिकार कर लिया। दिल्लीकी बादशाहतमें तो कुछ जोर रहही नहीं गया था, और मरहठोंका चढता समय था. उन लोगोंके पास सहायता लेनेके लिये यह भी गए, रास्तेमें अपने पुत्र सरदारसिंहको घासेडा नगरजो वडगूजर जातिके राजपूतोंकी राजधानी था और जहां सरदारसिंहजी व्याहेथे, भेज दिया और आप मरहठोंके पास गये। उनके साथ आप कुमाऊंकी मुहिम्मपर गये।

कमाऊंकी लडाई संवत १८०८ में हुई थीं; वहीं 'जुगलभक्तिविनोद' ग्रंथ बनाया था।

" अष्टादश सत अष्ट पुनि, संवत माघ सुमास। जुगल भक्त गुन ग्रंथ यह, कियो नागरीदास ॥ निकट कमाऊं पर्वतनि, विकट विटपकी भीर। तहां ग्रंथ रचना भई, नदी कौसिकी तीर ॥ "

वहांकी लूटके विषयमें लिखते हैंः—

" लाज छांडि मनकों भजौ, दीजै मनकौ छूट।
कम्माऊंकी मुहिम मैं, जैसैं लूटा लूट ॥ "

इसीके पीछे ही आपने " तीर्थानन्द ग्रंथ " बनाया है और उसमें उसी सिलसिलेसे मुकाम भी दिये हैं, जैसे रूपनगरसे सांभर गये, वहां देवयानीका वर्णन किया है, जैपुरमें गलता ( गालवाश्रम ) का वर्णन किया है फिर वृन्दावन आए यहांसे अपने पुत्रको घासेडामें भेज आप मरहठोंके पास गये. फिर उनकेसाथ कुमाऊं। मरहठोंको अपने साथ लेकर फिर श्रीवृंदावन आए; आप तो नहीं रहगये और अपने पुत्रको मरहठोंके साथ लडनेको भेज दिया, इन्हें वृंदावन स्वप्नमें आज्ञा हुई थी कि तुम यहीं निवास करो राज्य तुह्मारे लडकेको मिलैगा, निदान बहुत लडाईके पीछे संवत १८१३ में वहादुरसिंहजी और सरदार सिंहजीने रा-ज्यको दो भाग करके बांट लिया।

संवत १८१२ के फाल्गुणमें इन्होंने कुटुंब यात्राके निमित्त प्रस्थान किया सुनते हैं कि उस समय इनके साथ आनंदघनजीभी थे परंतु जयपुरहीसे लौट आये, और इस भ्रातृ विरोधने कुछ ऐसा असर इनके हृदयपर किया कि फिर इन्होंने राज्यगद्दीपर पैर न रक्खा और संवत १८१४ द्वितीय आश्विन शुक्ल १० को अपने कुंवर सरदार सिंहजीको युवराज बना आप आश्विन सु० ११ को श्रीवृंदावन चले गये, उनके हृदयका भाव कैसा बदलगया था यह ये दोहे कहे देते हैं:—

"जहां कलह तहां सुख नहीं, कलह सुखन कौ सूल ।
सबह कलह इक राज मैं, राज कलहको मूल ॥
मेरे या मन मूढ तैं, डरत रहत हौं हाय ।
वृन्दावनकी ओर तैं, मति कबहूं फिरि जाय ॥
लेत न सुख हरिभक्तिकौ, सकल सुखनि कौ सार ।
कहा भयो नृपहू भए, ढोवत जग बेगार ॥
और भौन देखौं न अब, देखूं वृन्दा भौन ।
हरिसौं सुधरी चाहिये, सबही बिगरै क्यौंन ॥
ब्रजमैं व्है व्हैकढत दिन, किते दिये लै खोय ।
अब कैं अब कैं कहत ही, वह अब कैं कब होय ॥
राज बडे बडे देत हरि, तिनमैं लाख करोर ।
पैकाहूको नाहिं वै, खीन्चत अपनी ओर ॥"

संवत १८१० में 'तीर्थानन्द' ग्रंथ बनाया । परंतु यह ग्रंथ संवत १८०८ से आरम्भ होकर संवत १० में पूरा हुआ प्रतीत होता है यदि ऐसा न हो तो इसमें तो संदेह नहीं है कि इन्हीं दो वर्षोंकी कथा इसमें लिखीगई हैं और इसीकी समालोचनामें हमारे पाठक बहुत कुछ समाचार आपके जीवनचरित्रका पावैंगे । इस ग्रंथका आरंभ यों किया है:—

"जब चले स्थिति तें देस आन । चित्त किए देवयानी सनान ॥" फिर लिखते हैं "पुनि चले तहां तें नाय माथ । परसे गोविन्द गोकुलके नाथ ॥ पुनि गालव आश्रम अति अगम्य । जहां भ्रमत फिरत अति मधुप झुंड ॥" वहांसे ब्रजमें आए । पहिले श्रीगोवर्धन आकर रहे । यहां का वर्णन पाठकोंके सुनने योग्य है:—

"पायन प्रदच्छना दई फेर । चित्त रसिकसंग गन गुनी घेर ॥ कलगान

कीरतन बन्यों रंग । बड झांझ झनक बाजत मृदंग ॥ बन ग्वाल गऊ चले सुनत साथ ॥ मधु पिवत श्रवन पुट कृष्ण गाथ ॥ सब अनन्य मंडली छकी प्रेम । चित गए भूलि तब मनके नेम ॥ आये चलि तेहि ठां रसिककुंड । तहँ राधाकुंड अरु कृष्णकुंड ॥ उत तें उमगे सुनि रसिकवृन्द । उठि चले सामुहे बढि आनन्द ॥ तहं रूपे सूर सन्मुख संभारि । बहि चले परस्पर प्रेमवारि ॥ हुंकार शब्द करि गिरि निसंक । कोउ चलत धरनि धुकि भरत अंक ॥ वंसीदास अरु मुरलिदास । मनु महारथी ये प्रेमरास ॥ बिच खेत परे मूर्छित निदान । सोए सर सज्जा गान तान ॥ सुख प्रेम भक्तिको भयो प्रात । मुखसों न कछू है बरन्यो जात ॥ दंपत रस संपत बर बिहार । फिर गाय चले तन मन संभार ॥ परक्रमा दै गिरिवर सुभाय । मधुपुरी चले दुख बिरह छाय ॥"

गिरिराजसे श्रीमथुरामें आए वहां विश्रांतघाट स्नान किया । सांझको विश्रांत पर श्रीयमुनाजीकी आरतीकी बडी शोभा वर्णनकी है । वहां एक वृद्धा तपस्विनी रहतीथीं, जो केवल दूधही पीतीथीं, उनका दर्शन करके श्रीवृन्दावन आए इन समय इनका नाम चारों ओर फैल गयाथा और इनके प्रेमका आस्वाद प्रेमीमात्रको मिल चुकाथा, क्योंकि श्रीवृन्दावनमें इनको महाराज कृष्णगढ सुनकर तो लोग उदासीन भावसे अलगही अलग रहे परंतु जब सुना कि नागरीदासजी येही है तो दौड २ कर श्रीवनके महात्मा लोग लिपट गए ।

"सुनि ब्योहारक नाम मो. ठाढे दूर उदास ।
दौरि मिले भरि नैन सुनि, नाम नागरीदास ॥

इक मिलत भुजनि भरि दौरि दौरि । इक टेरि बुलावत और और ॥ कोउ चले जात सहजै सुभाय । पद गाय उठत भोगहिं सुनाय ॥ जेपरे धूर मधि मत्त चित्त । तेउ दौरि मिलत तजि रीति नित्त ॥ अतिसय बिरक्त तिनके सुभाव । ते गनत न राजा रंक राव ॥ वे सिमिट सिमिट सब आय आय । फिर छाडत पद पढवाय गाय ॥"

इससे विदित होता है कि उस समयतक इनकी कविताका पूरा प्रचार होगयाथा और महात्मा लोग बडे चावसे पढते और याद करतेथे ।

वहां श्रीबांके विहारीजी ( श्रीस्वामी हरिदासजीके सेव्य ठाकुर ) का दर्शन किया इस समय इनके साथ इनकी पासवान ( उपस्त्री ) बनीठनीजी भी थी और उन्होंने रसिकबिहारीछाप देकर कई एक पद गाये पहिले मुझे सन्देहथा कि उस अव-

8-12

सरपर रसिक बिहारी छाप रखकर स्वयं ही पद बनायेथे परंतु कृष्णगढके लेखसे विदित हुआकि रसिक बिहारी छाप उनके पासवान बनीठनजीकी है तब विचार पूर्वक निम्न लिखित कविताके देखनेसेभी यह निश्चय हुआ आप लिखते हैं:—

'बनो बिहारिनि रससनी निकट बिहारी लाल ।
पान कियो इन दृगनि तें अनुपम रूप रसाल ॥
तहं पद गाए औसर संजोग । बिच रसिक बिहारीहीके भोग ॥'

जान पडता है नागरीदासजी बनी ठनीजीको प्रेमसे केवल बनीही कहकर पुकारतेथे और यहभी इससे स्पष्ट है कि वे प्रायः उनको साथ रखतेथे तथा विशेष पर्दा आदिका विचार नहीं करतेथे ।

हम पाठकोंको उनमेंसे एक पद "उत्सवमाला" ग्रन्थसे उद्धृत करके सुनाते हैं । इस छापके तीन पद और चार दोहे उक्त ग्रन्थमें है ।

'कुंजमहलमें आजु रंग होरी हो । फाग खेलमें बना बनीकी व्हे रही पट गठजोरी हो ॥ मुदित व्है नारिगुलाल उडावें गावें गारि दुहंओरी हो । दूलह रसिकबिहारी सुन्दर दुलहिनि नवल किसोरी हो ॥ १ ॥"

यहां यहभी कहे बिना नहीं रह सकतेकि इनका प्रेम अधिक हरिवंशी और हरिदासी वैष्णवोंसे था क्योंकि इनके पदोंकी शैली प्रायः उनसे मिलती जुलती है और ये प्रायः श्रीवृन्दावनही में रहतेथे और वहां इन्हीं संप्रदायोंके महात्मा अधिकथे, गोकुलका वर्णन बहुत कम किया है ।

गोधूलक समय ज्ञान गुदरी आए, वहांभी देरतक समाज रहा । वहांसे जमुना पार उतरे ।

"सहि गई दुर्मति दुख असहि, बहि गई बुरी बयार ।
रहि गई ब्रज अवसेर हिय, उतरे जमुना पार ॥ "

वहांसे श्रीजमुनाजीका स्नान करके सोरूमें आकर रहे । यह स्थान जिला एटामें है यहां बुढगंगाजीका स्नान किया । यहीं भगवानका श्रीवाराहावतार हुआ है हिरण्याक्षको माराहै । इसका उपनाम उकल क्षेत्र और दूसरा शूकरक्षेत्र है ।

वहां एक नौकरने श्रीगंगाजीके तटपर बकरा मारा इसपर गंगाजीने क्रोध किया बडी बाढ आई फिर नागरीदासजीने स्तुति किया तब शान्त हुई ।

"तहँ किए एक अनुचर अधर्म । तटि हत्यो अंजासुत पापकर्म ॥ कछु

क्रोध कियो गंगा कृपाल। दई आन अचानक जल उछाल॥ भुवफाट गिरत अररात जोर। अति भयो भयंकर समय सोर॥ भजि पटकि २ डेरा निकारि। भयभीत सकल कौतिक निहार॥ जब करी स्तुतिसु सिर नाय पाव। करिछमा कियो सीतल सुभाव॥"

दूसरे दिन दीपदान किया।

वहांसे कपिलाश्रम ( कपिलग्राम ) में आए जहां कपिलदेवजीने तपस्याकी है। वहांसे नावके पुलपर गंगापार उतरे। एक नदी रामगंगा§ और मिलीं उनका स्नान करके धवलागिरिके पास कौसिक नदीके तटपर कमाऊं×में पहुंचे वहां बहुत दिन रहे और वहांसे संधि करके लौटे। हम ऊपर लिख चुके हैं संवत १८०८ में यह ग्रंथ बनना आरम्भ हुआ "जुगल भक्त बिनोद" वहीं संवत१८०८ में बनाया है जिसका वर्णन ऊपर है।

" रहे बहुत दिवस कौसिकी तीर। करि चले तहां तें संधिबीर " फागुन वहीं बीता। ब्रजके फागका ध्यान करते यह वर मांगाकि परसाल अब होरी ब्रज में ही हो यही हुआभी।

उसी रास्ते से लौटते हुए श्रीवृन्दावनके उस पार रातको पहुंचे। उस

---

W. W. Hunter's gazetteer of India.

§ Ramganga–Eastern—a river in Kumaun district N. W. P. rises on the Southern Slope of the main Hamalayan range at an elevation of 9000 ft above sea level and falls into the Sarju at Rameshwar.

Vol VII 537 Page.

× Kamaun—The Principal District of the Division of the same name. In 1814 it was resolved to annex it to British possessions. At the end of January 1815, every thing was ready for the attack on Kamaun. The first successful event on the British side was the capture of Almora by colonal Nicholson on 26 April 1815. Population 425963 Hindus 5569 Mussalmans in 1872. It has a mild climate. Vol V 471 Page. Population in 1881 493641.

समय कोई नाव या बेडा न मिला; उधर श्रीवृन्दावनका वियोग कोन सह सकता था। अत: श्रीयमुनाजीमें कूद पडे और तैर कर श्रीवृन्दावन पहुंचे कुछ लोग इनके साथ आए कुछ रह गए। आप यों लिखते हैं:—

"देख्यो श्रीवृन्दाविपिन पार। बिच बहत महा गंभीर धार॥ नाहिं नाव नहीं कुछ और दाव। हे दई कहा कीजै उपाव॥ रहे वार लगनिकों लगै लाज। गए पारहिं पूजे सकल काज॥

प्रेमपंथकों पीठ दै, यह जीवौ न सुहाय।
मंगल दिन है आजुकौ, प्रिय सन्मुख जियजाय॥

यह चित्त मांझ करिकै विचार। परे कूद कूद जल मध्यधार॥ चले पैर पैर तराय धाय। तहां भई लगन सबै विधि सहाय॥ तरि गए तरुन जा दयौ पार। गहि हाथ लए व्रजनाथ वार॥

वार रहे रहे वार ते, पार भये भये पार।
दरसे वृन्दाविपिन विच, राधानन्द कुमार॥"

वहांका आनन्द लूटकर दिल्ली आए और यहां वर्षोंसे छुट्टी पा सांसारिक व्यवहारोंको छोड राज्य कुटुंबसे मुंह मोड अकेले श्रीवृन्दावन वास आरम्भ किया। यह समय संवत १८०९ के आरम्भका है। क्योंकि १८०८ का फाल्गुन कमाऊंमें हुआ और वर्षोत्सवका वर्णन आगे चलकर इस ग्रंथमें किया है उसके उपरांत अर्थात् वर्ष दिन श्रीव्रजमें रहने पीछे संवत १८१० के माघमें यह ग्रंथ "तीर्थानन्द" पूराहुआ है।

आप दिल्लीका वृत्तांतयों लिखते हैं:—

"फिर बहे वीच राजस प्रवाह। गए इन्द्रप्रस्थ हिय बिरह दाह॥ दिल्ली दिवार कहकहा धाम। लियो फेरि तहां ते मोहि श्याम॥ तजि दयो तहां सब प्रवृत्त संग। भयो व्रज सनमुख फिरी बढयो रंग॥ जब कह्यो सुता लडकाय भाय। लयो बोलि मोंहि वृषभानुराय॥ तब चले चरन बरसाने ओर। किए पैंड पैंड तीरथ करोर॥"

आगे फिर लिखते हैं:—

"ऐसो बरसानो निरखि, गहवर आयो प्रेम। करत दंडवत लुटतरज, छुटि गए राजस नेम॥"

इसके आगे आषाढ फिर सावनमें हिंडोलाका वर्णन बरसानेमें किया है फिर

भादोंमें श्रीकृष्ण जन्मोत्सव नंदगांवमें और ललिता जन्मोत्सव करेला ग्राममें किया वहांसे सुनहराकी कदमखंडीमें दानलीलाका अनुभव किया फिर भादों सुदी सप्तमी॰ को बरसानेमें आकर श्रीराधाजन्मोत्सवका दर्शन किया। नवमीको मोरकुटी, दानगढ, मानगढ, की लीला देखी; दशमी कोकिलावन, फिसलनीशिला, सांकरीखोरमें दानलीला श्रीवृन्दावन, आश्विन मासमें सांझी, शारदीय पूर्णिमा, रासोत्सव देखा।

कार्तिक कृष्ण सप्तमीको श्रीराधाकुंड आए। दीपमालीका और अन्नकूट श्रीगिरिराजमें किया। गोपाष्टमीको नंदगावमें। अगहन और पूस बरसानेमें रहे। बरसानेमें बसन्त और होली किया। होली वर्णन बडी धूमसे किया है। चैत्र बैशाष जेठका वर्णन कुछ नहीं किया यही लिषा दियाः—

" मधु माधव जेठोत्सव, याते बरन्यो नाहिं।
एक फाग आगें जिते, सब फीके दरसाहिं ॥ "

अंतमें इन दोहोंके साथ " तीर्थानंद " को पूरा किया है।

यहाँ व.. " गौर सांवरे रसिक दोउ, यह दीजे सुख रास।
में ही है. कबहुं नागरीदास अब, तजै न ब्रजको वास ॥
माघ अष्टदससतजु दस, बिच बृन्दावन बास।
—— ग्रंथ तीर्थानन्द यह, कियो नागरीदास ॥ "

## नागरीदासजीके बनाए ग्रंथ इतने हैं

( १ ) सिंगारसार वा ब्रजलीलापदप्रसंग
( २ ) गोपीप्रेमप्रकाश ( सं १८०० )
( ३ ) पद प्रसंग माला
( ४ ) ब्रजवैकुंठ तुला ( सं १८०१ )
( ५ ) ब्रज सार ( सं १७९९ )
( ६ ) भोर लीला
( ७ ) प्रातरस मंजरी
( ८ ) विहारचंद्रिका ( सं १७८८ )
( ९ ) भोजनानन्दाष्टक
( १० ) जुगलरस मंजरी
( ११ ) फूल विलास
( १२ ) गोधन आगमन
( १३ ) दोहन आनन्द
( १४ ) लग्नाष्टक
( १५ ) फाग विलास
( १६ ) ग्रीष्म विहार
( १७ ) पावस पचीसी
( १८ ) गोपी बैन विलास
( १९ ) रास रस लता
( २० ) रैन रूपरस
( २१ ) शीतसार
( २२ ) इश्क चिमन

(२३) मजलिस मंडन
(२४) अरिलाष्टक
(२५) सदाकी मांझ
(२६) वर्षाऋतुकी मांझ
(२७) होरीकी मांझ
(२८) कृष्णजन्मोत्सव कवित्त
(२९) प्रियाजन्मोत्सव कवित्त
(३०) सांझीके कवित्त
(३१) रासके कवित्त
(३२) चांदनीके कवित्त
(३३) दिवारीके कवित्त
(३४) गोवर्धनधारनके कवित्त
(३५) होरीके कवित्त
(३६) फाग गोकुलाष्टक
(३७) हिंडोराके कवित्त
(३८) वर्षाके कवित्त
(३९) भक्ति मगदीपिका (सं१८०२)
(४०) तीर्थानन्द (१८१०)
(४१) फाग विहार (सं. १८०८)
(४२) बालविनोद (सं. १८०९)
(४३) सुजनानन्द (सं. १८१०)
(४४) बन विनोद (सं. १८०९)
(४५) भक्तिसार (सं. १७९९)
(४६) देहदसा
(४७) वैरागवल्ली
(४८) रसिक रत्नावली (सं १७८२)
(४९) कलि वैराग वल्लरी (सं. १७९९)
(५०) अरिलपचीसी
(५१) छूटकविधि
(५२) पारायणविधिप्रकाश (सं१७९९)
(५३) सिखनख
(५४) नखसिख
(५५) छूटक कवित्त
(५६) चरचरियां
(५७) रेखता
(५८) मनोरथ मंजरी (सं. १७८०)
(५९) रामचरित्र माला
(६०) पद प्रबोध माला
(६१) जुगलभक्ति विनोद (सं.१८०८)
(६२) रसानुक्रमके दोहा
(६३) शरदकी मांझ
(६४) सांझी फूल बीनन समेत सम्वाद
(६५) बसन्त वर्णन
(६६) फाग खेलनसमेतानुक्रम कवित्त
(६७) रासानुक्रमके कवित्त
(६८) निकुंज विलास (सं. १७९४)
(६९) गोविन्द परचई
(७०) बनजनप्रशंसा (सं.१८१९)
(७१) छूटक दोहा
(७२) उत्सव माला
(७३) पदमुक्तावली

(७४) बैन विलास
(७५) गुप्तरस प्रकाश

कृष्णगढ़के कवीश्वरजी लिखते है कि इनदोनों ग्रंथोंके नाम नागरीदासजीके ग्रंथावलीमें है परंतु ग्रं मिलते नहीं ।

इनमेंसे जिनका समय ग्रंथोंमें दिया है उसे उद्धृत करते हैं ।

मनोरथमंजरी ( नं० ५८ )

दोहा । संवत सतरासै असी, चौरस मङ्गलवार ।
प्रगट मनोरथ-मंजरी वदि भासू अवतार ॥

रसिकरत्नावली ( नं० ४८ )

दोहा । सत्तरै सै वइयासिये, भादो सुदि भृगु वार ।
तिथि परिवा कीनी इहै, लीजो सन्त सुधार ॥

बिहारचंद्रिका ( नं० ८ )

दोहा । सत्तरै सै अठ्यासिया, संवत सांवन मास ।
नव विहार यह चन्द्रिका, करी नागरीदास ॥

कलिवैरागवल्ली ( नं० ४९ )

दोहा । सत्तरासै पच्याणवें, संबत सावण मास ।
कलिवल्लीवैरागकी, करी नागरीदास ॥

भक्तिसार ( नं० ४५ )

कुण्डलिया । सुख पायौ पूरन भयैं, ग्रन्थ जु भाषा चार ।
सतरासै निनांनवै, द्वैज चौस गुरुवार ॥
द्वैज चौस गुरुवार मास सावन मन भावन ।
कृष्णपक्ष सुभ मन्त्र सन्त जन श्रवन सुहावन ॥
भक्ति सार उचार कियौ निज मन समुझायौ ।
नागरी दास न कहूं विमुष काहू सुख पायौ ॥

पारायणविधि प्रकाश ( नं. ५२ )

दोहा । सत्तरैसै निनांनवै, संबत सावन मास ।
पारायन जु प्रकास-विधि कियौ नागरीदास ॥

व्रजसार ( नं. ५ )

दोहा । सत्तरैसै निनांनवै, पोस जु सुदि रवि-वार ।
नौमी नागरीदास यह कियो ग्रन्थ व्रज-सार ॥

गोपीप्रेमप्रकाश ( नं. २ )

दोहा । संवत अठारैसै सुकल प[illegible] जेठ सुभ मास ।

गोपीप्रेमप्रकाश यह, कियौ नागरीदास ॥

ब्रज वैकुंठतुला (नं. ४)

दोहा । संवत अठारैसै जु इक, दिन वसन्त सुभ मास ।
ब्रज बैकुण्ठ तुला कियौ, ग्रन्थ नागरीदास ॥

भक्तिमगदीपिका (नं० ३९)

दोहा । संवत अष्टदस सतजु द्वै, क्वार तीजगुरुवार ।
रूप नगर विचि कृष्णपक्ष, भयौ ग्रन्थ विस्तार ॥

फागविहार (नं० ४१)

दोहा । संवत अष्टदस सतजु पुन, अष्टवर्ष मधु मास ।
ग्रन्थ गङ्गतटि कृष्णपक्ष, कियो नागरीदास ॥

जुगलभक्तिविनोद (नं० ६१)

दोहा । अष्टादस सत अष्ट पुनि, संवत माघ सुमास ।
जुगल भक्ति गुन ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास ।
निकट कमाऊं पर्वतनि, विकट विटपकी भीर ।
तहां ग्रन्थ रचना भई, नदी कौसिकी तीर ॥

बनविनोद (नं० ४४)

दोहा । समत अठारह सौ जु नव, कृष्णपक्ष मधु मास ।
वन विनोद कल ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास ॥

बालविनोद (नं० ४२)

दोहा । समत अष्टदस सत जु नव, मास अस्वनि भृगुवार ।
तिथि षष्टमि अरु शुक्लपक्ष, रच्यौ ग्रन्थ विस्तार ॥

तीर्थानन्द (नं० ४०)

दोहा । माघ अष्टदस सत जु दस, विचि वृन्दावन वास ।
ग्रन्थ तीरथानन्द यह, कियौ नागरीदास ॥

सुजनानन्द (नं० ४३)

दोहा । समत अष्टदस सत जु दस, बरसानेके वास ।
ग्रन्थ सु-सुजनानन्द यह, कियो नागरीदास ॥

बनजन प्रशंसा ( नं० ७० )

दोहा । अष्टादस सत दस जु नव, संवत माघ सु मास ।
वन जन-प्रसन्स ग्रन्थ यह, कियौ नागरीदास ॥

सबसे पहिला ग्रन्थ जो इनका मिला वह मनोर्थमंजरी जो सं० १७८० में बना, दूसरा रसिकरत्नावली सं० १७८२ में तीसरा "बिहारचंद्रिका" संवत १७८८ में बना ।

इस समै जैसी सुन्दर और प्रौढ कविता आपकी है उसे हम अपने पाठकोंको "बिहारचंद्रिका" का एक अंश लेकर सुनाते हैं इसीसे वे सारे ग्रंथका गौरव समझलेंगें ।

"उज्जल पक्षकि रैन चैन उज्जल रस दैनी ।
उदित भयो उडराज अरुन दुति मन हर लैनी ॥
महा कुपित व्है काम ब्रह्म अस्त्रहिं छोड्यौ मनौं ।
प्राची दिसि तें प्रजुलित आवति अगिनि उठी जनौं ॥
दहन मानपुर भए मिलनकौं मनहुलसावत ।
छावत छिपा अमन्द चन्द ज्यों ज्यों नभ आवत ॥
जगमगाति बन जोति सोत अमृतधारासे ।
नवद्रुम किसलय दलनि चारु चमकत तारासे ॥
स्वेत रजतकी रैन चैन चित मैन उमहनी ।
तैसी मन्द सुगन्ध पौन दिनमनि दुख दहनी ॥
मधिनायक गिरिराज पदिक वृंदाबन भूपन ।
फटिकसीला मनि शृंग जगमगति दुति निर्दूषन ॥
सिला सिला प्रति चन्द चमकि किरननिछबि छाई ।
बिच बिच अम्ब कदम्ब झम्ब झुकि पायनि आई ॥
ठौर ठौर चहुं फेर ढेर फूलनके सोहत ।
करत सुगन्धित पवन सहज मन मोहत जोहत ॥
बिमल नीर निर्झरत कहूं झरना सुख करना ।
महा सुगन्धित सहज बास कुमकुममद हरना ॥
कहुं कहुं हीरन खचित रचित मंडल सु रासिके ।

जटित नगन कहुं जुगल खम्भ झूलनि बिलासिके ॥
ठौर २ लखि ठौर रहत मनमथ सोभारी ।
विहरत विविध विहार तहां गिरिपर गिरि धारी ॥
दोहा। कहत कहत कहँ लगि कहै, अब कवि छवि अभिराम ।
प्रिया कमल पद परस हित, धरचो रूपगिरि श्याम ॥ १ ॥

नागरीदासजीकी सभामें निम्न लिखित कवि वर्तमानथे ।

१ प्रसिद्ध कवि वृन्द ( जिनकी बनाई वृन्दसतसई है ) के, पुत्र वल्लभजी, इनको महाराज नागरीदासके पिता महाराज राज सिहंजीने "सुकवि" की पदवीदी थी, अतएव ये सुकवि वल्लभ कहलातेथे ।

२ पूरबकी ओरके रहनेवाले सनाढ्य हरिचरणदासजी, इनके बनाए ग्रंथ सभाप्रकाश, कवि बल्लभ ( इन दोनों ग्रंथोंमें काव्य प्रकाशका ठीक ठीक उलथा किया है ) विहारी सत सईकी "हरिप्रकाश" नामक टीका, रसिकप्रियाकी टीका, कविप्रियाकी टीका इत्यादि हैं ।

३ करौलीके सनाढ्य हीरालालजी. इनका बनाया "सिरदार सुजस" नामक ग्रंथ है, जिसमें महाराज नागरीदासजीके अनुज महाराज बहादुरसिंहने जब राज्य छीन लियाथा और नागरीदासजीने अपने पुत्र सरदारसिंहजीके साथ कुमाऊं आदि प्रदेशमें जाकर मरहठोंको लाकर अपना राज्य लिया उसका वृत्तांत लिखा है ।

४ मुंशी कनीरामजी, इनके मीर मुंशी थे, कवीभी थे ।

५ कल्लाह पन्नालालजी, कविथे

६ वैष्णव विजय चन्द्रजी, कविथे

७ बनी ठनीजी, जिनका वर्णन ऊपरहो चुका है ।

८ दाहिवां विजय रामजी , कवि थे ।

९ बाहरके बहुतेरे कवि पंडित आतेथे, जिनमेंसे नरवर गढके राव उदयनाथजी

१ वृन्द-No. 837 The Modern Literature of Hindustan.

२ हरिचरणदास-No. 939-Do.

३ हीरालाल-No. 948-Do.

बहुत प्रसिद्धथे इन्होंने नागरीदासजीके सिंहके शिकारका एक ग्रंथ बनाया है इनमेंसे डाकर ग्रिअर्सन और शिवसिंहने केवल पहिले लिखे तीन कवियोंका यत्किंचित वर्णन किया है परंतु प्रायःसमयमें भ्रम हैं और वर्णनभी नाम मात्र है।

अन्तमें वनजनप्रशंसक ग्रंथसे श्रीवृन्दावन बासपर नागरीदासजीके हृदयमें कैसा संतोष इस पदमें झलकता है।

"हमारी सबही बात सुधारी।
कृपा करी श्रीकुंजविहारिनि अरु श्रीकुंजविहारी।
राख्यो अपने वृन्दावनमें जिहिको रूप उंज्यारी।
नित्त केलि आनंद अखंडित रसिक संग सुखकारी॥
कलह कलेस न व्यापै इहिठां ठौर त्रिश्वतें न्यारी।
नागरीदासहिं जनम जिवायौ वलिहारी वलिहारी॥ १॥"

"व्रज सम्बन्ध" ग्रन्थसेः—

"सांचो मित्र गोपाल है मेरो परम पियारौ।
जिहिं दीनौ व्रजवासलै वैकुंठ तें भारौ॥
निज साधनको संग दयोनीकेते नीकौ।
जाके पटतर क्यों लगे सुख स्वर्गको फीकौ॥
राज कलहके मूलको विष अमल छुटायौ।
नागरियावृन्दाविपुल रस अमृत प्यायौ॥ १॥"

हम इन महानुभाव प्रेमरस छके महात्माका चरित्र उन्हीके इस छप्पयके साथ समाप्त करते हैं।

"धनि वह कुल धनि नगर धन्य वह देस सुमंडल।
धन्य खंड वह द्वीप धन्य वह सकल महीतल॥
धन्य धन्य सबलोक होत जेहि पावन पावन।
मुख रसना वह धन्य करत तिनको गुन गावन॥
जाकी महिमा कहि सकै को कवि नागर मध्य छित।
करत धन्य इन नैनिको जेहि उर प्रेमानन्द नित" ॥ १॥

वर्तमान महाराजाधिराज महाराज श्रीश्रीश्री १०८श्री श्रीशार्दूलसिंहजीम.



श्रीः ।

नृत्यगोपालो जयतितराम् ॥

# अथ छप्पनभोगचंद्रिका

## लिख्यते ॥

## तत्रादौपूर्वार्द्ध

॥ दोहा ॥ चरनकंजअशरनशरन, हरनअमितअपराध ॥ वंदौंश्रीगुरुदेवके, देवहुबुद्धिअगाध ॥ १ ॥ श्रीजीनृत्यगुपालके, चरनकमलउरधारि ॥ छप्पनभोगउछाहको, रचौंग्रंथसुखकारि॥२॥ कृष्णगढ़पतिराठवर, श्रीशार्दूलनरेश ॥ तिनकेअनुजजवानसिंह, पालकधर्महमेश ॥ ३ ॥ तिनकीनौंआनंदसौं, छप्पनभोगउछाह ॥ श्रीकल्यानसुरायके, चरनकमलचितचाहि ॥ ४ ॥ नृपजवानमहाराजहिय, छप्पनभोगहुलास ॥ कीनोपूरनचंदसो, जगमेंपरमप्रकाश ॥ ५ ॥ जहांदीखतहैचंद्रिका, तहांहीचंदलखाय ॥ सोचिवांचियोंग्रंथतें, भईवातलखिजाय ॥ ६ ॥ छप्पनभोगसुचंद्रिका, नामग्रंथकोदीन ॥ हरिसँबंधगुनसमझिकैं, लेऊसराहप्रवीन ॥ ७ ॥

कृष्णगढमहाराजके, गृहमेंहैंनिधिपांच ॥ तिनकीनिजवार्ताप्रथम, कहौंगहैंपनसांच ॥ ८ ॥ नृपवंशजुपुनिवर्निहौं, प्रभुवार्ताअनुसंग ॥ पूर्वारधमेंप्रेमधरि, कहिहौंपरमप्रसंग ॥ ९ ॥ प्रथमहिबर्ननकरत हौं, सुंदरताकोदेश ॥ श्रीकल्यानसुरायकी, निजवार्ताकौंवेश ॥ १० ॥ श्रीजीअरुश्रीनाथजी, नामग्रंथमाधिआहि ॥ जहांकल्यानसुराय को, जानऊनामसराहि ॥ ११ ॥ छप्पय ॥ जयतिजयतिकल्यानरायकलिमलदुखभंजन ॥ जयतिजयतिबकबकीअसुरकंसादिविभंजन ॥ जयजयमुरलीमधुरनादकरिब्रजजनरंजन ॥ जयजयरासविलासरसानंदितमुनिमंजन ॥ जयजयतिरूपगिरिराजधरजयसुरपतिमदभंगकिय ॥ जयनंदसंगवृषभानगृहभोगरागअनुरागलिय[1] ॥ १२ ॥ दोहा ॥ यानिधिकोआगमसरस, नगरकृष्णगढजांनि ॥ भयोसुजैसीरीतिसौं, सोसबकहौंबखांनि ॥ १३ ॥ श्रीवल्लभआचार्य प्रभु, कृष्णसुमुखअवतार ॥ तिनकेविठ्ठलनाथ प्रभु, गोस्वामीसुउदार ॥ १४ ॥ सप्तपुत्रतिनकेभये, तिनमेंश्रीटीकैत ॥ गिरधरलालकृपालहैं, मायावादविजैत ॥ १५ ॥ गिरधरकेसुतत्रयभये, श्रीमुरलीधरज्येष्ठ ॥ दामोदरहैंदूसरे, सबगुनसौंअतिश्रेष्ठ ॥ ॥ १६ ॥ अतिसुंदरहैंतीसरे, दीक्षितगोपीनाथ ॥ पुष्टिधर्मपालकबनी, बढीसुजसकीगाथ ॥ १७ ॥ तिनकेचरनसरोजकी, शरनगहीसुखमान ॥ कृष्णगढपतिराठवर, रूपसिंहराजान ॥ १८ ॥ सतरैसैंअरुच्यारमें, लियोमंत्रउपदेश ॥ लखिगोवर्द्धननाथकौं, द

---

१ छप्पनभोगका मनोर्थ किया जाता है जिसकी भावना यह हैं कि श्रीकृष्णचंद्र नंदरायजीके साथ वृषभानजीके पाहुने पधारे हैं.।

रस्योसबब्रजदेश ॥ १९ ॥ मंत्रजपतहरिभक्ति रस, लीनभयोमन
मीन ॥ स्वपनेमेंश्रीनाथजी, दर्शनआज्ञादीन ॥ २० ॥ मोस्वरू
पपधराहु अब, रूपसिंहतुवगेह ॥ यहसुनिउठिमनचकितव्हैं, कीन
विचारजुएह ॥ २१ ॥ यहैंलाभगुरुदेव विन, कोकरिसकैंप्रवीन ॥
रूपसिंहकरजोरि तब, इकदिनविनतीकीन ॥ २२॥ जैंजैंप्रभुकीजैं
सफल, मोहिमनोरथसिद्ध ॥ सेवाकेहितदीजियैं, हरिस्वरूपकीनि
द्ध ॥ २३ ॥ दीक्षितगोपीनाथ प्रभु, आतुरदासहिचीन ॥ निजज
नपैंवात्सल्यकरि, ऐसैंआज्ञाकीन ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ सीखेसब
शृंगार, सातौंवालकप्रथमही॥ हैंस्वरूपसुखसार, विठ्ठलप्रभुकेसमय
को ॥ २५ ॥ जावहुलेहुनिहार, आज्ञासुनितबनृपचले ॥ छकि
गयेरूपनिहार, लखिस्वरूपश्रीनाथको॥२६॥ अनुभवभयोअमाव,
तवहीनृपकेहृदयमें॥ पहिलैंदियदरसाव, स्वपनेमेंश्रीनाथजी॥२७॥
॥ दोहा ॥ नृपदरशनकरिगुरु निकट, कीनीविनतीजाय ॥ यही
स्वरूपकृपालुमो, दीजैंशिरपधराय ॥ २८ ॥ श्रीदीक्षितगोस्वामि
प्रभु, निजजनकौंअपनाय ॥ श्रीजीकेसुस्वरूपकौं, दियेशीसप
धराय ॥ २९ ॥ दामोदरभटसंग दिय, सेवारीतिसुहेत ॥ तासौंनृ
पसमझीसबैं, सेवारीतिसचेत ॥ ३० ॥ विदामांगिगुरुसौंचले, चि
तमेंअतिशचुपाय ॥ अतिउमंगकरिकैंनृपति, श्रीजीसंगपधराय ॥
॥ ३१ ॥ दरमजलैमुकामकरि, सेवाकरतसप्रेम ॥ पधरायेनिजदे
शमें, साधतनवधानेम ॥ ३२ ॥ मांडलगढपधरायकैं, मंदिरसि
द्धकराय ॥ सबसाहित्यवनायकैं, चित्तबीचहरपाय ॥ ३३ ॥ स
तरेंसैइग्यारहैं, संवतमाघसुमास ॥ कृष्णपक्षतिथिप्रतिपदा, पाटो

त्सवसुखरास ॥ ३४ ॥ मांडलगढकेपरगनै, भटखेडीइकगाम ॥ दामोदरभटकौंदियो, रूपनृपतिअभिराम ॥ ३५ ॥ रूपसिंहमहाराजके, ताहिसमयकैंमांहि ॥ मांडलगढमेवारको, हुतोअमलकेमांहि ॥ ३६ ॥ मांडलगढमेवारको, जैसैंआयोहाथ ॥ रूपसिंह महाराज के,सोसुनियेंअबगाथ ॥ ३७ ॥ कृष्णगढ्ढकेनिकटइक, खोडांकोगिरिआहि ॥ विकटदुर्गतहांरचन नृप, कियआरंभसराहि ॥ ३८ ॥ दिल्लीपतिश्याज्याहजू, यहैं खबरसुनिलीन ॥ रूपनृपतिसौंजबकही, किंहिंकारनयहकीन ॥ ३९ ॥ रूपसिंहकीनीतबैं, दिल्लीपतिसौंअर्ज ॥ राजारानागढबिनन, करतव्याहकीगर्ज ॥ ॥ ४० ॥ बन्योबनायोगढतुम्हैं, देहौंकहिनृपईश ॥ मांडलगढमेवारको, करिदीनौंबखसीस ॥ ४१ ॥ मांडलगढहीकोरतन, देशाधिपकरिदीन ॥ तासौंतहांश्रीनाथको, मंदिरसिद्धसुकीन ॥ ४२ ॥ मांडलगढमेंनृपकियो, छबिसौंछप्पनभोग ॥ भयेप्रसन्नश्रीनाथजी, छप्पनभोगअरोग ॥ ४३ ॥ तनमनधनसुसमर्पिकैं, भूपतिरूपबलिष्ट ॥ छप्पनभोगछकायकैं, कियेप्रसन्ननिजइष्ट ॥ ४४ ॥ श्रीकल्यानसुरायप्रभु, होयभक्तआधीन ॥ रूपसिंहमहाराजसौं, सानुभावताकीन ॥ ४५ ॥ तिनप्रसंगकौंसुनतही, व्हैहैंसुखमेंलीन ॥ जिनजनकोमनव्हैरह्यो, भक्तिसिंधुरसमीन ॥ ४६ ॥ जिहिंठांजेसोसमयमें, जवैंभयोजिहिंढंग ॥ लिख्योलख्योदफतरमहीं, सोइकसुनियप्रसंग ॥ ४७ ॥ देशाधिपश्याज्यांहको, आयोजबफरमान ॥ श्रीजीकौंपधरायसंग, कीनौंनृपतिप्रयान ॥ ४८ ॥ रहतभयेकेतेदिवस, दिल्लीपतिकेदेश ॥ एकदिवसऐसोभई, अद्भुतवातविशेष ॥ ४९ ॥

रूपनृपतिकेहृदयमें, नवधासाधतनेम ॥ प्रेमभक्तदशमीभई, प्रभु पोषकजिंहिंप्रेम ॥ ५० ॥ श्रीजीकेशृंगारकौं, करतभयेरसलीन ॥ राजकाजकीबातकी, जहांकछुजातकहीन ॥ ५१ ॥ असवारीदि ल्लीशकी, निकसीआयअचान ॥ तबश्रीजीनिजरूपकिय, रूप सिंहराजान ॥ ५२ ॥ रूपसिंहकोरूपधरि, दिल्लीपतिपैंजाय ॥ नजरकरीतवश्याज्यहां, मुदरीदईसुहाय ॥ ५३ ॥ सेवासौंअवसर भयो, तबैंकरीसबअर्ज ॥ देशाधिपइंहिराहगो, कोजानैंकिंहिंग र्ज ॥ ५४ ॥ इतनेमेंदेशाधिपति, आयेयाहीराह ॥ तबैंजायकीनी नजर, रूपासिंहनरनाह ॥ ५५ ॥ रूपसिंहअतिशीघ्रतैं, देशाधि पकेपास ॥ गयेतबैंदेशाधिपति, कीनौंयहैंप्रकास ॥ ५६ ॥ पाहि लैंभीतुमरूपसिंह, करीनजरयहांआय ॥ दईअंगूठीहमतुमैं, करी नजरफिरआय ॥ ५७ ॥ अनुभवकरिहियमेंलख्यो, यहहरिहीको मर्ज ॥ अद्भुतसुनिधीरजधरी, करीमाधुरीअर्ज ॥ ५८ ॥ हरिगुरु स्वामीकेनिकट, जबजबसनमुखजाय ॥ भेटनजरनोछावरसु, क रियेंअतिहरपाय ॥ ५९॥ शिविरआपनेआयकें, रूपसिंहनरनाथ॥ श्रीजीसौंविनतीकरी, दीजेमुंदरीनाथ ॥ ६० ॥ सिंहासनसौंउछरि तब, परीअंगूठीआय ॥ प्रेमविवसव्हैंनृपतिजब, लीनीहियैंलगाय ॥ ॥ ६१ ॥ यौंसबभृत्यनकौंकही, करियैंप्रकटनयाहि ॥ वहिमुंदरी कीउर्वशी, करिवाईनृपचाह ॥ ६२ ॥ श्रीजीकेधारननृपति, [illegible]र वाईहरपाहि ॥ वहउर्वशिअद्यापिहैं, हाजरभूपनमांहि ॥ ६३ ॥ यह अद्भुतनाहिंमानियें, समझिभजनकीरीति ॥ प्रभुरच्छकहैंभक्तके,

१ फोजके मुकामके डेरे.

जोसेवैंधरिप्रीति ॥ ६४ ॥ प्रेमसुभक्तिप्रभावतैं, भक्तहोतहरिरूप ॥ यहअद्भुतश्रीजीधरचो, रूपसिंहकोरूप ॥ ६५ ॥ रूपसिंधकेत बभयो, जोविचारचितमांहि ॥ सोप्रकाशकविजयकरत, सुनियैंर सिकउमांहि ॥ ६६ ॥ दिल्लीपतिकीनजरको, ममहितप्रभुकौंखेद ॥ तासैंअबनिजदेशमैं, पधरावैंविनखेद ॥ ६७ ॥ यहैंमनोरथधारि मन, रूपसिंहनरनाह ॥ प्रभुकीप्रभुतासमझिचित, वाहवाहकहि वाह ॥ ६८ ॥ कृष्णगढ्ढउत्तरदिशहि, नामकवेराग्राम ॥ ग्रामववेरा मधिहुतो, भारमल्लकोधाम ॥ ६९ ॥ भारमल्लकेपुत्रयह, रूपसिं हअभिराम ॥ नगरवसायोप्रथमतहां, रूपनगरदियनाम ॥ ७० ॥ प्रपितारूपनरेशके, कृष्णसिंहमहाराज ॥ कृष्णगढ्ढनिजनामपैं, जैसैंकिययहसाज ॥ ७१ ॥ सतरैंसैअरुपांचमें, दइरूपनगरनीं व ॥ किलाकोटसबासिद्धिभो, वीरसुखदकीसीव ॥ ७२ ॥ गढमेंमं दिरसिद्धकिय, याअवसरकौंपाय ॥ अरुजलकीइकवापिका, क रिवाईसुखदाय ॥७३ ॥ यहसबसिद्धभयेतबैं, मनमैंधरिउत्साह ॥ रूपनगरश्रीनाथजी, पधरायेनरनाह ॥ ७४ ॥ छप्पय ॥ जयपु रपोत्तमरूपजयतिजयगिरिवरधारी ॥ जयजयव्यापकब्रह्मजयति जयकुंजबिहारी ॥ जयजयशुचिरसरूपजयतिजनमनअनुहारी ॥ जयविट्टलेशसुतसप्तखेलसेवाकेध री ॥ जयरूपसिंहनरईशकेशी स[illegible]राजेआंनकैं ॥ कल्यानरायवरनामसौंरूपनगरब्रजमानकैं ॥ ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ मंदिरकेसनमुखमहल, अपनेरहिवेहेत ॥ नृपव नायरहनेलगे, जबैंअनवसरलेत ॥ ७६ ॥ औरबातकहांलौंकहौं, से वाहितजेकीन ॥ नितगागरजलपानकी, वापीसौंभरिलीन ॥ ७७ ॥

तनमनधनसौंप्रीतकरि, साधेनवधानेम ॥ सर्वस्वात्मानिवेदनमु, भक्तिकरीकरिप्रेम ॥ ७८ ॥ नवधाभक्तिप्रभावको, बर्ननकियकवि वृंद ॥ वहिकवित्वयहांलिखतहौं, मोमनधरिआनंद ॥ ७९ ॥ कवि वर्यवृंदजीकृतमहाराजश्रीरूपसिंहजीकीवचनिका तामेंनवधानभक्तिकेकवित्वहैं वेहीयहांलिखैहैं ॥ नवधाभक्ति ॥ तत्रादौश्रवणभक्ति ॥ वचनिका ॥ प्रथम श्रीगिरिधारीजूकी श्रवनभक्ति जैसैं करी परीक्षित हितचित ॥ तैसैं राजारूपसिंह हरि गुन श्रवन करत नितनित ॥ कवित्त ॥ सागरसुधारकोहरिजसकोउजागरहैंनिर्मल रतनगुनआगरधरतहैं ॥ तापहरैंपापहरैंविषयविलापहरैंकलिकेकलापहरैंआनंदभरतहैं ॥ श्रवनसुवर्नकेकटोरानसौंभरिभरिअचवत अतिहीयहौंसनहरतहैं ॥ भूपतिपरीक्षितज्यौंभूपरूपनितप्रतिभगति सौंभागवतश्रवनकरतहैं ॥ १॥८०॥ गुनकीर्त्तन ॥ वचनिका ॥ दूजें भगति श्रीनारायन गुन कीरतन ॥ जासैं जाको निह चल मन पूरनपन ताको कीजें बर्नन ॥ कवित्त ॥ आतमतरनपरमातमकरनसममहातमहरनमहातमबतायोहैं ॥ अशरनशरनशरनताकैंकोऊ आंनधरानिधरनहूनजाकोपारपायोहैं ॥ पलपलछिनछिनप्रतिदिन प्रतिरैंनसुपनसुपनहूमेंभूलिनभुलायोहैं ॥ रूपभूपभगतिसूंभागवत सुनिसुनिशुकमुनिकीसीधुनिहरिगुनगायोहैं ॥ २ ॥ ८१ ॥ पूजन भक्ति ॥ वचनिका ॥ एक भगति हरिपद कंजनको पूजन जैसैं करैं भक्तजन ॥ जैसैं राजापृथु भगति करी तैसैं राजा रूपचित धरी ॥ कवित्त ॥ एनसारघनसारकुंकुमउवटिअंगगंगजलसौंन्हवा इतमैंमनदीनौंहैं ॥ वसनवनाइनगभूपनवनाइतनचंदनचढाइरचिरु

चिरसभीनौहैं ॥ पुहपच्चढाइवनमालापहराइधूपदीपदरसाइवालभो गअ्रागैंकीनौंहैं ॥ पृथ्वीपतिपृथुजैसैंप्रभुपदपूजिपूजिरूपभूपपूजन भगतिफललीनौंहैं ॥ ३ ॥ ८२ ॥ स्मर्नभक्ति ॥ वचनिका ॥ श्रौर एक भक्ति हरि सुमिरन तामैं दीजैं मन जैसैं सावधान भये प्रह-लाद ॥ तैसैं राजा रूप पायो भक्ति सुधाको सवाद ॥ कवित्त ॥ गुरुउपदेशपाइ ओरविसराइ ताहिविसरयोनछिनहियपाटीमांहिप ढ्योहैं ॥ करिमनमनकासुरतिसूतशुद्धकरिब्रह्मगांठिदेकैंकरीमाला चाउचढ्योहैं ॥ रैनदिनरसरसीरसनातैंछिनछिनफेरफेराफिरिफिरि यहैंरटरढ्योहैं ॥ रूपप्रहलादजैसेंधारिधरहरिओरनामपरिहरिगिरि धरनामपढ्योहैं ॥ ४ ॥ ८३ ॥ चरनसेवन भक्ति ॥ वचनिका ॥ और एक भक्ति चरन सेवन करन ॥ सुख करन दुःख हरन ताको जैसैं कमलाकैपन ॥ जासौं तैसैं अनुरागी भयो रूपमन ॥ ॥ कवित्त ॥ करिथिरताईपरिहरिकैंअथिरताईसेवतसदाईसुखवेदमु खभाख्योहैं ॥ परमसुवासपरिपूरनप्रकाशवासिताहीमैंविलासओर कौंनअ्रभिलाख्योहैं ॥ कोमलअमलप्रेमरससौंसरसभरेसोईरसअमि तसुचितचितचाख्योहैं ॥ भूपरूपसिंहकमलाज्यौंकमलापतिकेच रनकमलकेशरनमनराख्योहैं ॥ ५ ॥ ८४ ॥ वंदन भक्ति ॥ वच निका ॥ बहुरौं एक वंदन भगति ॥ अति हित सहित अलस र-हित जैसैं करी अक्रूर नितप्राति ॥ तैसैं राजा रूप करी दंडवति ॥ ॥ कवित्त ॥ तनकरिमनकरिवचनरचनकरिनयननिहारिअनुहारिचि तभरीहैं ॥ पदजानुउराशिरभूमिसौंछुवाईअतिमूरतिमधुरसौंसुमति अनुसरीहैं ॥ प्रभुपदकंजनपरासिकरकंजनसौंऐसैंदंडवतराचेरचि-

रुचिभरीहैं ॥ पूरिपूरिहितनितप्रतिहीअक्रूरजैसैंभूपरूपबंदनभग तिभलीकरीहैं ॥ ६ ॥ ८६ ॥ दास्यभावभक्ति ॥ वचनिका ॥ और एक दास्य भावकी भगति ॥ जे हैं दास जगति ॥ तिनकौं अति नीकीलगति ॥ जैसैं करी हनुमान सुमति ॥ तैसैं राजा रूपकें याही सौंसुरति रति ॥ कवित्त ॥ प्रातउठिआइभाइभरिहरिमंदिरमें प्रेमपदगाइकैंजगाइछविछायोहैं ॥ न्हाइकैंन्हवाइतनबसनवनाइग नभूपनरचाइचोवाचंदनचढायोहैं ॥ नानाभांतिभोगभुगताइवनवी रादैकैंपाछैंआज्ञापाइकैंमहाप्रसादपायोहैं ॥ दासहनुमानजैसैंआज्ञा कारीनाथजूसौंरूपभूपऐसैंदासभावदरसायोहैं ॥ ७ ॥ ८६ ॥ स-ख्यभक्ति ॥ वचनिका ॥ एक भक्ति सखा भावकी ॥ चितहित-चावकी केवल श्रीनाथही अनुग्रह धरैं ॥ नाहीसौंसखा भाव करैं ॥ जैसैं अर्जुनसौं कियो ॥ तैसैं राजा रूपसिंहजीकौं श्रीनाथजी अ-पनौं करि लियो ॥ कवित्त ॥ विविधिविलासनमेंरहासिरहासनमेंगो पीरसरासनमेंबातनाछिपाइकी ॥ गढगिरिघाटनविपमसमवाटनमेंथि रचरथाटनमेंनेकनजुदाइकी ॥ वनघनपुंजनमेंरनजनपुंजनमेंहरिक रिगुंजनमेंआइकैंसहाइकी ॥ अर्जुनज्यौंनाथजूकैंनिरंतरसंगरहैंरू पभूपजानीहैंभगतिसखाभावकी ॥ ८ ॥ ८७ ॥ सर्वस्वात्मनिवेदन भक्ति ॥ वचनिका ॥ और एक भक्ति सर्व स्वात्म निवेदन ॥ जातैं तनमनधन श्रीनारायनहीकौं अरपन ॥ जैसैं राजा बलिकीनौं स-मर्पन ॥ तैसैं राजारूपसिंहहूकौं यहैं पन ॥ कवित्त ॥ वाहीकेनिमि त्ततनवाहीकेनिमित्तमनवाहीकेनिमित्तजनरीतिनितप्रतिकी ॥ वेदवि धिधारनकौंव्रजकेविहारिनकौंधर्मअनुसारिनकौंसंपतिसुभतिकी ॥

सवधनधामकामकामनासमरपनहरिहीकेनामथितिक्षितिक्षितिपति की ॥ वलिजैसैंनाथजूकेरूपवलिहारिरूपसरवसआतमनिवेदनभगतिकी ॥ ९ ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ सुनियैंद्वितियप्रसंगअव, जिहिंसुनि मनहरषाय ॥ सानुभावतारूपपर, जगमेंदइदरसाय ॥ ८९ ॥ दिल्लीपतिश्याज्यांहको, फिरआयोफरमान ॥ भगवतइच्छाधीन व्हैं, कियोवलखप्रस्तान ॥ ९० ॥ जायवलखकौंसरकरी, फेरिदिल्लीशढुहाइ ॥ दिल्लीपतिकेहुकमतैं, रहेतहांजयपाइ ॥ ९१ ॥ तहां रहतवहुदिनभये, प्रभुसौंभयोवियोग ॥ व्हैंअत्यंतवियोगवश, हियउपज्योयहयोग ॥ ९२ ॥ विनतीपदसुवनायनृप, पठयोपत्रीवीच ॥ मुखियाभीतरियानकौं, लिखीनेहरससीच ॥ ९३ ॥ विनतीपदकेपत्रकौं, तुमनिजकरतैंलेहु ॥ समयअनवसरकेमहीं, प्रभुचरननिधरिदेहु ॥ ९४ ॥ रूपनगरकासीदसंग, आयोपत्रसुखेन ॥ मुखियादिकपत्रसुपढ्यो, नृपकौंअतिसुखदेन ॥ ९५ ॥ भयोअनवसरसमयजव, विनतीपदकोपत्र ॥ धरयोचरनचोकीनिकट, पदपायोपदछत्र ॥ ९६ ॥ प्रोहितगिरधरकौंप्रभू, वहिनिशिसुपनेमांहि ॥ यहआज्ञाकीनीसुखद, आजवुलायेयांहि ॥ ९७ ॥ आज्ञादिनकी लिखिमिती, भेजजादियेकासीद ॥ दिल्लीपतिहूवाहिदिन, लिखीसीखताकीद ॥ ९८ ॥ आज्ञाकीअरुसीखकी, मिलीमितीजवएक ॥ रूपसिंहलखिकहिप्रभू, रखीभक्तकीटेक ॥ ९९ ॥ प्रेमावेशविशेष व्हैं, धरिप्रभुकोहियध्यांन ॥ दरमजलैंपहुंचेजलद, रूपनगरनृप आंन ॥ १०० ॥ श्रीजीकेदरशनकिये, कियनोछावरभेट ॥ सेवाकेसुखमेंपगे, मिटीकुसंगकिफेट ॥ १०१ ॥ ॥ छप्पय ॥ जयज

यजनप्रल्हादहेतनरहरिवपुजाता ॥ जयगरुडासनछाडिचलेगज ग्राहगहाता ॥ जयद्रोपदिहितदेरनहींकियचीरवढाता ॥ जयजयश्री कल्यानरायभक्तनिसुखदाता ॥ जयदीक्षितगोपीनाथदइरूपनगर मधियहसुनिधि॥ जयरूपसिंहनरईशकेसकलमनोरथकरनसिधि ॥ ॥ १०२ ॥ महाराजश्रीरूपसिंहजीविनायभेज्योसो पद ॥ प्रभुजुइ हांरहैंकछुनांई ॥ करियैंगवनभवनदिशिअपनैंसुनियेअरजगुसांई ॥ देखीवलखबरफहूदेखीअधमअसुरअवलोके ॥ मध्यमदेशवेपहूमधू, मइहांकहांलैंरोके ॥ भक्तवत्सलकरुणामयसुखनिधिकृपाकरो ॥ धारी ॥ रूपसिंहप्रभुविरदलजतहैंव्रजलैंवसोविह ॥ १०३ ॥ यहांर श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायांपूर्वार्द्धेश्रीकल्यानरायप्रभुनसुनिजवा गरह ॥ २१ ॥

## अथ श्रीनृत्यगोपालजीकी निज [illegible] ज्ञाकि [illegible] ो पद॥

॥ दोहा ॥ अबश्रीनृत्यगुपालको, निजवार्ताकैंसोसुखदेइमहोदृग सुन्यौंदेख्योकहौं, रंगजंगकेसंग ॥ १ ॥ श्रीमन्नरायो॥ नागरिया स्वरूपअभिराम ॥ छोटेश्यामसुजानहैं, वडेरुचिरवा[illegible]दासजीकीप्र यहस्वरूपदोऊसुखद, कृष्णसिंहमहाराज ॥ पधर[illegible]सजीकह्यासो कियसेवासबसाज ॥ ३ ॥ पट्टेपरवानेनपर, श्रीदस्त ॥ हरी[illegible] [illegible]के ष्णसिंहकेसमयको, अजहूलिखियोपाय ॥ ४ ॥ [illegible]ष्णसिंहकेश्रीपि ता, उदयसिंहवरियाम ॥ मोटाराजाजोधपुर, हैंप्रसिद्धइहिंनाम ॥ ॥ ५ ॥ मोटाराजाउदयसिंह, तिनकेबारहपुत्र ॥ वडेसूरसिंहजोध पुर, अरुसबभयेसुपुत्र ॥ ६ ॥ सूरसिंहअरुकृष्णसिंह, भयेसहोदर भ्रात ॥ आसकरनमातामहसु, जोनरवरगढत्रात ॥ ७ ॥ आसकर

नवैष्णवपरम, वल्लभकुलकेदास ॥ वैष्णवप्रतिसुखकररह्यो, जिन-कोसुजसप्रकास ॥ ८ ॥ सोरहसैंअठसठलखो, संवनमाघसुमास ॥ शुक्लपक्षपंचमिवस्यो, कृष्णगढ़सुखरास ॥ ९ ॥ कृष्णसिंहकेच्यारसुत, सहसमल्लजगमल्ल ॥ भारमल्लहरिसिंहभो, रिपुदलदलनअटल्ल ॥१०॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकी, यथापुरातनप्रीति ॥ इनसवहीकेसमयमें, सेवाभइसुखरीति ॥ ११ ॥ सतरैसैंइग्यारहै, संवतलौंइहिंभा[illegible] ॥ रूपसिंहजूकेसमय, सेवाभईसुहाय ॥ १२ ॥ श्रीजीकौंजवरू[illegible]पिंह, पधरायेनिजशीस ॥ तवइनदोउस्वरूपकौं, पुष्टिकरायेवरीय[illegible] १३ ॥ [illegible]तगोपीनाथप्रभु, व्हैंकैंअतिसंतुष्ट ॥ स्थापनाकियच [illegible]थकी [illegible]मांहिकरिपुष्ट ॥ १४ ॥ तवैंकहायेगोदके, ठाकुरपदवे[illegible]पाल[illegible], [illegible]गरखेसबठोरमें, रूपसिंहमहिपाल ॥ १५ ॥ दिनिधा[illegible]को[illegible] ॥ १४ हूकमभयोअनूप ॥ दक्षिणवलखवंधारकी, मुयादि[illegible]त्रसुपढचे१६ ॥ तवतवनृत्यगुपालप्रभु, चलतफोजकेमां[illegible]समयजव, विनर्तयंदके, अंबावाडीमांहि ॥ १७ ॥ जवैंरहतनिजपदछत्र ॥ १[illegible]हमहिपाल ॥ तवश्रीजीकीगोदमें, राजतनृत्यगुपा[illegible]यहआज्ञाक[illegible]गानसिंहकेराजअरु, राजसिंहकेराज ॥ यहीरीतनिलिख्रिमिती, भेज[illegible]साज ॥ १९ ॥ भगवतइच्छाधीनव्हैं, नृपादिल्लीपतिपास [illegible]हांगयेतहांसंगकिय, नृत्यगुपालप्रवास ॥ २० ॥ जवजवनृत्यगुपालप्रभु, संगरहेपरदेश ॥ बहुवैभवजल्लूससौं, सेवाहोतसुदेश ॥ २१ ॥ रजतहेमकेमहलवर, रहतेंप्रभुकेसंग ॥ तिनमेंसदाविराजते, नृत्यगुपालअनंग ॥ २२ ॥ वहवैभवजल्लूसकी, सुवरनचोकीएक ॥ हाजरहैंअद्यापिलौं, कीजैंनहिंअविवेक ॥२३॥

अठारहसैंऊपरैं, प्राप्तच्यारकोशाल ॥ तवैंगयेदिल्लीशपै, सांवतसिं हनृपाल ॥ २४ ॥ सांवंतसिंहनरेशको, नामनागरीदास ॥ कविता पदसुप्रबंधमें, सवजगबीचप्रकास॥ २५ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकौं, पधरायेनिजसंग ॥ प्रतिउछवउछाहसौं, कीनौंबहुरसरंग ॥ २६ ॥ अट्ठारहसैंऊपरैं, संवतनवकेमांह ॥ ब्रजमंडलथलथललख्यो, नाग रकरिउच्छाह ॥ २७॥ तहांवृंदावनवीचमें, भूपनागरीदास ॥ वैष्ण वपरमशिरोमणिहि, मिलेसंतहरिदास ॥ २८॥ तवैंकहीहरिदासजू, सुनहुनागरीदास ॥ राजकाजतजिहरिभजो, करिवृंदावनवास ॥ ॥ २९ ॥ राजकाजकेसर्वसुख, तेरेराजकुमार ॥ भोगैंगेतुमयहांर हो, करियैंब्रजसुविहार ॥ ३० ॥ हरिरससांनेबचनसुनि, नागरदृ ढचितधार ॥ कियवृंदावनवासलिय, भक्ततख्ताशिरभार ॥ ३१ ॥ महाराजश्रीनागरीदासजीयाभावकोवासमयमेंआज्ञाकियोसो पद॥ कृष्णकृपागुनजातनगायो ॥ मनहुनपरसकरसकैंसोसुखइनहीदृग निदिखायो॥गृहव्यौहारभुरटकोभाराशिरपरतैंउतरायो॥नागरिया कौंश्रीवृंदावनभक्ततक्तवैठायो ॥ १ ॥ ३२ ॥ श्रीहरिदासजीकीप्र शंसाका ॥ दोहा—इस्कचिमनमेंमहाराजश्रीनागरीदासजीकह्यासो दोहा ॥ नकलसांचसौंसरसकरि, करिलीनेदिलदस्त ॥ हरीदासके हालमें, दरदिवालभीमस्त ॥ १ ॥ ३३ ॥ इश्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय ॥ हरीदाससवकौंगया, चेटकरूपदिखाय ॥ ॥ २ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ जोलौंवृंदावनवसे, भूपनागरीदास ॥ तोलौं नृत्यगुपालप्रभु, राखेनृपनिजपास ॥ ३५ ॥ सेवतनृत्यगुपालकौं, ब्रजरसकोसुखलेत ॥ साधतनवधाभक्तिनृप, व्हैकैंपरमसचेत ॥ ३६॥

# अथ महाराज श्रीनागरीदासजीकी नवधाभक्ति वर्ननकी भक्तिपंचाशिका तत्रादौ गुरुशरण हरि शरण लक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ आगमनिगमपुरानप्रमानसुकहतजाहिको ॥ संप्रदायसुप्रसिद्धराजमगलसतताहिको ॥ ताकेव्हैंआचार्यशुद्धकुलमांहिप्रकटपर ॥ भक्तिवानगुनवानज्ञानयुतप्रेमरूपवर ॥ ऐसेगुरुकेचरननकीजबशरनगहैंदृढचित्तकर ॥ हरिशरनभक्तिनवधातवहिसिद्धिकरैंनरसुक्खकर ॥ १ ॥ हरिशरनगुरुशरनउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ व्हैंहरिमुखअवतारविदितवल्लभजगजिततित ॥ पुष्टिधर्मकियप्रकठआपपुरुषोत्तमजनहित ॥ श्रीवल्लभअणुभाष्यआदिग्रंथनमधिभाख्यो ॥ नागरनृपमनताहिसंप्रदास्वादसुचाख्यो ॥ सुतदीक्षितगोपीनाथकेप्रभुजीभोतिंहिंजोरको ॥ दृढचरनशरननागरगह्योप्रभुजीसुतरनछोरको ॥ २ ॥ श्रवणभक्तिलक्षणं ॥ श्रवणभक्तिहैंमुख्यभक्तिसवतासौंउपजै ॥ श्रवनकियेंविनश्रंधमनुजपगकैंसैंरुपजे ॥ करनलगततउवस्तुनामविनसुनिरहिछुपजै ॥ श्रवनकरतहरिसुजसअमितअघजावतधुपजै ॥ त्रिविधितापविध्वंशव्हैसुखपावतप्रेमसमाजको ॥ श्रवनकियैंविनहरिसुजसपशुसींगपूंछविनकाजको ॥ ३ ॥ नवरसमयसवकथाविश्वलौकिकपरलौकिक ॥ जिंहिंरसचाहतवहीकरीलीलाहरिलौकिक ॥ अपनीलीलाहेतप्रभूकैंसोश्रमकीनौं ॥ मच्छादिकअवतारब्रह्मकइवपुधरिलीनौं ॥ जिहिंइच्छातैंजगतकीयहसृष्टिस्थितिलयहोतहैं ॥ हरिजसाजिं

हिंश्रवननकियोतिहिंनरकोसूकरगोतहैं ॥ ४ ॥ असतशास्त्रबकवादच्छाडिभागोतसुनीजै ॥ शुकमुखतैंरसश्रव्योनिगमकोतामेंलीजें ॥ श्रवनकटोरामांहिताहिलहिपानकरीजे ॥ तासौंव्हैंहियअमलतबैंहियहरिदेखीजे ॥ प्रभुकथाश्रवनकेहेतपृथुयाचेश्रवनसुदशसहश ॥ जसश्रवनविनांअनुरागहियहोतननैंनालगनवस ॥ ५ ॥ सुनतभागवतकथातथाअनुसारताहिके ॥कोऊभाषामांहिहोउतिंहिंसुनियचाहिके ॥ सुनतकथारोमांचसजलदृगगदगदवैनां ॥ लोकरीतदविरसानंदमदआवतनैंनां ॥ हरिरूपश्रवनकीछाकतैंछकेरहतहरिजनसुधर ॥ जगसाधुपुरुषऐसैंकहैश्रवनभक्तिकीसिद्धिवर ॥ ६ ॥ श्रवनभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ सुनिसुबोधिनीसहितभागवतभाण्यश्रवनाकिय ॥ पुष्टिमार्गसिद्धांतसमाझि-सुनिसुनिहियभरलिय ॥ आनंदघनहरिदासआदिसंतनवचसुनिसुनि ॥ धमारादिमेंकहविहैंनाहिंकहीसुशुकमुनि ॥ हरिलीलासुनिप्रेमवसदृगसजलवचनगदगदधरिय ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकीश्रवनभक्तिनागरकरिय ॥ ७ ॥ १ ॥

## अथ कीर्त्तनभक्ति लक्षणम् ॥

छप्पय ॥ करतकीरतनभक्तिभक्तहैभक्तिसुसाधैं । श्रवनभक्तिअरुभक्तिकीरतनसंगआराधैं ॥ करतकीरतनछकतचित्तआनंदअगाधैं कीर्तनकेसुप्रभावकोउभवदुखनहिंबाधैं ॥ च्यारौंयुगमेंमुख्यताशुककहीकीरतनभक्तिकी ॥ पैंकलियुगमेंअतिशयकहीजगउद्धारकशक्तिकी ॥ ८ ॥ नामीश्रीभगवानजीवगिनगिनउद्धारे ॥ नामरटतविनसंख्यजीवभवपारसिधारे ॥ कीर्त्तिनपीछैंसधतसबैंसाधनसु-

खकारी ॥ आगमअगनितसाखिदेततताकीजयभारी ॥ वहुकरतयज्ञ तपवहुवरपतवप्रसन्नकछुहोतहरि ॥ लघुकालभक्तिकीर्त्तनकरतव्हेप्र सन्नसोप्रीतिकरि ॥ ९ ॥ कीर्त्तनमहिमाकहतलहैंनांहिंपारविधाता ॥ देशकालधनपात्रआदिनहिंयहांचहाता ॥ नरशरीरछिनभंगलखहु भवमहादुरंतर ॥ जहांकीर्तनहोततहांहरिवसतानिरंतर ॥ जयअना यासराजीहुवैकीर्तनतैंयदुवंशरवि ॥ यहसवलछनसरसव्हैंतिहिंकी र्तनभक्तिसुकहतकवि ॥ १० ॥ कीर्त्तनभक्तिउदाहरनमहाराजश्री नागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ अखिलविश्वकोरूपनंदनंदनसुखका री ॥ ताकोजन्मविवाहवाललीलारुचिकारी ॥ हासविलाससुरास जासुकेकौतुकभारी ॥ लीलाकुंजनिकुंजप्रेमरसरसेविहारी ॥ तिहिं सुरनरभापाआदिमेंपदरचिकेतग्रंथकिय ॥ यौंनागरनृत्यगुपालकी कीर्तनभक्तिकिसिद्धिलिय ॥ ११ ॥ स्मर्नभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ श्रवनकीरत्तनभक्तिकोसुफलभक्तिस्मरनहै ॥ हरिस्मरनकेहोतजा तमिटित्रिविधिजरनहै ॥स्मरनकरतहरिगेहकरतअपनौंजनहियकौं॥ कीटभृंगदृष्टांतसमझिसमझावहुजियकौं ॥ ज्यौंविपयसुखनिकौंस्म रनकरिविषयमांहिवैचितलहैं ॥ त्यौंस्मरनकरतछकिजाततवस्मरन भक्तिसिद्धिसुवहैं ॥ १२ ॥ स्मर्नभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरी दासजीमें ॥ छप्पय ॥ करिकरिनितसतसंगश्रवनहरियशकोकी नौं ॥ ताकोकियकलगांनकाव्यपदवंधप्रवीनौं ॥ वहिरदृष्टिकौमूंदि वहुरिमनरसतिहिंभीनौं ॥ पग्योप्रेमहरिस्मरनमांहिज्यौंजलनिधिमी नौं ॥ नितस्मरनकरतस्थलस्थलसकलव्रजलीलाअनुभवताकिय ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकोयौंस्मरनभक्तिनागरछाकिय ॥ १३ ॥ पदसेवन

भक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कहीशास्त्रकेमांहिकरनजोसेवारीतिसु ॥ कीनीवहिविधितवैंदेहफललीनौंजीतिसु ॥ सेवाहितपरब्रह्मकीसुप्रतिमाकहिशुकमुनि ॥ शिलादारुमणिधातुमृत्तिकाचित्रलेप्यगुनि ॥ अरुमनोमयीकरिअष्टविधिप्रतिमापरमानंदकी ॥ शुचिरसस्वरूपसुखकंदश्रीनंदनंदब्रजचंदकी ॥ १४ ॥ जैसोव्हैसामर्थ्यकरैंनरतैसीसेवा ॥ नानाविधिसौंटहलकरतजनजानतभेवा ॥ नितप्रतिसेवाकरतसुखदहरिरूपनिहारैं ॥ सुखअसुवनकीचलैंजबैनैननितैंधारैं ॥ जिहिंबढतप्रेमअनुरागतिंहिंसमताकोउनकरिसकैं ॥ अरुटहलकरतहरिभक्तकीतिंहिंगुनअहिपतिकहिथकैं ॥ १५ ॥ आदिभागवतपद्मपुरानसुदेवतसाखी ॥ हरिहरिजनकीटलकीसुनिजमुखयौंभाखी ॥ मेरोभक्तकहायमोहिजनकोनाहिंचेरो ॥ मैंमेरोनाहिलखौंताहिपुनिरखौंननेरो ॥ हरिहरिजनपदरतिकरतपरमशांतिकौंचितलहैं ॥ ऐसेलच्छनहोततवपदसेवनभक्तिसुकहैं ॥ १६ ॥ पदसेवनभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ वसुविधिप्रतिमामांहिमनोहररुचिरस्वरूपसु ॥ नृत्यगुपालसुनामललितसबअंगअनूपसु ॥ दीक्षितगोपीनाथपुष्टकियरूपाबिनयधीर ॥ पधरायेकल्यानरायकीगोदकृपाकरि ॥ नृपताहिस्वरूपकौंसंगलैंब्रजवृंदावनमधिवसिय ॥ सबयथासमयकरिटहलइहिंपदसेवनभक्तिसुकरिय ॥ १७ ॥ शय्यामेंपधरायचरनसेवनमनदेवत ॥ कमलाकौंसुखप्राप्तवहैंअनुभवसुखलेवत ॥ साधुसंतकीटहलकरतपुनिनिर्मलकरमाति ॥ लखिलखिरूपअनूपछाकछविछाकतछितिपति ॥ मनवचनकर्मसौं

---

१ इसका अर्थ भेद. २ आठप्रकारकी प्रतिमा पहिलेकही जिनमें.

प्रेमधरिहरिहरिजनकोशरनलिय ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकीयोंपदसेव
नभक्तिसुकरिय ॥ १८ ॥ अर्चनभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ सींचत
मूलहिहोतपत्रअरुडारहरितमुख ॥ सबजगकेहरिमूलसमझिअर्चेहु
ह्वैसनमुख ॥ अर्चनविधिआचार्यमार्गकेजोकहिनिजमुख ॥ तिंहिं
विधिअर्चनकरतविश्वमधिपावतसवसुख ॥ हरिमायाहरिपैंधरतअ
पनीनहिंसमझीनजिंहिं ॥ करतसफलधनतैंसुतनअर्चनभक्तिसुकह
ततिंहिं ॥ १९॥ अर्चनभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमैं ॥
॥ छप्पय ॥ स्नानादिकसौंदेहशुद्धिकरिमंदिरअंतर ॥ देयसोहनी
आदिसाजसजिसकलसुखंतर ॥ करिमंगलाकरिवायस्नानशृंगार
धरंतर ॥ छविलखिमनबलिहारिलेतरसस्वादनिरंतर ॥ करिधूपदीप
धरियतसुनमिराजभोगअर्पनकरत ॥ पुनिनीरांजनकरिनेहसौंअनव
कासकरिहरिररत ॥ २० ॥ करिउत्थापनधरियभोगकरिसंध्यारा
त्तिक ॥ सुखसौंशयनकरायफेरवांचतहरिवार्तिक ॥ तनमनधनकौं
भक्तिरीतयौंकरिलियसार्थिक ॥ श्रीवल्लभमुखरचितसुविधिसाधीप
रमार्थिक ॥ नृपरूपसिंहज्यौंप्रेमधरिनिजकुलरीतिसुअनुसरिय ॥
नृपनागरनृत्यगुपालकीअर्चनभक्तिसुसिधिकरिय ॥ २१ ॥ ५ ॥
वंदनभक्ति लक्षणम् ॥ छप्पय ॥ प्रभुपदपंकजनमतशीसहीहरिअ
पनावत ॥ देनिजभक्तिप्रसंगभक्तशिरभारवढावत ॥ ताहिभारतैंन
मतशीसहरिजनजहांपावत ॥ लहैंउच्चपदजितोचढतजलनलज्यौं
आवत ॥ दशअश्वमेधसमकहतफलएकबेरवंदतहरिहि ॥ भवबंध
कटैंवंदनसटैंवंदनभक्तिसुकहततिंहिं ॥ २२ ॥ वंदनभक्ति उदाहन
महाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ प्रातउठिहरिनामलेयवं

दनकियनितप्रति ॥ पुनिमंदिरमधिजायकरियवंदनप्रभुपदप्रति ॥ जबजबहरिसुधिआतनमततबतबसुखकरिअति ॥ संतनकौंलखि जहांतहांवंदनाकियवरमति ॥ कियतनमनवचसाष्टांगसौंज्यौंअक्रूरत्यौंधारिजिय ॥ नृपनागरनृत्यगुपालकीवंदनभक्तिसुसिद्धकिय ॥ २३ ॥ दास्यभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ हरिकोह्वैकैंदासदासके चिन्हसुधारैं ॥ तुलसीमालाकंठतिलकमधिभालसंवारैं ॥ गोपीचंदनछापधारहरिप्रेमसुभारैं ॥ विनांचिन्हनहिंचीन्हसकतमनइष्टजुसारैं ॥ ज्यौंवेश्यासुतकेवापकोविनांचिन्हनिर्धारनहिं ॥ त्यौंदेखोसवहिशास्त्रतैंविनांचिन्हनहिंदासकहिं ॥ २४ ॥ जिहितनद्वादशतिलकहोयजोअंतसमयमें ॥ वाकौंलखिजमदूतजातडरिह्वैविस्मयमें ॥ पुनिप्रभुपदकीप्राप्तिहोयजिहिंअतिसुखमयमें ॥ महिमातिलकप्रभावसकैंकहिकोकुवलयमें ॥ जियतिलकमनोहरजानिकैंरामरच्योसियभालमधि ॥ सबसंतकहतइहिंभक्तिकौंदास्यभक्तिप्रेमसुअवधि ॥ ॥ २५ ॥ दास्यभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ गौरवरनतनलसतलसतपीतांबरकटिपर ॥ लसतउपरनाकंधलसतउपवीतसुसुंदर ॥ तुलसीमालालसतकंठलासितिलकभालवर ॥ कबहुप्रभूपरकरतमोरछललसतालियैंकर ॥ वरचामरढोरतकबहुकरकबहूपंखीकरलियैं ॥ करलसतआरसीकबहुहरिरूपसुधानागरपियैं ॥ २६ ॥ प्रभूप्रसादीपुष्पमालनिजकंठहिधारत ॥ हरिउच्छिष्टप्रसादलेयअंगअंगसुपारत ॥ प्रभुअर्पितवसनादिसर्वसौगंधिपदारथ ॥ विनअर्पनकरिकोउवस्तुधारतनहिंस्वारथ ॥ सतसंगतिपरभा

---

१ पृथ्वी.

वर्तैंदासक्रियासाजिकैंसुहिय ॥ नागरनृत्यगुपालकीदासभक्तिकीसि
द्धिलिय ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ सख्यभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कहां
जीवकारिसकैंसख्यताप्रभुसौंभाई ॥ पैंकरनौंआवश्यरीतिहरिजनजो
गाई ॥ सख्यभक्तिमेंसर्वभक्तिसौंयहअधिकाई ॥ करतसखाहित
आपयतननितयादवराई ॥ प्रभुग्वालनिकौंकांधैंलियैंअर्जुनसौंमित्र
त्वलहि ॥ स्मृतिपुरानमेंसकलमुनियहसख्यभक्तिलच्छनसुकहि ॥
॥ २८ ॥ सख्यभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छ-
प्पय ॥ लीलाकुंजनिकुंजरहसिरसमनअधिकारी ॥ पदप्रबंधरचि
कह्योसखाज्यौंमतिअनुसारी ॥ तिंहिंकबिताकोगानकियेयुगकुंज
बिहारी ॥ अर्जुनज्यौंसवठौरकरीअरुरक्षाभारी ॥ नृपरचितग्रंथम
धिप्रकटहैंयहप्रभावयहांकछुकहिय ॥ यौंनागरनृत्यगुपालकोसख्य
भक्तिकौंसिद्धकिय ॥ २९ ॥ ॥ ८ ॥

## अथ आत्मनिवेदन भक्तिलक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ तनधनतियसुतगेहआदिसवप्रभुकौंधारैं ॥ अपनौं
समझैंकछुनजानिप्रभुकोरखवारैं ॥ यौंआवश्यकदेहगेहकेकारजसा
रैं ॥ हरिसौंविनतीकरिसुद्रव्यबहुअल्पउपारैं ॥ हरिउच्छवादिबहु
द्रव्यसौंसवसंमंधहरिअनुसराहिं ॥ परप्रेमछकेहरिजनकहतआत्मनि
वेदनभक्तिइहिं ॥ ३० ॥ आत्मनिवेदनभक्तिउदाहरनमहाराजश्री
नागरीदासजीमैं ॥ छप्पय ॥ सिंहासनयुवराजदियोपितुराजसिंह
जव ॥ उच्छवफागविहारआदिबहुकीनमहातव ॥ पुनिसुतकौंदैरा
जवडनकीरीतिकहीसब ॥ यहप्रभुहीकोराजजानिकारियैंअवकरत
व ॥ करिवृंदावनकोवासनिजतनधनसवसुसफलकिय ॥ यौंनागर

नृत्यगुपालकीआतमनिवेदनभक्तिलिय ॥ ३१ ॥ ॥ ९ ॥ इनन
वधाभक्तिसौंदशमप्रेमप्रकटैयातैंप्रेमवर्णनं ॥ छप्पय ॥ इनतैंउपजैं
भावभक्तिअरुप्रेमभक्तिबर ॥ जिंहिंविनआनउपायकियैंवशहोतन
गिरधर ॥ वहैंप्रेमविधितीनकह्योरसलीनसुमुनिवर ॥ लघुअरुमध्य
मकहतप्रेमपूरनअतिसुखकर ॥ जानतहौंकछुनांहितउक्षामिहहुप्रेमी
हरिसुजन ॥ लच्छनइनकेकहतहौंसमझहुचितदैमुदितमन ॥ ३२ ॥
भावभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कथाकीरतनसुनतलगतअतिनीकी
ताकौं ॥ जगतवातसवलगतसकलविधिफीकीजाकौं ॥ अलिसुगंध
हितजातकथाहितज्यौंजवधावैं ॥ समयजन्यजहांवादहोततवअति
दुखपावैं ॥ पूरनभक्तिप्रभावकोदीपतमहात्म्यअतिहीप्रवल ॥ हरि
गुनलीलारूपकोजवव्हैप्रकाशहियमेंअचल ॥ ३३ ॥ कोमलव्हैहि
यभूमिरीझमयवेलिसरसता ॥ कछुरीझतहरिसुजसताहिसौंहोयसर
सता ॥ भावतउत्तमवस्तुतहांहरिसुधिसुवरसता ॥ व्रजवृंदावनवास
दरशकीवढततरसता ॥ हरिभक्तपृथकतानहिंचहैंओगुनतजिगुनकौं
गहैं ॥ लखिप्रेमभक्तधनधनकहतभावभक्तियाविधिलहैं ॥ ३४ ॥
भावभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ शिशु
ताअरुयुवराजतासुमधिहरिचितलायो ॥ वादजानिवकवादकथाकी
र्त्तनमनभायो ॥ राजकाजलखिव्यर्थवासवृंदावनचायो ॥ ओगुनत
जिगुनगहेसंतसवधनधनगायो ॥ उत्तमपदार्थजहांतहांसुलखिहरि
हीकीहियसुधिकरिय ॥ नृपनागरनृत्यगुपालकोभावभक्तियौंहिय
धरिय ॥ ३५ ॥ लघुप्रेमलक्षणम् ॥ छप्पय ॥ छुटतनवधाभक्ति
नेमसवकरतप्रेमयुत ॥ गदगदकंठसुहोयकवहुतनपुलकअश्रुयुत ॥

समयपाययौंहोयवहुरिव्हैंपूरवकीसुधि ॥ आवतयौंजवप्रेमतवैंजग लज्जायुतवुधि ॥ यहयाहीतैंलघुप्रेमहैंकहतसकलसुज्ञानमुनि ॥ हि यकामक्रोधव्हैंआतज्यौंसमयपायव्हैंयहसुपुनि ॥ ३६ ॥ कामादिक ज्यौंमिटैंसमयत्यौंप्रेमसुमिटवत ॥ छोटोयाकौंजानितजतजोजग सौंसिटवत ॥ तनकअग्निज्यौंवढतवहुतवनदहिकैंगिटवत ॥ जलनि धिअंबुफुंहारपवनवशलखितनभिटवत ॥ ज्यौंमहोरमहोरइकअरुव हुतसवैंस्वर्णहीकीसुगुनि ॥ भेदपराक्रमजानिकैंलघुप्रेमकहतइंहिंवि धिसुमुनि ॥ ३७ ॥ लघुप्रेमउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ ॥ छप्पय ॥ नवधासाधतनेमप्रेमकोपंथसुधारचो ॥ रहसिप्रेममयक वहुपुलकितनदृगजलढारचो ॥ राजकाजतिंहिंदियोदावगुरुमुखर खवारचो ॥ समयपायवढिगयोतवहिवहव्रजसुखसारचो ॥ काम क्रोधलोभादिकौंकरिभष्मतहांअविचलरहिय ॥ यौंश्रीनृत्यगुपाल कोलघुप्रेमभयोनागरसुहिय ॥ ३८ ॥

## अथ मध्यमप्रेम लक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ मध्यमप्रेमावेशरूपयौंहरिजनगावत ॥ रूपभाव नामांहिरहतदृगछकिछविछावत ॥ अधरनमेंमुसिकानथाकितमुख प्रफुलितमृदुरव ॥ झलमलातदृगनीरपुलकितनहोयमंदगव ॥ अरु चलतजवैंडगमगतपगमनहीमनवातैंकरत ॥ श्रवनादिकसुखभक्ति कोगहिसमयज्ञाननहिंचितधरत ॥ ३९ ॥ श्रवनकीर्तनस्मरनकरत अर्चनजववंदन ॥ इनपांचनितैंप्रकटिप्रेममादकताफंदन ॥ चढतप्रे मकीछाकतवैंचालतनिजछंदन ॥ व्हैंउन्मादस्वरूपमहाकलिमलदु

---

१ लघुप्रेम. २ निजछंद अर्थात् स्वछंद नहीं चलै।

स्वकंदन ॥ कबहुरुदतिनाचतिहसतिकहिवाहचाहराहिजातमुनि ॥ सुंदरमध्यमप्रेमतैयहलच्छनव्हैमतिधरिशुनि ॥ ४० ॥

## अथ मध्यमप्रेम उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमें

॥ छप्पय ॥ जातिपांतिकुलनेमराजतजिभोव्रजवासी ॥ मोहनमनुमुखजापराधकानामउपासी ॥ करिअनुभवपुनिवर्तमानलीलेव्रप्रकासी ॥ तिंहिंप्रभाववढिभावलगनकीभईउजासी ॥ हरिरसानंदकीप्राप्तिकौंप्रेमापंथप्रवेशतें ॥ समयजन्यसबज्ञानकौंजबभूलेप्रेमावेशतें ॥ ४१ ॥ अंकुररूपसुभयोप्रेमलघुजबैंहीयमांधि ॥ हरिगुनचर्चाकहतसुनतसचारीदिधिमधि ॥ आनंदघनहरिदासआदिसौंसंतसभामधि ॥ प्रकटभयेअनुभावसवैयाकेजुयथावधि ॥ व्रजवृंदावनवासबसिवरभक्ततक्कशोभासुलहि ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकोनृपनागरमध्यमप्रेमगहि ॥ ४२ ॥

## अथ पूरनप्रेमलक्षणम् ॥

छप्पय ॥ फिरतदुहाईदेहबीचजबनेहनृपतिकी ॥ संचारीगतिप्रेमभयोवहस्थाईगतिकी ॥ तनमनजबसुधिविसरजातगतिबहिरद्दष्टिकी ॥ ऐसेंजनकोदरसहोतहरिसुधावृष्टिकी ॥ परिपूरनप्रेमस्वभावतेंप्रेमानंदसौंपूरिव्हैं ॥ हियप्रेमजुस्थाईहोतहैंनिवधानेमसुदूरिव्हैं ॥ ॥ ४३ ॥ जैसेगुडियनखेललगततियकोहियप्यारो ॥ अंकभरतनाहिंभुजनबीचजोलौंपियप्यारो ॥ पियगरबांहींदियैंबढतसुखजगतैंन्यारो ॥ निसिदिनकीसुधिरहतनांहिनाहिंपियहियन्यारो ॥ तियजहां

तहांपियहीलखैंऔरनदरशतप्रेमवश ॥ ज्यौंभापतकृष्णस्वरूजग हरिजनकेहियप्रेमवश ॥ ४४ ॥ इंहिंविधितैंजवचढतरंगमनकृष्णप्रेमको ॥ कृष्णासईदृगहोतसवैंसुधिगसाप्रेमको ॥ सन्निपाताजिव्हकजुताहिकीदशापात्रको ॥ नैननीरमुखमौनरहततनकहनमात्रको ॥ पुनिपूरनप्रेमानंदतैंदेहतजतहरिमिलताजिंहिं ॥ लच्छनऐसेमिलतमुनिपूरनप्रेमसुकहतातिंहिं ॥ ४५ ॥

## अथ पूरनप्रेम उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमें

॥ छप्पय ॥ गुरुसेवतबहुशास्त्रसुनतनवधाजियजागी ॥ नवधातैंसतसंगभयोतबममताभागी ॥ वृंदावनकेवासप्रेमकीआशालागी॥ कृष्णमईसबविश्वलखतदृगभयेसभागी॥तवऐसेक्रमसौंवाढिचलेलैंसुखप्रेमबजारको॥जबनागरनृपमारगगह्योलीलानित्यविहारको॥४६॥

## अथ सतसंगति महिमा वर्ननम् ॥

॥ छप्पय ॥ वेदपाठअरुगंगस्नानसबतीरथसेवन ॥ भूमिपरिक्रमासर्वदानभूम्यादिकदेवन ॥ कादृतदशमैंद्वारप्रानकैवल्यसुलेवन॥ जपतमंत्रकौंकरतसविधिधूपादिकखेवन ॥ अरुबहुतकष्टकरितपतपंजायगरैंहिमशैलमाहिं ॥ नरपूर्वकथितसबकरततनुसतसंगतिसमहोतनाहिं ॥ ४७ ॥ सतसंगतिमहिमासुआपउद्धवप्रतिभाखी ॥ यहमोकौंवशकरतल्यौंसुविधिआननराखी ॥ व्हैंकुसंगकोनाशअविद्याहूकीस्वाखी ॥ वहीधन्यजगमांझमधुरतायाकीचाखी ॥ सबजगतदेहसंबंधकेतूटतनातेयाहितैं ॥ दुर्लभतासुखलाभव्हैंयहसबतैंबडीसुता

१ नित्यविहारलीलाकामारगगहाअर्थातपरलोकवासीहुये.

हितें ॥ ४८ ॥ अमरऔरगंधर्वदैत्यपुनिराक्षसजैसे ॥ मानुषस्त्रीअरु शूद्रतरेवेश्यागजकैसे ॥ राजसतामसभरेतरेअंत्यजजनवैसे ॥ सत संगतितैंतरेगनेजावतकहिकैसे ॥ अतिदुर्लभप्रभुकीप्राप्तिजोयातैंसुख सौंलहतनर ॥ गोपदसमानसुखमानकैंभवसागरकौंजाततर ॥४९॥

## अथ सतसंगति महिमा उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमें ।

छप्पय ॥ विप्रनिसौंसुनिवेदभागवतअर्थसुधारयो ॥ हरिदासहि तमानकहीसोहीअनुसारयो ॥ मुरलिदासअरुवंसिदाससौंसमयगु जारयो ॥ आनंदघनकोसंगकरततनमनकौंवारयो ॥ नर्तितगुपाल मिलिजानयौंसतसंगतिनागरकरिय ॥ गोपदसमानसुखमानकैंभव सागरकौंलहितरिय ॥ ५० ॥ दोहा–कहीभक्तिपंचाशिका, जय कविसमक्षिप्रसंग ॥ याकेबांचतसुनतहिय, बढहिभक्तकोरंग॥५१॥ श्रीनागरमहाराजके, पूरनप्रकटीभक्ति ॥ ताकेकहिवेहेतनाहिं, मेरी मतिकीशक्ति ॥ ५२ ॥ तउजवानमहाराजजू, दीनीरीतवताय ॥ तैसैंहियाग्रंथमें, दीनीप्रकटजताय ॥ ५३॥ ग्रंथभक्तिमगदीपिका, र च्योनागरीदास॥तिंहिंमतसौंलच्छनकहे, हरिजनकोजयदास॥५४॥ नागरनृपकेरचितहैं, प्रभुयशकेवहुग्रंथ ॥ तिनसौंअनुभवकारियहां, उदाहरनदियग्रंथ ॥ ५५ ॥ प्रेमरूपहीकृष्णहै, कृष्णरूपहीप्रेम ॥ ज्यौंभावैंत्यौंहीभजैं, सगुणअगुणविननेम ॥ ५६ ॥ ९२ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्रीमन्नृत्यगुपालनिजवार्त्तायां महाराज श्रीनागरीदास देववर्मणां नवधाभक्ति वर्णनं भक्तिपंचा-

शिका ॥ दोहा—अठारहसैंऊपरैं, संवततेरहजान ॥ चैत्रकृष्णतिथि द्वादशी, ब्रजतैंकियोप्रयान ॥ ९३ ॥ कुटंबयात्राहेतुनृप, रूपनगर मधिआय ॥ देशकोशसुतभ्रातुको, लीनौंसुखसरसाय ॥ ९४ ॥ तबैंपधारेसंगही, श्रीमन्नृत्यगुपाल ॥ रूपनगरअरुकृष्णगढ, जहांगयेमहिपाल ॥ ९५ ॥ अठारहसैच्यारदश, मासद्वितियआ सोज ॥ शुक्लपक्षएकादशी, फेरधरीब्रजमोज ॥ ९६ ॥ पीछेइंहिं दिनगमनकिय, नागरनृपउरधार ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालतब, ब्रज कौंकियोविहार ॥ ९७ ॥ जबैंश्यामआज्ञाकरी, नृपकौंसुपनेंमांहि॥ लीलानित्यविहारमम, अबदेखहुचितचांहि ॥ ९८ ॥ अठारहसैंबी शइक, तबभादवबदितीज ॥ लीलानित्यविहारको, नागरमगगहि रीझ ॥ ९९ ॥ अठारहसैबीशइक, संवत्सरमैंजांन ॥ सोहतनृत्यगु पालप्रभु, फिररूपनगरआंन ॥ १०० ॥ रूपनगरसुपधारिकैं, श्री मन्नृत्यगुपाल ॥ श्रीजीकीवरगोदमें, बैठेरासिकरसाल ॥ १ ॥ तजि श्रीजीकीगोदकौं, श्रीमन्नृत्यगुपाल ॥ नांहिविराजेआजलौं, न्यारे काहूकाल ॥ १०२ ॥ पृथ्वीसिंहनरेशके, पुत्रद्वितीयजवान ॥ ध र्मधीरताकोलसैं, मानौंमूरतिवान ॥ १०३ ॥ राजकुमारजवानके, कलियुगमेंकमनीय ॥ भगवतइच्छासौंभयो, यहैंमनोरथहीय॥१०४॥ करीअरजअतिगरजकरि, व्हैंअतिआतुरवान ॥ पृथ्वीसिंहनरेशसौं, राजकुमारजवान ॥ ५ ॥ उत्तमगरजीदेखिकैं, प्रभुकीमरजीजान॥ सुनिअरजीहुकमकियो, सुनियैंकुंवरजवान ॥ १०६ ॥ श्रीमन्नृत्य गुपालके, दोऊरुचिरस्वरूप ॥ कृष्णसिंहमहाराजसौं, अपनेशी सअनूप ॥ १०७ ॥ जैसीनिधिश्रीनाथजी, अपनेराजतशीस ॥

तैसोनृत्यगुपालकी, लसतराजकेशीस ॥ १०८ ॥ यहपधरावेयोग नहिं, सुनियैंकुंवरजवान ॥ तदपि तिहारोभावलखि, पधरावैंसुख मान ॥ १०९ ॥ श्रीमतविठ्ठलनाथप्रभु, गोस्वामीगुरुदेव ॥ जवैंप धारैंगेयहां, तबबिनवौंयहभेव ॥ ११० ॥ विनतीसुनिगुरुदेवजव, आज्ञाकरैंबरीश ॥ तब उनकेश्रीहस्तसौं, पधरावैंतुवशीस ॥ १११ ॥ समयआंनऐसोभयो, हरिइच्छाअनुसार ॥ पृथ्वीसिंहनरेशको, भो परलोकविहार ॥ ११२ ॥ इंहिंअवसरमाधिकृष्णगढ, श्रीमतगुरुमहा राज ॥ आपपधारेकरिकृपा, पुष्टिधर्मकेपाज ॥ ११३ ॥ विनतीगु रुमहाराजसौं, कियअग्रजशार्दूल ॥ पूर्वभयोवृत्तांतसब, मालुमकि यसुखमूल ॥ ११४ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालके, कहेजुद्वैरूप ॥ छोटेनृत्यगुपालजी, नंदनंदशुचिरूप ॥ ११५ ॥ करिवात्सल्यरस्त्र रूपयह, दियोशीसपधराय ॥ नृपजवानकोचित्तकी, आतुरतामन भाय ॥ ११६ ॥ उगनीसैछत्तीसमें, पोषशुक्लपखजांन ॥ अष्टमिश सिअरुअश्विनी, सिद्धियोगसरसांन ॥ ११७ ॥ शयनसमयश्रीह स्तसौं, गुरुमहाराजाधिराज ॥ श्रीश्रीजीकीगोदसौं, पधरायेजनका ज ॥ ११८ ॥ कृष्णगढ्के दुर्गमें, जीवरखाकेमांहि ॥ महलएकचो खंडिया, चंद्रमहलकेमांहि ॥ ११९ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकौं, दिये तहांपधराय ॥ उच्छवभोगसमार्पिकैं, अरुअचवनकरिवाय ॥ १२० ॥ टेरोदूरकरायकैं, श्रीविठ्ठलद्विजराय ॥ तिलककियोश्रीहस्तसौं, वीडा वस्त्रधराय ॥ १२१ ॥ शंखझल्लरीघंटअरु, दुंदुभिझांझमृदंग ॥ वा जनलागेअरुभयो, गानवधाईरंग ॥ १२२ ॥ अतिउत्साहउमंगक

1 भेद.

रि, पाटोत्सवसरसान ॥ श्रीविठ्ठलकीमहरसौं, कीनौंनृपतिजवान ॥ १२३ ॥ कितेदिवसचोखंडिया, महलमांहिगोपाल ॥ नृपजवान शिरकरि कृपा, राजतदीनदयाल ॥ १२४ ॥ श्रीजीकेमंदिरमहीं, हुतोमहलवरएक ॥ तहांपधरावैंयह भयो, नृपकेहृदयविवेक ॥ १२५ ॥ व-महलसुधरायकैं, मंदिरयोग्यकराय ॥ श्रीजीकेअतिनिकटसौं मनमेंअतिहरषाय ॥ १२६ ॥ कवित्त ॥ शय्यागृहबनायओरसोई बनाईवेसरस्थानजलपानकोपवित्रमनभावनौं ॥ फरसफँवारेहोजकी नेमकरानेंहीकेसुधासौंसवारेस्वच्छसाचेहीढरावनौं ॥ काचकेकिंवार चारुखचितरजतवीचकेतेद्दारबंदकैंरुनूतनकढावनौं ॥ महलकोव न्यौंहैंयोरसिकरसालललालनर्तितगुपालजूकोमंदिरसुहावनो ॥ १२७ ॥ दोहा—उगनीसैंसैंतीसमैं, भादववदिवरियाम ॥ अष्टमिशनिअरुरोहिणी, हर्षयोगअभिराम ॥ १२८ ॥ यादिननृत्यगुपालकौं, याहि महलकेमांहि ॥ पधरायेअतिप्रीतिसौं, मनमेंवहुतउमांहि ॥ १२९ ॥ वरचोखंडेमहलमें, मंगलभोगधराय ॥ अरुमंदिरकेमहलमें, लिये वेगपधराय ॥ १३० ॥ यहांपंचामृतस्नानके, कियदर्शनजनसर्व ॥ छविलखिनृत्यगुपालकी, मिटतमदनकोगर्व ॥ १३१ ॥ कवित्त ॥ राजैंशीसजूरारूराभालहैंविसालबंकभृकुटीचपलनैनश्रौंनछविभा वनी ॥ उन्नतकपोलचारुनाशिकाअधरबीचमुसकिचितुकग्रीवाअ लकझुकावनी ॥ अंसउपरैंनाउच्चवामकरपीनउरदच्छकरलड्डुवाहैंक टिलचकावनी ॥ पीतपटझुकेउरुनर्तितगुपालजूकीकोटिकाममूर तिसौंसूरतिसुहावनी ॥ १३२ ॥ दोहा—चरननिमेंनूपुरझनक, रणित किंकिनीलंक ॥ करनिकटककंठाभरण, मुखलखिलजितमयंक ॥

॥ १३३ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालको, यवानिककौंदेख ॥ दर्शनचाह भरेनके, लगतननैंननिमेख ॥ १३४ ॥ दर्शनीनिवोडायकैं, मंगल स्नानकराय ॥ बहुभारीरत्नानिसौं, कियशृंगारबनाय ॥ १३५ ॥ भयेसुदर्शनतिलकके, छायोबहुआनंद ॥ राजभोगकेफिरभये, द र्शनपरमानंद ॥ १३६ ॥ व्हैंउत्थापनभोगअरु, संध्यारार्तिकहोय ॥ शयनआरतीकेभये, दर्शनरससुखजोय ॥ १३७ ॥ भोदर्शनजा गरनके, आईनिशिअधरात ॥ तबभोदर्शनजनमके, निजजनमन हुलसात ॥ १३८ ॥ नंदमहोत्सवकोजुसुख, वर्ननकियोनजाय ॥ नंदरायकेगेहको, सांचोसुखसरसाय ॥ १३९ ॥ पलनैंनृत्यगुपालप्र भु, निजमंदिरमेंझूल ॥ पुनिश्रीजीकीगोदमें, जाकैंपलनैंझूल ॥ ॥ १४० ॥ श्रीजीकेसंगझूलकैं, निजमंदिरहिपधार ॥ करनलगेनि तरीतसौं, सेवासुखस्वीकार ॥ १४१ ॥ छप्पय ॥ लखिसुकुमारसु ढारपीनतनलजितमीनधुज ॥ चरनकमलरजचंचरीकचितचहतवृष भधुज ॥ ग्वालबालसंगदेखिचकितचितभयोहंसधुज ॥ प्रकटगुह मिमयपरममित्तपदपायोकपिधुज ॥ कल्यानरायकीगोदकेऐसेनृत्य गुपालवर ॥ जयराजतनित्यसुखेनसौंनृपजवानकेशीसपर ॥ १४२ ॥ दोहा—कितेदिवसपीछैंनृपति, मंदिरमणिमयकीन ॥ श्रीमन्नृत्यगु पालको, सुनिसुखपातप्रवीन ॥ १४३ ॥ मकरानेकीफरसजहां, शोभितस्वेतविशाल ॥ मनौंसतोगुनरूपधरि, भयोप्रकटछबिमा ल ॥ १४४ ॥ मकरानेकेकटहरे, शोभितफरसमझार ॥ मनौंसतोगु नकेभये, अंकुरसरसअपार ॥ १४५ ॥ होजफंवारेकोसरस, फरस मझारसुहात ॥ कीनौंमनवतकामतहां, मनुमनमथनिजहात ॥ १४६ ॥

सबैभाँतिदर्पनमई, स्वर्णगचितसरसात ॥ शरदचंद्रिकामेंमनौं, दामिनिदुतिदमकात ॥ १४७ ॥ दर्पनकेखंभारुचिर, शोभितहैंइहिं भाय ॥ हरनारदहरिदरशहित, मनुठाढेहरपाय ॥ १४८ ॥ टोडीखंभाव्र झूलत, देहलिसिगदलिआदि ॥ बनवाईसबकाचकी, स्वर्ण ...द ॥ १४९ ॥ लंबाईचौडाइको, जहांकोजितनोमाप ॥ ...तहींआकारवर, गचकियकाचअमाप ॥ १५० ॥ दर्पनभित्तिनमेंसरस, जिततितहरिदरसात ॥ मनुभक्तनकेहेतप्रभु, रूपअनेकलखात ॥ १५१ ॥ दर्पनभित्तिनमेंसरस, जिततितहरिदरसात ॥ दक्षसुताकोदरशभो, सोलीलालखिजात ॥ १५२ ॥ शोभितहैंतहां रत्नके, जटितझाडबहुभांत ॥ मनुउडगणबहुजुत्थकरि, हरिदरशनहितआत ॥ १५३ ॥ तिनझाडनकेनामअत्र, कहौंसुमुनियेंमित्त ॥ वैभवकोअद्भुतपनौं, व्हैचतुरनकेचित्त ॥ १५४ ॥ जहांसोसनकेझाडमधि, नीलमकेहैंफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीसुखमूल ॥ ॥ १५५ ॥ दावदीकेझाडमें, मोतिनकेहैंफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीरसमूल ॥ १५६ ॥ हैनरगसकेझाडमें, पुखराजनकेफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीबहुमूल ॥ १५७ ॥ गुल्लालाकेझाडमें, हैंहीरनकेफूल ॥ ताकेमाणिककीकिरण, सोहततिहिंअनुकूल ॥ ॥ १५८ ॥ डोडीपन्नाकीमहीं, माणककीसुजिवारि ॥ पत्रकिलंगी रुचिरअति, पन्नाकीबहुभारि ॥ १५९ ॥ इनसबझाडनकेलसैं, कंचनकिरणअनूप ॥ लज्जितरविइनओटव्हैं, मनुनिरखंतनिहाररूप ॥ १६० ॥ गुलचकरीकेफूलहैं, पुखराजनकेखास ॥ मनुक्रतिकाव्हरूपधरि, आइव्रजशशिपास ॥ १६१ ॥ नवरत्ननकेझाडवर, शो

भितहैंइहिंवेस ॥ गर्ववैरताजिनवसुग्रह, मनुआयेहरिदेश ॥ १६२ ॥ पन्नाकेतुकमातहां, राजतरुचिरअनंत ॥ अतिलघुसुरसरिनीरमें, पद्मपत्रझलकंत ॥ १६३ ॥ पन्नेकीतखतीमहीं, इश्कहुस्नयेवर्ण ॥ सुदेसुशोभितयौंमनौं, मोहरमन्थकर्ण ॥ १६४ ॥ शोभितवज्राकि किरणविच,वृहत्तवज्रचोकोर ॥ स्वेतकमलपरमनुउदय, भयोशु ऋकरिजोर ॥ १६५ ॥ दीपकशाखारजतके, भित्तिनमेंसरसाय ॥ मनौंचंद्रिकानिजकरनि, करतवारनांआय ॥ १६६ ॥ निजमांदिर केकाचके, कंचनरजतकिंवार ॥ मनौंमोहवशनरकरन, मायाखडी सम्हार ॥ १६७ ॥ झाडगुलाबकोद्वारपर, विद्रुमरचितसुढार ॥ भयोचांदनिमेंप्रगट, मनुमंगललखिसार ॥ १६८ ॥ चौपाई ॥ स्वर्ण धनुपनिजद्वारसुऊपर ॥ यहअक्षरखुदिरहेतिहिंभूपर ॥ ( नीकेनैन मुसकिछविपाहैं ॥ यहछविशशिमेंकहोकहांहैं ॥ ) याकीउपमाहेत सुमःमति ॥ हेरतहेरतभईसिथिलगति ॥ १६९ ॥ दोहा—दुजेद्वार निकाचके, बहुरंगकेसुकिंवार ॥ मानौंनवरसथिरभये, दर्शनलोभ विचार ॥ १७० ॥ परदेलसतसुतासके, सोनेरीरूपेरि ॥ मानौंदम कतएकव्है, रविशशिकिरनघनेरि ॥१७१॥ कीनखापकोछातजहां, शोभितयौंरसमूल ॥ मानौंफूलीसांझमें, वरपेसुरतरुफूल ॥१७२॥ मणिमयऐसोहरिभवन, अद्भुतअमलअनूप ॥ पूरनवर्ननकरिसकैं, जोहोवैंअहिभूप ॥ १७३ ॥ जोकोऊयाभवनको, दरशनकरिहै आय ॥ वहलखिहैंवर्ननकियो, जयकविसत्यबनाय ॥ १७४ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालको, निजवार्तासुप्रसंग ॥ जयकवियहवर्ननाकियो, मनमेंबहुतउमंग ॥ १७५ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्रीनृत्यगोपालयोः निजवार्ता ॥

# अथ श्रीमहाप्रभुजीको चित्रविराजैंताकी निजवार्त्ता लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ श्रीलक्ष्मणभटगृहभये, श्रीवल्लभद्विजराज ॥ पनरासैंपैंतीसमें, भक्तउधारनकाज ॥ १ ॥ शाहसिकंदरलोदिभो, दिल्लीपतिवडभाग ॥ प्रभुतासुनिलखिहियभयो, सरसश्रवनअनुराग ॥ २ ॥ भयोश्रवनअनुरागतें, दरशनकोअनुराग ॥ तवदिल्लीपतिचितभई, चित्रकरावनलाग ॥ ३ ॥ होनहारनामाहुतो, चतुरमुसव्वरविज्ञ ॥ तवताकौंहूकमदियो, दिल्लीपतिसुअभिज्ञ ॥ ४ ॥ श्रीवल्लभआचार्यको,लाव हुचित्रबनाय ॥ लेउयथार्थमिलायकें, व्रजमंडलमें जाय ॥ ५ ॥ होनहारकरतारसो, गर्वधारिव्रजजाय ॥ श्रीवल्लभमहाराजके, सुंदरदरशनपाय ॥ ६ ॥ चित्रबनायोचित्तदै, अतिचातुरताधारि ॥ मिल्योकछूनांहींतवैं, फेररच्योचितधार॥७॥ द्वितियचित्रहूनहिंमिलत, होनहारकेचित्त ॥ दिल्लीपतिकीकहरको, प्रकटचोप्रभयअमित्त ॥ ८ ॥ तवश्रीवल्लभराजके, चरनवंदिछलछोर ॥ कीनीविनतीदीनव्है, होनहारकरजोर ॥ ९ ॥ दिल्लीपतिकेहुकमतैं, हौंआयोव्रजमांहि ॥ लिखनरावरेचित्रकौं, पूरनचिन्हमिलाहि ॥ १० ॥ मोमतिकेअभिमानतैं, कीनेचित्रसुदोय ॥ कछुनमिलेनिजरूपमें, देखेवहुविधिजोय ॥ ११ ॥ जोनाहिंमिलिहैंचित्रतो, दिल्लीपतितकरार॥करिकैंपुनिकरिहैंकहा, कहाजानौंतिंहिंवार ॥ १२ ॥ दीनवंधुकरुणाजलधि, श्रीवल्लभद्विजराय ॥ तवकरुणाकरिकैंकही, निजप्रभुतादरशाय ॥ १३ ॥ अवतूचित्रवनायकैं, ले

जावहुधरुधीर ॥ यहवचनामृतसुनिमिटी, होनहारहियपीर ॥ १४॥
पायअनवसरसमयकौं, श्रीजमुनातटधाम॥ कहतभागवतकीकथा,
श्रीसुबोधिनीनाम ॥ १५ ॥ तहांभटमाधोदासजू, हाजररहतहमे
श ॥ श्रीसुबोधिनीलिखतहैं, शीघ्रसुशुद्धविशेष ॥ १६ ॥ कृष्णदा
समेघनजहां, हाजरह्वैकरजोर ॥ तीनदिवसठाढोरह्यो, पुरुषोत्तमके
जोर ॥ १७ ॥ दामोदरहरषानिजहां, करतदंडवतआय ॥ ग्रीषम
ऋतुकेसमयमें, ऐसोसमयसुपाय ॥ १८ ॥ पनरासैसडसठलखो,
संवतकोअनुमान ॥ संप्रदायकल्पद्रुमसु, पुस्तकमांहिप्रमान॥१९॥
आज्ञालैंचित्रसुलिख्यो, अवयवचिन्हमिलाय ॥ प्रभुस्वरूपप्रतिबिं
बसौं, लीनौंशीघ्रबनाय ॥ २० ॥ होनहारयहचित्रकिय, दिल्लीप
तिपैंपेस ॥ लोदिसिकंदरतबकही, हौंनहारसौंबेस ॥ २१ ॥ हौंनहा
रयहचित्रतुम, क्यौंकरिलियोबनाय ॥ हाथजोरिजाहिरकरी, ज्यो
शिखीतीआय ॥ २२ ॥ सुनिवृतांतनृपेशलखि, प्रभुहीकोअवतार॥
दृढकरिलीनोंचित्तमें, यहविचारनिर्धार ॥ २३ ॥ निजचित्रालयमें
यहैं, दियोचित्रधरिवाय ॥ दर्शनरुचिजबचित वढैं,तबहीलेतकढाय
॥ २४ ॥ याप्रसंगसौंरूपसिंह, वाकिबथेमनमांहि ॥ यहउपायचि
तनितकरत, पधरावौंगृहमांहिं ॥ २५ ॥ रूपसिंहकौंयहसमय,
प्राप्तभयोजिंहिंरीत ॥ सोअवसवहीकहतहौं, सुनियेंअतिकरिप्रीत
॥ २६ ॥ अकबरकेजहांगीरभो, ताकेशाहजिहांन ॥ रूपसिंहपैंम
हरकरि, लिखभेज्योफरमान ॥ २७ ॥ जाहुवलखकीमुहमपर, क
रहुशत्रुकौंचूर ॥ तेरेमुखपैंलसतहैं, रजपूतीके नूर ॥ २८ ॥ हुकम
पायपहुंचेबलख, रूपसिंहमहावीर ॥ दिल्लीपतिकीफोजको, सेना-

पतिव्है धीर ॥ २९ ॥ तुपकतीरतरवारसौं, कीनौं अतिघमसान ॥ वलखाधिपके जंगमें, लीनौं छीननिसान ॥ ३० ॥ वलखाधिपकों जेरि करि, आये दिल्लीमांहि ॥ शाहजिहानदिलीशजू, कीनी बहुत सरांहि ॥ ३१ ॥ स्वेतलालरंगको जुवह, हुतो पठाननिसान ॥ दिल्लीपति दैकैं कह्यो, राखहु यही निसान ॥ ३२ ॥ व्हैं प्रसन्न नृपरूपसौं फरमाइ करिप्पार ॥ जो तेरे मनमें चहो, लेवहु वही अवार ॥ ३३ ॥ तवें रूपनृप अर्ज किय, समय पाय यहवेस ॥ अपनौं इष्ट विचारकैं मांग्यो यह हीनरेश ॥ ३४ ॥ श्रीवल्लभआचार्यको, होनहारके हाथ ॥ चित्र कराये प्रीतकर, शाहसिकंदरनाथ ॥ ३५ ॥ वही चित्र अति महरकरि, करि दीजै वगसीस ॥ यह सुनिकैं दिल्लीशयौं, हूकम कियो वरीस ॥ ३६ ॥ देशकोशकौं छाडिकैं, कहा मांग्यो वड भूप ॥ रूपसिंह करजोरि तव, कीनो अरज अनूप ॥ ३७ ॥ परमइष्ट हसको यहैं, सुनहु गरीवनिवाज़ ॥ यातें वही सु दीजियैं, भूपनके शिरताज ॥ ३८ ॥ चित्रालय अध्यक्षसौं, करि हुकम दिल्लीश ॥ वही चित्र कढवायकैं, करि दीनो वगसीस ॥ ॥ ३९ ॥ फिर दिल्लीपति हुकम किय, फिर मांगहु महाराज ॥ तवें अरज कीनी समझि, रूपसिंह नरराज ॥ ४० ॥ सवलसिंहकौं महर करि, दीजै जेसलमेर ॥ यह भाटो अति खोर है, अब करि थैं नहिं देर ॥ ४१ ॥ दिल्लीपति नृपरूपकी, करी अरज मंजूर ॥ तव भाटी सवलेशकैं, वढ्यो चोगुनौं नूर ॥ ४२ ॥ रूपसिंहके तात श्री, भारमल्लमहाराज ॥ तिनके मातुलको तनय, सवलसिंह यदुराज ॥ ४३ ॥ होनहारको कहत हौं, अवैं सकल इतिहास ॥ ताके सुनतहि होत हैं, चतुरनि चित्त हुला

१ इसका अर्थ खराब होरहा है.

स ॥ ४४ ॥ चित्रलिखनकेइलमकौं, सीखसुबुद्धिअथाह ॥ गयोहाजरीदैनकौं, दिल्लीपतिदरगाह ॥ ४४ ॥ दिल्लीपतिसौंअर्जकिय, लोजैंमोइमत्यान ॥ हजरतजबैंपधारकैं, लैंनलगेसुखमान्न ॥ ४६ ॥ हौंनहारतबयौंकरी, इकउष्णोशमंगाय ॥ व्हैंनरकौंठाढेकर, छिल्लाकौंपकराय ॥ ४७ ॥ हौंनहारहयपैंचढ्यो, करमेंलईजुगाल ॥ घोरेकौंरपटायकैं, खैंचारेखअटाल ॥ ४८ ॥ वहउष्णीसमंगायकैं, हौंनहारकियअर्ज ॥ याकोसूत्रकढायकैं, लखहुरेखकोमर्ज ॥ ४९ ॥ दिल्लीपतिउष्णीपको, देख्योसूत्रकढाय ॥ रेखएकवहिसूत्रपैं, आदअन्तसरसाय ॥ ५० ॥ यागुनकौंलखिकैंबहुत, दियोदानसनमान॥ हौंनहारसुखितात्रदैं, गुनकोकियोवखान ॥ ५१ ॥ छप्पय ॥ श्री-लक्ष्मणभटगेहप्रगटअवतारलिवायो ॥ श्रीवल्लभआचार्यमहाप्रभुनामकहायो ॥मायावादविखंडभक्तिपथपुष्टिबधायो ॥ दैवीजीवउधारहेतयहमार्गबतायो ॥ भटमाधवकृष्णहिदासजूदामोदरकौंकरिसुथिर॥ धरिविग्रहरूपसुचित्रमयजयतिजयतिनृपरूपशिर ॥ ५२ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे पुष्टिपथप्रवर्तक श्रीतैलंगकुलदिवाकर श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभूणां चित्रस्य निजवार्ता ॥

## अथ श्रीसालग्रामजीकी निजवार्ता लिख्यते ।

दोहा—रूपसिंहकेसेव्ययह, सालग्रामस्वरूप ॥ तिनकेदर्शनकरतहीं, होतभक्तसुखरूप ॥ १ ॥ कहांकहांदफतरमहीं, इनहीकोअभिराम ॥ राजसिंहकेसमयमें, लिख्योसुदर्शननाम ॥ २ ॥ अगलेनृपतिपधारते, कारजवशपरदेश॥तबैंसंगरहतेसदा,नृत्यगुपा

---

१ पाग. २ इमलीका कोइला.

लसुरेश ॥ ३ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालके, गोदमांहिंसुखधाम ॥ नितप्रतिसंगबिराजते, यहश्रीसालग्राम ॥४॥ श्रीजीकेसान्निध्यमें, पंचामृतसौंस्नान ॥ जयंतीनमेंहोतहैं, अवलौंइनकौंजान ॥ ५ ॥ छप्पय॥ जयतिगांडकग्रामांहिप्रगटपरमानंदराशी ॥ जयतिविष्णुवररूपअमरमुनिजनमनवासी ॥ जयतिश्रौतअरुस्मार्त्तसंततिंहिकरतउपासी ॥ जयतिसंप्रदाच्यारमांहिकारिरहेउजासी ॥ सबकहतवेदमयतीर्थमयसर्वदेवमयजयतिजय ॥ नृपरूपसिंहकेशीशपरजयजयसालग्रामजय ॥ ६ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्रीसालग्रामस्वरूप निजवार्ता ॥

## अथ हरिभक्तिगुनप्रशंस गर्भित नृपवंश बर्ननं

दोहा—इकस्वरूपश्रीनाथको, नृत्यगोपालकेदोय ॥ चित्रसुमहाप्रभूनको, सालग्रामसुजोय ॥ १ ॥ यहपांचौंनिधिकोकह्यो, निजवार्त्तासुप्रसंग ॥ अबबरनौंनृपवंशकौं, भक्तिरंगकेसंग ॥ २ ॥ महाराज श्रीकृष्णसिंहजीके पुत्र सहसमल्लजी, जगमल्लजी, भारमल्लजी, हरिसिंहजी ॥ कृष्णसिंहमहाराजके, पुत्रसुच्यारहुसिंह ॥ सहसमल्लजगमल्लअरु, भारमल्लहरिसिंह ॥ ३ ॥ भारमल्लजीके पुत्र रूपसिंहजी ॥ भारमल्लकेपुत्रश्री, रूपसिंहनरनाथ ॥ इनसबकोवर्ननकियो, पांचौंनिधिकेसाथ ॥ ४ ॥ रूपसिंहजीके पुत्र मानसिंहजी ॥ रूपसिंहकेसुतभये, मानसिंहमहाराज ॥ श्रीजीकीसेवाकरी, चितसौंअतिहितसाथ ॥ ५ ॥ सिद्धकरायोस्वर्णको, महलसुअतिअभिराम ॥ तामेंनित्यविराजते, श्रीजीपूरनकाम ॥ ६ ॥ राजभोगनितहीधरयो, स्वर्णपात्रकेमांहि ॥ ऐसेंवैभवसौंकरी, सेवा

मानउमांहि ॥ ७ ॥ अजबकुंवरिकेवचनकौं, तिय पुत्र सावंत सिं
चाह्योग्रामसिवारकौं, तजिव्रजओगिरिराज ॥ ८ राजकाजयुवरा
त्पातें श्रीगोवर्धननाथ॥गमनकियोमेवाडकौं, निजजो नामनाग
थ ॥ ९ ॥ नगरखे ऽऽ वंटसुबन, आकरपुरअरुग्राम ॥ सरि गोस्वा
पुनीतकिय, जहांतहांकरिमुकाम ॥ १० ॥ मानशिवको, फैलर
विजयराज्यकेमांहि ॥ कृष्णगढ्ढकेदेशमें, नाथपधारेच॥ रूपनृप
नाथ रथारेदेशमें, यहसुनिकैंनृपमान ॥ दर्शनकौंपहुंचेजलद, नि
वानीसुखमान ॥१२॥ श्रीगोविंदगोस्वामिकौं, विनतीकियदंडं ॥
श्रीगोवर्धननाथके, दर्शनतैंसुखहोत ॥ १३ ॥ गंगाबाईसौंकरीनिकैं
ज्ञाश्रीगोस्वामि ॥ प्रभुसौंविनतीभूपहित, वदरशादर्य, श्रीजीहोय
गंगासौंसान्निध्यही, आज्ञाकरतेनाथ ॥ तान्त्ररसाल ॥ ७ ॥ जन्मा
तेयाकौंगाथ ॥ १५ ॥ विनतीसुनिश्रीनाथनकेमनहोतहैं, ताकेसुन
भगवदीययहबंशहैं, दर्शनहोयअवश्य ॥ श्रामजिंहिंनाम ॥ उप
लौं, फागोत्सवसरसान ॥ करिहहुदिनचाली वहसप्रेमकीर्त्तनक
खमान ॥ १७ ॥ कृष्णढ्ढदक्षिणदिशा, सार्द्धकोंगरह्योसरसाय ॥
तान्त्रकीगालमें, तहांविराजेआंन ॥ १८ ॥ सवैया॥ वडभागीन
सुढंगसुराजतस्वच्छशिलातलहैंबहुठामा ॥ कीरमयूतसमय, श्री
सुगंधितसीतलमंदललामा ॥ निर्झरकूपमनोहरहैंज. १२ ॥ वैठो
लसैंअभिरामा ॥ छाईकदंबकुरंबनिसौंसुपहारकिगारांफें, लीउठा
॥ १९ ॥ दोहा ॥ पीतांबरकीगारमैं, कदंबखंडिकीछांह राय ॥
दिनचालीशलौं, शोभितभयेसुतांह ॥ २० ॥ श्रीप्रभुजीगवडेवडे
गुरु, इनपैंभयेकृपाल ॥ भगवदीयऐसैभये, जबैंमानमहिदेवाय

॥ १५ ॥ जापद्के गावत श्रीजी माला दीनी सो वह यह पद ॥ जसोदेवधाइयां ॥ नंदरानींदेलालरूपनां ससीनेहियांसवौजिवाइ यां ॥ सोहनियांसवगोपीयांतोघरआइयां ॥ पुत्रजायाजगजीवन रीतैपैंरूलगीवडाइयां॥तैंडाभागसुलछनीसइयेंसभैंघोलिघमाइयां ॥ अमृतसारजुलध्यानीसइयेपूरियांकितीकमाइयां ॥ साजनचंदारव कीताऐसीफूलियांअंगनमाइयां ॥ खुसीहुयेसुरनरमुनिजनजनुरं कांनिधपाइयां ॥ दूधदहींसिरपावदेनाचंदेग्वालांखेडमचाइयां ॥ वडभागीनंदवहठादैंदामुँहमांगीठकुराइयां ॥ रामरायप्रभुप्रगटिया भगवानगलांमनभाइयां ॥ १ ॥ दोहा ॥ सावंतसिंहनरेशको, सुनि यैंहितियप्रसंग ॥ ताहिसुनतमनमेंवढैं, भक्तिरंगकोरंग ॥ १७ ॥ रूपवावरोनंदको, पुनिहोरीकोछैल ॥ यापदकोश्रीजीनिकट, होत फागरंगरैल ॥ १८ ॥ पदमाफकशृंगारहैं, ताहिमुजबसवठाट ॥ सबैंउपासिकसुनिचलैं, लेवैंरसकौलाट ॥ १९ ॥ करिदर्शनबहुदर्श- नी, छकिजाकिजातविशेष ॥ भाविकजनकेमनतहां होवतप्रेमावेश ॥ २० ॥ निजमरजीसौंठटयह, श्रीजीकियरवे.कार ॥ नृपआदि कभक्तनिसबनि, लीनौंहियमधिधार ॥ २१ ॥ रसिकचतुररिझवार जू, कीनोजोस्वीकार ॥ एकवरसनाहींभयो, यापदकोसुप्रकार ॥ २२ ॥ स्वपनेमेंनृपसौंतबैं, कियआज्ञाहैवार ॥ वहीगवावहुपद सरस, जामेंफागविहार ॥२३॥ जापद्कौंश्रीजी आज्ञा देकैं गवायो सो वह यह पद ॥ राग ॥ रूपवावरोनंदमहरकोवहुरिवन्यौहोरी कोछैल ॥ रोकतटोकतघूंघटखोलतभरिपिचकारीतकतउरोजनिगो

१ अपनीं विभाग । जैसे-अमुकने अपनी जमीनका अन्न लाटा ।

कुलरीमाईचलतनगैल ॥ छलसौंमसरिगुलालकपोलनिचितैंरहतप लभूलिनिलजव्हैंहियैंभरतजोबनकेफैल॥ छुटीबैंसंधिवैसहचरिसुख मदनमवासरहततनताकैअँगअँगरीझिकटीलीसैल॥१॥२४॥ दोहा— सावंतसिंहनरेशकोसुनियैंतृतियप्रसंग ॥ याहिसुनतमनमैंवढैं, भक्ति रंगकोरंग ॥२॥ हिंडोरनकेदिननमें, जबगावतपदयेह ॥ रमकिरम किझूलनमहीं, झमकिसुआयोमेह ॥२६॥ अंबरमधिवादरकहूं, जो रंचकनहिंहोय॥तऊआनवरसनलगैं, गरजिसघनघनहोय॥ २७॥ मुकटचंद्रिकाजातझुकि, मुक्तमालउघिरात ॥ श्रीजीकेश्रीअंगकी, शोभावरनिनजात॥२८॥ आनसुपदगावतजवैं, तबवरपारहिजात॥ यहपदगावतव्हैंपरत, वहुबरपासरसात ॥२९॥ मुखियाभीतरियानृ पति, जानगयेमनमांहि ॥ यहपदठाकुररीझिको, यातैंअवश्य गवांहिं ॥ ३० ॥ यहपदजादिनहोतव्हैं, अधिकनोछावरभोग ॥ याउच्छवकेदरशकरि, होतविमोहितलोग ॥ ३१ ॥ जा पदके गावत वर्षा होय अरु श्रीजीके फैंटा चंद्रिका झुकि जाय श्री अंगकी शोभा अधिक बढै सो वह यह पद ॥राग॥ रमकिरमकि झूलनिमेंझमकिमेहआयोनहिंसुरझतिवातनितैं ॥ नवपल्लवसंकुलित फूलफलबरनबरनद्रुमलतातरैंझुलवतभयोबचावभयोपातनितैं ॥ मंदमंदझुलावनलागीथंभनिसौंओढैंअंबरजलघातनितैं ॥ कृष्णदा सगिरिधारितऊभीज्योवागोसारीभौंरनकीभीरभारीटरतनटारी क्यौंहूंउपजीछवीलीघटानिजगातनितैं ॥१॥३२॥ दोहा—साँ वंतसिंहनरेशको, सुनियचतुर्थप्रसंग ॥ ताहिसुनतमनहोतहैं, भक्ति रंगकोरंग ॥ ३३ ॥ सतरैसैंपिच्यासिमैं, माणकचंदकोठारि ॥ अ

तिमरजोकोंहेदगो, रच्योकुमतिउरधार ॥ ३४ ॥ याकौंविधिपूर्वकसकल, तवरिसकेमांहि॥देखिलेहुचांतुरपुरप, मोपेंक्षमाकराहि ॥ ॥ ३५ ॥ तेजसिंहभाटीकह्यो, ताकोसववृत्तांत ॥ तवहूकमअैसैंदियो, समझिकुंवरसिद्धांत ॥ ३६ ॥ माणकचंदकेहाथकी, लाहुलिखायकैंफर्द, ॥ तवैंसत्यसवमानिहौं, करिहहुमोहिसुपर्द ॥ ॥ ३७ ॥ कितेदिवसवीततवैं, भईजुऐसीरीत ॥ लिखिकागदयाकौंदयो, फोजलैंनकीचीत ॥ ३८ ॥ तेजसिंहतवपत्रलैं, गयोरात्रिकेवख्त ॥ गयोनगरवाहिरतवैं, यामैंभईजुसख्त ॥ ३९ ॥ मारगमेंपगधरततव, मारगसूझतनांहि ॥ जितदेखैंतितहीदिखैं, श्रीजीरूपहितांहि ॥ ४० ॥ अरुलकुटीसौंमारदैं, दइबुद्धिकौंफेर ॥ समझितवपाछोफिरचो, तेजसिंहतिंहिवेर ॥ ४१ ॥ पत्रलियैंहाजरहुयो, साँवंतसिंहकेपास ॥ सकलभयोवरतावसो, कहिकैंकियोप्रकास ॥ ॥ ४२ ॥ तवमहाराजकुमारश्री, दियहूकमफरमाय ॥ माणकचंदकौंजलदही, लावहुयहांवुलाव ॥ ४३ ॥ वाकेहाजरहोतकछु, लिखवायोतिंहिपास ॥ यहअक्षरवापत्रके, मिलिगयेएकाहितास ॥ ॥ ४४ ॥ तवक्रोधकरिकैंकह्यो, साँवंतसिंहकुमार ॥ यहहरामखोरनिसुमिलि, कररह्योधूमअपार ॥ ४५ ॥ तवहीरचिसाँवंतकुंवर, इकदोहाफरमाय ॥ माणककौंपंचत्वदी, गजकेपायवँधाय ॥ ४६ ॥ जोजोनरसामिलभये, याकोसलामझार ॥ यथायोग्यतिनकौंदियौं, दंडनीतिउरधार ॥ ४७ ॥ दिल्लीमधिथेइहिंसमय, राजासिंहम

१ महाराज नागरीदासजी । २ माणकचंदके हाथकी फर्दह मारे सुपर्द करेगा तव तेरी अर्ज सत्य मानी जावेगी. ३ मृत्यु.

हाराज ॥ स्वपनेमांधिआज्ञा तिहैं, कियश्रीजीमहाराज ॥ ४८ ॥ रक्षाकीनीदेशमधि, यहसुनिउठेनरेश ॥ सानभावतासमाक्षिकैं, कियदंडोतविशेष ॥ ४९ ॥ याकोकागददेशतें, आयोकछुदिनवाद ॥ राजसिंहतवसबनिसौं यहकीनौअनुवाद ॥ ५० ॥ या समय महाराज सांवंतसिंहजी दोहो फरमायो सो वह यह ॥ दोहा—जे अपराधीस्वामिके, ताहिगैवकीमार ॥ मूरखमनसमझैंनहीं, ताको यहैंविचार ॥ १ ॥ ५१ ॥ सांवंतसिंहजीके पुत्र सरदारसिंहजी ॥ दोहा—सांवंतसिंहनरेशके, कुंवरभयेसिरदार ॥ प्रीतनीतकुलरीत युत, अतिउदाररिझवार ॥ १ ॥ अठारहसैंच्यारमें, दिल्लीपतिके पास ॥ सांवंतसिंहकेसंगही, गमनेधरिहुल्लास ॥२॥ पीछैंसैंनृपराजसिंह, गमनकियोहरिधाम ॥ दिल्लीतैंभेज्योसुलिखी, सांवंतसवरियाम ॥ ३ ॥ प्रतिनिधिकरिशिवेसिंहकौं. दीनोंकामतमाम ॥ इनकीरहिवहुगाफली, तवैंभयोयहकाम ॥ ४ ॥ गढसहरूपनगरलियो, ऐसोअवसरपाय ॥ सांवंतसिंहकेअनुजश्री, भूपवहादुरआय ॥ ॥ ५ ॥ याविपत्तिकेमांहिहीं, कहीभक्तहरिदास ॥ सांवंतसिंहनरेश तव, कियवृंदावनवास ॥ ६ ॥ मरेटानसोंसंधिकरि, श्रीसिरदारकुमार ॥ रूपनगरकौलैनकौं, लायेउनकौंलार ॥ ७ ॥ काकाऔरभतीजके, भोसंग्रामअथाग॥तबदोऊमिलिराजके, कीनेदोयविभाग॥ ॥ ८ ॥ रूपनगरदाखिलभये, श्रीसिरदारकुमार ॥ तबश्रीजीकीभेटकिय, ग्रामएकउरधार ॥ ९ ॥ इहिंरनकोइतिहाससब, रचिकैंबहुतविशाल ॥ ग्रंथसुजससिरदारमें, कह्योसुहीरालाल ॥ १० ॥ श्री

१ महाराजा राजसिंहजीकी खवास (उपस्त्री)के पुत्र थे ।

जीवनगोस्वामिगुरु, तिनकीकृपाप्रताप ॥ जुद्धजीतिनयरीतिसौं, लीनौंसुयशअमाप ॥ ११ ॥ जोपांचौंनिधिवडनकी, नृपसिरदार केशीस ॥ रूपनगरकेदुर्ग्गमें, राजतरहीवरीस ॥ १२ ॥ राजसिंहजीके चोथे पुत्र वहादुरसिंहजी ॥ दोहा—राजसिंहकेपुत्रश्री, भोच तुर्थगंभीर ॥ बहादुरसिंहसुनामजिंहिं, सांवंतेशवडवीर ॥ १ ॥ अठारहचोवीसमें, श्रीसरदारनरेश ॥ माधवमासज्ञकुहूदिवस, सुरपुरकियोप्रवेश ॥ २ ॥ तवव्रहादुरनिजपुत्रकौं, तिनकेगोदहींदीन ॥ एकराजदोउराजके, वुद्धिवलसौंकरिलीन ॥३॥ तवश्रीजीकौंकृष्ण गढ, पधरायेसहुलास ॥ अठारहपचीसमैं, वदिपंचमिमधुमास ॥ ॥ ४ ॥ कृष्णगढ्ढकेदुर्ग्गमें, हैंदहलानसुठाम ॥ हरीसिंहकेनामतें, हैंप्रसिद्धअभिराम ॥ ५ ॥ भूपतितिंहिंदहलानमें, श्रीजीकौंपधराय ॥ करनलगेसेवासुविधि, मनमैंअतिछकपाय ॥ ६ ॥ तहांउपद्रवअग्निको, भयोकछुकादिनवाद ॥ तवपीछेरूपनगरहि, पधरायेसुखसाद ॥ ७ ॥अठारहपच्चीशमैं, चैत्रशुक्लभृगुवार ॥ तिथिनवमीश्रीरामको, जन्मोत्सवसुतिवार ॥ ८ ॥ कृष्णगढ्ढकेदुर्ग्गमें, यादिनमंदिरनींव ॥ दईबहादुरसिंहजू, दूजोभुजवलभींव ॥ ९ ॥ मंदिर शीघ्रसुसिद्धाकिय, युतसाहित्यसुथांन ॥ यहसंवतँसरकारको, जानहुसुकविसयांन ॥ १० ॥ अठारहउनतीसमें, फागुनसुदिव्रुधवार ॥

---

१ सावंतसिंहजी (वडवीर) वडे भाई थे जिनके अर्थात् बहादुरसिंहजीके वडे भाई सावंतसिंहजी थे। २ वैशाख। ३ अमावास्या। ४ चैत्र ५ सरकारी संवत् आपाढसे माना जाता है जिससे विक्रमी संवत् १८२६ जानना चाहिये।

तिथिनवमीहरिदुर्गमें, राजतभयोपधार ॥ ११ ॥ पुनिश्रीजीकौं प्रीतिकरि, श्रीवहादुरनरनाह ॥ रूपनगरतैंकृष्णगढ, पधरायेकरि चाह ॥ १२ ॥ तवतैंकाहूसमयमैं, अवलौंकाहूठोर ॥ नांहिपधारे नाथजी, मंदिरतैंकिंहिंओर ॥ १३ ॥ सेवाविधिकुलरीतिसम, होत रहीअतिवेप ॥ हरिसेवनयहयज्ञतैं, सुवशवस्योसवदेश ॥१४॥ अवजवानमहाराजके, हियकौंप्रेरिसुचाह ॥ फूलमहलराजतभये छप्पनभोगउछाह ॥ १५ ॥ ताकेसववृतांतकौं, उत्तरार्द्धकेमांहि ॥ सहितअनुक्रमवर्णिहों, निजदृगलखीसुतांहि ॥ १६ ॥ वहादुरसिंहनरेशजू, छितिपरतप्योअमाप ॥ गोस्वामीजीवनप्रभू, गुरुके तेजप्रताप ॥१७॥ पुत्रपौत्रसेवकसचिव, कोशदेशरनखग्गा ॥ जीतनीतकलरीतयुत, नृपसुखलहेअथग्गा ॥ १८ ॥ राजासिंहजीकेपांचवेंपुत्रवीरसिंहजी ॥ राजासिंहसुतपांचवें, वीरसिंहमहाराज ॥ तिनकोवंशरलावतैं, राजतहैंसुखसाज ॥ १ ॥ वांकावतकेगर्भमें, जन्म लियोनृपवीर ॥ कछवाईकेगर्भतैं, च्यारोंभयेसुधीर ॥ २ ॥ वहादुरसिंहजीकेज्येष्ठपुत्रविरदसिंहजी ॥ वहादुरसिंहनरेशके, भयेकुंवर वरदोय ॥ बिरदसिंहतिनमेंवडे, बाघसिंहलघुजोय ॥ १ ॥ गोस्वामीश्रीयुतसरस, विठ्ठलनाथकृपाल ॥ तिनसौंब्रह्मसँवँधलिय, विरदसिंहमहिपाल ॥ २ ॥ सुरवानीमेंअतिसुघर, पटशास्त्रनिविस्तार ॥

---

१ राजासिंहजीके दो रानी थी। वडे कछवाईजी छोटे वांकावतजी। यह कछवाईजी जयपुर महाराज श्रीमिर्जाराजा जयसिंहजीके छोटे पुत्र कीरतसिंहजी जो कामाके राजा थे जिनके पुत्र उमेदसिंहजी थे जिनकी पुत्री थी चतुर कुंवरिजी नाम था। २ संस्कृतमें.

पढिकैंपंडिनवरभये, अतिगुणज्ञरिझवार ॥ ३ ॥ टीकागीतगोविंद पैं, लघुअरुवृहतकरीसु ॥ विज्ञरसज्ञनिहितसरस, अतिपांडित्यभरीसु ॥ ४ ॥ टीकावृहतकरीतबैं, यहैंप्रतिज्ञालीन ॥ द्वितियेशब्द मिलतेसतैं, पुनिशब्दनधरिदीन ॥ ५ ॥ यातैंबावनकोशकौं, लैसानिघ्यविचार ॥ हेरशब्दपर्यायको, लीनोनृपउरधार ॥ ६ ॥ यह टीकायासमयमें, यातैंक्लिष्टमहान ॥ सहसाअर्थप्रकाशकौं, मत्सरहतबुद्धिवान ॥ ७ ॥ बावनकोशजुयादहैं, अतिव्याकर्णविनोद ॥ सरसाईसाहित्यकी, अरुसंगीतप्रमोद ॥ ८ ॥ न्यायवातस्यायन यवनें, भाषाऊहापोह ॥ जोजानैंसोकाहिसकैं, प्रकटअर्थतजिमोह ॥ ॥ ९ ॥ श्रीजीकीकुलरीतसम, सेवानिसिदिनकीन ॥ फेरनिवासहुलासयुत, वृंदाबनकोकीन ॥१०॥ लीलानित्यविहारमग, वृंदावन केमांहि ॥ विरदसिंहपायेप्रवर, भवसमुद्रअवगांहि ॥ ११ ॥ श्रीनागरमहाराजकी, छतरीरहीदिपाय ॥ ताकेछतरीपासही, इनकी दईबनाय ॥१२॥ महाराज श्रीबहादुरसिंहजीके द्वितीय पुत्र बाघसिंहजी ॥ बाघसिंहनृपकोलसैं, वंशफतेगढमांहि ॥ रसिकविहारी प्रभुजहां, अंतःपुरकेमाहि ॥ १ ॥ विरदसिंहजीके पुत्र प्रतापसिंहजी ॥ विरदसिंहमहाराजसुत, धीरवीरगुनवान ॥ रूपमहानप्रतापसिंह, बुद्धिवानबलवान ॥ १ ॥ श्रीविट्ठलगोस्वामिगुरु, दियोमंत्र उपदेश ॥ श्रीजीकीसेवाकरी, प्रेमसमेतनरेश ॥ २ ॥ श्रीप्रतापम

---

१ जब गीतगोविंदपर बृहत टीका बनाई तब बावन कोषोंमें शब्द मिले जहांतक वह शब्द दूसरी बेर नहीं धरा । २ फारसी । ३ ठाकुरजीकी नित्य विहार लीलाका मार्ग अर्थात परलोक ।

हाराजमैं, संकटपरेविशेष ॥ तवारीखमेंदेखियो, वहइतिहासअशेष ॥ ३ ॥ ऐसेसंकटआपरे, जासौंबिगरैंराज ॥ तिनसबकौंकाटेजलद, श्रीनाथजुमहाराज ॥ ४ ॥ प्रतापसिंहजीके पुत्र कल्यानसिंहजी ॥ इनकेसुतकल्यानसिंह, केतेकरेप्रबंध ॥ अष्टादशवेंवर्षमें, लियोब्रह्मसंबंध ॥ १ ॥ श्रीवल्लभगोस्वामिप्रभु, तिनकेचर्नसरोज ॥ जिनकीगहिशर्नेजुलई, भक्तिमार्गकोमोज ॥२॥ श्रीयुतरायकल्यानकी, नृपकल्यानउदार ॥ टहलकरीअतिप्रीतिसौं, ताकोवारनपार ॥ ॥ ३ ॥ चमरछत्रअरुपात्रवहु, स्वर्णरौप्यकेवेश ॥ संकटवशकछुराजमें, कीनेखर्चविशेष ॥ ४ ॥ तिनसबकोंबनवायकैं, नूतनअतिकमनीय ॥ नृपकल्याननृपरूपज्यौं, भेटकियेरमनीय ॥ ५ ॥ पद्मरागमरकतजलज, इनकेभूषनचारु ॥ सिद्धकरायकल्यानसिंह, भेटकियेसुखसारु ॥ ६ ॥ राजभोगद्विगुनितकियो, करिमनोर्थअभिराम ॥ तिंहिहितभेटकियोनृपति, नोनिधपुरोसुग्राम ॥ ७ ॥ ग्रंथसुसेवारीतिको, रचिरमनीयनरेश ॥ कविताकीर्त्तनकौंकरी, अतिरसभरीविशेष ॥ ८ ॥ खासाअपरसरीतिसौं, सेवारीतिप्रबंध ॥ बांधिदियोनाहिसुविधि, अवलौंव्हैंसुखसंध ॥९॥ कल्यानसिंहजीके पुत्र म्होकमसिंहजी ॥ नृपकल्यानकेकुंवरवर, म्होकमसिंहनरेश ॥ तिनकेश्रीवल्लभगुरू, गोस्वामीसुद्विजेश ॥ १ ॥ सेवाकियकुलरीतिसौं, श्रीजीकीकरिप्रीत ॥ व्हैयुवराजसुराजको, काजकियोयुतनीत ॥ २ ॥ अल्पांतरकेसमयमें, कुंडवारेबहुकीन ॥ बीजेरवाडो

१ ग्रामका नाम नोनिध पुरा । २ ठाकुरजीके मनोरथसे भोग धरते हैं उसे कुंडवारा कहते हैं । ३ ग्रामका नाम बीजरवाड़ा ।

ग्रामइक, नृपतिभेटकरिदीन ॥ ३ ॥ ओरमनोरथसबकरे, जासौं जीतेयुद्ध ॥ भोअभिरामसुकामसम, नीतशुद्धमहाबुद्ध ॥ ४ ॥ श्री म्होकममहाराजकी, राणावतमहारानि ॥ महारानाअमरेशकी, तनयाबडकुलवानि ॥ ५ ॥ तिंहिंमंदिरसिद्धसुकियो, वहुभारीसुअनूप ॥ तहांगोवर्द्धननाथको, पधरायोलघुरूप ॥ ६ ॥ ग्रंथसुयाकेसुयशाको, मतिमाफकमैंकीन ॥ तवहाथीशिरपावयुत, लाखपसावसुदीन ॥ ७ ॥ म्होकमसिंहजीके पुत्र पृथ्वीसिंहजी ॥ दोहा—नीकेदत्तकपुत्रश्री, पृथ्वीसिंहनरेश ॥ राजप्रजापालनप्रवर, मानहुदितीयसुरेश ॥१॥ श्रीविठ्ठलगोस्वामिउप, नामकन्हैयालाल ॥ दियोब्रह्मसंबंधवर, व्हैकैपरमकृपाल ॥ २ ॥ प्रेमपगेसेवनलगे, श्रीगोवर्धननाथ ॥ राजभोगनित्यानसौं, दुगनितकियमुदसाथ ॥ ३ ॥ श्रीजीकीसेवामहीं, दोनौंसमयेमांह ॥ आपसदाहीपँहुचते, धारेमनमेंउच्छाह ॥ ४ ॥ श्रीजीकेग्रामनिमहीं, वहुतखुदायेकूप ॥ वृद्धिकरीपैदासयौं, बुधिबलकरिकैंभूप ॥ ५ ॥ स्वर्णरत्नअरुरौप्यके, भूषणभाजनवेश ॥ नूतनसिद्धकरायकैं, भेटाकियेपृथवेश ॥ ६ ॥ नवधा भक्ति वर्णनम् ॥नवधाभक्तिसुसिद्धिकिय, पृथ्वीसिंहनरेश॥ ताकोअबवर्ननकरौं, इकइकदोहावेश ॥७॥ श्रवनभक्ति ॥ सुनिभागोतसुबोधिनी, सुनिसिद्धांतअशेष॥भूपपरीक्षितज्यौंकरी, श्रवनभक्तिपृथवेश ॥ १ ॥८॥ कीर्त्तन भक्ति ॥ निजमुखसौंकीर्त्तनकरयो, हरिलीलासुखसार ॥ शुकज्यौंकीर्त्तनभक्तिकिय, पृथ्वीसिंहउदार ॥ ॥२॥ ९ ॥ स्मर्नभक्ति ॥ राजकाजकौंकरतही, हरिसुधिभूलेनांहि ॥

---

१ छोटा स्वरूप । २ ग्रंथ कर्त्ता कवि जयलाल । ३ गोद आये ।

सिद्धकरीप्रहलादज्यौं, स्मरनभक्तिउरमांहि ॥ ३ ॥१०॥ अर्चनभक्ति॥ स्नानादिकशृंगारयुत, नीराजनपर्यंत॥ पृथुज्यौंपृथ्वीसिंहनृप, अर्चनभक्तिकरंत ॥ ४ ॥ ११ ॥ ॥ चरन सेवनभक्ति ॥ कमलापतिकेचरनकी, शरनगहीसुखमानि॥कमलाज्यौंपृथिसिंहकिय, चरनसुसेवकजानि ॥ ५ ॥ वंदनभक्ति ॥ पदजानूउरसिरधरनि, धरिकुरकरिदंडोत ॥ कियपृथवेशअक्रूरज्यौं, वंदनभक्तिउदोत ॥६॥ दास्यभक्ति ॥ सबसेवासौंपौंहचिकैं, आज्ञाकारीवेश ॥ लैंप्रसादहनुमानज्यौं, साधिदास्यपृथवेश ॥ ७ ॥ १४ ॥ सखाभक्ति कौंप्राप्तिसुभयो, हासविलासविनोद॥वहअनुभवसुखहरिदियो, सखाभक्तिरसमोद ॥ ८ ॥ १५ ॥ सर्वस्वात्मनिवेदनभक्ति ॥ तनमनधनसुसमर्पिकैं, बलिज्यौंनिजबलजान॥सर्वस्वात्मनिवेदनसु, सिद्धकरीराजान ॥ ९ ॥ १६ ॥ प्रेमाभक्ति ॥ इनतैंदशमीसिद्धभइ, प्रेमभक्तिरससार ॥ श्रीपृथिसिंहनरेशके, ताकोवारनपार ॥१०॥ १७ ॥ अरुश्रीजीकीमिहरसौं, सिद्धभयेअभिराम॥ पृथीसिंहमहाराजके, उत्तमउत्तमकाम ॥१८॥ अग्निशकट[1]आगमनतैं, भइसायरमधिहानि॥ गवर्मेंट[2]तैंनृपलियोताकोसबनुकसानि ॥ १९ ॥ इत्यादिकइतिहासकौं, तवारीखकेमांहि॥विधिपूर्वकसबदेखियो, सकलअभिज्ञउमांहि॥ ॥ २० ॥ पृथीसिंहमहाराजजू, कुलमेंभानुसमान ॥ वीरधीरगंभीरभो, भाग्यवानसुमहान ॥ २१ ॥ महाराज श्रीपृथ्वीसिंहजीके पुत्र श्रीशार्दूलसिंहजी जवानसिंहजी रघुनाथसिंहजी ॥ पृथ्वीसिंहनरेशके, तीनौंपुत्रमहान ॥ श्रीशार्दूलजवानअरु, अरुरघुनाथहिजान ॥

---

१ रेलगाडी. २ अंग्रेजसरकार.

॥ १ ॥ तनुधारिकैंप्रकटेमनौं, अर्थधर्मअरुकाम ॥ पृथ्वीसिंहनरेश के, पुरुषारथअभिराम ॥ २ ॥ श्रीशार्दूलनरेशमें, धर्मरुकामसमान ॥ राजकाजकेहेतुतैं, सदाअर्थअधिकान ॥ ३ ॥ अर्थरुकामसमानहैं, दर्शतधर्ममहान ॥ जगमेंरहीजवानकी, धर्मध्वजाफहरान ॥ ॥ ४ ॥ लसतभूपरघुनाथमें, अर्थरुधर्मसमान ॥ मासिभीनैंवयहेत मअधिकसरसान ॥ ५ ॥ विजयराज्येमहाराजाधिराजमहाराजश्रीशार्दूलसिंहजीवहादुर जी. सी. आई. ई. श्रीशार्दूलनरेशको, अवैंकहौंवरताव ॥ सत्यसत्यसबभांतिनित, जोनैनांदरसाव ॥ ॥ १ ॥ महाभक्तश्रीनाथके,अनुभवरससुखहेत ॥ तनमनधनसौंप्रेमयुत, सेवाकोसुखलेत ॥ २ ॥ परमप्रीतिश्रीनाथके, चरनकमलके मांहि ॥ प्राचीननकेपुन्यतैं, कोलंगिकहैंसरांहि ॥ ३ ॥ पृथ्वीसिंह महाराजजू, जोजोबांधीरीत॥ताकौंअतिदृढकरतहैं,शारदूलनृपप्रीत ॥ ४ ॥ रूपसिंहकेसमयतैं, अवलौंवंनेपदार्थ ॥ जीर्णोद्धारसुसबनिको, कीनौंलखिनिजस्वार्थ ॥ ५ ॥ सिंहासनपलनारुरथ, पहिलैंसौंबडवार ॥ करिवायेशार्दूलनृप, रीतिबडनकीधार ॥ ६ ॥ जटितघटिततासौंकियो, भूषनवासनकोजु ॥ जीर्णोद्धारजलूसको, कहालौंकहिसककोजु ॥ ७ ॥ मकरानेकीजालियां, नवललगाइसुघाट ॥ निजमंदिरकेद्वारसव, चांदीकेजुकपाट ॥ ८ ॥ हिंडोरानकेफागके, आदिमनोरथसर्व ॥ आपकरैंअतिप्रीतिसौं, धारिधर्मकोगर्व ॥ ९ ॥ भ्रातुप्रमातुकलत्रसौं, कहिसुबचनरसमूल ॥ करिवावैंशुमनोर्थवहु, श्रीजीकेशार्दूल ॥ १० ॥ उच्छववैभवकहिसकन, ग्रं

---

१ दादी. २ स्त्री.

थवढनकेभीत ॥ ज्योदेखहिनिजनैंनसौं, करिहैंकहाप्रतीत ॥११॥ महाराजश्रीजवानसिंहजी ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकी, वार्त्ताहीकेमांहि ॥ कह्योबहुतवृत्तांतवर, नृपजवानकोवांहि ॥ १ ॥ नृपजवानकी नौंसरस, छप्पनभोगउछाह ॥ ताहिहेतुकौंसुनत्तही, कहिहैंजगवावाह ॥ २ ॥ छियालीसउगनीससैं, मार्गशीर्षसुदिजान ॥ तिथिअष्ठमिशनिशतभिषा, हैर्षसुबेवपहिचान ॥ ३ ॥ यादिननृपतिजवानके, लीनौंजन्मकुमार ॥ श्यामसिंहतिंहिनामदिय, नृपद्विजमंत्रविचार ॥ ४ ॥ अग्रजश्रीशार्दूलनृप, अनुजभूपरघुनाथ ॥ जन्मोत्सव आनंदउमंगि, कीनौंसरसअगाथ ॥ ५ ॥ होतपुत्रकेजन्महीं, चितमें धरीजवान ॥ करियब्रह्मसंबंधकरि, छप्पनभोगविधान ॥ ६ ॥ तबपठयोगुरुदेवके, चर्नकमलकेमांहि ॥ विनतीपत्रसुप्रीतसौं, मनमेंउमंगउमाहि ॥ ७ ॥ सुनिकैंविनतीपत्रको, श्रीविठ्ठलद्विजराय ॥ महुरतछप्पनभोगको, दियोलिखायपठाय ॥ ८ ॥ सैंतालिसउगनीससैं, पोषशुक्लबुधवर्ण ॥ द्वादशितिथिमृगशिरनछत, ब्रह्मयोगबवकर्ण ॥ ९ ॥ तबनृपछप्पनभोगकी, करनलगेततबीर ॥ श्रीजवान महाराजजू, वीरधीरगंभीर ॥१०॥ महाराज श्रीरघुनाथसिंहजी ॥ श्रीरघुनाथनरेशजू, जिहिंविधिभक्तिकरंत ॥ उत्तरार्द्धमेंलखहिंगे, भक्तिवंतगुनवंत ॥११॥ महाराज कुमार श्रीमदनसिंहजी ॥ श्रीशार्दूलनरेशके, श्रीमहाराजकुमार ॥ चिरंजीविमदनेशके, जेआचर्नविचार ॥ १२ ॥ उत्तरार्द्धमेंवर्निहौं, अतिउमंगहरषाय ॥ ज्यौंज्यौं निजनैंनालखौं, त्यौंदैहौंदरसाय ॥ १३ ॥ छप्पनभोगसुचांद्रिका,

---

१ हर्षनामक योग. २ बव नामक कर्ण.

भोसमाप्तपूर्वार्द्ध ॥ श्रीगुरुहरिकोस्मनकरि, कहिहौंअवउतरार्द्ध
॥१४॥ भयेवृंदविख्यातकवि, वृंदसतसईकीन ॥ तिंहिंकुलकोजयक
वियहैं, पूर्वार्द्धसुकरिदीन ॥ १५ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां
हरिसंबंधगुन प्रशंसगर्भितनृप वंशवर्ननं ॥

इति श्रीमत् कृष्णगढाधिपति महाराजाधिराज महाराजा
श्रीपृथ्वीसिंहजी तद्द्वितीय पुत्र महाराजा श्रीजवान
सिंहजी देववर्मणाज्ञया जयकवि रचित छप्पन
भोगचंद्रिका पूर्वार्द्ध संपूर्णम् ॥

श्री नाथजी ॥

# श्रीनृत्यगोपालो जयति ॥

## अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजाजी श्री श्री श्री १०८ श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरिसंबंध नाम नागरीदास जी कृत,

# नागरसमुच्चयः ॥

## तत्रादौ मंगलाचरण ॥

दोहा ॥ परम पुष्टि रस जल अमित, उर्मी प्रेमावेश ।
नागर प्रकट आनन्दनिधि, बल्लभ सुतबिठलेश ॥ १ ॥
धन बल्लभ बिठलेश धन, धन्य सात सुत वंश ।
भव निस्तारनि हित प्रकट, नागर जगत प्रशंस ॥ २ ॥

नागरसमुच्चये–

# वैराग्यसागर ॥

तत्रादौ

# प्रथम भक्तिमगदीपिका ॥

## मंगलाचरण ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीभागवतसुअर्थरूपगुर । प्रणऊंतिनकौंतिनहिंधारिउर॥सर्वधर्मपरपर्म्मधर्मधुज।उच्चरौंआरम्भसाखिसहितसुज १॥

यहऔसरचूकोमतिकोय । यहनरदेहबहुरिनाहिंहोय ॥ लख चौरासीभोग्यभोगसब । भयोजुनरसुभजोगजोगअव ॥ २ ॥ ताहिवृथामतिखोयकुढंग । जगनिधितरननावनरअंग ॥ कछुसुभ कर्मअवसिकरिलीजे । आतमघातकहोक्योंकीजे ॥ ३ ॥ तहांप रएकादशस्कंधे ॥ श्लोक ॥ नृदेहमाद्यंसुलभंसुदुर्लभं, प्लवंसुकल्पं गुरुकर्णधारं ॥ मयानुकूलेन नभस्वतेरितं, पुमान् भवाब्धिं न तरेत्सआत्महा ॥४॥ अर्थ-देवादिक शरीर तिनहूकी आदि यह मनुष्यदेहकौं पायो वह मनुष्य देह अति दुर्लभ हैं । भगवत कृपाकरि याको सुलभ भयो यह देह संसारसमुद्र तरवेकौं नौकाहैं सो सब अङ्गनकरिसंयुक्तहैं । गुरुहीखेवकहैं मेरीअनुकूलतापवन हैं ऐसेहू मनुष्यदेहकरिकें जो संसारसमुद्र न तरैं तो आत्मघातीहैं ॥ ५ ॥ चोपाई ॥ जगसमुद्रकहोकैसैंतरिये । कौनकर्मकरिकेंजुउ बरिये ॥ त्रिविधितापमैंप्रजुरितदेह । निसिदिनअतिदुखपरमअ छेह ॥ ६ ॥ जग्यदानतपकरैंजुकोय । लक्ष्मीआयुविनानाहिंहोय ॥ पुन्यफलतुच्छस्वर्गअरुराज । दुखहीमैंकियोदुखकोसाज ॥७॥ स्वर्गतैंपुन्यछीनव्हैंपरैं । राजात्रिविधतापमैंजरैं ॥ सबविधिपूरन श्रीभगवान । सोतजिकैंचितचाहैंआंन ॥ ८ ॥ भजिहैंऔरैंदेवउ जागर । तऊनतरसकिहैंदुखसागर ॥ यहजानौनिहचैंनिरधार स्वा नपूंछगहिकोभयोपार॥९॥ तहांपरषष्टस्कंधे ॥ श्लोक ॥ अविस्मि तंतं परिपूर्णकामं, स्वेनैवलाभेनसमंप्रशांतं । विनोपसर्पत्यपरंहि वालिशः श्वलांगुलेनातितितर्त्तिसिन्धुं ॥ १० ॥ अर्थ-भगवानविषैं कछू आश्चर्य नहीं अपने स्वरूपानन्दही करिकै परिपूरणहैं ।

या जीवतें कछू चाहतनहीं सबविषैं समान रससागर ॥ ४५ ॥ नहीं ऐसे प्रभुविना जो देवतान्तर की सरन जा॥ बातसारयह पुरुष जडहैं जैसैं कोऊ कुत्ताकी पूंछ पकरि समुद्र कृष्णभक्ति ॥११॥ चौपाई ॥ स्वानपूंछगहैंकोमतिमंद। छाडिकृष्ण एकहूंठ लगयंद ॥ मिटैंनदुखकियैंआंनउपाय। वृथानमनइतउत॥ माय ॥ १२ ॥ सर्वधर्मकलिमैंदुरिभाजे। पर्मधर्मसर्वोपरिगाजे ॥ अनन्यशर्नहरिपायनपरियैं। श्रीमुखकृष्णकह्योसोकरियैं ॥ ॥ १३ ॥ तहांपरगीता ॥ श्लोक ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज ॥ अहं त्वां सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ १४ ॥ अर्थ—सर्वधर्म छाडिकैं एक मेरी सरण होहु मैं तोकौं सब पापनितैं छुडाऊंगो तू सोक नां करि॥१५॥ ॥ चौपाई ॥ यहसन्देहजोरहैंहियभोय। तनपातादिविघ्नविचहोय ॥ शर्नभक्तिदृढतानहिंपावैं। उतकौंआंनधर्ममिटिजावैं ॥ १६ ॥ इतकोहोयनउतकोप्रानी। रहैंझूलहीबीचअज्ञानी ॥ यहत्रिसंकगतिनाहिंनव्हैंहीं। तनकभक्तिफलपूरनदैंहीं ॥ १७ ॥ तहांपरप्रथमस्कंधे ॥ श्लोक ॥ त्यक्त्वास्वधर्मंचरणांबुजं हरेर्भजन्नपक्वोथपतेत्ततोयदि ॥ यत्रक्ववा भद्रमभूदमुष्यकिं, कोवार्थआप्तो भजतां स्वधर्म्मतः ॥ १८ ॥ अर्थ—अपने वरणाश्रम धरमकौं त्यागिकैं भगवानके चरणारविन्दको भजन करत परपक्व भयें विना भ्रष्ट होयजाय तो वाकौं काहू देहमैं अमङ्गल नाहीं जातैं भक्ति संसकार दृढहैं जाको नास नहीं अरु भजन रहित वर्णाश्रम धर्म्मन तैं कौन अर्थकी सिद्धि

होतुहैं ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ मानुषसिररिणजनम्यौंतवको । देवपितररिषिभू[illegible]तनसवको ॥ हरिकेअनन्यशरनजबहोय । छूटैं रिणसंदेहन[illegible]कोय ॥ २० ॥ तहांपरएकादशस्कंधे ॥ श्लोक ॥ देवर्षिभू[illegible]आप्तनृणां पितॄणां, न किंकरो नायमृणी च राजन् ॥ सर्वा त्मना यः शरणं शरण्यं, गतो मुकुंदं परिहृत्यकृत्यम् ॥ २१ ॥ अर्थ–देवता ऋषि औरहू प्राणीमात्र और कुटम्ब मित्रादिक पितर इनको किङ्कर कहिये आज्ञाकरता ऋणी नहीं कौन जो कायक बाचक सुभाव करिकैं अहङ्कार छाडि श्रीकृष्णचन्द्र सबनिके मुक्तिके दायक तिन प्रभुकी सरनआयो ॥ २२ ॥

## अथ हरिशरण विधि । प्रथम गुरुशरण विधि ।

॥ चौपाई ॥ प्रथमहिंगुरुकीशर्णव्हैंप्रानी । तनमनधन बचन निमृदुबानी ॥ प्रसिधसंप्रदामैंगुरुकरियैं । मनकल्पितमतमैंनहिं परियैं ॥२३॥ तापैं ॥ श्लोक ॥ तस्माद्धिसुभगे नित्यं, सम्प्रदायं समाचरेत् ॥ सम्प्रदायविहीना ये, मंत्रास्ते निष्फलामताः॥२४॥ अर्थ–ता कारण तैं हे पारवती नित्यही काहू संप्रदायको आचरण जीव करैं अरु जे सम्प्रदायकैं विहीनहैं तिनके मंत्र निःफल माने हैं ॥२५॥ इति गुरु शरण अंग ॥ अथ हरिसरनअंग ॥ चौपाई॥ पहिलैंव्हैंकैंगुरुकीशर्नै। नवधाभक्तिकरैंसुभकर्नै ॥ सोनवधाविधि सुनिमनलाय । सुनतहितनमनहियोसिराय ॥ २६ ॥ तहांपरस प्तमस्कंधे ॥ श्लोक ॥ श्रवणं कीर्तनं विष्णोः, स्मरणं पाद सेवनम् ॥ अर्चनं वंदनं दास्यं, सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ २७ ॥

अर्थ–भगवान के गुननिको श्रवण अरु कीर्तन अरु प्रभुके स्वरूप लीला गुननिको स्मरण अरु चरणारविन्दकी सेवा अरु प्रभुके श्रीविग्रहको अर्चन सुगन्ध पुष्प अलङ्कारादि करिकैं अरु वन्दन कहिये प्रभुकौं साष्टांग प्रणति अरु दम्भ छाडिकैं भगवानको दास्यभाव अरु सख्यकहियैं प्रभुकौं सकलपुरुषार्थ दायक परमहितकारक जानैं यामैं दृढविश्वास अरु आत्मनिवेदन कहिये अपने पुत्र कलित्र द्रव्य देह प्रभुकी सेवाविषैं समर्पण करैं॥२८॥

## अथ श्रवण अंग ।

॥ चौपाई ॥ नववाभक्तिमैंमुख्यश्रवणहैं । श्रवणश्रवणहियभक्तिद्रवणहैं ॥ श्रवणकियैंविनुनरकहाध्यावैं । जैसैंअंधनमारगपावैं ॥ २९ ॥ श्रवनसुनेविनुकछूनजानैं । विनजानेवस्तुनपहिचानैं ॥ यातैंसवमैंमुख्यश्रवनहैं । महात्रिविधितनतापदवनहैं ॥ ३० ॥ अष्टभक्तिहूइहितैंआवत । पुनदसमीहूयातैंपावत ॥ विनाश्रवननर महाअग्यान । सींगपूंछविनपशुहैंजान ॥ ३१ ॥ चौपदभाग्यतैंघासनखावत । प्रगटिग्रामसूकरदरसावत॥ छाडिकथाहरिअमृतजथा । करतहैंदुर्भोजनजगकथा ॥ ३२ ॥ तहांपरतृतियस्कंध ॥ श्लोक ॥ नूनं दैवेन निहता, ये चाच्युतकथासुधाम् ॥ हित्वाशृण्वंत्यसद्गाथाः पुरीषमिव विड्भुजः ॥ ३३ ॥ अर्थ–निश्चयकरि जो पुरुष श्रीकृष्णचन्द्रकी कथारूपी अमृत ताकौं छाडिकैं आन विषय गाथा सुनैं ते पुरुष दैवत्यकीर्त्तनसा जैसैं सूकर विष्टा खाइ ऐसे विष्टा के खानहारहैं ॥ ३तनअंग । कीरतनेदच्छाकियोज

गतप्रकाश । अस्[illegible]इच्छातैंह्वैसबनाश ॥ जिहिंकरिलीलावहुवपुसाज । सोतोक[illegible]थाहौंनकेकाज ॥ ३५ ॥ इतोकथाहितप्रभुश्रमकीनौं जोनसुनैं[illegible]ताईमतिहीनौं ॥ कृष्णकथाकौंरुचिसरसात । ज्यौंलंपट सुनि[illegible]युवतीबात ॥ ३६ ॥ गदगदपुलकहरषव्हैंआवत । श्रवननि [illegible]यारीकथासुहावत ॥ ब्रजमथुराद्वारावतनाथा । नौरसमईसुजाकी गाथा ॥ ३७ ॥ जाकीजिहिंरससौंरुचिहोइ । कृष्णकथाक्यौंसुनैंनजोइ ॥ सुनततृपतिकौंकथाविधान । दसहजारमांगेपृथुकान ॥ ॥ ३८ ॥ तहांपरचतुर्थस्कन्ध ॥ श्लोक ॥ तदप्यहं नाथ न कामयेक्वचिन्नयत्रयुष्मच्चरणांबुजासवः ॥ महत्तमांतर्हृदयान्मुखच्युतो विधत्स्वकर्णायुतमेषमेवरः ॥ ३९ ॥ अर्थ—हेनाथ जहाँ तुह्मारे चरणारविन्द की मकरन्द नहीं सो कामना मैं न मांगूं जो मोकौं वर देतहो तो यह देहु जो सन्तजन तिनके अन्तष्करन हृदय मुखतैं श्रव्यो ऐसो जो तिहारो जस ताके श्रवनकौं दस हजार श्रवन देहु ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ विनाश्रवनअनुरागनहोय। यहनिश्चयजानौंसवकोय ॥ प्रथमहोयश्रवनानिअनुराग । तबवाढतमननैननिलाग ॥ ४१ ॥ बढैंलागजवहींमननैंननि। प्रीतमबात विनाछिनचैंनांनि ॥ अपनीकथासंगकरिगौंन । करनद्वारआवतहियभौंन ॥ ४२ ॥ तहांपरद्वितीयस्कंध ॥ श्लोक ॥प्रविष्टः कर्णरंध्रेण स्वानांभावसरोरुहम् ॥ धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा शरत् ॥ ४३ ॥ अर्थ—श्रीकृष्णचन्द्रजू अपनें भक्तजनके हृदय कमलविषैं कर्णद्वारकरि[illegible] श्रवणं की मलीनताकौं दूरि करैं॥४४ ॥ ॥चौपाई ॥ स्[illegible]नं वंदनं दास्यं, स[illegible] । हियतमहरनप्रगटभुवभान ॥

ग्यानवैरागभक्तिकोआगर । लीलाललितकृष्णरससागर ॥ ४५ ॥ जथासमयसोनित्यसुनीजे।श्रवननिकथासुधारसपीजे॥बातसारयह चित्तमैंचुनियैं । नानाअसतशास्त्रनहिंसुनियैं ॥ ४६ ॥ कृष्णभक्ति दृढताहिनपावैं । असतशास्त्रभ्रमकौंउपजावैं ॥ याहोर नकहूंठ ...गैं ॥ हराय । चकाव्यूहभ्रममैंपरिजाय ॥ ४७ ॥ कहाशास्त्र ...टस्यूं पाचार । जोईभागवतकेअनुसार ॥ सोईसुनिसुनिहियेहितइये हरिचरित्रसुनिजनमवितइये ॥ ॥ ४८ ॥ ( पैं ) एकसमयभागोतसु नीजे । ज्यौंगुरुमंत्रनामनिजलीजे ॥ एकहिअर्धहिसुनियेश्लोक । किधौंपदहिरसश्रवननिओक ॥ ४९ ॥ तहांपरपद्मपुराणे ॥ श्लोक ॥ श्लोकार्द्धं श्लोकपादंवा, श्लोकं भागवतस्यच ॥ शृणुयाद्वैष्ण वो नित्यं, विष्णुप्रीतिकरं परम् ॥ ५० ॥ अर्थ–एकश्लोक आधो श्लोक चोथाई श्लोक भागवत को नित्य सुनैं । भागवत को श्लोक भगवानकौं प्रसन्न करैं हैं ॥ ५१ ॥ चौपाई ॥ जाकेंहो यभागवतकथा । ताकोगृहहैंतीरथजथा ॥ तिनकेमिटतजगतसं ताप । सोनरपावननितानिहपाप॥ ५२ ॥तहांपरपद्मपुराणे ॥श्लोक ॥ कथा भागवतस्यापि, नित्यं भवति यद्गृहे ॥ तद्गृहं तीर्थरूपंहि, वसतां पापनाशनम् ॥ ५३ ॥ अर्थ–श्रीभागवत की जो कथा निति जाके गृहविषैं होय ताको गृह तीरथरूप हैं अरु वसै हैं तिनके पाप नाश होय हैं ॥ ५४ ॥ इति श्रवण अंग ॥

## अथ कीर्तन अंग ।

॥ चौपाई ॥ कृष्णकथानित्यकीर्त्तनसाजियैं । कीर्त्तनकरतन कबहूंलजियैं ॥ द्वैवधमेंइककीरतनअंग । कीरतनश्रवनहोतहैसं

ग ॥५५॥ नाम कीरतनधुनिसुमोहनी । हृदैमंदरमलकीजुसोहनी ॥ च्यारौंजुग मैंकीरतनसार । कलिमैंप्रगटतभयोअपार॥५६॥ कीरतनमहिमा कहीनजात । अजामेलकीसुनिलैंबात ॥ यहरसनाहैंमुखमैं तावात णकीरतनाबिनबेकाम ॥ ५७॥ नामकीरतनअरुभगरीकथा । येदोऊहैंएकसमान ॥ पैनामीतैंनामअधिकरे । नामीरागाथ ननामनिधितरे ॥ ५८॥ नामीगनैंसुजीवउवारे । एकनामअगनितजियतारे ॥ नाममहातमपारनलह्यो ॥ ब्रह्माहूतैंजातनकह्यो॥५९॥ औरैंसाधनकीर्त्तनपाछैं । ताकीअगनितसासतरसाछैं ॥ यामैंपात्रनदेशनकाल । धनचहियेनकछुजंजाल ॥ ६० ॥ तनछिनभंगआयुगतिछीन॥ यातैंकीरतनकरोप्रवीन॥भोनरजनमकीरतनसाधो कीरतनहोतजहांहींमाधो ॥ ६४ ॥ तहांपरपद्मपुराण ॥ श्लोक ॥ नाहंवसामि वैकुंठे योगिनां हृदये नच ॥ मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ ६५ ॥ अर्थ—हे नारद मैंबैकुंठमैं वसौं नहीं॥ अरु न जोगी जनौंके हृदयमैं बसौं जहां मेरे भक्त कीरतन करैंहैं तहां मैं वसत हौं ॥ ६६ ॥ चौपाई॥ जग्यकरत तपकरत कष्टकरि।बहुतवरषहूतैंव्है प्रसन्नहरि॥सोकीयेकीर्तनलघुकाल।रीझतयोरेमांझदयाल॥६७॥तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक॥ कलेर्दोषनिधेराजन् नास्तिह्येकोमहान्गुणः ॥ कीर्तनादेवकृष्णस्य मुक्तबंधःपरंव्रजेत् ॥६८॥ अर्थ—यह कलिजुग सकल दोषनिधि हैं तामैं एक गुन सर्वोपर हैं जो भगवानके गुन कीर्तन मात्रहीं करिकैं सब बन्धनतैं छूटिकैं भगवानकौं प्राप्त होय ॥ ६९ ॥ इति कीर्तन अंग ॥

## ॥ अथ स्मरण अंग ॥

॥ चौपाई ॥ श्रवनकीरतनकरैंजुकोय। ताकोफलहरिसमरन होय ॥ हरिसमरनलाग्योजबहौंन। ताकोहृदयकियोहरिभौंन७० अपनौंभवनबहुरिकोत्यागै ॥ अतिऊज्जलरापतअनुरागैं ॥ सम्म रनभक्तिपरमहैंनिधि ॥ यातैंअधिकनऔरौंरिधि ॥ ७१ ॥ कीटभृं गभयसमरनकरैं ॥ यातैंकीटभृंगवपुधरैं ॥ मोहनसमरनमोहनमई। ताकीकहाअचिरजगतिभई ॥ ७२ ॥ रोकीगृहजगिपतनीगोपी। सोतजिदेहदिव्यतनओपी ॥ समरनकरिहरिप्रापतिभई। समरन महिमाजातनकही ॥ ७३ ॥ ज्यौं विषईबहुसुमरिविषयनित। बि षयमईव्हैंजावतवेचित ॥ यौंहरिसुमरैहरिसौंप्रीत। यहनिश्चयजि यरापिप्रतीत् ॥ ७४ ॥ तहांपरएकादसस्कंध ॥ श्लोक ॥ विषयान् ध्यायतश्चित्तं विषयेषुविषज्जते ॥ मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येवप्रवि लीयते ॥ ७५ ॥ अर्थ—जैसैं पुरुष निरंतर विषयनिको ध्यान करैं तो विषयनिहूमैं चित्त आसक्त होय जातहैं ॥ ऐसैं श्रीकृ ष्ण चंद्र कहैंहैं जो मेरो निरंतर समरन करैंहैं ते मेरे विषैं आ षक्तहोतुहैं ॥ ७६ ॥ इतिस्मरणअंग ॥

## अथ पदसेवन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ सेवाकरैंजेसासतरकही। देहधरैंकोहैंफलयही ॥ सि लामईमणिमनोमईहैं। धातमईसुभचित्रठईहैं ॥ ७७ ॥ औरमृत्ति कालेप्यादार। सेवाकरतव्यअष्टप्रकार ॥ जासौंजिहिंविधिकोवनि आवैं। जथासमयजहांतनमनलावैं ॥ ७८ ॥ तहांपर एकादशस्कं

ध ॥ श्लोक ॥ शैलीदारुमयी लौही, लेप्यालेख्याच शैकती ॥ मनोमयी मणिमयी, प्रतिमाष्टविधाःस्मृताः ॥ ७९ ॥ अर्थ-सिलामई ई काष्टमई धातुमई लेप्यमई अरु चित्रमई मृत्तिकामई माता तथा मणिमई यह आठ प्रकारकीप्रतिमा कहिये ॥७९॥ चौपई ॥ व्हैसामर्थाजेतिकदेह । तेतिकटहलकरैंजुतनेह ॥ विविधिटहलकहाकहैंवषान । करैंजथाऔकासप्रमान ॥ ८० ॥ नित्यप्रभूकीसेवाअनुसरैं ॥ लषिलषिरूपनैंनजलभरैं ॥ सेवामैंउपजैं अनुराग ॥ तोतासमनकोऊबडभाग॥८१॥ हरिसेवतअरुसेवतसाध ॥ ताकीमहिमाभाग्यअगाध ॥ लग्योकोऊजोसेवामांहीं । प्रीतिभावभक्तनसोंनांहीं ॥ यौंवभागवतटेरसुनावत । सोवहप्राकृतभक्त कहावत ॥ ८२ ॥ तहांपरश्रीमद्भागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधे जनकप्रतिनवजोगेश्वरवाक्य ॥ श्लोक ॥ अर्चायामेवहरये पूजां यःश्रद्धयेहते । नतद्भक्तेषुचान्येषु सभक्तःप्राकृतःस्मृतः ॥ ८२ ॥ अर्थ-प्रतिमा विषैं तो पूजाकरैं श्रद्धाकरि हरिकी अरुताहरिकेभक्तनविषैंश्रद्धापूर्वकपूजाकरैंनहीं सो प्राकृत भक्तकहिये॥८३॥पुनः पद्मपुराणे॥श्लोक॥ आराधनानांसर्वेषां विष्णोराराधनंपरम्॥ तस्मात्परतरंदेवि तदीयानां समर्चनं ॥ ८४ ॥ अर्थ-सब देवतानके आराधन तैं विष्णुको आराधनश्रेष्टहैं ताहूतैं उनके भक्तनिको आराधन सेवन बिसेषहैं ॥ ८५ ॥ चोपाई ॥ पुनिश्रीमाधोकह्यो सुनाय । सोवसुनौंश्रवनानिचितलाय ॥ जद्यपिमेरोभक्तकहावत ॥ मुहिसेवतनिसद्यौसबिहावत ॥ ८६ ॥ तदपिनहींभक्तनिकोभक्त ॥ ताकीभक्तिबृथामधिजक्त ॥ मैंनगनूंतांहिंभक्तिनिवास ॥ जोनहिं

मोदासनकोदास ॥ ८७ ॥ केवलमेरेसोनाहिंमेरे । मेरेजोमोजन केचेरे ॥ यहकह्योअर्जुनसौंभगवान । प्रगटसाषिमध्यआदिपुरान ॥ ८८ ॥ तहांपरआदिपुराणे ॥ श्लोक ॥ येमेभक्ताजनाः पार्थ नमेभक्ताःश्चतेजनाः ॥ मद्भक्तानांचयेभक्ता ममभक्तास्तुते नराः ॥ ८९ ॥ अर्थ--हे अर्जुन जे जन मेरे भक्तहैं तिनकौंमैं अपने भक्त न गनौं मेरे भक्तनके जे भक्तहैं ते जन मेरे भक्त हैं ॥९०॥ चौपाई ॥ प्रभुकह्योअपनौंभक्तप्रभाव। यातैंदोऊसेवोजुतभाव ॥ जिहिंनरहरिकीसेवागही । मुक्तिसमीपइहींतनलही ॥ ९१ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ इत्यच्युतांघ्रिंभजतोनुवृत्त्या भक्तिर्विरक्तिर्भगवत्प्रबोधः ॥ भवंतिवैभागवतस्यराजं स्ततःपरां शांतिमुपैतिसाक्षात् ॥ ९२ ॥ अर्थ--जब निरंतर भगवानके चर्नारविंद की सेवाकरैं तव याकौं श्रीकृष्णचन्द्रके स्वरूपमैं राति और सवपदार्थनि विषै वैराग्य अरु भगवत स्वरूपको अनुभव होय तवही साक्षात् परम शांतिकौं प्राप्तिहोइ ॥ १०० ॥ इति पदसेवनअंग ॥

## अथ अर्चनअंग ॥

चौपाई ॥ जथासक्तिहरिअर्चाकीजैं । धनतैंतनहिंसफलकरिलीजैं । सींचैंविटपमूलज्यौंकोय । साषापत्रहरितसवहोय ॥१॥ (जो) मूलटारिपल्लवजलदीनौं । निर्फलजायसकलश्रमकीनौं ॥ हरिकी मायाहरिपैंधरनी । अपनीनाहिंसुअपनीकरनी ॥ २ ॥ तहांपरषष्ट स्कंध ॥ श्लोक ॥ यथाहिस्कंधशाखानां तरोर्मूलावसेचनं ॥ एव

माराधनंविष्णोः सर्वेषामात्मनश्चहि ॥ ३॥ अर्थ--जैसैं वृक्षके मूल के सींचेतैं सबही स्कंध अरु डार पत्रादिकानिकी तृप्ति होतुहै ऐसैं श्रीकृष्णचंद्रके आराधनतैं सर्व देवतानकी अरु अपनीहू तृप्तिहो तुहैं ॥ ४ ॥ इति अर्चनअंग ॥

## अथ बंदनअंग ॥

॥ चौपाई ॥ प्रभुपदकमलनिजोसिरनावत । ताहिस्यामआपु नअपनावत ॥ देतभक्तिअपनायप्यारतैं । नमतसीसतवभक्तिभारतैं ॥ यहनिश्चयमेरैंजियआई । सीसनमैंनांहिंबिनगरवाई ॥ अच्युतगोत्रीद्विजगुरदरसैं । भगवतरूपजांनिजियसरसैं ॥ ६ ॥ पहिल प्रनामकरैंसिरनाय । समयपायसिरपरसैंपाय ॥ फलतअंबकीझंव झुकौंहीं । डारिबंबूरअकासउठौंहीं ॥ ७ ॥ इहिंजगमांझनमैंगोजोइ । पदवीऊच्चलहैंगोसोई ॥ जितोजंत्रनलनीचोहोई । ततोऊंचो पहुंचैतोई ॥८॥ नरसुरअसुरदोषजिहिंकीनौं । बंदनकियैंक्षमाकरि दीनौं ॥ यांतैंनितनिश्चयजियधरिये । वंदनप्रियसौंबंदनकरिये ॥ ॥९॥बंदननित्यलाभकिनलूटैं । बंदनतैंबंधनसबछूटैं ॥ बंदनवंदनद सअश्वमेद । कहतपुरानमहातमभेद ॥११०॥ तहांपरस्कंधपुराण॥ ॥ श्लोक ॥ एकोपिकृष्णस्यकृतःप्रणामो दशाश्वमेधावभृथैर्नतुल्यः॥ दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्म कृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय॥११२॥ ॥अर्थ--जो श्रीकृष्णचंद्रकौं एकही वंदन करैं तो ताके दस अश्वमेध यज्ञांत स्नानहू तुल्यनहीं क्यौं कि यह अधिकता जो दस अश्वमेध कियेतैं वहुर जन्मकौं धरैं अरु श्रीकृष्णचद्रकौं

प्रणामकिये तैं बहुरिजन्मकौंप्राप्त न होय॥११२॥ इति वंदनअंग॥

## अथ दास्यअंग ॥

॥ चौपाई ॥ दासहोयकैंदासकहावैं । दासरूपनिजअंगबनावैं ॥ मुद्रातिलकसुतुलसीमाल । रहैंबेसमंडितसबकाल ॥१२॥ राखैंअंगपवित्रसंवार । सेवतस्वामीनिकटविहार ॥ ज्यौंवपतिवतीबधूदेषिपथ । काजरतिलकतंबोलपोतिनथ॥११४॥ बीभछरहैंरुरूपभयंकर। पदवीदासनसोहततापर॥(ज्यौं)भौंडीदीसतपतिविनजाया। रूपअमंगलसूंनीकाया ॥ ११५ ॥ इष्टनजानपरैंविनछाप । कोलहैंवेस्यासुतकोबाप ॥ बिनदानैंनाहिंमानैंकोय । महाबीरवानैंतहैंसोय ॥ ११६ ॥ सवजानैंजवव्हैंसहदान । ज्योंवछापतैंपत्रप्रमान ॥ कृष्णचरनअंकितजबठयो । गरुडतैंकालीनिर्भयभयो ॥११७॥ ऊंचनीचअधिकारीसवही दासरूपबडभागीतवही ॥ तुलसीगोपीचंदनकाय । इनकीमहिमाकहीनजाय ॥ ११८ ॥ तहांपरस्कंदपुराणे ॥ श्लोक ॥ तुलसीकाष्टजांमालां कंठस्थांवहतेतुयः ॥ अप्यशौचोप्यनाचारो मामेवैतिनसंशयः ॥ ११९ ॥ अर्थ--जोतुलसीमालाकौं कंठविषैं धारैं सो अपवित्रहोय आचाररहित होय तोहू मोकौं प्राप्तहोय यामैंसंशयनहीं ॥ १२० ॥ तहांपरस्कंदपुराणे ॥ श्लोक ॥ यस्यांतकालेस्त्युतगोपिचंदनं बाव्होर्ल्ललाटे हृदिमस्तकेच ॥ प्रयातिलोकं सरमापतेर्मम गोबालघाती यदिब्रह्महास्यात् ॥ १२१ ॥ अर्थ--गोपीचंदन जाके बाहु ललाट हृदय मस्तक विषैं होय सो जन गो बालघाती ब्रह्मघाती होय तोभी र-

माकोजुपतिमैं ताके लोककौं प्राप्ति होय ॥ १२२ ॥ चौपाई ॥ तुलसीचंदनमहिमामहा । लघुमतिवरनसकौंहौंकहा ॥ ताकेतिलककलालितहरिमंदिर । लिष्योभालजनौंगोपपुरंदर ॥ १२३ ॥ सोवैभवझिलकतमनौंबाहिर ज्यौंवमिहींपटमांझजवाहिर ॥ नरधारोधारोकिननारी । तिलकदामनितमंगलकारी ॥ १२४ ॥ कौंनकरैंजगयाकौं दूषन । परममनोहरनैननिभूषन ॥ रूपानंदचाहभईजियकैं । मंगलतिलकरामरच्योसियकैं ॥१२५॥ तहांपररामचरित्र ॥ श्लोक ॥ सनिर्वृष्यांगुलिंरामो गिरिधातौमनःशिले ॥ चकारतिलकंपत्न्या ललाटे रुचिरं तदा ॥ १२६ ॥ अर्थ-श्रीराम चंद्रजू चित्रकूट पर्वतविषैं धातजो मनःशिल तामैं अंगुरिनतैं पत्नी श्रीज्यानकीजू ताके लिलाटविषैं सुंदर तिलक बनावत भये॥१२७॥इतिदास्यस्वरूप॥

## अथ दासक्रिया ॥

॥ चौपाई ॥ हरिउच्छिष्टभोगीव्हैरहैं । बिनउछिष्टकछुवस्तु नलहैं ॥ सब्दपरसपररूपसुवास । प्रभुसमंधभोगैंसोदास ॥१२८॥ यौंभोगभुक्तिमैंहोयनबाधा । व्हैंसबासिद्धिसहजसुषसाधा ॥ बिनप्रसादभोगीजेदुषी । हरिकेदासरहैंनितसुषी ॥ १२९ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ त्वयोपभुक्तस्रग्गंध वासोलंकारचर्चिताः ॥ उछिष्टभोजिनोदासा स्तवमायांजयेमहि ॥ १३० ॥ अर्थ-तुम्हारी उतीरण भोगीजो माला सुगंध वसन भूषण इनकरि सोभित ऐसे उछिष्ट भोगी जो हम दास सो तुह्मारी माया कौं जीतैं इति दास्य अंग ॥

# अथ सख्यअंग ॥

॥ चौपाई ॥ वेईश्वरयहजीवजदपिहैं। मित्रत्वनातोकरनौंतदपिहैं ॥ मित्रभावतैंप्रीतविसेषो । लौकिकदेषिअलौकिकदेषो ॥ १३ ॥ प्रीतिकहांऐस्वर्जजहांहैं । प्रीतिरीतिव्रजभूमितहांहैं ॥ हैंसष्यतुगोपीगोपनके । प्रीतिपारनहिंउनकेमनके ॥ १३३ ॥ हरिजलमीन सकलव्रजबासी । सहजसपाश्रीकृष्णउपासी ॥ अचिरजमतिभइविश्वसृजनकी । सष्यतुभक्तिदेषिव्रजजनकी ॥ १३४ ॥ तहांपर वत्सहरणसमयकोब्रह्मवाक्य ॥ श्लोक ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नंदगोपव्रजौकसां ॥ यन्मित्रंपरमानंदं पूर्णब्रह्मसनातनं ॥१३५॥ अर्थ–श्रीनंदगोपजूकोजु व्रज ताकेजुव्रजवासी तिनको जु भाग्य सो आश्चर्य उपजावतहैं जीनके परमानंद रूप परिपूर्ण ब्रह्मकहिये सर्व कलाजुत सनातन कहिये नित्य ऐसेजु श्रीकृष्णचंद्रजू जिनके मित्र कहिये सखाहैं ॥ १३६ ॥ चौपाई ॥ नित्यप्रतिसष्यत्वभक्तिरूपधर । सेवतवृंदाविपुनभूमिवर ॥ नितिनवजोबनभक्तिअंगेटा । ग्यानवैराग्यवृद्धसंगवेटा ॥ १३७ ॥ सष्यतुभक्तिसदातनतरुनी । रसिकस्यामकीहैंमनहरनी ॥ नवलभक्तिबिचनववृंदावन । नृत्यकरतरसमत्तमहामन ॥१३८॥ तहांपरपद्मपुराण ॥ श्लोक ॥ वृंदावनंपुनःप्राप्यनवीनांगासुरूपिणी जाताहंयुवतीसम्यक् प्रेष्ठरूपातु सांप्रतं ॥ १३९ ॥ पुनः नारदवचन भक्तिप्रति ॥ श्लोक ॥ वृंदावनस्यसंयोगात् पुनस्त्वंतरुणीनवा॥धन्यंवृंदावनंतेन भक्तिर्नृत्यातियत्रच ॥ १४० ॥ अर्थ–वृंदाबनकौं बहुरिमैं प्राप्त होय नवीन

रूपा जुवती भलैंप्रकार प्रिय रूपभई॥१४१॥नारद वचन॥वृंदावन केसंजोगतैं वहुरितैं तरुणी नौतनभई वृंदावन धन्यहै ताकरि जहां भक्तिनृत्यकरैं हैं ॥१४२॥ चौपाई ॥ हरिअष्टभक्तिसेवतअभिराम। सण्यभक्तिकौंसेवतस्याम ॥ ब्रह्मादिकजाकीपदरजध्यावैं । सीस छुवनकौंसोउनपावैं ॥ १४३ ॥ जोप्रभुसण्यतैंभक्तिरिझाये । कांधे अपनेग्वारचढाये ॥ हारेआपुनजीतेग्वाल । महिमासण्यतुभक्तिविसाल ॥ १४४ ॥ तहांपरदशमस्कंध ॥ श्लोक ॥ उवाहकृष्णोभगवान् श्रीदामानंपराजितः ॥ वृषभंभद्रसेनस्तु प्रलंबोरोहिणी सुतं ॥१४५॥ अर्थ–श्रीकृष्ण आप क्रीडामैं हारे तव सषाश्रीदामाकौं अपने कांधे राषतभये भद्रसेन बृषभकौं कांधैं धारत भयो अरु प्रलंवासुर रोहिणीसुत बलदेवजी ताकौं धारत भयो ॥ १४६ ॥ इति सण्य अंग ॥

## अथ आत्म निवेदन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ तनमनधनकुटंवजुतनेह । कृष्णनिवेदनगृहकरिदेह ॥ हरिवैभवकोरक्षकरहैं । वस्तुनकोऊअपनीकहैं ॥ १४७ ॥ अपनौंअवस्यकाजकछुआवैं ॥ करिप्रार्थनाद्रव्यलगावैं । अधिक आडंवरनांहिनकरैं । जथाकाजसुलपहिअनुसरैं ॥ १४८ ॥ कृष्णोत्सवजन्मादिकआवैं । व्हैंउदारअतिद्रव्यलगावैं ॥ रक्षाकरैनकव्हूत वतनधन । हरिउत्सवआनंदमत्तमन ॥ १४९ ॥ कृष्णासमंधकरैं गृहकाज । कृष्णासमंधीसवसुपसाज ॥ निजमंगलहूकरैंअमंधी। मंगलगावैंकृष्णासमंधी ॥ १५० ॥ कहाकहींनहिंरहैंजक्तकी । सहजरी

तिपरिजायभक्तकी ॥ सर्वकालयौंकरैंबितीत । आत्मनिवेदीकीय हरीत ॥ १५१ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ एवंधर्मैर्मनुष्याणा मुद्धवात्मनिवेदिनां मयिसंजायतेभक्तिः कोन्योर्थोस्यावशिष्यते ॥ १५२ ॥ अर्थ—याभांति इनधर्मनि करिकैं जेमेरे विषैं आत्म निवेदन करैं हैं तिनकी मेरैं विषैं भक्ति होतुहै तव याकौं और कोनसो अर्थ बाकीरहैं सवही पूर्ण हैं ॥ १५३ ॥ छप्पय ॥ हरिपवित्रजसमधुरसुधारसश्रवनसुनीजे । लीलाललितवतारनाम नित्यकीर्तनकीजे ॥ समरनकरिपदसेवमिटैंभवभवकीवेदन । अरचनवंदनदास्यसष्यरसआत्मनिवेदन । इहिंभांतिभक्तिनवधाकरत उपजैंदसवोंप्रेमहैं। नागरीदाससतसंगतैंयेनिवहतसबछेमहैं॥१५४॥ इतिश्री ग्रंथभक्तिमगदीपकामैं नवधाभक्ति निरूपणं प्रथमप्रकरणं

## अथ सत संग प्रकार प्रथम महातम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ नौधाकहोनिवहैंकिहिंभांत । जुतअहलादनित्य सरसात ॥ सबमैंमुष्यएकसतसंग । भक्तिकोयासौंनिबहतरंग ॥ १ ॥ परमभक्तियाहीतैंपावैं । अरुनिवाहयातैंबनिआवैं ॥ मिलैंकृष्णउन्हैं प्रेमनिदान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २ ॥ सर्वपृथीपरदछिनाकरैं । उत्तरजायहिमालयगरैं ॥ दसौंद्वारव्हैंकाढैंप्राण । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ३ ॥ सांष्यजोगध्रमवेदअध्यैंन । तपअरुत्यागकरैंतजिचैंन ॥ अग्निहोत्रवापीकूपदान । नहिंनहिंकछुसत संगसमान ॥ ४ ॥ व्रतजिग्यरहस्यमंत्रजेसबही । येहारिवसकारिहैंन हिंकबही ॥ नेमजापबहुतीरथस्नान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान

॥ ५ ॥ औरतैंकहीनाहिहैंहियकी । कृष्णकहीउद्धवप्रतिजियकी ॥ बसीकरनमोहिओरनजान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ६ ॥ जीवअविद्यायासौंछूटैं । जगतदेहकेनातेतूटैं ॥ अरुकुसंगछूटतहै आन । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ७ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ ॥ श्लोक ॥ नरोधयतिमांयोगो नसांख्यंधर्मएवच ॥ नस्वाध्याय स्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तंनदक्षिणा ॥ ८ ॥ अर्थ—मोकौं जोग सांख्य-धर्म वेदअध्ययन तप त्याग अग्निहोत्रादिक वापी कूपादिक दान वस न करैं हैं ॥ ९ ॥ पुनः श्लोक ॥ व्रतानियज्ञछंदांसि तीर्थानि नियमा यमाः ॥ यथावरुंधेसत्संगः सर्वसंगापहोहिमां ॥ १० ॥ अर्थ—व्रत जग्य रहस्य मंत्र तीरथ नेम यम ये भी वस न करैं जैसैं सब संगकौं दूर करनहार सतसंग मोकौं वस करैं हैं ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ संगमहातमकहांलगभनियें । यातैंतरेनकीगतिगनियें ॥ गायोसुन्यौंसुबेदपुरान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १२ ॥ देवगंधर्वसिद्धअरुचारन । गुह्यकविद्याधरअरुवारन ॥ राक्षसदैत्य हूतरेंनिदान ॥ नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १३ ॥ स्वर्गअपसरा मानुषनाग । जिंहिसतसंगकियोवडभाग ॥ तिनकौंआवतनाहिंप्र मान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १४ ॥ पगमृगवेस्यासूद्ररु नारी । अंत्यजरजतमकेअधिकारी ॥ बहुतैंतरेपापकीषान । न हिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १५ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ सत्संगेनहिदैतेया यातुधानाः खगामृगाः ॥ गंधर्वाप्सरसोनागाः सिद्धाश्चारण गुह्यकाः ॥ १६ ॥ अर्थ—सत्संगकरि दैत्य राक्षस पग मृग गंधर्व अपसरा नाग सिद्ध चारण गुह्यक ये बहुत मेरे पदकौं

प्राप्त होतभये ॥ १७ ॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ विद्याधरामनुष्येषु वैश्याः शूद्रास्त्रियोंत्यजाः रजस्तमःप्रकृतयस्तास्मिन्तस्मिन्युगेयुगे ॥ १८ ॥ अर्थ—विद्याधर मनुष्य वैश्य सूद्रस्त्री अंत्यज अरु औरु हू रजोगुनी तमोगुनी तिनके स्वभावसो सत्संग करि मेरे पदकौं प्राप्ति होतभये जुग जुग विषैं ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ हरिप्रापति केऔरनधर्म । हैंसबमहाकष्टकेकर्म ॥ संतनकोढिगसुपकीपान । नहिंनहिंकछुसत्संगसमान ॥ २० ॥ सतसंगतिसुषजाकौंलग्यो । ताकैंचितऔरनसुषपग्यो ॥ तनकसुहावतनहिंसुषआन । नहिंनहिं कछुसतसंगसमान ॥ २१ ॥ उद्धवव्रजकौंस्यामपठाये । एकहि पहररहनकौंआये ॥ वीतिगयेषटमासनिदान । नहिंनहिंकछुसत संगसमान ॥ २२ ॥ ऊद्धवगोपिनकैसतसंग । करीस्यामकी आज्ञाभंग ॥ विनकहेरहेषटमाससुजान । नहिंनहिंकछुसतसंगस मान ॥ २३ ॥ उद्धवगोपिनकैंहितवोल । बढीकथारससिंधुकलो ल ॥ मत्तकथाप्रेमासवपान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २४ ॥ स्वर्गवैकुंठकोसुखदनिवास । सर्वभूमिकेराजविलास ॥ केतिककहूं आनंदविधान।नहिंनहिं कछुसतसंगसमान॥२५॥तहांपर प्रथमस्कं ध॥श्लोक॥तुलयामलवेनापिनस्वर्गंचापुनर्भवं । भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानांकिमुताशिषः ॥ २६ ॥ अर्थ—भगवतसंगी जो विष्णुभक्त तिनके संगको जो लव ताकरि स्वर्ग मुक्तिकौं सम न देषूं तो मानु- षौंकी तुछ कामना राज्यादिक करि कहा ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ उद्धवचितसतसंगलुभायो । हरिढिगपरचोनभायोआयो ॥ हरितैं अधिकप्रेमवतरान नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २८ ॥ प्रभूमि

लैहूंमांगतदास । सतसंगतदीजेसुपरास ॥ हरिहूतैंगरवोयहदान । नहिंनाहिंकछुसतसंगसमान ॥ २९ ॥ तहांपरचतुर्थस्कंध ॥श्लोक॥ यावत्तेमाययास्पृष्टा भ्रमामइहकर्म्मभिः । तावद्भवत्प्रसंगानां संगः स्यान्नोभवेभवे ॥ ३० ॥ अर्थ–जहांलौं तुम्हारी मायाके स्पर्श करिकैं अरु कर्मन करि इहां हम भ्रमैं तहांलौं तुम्हारे संगीजु संत-जन तिनको सतसंग जन्मजन्मविषैं हमकौं होहु ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ कहांलगिकहैंनरसंगमहातम । आयुछीनमतिमंददुरातम ॥ जिहिंसुपभियोसुजानतप्रान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ३२ ॥ जाकैंनहिंसतसंगतिचाह । ताकैंउरनमिटैंदुपदाह ॥ वृथाउपायकरतहैंआन । नांहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ३३ ॥ साधोरेसतसंगतिसाधो । सतसंगतिकरिहरिआराधो ॥ सर्वोपरसतसंगपहिचान । नांहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥३४॥ पहिलैंतनतिलमनहोतेल । फूलसंगभयोनामफुलेल॥ हरिहितसंगसुवासतप्रान। नांहिंनांहिंकछुसतसंगसमान ॥३५॥ आगहोतसवआगिकेसंग । लोहपरसपारसकोअंग ॥ व्हैकंचनरहैरंचनआन । नांहिंनांहिंकछुसतसंगसमान ॥३६॥ सर्वोपरियहजानिकैंलीजें । महापुरसकीसंगतिकीजें ॥जगकहैंकरामातकीपान । महापुरुसतिनकौंमतिजान ॥३७॥

## अथ अष्टसिद्धिधारकसिद्धअंग ॥

॥ चौपाई ॥ जैसैंनाटकचेटकसपनौं । भलोकरतनांहिंवेअपनौं ॥ तिनपरकृष्णकृपाकीरिद्धि । अष्टसिद्धिमानतनहिंसिद्धि ॥ ३८ ॥ सिद्धिप्रतिष्ठाकोब्यौहार । यासौंरीझतनांहिंमुरार ॥ हरिपदविमुप

करनकीमाया। इनकौतकनरमूढभुलाया॥ १३९॥ भक्तिजोगकौं जेनिरदरैं। अंतरायतिनकौंयेकरैं॥ १४०॥ तहांपरएकादश स्कंध॥ श्लोक॥ अंतरायान्वदंत्येता युंजतोजोगमुत्तमं॥ मयि संपद्यमानस्य कालक्षपणाहेतवः॥ ४१॥ अर्थ–जो मोकरि जुक्त उत्तम जोगकौं करैं ताकौं कालक्षपण हेतु ऐसीजु येसब सिद्धि अंतराय करता कहैं है॥४२॥इति अष्ट सिद्धि धारक सिद्ध अंग॥

## अथ महापुरुषसाधुअंग॥

॥ चौपाई॥ भक्तनिकोकारियेसतसंग। प्रभुपदप्रीतबढावतरंग॥ तीनभांतिकेभक्तहैश्रेष्ट। उत्तममध्यमऔरकनेष्ट॥ ४३॥ उत्तमतैंनहिंव्हैंपरमारथ। उनअपनौंकरिलीनौंस्वारथ॥ काजन व्हैंज्यौंरसरीजरी। तनआकृतहीरहिगईधरी॥ ४४॥ मध्यमकै सबचारबिचार। भलोबुरोजानतव्यौहार॥ दिक्षाशिक्षादेतदया कारि। भवनिधितारतपरममयाकरि॥ ४५॥ तहांपरश्रीमद्भागवते महापुराणे एकादशस्कंधे उद्धवप्रति श्रीकृष्णचंद्रवाक्यं॥श्लोक॥ ईश्वरेतदधीनेषु बालिशेषुद्विषत्सुच॥ प्रेममैत्री कृपोपेक्षा यःक रोतिसमध्यमः॥ ४६॥ अर्थ–ईश्वर विषैंतो प्रेम अरु ताके सेवकनि विषैं मित्रता अरु अग्यानी जनौंविषैं कृपा अरु शत्रुनि विषैं त्याग सो मध्यस्थ भक्त कहिये॥ ४७॥ चौपाई॥ तिनकोस तसंगकरोविचछन। जिनमैंप्रगटतपुनयेलछन॥ अतिकृपाल अद्रोहसुग्यांनीं। देतमानपरआपअमानी॥ ४८॥ रहितकामनाइंद्रीजीत। हरिपदकमलनिप्रीतमतीत॥ कोमलउपकारीरुपवित्र।

नित्यउचरतप्रभुचारुचरित्र ॥ ४९ ॥ निरमत्सरनिहकामानिकंच न । सांतरुसुहृदईरषारंचन ॥ निर्व्यलीकअरुसहनसीलअति । सुषदुषएकसमानधीरमति ॥ ५० ॥ मितभाषीमितभोजनकर्न । षटगुणजितकेवलहरिसर्न ॥ निर्विकारनिरउद्यमरहैं । निस्पृहकटुकबचननहिंकहैं ॥ ५१ ॥ सावधानसतवलकरुणाकर । धर्मसुथिरसामर्थबुद्धिवर ॥ नम्रनिरालससबसौंमित्र । सुधावचनउपदेसविचित्र॥५२॥इकइकगुनकेवहुतप्रकार । तिनकौंवरनतव्हैंविस्तार ॥ जेसंछेपपुराननिलहे । तेसाधूकेलक्षनकहे ॥५३॥ तहां पर एकादश स्कंध ॥ श्लोक ॥ कृपालुरकृतद्रोहस्तितिक्षुःसर्वदेहिनां ॥सत्यसारोनवद्यात्मा समःसर्वोपकारकः ॥५४॥ अर्थ–कृपाल द्रोह रहित सहनसील सत्य बल ईरषा रहित सुष दुष जाकै सम उपकारी॥५५॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ कामैरहतधीर्दांतो मृदुः शुचिरकिंचनः॥अनीहो मितभुक्शांतः स्थिरोमच्छरणोमुनि॥५६॥अर्थ–कामना रहित इंद्री कोमल पवित्र निकंचन ईहा रहित लघुअहार सांतअंतः करण स्वधर्म विषैं सथिर मेरी सरण मनसील॥५७॥ पुनः ॥श्लोक॥ अप्रमत्तोगभीरात्मा धृतिमान्जितषड्गुणः॥ अमानीमानदः कल्योमैत्रः कारुणिकःकविः ॥५८॥ अर्थ–सावधान निर्विकार धीर्जवांन षट गुणजित मानरहित मानदाता ग्यानदेवेमै प्रवीण सबसौं मित्र करुणापान ग्यानी ॥ ५९ ॥ चौपाई ॥ इनमैंकेलछनव्हैंसाधनमैं । कृष्णमाधुरीजिनकेमनमैं ॥ कछुअपलक्षनहूंजोहोई । ताकोऔगुनगनोंनकोई ॥ ६० ॥ गुनतजिनहिंऔगुनकौलीजें । हृदयचालनीसोक्यौंकीजैं ॥ वसतसुधाउरअमलउजास । सदासिंधुकैं

सीसनिवास ॥ ६१ ॥ पोषकअनीअवनिवनराई। सीतलसुंदरहैं सुखदाई ॥ जद्यपिहैंवहसहितकलंक। तदपिनघटिअधिकारमयंक ॥ ६२ ॥ तहांनृसिंहपुराण ॥ श्लोक ॥ भगवतिचहरावनन्यचेता भृशमलिनोपिविराजतेमनुष्यः ॥ नहिशशकलुषछबिः कदाचित् तिमिरपराभवतामुपैतिचंद्रः ॥ ६३ ॥ अर्थ—जाको चित्त निरंतर हरिमै लग्योहै तामनुष्यमैं जो कछु पाप दोषहू होयतो वाकी सोभा मिटैं नहीं जैसैं चंद्रमा कलंकसों मलिन हैं तोहू अधिकार सों हारैं नहींतैसैं वैष्णवनको पाप होय तोहू दबायसकै नहीं ॥ ६४ ॥ इति साधु अंग ॥

## अथ साधु प्रगटन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ इनलछिनकेकलिमैंसाध। थोरेनांहिहैंहैंजुअगाध ॥ दीसतनाहिंअभिमानदृष्टिसौं। महारजोगुनबुद्धिभ्रष्टसौं ॥ ६५ ॥ दृष्टांत ॥ धूरिसर्करामिलैजुतबहीं। गजपैंन्यारीहोयनकबहीं ॥ चैंटीसमलघुताईमानैं। साधुसर्कराजबपहिचानैं ॥ ६६ ॥ सतयुगत्रेताद्वापुरमहीं। ऐसेसाधुबहुतहैंनहीं ॥ अबकलिमैंकलिदोषहरतहैं। गंगादिकनिपुनीतकरतहैं ॥ ६७ ॥ गंगाभागीरथसौंकह्यो। सोमैंमध्यसासतरलह्यो ॥ याकारनभुवलोकनऐहैं। कलमषकलिकेजीवलगैहैं ॥ ६८ ॥ भागीरथवाक्य ॥ परमसंतजलपरसकरैंगे। वेसबकलमषदोपहरैंगे ॥ यातैंजबलगसाधअभंगा। तबलगप्रगटपहुमिश्रीगंगा ॥ तहांपरनवमस्कंध ॥ श्लोक ॥ किंवाहंनभुवंयास्ये नरामय्यामृजंत्यघम् ॥ मृजामितदघंकुत्र

राजनतत्रविचिंत्यतां ॥ ७० ॥ अर्थ—हे राजन् मैं वहोर पृथ्वीमैं न जाऊंगी काहेतैं जो उहां नर मोविषैं पाप प्रक्षालन करैंगे सो वा पापकौंमैं कैसैं दूरि करौंगी सो ताको उपाय चिंतवन करो ॥७१॥ तहांगंगाप्रतिभागीरथवचनं ॥ श्लोक ॥ साधवोन्यासिनः शांताँब्रह्मिष्ठालोकपावनाः॥ हरंत्यघंतेंगसंगात्तेष्वास्तेह्यघाभिद्धरिः ॥ ७२ ॥ अर्थ—साधुजन अपने अंगसंगतैं तिहारे पाप हरैंगे अरु ते वे साधुकैंसे है त्यागीहै अरु शुद्ध अंतस्करणहै अरु ब्रह्मके जानन हार है अरु लोकको पवित्र करण हार हैं अरु तिनके विषैं पापनके हरण हार हरि बिराजैं हैं ॥ ७३ ॥ ॥ चौपाई ॥ सतत्रेताद्वापुरकेलोग । यहचितचाहतहैसंजोग ॥ जोहमकोंप्रभुबेगउधारो । कलिमैंदीजेजन्महमारो ॥ ७४ ॥ कलिबहुभक्तिलोगसरसैंहैं । नारायनपारायनव्हैंहैं ॥ यापरबचनपुरानसुनीजैं । आरषसाषिमानिकैलीजैं ॥ ७५ ॥ तहांपरएकादश स्कंध ॥ श्लोक ॥ कृतादिषुप्रजाराजन्कलाविछंतिसंभवं॥ कलौ खलुभविष्यंति नारायणपरायणाः ॥ ७६ ॥ अर्थ—हे राजन् सत जुगादिक विषैं जो प्रजा हैं जो कलिजुग विषैं जन्म चाहत हैं निश्चय करि कलिजुग विषैं घनें नारायण परायण होहिंगे॥७७॥ ॥ चौपाई ॥ कलिमेंपरमभक्तहैमहा । बिनजग्यासीपावैंकहा ॥ मथुराद्विजगनजग्यलुभाये । श्रीभगवाननिकटतहांआये ॥ ७८ ॥ तिनपहिचानेनहिंभगवान । तोसकैंकौनभक्तनिपहिचान ॥ ज्यौं उलूककोंभाननसूझत । त्योंप्रभुभक्तहिंविमुपनबूझत॥७९॥ घटती नाहिंकालिमैंसंतनकी । हैंघटतीअपनैंहीमनकी ॥ सतसंगाकियेसाधप

हिचानैं । धन्यसोईसतसंगतिठानैं ॥ ८० ॥ इति साधुप्रगटनअंग ॥

## अथ सारासार ॥

॥ छप्पय ॥ वेदसारसत्रहपुरानद्रुतदहतआगवत । नवढुगनौं तिनमांझसारकोसारभागवत ॥ ताकोअवसुनिसारफंदसंसयमनसु रझैं । नवधानिवहैंनेमप्रेमदसवौंउरउरझैं ॥ हैंसर्वसारसुषसारयह जातैंपावतवेगहरि । नागरिदासदासानिकोसवौंपरसतसंगकरि ॥ ॥ ८१ ॥ इति श्रीग्रन्थभक्तिमगप्रदीपिकामें सतसंगनिरूपणं द्वि तीयप्रकरणं ॥ २ ॥

## अथ प्रेमप्रकार ॥

॥ चौपाई ॥ नवधावयधीसतसंगतिकल । भावभक्तिउपजत तिनकोफल ॥ भावभक्तितैंप्रेमाहिआवैं । आरषपउरपदोऊगावैं ॥ ॥ १ ॥ सोप्रेमहिकहिहौंपश्चात । पहिलैंभावकहौंविष्यात ॥ २ ॥

## अथ भाव भक्ति लछन ॥

कथाकीरतनचितसुपपगैं । जगसुषवातैंफीकीलगैं ॥ ३ ॥ क थासुननजिततितउठिधावैं । ज्यौंअलिकुसमगंधपरआवैं ॥ कबहू कालजायजोबाद । तबउपजैचितपरमाविषाद ॥ ४ ॥ पूरनभक्ति महातमभासैं । हरिगुनलीलारूपप्रकासैं ॥ हृदयभूमिकोमलव्हैजा य । रीझवेलितामैंसरसाय ॥ ५ ॥ नाहिंरिझयोजिनवातनमूर । तिनहीपैंरीझहौंनलग्योचूर ॥ नीकीवस्तुजोईजवभावत । तबहींतहां स्यामसुधिआवत ॥ ६ ॥ ब्रजवृन्दावनसोंरुचिहोय । दरसनवास आसहियभोय ॥ हरिकेभक्तलगैंजियप्यारे । कियेनभावतक

न्यारे ॥ ७ ॥ औगुनातिनकेदृष्टिनआवत । गुनहींदृष्टिपरतगुनगावत ॥ भक्ताहिंप्रेमभयोलपियापरि । धनिधनिकहतरींझकैंतापरि ॥ ॥ ८ ॥ इति भावभक्तिअंग ॥

## अथ प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ नवधासंगतैंव्हैयोंभाव । भावतैंहोतहैप्रेमबढाव ॥ सोंहैंतीनभांतिकोप्रेम लघुमध्यमपूरनाविननेम ॥ ९ ॥

## अथ प्रथम लघु प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ छुटतननवधाभक्तिप्रेमबस । विधिवतरकरतनेम सौंजुतरस ॥ ताकौंकहांलगिकहौंप्रकार । वरनतवरनतव्हैंविस्तार ॥ ॥ १० ॥ गदगदकंठपुलकितन आवैं । व्हैंरोमांचबहुरिमिटीजावैं ॥ समयपायकबहुकदृगबहैं । बहुरिजथापूरबज्यौंरहैं ॥ ११ ॥ नवधाकरतकवाहियौंहोत । अधिकहोतनहिंप्रेमउदोत ॥ प्रेमावतजग लज्याआवैं । याहीतैंलघुप्रेमकहावैं ॥१२॥ कामक्रोधादिकव्हैंआवतज्यौं । कबहूंप्रेमसमयपावतज्यौं ॥ हियगृहसुंदरठौंरसुभाय । नीचऊचसबहीतहांजाय ॥ १३ ॥ उच्चलग्योजावनतिहिंथांन । सो गृहतजिहैंनीचनिदान ॥ अैसैंप्रेमजहांसंचारेहैं । अंतकामादितहांतैंटरिहैं ॥१४॥ तनकअनउआतेव्हैंवनदाढैं । सुछमप्रेमतैंप्रेमज्यैंवाढैं॥ यौंवटिप्रेमकौंघटिमतिमानो। वडेप्रेमकीजातिहैंजानौ॥१५॥ ज्यौंसमुद्रजलपवनफुंहार । जातबहीजलकौनिरधार ॥ कहूंएकअरुकहूंअनेक । महोरमहोरसबआतहैंएक ॥१६॥ जातिजातिमैंभेनाह्नाहीं । जानौंभेदपराक्रममांहीं ॥ १७ ॥ इतिलघुप्रेमअंग ॥

## अथ मध्यम प्रेम अंग ॥ प्रथम मध्यम प्रेमावेससरूप॥

॥ चौपाई ॥ सहजहिअंषियांरहतछकीसी । रूपभावनालगतजकीसी ॥ थकितरहतअधरनमुसिक्यान । वदनप्रफुल्लितमृदुवतरान ॥ १८ ॥ झलमलातनैंननिमैंनीर। छिनछिनव्हैंरोमांचसरीर ॥ चलतमंदअतिडगाडिगुलात । करतजातमनहींमनवात ॥ १९ ॥ सेवाश्रवनकीरतनआदिक । करतकरतअतिवाढतमादिक ॥ २० ॥

## अथ मध्यम प्रेमधारक जन श्रवणरीति ॥

॥ चौपाई ॥ प्रीतमवातनिचितदृढगह्यो । विनाश्रवननहिंजातहैंरह्यो ॥ ज्यौंतियवसनवतनहितपीर । बूझतडोलतवातअधीर॥२१॥ सुनिलीलागुनिमोहनवैनानि । भरिभरिलेतप्रेमजलनैननि ॥ कवितारीतिदोषनाहिंसूझैं । स्यामसमंधसुधाश्रुतबूझैं ॥ २२ ॥ बादनकरतस्वादरसटरैं । फिरिफिरिपूछतपायनिपरैं ॥ कृष्णाकथाविनाछिननसुहात । सुनतसुनतभूलतमुरछात ॥ २३ ॥ श्रोताऐसोप्रेमकोघाम । कोरेवक्ताकेकिहिकाम ॥ कोरेपंडितचतुरनमानैं । भीजेमनकीपीरनजानैं ॥ २४ ॥ कृष्णाकथाजलकोमनमीन । बिरह-तीरआतुरतनछीन ॥ २५ ॥ इति श्रवणअंग ॥

## अथ मध्यम प्रेमधारक जन कीर्तन करन रीति ॥

॥चौपाई॥ करनकीरतनहितहियरंग॥गदगदकंठहोतिसुरभंग ॥ उमगतगहवरप्रेमविसाल । भूलतरागतानअरुताल ॥ २६ ॥ जथाजोगसमयोविसरावैं । मनलग्योजहांसोहीधौंभावैं ॥ प्रेमविनांभयेरहतसुजान । जेहंसिपरतसुनतयहगान ॥ २७ ॥ कइपुनसातकई

मुसिक्यात । लगतश्रवनदुपकइउटिजात । जिहिंहियनाहिंप्रेम आनंद । जानतकहाअभेदीमंद ॥ २८ ॥ भेदीजोजाकेउरप्रेम । जरिरह्योहितपावकाचितहेम ॥ पुनिअपरसजपजातनकियो । प्रेम लियोकरसपरसहियो ॥ २९ ॥ प्रीतिरसासवबढतपुमार भूलतनि त्यचारआचार ॥ ३० ॥ इतिकीर्तनअंग ॥

## ॥ अथ मध्यम प्रेम धारक जन समरन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ व्हैंगयोचितअतिसमरनमई । विसरतक्रियाछकनि चढिगई ॥ दांतौंनिकरमुखमेंरहिजात । व्हैंमध्यानजाहिटरिप्रात ॥ ॥ ३१ ॥ रूपसुरतचितडोरीअंतर । बिविधिभावनांकरतनिरंतर ॥ फैलिपरतमनमानसीसेवा । बिनभेदीकोजानैंभेवा ॥ ३२ ॥ कोक रैंसाधनसंध्यान्हान । कोकरैंजगलोकनिसनग्यान ॥ वहोधामौंनरहैं दिनरात । बोलैंकछुसौंकछुकहिजात ॥ ३३ ॥ इतिस्मरणअंग ॥

## ॥ अथ मध्यम प्रेम धारक जनसेवा करन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ रचिसिंगारओरहतनिहार । फिरिफिरिउठिदेखत रिझवार ॥ ३४॥ दृगजलवरषतबाढतप्रीत । धरीरहतसेवाकीरीत॥ लोटतबिवसरीझकैंरोग । कौनधरैसीतलव्हैंभोग॥३५॥ टरतसमयनैं ननिजलवहैं । प्रीतिकेआगैंरीतिनरहैं ॥ आरतनैंननिसौंमुखहेरत । आरतीअधिकप्रमानतैंफेरत ॥ ३६ ॥ फेरतफेरतफेरतजाय । हंसतलोकलखिकैंयहभाय ॥ छुवाछुईकीसुधिनहिरहैं । प्रेमछुयेकी कोगतिकहैं ॥ ३७ ॥ यथाजोग्यसेवानहिंहोय । प्रेमकेवससबविधि दैंखोय ॥ ३८ ॥ इतिसेवाअंग ॥

## ॥ अथ मध्यम प्रेमधारक जन बंदन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ सुनियेबंदनकीगतिबांकी । व्हैंसरूपसेवाकीझांकी ॥ सीसननवैंरहैंलखियौंहीं । पुलकिप्रेमतनसुरातिससौंहीं ॥३९॥ अरुझतनैंनमीनछबिजार । साधनभक्तिभूलिव्यौहार ॥ माधुरिपीवतपलकानिरंतर । बंदनकरिकरैंकोटगअंतर ॥ ४० ॥ जबमनप्रेमहिंडोरैंझूलैं । नित्यनेमहूबंदनभूलैं ॥ औरठौररीझतमनजहां । पुनिपुनिपायनिपरतहैंतहां ॥ ४१ ॥ जोकोउइनकौंवंदनकरैं । येताकेचरननिदिसिढरैं ॥ घटिवढिकौंनकौंनहीग्यान । महानम्रताचितहितस्वान ॥ ४२ ॥ कृष्णापदअंकितपहुमिव्हैंजहां । वाहिंरजलुटतधसनसिरतहां ॥ नेमजुक्तबंदनउडिगयो । प्रेमप्रवलकैंमनवासिभयो॥४३॥ इतिवंदनअंग ॥ चौपाई ॥ नौधातैंसुप्रेमउठिजागैं । पुनिताहीकौंमेटनलागैं ॥ उमगतजवैंउदधिज्यौंप्रेम । छुटिछुटिजातहैंनौधानेम ॥ ४४ ॥ प्रेमीप्रेमकेसुखकोजानैं । गूंगोकहागुरस्वादवखानैं ॥ प्रेमानंदवढतउरस्वाद । वाहिरदीसतज्यौंउनमाद ॥ ४५ ॥ गावतरुदतहंसतअरुनाचत । गहवरप्रेमतवैंउरमाचत ॥ वाहवाहकहिउठतसराहि । कबहुकमौनपकरिरहिजाहि ॥ ४६ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ क्वचिद्रुदंत्यच्युतचिंतयाक्वचिद्धसंतिनंदंत्यवदंत्यलौकिकः ॥ नृत्यंतिगायंत्यनुशीलयंत्यजंभवंतितूष्णींपरमेत्यनिर्वृताः ॥ ४७ ॥ अर्थ—कवहू अच्युतको चिंतवन करि रुदन करैं कवहू हसैं अरु आनंद जुक्ति होय अरु अलोकिक भयो बचन कहैं अरु नृत्य करैं अरु गावैं अरु हरिकौं प्रसन्न करैं अरु परम वस्तुकौं पाय आनंदित होय चुप व्हैरहैं ॥४८॥

॥ चौपाई ॥ ऐसीप्रेमदसाअभिराम । ताकोकहतमहातम स्याम ॥ ४९ ॥ इनहिंदैंहिजोमुक्तिवडाई । सुतोमुक्तिदैतनिहूपाई॥ औरकछूकहिबोनहिरह्यो। तवहरिउद्धवसैंयौंकह्यो ॥५०॥सोसवलो कानिवाहिरसंत । सेसलोकअजलोकप्रजंत ॥ ऐसोममजनपरसि महीकौं । करतपवित्रलोकसवहीकौं॥५१॥ तहांपरएकादशस्कंध॥ ॥ श्लोक ॥एवंव्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागोद्रुतचित्तउच्चैः॥ हसत्यथोरोदितिरौतिगायत्युन्माददन्नृत्यातिलोकवाह्यः ॥ ५२ ॥

अर्थ–ऐसो है आचरन जाके जो अपनौं प्रिय जो श्रीकृष्ण चंद्र ताके नामही कहने करि उपज्यो हैं अनुराग जाकैं तासौं द्रव्योहैं चित्त जाको ताकरि कवहू ऊंचे प्रकारे हंसैं कवहूं रोवें अरु गावें उन्मादको नांई होय करि नृत्य करैं सोलोक बाह्य हैं ॥ ५३ ॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ वाग्गद्गदाद्रवतेयस्यचित्तं रुदत्य भीक्ष्णं हसतिक्कचिच्च ॥ विलज्ज उद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तो भुवनंपुनाति ॥ ५४ ॥ अर्थ–जाको वानी गदगदतैं चितद्रवैं अरु वारंवार रुदन करैं अरु कवहू हंसैं अरु कवहू निलज्ज होयकैं गावैं अरु नृत्य करैं सो ऐसी मेरी भक्ति जुक्त सर्वलोक पवित्र करैं ॥ ५५ ॥ इतिमध्यमप्रेमअंग ॥

## ॥ अथ पूरन प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ फिरैंनेहकीदेहदुहाई । व्हैंसंचारीप्रेमस्थाई ॥ तन मनहूंकोसुधिविसरावै । वाहिरदृष्टिकभूनहिंआवैं ॥ ५६ ॥ ऐसेनि कोकहासंगसुखारी । दरसनमात्रहिमंगलकारी ॥ पूरनरहैंजूस्था

इप्रेम । दूरिकियेनौधाकेनेम ॥ ५७ ॥ ज्यौंतियजवलगगुडियन खेलत । तवलगिपियभुजभरिनहिंझेलत ॥ जवपियसौंबाढीरंगर लियां । तववेगुडियांलगतनभालियां ॥ ५८ ॥ प्रेममगनपियसौं गरवांहीं । निसदिनहूकीसुधिरहैनांहीं ॥ छुटिगयेऔरस्वादसब हीके । लहेनिरंतरजीवनजीके ॥५९॥ जोईढिगसोईसवधांदरसात। कृष्णमईअंखियांव्हैजात ॥ होतसवैसुधिप्रेमकोगसा । जिन्हकसं निपातजिमदसा ॥ ६० ॥ मुखमैंमौंनिहगनिमैंनीर । कहनमात्र हीरहैसरीर ॥ इहिंविधिकोबाढैजवनेह । वेगहिछूटिजातहैदेह६१॥ इतिपूर्णप्रेमअंग ॥ चौपाई ॥ प्रेमकीमहिमाकहिनसकतहौं । सुन तमहातमरहतचकितहौं ॥ प्रभुतैंअधिकप्रेमकौंजानौं ॥ प्रगटिप्रमा नदियेतैंमानौं ॥ ६२ ॥ रामकृष्णवहौदरसनकरते । सवहिप्रेम आनंदनहिंभरते ॥ ताकीमतितैंसीयेरहती । शत्रुनिकीलखिछाती जरती ॥ ६३ ॥ देतेदरसप्रेमनहिंदेते । सदाश्यामघनप्रेमविजेते ॥ वेदओसकलपुराननिमांही । यांतैंअधिकपदारथनांही ॥ ६४ ॥ जाकौंस्यामप्रेमहीदीनौं । ताकैंमनकीनौंआधीनौं ॥ कृपापात्रज नजाकोंकहिये । ताकैंतनप्रेमानंदलहिये ॥ ६५ ॥ गदगदकंठबि नारोमांच । विनअश्रुपातप्रेमउरआंच ॥ कैसेंकृष्णप्रीतविनवुद्ध । कैसैंव्हैमनउज्जलसुद्ध ॥ ६६ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥श्लोक॥ कथंविनारोमहर्षं द्रवताचेतसाविना ॥ विनानंदाश्रुकलया शुद्ध्ये द्भ त्त्याविनाशयः ॥ ६७ ॥ अर्थ—विन रोमहर्ष अरु विनाचित्तकेद्रवै अरु विन आनंदके अश्रुपात औसो भांतिकी प्रेम लछना भक्ति विनां कैसें अंतहकरण शुद्ध होय ॥६८॥ चौपाई ॥ यवनानहूके

मुखिहैंप्रेम । प्रेमैंस्वजंकरनदृढनेम ॥ नकलश्रोअसलप्रेमभयोभान। सकलव्हैंठाढेकरैंसनमान ॥ ६९ ॥ येऊमुण्यप्रेमकौंजानैं । धिकजो प्रेमोत्कर्षनमानैं ॥ कृष्णाहैंप्रेमप्रेमहैंकृष्णा । याकोफिरिकरिवोन हिंप्रष्णा ॥ ७० ॥ छप्पय ॥ कोरिकजनमनिसुकृतकियेंनवधाकौं करिहीं । नवधाभक्तिहिंकियेंभावअंतरसंचरहीं ॥ भावभक्तितैंप्रे महोतहरिकृपारूपहैं । प्रेमतैंअधिकनकोऊवस्तुहरिपैंअनूपहै ॥ प्रभुहूतैंगरवोमहाप्रभुयाकेवसरहतनय । प्रणवतनागरिदासनितिज यजयप्रेमानंदजय॥७१॥पुनः॥धनिवहकुलधनिनगरधन्यवहदेशसु मंडल । धन्यखंडवहदीपधन्यवहसकलमहीथल ॥ धन्यधन्यसव लोकहोतजिंहिंपावनपावन । मुखरसनावहधन्यकरतातिनकोगुन गावन ॥ जाकीमहिमाकहिसकैंकोकविनागरमध्यछित । करतध न्यइननैंनकौंजिहिंउरप्रेमानंदनित ॥ ७२ ॥ चौपाई ॥ विनसतसं गविननवधानेम । अनायासव्हैंआवैंप्रेम ॥ सिद्धभक्तिउपजैंविन साधन । हरिकीकृपाकैंपूर्वाराधन ॥ ७३ ॥ काहूजनमजातनहिं छीज । उपजपरतजैंसैंवटवीज ॥ तनकछुवैंछांडतनहिंगोहन । भक्तिमिलायरहतजगमोहन ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ भाषावातीनेहजुत लोयश्लोकप्रकास । ग्रंथभक्तिमगदीपकाकियोनागरीदास॥ ७५ ॥ पढैंसुनैंयाग्रंथकौंमनदैंसरससुठौन । भक्तिपंथसूझैंतिन्हैंपहुंचैंप्रीतम भौन ॥ ७६ ॥ संमतअष्टदससतजुदैंकारतीजगुरवार । रूपनगर विचकृष्णपक्षभयोग्रंथविस्तार ॥ ७७ ॥ इतिश्रीग्रंथभक्तिमगप्रदी पिकामैं प्रेमनिरूपणं तृतीयप्रकरणं समाप्तम् ॥ इतिभक्तिमगदीपि कासंपूर्ण ॥

## ॥ अथ देहदसा ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीगुरकेपदपंकजध्याय। देहदसावरनौंचितलाय॥ उपजनहितवैरागनरनकौं । गेहमगननहिंनरकपरनकौं ॥ १ ॥ श्रोणितबीजेमिलैंजबदोय। पंचरात्रिमैंबुदबुदहोय॥ दसदिनमैंव्है बेरसमान। मस्तकमांसवहुरिपिंडवान॥ २॥ द्वितीयमासमैंवाहुर पाय । त्रितीयछिद्रनखकचसवकाय ॥ चोथैंमासधातुतनपागैं । पंचममासक्षुधाहूलागैं॥ ३ ॥ अन्ननीररसकीयौंजुगतैं। आप्याय निनाडीसूंभुगतैं॥ निजनासानिजनाभीछूवैं। बंध्योजराढ्ढपरचो ज़ुकूवैं॥ ४॥ घुटैंनासिकास्वासमहादुख। भुगतैंचर्मनकैन,ंहींसुख॥ विष्टामूत्रमहादुर्गंधि। तामैंफस्योजुपापसमांधि ॥ ५ ॥ जीवउदर केकाटततनकौं। रौंमरौंमपीडादुखमनकौं ॥ ऊष्णातिक्तभुक्तैंजब माता। चरमरातकोमलअतिगाता ॥ ६॥ कलमलायव्याकुलअ तिप्रांनी । सप्तमासमैंसवसुधिआंनी ॥ करनलग्योविनतीजवहरि सौं। महादुखीदुखहीकैडरसौं॥ ७॥ अहोअहोकरुनानिधिस्वामी। काटोदुखमेरोवहुनामी॥ होंप्रभुकीसेवाअनुसरिहौं । जगप्रपंचमैंनां हिंनपरिहौं॥ ८॥ यहसुनिवचननिकास्योऐसैं। जंतीमांझतारव्है तैसैं॥ सोदुखदारुनकह्योनजाय। मनकीमनमैंबातविलाय॥ ९॥ निकसतहीविसरचोगोबिंदा। परचोपवनलगिमायाफंदा॥ बालाप नखेलनमैंवीत्यो । तरुनापनमैंजुवतिनजीत्यो॥ १०॥ अतिमद अंधओरनहिंबूझैं । एकविषैउनहीकौंसूझैं॥ भरनपोखउनहीको करैं। कालव्यालतैंनांहींडरैं॥ ११ ॥ साधनकीमनबातनमानी। अतिदुर्मतिकेवलअभिमानी॥ बहुरिवृद्धतनकोवलगयो। चिंतामो

हमहामनछयो ॥ ७० ॥ खासतथूकतचल्योनजाई । तहांलष्टकाभईसहाई ॥ नातीपुत्रचहूंदिसडोलैं । तिनसौंहोयतोतलोबोलैं ॥ १३ ॥ मोहविवसगईवुद्धिविलाइ । गोविवेकवैरागनसाइ ॥ तीनअवस्थायौंहीखोई । धुरसौंबेलिनरककीबोई ॥ १४ ॥ वहुरिजुकालआइकैंअरयो । व्हैकैंदुखीखाटमैंपरयो ॥ अतीसारभोकपराविगरै । महाविपतितैंदुरेजुसगरै ॥ १५॥ अतिदुर्गंधिमाक्षिकाछाई । सज्जनहूलखिनाकचढाई ॥ कृष्णनामरसनांनहिंधरैं । सुतनातीकौंटेरतमरैं ॥ ॥ १६ ॥ निकसतजीवमहादुखभयो । सोतोमोपैंजातनकह्यो ॥ इतयाकीफूकीलैमाटी । उतजमआगैंपीटापाटी ॥ १७ ॥ साधाविवेकीहितवेंधातैं । निकसनिउदरमांझकीबातैं ॥ वहुविधिकरिकैंसुधिजुदिवाई । मार्नीनांहिमारअतिखाई ॥ १८ ॥ यहसुनिमतिविसरोरेभाई । कोटिकोटिहैंरामदुहाई ॥ विषैमांझमनमतिदैंतेरो । जन्मऔरहूंमांझधनेरो ॥१९॥ इहमानुषतनप्रभूमिलनकौं । सतसंगतिसुखसिंधुझिलनकौं ॥ हरिकीभक्तिकरोचितलाय । तीनौंतापवेगमिटिजाय ॥ २० ॥ करदयोदीपगलोचनदूवैं । अवजानिवूझिमतिपरोजुकूवैं ॥ नवधाभक्तिभागवतकही । ताकोफलदसधाहैंसही ॥ २१ ॥ सोसुखरूपजुस्यामामिलावैं । जोकवहूसतसंगतिपावैं ॥ उपजतग्यानकरनसुखरास । कहीवातइहनागरिदास ॥ २२ ॥ हरिसनमुखवंदैवोजगपीठ । अभिमानीमानैंगोनीठ ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥ सुनैंसुनावैंजोकोऊ यहगाथाचितलाय ॥ दासनागरीजासके परैंस्याममगपाय ॥ २४ ॥ नागरियायाजगतमैं भागताहिकोभूर ॥ व्रजभक्तनकेचरनकी जिहिंधरीसिसपरधूर ॥ २५ ॥

नागरिदासहुलाससौं तेईगयेजगजीति ॥ मनसाबाचाजिनकरी हरिभक्तनसौंप्रीति ॥२६॥ देहदसाबरनीइहैं। मोमतिकैंअनुसार ॥ संतविवेकीसुनिसुकवि। लीज्योयाहिसुधार ॥ २७॥ इतिदेहदसा ॥

## ॥ अथ बैराग बटी लिख्यते। प्रथम धनभारी गृहस्थ ष्वारी ॥

॥ चौपाई ॥ परनैंमंगलचारबधाई मरैंसीसमिलिकूटैं। पांचपिसनतनकेनहिंजीते बाहिरअरिसोंजूटैं॥ जैतअजैतहाथहरियहविच हारिकहावैंकायर। ऐसोदुखीनत्यागिसकैंघर योंमायाजोरावर ॥१॥ छप्पनभोगदासमिलिपावैं इन्हैंदालिकोपांनी। रोगग्रसतबैभवाकिंहिं कारज मनदुखियाहैरांनी॥ नित्यनवेरैंन्यावसबनके परदुखमैंमनरहनौं। ऐसोदुखीनत्यागिसकैंघर योमायाकोलहनौं ॥ २ ॥

## अथ गृहस्थ मध्यस्थ धनद्वार ख्वार ख्वार बर्ननं ॥

आठपहरदुपहीमेंबीतैं कायकूयपरजाकी। विषैभोगआछैंहूं नाहीं चिंतामैंमतिछाकी॥ जितातितअपजसदुरदुरघरघर तनमन कीअतिख्वारी॥ ऐसोदुषीनत्यागिसकैंघर मायाकीगतिभारी॥३॥ नित्यचाकरीसौंचितडरपैं कछुचूक्योअरुमारचो।कारजद्रव्यविनां वलधीसैं मनसौंजातनहारचो ॥ दिनकुटंबकेभरनपोषमैं निसबिचारकरिसोयो॥ ऐसोदुषीनत्यागिसकैंघर मायारांडबिगोयो ॥४॥ (नहिंधनटांकगृहस्थरांक)। बहुतठीकराठाटषडभडैं एकहूनांहिनलोटी। सांपगोहिराकरत कलेलैंपे बेकौंनाहिरोटी॥ कालीकुटिलकुब्यौंतीकामिनी गुहीमूंजसोंचोटी ॥ ऐसोहूगृहत्यागिसकैं नाहिं मा

याकीगतिमोटी ॥ ५ ॥ जनौंऔदसाबारविराजत ऐसीटूटीछान ॥ बालकबहुतमनौंभुतलेटे तिन्हैंमिलतनहिंधांन ॥ नितउठिहोतिकलह अतिकर्कस जिततितपैंचातांन ॥ ऐसोहूगृहत्यागिसकैंनहि माया कीगतिजान ॥६॥ ( भेषधरैंसहजसुपटेर ) धरैंभेषजोईजादिनतैंबं दनकौंअधिकारी । व्हैंनिर्भैनिश्चिंतसहजमैंबिपतिमिटैंतबसारी ॥ सिषरनभातषीरकेन्यौंता नितउठिमंगलबढ्ढै । याहिलैंनसुपकौंनत जैंगृहमायाकेमुहचढ्ढै ॥ ७ ॥ पराधीनतामिटैंपापिनी व्हैंसुतंत्रअ रुबिचरैं । जहांनजांवनपावनहोतहां जायनिडरमुपउचरैं ॥ तीनहु तापमंद्व्हैंजावैं बहुरिडरैंजमदूत । यहीवातनहिंसमझतजैंगृह ह रिकीमायाधूत ॥ ८ ॥

## अथ सिद्धआनंदीदूरकरीमायालैगंदी ॥

कृपारंगतैंसंगमिलैंकहुंजोउज्जलरासिकनको राधारवनरूपकेर समैं बूडैंनषसिषमनको ॥ उपजैप्रेमानंददेहिमैं तवसुषकोसुपलूटैं । नागरिदासहोयमतिवारो मायाकोसिरकूटैं॥९॥ इतिश्रीबैराग्यबटी॥

## अथ रसिकरतनावलीलिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमोहनगुरुप्रेमवपु । बंदौंपंकजपाय ॥ मोपैंपूरनकारि कृपा । दीनैंसंतबताय ॥१॥ तेईहरिजनइष्टमम। तिनहीकौंसिरनांउ॥ तिनहीकेजुप्रसादतैं । तिनहीकोजसगांउ ॥ २ ॥

## अथ बैष्णवसहजसरूपबर्ननं ॥

कवित्त ॥ मालागरैंतुलसीकीलपैंहियतैंमुक्तावलिजालबिसारैं । गूदरपैंकेईकंचनकेपटटूटीकोपीनपैंकाहिउचारैं ॥ जीरनजूतीधि

सीफिरैंनागरतापैंसिंघासनफेरिकैंडारौं ॥ औरबषानौंकहामूंडमाधुरीस्वामीकीचांदिपैंचंदाकौंवारौं ॥ ३ ॥

## अथ अनुरागसहितसरूपबर्नन ॥

॥ कवित्त ॥ लोचनसजललालघूमतबिसालछकेचलनिमरालकीसीठढेरैंमतनमैं । उज्जलरसभीनैंताकेंदीनैंगरबांहिरहैंस्यामास्यामदोऊंहियैंसुंदरसदनमैं ॥ पुलकितगातगिरागद्गदरोमांचितधारैंछापकंठीओतिलकनिजपनमैं ॥ कहाभयोनागरकियैंतैंतपजपदानजोपैंसंतमाधुरीबसीनऐसीमनमैं ॥ ४ ॥

## अथ वैष्णवमदोन्मत्तसुभाववर्णन ॥

॥कवित्त॥ लीलारसआसवश्रवनपानकीनेहरिग्यांनाहिगजकआननांहिचहियतुहैं । विधनांकुबेरइंद्रआदिसबरंकदीसैं ऐसेमदछायेपैंनमनिगहियतुहैं ॥ भावनांहिंभोगमैंमगनदिनरैंनरहैंताकेनैंकताकौंनितछाकेरहियतुहैं॥औरमतवारेमतवारेनाहिंनागरवेप्रेममतवारेमतवारेकहियतुहैं॥५॥ कुंडलिया॥दोहा॥ चितवतनहिंबइकुंठदिस। नैंनकोरतैंमूर ॥ सबसरबससिरधूरदैं । सरबसकीब्रजधूर ॥ सरबसकीब्रजधूरिपूरिनितरहेएकरस । मनअंषियांतनबातनिराषिपुनिबंधलरीझबस ॥ जहांजहांसुनिपियबात नैनभरिछिनछिनचितवत । नीरसरसमईहोत तनकदृगकोरहिचितवत ॥ ६ ॥ लोकनमैंकैसैंमिलैं परमप्रेमनिधिचोर । देपतहीलषिजाइयें आंषिनहीकीओर ॥ आंषिनहींकीओरचोरपकरतवाहिनिधकौं । पियप्रकासझलमलतमनौंबादरतरबिधकौं ॥ जिहिंबिधयौंउरआहिमहातीछनिदृगनोकनि । म

धिअवीधक्योंरलैंजाहिहियसूतविलोकनि ॥७॥ मूधेअतिवांकेमहा । फसेनेहकेपंक॥ दीनलगतचितवतनिपट।कहैंकुबेरसौंरंक ॥ कहैंकुबे रसौंरंकसंकाहियमैंकछुनांहीं॥ फिरतविवसआवेस बलितबनघनकी छांहीं॥ब्रजसमाजछबिभीररहतनितप्रतिहियरूधे । बोलतअटपटेवैं नलगतसूधनकौंसूधे ॥ ८ ॥ वृंदाबनरसमैंपगे । जीत्योअजितसु भाव॥ सातगांठिकोपीनकैं । गनैंनरानाराव ॥ गनैंनरानारावभावचि तरहेमहाभारि । लषैंदीनतैंदीनलीनव्हैंपरतिपगानिढरि ॥ अहाअनो षीरीत कहाकहौंरहतरहिततन । व्हैंचकोरसासिवदनजुगलनिरषतवृं दावन ॥ ९ ॥ नैंननिजलचितव्हैंरहे । चूरचूरतनछीन ॥ चूरचूरढि गगूदरी। कहैंइंद्रसौंदीन॥ कहैंइंद्रसौंदीनमीनदृगलीनस्यामजल। ज कारिजुलफजंजीर कियोबसमनमतंगपल ॥ रूपरसासवमत्तमुदि तगदगदसुरवैननि ।तनघूमतलगिघाय स्यामसुंदरसरनैननि॥१०॥ ताननिकीताननिमहीं । परचोजुमनधुकिधाहि॥ पैठचोरवगावतस्रव नि। मुषतैंनिसरतआहि॥मुषतैंनिसरतआहि साहिनहिसकतचोटाचि त । ग्यानहरदतैंदरदमिटतनहिंबिबसलुटतछित॥ रीझरोगरगमग्यो पग्योनहिंछूटतप्राननि। चितचरननिक्यौंछुटैं प्रेमबारनकीताननि ॥ ११॥ बोलनिहीऔरैंकछू। रसिकसभाकीमानि ॥ मतवारेसमझैंन हीं । मतिवारेलैंजानि॥ मतवारलैंजानिआंनकौंवस्तुनबूझैं । ज्यौंगूं गेकोसैंनकोऊगूंगोहीबूझैं ॥ भीजिरहेगुरुकृपावचनरसगागरिढो लनि । तनकसुनतगरिजातसयानपअलबलबोलनि ॥ १२ ॥

## ॥ अथ बैष्णव प्राप्ति सिक्षा कथन॥

बूराविखरचोरेनमैं। मगजनगजकौंपाय॥तजिऊंचेअभिमानकों । चैं

टीन्हैंतोखाय ॥ चैंटीन्हैंतोखायचायचितरजनिवारिकैं । कनिकार सिकहिलहैंअपनपोतनकधारिकैं ॥ मांनीमलिनमतंगतातहिइहक होनमूरा । दीजैंतिनहिंबतायजाहिभावैंजनबूरा ॥ १३ ॥ दोहा ॥ जग्यदानसंजमनियम, कियेतीरथतपपूर॥ नेहनीरपरस्योनहीं, तो सबकीनौंधूर ॥१४॥ कवित्त ॥ नागरवेदपुरानपढ्योसबबादकैकी नीकईमतिपांगुरी । गंगओगोमतीन्हातफिरचोअतिसीतमैंप्रीतसौंहा थलैंकांगुरी ॥ गल्यकान्हायगोदावरीन्हायोसुत्यागिदैंअन्नरुखावत सांगुरी।औरहून्हायोसुमैंनबदीजौपैंनेहनदीमैंनदीपगआंगुरी॥१५॥ भाज्योफिरच्योबहुतीरथकेहितबांधिकुटीव्रजगाढोगह्योना । नागर वेदपुरांनपढ्योमुषमोहनप्रेमसौंनांवकह्योनां॥साधनकैव्रतकीनेंसबै ब्रिजबासीकोसीतलैंखायोमह्योनां । कीनैंउपायघनेंतरबेकेपैंने हनदीमाधिबूडिरह्योनां ॥ १६॥ दोहा ॥ रसिकदसावरनीइहैं, अद भुतप्रेमउमंग ॥ सबनिदुहाईइष्टकी, सुनिकीज्योसतसंग ॥ १७ ॥ जोबांचैश्रवनानिसुनैं, रीझिहोयअनुरक्त ॥ तेमोकौंकहियोइन्हैं, उप ज्योअतिहरिभक्त ॥ १८ ॥ कहीरसिकरतनावली, पूरनप्रेमप्र कास॥सुरतिहियेंव्रजवासकी, धारिनागरीदास॥१९॥ सतरैसैंबइया सिये, भादौंसुदिभृगुवार ॥ तिथिपरिवाकीनीइहैं, लीज्योसंतसुधार ॥२०॥कवित्त॥ केऊकरैंबिष्णुसेवकेऊपूजैंदेवीदेव केऊचाहैंमुक्तिके ऊउदरानिबासनां । आठौंसिद्धनवानिद्धचाहतअनंतजनकेऊचाहैंपु त्रकेऊनिजघटनासनां॥मेरैंवेईदेवसंतउज्जलतिलककीनैंभीनैंरसउ ज्जलओजुगलउपासनां ॥ नागरनिहोरीकरजोरमांगौंतिनपैंतैं । देहुप्रेमभक्तिओछुडायविपैंबासना ॥२१॥ इतिरसिकरतनावली ॥

## ॥ अथ कलि बैराग्य वल्ली लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ कलमषचितचीगटहरन, वंदौंगरपदरैन ॥ रहोभालभूप नसदा, अभैभक्तिफलदैन ॥ १ ॥ छप्पय ॥ धनिश्रीबल्लभबिदि तधन्यधनिकुंवरविभूषन । बिठ्ठलेससुतसातधन्यहरिअंसवंसधन ॥ धनचौरासीभक्तजक्तहितपुरुसरूपाछित । धनिगोविंदकुंभनादि प्रीतगिरधरनअपरामित ॥ धन्यभानभुवभागवतनागरियाहियतम हरन । धन्यधन्यफिरधन्यहैंमहामंत्रकेवलसरन ॥ २ ॥ चौपाई ॥ एसबएपुरवोअभिलाषा । कछुशुकबचनकहूंकरिभाषा ॥ श्रीभाग वतवेदतरकोफल । पूरितरसहरिकथामधुरकल ॥ ३ ॥ दोहा ॥ ताकेद्वादशस्कंधकी, दुतियत्रितियजेध्याय ॥ तहांकहीशुकसोसमैं, अबैंप्राप्तिभइआय ॥ ४ ॥ छप्पय ॥ समैंघोरकलिकालधर्मपदछे दनकीनैं । विफलक्रोधकंदर्पजीतिजीवनिकौलीनैं॥लोभमोहतैंकरी प्रबर्तिमारगमतिपंगी । चितचंचलअतिअजितनीचसंगीबहोरंगी ॥ नागरिदासनऔरकछुत्रिबिधितापसीतलकरन । प्रगटितबल्लभवद नतिहिंसरनमंत्रकीहौंसरन ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ पावसमैंपौंनधूपनि मलअकासहोत सीतमांनिभीतलोगरोगसरसायगो । ग्रीषमभयंकर ताअंधकारधूरपूरचील्हऔउलूकसब्दकूकरनिछायगो ॥ व्हैंरहीहैं सामसूमजिततितधामधूमकलहकलेसदेसदेससरसायगो । नागरबि लासहासिउरउदमादमिटेदेखतहीदेखतमैंऔसोसमैआयगो ॥६॥ मेकर्मप्रीतरीतसज्जनसुहृदताईसकलभलाइनकोपुंजसोबिलायगो अंतरमलीनव्हैकैंकलहप्रबीनभयेनरनिकलेससबदिनसरसायगो ॥

नांहिरागरंगनांहिचरचाचतुरताकीनांहिंसुखसैलस्वादआनंदनसा यगो । नागरउदासाजियहौंसनहुलासहियदेखतहींदेखतमैंऐसोस मैंआयगो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अबवर्णाश्रमकीदसा, जोदिनदिनद रसाव ॥ सोन्यारोन्यारोकहूं, पलट्योसमैंसुभाव ॥ ८ ॥

## ॥ अथ प्रथम वर्ण द्विजदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ बहोबिप्रनितजिदीनैंधर्म । हरिसमंधबेदोकति कर्म ॥ सिसनउदरपोषनकीप्रीत । शुचिआचारनइंद्रीजीत ॥ ९ ॥ महातमोगनहियमैंधरैं । शस्त्रघाततनचांदीकरैं ॥ विद्यारहितमहाज डमनके । कर्मकुसांनमलिनअतितनके ॥ १० ॥ पातरथोरेबहुतकु पात्र । रहीजुएकजनेऊमात्र ॥ ११ ॥ कविबचन ॥ दोहा ॥ द्विज कुलकलिऔगुनभरे तऊसमर्थोदोय ॥ भलोकरैंसेयेइन्हैं वुरोअसेयें होय ॥ १२ ॥ जद्यपिऔगुनहूभरे तऊबरनकेभूप ॥ कहींहैंदेवब्रह्म न्यहारि बिप्रमामकीरूप ॥ १३ ॥

## ॥ अथ द्वितीय वर्ण नृप छत्री दसा ॥

॥ चौपाई ॥ छत्रीनृपधर्मनिकौंतजैं । करतकुकर्मनिनांहींलजैं ॥ रक्ष्याहितजेशस्त्रनिधरैं । तेधनप्रानप्रजाकौहरैं ॥ १४ ॥ गौब्राह्मण प्रतिपालकहावैं । तेफिरतिनहींगाहिगाहिल्यावैं ॥ बच्छागऊबिरहसं ताप । द्विजकुलतिन्हैंदेतअतिश्राप ॥ १५ ॥ आपहुचोरचोरढिग रहैं । कबहूमुखतैंसांचनकहैं ॥ कपटकलपतरुदुष्टधुरंधर । निर्दैंद्वंदैं पापपुरंदर ॥ १६ ॥ अतिअभिमानीअरुमदपानी । बिनहीगुननि जमुखगुनगानी । पाधकोआगागरदनपाछैं ॥ ज्यौंभांडभेखमत

वारोकाछैं॥ भृकुटितिरेखामूंछैंचढी । कटिक्रपानआधिकरहैकढी॥ ॥ १७ ॥ यहछबिसोईसूरकहावैं । रनछांडतलज्यानहिंआवैं ॥ हरिगुरपिताभक्तिसौंदूर । झूठहीचंडीसेवतक्रूर ॥ १८ ॥ लघुस्वार थहितगैलेमारैं । गायगायमुखकहतप्रहारैं ॥ द्विजभिक्षुकस्वामीसं न्यासी । काहुनछाडतएदुखरासी ॥ १९ ॥ कापैंकरैंकुटिलजव रिसकौं । बारागांवजरावैंनिसकौं ॥ कैंरजनीसुखसोयेमारत । कैं भोजनमैंलैंबिपडारत ॥ २० ॥ नवतनदगेवहोतविधिठाने । तिन्हैं कहांलगिकोऊबखांनैं ॥ सांतसुहृदताकबहुनधारैं । तनकभूंमिहि तसुतपितमारैं ॥ २१ ॥ तेजहीनइनपापनिछत्री । धारिनसकतधी रमनधत्री ॥ शस्त्रअस्त्रनिजविद्याहीन । वनिककर्ममैंमहाप्रवीन ॥ ॥ २२॥ दोहा ॥ सतत्रेताद्वापुरमहीं । नृपछत्रीअधिकार ॥ रह्योन अवकलिकालमैं । वर्नावर्नविचार ॥२३ ॥ चौपाई ॥ द्वुतियबर्नको रह्योनकाजा । जोवलिष्टसोईन्हैंराजा ॥ तिनकैंएकलोभकोस्वारथ । दयामयानहिंमनपरमारथ ॥ २४ ॥ विनविवेकमूरखचितभंग । निद्राआलसअधिकअनंग ॥ जानिर्वलकेसुंदरनारी । गहिआंनत अैसेविभचारी ॥ २५ ॥ महानिपुनछलविद्यामाहीं । गतिजससमर पराक्रमनाहीं ॥ साधिनसकतकछूनिजअर्थ । परदुखहरनकीनसा मर्थ ॥ २६ ॥ अंगसरोगसदाबलछीन । धनकरिहीनभाग्यहूहीन ॥ जोकछूकरैंमनोरथकोय । सोनहोयउलटीसवहोय ॥ २७ ॥ अवयहसमैंबुरीहीकरैं । भलीबातश्रवननिनहिंपरैं ॥ वनैंजुकष्टदा सकौंआय । तवस्वामीनाहिंकरैंसहाय ॥ २८ ॥ संकटआवैंस्वामी पास । छांडिकैंजातअधरमीदास ॥ जिनकैंस्वारथहीकीप्रीत ।

स्वामिधर्मकीचलैंनरीत ॥२९॥ दोहा ॥ नृपछत्रिनकीयहकथा । कहीयथाकलिकाल। कीनीद्वादशस्कंधजो।प्रगटव्यासकैलाल ॥३०॥

## ॥ अथ बैस्य बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ बैस्यबंसबहोपापीभये । मनउपंगधर्मनिकौलये ॥ मलिनवस्त्रतनमहाकुचील । परसैंउपजतन्हानसचील ॥ ३१ ॥ दुर्भोजनरुबिभछिक्रियाअति । इहींदेहभुगतंतनर्कगति ॥ यापरनिंदिकऔरधरमके । छाडतसारपहारभरमके ॥ ३२ ॥ केवलनिजस्वारथकेसगे । लोभीएकलोभरसपगे ॥ परमारथकबहूंनहिंकरैं चतुराश्रमसेवातैंटरैं ॥ ३३ ॥ बणिजकपटपरिपाटीपढे । मिथ्यामहाबिबादनिबढे ॥ छाडतराहरुचलैंकुराह । चोरीकरैंकहावें साह ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ बैस्यबर्नबर्ननकियो । कलिजुगकेअनुसार ॥ सुद्रनिकुलकीकहाकहौं । ताकोवारनपार ॥ ३५ ॥ चौंपाई ॥ मुख्यबर्नहूंकीजुयहैगति । सुद्रनिछुद्रनिकीधौंकहामति ॥ तपसीरूपपतिग्रहलेत । जानतनांहिनअपनोवेत ॥ ३६ ॥ बिनकुलतूटकुटंबीमूढ । उतमनकौंउपदेसतगूढ ॥ ठगईहितबहुविधिअनुसरैं । कूरनरकतैंमूरनडरैं ॥ ३९ ॥ बिबिधिअकर्मनिकेपरकार । तिनकेवरनतव्हैंविस्तार ॥ अंतजसूद्रअंतकोलहैं । पापकर्मकौंकहांलगिकहैं॥४०॥ दोहा ॥ कहीसुद्रकीकछुकथा । नैंननिजथानिहारि ॥ लगीबहोतअबहोनजग । जैसीबरनौंनारि ॥ ४१ ॥

## अथ स्त्रीदसा वर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ छोटीकायाछोटीबुद्ध । खोटीतनमनमहाअसुद्ध ॥

साहसबहौतनिडरहियमाहीं । पुरुषतुच्छसमगिनैंजुनांही ॥ ४२ ॥ हाथनिलवैंपगनिबुझावैं । वातनकछुहियमैंठहरावैं ॥ पगीरहैंमति जगजंजाल । अतिबिबादनीप्रकृतिकराल ॥ ४३ ॥ ब्रह्माविष्णुमहेश्वरआय । तीन्यौंरहैंबहुतसमझाय ॥ इनहींकीकछुकहीनमानैं । जोठानैंसोठानैंईठांनैं ॥ ४४ ॥ झूठीमतिअतिलोलउपंगी । सहजहिंअणमिलबचनकुढंगी ॥ लोभीमहालोभाचितमढी । लैवेहीकीपाटीपढी ॥ ४५ ॥ धनकुबेरकोजोघरभरैं । तऊतियतनकत्रिपतनहिंकरैं ॥ लैवेहीकीरीतिठानिहैं । दैवेहीमैंप्रीतिजानिहैं ॥४६ ॥ बिनदीनैंसुखहूनाहिंदेत । लैवेहीकोतिनकैंहेत ॥ मातिहलचलचोरीमैंचौकस । कलहप्रियामतिमंदअलपरस ॥ ४७ ॥ औरतियनबिनहूंनसुहात । करैंतियनसौंमिलिउतपात ॥ आपहिकैंमत्सरताआगि । आपहितैंजुउठैंउरजागि ॥ ४८ ॥ आपहिकलपैंआपहिरोवैं । आपहिअपनौंसबसुखखोवैं ॥ सुद्रीसहजकुचीलकुबेस । बेदवचनपढिदैंउपदेस ॥ ४९ ॥ गुरव्हैंनरकौंदक्ष्यादैंहीं । मूढअपनांपयकौंबिसरैंहीं ॥ बिभचारनकोपारनवार । ज्यौंजडबेलीकैंनबिचार५०॥ निकटहोयतासौंलपटावैं । जोगअजोगदृष्टिनाहिंआवैं ॥ पैठिभूमिनिकसैंआकास । व्हैंनसकैंछलछिद्रप्रकास ॥ ५१ ॥ जारहेतकछुबैनविचारैं । पापनिसुतपितपतिकौंमारैं ॥ नौदसबरसनिकटजबआवैं । कामकथातबहीतैंभावैं ॥ ५२ ॥ वारहतेरहमांहिप्रसूत । साधकोईअरुअगनितधूत ॥ नहींरूपनहिंगुनउरअंतर । इतनैंपैंअभिमाननिरंतर ॥ ५३ ॥ पतिब्रतमानमानचतुराई । जानतमानहिंमानबडाई ॥ रातिरुद्यौसमानमनमानैं । बिनामानकछुऔरन

जानैं ॥ ५४ ॥ निसदिनगर्वपरचोगलगाजैं । हियेक्रोधकेपुंजबिराजैं ॥ तचततेजतामसतनमाहीं । देखिलरैंअपनीपरछाहीं ॥ ५५ ॥ ॥ कवित ॥ धूंधरीभयानकचढायेंकररातकोपिदंतपंतिकाढिकैंकरालमुषबाहरी । लपकनिरसनाकीनैंनज्वालमेजरततामसकोतनमैंलग्योईरहैंदाहरी ॥ ठाढौंव्हैंकैसोहैंअैसोकौनबतरावैंमानौंकंठहीगहैंगीदौरिजातनहींसाहरी । भभकनिभारीनैंकजातनसंभारीतनओढैंखालनारीकीमुलमांकीनीनाहरी ॥५६॥ दोहा ॥ द्वैफलपापरुपुन्यके । यहजानतसबकोय ॥ महापापतेंहोततिय । पुन्यपुरसबपुहोय॥५७॥ सातसिंधुकीमसिकरैं । लेखनसबबनराय ॥ भूमिपत्रजोबिधिलिखैं । तियगुणलिखेनजाय॥५८॥ यथाकालकैंतियनजुत । च्यारौंबर्नेंवर्न॥ अबआश्रमकीयहदसा । सुनियौंदैंकैंकर्न ॥ ५९ ॥

## ॥ अथ प्रथमाश्रम ब्रह्मचारीदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ ब्रह्मचारिनिकेनाममांझसुठि । अनुस्वारराकारगयेउठि ॥ ग्रस्ताश्रमतोपहिलैंकह्यो । अबतोकछुकहनौंनहिरह्यो६० बानप्रस्तकीक्रियाकठिनअति । सोक्यौंनिबहैंकलिजुगकैंमति ॥ सबोंपरसंन्यासउदोत । कलिमैंकाहूसौंनाहिंहोत ॥ ६१ ॥ अंबरदिसाकिंदराभौंन । करहीपात्रकरैंधौंकौंन ॥ भयेबगतिबिपरीतसंन्यासी । हयगयकोसभवनसुखरासी ॥ ६२ ॥ महाबिभौभूभुजउनिहार । क्रुध्धक्रुध्धकरिबरसतसार॥ ६३ ॥ दोहा ॥ बरनैंऔगुनयुत सबैं । वर्णाश्रमइहिंभाय ॥ बहुरिएकव्हैंजांहिगे । सकलभ्रष्टताछाय ॥ ६४ ॥ इति वर्णाश्रमदशा ॥

## ॥ अथ कविनिजदशा बर्ननं ॥

। कुंडलिया ॥ दोहा ॥ देखोमोओगुनयहैं । हूंओगुननिजिहाज ॥ ओगुनबरनतऔरके । मोहिनआवतलाज ॥ मोहिनआवतलाज भरयोअतिअगनितदोसनि । पगनिअगनिनहिंसूझतसूझतला गीकोसनि ॥ तजिनिजछिद्रनिकहतओरकेयहकहालेखो । समझि सोचिचुपरहतनजडनागरजगदेखो ॥ ६५ ॥ इति कविनिजदसा ॥

## अथ सर्बबिस्वदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ कलिजुगमहातिमरघनजुरे । रबिबेदोक्तकर्मसब दुरे ॥ मनउपंगमतमनुखद्योत । तिनहींकीजागीजगजोत ॥ ६६ ॥ नाटकचेटककेसेजोग । तिनहींमैंपागेसबलोग ॥ सतमितभाषीपं डितसोई । ताहिनहींमानतहैंकोई ॥ ६७ ॥ जाकैंचंचलबचनबिला स । ताहिकहैंपंडितगुनरास ॥ अरुदंभीसोसाधकहतहै । साधहिंदं भीजांनिगहतहै ॥ दूरकेतीरथश्रद्धालहैं । तीरथनिकटअश्रद्धारहैं ॥ जोअबकलिमैंअतिधनवान । ताहिकहतसबबुद्धिविधान ॥ ६९ ॥ सोईप्रतापीसोईकुलीन । जोगृहमैंधनकारिनहिहीन ॥ जोबलिष्टअ तिपरबलहर्ता । जानतताहिन्यायकोकर्ता ॥ ७० ॥ अरुधनाढ्यपर निधनीजरैं । संपतिदेखिईरषाकरैं ॥ प्रजाजीविकारहतदलद्री । कं दमूलफलखावतबद्री ॥ ७१ ॥ रहैंजुस्वारथपेटभरनकौं । लेसनपर मारथहिकरनकौं ॥ मातपिताकीटहलनकरैं । सारेसुसरनकौंअनु सरैं ॥ ७२ ॥ सबहीकौंलोनेतियजोति । भामिननरनरभामिनरीति जोमनमानिसोहोतिया । सोमनमान्योंजोहीपिया ॥ ७३ ॥ मन

लागतवाहीदिसढरैं। जातिपांतिसौंब्याहनकरैं ॥ बिनाबिपतिहीध मैंछूटिगे। पुनिबिपतनिहूंमांझटूटिगे ॥ ७४ ॥ करतजुपापजीविका तबैं। पूरितपापव्हैंगयेसबैं ॥ छोटीकायाबदनविरूप। छुधाबहोत घटभोजनकूप ॥ ७५ ॥ निर्बलअंगअन्नकैंटोटा। नरगतक्रांतिम नहुंभुतलोटा ॥ चिंतारहतबदनपरछई। बिश्वससोकसबैव्हैंगई ७६ अरुसबभृष्टसुचिनआचार। सुबसनसुगंधसंवारैंबार ॥ ताहीकौंस बअतिसुचिमानैं। क्रियास्नानकोऊनहिंठानैं ॥ ७७ ॥ जबइच्छात वसोवनलगैं। जबमनमानैंतबहींजगैं ॥ ऐसैंहींजलभोजनकरैं। समैंबिचारनकछुजियधरैं ॥ ७८ ॥ देतनकछूधर्मकैंहेत। जोकछुदे तसुजसहितदेत ॥ कैलेवादेईव्यवहार। रहीपरसपरगधाखुजार७९ बहुरिनपात्रअपात्रहिजानैं। जोजिहिमानैंसोतिहिमानैं ॥ अरुसदू धगोसेवतभाय। बिनादूधकीत्यागतगाय ॥ ८० ॥ होतहैंसुरभीअ जासमान।भृष्टअहारमिलतनहिंधान ॥ मेटयोजगसबचितहिततोष मचिगोबिनाप्रयोजनदोष ॥ ८१ ॥ कोकाहूकोभलोनचाहत।मच्छ रतानलअंतरदाहत॥ जितातितकलहकलहकीरोर। बिनाकलहकछु बातनओर ॥ ८२॥ करैंकलहसुतपितमिलिमात। करैंकलहभग नीअरुभ्रात ॥ नारिपुरुसहूंकलहमचावैं। तबऔरनकीकौनचला वैं ॥ ८३ ॥ कलहबिनाचितचैननपरैं। चलतेपवनपातसौंलरैं ॥ जितातितकलहकलहकीधूम। व्हैंगईकलहमईसबभूम ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ कलहचतुरआवतातिन्हैं। बिविधिकलहकेजोग ॥ बुद्धिवान जिनकौंकहत। कलिजुगकेसबलोग ॥ ८५ ॥ चौपई ॥ गईजुमिटिभु वकीछबिरास। नहींकरतकछुसमैंप्रकास ॥ ताहूमैंवर्षानाहिंपूर।

चतुर्मासनभमांडितधूर ॥ ८६ ॥ पवनतीव्रलागतनिसिसीत । सबै निरखिउपजतचितभीत ॥ निकसतगगनकहूंजोबादर । ताहि दौरिसबदेखतसादर ॥ ८७ ॥ लागेपरनकालपरकाल । जगतमी नजलबिनजंजाल ॥ सकुचिभूमिअनधनमिटिगयो । बढिदलिद्रस बकौंदुखभयो ॥ ८८ ॥ जोघनबरसततोइहिंभाय । घोरघटाकारी घुमडाय ॥ झूंमिझूंमिझुकिझुकिसररसाय । एकसींवछींटैंबरसाय८९ दूजीसींवनिकटतरसाय । जातहैंबादरबहुरिविलाय ॥ मींड़तहाथ कहैंजगहाय । इंद्रहिंगारीदैंअकुलाय ॥ ९० ॥ अंबकदंबादिक नहिंहोत । मिटिगयेभलेद्रुमनिकेगोत ॥ मुंजाकैरजवासारास । रहिगयेथोहरबंबुलफरास ॥ ९१ ॥ अवनीकीसोभाभईदूर । रहिग ईएकधूरहीधूर ॥ महाछुधितजगतजिपुरग्राम । जातहैंसूनेंक रिनिजधाम ॥ ९२ ॥ लागेकरनिपरबतनिवास । कंदमूलफलईंध णआस ॥ महलघटासमतेपुरग्रामनि । तिनमैंतियजनुदमकतिदा मनि ॥ ९३ ॥ तहांघासपरकतहैंमूक । बोलतनिसदिनचील्हउलू क ॥ बढतअमंगलमिटिगोमंगल । जिताततआतिदुखदुसहउदंग ल ॥ ९४ ॥ नितअपसुगनानिसौंचितचंपै । उल्कापातभूमिहूंकंपै ॥ दिवससृगालरैनकौंकाग । वचनलगतश्रवननिकोंआग ॥ ९५ ॥ पौनसीतघनघामअनर्थ । एनहिंदूरिकरनसामर्थ ॥ राजदंडअरिचो रनिकरिकैं । नितप्रतिहियोप्रजाकोधरकैं ॥ ९६ ॥ एतेपैंउपजतव पुरोग । तनइंद्रीबलछीनेलोग ॥ मायापापनचायेंनचैं । त्रिविधिता पमैंसबजगतचैं ॥ ९७ ॥ निसदिनरहैंसकलदुखभोय । कबहुनको ऊनिर्भयहोय ॥ यापरहोनलगीलघुआव । डोलतकालविलोकतदाव

॥ ९८ ॥ जोकोउसकलजननिसुखदायक । वहोगुनपूरतसबविध
लायक ॥ सोभोगतयहआयुनिधान । बरसवीसकैंतीसप्रमान ॥९९
जोजगकौंकंटकदुखदैंन । सोवहुजीवैंबेगमरैंन ॥ कलिजुगदुखही
दुपकोजोग । दुखहीकीमूरतिसबलोग ॥ १०० ॥ महादोषनिधहैं
कलिकाल । कहांलगिकहियेदुखजंजाल ॥ १ ॥ दोहा ॥ एतेऔगु
नतैंउगुन । औगुनभरेअनेक ॥ तऊनकलिसमजुगकोऊ । तामैंअ
तिगुनएक ॥ ३ ॥ जोहरिहोतप्रसन्ननाहिं । कीनैंतपबहोकाल ॥ त
नकभक्तिकलिमैंकियैं । रींझैमहादयाल ॥ ४ ॥ चोपई ॥ तातैंअव
मनहरिभजिभाई । तजिदिनादिनजगदुखसरसाई ॥ जोतूंकछुचा
हैजगभोग । अबनकहूंमिलिवेकोजोग ॥ १०५ ॥ खबरनपलकी
तनछिनभंग । कलसेटूटिछूटिहैअंग ॥ अरुभुवमंगलसुखहूगये । ठा
मठामदुखथानाठये ॥ १०६ ॥ कलहकलपनांदावघावतजि । गृह
मैंनिसप्रेरहिंकैंहरिभाजि ॥ यथाशक्तिकछुआतिथदीजैं । जतनसा
धिवहोसतसंगकीजैं ॥ १०७ ॥ श्रवणमहातमसबतैंभारी । जातैंब
ढतभक्तिसुखकारी ॥ कथाजथाऔकासप्रमान । सुनियेश्रीभागो
तपुरान ॥ १०८ ॥ दोहा ॥ जपतपसंजमनेमव्रत । जोगजज्ञकर
पूर ॥ भक्तभागवतसंगबिन । भक्तिनउपजैंमूर ॥ १०९ ॥ सुनैंभा
गवतभक्तहैं । भक्तभयेहोयचैन ॥ जगतमांझआसक्तक्यौं । दुख
वितवैंदिनरैन ॥ ११० ॥ सम्रतवेदपुरानहैं । सबहीहरिकेअंग । रंग
नलागैंभक्तको । बिनाभागवतसंग ॥१११॥ जगतभक्तबहोभांतिक
ह । नानामतकेमांहि ॥ सुकमुखकेविनफलद्रवैं । व्रजरसपावैंनांहि
॥ ११२ ॥ नागरीदासविचारियह । अफलजातहैदेह ॥ चापिभा

गवतअमृतफल । जनमसफलकरिलेह ॥ ११३ ॥ चौपई ॥ जोगृहमैंअतिकलहकलेस । करिनहिंसकैंभक्तिलवलेस ॥ तोबसिब्रजवृंदावनमांही । प्रेमभक्तिरंगलगैंतहांही ॥ ११४ ॥ कवित ॥ काहेकौंरेनानामतसुनैंतूंपरानन केतैंहीकहातेरीमूढगूढमतिपंगकी । वेदकोविवादनिकोपावैंगोनपारकहूं छाडिदेहुआसासबदानन्हानगंगकी ॥ औरसिद्धिसोधैंअबनागरनसिद्धकछूमानिलेहुमेरीकहीबारतासुढंगकी ॥ जाहुब्रजभोरेकोरेमनकौंरंगाइलैरेवृंदावनरैंनीरचींगौरस्यामरंगकी ॥ ११५ ॥ चौपई ॥ जद्यपितूंउतहूंचालिजैंहैं । रसिकमिलैंबिनरसनहिंपैहैं॥बिनउहिंठांरंगेरसिककहांहैं।रसिकरतनकीखानितहांहैं ॥ ११६ ॥ कवित ॥ आयआयजांहिकोरिकोरिकअजाननरपावतनबस्तुरहैंनीरीअरुन्यारीजू । संतमनमानिकहारितनीलपीतस्वेतमिलेज्यौंज्यौंधूरमैंत्यौंक्रांतभईभारीजू ॥ रींझिरींझितिहैंउरधारतसुजानएकमैंतोमतिमेरीवहिनागरपैंवारीजू । काहूकौंनसूझैंतोनसूझोहैंप्रकासमानवृंदावनरत्नखानिजौंहरीविहारीजू ॥ ११७॥ दोहा ॥ ऐसेवृंदाविपुनबासि । करिरसिकनकोसंग ॥ ज्यौंचितचटकीलोचढै । गउरस्यामदृढरंग ॥ ११८ ॥ कवित ॥ जमुनानदीसीतोनदीसीकोऊऔरतहांभक्तिरसरूपमईजाकोजलसोतहैं । कूलकूलफूलफूलझूलकुंजलतारहींबोलतचकोरमोरकोकिलाकपोतहैं ॥ रसिकसुजानसंतहरिगुनगानकरैंहरैंतापात्रिविधिसुआनंदउदोतहैं। जगदुखदंदतामैंदुखीकहानागरतूंबासिऔसेवृंदावनसुखीक्यौंनहोतहैं॥११९॥सहजैश्रीकृष्णकथाठौरठौरहोततहांकीरतनधुनिमीठीहियकेउलासतैं । स्यामास्यामरूपगुनलीलारंगरंगेलोग

तिनकैंनध्वांतउरप्रेमकेप्रकासतैं ॥ एरेमनमेरेचेतउनहींसोकारिहेत नागरछुटायदेतजगदुखपासतैं । कामक्रोधलोभमोहमच्छरताराग दोषचाहदाहजैहैंसबवृंदावनवासतैं ॥ १२० ॥ इतिश्रीवृंदावन प्रगटसरूप ॥

## ॥ अथ गोपितरूप वर्ननं ॥

॥ कवित्त ॥ कुंजनिकलपतरुरतनजाटितभूमिछविजगमगतज कीसीलगैंकामकौं । सीतलसुगंधमंदमारुतबहतनितउडतपरागरैंन चैंनसबजामकौं ॥ देवबधूद्रूमनिमैंकोकिलासरूपगावैंदंपतिबिहार बीचवृंदाबननामकौं । नागरियानागरसुदीनैंगरबांहींतहांमनरूपर वनीन्हैंदेखिश्रैसैधामकौं ॥ १२१ ॥ दोहा ॥ नागरियानितचित बसो । यहवृंदाबनथान ॥ नसोजक्तआसक्तमन । मायामदरस पान ॥ १२२ ॥ सतरासैंपच्याणवैं । संवतसावणमास ॥ कलि बल्लीबैरागकी । करीनागरीदास ॥ १२३ ॥ इति कलिबैरागबल्ली ॥

## ॥ अथ अरिल्लपच्चीसी लिख्यते ॥

संगाफिरतहैंकाल भ्रमतनितसीसपर । यहतनअतिछिनभंगधुंवे कोधौंलहर ॥ यातैंदुर्लभसासनवृथागमाईयैं । ब्रजनागरनंदलाल सुनिसदिनगाइयैं ॥१॥ चलीजातहैंआयुजगतजंजालमैं । कहतटेरि कैंघरीघरीघरीयालमैं॥समैंचूकिबेकामनफिरिपछिताइयैं। ब्रजना० ॥ २ ॥ सुतपितपतितियमोहमहादुखमूलहैं । जगमृगतृष्णादेखिर ह्योक्यौंभूलहैं ॥स्वपनराजसुखपायनमनललचाइयैं । ब्रजना०॥३॥ कलहकलपनांकामकलेसनिवारनौं । परनिंदापरद्रोहनकबहुविचा

रनौं ॥ जगप्रपंचचटसारनचित्तपढाइयैं। व्रजना० ॥ ४ अंतरकुटिलकठोरभरेअभिमानसौं । तिनकेगृहनाहिंरहैंसंतसनमानसौं ॥ उनकीसंगतिभूलनकबहूजाइयैं। व्रजना० ॥ ५ ॥ कहूनकबहूंचैनजगतदुखकूपहैं। हरिभक्तनकोसंगसदासुखरूपहैं ॥ इनकेंढिगआनंदितसमैंविताइयैं। व्रजना० ॥ ६ ॥ कृष्णभक्तिपरपूरनाजिनकेंअंगहैं । दृगनिपरमअनुरागजगमगैंरंगहैं । उनसंतनकेसेवतदसधापाइयैं। व्रजना० ॥ ७ ॥ व्रजवृंदाबनस्यामपियारीभूमिहैं। तहांफलफूलनिभाररहैंद्रुमझूमिहैं ॥ भुवदंपतिपदअंकतिलोटलुटाइयैं। व्रजना० ॥ ८ ॥ नंदीश्वरबरसानौंगोकुलगांवरो । बंसीबटसंकेतरमततहांसांवरो ॥ गोवर्द्धनराधाकुंडसुजमुनांजाइयैं। व्रजना० ॥ ९ ॥ नंदजसोदाकीरतिश्रीवृषभानहैं। इनतैंबडोनकोऊजगमैंआनहैं। गोगोपीगोपादिकपदरजधाइयैं ॥ व्रजना०॥१० बंधेअलूखलल्लालदमोदरहारिकैं। विश्वदिखायोबदनबृच्छदयेतारिकैं ॥ लीलाललितअनेकपारकितपाइयैं। व्रजना० ॥ ११ ॥ मोटमहोछोइंद्रकुपितकीन्होमहा । जबबरस्योजलप्रलयकरनकहियेकहा ॥ गिरधरकरीसहायसरनजिहिंजाइयैं । व्रजना० ॥ १२ ॥ बकीबकासुरआदिकअसुरअभावनैं। हतेसदगतेकियेस्याममनभावनैं ॥ रक्षिकघोषगुपालसुनिहिंबिसराइयैं ॥ व्रजना० ॥ १३ ॥ निरबिषजमुनाकरी दवानलकौंपियो । नंदत्रासअहिहरी सबनकौंसुखदियो ॥ आरतिवोपनिवारनसौंमनलाइयैंव्रजना०॥१४॥ मंडलगोपसमाजस्यामतिनमांहिहैं । हंसिहंसिजैंवतछाकढाककीछांहिहैं ॥ विधिमोहनकोतहलध्यानसमाइयैं। व्रजना० ॥ १५ ॥

मोरपच्छधरगुंजधाततनलांवही। गोपवेसगोचारसहतबलगांवहीं॥ रजमंडितमुखध्यानपरमसचुपाइयैं । व्रजना० ॥ १६ ॥ रोक तगैलगुपालदानमिसलैंछरी । गहबरबनअंधियारहारतियहैंकरी ॥ नैनवैनतनउरझनमनउरझाइयैं । व्रजना० ॥ १७ ॥ तियम नमाखनहरतज्ञुधरतदुराइकैं ।देवीपूजतलीह्नैंचीरचुराइकैं ॥ इहीं चोरकौंचाहिचित्तचुरवाइयैं । व्रजना० ॥ १८ ॥ सुनिमुरलीव्र जबधूभईबसकामहैं । थिरचरगतिविपरीतिबिवससुरवामहैं ॥ मा दिकधुनिसुमिरतमनमादिकछाइयैं । व्रजना० ॥ १९ ॥ सरदनि सासुखरच्योरासबिसतारिहैं । गतिसमाविचलचित्तभयेत्रिपुरारिहैं॥ रसानंदआवेससुमिरसरसाइयैं। व्रजना० ॥ १९ ॥ अन्योअन्य संकुलितबाहुमृदुपदचलैं। मंडितचक्राकारहारकुंडलहलैं ॥ विस्मै देवकुतूहलक्यौंविसराइयैं। व्रजना० ॥ २१ ॥ गुनसागरसंगीत गतनअतिछविबढी । बोलमधुरथेईथेईलोलभृकुटीचढी ॥ कामबि जइलीलारसप्रानभिजाइयैं । व्रजना० ॥ २२ ॥ नृत्तपेदरसम सेधसेजमुनातवैं । बिरहतजनुगजसंगजूथकरनीसवैं ॥ छविछींटैं छिरकनकीसुमारिसिहाइयैं। व्रजना० ॥ २३ ॥ राधाहितव्रजतज तनहिंपलसांवरो । नागरनित्तविहारकरतमनभावरो ॥ राधाव्रज मिश्रतजसरसनिरसाइयैं । व्रजना० ॥ २४ ॥ व्रजरसलीलासुनत नकवहुअधावनौं । व्रजभक्तनिसतसंगतिप्रानपगांवनौं ॥ नागरि याव्रजबासकृपाफलपाइयैं। व्रजनागरनंदलालसुनिसदिनगाइयैं॥ ॥ २५ ॥ १५ ॥ इति श्रीअरिलपच्चीसीसंपूर्णम् ॥

# अथ छूटकपद लिख्यते ॥

श्रीहरिजयति॥ हमब्रजसुखीब्रजकेजीव॥ प्रानतनमनंनैनसर्वसु राधिकाकोपीव ॥ १ ॥ कहांआनंदमुक्तमैंइहकहांमृदुमुसकान॥ कहांललितनिकुंजलीलामुरलिकाकलगान ॥ २ ॥ कहांपूरनसरदरजनीजौन्हजगमगजोत । कहांनूपुरवीनधुनिमिलिरासमंडलहोत ॥ ३ कहांपांतिकदंबकीझुकिरहींजमुनावीच । कहांरंगविहारफागुनमचतकेसरकीच ॥ ४ ॥ कहांगहवरविपनमैंतियरोकिवोमिसदान ॥ कहांगोधनमध्यमोहनचिकुररजलपटान ॥ ५ ॥ कहांलंगरसखासोहनकहांउनकोहासि ॥ कहांगोरसछांछिटैंटी छाकरोटीरासि ॥ ६ ॥ कहांश्रवननकीरतन जगमगानिदसधारंग ॥ कंठगदगदरौंमहर्षन प्रेमपुलकितअंग ॥ ७ ॥ जहांएतीवस्तपइयतबीचवृंदाधाम॥ हौंबअैसेब्रजसुखदसौंबाहिरैंबेकाम ॥ ८ ॥ दासनागरचहतनहिंसुखमुक्तिआदिअपार । सुनहुब्रजवसिश्रवनमैंब्रजवासननकीगार ॥ ९ ॥ १ ॥ ब्रजकेपरमसनेहीलोग ॥ गारीदैंहसिमिलतगहवरेंअंतरप्रेमसंजोग॥ रागरूपअख्वरवनलीलायहतिनकोनितभोग ॥ नागरीदाससदाआनंदीसुपनैंहूंनहिंसोग ॥ १ ॥ करियेब्रजबासिनसौंनेह॥ नखसिखभरेप्रीतरससागर आवतकबहुनछेह । नंदनंदनप्यारेकेप्यारेनितमतवारेरूप । नागरीदासमिलावतमोहनरसिककुंवरब्रजभूप ॥ २ ॥ जौकोऊब्रजलीलारसचाखैं ॥ ताकोफिरिकहुंऔरकथामैंकबहुनमनअभिलाखैं ॥ खटरसछप्पनभोगनभावतजोब्रजगोरसपावैं । हितब्रजरसिकउपासिकसौंकरिआनसौंमननमिलावैं ॥ नागरियाब्रजमहमारसनांतनकहुंजातकही

नां ॥ बिनरसरूपाभक्तिजक्तज्यौंमुरधरजेठमहीनां ॥ ३ ॥ हमारैंमुरलीवारोस्याम ॥ बिनमुरलीबनमालचंद्रिकानहिपहिचानतनाम ॥ गोपरूपवृंदाबनचारीब्रजजनपूरनकाम ॥ याहीसौंहितर्ग्नैंनवढोनितदिनदिनपलछिनजाम॥ नंदीसुरगोवर्धनगोकुलबर्थ्योनभविश्राम ॥ नागरीदासद्वारिकामथुराइनसौंकैसोकाम ॥ ४ ॥ चरचाकरीकैसैंजाय॥ बातजानतकछुकहमसौंकहतजियथहराय ॥ कथाअकथसनेहकीबिनउरनमावतऔर ॥ बेदसंमृतिउपनिषदकौंरहीनाहिनठौंर ॥ मौंनिहीमैंकहनिताकीसुनतश्रोतानैंन ॥ सोबनागरलोगबूझतकहिनआवतबैंन ॥ ५ ॥

## अथ राधावल्लभोजयति ॥

आयोआयोरेकलिकालआयो॥ धरमहिंमारउठावतआतुरअधरमराजसवायो ॥ अमरमानिछिनभंगुरतननरपापनकरतसकायो ॥ छलकरिपुत्रपिताकौंमारतपितापुत्रहतिकैंसुखपायो ॥ औरजीवकीकौंनचलावैंहिंसाहीकोस्वादसुहायो ॥ जहांतहांद्रोहकलहकर्कसतामत्सरक्रोधउरनिउफनायो ॥ महाअमंगलघरघरदीसतरुदितबदनबिलखायो ॥ कूकरकागअलूकभयानकसदासब्दरहैंछायो ॥ अल्पवृष्टआकासनिहारतत्राहित्राहिजगबचनसुनायो ॥ व्हैंगइकुटिलबुद्धिजीवनकीलोभमोहकैंहाथबिकायो ॥ रहतनदृढतापनकाहूकोभवनकामतननाचनचायो ॥ तातैंगृहतजितीरथबसियेरहैंसतसंगसदासुखछायो ॥ दुर्लभमहापायनरदेहीचूक्योसमैंसोईपछितायो ॥ ठाकुरनागरीदासपाससौंइहउपदेसकहायो ॥ १ ॥

देखोसबजीवनकोप्यारी ॥ महाघोरकलिजुगकीभामिनकलहभईस
बहीकैंप्यारी ॥ लगीरहैंउरअंतरमांहींभावतनांहिकरीछिनन्यारी ।
गहीकौंसर्बसकरिजानैंसकलसुखनकीबातबिगारी ॥ यहजार
राधे नेत्तलरावैंफिरिराखैंज्यौंकीत्यौंयारी ॥ नागरियाकेवलभ
कहां जनंईहिदारीदूरिनिकारी ॥ २ ॥ बिनहरिसरनसुखनहिंकहूं ॥ छा
डिछायाकलपद्रुमजगधूपदुखक्यौंसहूं ॥ कलिकालकलहकलेसस
लितावृथातामधिबहूं ॥ दासनागरठौरनिर्भै कृष्णचरननिरहूं॥३॥
सबसुखस्यामसरनैंगयैं ॥ औरठौरनकहूंआनंदइंद्रहूकैंभयैं ॥ दुखमू
लएकप्रबर्तिमारगकहिनमानतकोय ॥ सुखपग्योजिहिंनिबर्तिकौंम
नजांनिहैंदुखसोय ॥ सतसंगअंबुजब्रजसरोवरकीरतनसुखबास ।
कीजियैंहरिबेगतिनकोभंवरनागरिदास ॥ ४ ॥ अबहौंसरनकेवल
स्याम॥घोरकलिकेतेजकोतनसह्योजातनघाम॥लीजियैंतरुचरनछा
यामूलसुखविसराय॥ अजितमनतैंकामसुभकछुव्हैंनव्हैंछिनजाम॥
सबनिलीनोजीतिहूंभयौभीतसरतनकाम । अबरहैंनागरिदासकैंर
टलगीरसनांनाम ॥ ५ ॥ सबदुखगेहगेहसही ॥ जानिअनुभवश्रव
नसुनिफिरिदेखिनैंननिबही ॥ महाप्रगटपुरानअजहूसुनौंशुकमुपक
हीं ॥ हरपसोकप्रवर्त्तमारगामिटतक्यौंहौंनहीं ॥ दुखमूलबिबिधिप्र
कारबातैंबहोतकहनीरही ॥ घरमिलैंनागरिदासठाकुरतऊसुखवन
महीं ॥ ६ ॥ दुसहदुखजगसिंधुमैंहौंपरयोब्याकुलहाय ॥ भवनभंव
रतैंनिकसिसकतनदयोअधिकभ्रमाय ॥ बंधीसिलगरईगरैंपरसोब
ड़ाईलोक ॥ नैंकइतउतउकससकतनदेतनीचैंझोक ॥ बहोरिपद
करगतिथकतअतिअरझिलाजसिंवार॥ जलजीवचौंटतकुटंबकारज

बिबधाबिबधप्रकार ॥ अग्राधमूरतग्राहकीधरिगह्योदृढपगममं । गड तकहरकरालदाढैंसेईभोगअकर्म ॥ रौंमरौंमनिपीरपूरसरीरधीरज नं कास । अतिअमूझनिकलमलौरुकिघुटतनासास्वास ॥ अहोक नासिंधुस्वामीलेहुमोहिनिकास ॥ नांवनागरिदाससुनिको हौनभ हिंउपहास ॥ ७ ॥ क्यौंनहिंकरैंप्रेमअभिलाष ॥ याबिनमिलैंननंददु लारोपरमभागवतसाष ॥ प्रेमस्वादअरुआनस्वादयौंज्यौंअकडोडी दाष ॥ नागरिदासहियेमैंऐसैंमनबचक्रमकरिराष ॥ ८ ॥ क्यौंनहिं करतउपायभक्तिको ॥ पावतकियैंरूपआनंदीआनंदउरहिअपा रलगतको॥ देहकुटंबआपकेस्वारथदीसतहैंसबमोहिठगनको॥ नाग रीदासबैठिसतसंगतिभेटिदेहुदुखदाहजगतको ॥ ९ ॥ माईनीको रसगोपालको ॥ औरैंरसकिहिंकामसखीरीगृहब्योहारजंजालको ॥ घाकेगुनवाकीरूपमाधुरीसुमिरनप्रानरसालको ॥ नागरियातजिगं गकौंनकरैंह्वांवनडोलीपालको॥१०॥ परयोकाममनसौंआय ॥ महा मनकीलगनिबिननाहिंलहतमोहनराय ॥ सोबचंचलनीचसंगीछिन नकहुंठहराय ॥ कबहुकुटिलकठोरकबहूसिथलथिरव्हैंजाय ॥ कबहु कामानलजुतपकैंलाषज्यौंपिघलाय ॥ निपटआतिगतिबिकटमनकी कहूंकाहिसुनाय ॥ कहूंसोईसामुहैंदुखउठैंमनकोगाय ॥ थक्योझौं झटकरिबहुतबिधिकछूबसनबसाय ॥ मूंदिलोचनसरनव्हैंबिचारि रयोगुरकैंपाय ॥ दासनागरिकोजुहरिसौंदेहुचित्तलगाय ॥ ११ ॥ ह मतैंभजनगयोहैंभाजि ॥ एकघरीओकासनपावैंघेरिलयेगृहका ज ॥ हियेअविद्याबाहिरअरथीदोऊतनकनआवैंबाज । नागरीदास कोकहाजायहरिजोतुमकोआवैंनहिलाज ॥ १२ ॥ समयोहेरत

कहाभजनकोसमयोकबहुनपावैंगो ॥ दिनसमयोजगदुंदमैंबीततनि समनजागभ्रमावैंगो ॥ कृष्णकुंवरसुमिरनकोआछैंसमयोकबहुन पावैंगो । नागरीदाससमोहेरतहीअंतसमोआयजावैंगो ॥ १३ ॥ रा० मोहीखबरनहिंमेरीहौंजुकौंनहौंकिनमें ॥ जोभावैंसोईमोहिकी जैंहौंअबठहरोंतिनमें॥ भगतनमैंकोउकहैंमोहितोभगतगंधनहितेरी। जोकेवलपततनमैंतोक्यौंतिलकछापतनतेरी । मनसंभ्रमकछुस मझिपरतनहिंअलगथलगरह्योझूल ॥ नागरिदासनांवदैकैंहरिकरनी दईनमूल ॥ १४ ॥ गोयाआसनावनथेकभी ॥ तोतेकीसीआंखिगई फिरिदेखतदेखतअभी ॥ किसीकाकछुचलतानाहींहिकमतथकीस भी ॥ नागरीदासगलतअसनाईगायबहुईजभी ॥ १५ ॥ कहांवेसु तनातीहयहाथी ॥ चलेनिसांनबजाइअकेलेतहांकोऊसंगनसाथी ॥ रहेदासदासीमुखजोवतकरमीडैंसबलोग॥ कालगह्योतबसबाहिनछा ड्योधरेरहेसबभोग ॥ जहांतहांनिसदिनबिक्रमकौंभट्टथट्टाबिरद त्ति । सोसबबिसरिलगेएकैंरटरामनामकहैंसत्ति॥ बैठनदेतहुतेमाखी हूंचहुंदिसचंवरसचाल ॥ लयेहाथमैंलट्ठाताकोकूटतमित्रकपाल ॥ सौंधैंभीनौंगातजारिकैंकरिआयेबनढेरी ॥ घरआयेतैंभूलिगयेसब धनिमायाहरितेरी ॥ नागरीदासबिसरियेनांहींयहगतिअतिअसुहा ती ॥ कालव्यालकोकष्टनिवारनभजिहरिजनमसंगाती ॥ १६ ॥ तिन्हैंकोरिकोरिकांधिरकार । रागदोषमतसरितातजिकैंस्मृतिजानि मानीनहिंहार ॥ सुन्योभागवतभक्तकहावतकछुइकरीतिकरीबी ॥ पैंसुखसाररुसतसंगतिफलआइनांहिगरीबी ॥ हियेअभिमानगोपध नगाडयोताकोसबैंबिकार । जोसचुपयोचहैंतोउरसौंदुरधनदेहनि

कार ॥ साधुब्रचनसुनिदीनभयेविनक्यौंहुंनजारिनमिटैंगी ॥ नागरीदासबहुतपछितैंहोदुखमैंदेहपिटैंगी ॥ १७ ॥ जानतप्रीतिस्वादहरिराई ॥ रसकनिमनिहितरसत्रास्वादीमोहनसबसुखदाई ॥ जावन्नकोयैंजग्यजाचंग्यासुरमुनिमतितरसाई ॥ जिंहिंजग्यपातिनन्हिंध्यानभमग्रीमांगिमांगिकैंपाई॥कर्नद्रौनदुर्जोधनकैंगृहभोजनविधिनसुहाई॥खाएबकुलहिंविदुरबधूकरलहीस्वादसरसाई॥ बिप्रसुदामातंदुलल्यायोसजनसुहृद्गुरभाई ॥ छप्पनभोगतजितिनकौंजेयैंकारिकरिबहुतबडाई ॥ अर्पतरमाबिबिधिबिंजनबिचद्दारावतठकुराई॥ तदपिमधुरताब्रजगोरसकीभूलतनांहिभुलाई। गोपीबरजितरजिताडततऊचोरिचोरिदधिखाई ॥ वारसकीफिरिसुधिआईजबअंखियांजलभरित्र्याई ॥ परमप्रीतिआधीननंदसुतजानतप्रेमसगाई। नागरीदासकोऊक्यौंविसरैंऐसोकुंवरकन्हाई ॥ १८ ॥ जिंहिंजनभक्तसुधारसपीयो ॥ सुर्गराजसुखगेहकाजमैंफिरमनकबहुंनदीयो ॥ बेदकलपतरुफलमाधवतजिजगविपफलनहिछीयो । नागरऔरसंगनाहिराचैंसाधसंगतिनाकियो॥१९॥ जबलगहीजगकोसुखपागैं॥तबलगजियहरिभगतसंगकोरंगनहींकछुलागैं ॥ गृहव्यौहाररवेलगुडियनकोजबलगहोंजियभावैं ॥ तबनवजोब्रनव्हैंमदरामयतियपियकंठलगावैं ॥ तिनचाख्योअतिस्वादअलौकिकस्यामममधुररसपाक । नागरीदासलगतजाकौंफिरऔरबस्तुसबआक ॥ २० ॥ हरिविमुखनकेसंगतैंभलीसउचकीठौर। उनपैंकलहकलेसबढतहैंवहांनकोऊऔर ॥ अतिएकंतरुथलआनंदमयगुणातीतनिरद्वंद । तिंहठांव्हैंनिश्चिंतबैठियेंपटनासामुखमुंद॥ तनमनकोदुखदूरहोयजहांपरमचैनसरसइयैं। ना

गरन्यारेबैठजगतसैंचितसुभवोरलगईयैं ॥ २१ ॥ सबदुखबडेकहा येंहोय॥इंद्रसबमैंबडोकहियतरहतनितिदुखभोय ॥ उग्रतपरिखिकर नसुनिकैंलुटतसेझअंगार । असुरडरअमरावतीतजिभजतबारंबार ॥ राधिकृत्यातैंपलानैंदुरेकमलमृनाल । अंगभगमंडितभयोगिरिगयेनृ पणविहाल॥ बुझ्योदीपकबडोजैसैंबडोकहियतुभूल । मानिलघुहरि सरननागररहैंसोसुखमूल ॥ २२ ॥ रागधनासरी ॥ करिहैंवेईसहाय हमारी ॥ जिंहिंप्रभुजरासंधकेगृहलैंबहोनृपदुसहआपदाटारी ॥ का राग्रहविमुखनकेसंगकोहरिनिवारिहैंअबदुखभारी । जमुनातटसत संगतिदैंहैंकरुणानिधिनागरसुखकारी ॥ २३ ॥ श्रीजमुनाजमुनाक हियैं ॥ जमुनानीरपरसियैंनितिबसिजमुनातीरतीरहीरहियैं ॥ जमुना जलअचवतहीतनकेपापजाहिउरभक्तिहिलहियैं । नागरीदासत्रास जमुनाव्हैंजमुनापदउपासदृढगहियैं ॥ २४ ॥ स्वप्नपद ॥ रसनाह रिगुनलगनलगी ॥ कथाअमृतमधुररसआनंदपगनिपगी ॥ पलकां तराविरहअखियांअजकजगनिजगी ॥ कृपानागरताकीमतियौंप्रीत खगनिखगी ॥ २५ ॥ मुनिसबलोकपावनकरे ॥ प्रगटश्रीभागवत कीनैंकरुणासागरढरे ॥ ल्यायभागीरथसुरसुरीपापपूरबहरे ॥ तुम जुसबउरभवनभवनमैंभक्तिदीपकधरे ॥ कृष्णचरितबिचित्ररसमद प्रेमगहवरभरे ॥ सहजश्रीशुकचरननवकादासनागरतरे ॥२६॥ राग सोरठ॥इकताल॥रेमनजनमकरमगुनगाय ॥ लोकबेदविस्तारसारबि ननीरसकथाबहाय ॥ कैंसैंबालकेलिकोतूहलगोकुलमांझकरे ॥ कैंसैं दुरिघरघरदधिचोरयोकैंसैंचीरहरे ॥ कैंसैंब्रजबृंदावनविहरेकैंसैंगाय चराई । कैंसैंजमुनाकूलकदमतरमोहनबैनबजाई॥ कैंसैंजगपतिननि

पैंभोजनमांगिलयोबलबीर ॥ कैंसैंढाकानिकीछहियांमिलिछाकखा तआभीर। कैंसैंसुंदरहस्तकंवलपरसातद्यौसागिरिधारयो ॥ कैंसैं बारबारब्रजजनकोबहोबिधिकष्टनिवारयो ॥ कैंसैंसरदनिसाबन कीनैंरासकेलिआनंद ॥ कैंसैंकामबिजैकरिलीनौंथकितरह्योनभ चंद ॥ कैंसैंघोखनिवासनिकौंहरिसुखदीनौंबहोभांत। नागरीदा सकहोसोनिसदिनजातहैंआयुबिहांत ॥ २७ ॥ मेरैंयेईबेदब्या स ॥ श्रीहरिबंसरुव्यासगदाधरपरमानंदनंददास ॥ श्रीहरिदास बिहारनिदासबिठलविपुलसुजांन ॥ रामदासनाभादामोदरअ लिभगवानसखीभगवान ॥ चतुर्भुजदासदासमेहापुनिश्रीभटच तुरबिहारी ॥ प्रीतमरसिकरसिकबल्लभअरुध्रुवरसरीतिउचारी ॥ तुलसीदासमीरांमाधवअरुउभैंनागरीदास। आसकरननरसींवृंदाव नकविमाधुरीप्रकास ॥ कृष्णादाससूरगोविंदअरुकुंभनछीतुस्वामि अनुरक्ता। श्रुतिपुरानमेरैंइनकेपदहौंश्रोताएवक्ता ॥ तजिइनके पदअर्थसुनैंकोनानामतिविभचार ॥ मूलसासत्रसिधक्यौंहरैंपदछा डिअमृतफलसार ॥ रसनाश्रवननिमैंइनकेपदरहोहियमैंनिदूखन ॥ नागरियाइनकीपदरजसोहोहुभालमोभूखन ॥ २८ ॥ होतोनही भागवतपुरान ॥ तोइहितनफूटेअरघासेवृथाभयेहेकान ॥ सबभ्रम तेबिनपायेमारगबीचजगतढमढेर ॥ अंधडुंडज्यौंव्हैंफिरतेकरिमुं डमुंडभटभेर ॥ भक्तिसंगसुखबिननरसगरेबातआवकेजंत्र ॥ नाग रीदाससारसबोंपरसाधुभागवतमंत्र ॥ २९ ॥ होहरिनींबहुफूलचुके॥ मत्तभंवरनवकुसमगंधपरनिसदिनझूलचुके। रितुबसंतबैसाखबि तीत्योतमधौंभूलचुके ॥ नागरीदासकुसंगतकेनहिंमिटिदुखसूलचु

के ॥ ३० ॥ कलिकेजनमबिगारतलोग ॥ मूरखमहादोउवेखोव
तहरिकीभक्तिबिखैंसुखभोग ॥ कलहकलेसकरतदिनबितवतात्रिवि
धिविपतिआस्वादी । ऐसैंहींसबआयुबितावतटेवतजतनहिंवादी ॥
दासीदासकुटंबमित्रसबयाहीदुखरसपगे । नागरकोउनांहिसमझा
वतसबस्वारथकेसगे ॥ ३१ ॥ कलिमैंतेक्यौंभक्तकहावैं । वृद्ध
होयजेबिमुखसंगफिरिदेसदेसउठिधावैं ॥ होतनिरादरदुखनाहिमा
नतनींवदेतअतिऔंडी ॥ चेततनहींबजतासिरऊपरयहघरियालका
लकीडौंडी ॥ बिनुजमुनापरसैंक्यौंउतरतस्वेतकचनाविचधूर ।
नागरस्यामबैठिनहिसुमरतिव्रजकीजीवनिमूर ॥ ३२ ॥ कलिकेलो
गकुमंत्रीसिगरे ॥ देतकुमंत्रबिगारतमनकौंआपुनमनकेबिगरे ॥ ए
कपेटकैंकाजहिखोवतदोऊलोकसुखअनुचर ॥ निजस्वामीकौंलियैं
फिरतहैंज्यौंगाहिघरघरबनचर ॥ दुखअपमानकोव्यापतनाहींलोभी
लोभसुखारे ॥ पापभारसबवाकौंलागतदासरहतहैंन्यारे ॥ चतुरथ
आश्रमआयदेतफिरिलाखबरसकीनींव ॥ नागरीदासजानिउनसब
कौंमहापापकीसींव ॥ ३३ ॥ कदलीबेरढिगपछितात ॥ पवनपर
सतहलतत्यौंत्यौंगडतकंटकगात ॥ पीराबिनुवहहरीनितयहनीरबिनु
कुम्हिलात ॥ संगनागरतजैंताकोहोयजबकुसरात ॥ ३४ ॥ ते
क्यौंहंसतहांसुखपावैं ॥ स्वेतकासकोबिमलसरोवरजांनिजांनिकैंआ
वैं ॥ जहांकंवलजलमुक्तानांहीतप्रढीमितहांपावैं । नागरअपनीभू
लकौंनकौंकहिकहिकैंपछितावैं ॥ ३५ ॥ भयोदुखीगजदौंसौंद
ह्यो ॥ दौरिचल्योमुरधरदिसमूरखनीरनकहूंलह्यो ॥ छाडिनृवर्तजल
परचोभ्रवर्त्तथलदुखनहिंजातसह्यो ॥ नागरआयस्यामसलितातटभ

रिआनंदरह्यो ॥ ३६ ॥ जिनकौंझूठलग्योसंसार ॥ जगसौंनिसपृह सतसंगतिकरिलेतसदासुखसार ॥ तेकलेसमैंपरतनकबहूंसारअसार बिचार ॥ नागरीदासकुसंगतिकरिकैंकौनभयोनहिख्वार ॥ ३७ ॥ सदासुखहरिभक्तनिकैंमांहि ॥ दशरथसुतअरुनंदनंदनकीबातानिसमैं बितांहिं ॥ बिबिधिकलेशरुकलहकलपनातिनमैंउपजतनांहिं॥ नागरियाब्रह्मानंदहूतैंभजनानंदअधिकांहिं ॥ ३८ ॥ जिनकैंनहींसतसंगतिचाह॥ तिनकैंउरकबहूंमिटिहैंनहिंमहादुसहदुखदाह॥बिनसाधनकीकृपाकहोक्यौंकलिमैंहोतनिवाह ॥ नागरीदासभक्तबचननिसुनिभयेचोरतैंसाह ॥ ३९ ॥ बिनसतसंगमतिबेढंग॥ फिरतडांवाडोलमनज्यौंबिनलगामतुरंग ॥ कबहूगिरगिरउठतअतिश्रमचढतक्रोधउतंग। कबहुमूरखभ्रमतआतुरउपजअंगअनंग ॥ कहातपब्रतदानसंजमकहान्हायेगंग॥ दासनागरबिनांसाधनसकलसाधनभंग॥ ४० ॥ अवतोदहोतबिपतमैंभोगी॥ अतिपिटवायोमायापैंतैंकृपादृष्टिकबहोगी ॥ बिबिधिकुगतिमैंनाच्योकूध्योकेतादुखशिरझेल्यो।काहूविधिमैं सचुनहिंपायोफाफडफोंदाखेल्यो ॥ खैंचाखैंचीजनमाविगारचोजनजनकोमनराखत॥नागरियाहरिसरनतिहारीबृंदाबनअभिलाषत ४१ करियतुबृथामनकीदौर॥ जियचहतइतऔरहीउतहोतऔरकीऔर॥ छीनआयुशहोतनिततनकालव्यालकोकौर ॥ दासनागरव्हैनिवृतबसबासतीरथठौर ॥४२॥ मनयहनीचसंगीनींच ॥ उच्चपदकौंचढतनाहींजदपिनियरीमींच ॥ नवनपापकौंगवनकरिहींज्यौंबनीरउलैंड । प्रबलअतिनहिंरुकतरोकैंग्यानधूरकींमैंड ॥ मिलतजाहीरंग आपुनहोतवाहीरंग । देहुनागरिदासकौंयातैंप्रभूसतसंग ॥ ४३ ॥

जानरकौंप्रभूयहधनलीनौं ॥ ताकौंनिसदिनजीवतहीतैंनरकामिल ककरिदीनौं ॥ जनमकरमउत्सवलीलागुनकथाकीरतनहौंन ॥ झालरझांझमृदंगतालधुनिसंतसमागमभौंन ॥ इतनीवस्तुगईजापैंतैंवापैंरह्योनक्यौंहीं ॥ नागरकेवलदुखसहिवेकोंदेहराहिगईयौंहीं ॥४४॥ रागदेवगंधारतिताल ॥ नरकोजनमविगारतआसा ॥ स्वारथदाव अठारैंचहियतुतीनपरतबिचपासा ॥ यहजगहैंचौपरकीबाजीअपने बसनहिख्याल॥ नागरीदासकरोसतसंगतछाडजगतजंजाल॥४५॥ अबजियकाहेकौंदुखभोवैं । कबहुकहरखसोककबहूव्हैंकबहूंहंसैंक बहुरोवैं ॥ याजगमेंहैंयहीतमासाऐसैंहीनितहोवैं ॥ नागरीदासभ जहुनंदनंदनजन्मवृथामतखोवैं॥४६॥ गुपतिआतिमनमैंलागीलाय॥ विविधिकामनांउठतचंडझरआसापवनसहाय ॥ ग्यानबैरागहिब रतदेखितनभक्तिहुरहीछिपाय ॥ नागरलोगबुझावतघोंसौंभोगतैं नांहिबुझाय ॥ ४७ ॥ पद ॥ यहमनमूढमहाअहंकारी ॥ हारतनां हिआपनैंहठसठअतिकुटेवटहंगारी ॥ हरिसमंधसुखकरिलैवेकोयह नरतनसुखकारी ॥ ताकौंफिरतभ्रमायेंदिसादिसतजब्रजकुंजबिहारी ॥ इहींदेहभुगतावतअतिदुखपर्मपापअधिकारी ॥ आंधेलोग बतावतमारगामिलमिलमहाविकारी ॥ अवसतसंगमित्रसजननमें रहूंसदाजमुनातटचारी ॥ अपघरतैंपरघरमतडारोनागरसरनतिहारी॥४८॥पद॥सूझतनहीआपनीआव॥ लाखबरसकीनोंवदेतइतडोलतकालविलोकतदाव ॥ एतेपरक्यौंप्रियसजननसौंफिराफिरकरत बियोग॥ अंताबियोगएकादिनव्हैहींउपजबिघ्नतनरोग ॥ यातैंक्यौं सुखसंगततजियेलजियेनहींजगतसौं । नागरीदासवासबृंदाबनव्हैं

हौसुखीभगतसौं ॥ ४९ ॥ पदः ॥ वृद्धहोयकैंधनउपजावत ॥ वही कहावतकरतमूढमतिगंगाकीराहमदारहिगावत ॥ जोधनउपज्यो तोवकहाकोकरिहैंलखमीभोग । घटतरूपवलदेहदिनाहिदिनबढत जुरातनरोग ॥ नागरियाबसियैंबृंदाबनबितयेबरसपचास ॥ हरिउ च्छबलीलासुखलीजैंकथाकीरतनरास ॥ ५० ॥ पदः ॥ पापसपीट तजनमगयो ॥ चिततैंथकिविश्रामनलीनोअधिकअधिकदुखमयो॥ ज्यौंज्यौंतनयहजीरनव्हैंहींमनव्हैंनयोनयो ॥ नागरीदासबसोवृंदा वननितसुखरहैंछयो ॥ ५१ ॥ पदः ॥ सुनियोकहतसबनिहैंटेरैं॥ यहविधिनाकोप्रगटचूकहैंद्वैमनकियेनमेरैं ॥ एकैंमनकौंसौंपिराखि तोसाधनगृहव्योहार ॥ मनइकसौंहरिभक्तिहिकरतोजगदुखसबनि रवार॥नागरीदासएकमनतैंकहिंक्यौंबनिहैंद्वैजोग॥ बिबधविपतको रोगइतैंउतहरिरसलीलाभोग ॥ ५२ ॥ जोमेरैंतनहोतेदोय ॥ मैंका हूतैंकछूनाहिंकहतोमोतैंकछुकहतोनहिकोय ॥ एकजुतनहरिविमुख निकेसंगरहतोदेसविदेस॥ विविधभांतकेजगदुखसुखजहांनहींभक्त लवलेस॥एकजुतनसतसंगरंगरंगिरहतोअतिसुखपूर । जनमसफल करलेतोब्रजबसिजहांब्रजजीवनमूर॥ द्वैंतनविनद्वैकाजनव्हैंहींआयु सछिनछिनछीजैं । नागरीदासएकतनतैंअबकहोकहाकरिलीजैं ॥ ॥ ५३ ॥ पदः ॥ भक्तबिननरछकडाकेबैल ॥ लोगबडाईदैदैंहां कतचलतदुखतव्हैंगैल ॥ कारजद्रव्याविनाबलघांसिमनसौंसकैंन हार ॥ लीनौंस्वारथसाधसबानिमिलयाकैंसिरदैंभार ॥ भटकतहीं मरजायवृषभमतनथेजगतकीलाज । नागरीदासबैठिबृंदाबनक रैंनअपनौंकाज ॥ ५४ ॥ हौंहरिथाक्योविसवाबीसौं ॥

पीसतपीसतजनमगयोअवपीसेकोकहापीसौं ॥ हारयोवहोतमजूरीकरिकरियहदुखअवैंनसइयैं ॥ नागरीस्यामकृपाकरिकैंमोहिवृंदाविपुनवसइयैं ॥ ५५ ॥ मेरोमनयहविगरपरयो ॥ व्हैंगयोदहीप्रीतजांवनतैंदूधनजातकरयो ॥ नहिऊगतनाहिंकाजऔरहूजैसैंनाजजरयो । नागरियामनकामनआवतप्रेमवायविचरयो ॥ ५६ ॥ मोपरकाहेहरिअनखाये ॥ भक्तसुधासागरतैंटारयोमृगमरीचजलध्याये ॥ स्वादवूंदघनमेटधुवांकेबादरभलेदिखाये ॥ रसिकमंडलीन्यारीकरपापिष्टीलोगमिलाये ॥ अपनीघांतनमननहिंराख्योजिततितभूलभ्रमाये॥ नागरनिजब्रजभवनदुरायोऊवटबाटचलाये५७॥ अवहमहिंहमारीसमझपरी । नहिंवैरागप्रीतहरिसौंनाहिमोमातिझूठभरी ॥ कंचनजानकसोटीलायोपीतरव्हैंनिकरी ॥ नागरीदासनावकैंनातैंकीजेकृपाहरी ॥ ५८ ॥ देखोअसमंजसअवहोवत ॥ तनकलग्योगंगाजलतनकैंसोमदिरासौंधोवत ॥ अमृतचाखिफेरनहिंचाहतगुरखैवेकौंरोवत ॥ तुलसीपेडउखारभक्तघरबीजआककेबोवत ॥ महावृद्धवयव्याहकरननिजआसामैंदिनखोवत ॥ नागरआपकहायपरेहठपोतसूतरीपोवत ॥५९॥ अवदिनखोवैंकौंनअलेखैं ॥ वैसीसमैंदेखिफिरऐसीकौंनसमैंकोदेखैं ॥ इहिंसमयेकोजेजेवातैंतेनपैंमननलुभाय ॥ नागरीदाससिंघभूखौरहैंतऊघासनहिंखाय॥६०॥ पदः ॥ धीरपुरसजाकौंसवकहैं ॥ कवहुहोतअधीरनाहिचितविविधविपतसिरसहैं ॥ भक्तिकरनिमैंअंतरपरतैंधीरजधरैंविचार ॥ नागरियाऐसेधीरजकौंकोरकोरधिरकार ॥ ६१ ॥ हमकोंकियेकुसंगतिप्चार ॥ वृंदावनानियरैंव्हैंनिकसेझांकनिदयौंनद्वार ॥ हरिचरचा

कोउकहतसुनतनहिंओरबातबिसतार ॥ प्रभुसमंधसुखसाधनकी चितभूलगयेउनिहार ॥ दितसुतसेनरकलहकलपतरुदेतहैंदुखअ नपार ॥ इनतैंलेहुछुडायमोहिअबनागरनंदकुमार ॥ ६२ ॥ मेरैंद्वा रसंतफिरिजावें ॥ दियेचहतदरसनकरुनाकरिआवनहूनहिपावें ॥ बधकबावरीथोरनिकौंआनंदितव्हैंव्हैल्यावें । क्यौंभूलैंनहिंनागरह रिकीमायातिन्हैंभुलावें ॥ ६३ ॥ दर्पनदेखतदेखतनाहीं ॥ बाला पनफिरिप्रगटिस्यामकचबहुरस्वेतव्हैंजाहीं ॥ तीनरूपयामुखकेप लटेनहींअग्यानताछूटी ॥ नियरैंआवतमृत्युनसूझतआंखैंहिय की फूटी ॥ कृष्णभक्तिसुखलेतनअजहूंबृद्धिदेहदुखरासी ॥ ना रियासोईनरनिश्चयजीवतनर्कनिवासी ॥ ६४ ॥ अबकैंसैंयेद्यौंस भैरें ॥ आठपहरमैंवृंदाबनकीकबहुनकोऊबातकरैं ॥ नंदनंदनगो पीजनवल्लभनांवनमेरेश्रवनपरैं । नागरीदासविनासतसंगतकोयाम नकीपीरहरैं ॥ ६५ ॥ जहांकोजीवजहांसुखपावें ॥ चंदनकौकीरा थोहरमैंकैसैंमनाविरमावें ॥ जलतैंमीनपरच्योमदरामैंकिहिंविधिजीव जिवावैं । नागरीदासकुसंगतमैंसंतसंगीनाहिंठहरावें ॥ ६६ ॥ अबैंये यौंलागेदिनजान ॥ मानौंकबहूहुतीनांहिनैंवासुखसौंपहिचान ॥ ह रिअरचाचरचाकबहूनहिंनहींकथाबंधान ॥ जनमकरमहरिउत्स वनाहींरासरंगकलगान ॥ बिमुखअनन्यनिकटरहैंनिसदिनमहादु ष्टदुखखान । येदुखतरैंकृपाकरिहैंजबनागरस्यामसुजान ॥ ६७ ॥ अबतोयहीबातमनमानीं । छाडौंनहींस्यामस्यामाकीवृंदाबनरज धानी ॥ भ्रम्योबहुतलघुधामविलोकतछिनभंगुरदुखदानी । सर्वो परआनंदअखंडितसोजियठौरसुहानी ॥ हरिभक्तनिमैंस्तुतिन्हैंही

निंदासुखअभिमानी । नागरियानागरकरगहिहैंरहिहैंजगतकहानी ॥ ६८ ॥ अबतोजोईमित्रकहावैं ॥ जोश्रीबृंदाबनवसिवेकी निश्चयबातदृढावैं ॥ याबिनकहैंसुसत्रुहमारोसोजियकबहुनभावें ॥ कहैंऔरुकैंऔसरचूकैंसोनागरपाछितावैं॥६०॥जगमैंतुच्छहीनसुखपावैं॥ वहिकाहूकैंनिकटनजावैंवापैंकोउनआवैं॥ताकौंदुखव्यापैंनहिंकबहूकेवलउदरभरावैं ॥ नागरभक्तिबिनाचातुरजेदुखमैंजनमवितावैं ७०॥हौंहरिमारकंडरिषिनाहीं॥मायाभलीदिखाइमोकूंझकझोरचोजगमांहीं ॥ अतिकलिकलहधूपतनतचहींजाऊंजहांजहांहीं ॥नागरियाकौंदेहुकृपाकरिबृंदाबनकीछांहीं ॥ ७१ ॥ हमारोसांचोहितूंवहैं । गांधारीकेपतिसौंजैसीबिदुरकहीसुकहैं ॥ सोईसत्रुजोमोहिवहावैंआपहूसंगवहैं । नागरियाकौंप्यारोसोसंगवृंदाविपुनरहैं॥७२॥ अबहरिमेटोदसातृसंक ॥ अधबिचपरयोमोहिलैंदीजैनिजसाधनकैंअंक ॥ कीजैंसरलकृपानिधिस्वामीजोमेरीमतिबंक ॥ नागरकृपाप्रसाददेहुकोचाबौंविपतकरंक ॥ ७३ ॥ अबहौंदिनदिनदुखनहिसहिहौं ॥ कैंवचबनतैंबेगनिकासिकैंबृंदाबनमैंरहिहौं ॥ यहबिनतीमेरीहरितुमबिनऔरकौंनसौंकहिहौं । नागरीदासनांवगवतैंफैंटतिहरीगहिहौं ॥ ७२ ॥ आयेहमबृंदाबनरसभोगी ॥ जासुखभोगहिकनसकतजेजगतबिपतकेरोगी ॥ रासविलासरुकथाकीर्तनहरिउत्सवआनंद ॥ निसदिनमंगलमइसमयजहांनागरियाब्रजचंद ७४॥ हमयहकबहूसुनीनहींआगैं ॥ खैंचतस्यामआपनीदिसनरपीछेपीछेभागैं ॥ मानुसरोवरचाहतनाहींसांभरसरअनुरागैं ॥ नागरभवनबुरेतजिदेखौंरंगमहलकीजागैं ॥ ७५ ॥ तजिउपाधिजेहरिपदभज

ते। वेनृपकहाहुतेबावरेमनिमयकंचनकेगृहतजते ॥ अबछाडतन हिंकलक्षमूलघरभक्तिबिमुखलोगनिसौंलजते ॥ नागरियानरमृत्यु खिलौंनारहतनहिंदुखसेनांसजते ॥ ७६ ॥ सवनरपगेउपद्रवमां हीं ॥ कृष्णभक्तिकीइच्छाकैसीविपैंभोगहूनांहीं ॥ कलहाविना कछुऔरुनभावैलरैंदोखिपरछांहीं ॥ नागरतापाविरुद्धनहींइकवृं दाविपनजहांहीं ॥ ७७ ॥ कृष्णकृपाआयेदिनभले ॥ बहुतैंभ्र म्यौंआजलौंहौंअबवृंदाबनदिसचरनचले ॥ दुरजनटरेसजनमिलि हैंजेनंदनंदनकैंरंगरले ॥ भूखेहुतेश्रवनमनलोचनतेनागररसपोखप ले ॥७८॥ हमारीअबसबबनीभलीहैं ॥ कुंजमहलकीटहलदईमोहि जहांनितिरंगरलीहैं ॥ साहिबस्यामास्यामउसीलीललितालतिअ लीहैं ॥ नागरियापैंकृपाकरीअतिश्रीवृषभांनललीहैं ॥७९॥ कोई नधारिउहांपावैं॥ जितजांऊंतितसिरभटभेरतऊबटचल्योनजावैं ॥ वृथागईसवबातआजुलौंऊहटिछिनहूंसुखनविहावैं ॥ नागरघरब्रज नहींमनकरतजक्तमन[illegible]रचलावैं ॥ ८० ॥ हरिजूअजुगतजुगथोभ्र मआई ॥ श्रीवृंदा[illegible]हलकाचकीनीकैंलेनिकरैंगे ॥ गहिरैंजेकृपा करोनागरसुखसा[illegible]भांतितरैंगे ॥ मैंनतुरंगचढेपावकाविचदाफां दी ॥ कैसैंपतिव्रते[illegible]असमंजसहोकिनप्रभुदृढकरपकरैंगे ॥ नभांग भसूकितरफरत[illegible]डरनडरैंगे ॥ ८१ ॥ हमारीचरचागम कूटेंगैचांदी॥९[illegible]ांवहोश्रुतहीतिनकहतहीसमझलई ॥ फिरि योभांखरोज्यौंअ[illegible]चितवानिरीझदई ॥ नागरकहतक [illegible]अंग॥ नागरि[illegible]॥ ८२ ॥ येसिवहीसौंसंगनिभै ॥ वृष [illegible]तुअभै॥ बिनभगवानसंगअसमंजसऔ

रतैंनांहिबनैं ॥ नागरिदासकुसंगततैंनितिवढतनभक्तिमनैं ॥ ८३ ॥ अमलपदकमलचारसुचार ॥ अरुननीलसुबरनमिलिमनहरनिभये छविजार ॥ मुक्तरमनिमंजीरमनमथकरतप्रगटिचरित्र ॥ गउरजावकाचित्रचित्रेचतुरमोहनमित्र॥नखचंद्रिकाप्रतिबिंबप्रसरतकुंजकौतुकभूमि ॥ दासनागरमनमधुपतहांरहोझुकिझुकिझूमि ॥ ८४ ॥ तुमबिनकौंनसहायकरैं ॥ जानतप्रीतरीतरसिकनिमनिकोऊकहाउचरैं ॥ पद्मावतिजयदेवकेस्वामीयहमनवृथाडरैं ॥ नागरसुखसागरपदध्यायेकोदुखजरनिजरैं ॥ ८५ ॥ अबतोकृपाकरोगोपाल ॥ दीनबंधुकरुनानिधिस्वामीअंतरपरमकृपाल ॥ जगआसाविषफलमतप्यावोप्यावोभक्तिरसाल ॥ नागरियापरदयाकरोकिनजनदुखहरनिदयाल ॥ ८६ ॥ अबतोकृपाकरोगिरधारी ॥ अपनीबांहछांहतरराखोदेखोदसाहमारी ॥ जुरेघोरकलिकलहतिम... ...री ॥ नागरसुखसंगउनकोदीजैंजिनके ... ॥ कैंवच...रियेकृपाविहारी ॥ जगमुंजारनतैंलैर... ...नसमाजसहिततिंहिंठांरसभक्तिकरौंसुखव... ...कितदेषादसाहमारी ॥ ८८ ॥ अबतो... ...बिपुनबभौंश्रीस्वामिनिछाडिजगतकीबा... ...बनकीलीलाललितअगाधा ॥ नागरिय... ...खसाधा ॥ ८९ ॥ अबतोकृपाकरोललित... ...रनकोऊसाधनसबतैंतिहारीसरनबली... ...वेनवकुंजगली। होतहैंनागरियानाग... अबतोकृपाकरोब्रजबासी॥जुगजुग...

॥ नागरकृपा... ...दिनदुखनहि... ...हबिनतीमे... ...फैटतिहा... ...गहिकर... ...कीर्तनहरिउ... ...जचंद ७४॥ ...दसनरपीछेपी... ॥ नागरभवन... ...यजेहरिपदभज...

तउपासी ॥ कामनओरपुनीतठौरसौंगंगगयाकहाकासी ॥ नागरियापैंकरुणाकरिकैंकरियैंधोषनिवासी ॥ ९१ ॥ अवतोकृपाकरो सबसंत ॥ यातनमनसौंभ्रमतभ्रमतहीव्हैंगयेदिवसअनंत ॥ घटत बुद्धबलदेहदिनहिदिनतृष्णाकोनहिअंत ॥ नागरियाअबउहांबसइ येजिहिठांनित्यबसंत ॥ ९२॥ अवतोकृपाकरोश्रीबृंदा ॥ हेदेवीतु वबिपनभवनकीउल्हंगिनजाउंश्रालिंदा ॥ वैष्णवसहिततहांकोनि त्यरसपानकरौंसुखकारी ॥ नागरियापैंकृपाकीजियेकृष्णकमलप दप्यारी ॥ ९३ ॥ अबतोकृपाकरोश्रीजमना ॥ दरसपरसतटदेहुबा सबनतृविधितापतनदमना ॥ होदातारसभक्तिदानकीसलिताऔरु तुसमना ॥ नागरियाकीमेटदेहुजियजगतृष्णाकीभ्रमना ॥ ९४ ॥ बहुरिपरेवादिसकौंपांव ॥ परममनोहरजमुनातटपरिजादिसमेरोगां व ॥ स्वामीतहांहमारेमोहनस्वामिनिराधानांव ॥ नागरह्यांबहोचर नधारिउहांपहुंचपंगुव्हैजांव ॥ ९५ ॥ हमसतसंगतिबहुतलजाई॥ वृथागईसवबातआजुलौंजोकछुसुनीसुनाई ॥ भक्तिरीतिअनुसरत नहींमनकरतजक्तमनभाई ॥ अजहुंनतजतउपाधिअवस्थाचलुर्थाश्र मआई ॥ श्रीवृंदाबनबासकरनकीजातहैंसमैंबिहाई ॥ अबतोकृपा करोनागरसुखसागरकुंवरकन्हाई ॥ ९६ ॥ तजतनहीमतिकूदाफां दी ॥ कैसैंपतिब्रतकरैंस्यामसौंज्यौंबबिलल्लीबांदी ॥ मायाभांग भसूकितरफरतहोतनहींमतिमांदी ॥ नागरसाधबचनमानैंबिनजम कूटैंगौचांदी॥९७॥ जबतैंमिटयोरंगीलोसंग । घटिचितचटकरूभ योभांखरोज्यौंअटानकोरंग ॥ मंदजुरैंनबिनादीपकदिनज्यौंअनंग बिनअंग॥ नागरियापैंकृपाकरोहरिहौंननदेहुकुढंग ॥ ९८ ॥ इत

नीहैसबठौरहमारी ॥ वृंदाबनजमुनागोवर्द्धनराधाकुंडसुखकारी ॥ नंदगांवबरसांनौहैंजहांरहतस्यामकीप्यारी ॥ इन्हैंछांडिनहिंजाउंअनतकहुंयहनागरजियधारी ॥ ९९ ॥ हमतोबरसांनेकेबासी ॥ गहवरगिरजहांखोरसांकरीललितठौरसुखरासी ॥ कुंडभरेजलबनउपबनछबिकुंजकुटीअनयासी । कुंवरिललीकीदेतदुहाईसबसुखसैलनिवासी ॥ नरनारीपसुपंछीइहिंठांलीलाललितउपासी ॥ फिरतलाडिलीकैसंगनितिनटनागरकरतखवासी ॥ १०० ॥ दुहुंभांतिनकौमैंफलपायो ॥ पापकियेतातैंबिमुखनिसंगदेसदेसभटकायो ॥ मिटिसतसंगभक्तिसुखकोऊहरिउत्सवनदिखायो ॥ तुच्छकामनाहितकुसंगवसझूठैंलोभलुभायो ॥ कौनपुन्यअबवृंदाबनबरसांनैंसुबसबसायो । आनंदनिधिब्रजअनन्यमंडलीउरलगायअपनायो ॥ सुनिबेहूकौंदुल्लभसोसबरसबिलासदरसायो ॥ स्यामास्यामदासनागरकोकियोमनोरथभायो ॥ १०१ ॥ चकसोलीकेचनाचुराये ॥ गारीदैदौरीरिषवारनिग्वारनिसहितगुपालभजाये ॥ हरेबूंटदाबैंबगलनिमैंस्वासभरेबनगहबरआये ॥ कहतआतुरेबोलललोलदृगहसतहसतसबबापचढाये ॥ रेचबातकोउहोराकरिबनकीलीलालालुभाये ॥ नागरियाबैठीछकिहारीछीलछीलनंदलालहिखवाये ॥ १०२ ॥ सांचौहितूसुयहीदृढावैं ॥ नितिविहारठौरनितिनिरषैंवहीकथानितिसुनैंसुनावैं ॥ ब्रजवासनिसौंप्रीतिकरैंदृढनिसवासरसुदसमैंबितावैं ॥ नागरियाकौंस्वपनैंहूमैंअबब्रजतजिकैंअनतनलैंजावैं ॥ १०३ ॥ नंदवृषभानुकभवनराजैं ॥ भईभटनटनिकीभीरवृषभानपुरपौरिआतिमत्तगजराजगाजैं ॥ दोउकुलदीपकेकुलहिमंगदभनैंजुरेगनगुनीसंगीतसाजैं ॥

समधीसमधीमिलनिगोपगरईसभाप्रभाआनंदकछुऔरआजैं ॥ गारिगावतसकलामिल्योमहरावनौंकियेघूंघटालियेहियेलाजैं ॥ महलमहलनिचहलपहलमंगलमहाद्वारसहनायनीसानबाजैं ॥ बटततहांपानकपूरअरुअरगजागोपकुलकरतसनमानभ्राजैं॥ नागरीदासजहांफिरतउत्सवटहलपरमआनंदछकिचढेछाजैं ॥ १०४॥ हमारीतुमसौंहरिसुधरैंगी ॥ वहुतजनमहमजनमविगारयोअबहूबिगरिपरैंगी॥ प्रीतिरीतिपूरननहिकैसैंमायाव्याधिटरैंगी॥ नागरियाऊीसुधरैंगीजोअंखियांइतहिंढरैंगी ॥ १०५ ॥ होहरिसरनतिहारीदेहु ॥ बिरदहैंअसरनसरनतिहारोसोबसांचकरिलेहु ॥ मारतमोहिकलिकालदबायेंभरयोतरुनताछोह॥ च्यारसत्रुहैंवाकेसंगीकामक्रोधमदमोह ॥ पांचौंइंद्रीमोबसनाहींमनहूपलटिगयो ॥ लेहुबचायनागरीदासहिंतोपदकमलनयो ॥ १०६ ॥ सांचेसंतहमारेसंगी॥ औरसबैंस्वारथकेलोभीचंचलमतिबहौरंगी॥ मनकायामायासरितामैंबहतैंआनिउछंगी॥ नागरियाराख्योबृंदावनजिहिठांललिततृभंगी ॥ १०७ ॥ हमारीसबहंबातसुधारी ॥ कृपाकरीश्रीकुंजबिहारनिअरुश्रीकुंजबिहारी ॥ राख्योअपनेवृंदाबनमैंजिहिठांरूपउजारी ॥ नित्यकेलिआनंदअखंडितरसिकसंगसुखकारी ॥ कलहकलेसनव्यापैंइंहिंठांठैरबिस्वतैंन्यारी ॥ नागरीदासहिंजनमजितायोबलिहारीबलिहारी॥१०८॥ नितिआनंदबृंदाबनमहियां॥ नित्यकेलिकउतगरसलीलानिरखिनिरखिदृगहारतनहियां॥ नित्तहरेद्रुमफूलफलनिजुतजमुनातटअतिसीतलछहियां॥नितिनउतनसबलोगसनेहीप्रीतिरीतियहऔरनकहियां ॥नित्तरासनितकथाकीरतनानितिप्रतिगतिमातिरहैंउमहियां॥ नित्तबा

सतहांनागरिदासहिस्यामास्यामदयोगाहिवाहियां १०८ सवमैंबुद्धवा ननरजेहैं ॥ ताजिकुसंगसतसंगतकैंहिततीरथबासवसेहैं ॥ अपनेघ रहिंसंवारनिकारनवइयापरमप्रवीन ॥ विषैंभोगकैंलालचअटके करतपुन्यबलछीन ॥ यहकलिकालसौरिकाजरकीकौंनभयेनहिं कारे ॥ नागरियातिनहींजगजीत्योजिनहरिचरणसह्मारे ॥१०९॥ हमतोवृंदावनरसअटके ॥ जवलगिइहिंरसअटकेनांहींतवलगिवहौ विधिभटके ॥ भयेमगनसुखसिंधुमांझह्मांसवतजिकैंजगखटके॥ अवबिलासरसरासहिनिरखतनागरिनागरनटके ॥ ११० ॥ हमारी बांहगहीवृंदावन॥राख्योअपनीसीतलछइयांजगदुखघांमतच्योतन ॥ योमैंकछूकृपावलनांहींहौंजानौंअपनैंमन॥नागरीदासनांवहितसौं कारिकृपाकरायोधनधन ॥ १११ ॥ व्रजमैंहोतसुखकीलूट ॥ परम धनआनंदकेभंडारनितरहेखूट ॥ अतुलद्रव्यसकेलिहीनरतउअघा तनकोय ॥ नंदअरुवृषभानघरपारसप्रगटिभयेदोय ॥ लेहुकिनजा पैंलयौजायपरेरिधिकेढेर । दासनागरकहतटेरैंफिरनऐसीबेर ११२ देहधरैंकौअवफलपायो ॥ बीतेवहुतदिवसअसमंजसमायानाचनचा यो ॥ थोहरवनतैंमोहिकाढिथिरवृंदाविपुनवसायो ॥ कौंनकृपाअ नयासभईहौंनिजमनहेरिहिरायो ॥ निसदिनपहरघरीछिनछिनप लनितिआनंदरहैंसरसायो ॥ नागरिदासदासव्हैंकैंजोयहांनआयो सोपछितायो ॥ ११३ ॥ वृंदावनसुवसतजमुनातीर ॥ सदारूप कीपैंठलगीरहैंकवहुनहोतउछीर ॥ प्रेमनदीसोफिरतरगमगीगलिनि गलिनिविचभीर। नागरियानितमिलेदेखियतसांवरगउरसरीर ११४ अवतोकहिवेकोनरहो ॥ अपनीवांहछांहतरराख्योवृंदाविपुनमजराज

अैसैंहीकारिक्कपामेटियैंकामक्रोधसबही॥ नागरियाकीझूटिजायतुहैं सबहीकहाकही ॥ ११५ ॥ दीजैंप्रेमप्रेमनिधिस्याम॥ गदगदकंठ नैंनजलधारागाऊंगुनअभिराम ॥ याछकिसौंसबकूटिजायज्यौंऔ रसवैंकलमषकेकाम ॥ नागरियातुवरंगरंग्योफिरैंइहिंवृंदावनधा म ॥ ११६ ॥ येब्रजबासीहरिकेप्यारे ॥ येहरिमैंहरिइनमैंनितिप्र तिहोतनहींछिनन्यारे ॥ इंद्रआदिसुरअसुरदवानलविपधरतैंजुउबा रे ॥ नागरिदासकितेयाब्रजपरपचिपचिगयेविचारे ॥ ११७ ॥ ब्र जराजाकोबेटाचोर॥ घरघरतैंदधिमाखनचोरेचोरेचीराकिसोर॥जुव तिनकेमनमानिकचोरेहासिचितवनदृगकोर । नागरीदासचुरावैंस बसजोआवैंइहिंओर॥११८॥ब्रजकेलोगसबठगमहा॥ आपठगठगके उपासिकअधिककहियेकहा ॥ कनकबीजसीबचनरचनांदेततन कचखाय ॥ बावरोव्हैंरहतसोफिरधामधनबिसराय ॥ छांडिकैंरज लुटतरजमैंदीनदीसतअंग॥ औरजगसुखरंगउडिकैंचढतकारोरंग ॥ भूमिठगद्रुमदेसठगयहांठगेस्यामसुजान ॥ राखैंसयानपसोबडनकैं औरकौनसमान ॥ इहांआवतहीपरतदृढप्रेमकीगरपास ॥ भूलिह्यां कोउआइयोमतकहतनागरिदास॥११९॥येवेईहरिकेब्रजबासी ॥ सु बलसुबाहुश्रीदामाआदिकतनघनस्यामउपासी ॥ वहीभूमिबनउ पबनवेईवहिगिरिराजछत्रछबिरासी॥नंदीसुरबरसानौंगोकुलवेईठौर सबबिबिधिबिलासी ॥ वहगिरधरहरिदेवबिहारीबामअंगप्यारी चपलासी ॥ एईगायगोपहैंवेईजुगजुगप्रगटिरहतअनयासी ॥ लीलाकरीवईजेअबलौंसदादेखियतुदृगनिप्रकासी । नागरि सभेदइनउनमैंजोजानैंसोनर्कनिवासी ॥ १२० ॥ आयोमहा

तल ॥नि

कलिजुगघोर ॥ धर्मधीरजउडिगयेज्यौंपातपवनझकोर ॥ मिटेमं
गललोकलागीहौंनआयुसुमंद ॥ बढीजितांतितकलहकर्कसनाहिंन
कहूंआनंद ॥ मिटीलक्ष्मीभाग्यसुभसुखमिटयोसबकोभद्र ॥ मिटी
सोभासहजसंपतबढिपरयोदारिद्र ॥ मिटीसजननिसुहृदताईरह्यो
स्वारथएक॥सुखीकोऊदेखियेनाहिंदुखीलोगअनेक॥लेतकलिकलम
षदबायेंजाइयेकहांभागि।त्रिबिधितापमैंतनतचतलगीदसौंदिसमैंआ
गि॥दासनागरनहींसीतलधामनिर्भयऔर ॥जहांवृंदाबिपुनजमुनाव
चैंवाहीठौर ॥१२१॥जयतिगुरुदेवहरिभक्तिदानी ॥ तिनपैंकरिकरु
नांलैकियेतनमनादिव्यहुतेकलिमषनिजेमलिनप्रानी ॥ बिमुखमुखर
सनारसनाहुतीकठिनकटुताहिकरीमिष्टगोविंदगानी॥ नागरीदासअ
नयासजिनकीकृपाभयेमदपानीतैंअमृतपानी॥१२२॥ भक्तबिननर
थोहरकेडंडा ॥ जारिमारिवेबिनऔरकामनाहिंदीसैंअंगप्रचंडा ॥ रौं
मरौंममैंकांटेतिनकैंनीरसखंडबिहंडा ॥ केवलउदरभरनिकौंउपजे
जैसैंअन्नकेहंडा ॥ तिनपररुपेप्रसिद्धदेखियेजमराजाकेझंडा ॥ ना
गरीदाससंगउनकोकरैंसोव्हैंभंडसभंडा ॥ १२३ ॥ भक्तबिनहैंसब
लोगनिखट्टू ॥ आपसमैंलडबेभिडबेकौंजैसेजंगीटट्टू ॥ नितिउन
कीमतिभ्रमतरहतहैंतैसेलोलपलट्टू । नागरियाजगमैंवेउछरतजिंहिं
बिधिनटकेबट्टू ॥१२४॥ घोषमैंमोखहिंकोउनबूझैं ॥ डारडारद्रुमपा
तपातमैंपरेचतुर्भुजसूझैं ॥ घरघरटहलकरतहैलषमीछिनाकितहूंनाहिं
जाय ॥ व्रजबृंदाबनसुखवैभवलखिमुक्तरहींशिरनाय ॥ इहांअधिक
वैकुंठहुतैंराजैंव्रजराजअवास ॥ नंदगांवबरसानेकानितिजगमगरह्यो
प्रकास ॥ हमगोलोकप्रजंतनचाहैंखरिकदेससुखबासी ॥ नागरिया

जहांराधामोहनलीलाललितबिलासी ॥ १२५ ॥ होहरिआछीसमैं सह्मारे ॥ थोरीअवधिजानिजीवनकीअपनेबिरदबिचारे ॥ भवप्रवाहमैंवहेजातहेवहियांपकरिनिकारे ॥ नागरियाराख्योवृंदावन जिहिंठांअपनेप्यारे ॥ १२६ ॥ वृंदाविपुनरसिकरजधानी ॥ राजारसिकबिहारीसुंदरसुंदररसिकबिहारनिरानी ॥ ललितादिकढिगरसिकसहचरीजुगलरूपमदपांनी। रसिकटहलनी वृंदादेवीरचनारुचिररनिकुंजरवानी ॥ जमुनारसिकरसिकद्रुमबेलीरसिकभूमसुखदानी ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियारसिकाहिरसिकसबैंगुनगानी ॥ १२७ ॥ कृष्णकृपागुनजातनगायो ॥ मनहुनपरसकारिसकैंसोसुखइनहिंदृगनिदिखायो ॥ गृहव्यौहारभुरटकोभारासिरपरसौंउतरायो॥नागरियाकौंश्रीबृंदाबनभक्ततक्तबैठायो॥१२८ कितेदिनविनबृंदाबनखोये ॥ यौंहींवृथागयेतेअबलौंराजसरंगसमोये॥ छाडिपुलनिफूलनिकीसज्यासूलसरानिपरसोये ॥ भींजेरसिकअनन्यनदरसेविमुखनिकेमुखजोये ॥ हरिविहारकीठौररहेनहिंअतिअभाग्यबलबोये ॥ कलहसरायबसायभिटचारीमायारांडविगोये ॥ इकरसह्यांकेसुखतजिकैंव्हांकभूहंसेकभूरोये ॥ कियोनअपनौंकाजपरायेभारसीसपरढोये ॥ पायोनहींआनंदलेसमैंसबैंदेसटकटोये ॥ नागरिदासबसेकुंजनिमैंजबसबविधिसुखभोये ॥ १२९ ॥ व्रजकेलोगहैंमहाकठोर ॥ तनकनपीरपराईतिनकौंमैंदेखेटकटोर ॥ अपनैंहींस्वारथकैंकारनडोलतहैंनिसभोर ॥ नागरसुखलैबेमैंलोभींदैबेमैंझकझोर ॥ १३० ॥ यहव्रजनितप्रतिसुबसबसो ॥ नंदसुवनआनंदलीलाधनव्रजबासीबिलसो ॥ मंगलमईएक

रसनिवहौअरुवहोविघननसो ॥ नागरीदासदासनिसबासरगावोह रपिहसो ॥ १२१ ॥ मोहनकृपाकटाक्षनिहारैंगे ॥ मेरेओगुनसबै विसरिकैंअपनेंविरदविचारैंगे ॥ वृंदाविपुनवासदृढदैंकैंअबदुखदूर निवारैंगे ॥ नागरिदासनांवकैंनातैंबिगरीबातसुधारैंगे ॥ १३२ ॥ बिनवृंदावनयहरितुबुरी ॥ वादरलगतधुवांसेनैंननिचपलाचमकि चुभैंज्यौंछुरी ॥ मोरसोरचहुंओरनिव्हैंमनुरिपुसेनाकेहींसततुरी ॥ नागरियातुलसीवनबाहिरपावकसीपावसझुकिझुरी ॥ १३३ ॥ ह मतोनकलभक्तिकील्याए ॥ कवहुनसांचीभक्तिकरीमनइंद्रिनिहाथ विकाए ॥ कपटचतुरईबेपदेखिकैंसंतमहंतलुभाए ॥ बांनांधारीब धकनिपैंज्यौंमानसहंसबंधाए ॥ स्वांगधरैंहूंसबफलप्राप्तभक्तिम हातमजातनगाए ॥ नागरियानकलीकौंहरिप्रियवृंदाविपुनवसाए॥ ॥ १३४ ॥ हमतोहैंयारसकेभोगी ॥ जोमाधांतवोषमैंप्रगटतताहिन जानतजोगी ॥ उज्वलरसरसमादिकपीकैंकरतराजाबिस्तार ॥ क्री डाबलबैरागग्यानगनहोतहैंज्यौंघनसार ॥ मासपांचपटयाआसामैं रहतहैंउरझेप्रान ॥ नागरियाहियसोसुखबरसोस्यामास्यामसुजा न ॥ १३५ ॥ जोसुखलेतसदाब्रजाबसी ॥ सोसुखस्वपनेंहूंनहिंपा वतजेबैकुंठनिवासी ॥ ह्यांघरघरव्हैंरह्योखिलौंनांजक्तकहतजाकौंअ बिनासी॥नागरीदासबिश्वतैंन्यारीलगिगइलूटहाथसुखरासी१३६॥ ब्रजहीतैंहैंहरिकीसोभा ॥ बैनअधरछबिभयेनृभंगीसोवहिब्रजकेबांस कोगोभा ॥ ब्रजबनधातविचत्रमनोहरगुंजपुंजअतिसोहैं ॥ ब्रजमो रनिकोपंखसीसपरब्रजजुवतीमनमोहैं ॥ ब्रजरजनीकीलगतअलकपैं ब्रजद्रुमफलउरमाल ॥ ब्रजगउगनकैंपाछैंआछैंआवतमदगजचा

ल ॥ बीजलालव्रजचंदसुहायेचहूंऔरव्रजगोप ॥ नागरियापरमेसुरहूकौंव्रजतैंबाढीओप ॥ १३७ ॥ व्रजकोस्वादवैकुंठमैंनाहीं॥ हरिगुनकथाभईजबमीठीव्रजरसमिल्योतवैंतामाहीं ॥ व्रजरसबिनकहारसिकगावतव्रजबिनरसमरिजातो । व्रजमहिमाकौंवेईजानैंजिनकैंव्रजसौंनातो॥ भवनचतुर्दसमांझधन्यव्रजधन्यधन्ययेव्रजबासी ॥ नागरीदासधन्यहैंसोईजोव्रजरैनउपासी ॥ १३८ ॥

## अथ व्रजसमंधनाममालापद ॥

व्रजसमऔरकोउनहिधाम॥ याव्रजसौंपरमेसुरहूकेसुधरेसुंदरनाम॥ कृष्णनांवयहसुन्यौंगर्गतैंकान्हकान्हकहिबोलैं ॥ बालकेलिरसमगनभयेसबआनंदसिंधुकलोलैं ॥ जसुदानंदनदामोदरनवनीतप्रियदधचोर । चीरचोरचितचोरचिकनियांचातुरनवलकिसोर ॥ राधाचंदचकोरसांवरोगोकुलचंददधिदानी ॥ श्रीबृंदाबनचंदचतुरचितप्रेमरूपअभिमानी ॥ राधारवनओराधावल्लभराधाकांतरसाल॥वल्लभसुतगोपीजनवल्लभगिरवरधरछबिजाल॥रासबिहारीरसिकबिहारीकुंजबिहारीस्याम ॥ बिपनबिहारीबंकबिहारीअटलबिहारीबिहारभिराम॥छैलबिहारीलालबिहारीबनवारीरसकंद ॥ गोपीनाथमदनमोहनपुनबंसीधरगोबिंद ॥व्रजलोचनव्रजरवनमनोहरव्रजउत्सवव्रजनाथ । व्रजजीवनव्रजवल्लभसबकेव्रजकिसोरशुभगाथ ॥व्रजभूषनव्रजमोहनसोहनव्रजनायकव्रजचंद॥ व्रजनागरव्रजछैलछबीलेव्रजवरश्रीनंदनंद ॥ व्रजआनंदव्रजदूलहनितिहीअतिसुंदरव्रजलाल ॥ व्रजगउगनकैंपाछैंआछैंसोहतव्रजगोपाल॥ व्रजसनमंधीनांवलेतए

व्रजकीलीलागावैं । नागरिदासहिमुरलीवारोव्रजकोठाकुरभावैं ॥ ॥ १३९ ॥ गिरवैरागसिखरमनचढयो ॥ जगतकिचापिचकीचवी चतैंअतिअमूंझकैंकढयो ॥ निर्भयभयोतमासोदेखतलरैंभिरैंनरम रैं ॥ अहंकारव्यौहारअगनमैंवृथामूढमतिजरैं ॥ धामधूमिमचिरही रौरअतिसबहिदेखियेदुखी॥ नागरिदासबासवृंदावनभक्तकरतजेसु खी ॥ १४० ॥ सांचोमित्रगोपालहैंमेरोपरमपियारो ॥ जिहिंदीनौं व्रजवासलैवैकुंठतैंभारो ॥ निजसाधनकोसंगदयोनीकेतैंनीको॥जा कैंपटतरक्यौंलगैंसुखस्वर्गकोफीको ॥ राजकलहकेमूलकोविषअ मलछुटायो ॥ नागरियावृंदाविपुनरसअमृतप्यायो ॥ १४१ ॥ जगतकोवावबंदीव्योहार ॥ उपजतखपताछिनकमैंजैसैंवादरपरस बयार ॥ अलगथलगआधारबिनासबहरिइच्छाअनुसार ॥ नागरि याजागतसुपनेंकोहैंझूठोविस्तार ॥ १४२ ॥ दिनादिनसमैंजातहैंबी तो ॥नरअपनैंगृहकाजकरनसौंकबहुनहोयनचीतो ॥ जोईविवेकी शुभकारजकोऔसरयौंविचारैं॥ नागरसूतसुईमैंपोहतज्यौंदामिन उजियारैं॥ १४३ ॥देहुप्रेमहरिपरमउदार ॥ बिनांप्रेमजेभक्तिहैंनैं धाभईजातव्यौहर ॥ प्रेमहिकैंबसहोतस्यामतुमप्रेमहिंकोरिझ वार । प्रेमहाथअपनैंनहिंनागरताकोकहाबिचार ॥ १४४ ॥ हमैंसास्त्रकीसमझनपरिहैं ॥ नहिंसमझेअवहूंनहिंसमझैंजेसमझेतिन कहौसुकारिहैं ॥ परमधर्मबेत्ताआचारजच्यारनिहोंकैंमतअनुसरि हैं ॥ हंसवाहनीहठसलितामैंबूडकलैलैनांहिउछरिहैं ॥ व्रजरसके लिसुधापियकैंफिरबिद्याबादनिनांहिंझगरिहैं॥ नागरिदासबासवृंदा बननितिबिहारतैंकबहुनटरिहैं ॥ १४५॥ अन्योक्तदोहाकुंडलिया॥

दांतगयेअरुबलगयोअंगभारनहिंलेत ॥ ऐसेबूढेबैलकौंकौनवृथा भुसदेत ॥ कौनवृथाभुसदेतमरतभूषनिकैंमारैं ॥ यहजीवततउलो गषालकोमोलबिचारैं ॥ सबस्वारथमैंमत्तआधिकअधरमसरसांत ॥ ज्यौंज्यौंदेखतवृषभसजनत्यौंपीसतदांत ॥ १४६ ॥ झूलनाछंद ॥ घूमघुमालीलावनवालीमतवालीसीझुलैंवहां ॥ नागरासिरजूडेखचे अंगूडेमुखरूडेलटछुटीतहां ॥ चटकाचिकनियांअंगरहैंदीरंगमहैंदी लगीनहां ॥ इश्कझंझेटीलाजलपेटीयेमहरेटीचलीकहां ॥ १४७ ॥

## अथ छूटकदोहालिख्यते ॥

परकारजकरिदुखसहैं, लेतनहरिरसघूंट । भारघसीटतऔरको, आपऊंटकेऊंट ॥ १ ॥ अपनौंभलोनकरतनर, सबमैंबडोकहाय ॥ बिनपरसैंहरिनामकैं, ज्यौंसुमेररहिजाय॥२॥अपअपनेसबसुधिकर हीं, भवनभरेउतपात ॥ कबहूकोउनहींकरैं, वृंदाबनकीबात ॥३ ॥ नेतिनितिदुखगृहकोसहैं, जहांअमिटउतपात ॥ रोगदुखिततनत्या गये, घरकीकितीकबात ॥ ४ ॥ करीनजिहिंहरिभक्तिनाहिं, लये जैकृस्वाद ॥ सोनहिंजिमीअकासको, भयोऊंटकोपाद ॥ ५ ॥ मारबोचाहतऔरको,अपनैंसुखहितकोय॥ तिनकौंऐसीनीतपारै,सु खकाहेकौंहोय ॥६॥ जाकौंकहियेमूढजग, दुखदौंलागीहेर॥जमुना वृंदाबिपुनतजि, धावतबीकानेर ॥७॥ बिबिधिभांतिकेदुखनिजिय, निकसतनहींनिदान ॥ वृंदाबनकीआसपारि, उरझरहेयेप्रांन ॥८॥ आपसमैंजुलरायकैं, कियेमुसाफरभांड॥ मायाजगतसरायमैं, बुरी भठचारीरांड ॥ ९ ॥ नहींअवस्थाधननहीं, औरनकहूंनिवास॥ तऊ

नचाहतमूढमन, वृंदावनकोवास ॥१० ॥ जिहिंविधिवीतीवहुतगइ, रहीतनकसीआय ॥ मतकवहूसतसंगविन, अवयहआयुविहाय ११, जहांकलहतहांसुखनहीं, कलहसुखनिकोसूल॥सवैंकलहइकराजमैं, राजकलहकोमूल ॥१२॥ मेरेइहमनमूढतैं, डरतरहतहौंहाय ॥ वृंदावनकीऔरतैं, मतकवहुंफिरिजाय ॥१३॥ अधिकसयांनपव्हैंजहां, जोईवुधदुखखांन।सर्वोपरआनंदमय, प्रेमवायवौरांन॥१४॥ वृंदावनकेवासको, तिनकैंनांहिहुलास॥फूसफासतिनकीभगत. वृद्धभोगसुखआस ॥ १५ ॥ वहुतभूमिइतउतफिरयो, मायावसझकझोर ॥ अवकवव्हैंहैंसफलपग, वृंदावनकीओर ॥ १६ ॥ दिनवितीतदुखदुंदमैं, च्यारपहरउतपात॥ विपतीमरिजातेसवैं, जोहोतीनांहिंरात॥१७॥ लेतनसुखहरिभक्तिको, सकलसुखनिकोसार ॥ कहाभयोनृपहूभये, ढोहतजगबेगार ॥१८॥ रनिचौपरवाजीरची, च्यारनरानिइकसाथ॥ पासापरिकछुवसनहीं, हारजीतहरिहाथ ॥ १९ ॥ होहरिपरमप्रवनव्हैं, कहाकरतयेपेल॥पहिलैंअमृतप्यायकैं, अवक्यौंपावततेल२० वगुलासेमुहपतितपर, कृपाकरोहरिराय॥ इहंहरिनुवृंदाविपुनमैं, पासवैंठौंजाय ॥ २१ ॥ मेरीमेरीकरतक्यौं, हैंयहजिमीसराय ॥ कडेराकरिगये, कियेकईकनिआय ॥ २२ ॥ औरभवनदेखूंनअव देखूं वृंदाभौंन॥ हरिसौंसुधरीचाहिये, सवहीविगरोक्यौंन ॥ २३ ॥ द्रुमदौंलागेजातखग, आवैंजबफलहोय॥संपतकेसाथीसवैं, विपताकेनहिंकोय ॥ २४ ॥ अधिकभयेतोकहाभयो, वुद्धहीनदुखरास । साहिवढिगनरवहुतज्यौं, कीरेदीपकपास ॥२५॥ वृजमैंव्हैंव्हैंकढत दिन, कितेदयेलैखोय । अवकैंअबकैंकहतही, वहअवकैंकवहोय२६

तुमऐसीक्यौंकरतहो, हरिवरिचतुरकहाय। भलेजिमावतहोहमैं भु सअरुखीरमिलाय ॥ २७ ॥ सदाएकरसभक्तिसुख, ज्यौंबअमर बनबेल ॥ गृहकेलाभअलाभसब, जूवाकेसेखेल ॥ २८ ॥ हलतदंतहगटष्ठिघटि, सिथिलभयोतनचांम ॥ तऊबैठिसमरतनहीं कामगयेहूंराम॥२९॥ तरुनसमयहरिनहिंभजे, रह्योमगनरसवांम ॥ अबतोरेनरबैठिभजि, कामगयेतोरांम ॥ ३० ॥ पंचरतनरथबैठिकैं, करिदेख्योकिनगौंन॥ राहछांडिऊबटचलैं, सुखपावैसोकौंन॥३१॥ अगलीसमैंरुइंहिंसमैं,इतनौअंतरजांन ॥ ज्यौंलसकरतैंउठगये, पीछैरहैसैंहदान ॥ ३२ ॥ मिटेमोदमंगलमहीं, जेपहिलैंसुखखांन॥ अवजगकीपिछिलीसमैं, जैसोव्याहविहांन ॥३३ ॥ नीकोहूलागतबुरो, बिनऔसरजोहोय। प्रातभयेफीकीलगैं, ज्यूंदीपककीलोय३४॥ अमृतसरदेख्योनहीं, पारसकोनपहार॥ प्रेमछकेहरिभक्तिमैं, देखेन हींहजार३५॥मननूऊंचीठौरलगि, जहांनपहुंचैऔर।तहांबैठेनीचील सैं, सबऊंचीऊंचीठौर॥३६॥कोकाकौंदुखदेतहैं, कौनदेतसुखदान। सबजीवनिकीबुद्धिके, प्रेरकश्रीभगवांन ॥३७॥ लाजिछांडिहरिकौं भजो, दीजैमनकौंछूट। कम्माऊकीमुहममैं, जैसैंलूटालूट ॥३८॥ लाजकरीजिहिंभजनमैं, जेकोरेरहेसोय। इंहिजगदछिनीसंगमैंलूट कियैसुखहोय ॥ ३९॥ मायाप्रबलप्रवाहमैं, मनकोकछुनबसाय ॥ नदीकौसकीमांहिज्यौं, तलसिरऊपरपाय ॥४० ॥ जगतकमाऊक टकल्यौं,रांमनामभरिनाज॥लाजकियेलाजनरहैं,लाजतजैंरहैलाज ॥४१॥ सत्रुकहतसीतलबचन, मतजानौअनुकूल ॥ ज्यौंवमासबैसा खमैं, सीतरोगकोमूल॥४२॥जगकीखातरराखिसुख, भक्तिलहैनाहें

रिद्धि। सांगनिकासैंजक्तसौं, तबभक्तिसांगव्हैंसिद्धि ॥४३॥ मुनि
केंलेहुपुरांनसब,बूझलेहुसबठौर॥ जक्तरीतकछुऔरहै,भक्तिरीतकछु
और ॥ ४४ ॥ जक्ततोषतोरैंकोऊ, तबैंताहिसुखहोय॥ खालाकाडर
आसिकी,संगनानिबहैंदोय ॥ ४५ ॥ अपनौंभलोनकरिसकैं, कहामो
रकहासांझ ॥ जगकोभलोमनावतैं,बेस्यारहिगइबांझ॥४६॥ बहुतसं
तभयेआजुलौं, ऐसीसुनीनसाखि ॥ दयोभक्तिसुखखोयकैं, जगकी
खातरराखि ॥ ४७ ॥ राऊबडेबडेदेतहरि, दिनमैंलाखकरोर ॥ पैं
काहूकौंनांहिबे, खैंचतअपनीओर ॥ ४८ ॥ कृपालहरनरकूरकी,
सोइ जांनियैंहैंफ ॥ जैंसैंखावतपानमैं, तम्माखूकींकैफ ॥ ४९ ॥
जांनिकैंजांनिअजांनिव्हैं, तत्रलीजियेछांनि॥ सिष्यहौंनमैंलाभहैं गु
रूहौंनमैंहानि ॥ ५० ॥ वृंदावनजबभजतहैं, बासकरनिकैंचाय॥
वृंदावनतैंभजतअब चतुर्थआश्रमआय ॥ ५१ ॥ दामचामकी
लगनतैं, सुधिआयेनहिंस्यांम ॥ कामकलपतरुनगरवासि, भू
लेवृंदाधाम ॥ ५२॥ पतिकोदुखमैंसंगतजैं, जाकौंवहैतपतिहोय॥
जगतसुहागनिकौंहसैं, औरहिहसैंनकोय ॥ ५३ ॥ कुलपोख
मैंकरतक्यौं, अपनौंजसबेकांम ॥ विश्वंभरभगवांनको, वृ
कहतजगनाम ॥ ५४ ॥ कोकारिहैंजबकुटमके, पोखनकोउप
र ॥ कुससैंनीतबसोयहो, लंबेपांवपसार ॥ ५५ ॥ जाकोघ
तैंबडो, सबघरजिहिंआधीन ॥ सोघरपरहरिफिरतक्यौं,
व्हैंकैंदीन ॥ ५६ ॥ वृंदावनसेवतनहीं, करैंनहरिकीबात ॥ सब
दिनबोलतहैंवृथा, डोलतलोगहसात ॥ ५७ ॥ नीकोहूफीकोल
गैं, जोजाकैंनहिकाज ॥ फलआहारीजीवके, कौनकांमकोनाज

॥ ५८ ॥ फिरतरहोतीरथरहो, रहोकोउघरमांहि ॥ नानारंग केसंगमैं, चढतएकरंगनांहि ॥ ५९ ॥ नीकोऊफीकोलगैं, जो जाकैंनहिंकाज ॥ जैंसैंसकरखोरकौं, कौंनकामकोनाज ॥ ६० ॥ आवतलोटच्याभूमिपर, गयालोटिकैंभूमि ॥ झूठेफइकटबीचके, सेजबिछौनाळूंमि ॥ ६१ ॥ आपकुंडगोलकपिता, पितृपिताका नीन ॥ लखोसुनागरभक्तिजस, पांडवनित्यनवीन ॥ ६२ ॥ आ यपरेइहठोरमें, बुरेकर्मफलहेत ॥ बाहिरवृंदाविपुनसौं, जबलगि जीवतप्रेत ॥ ६३ ॥ भक्तिभोगदोउतजिफिरत, सरलव्हैंसूधीगै ल ॥ तेआयेनरजक्तमें, जैंसैंबधियाबैल ॥ ६४ ॥ जापैंजैसीवस्तु व्हैं, तैसोहीमनहोय ॥ मालाऔरगिलोलकौं, करलैंदेखोकोय ॥ ॥ ६५ ॥ मिलैंसजातीदूसरो, जबव्हैंवस्तुप्रकास ॥ कढतनांहिवि नगवनज्यौं, द्रुमफूलनिकोवास ॥ ६६ ॥ पौढेक्षीरसमुद्रमें, ए कासीभगवान ॥ गौरश्यामव्हैमिलतव्रज, वढीकथासुखधाम ॥ ॥ ६७ ॥ जामेंरससोईहरचो, यहजानतसबकोय ॥ गौरस्यामव्है रंगविध, हरयोरंगनहिहोय ॥ ६८ ॥ काठकाठसबएकसे, सब कान्हदरसात॥अनिलमिलैंतबअगरको, जबगुनजान्योजात॥ ६९ ॥ है्विनएकनकामको, यहमनलेहुबिचार ॥ तनमाटीबिनप्रानके, विनतनप्राणबयार ॥ ७० ॥ प्रेमजहांहीअधिकव्हैं, तहांजुहोत सराह ॥ ज्यौंबविरदसुनिसमरबिच, वीरनिवढतउछाह ॥ ७१ ॥ निंदकचौकसचतुरनर, नखसिखभरेसयान ॥ तिनआगैंकैसैंरहैं, प्रेमवायबौरान ॥ ७२ ॥ छिद्रनिहारताफिरतअरु, वातनगढताबि धान ॥ तिनआगैंकेसैंरहैं, प्रेमवायबौरान ॥ ७३ ॥ गुनीवैद्यज्यौं

फिरतले, कांखकोथरीगान ॥ तिनआगैंकैसैंरहैं, प्रेमवायबौरान ॥७४॥ सतरंजचौपरपोथीखोई, भगवतचर्चागप्पोंनें॥खोयारासभक्तियोंभक्तनि, हरिजसखोयेटप्पोंनें७५इति छूटकदोहासंपूर्णम् ॥

## अथ तीरथानंदग्रंथलिख्यते ॥

## सुधिकरनिचित्तमनहरनि कबित्त ॥

ज्यौंज्यौंइतदेखियतमूरखविमुखलोगत्यौंत्यौंसुखरासीव्रजवासीजियभावैंहैं ॥ खारेजलछीलरदुखारेअंधकूपचितैंकालिंदीकेकाजमहामनललचावैंहैं॥ जैसीअबबीततसुकहतनआवैंबैननागरनचैंनपरैंप्रानअकुलावैंहैं । थोहरफरासदेखिदेखिकैंबंबूरबुरेहायहरेहरेवेतमालसुधिआवैंहैं ॥ १ ॥ इति ॥

## अथ साभिलाख सवैया ॥

नांहितुलैंबैकुंठहूकोसुखवोपकोज्योकबहूसमतोलैं ॥जेउहिंठांसबआनंदमैंगिरधारीकेबांहकीछांहकलोलैं ॥ नागरटारिदियेजिनकोंअबवेभटकैंमनमारिमलोलैं ॥ देसबिदेसअभागीफिरैंबडभागीजोईव्रजभूमिमैंडोलैं ॥२॥ दोहा ॥ परसायेव्रजआदिदैं, कहूंतीरथानंद॥ जनभिलाषपूरनकरनि, पूरनश्रीव्रजचंद ॥ ३ ॥ छंदपद्धरी ॥ जबचलेसुस्थिततैंदेसआन, बिचकियेदेवजानीसिनांन ॥ हैंप्रासिधकथासंबंधकूप, पुत्रीसुसुकृतीरथसरूप ॥ जलअमलकमलपरिभ्रमतभृंग, तहांन्हातहोतनरदेवअंग ॥ फिरिचलेतहांतैंनायमाथ, परसेगोविंदगोकुलकेनाथ ॥ पुनगालिवआश्रमपरमरम्य, सोभक्तिबिमुखलोगनिअगम्य ॥ जहांभ्रमतमत्तअतिमधुपझुंड, बहितं

विधिपवनजलदिमलकुंड ॥ पर्वतसवृक्षनिर्झरनिघोष, लखिठौर होतगतगर्वमोष ॥ ऐसेस्थानमध्यगवनकीन, जहांहरियाचारजअतिप्रवीन ॥ सुभसुहृदसांतसीतलसुभाय, सुखरासलेतपदरामध्याय ॥ बसीकरानिसनमानदान, दैंकियेबिदारघुनाथध्यान ॥ सुखलूटिचलेसर्वनिसाविहाय, फिरिपहुंचेश्रीव्रजअवनिआय ॥

## अथ श्रीव्रजबर्नन ॥

छंदपद्धरी ॥ भयोपरसरेनुतनप्रेमधाम । सबसुनेसकारनग्राम नाम ॥ जलकुंडकितेद्रुमबनविशेष । दृगचाकितरहेछबिदेखिदेखि तहांकहूंकहांलगिधामऔर । फिरिरहेआयगिरिराजठौर ॥ इति ॥

## अथ गोवर्द्धनबर्नन ॥

सवैया ॥ नांहिहैंसुल्लभजीवानिकौंअतिदुल्लभदेवनिहूंकैंसमाजसो । नैंननिकौंतनकौंधनकौंमनकेपनकोसवहीफलआजसो ॥ नागरमैंदरस्योपरस्योबरस्योदिनसाततहांघनगाजसो । हाथपैलैंसुरराजसमैंव्रजराजकुमारधरयोगिरराजसो ॥ ४ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी॥पायनिप्रदछनांदइजुफेरि । विचरसिकसंगगनगुनिहिघेरि॥ कलगानकीरतनबढ्योसुरंग । बहोजांझझनकबाजतमृदंग ॥ बनग्वारगऊचलेसुनतसाथ । मधुपिवतश्रवनपुटकृष्णगाथ ॥ सबअनन्यमंडलीछकियप्रेम।चितगयेभूलितनमनकेनेम ॥ आयेचलितिंहिंठांरसिकझुंड । जहांराधाकुंडरुकृष्णाकुंड ॥ उततेंसुनिउमगेरसिकवृं

द ॥ उठिचलेसामुहैंबढिअनंद । तहांरुपेसूरसनमुखसहारि । बहिचलेपरसपरप्रेमवारि ॥ हुंकारशब्दकरिगिरिनिसंक । केउचलतधरनिधुकिभरतअंक ॥ तहांबंसिदासअरुमुरलिदास । मनुमहारथीयेप्रेमरास॥ विचस्वेतपरेमुर्छितनिदान।सोयेसरसज्ज्यागानतान॥ सुखप्रेमभक्तिकोभयोसुप्रात । सुखसौंनकछूबरन्यौंहिंजात ॥ दंपतिरससंपतबराविहार । फिरिगायचलेतनमनसहार ॥ परक्रम्मादैंफिरिसिवरआय । मधुपुरीचलेदुखबिरहछाय ॥ पुनिपुरीपुलनितटिरहेआंन । कियेप्रातसमैंजमुनासनांन ॥ विश्रांतघाटजलपरसपाय । तनपापगयेपलमैंपलाय ॥ कियेसांझसमैंनौकाविहार । विश्रांतसामुहैंमध्यधार ॥ सुखआरतिकोबरन्यौंनजात । मुखचातगसबघननहिंसमात ॥ नरनारिवृंदजहांजुरेआन । अतिभीररागगौरीसुगान ॥ कुलवधूनचतसबपगियप्रेम । गइसकुचसकुचहुंत्यागनेम ॥ सिरकेसपासजूरासुढार । तनभूषनभूषितकनकहार ॥ पहिरैंतुलसीदलपहुपमाल । झारीकरसूक्षमतिलकभाल ॥ बहौजुरीआनितजिकाजधाम । तनदिव्यवेइजग्यपत्निवाम ॥ फबिस्वेतसहजपटकीलपेट । नहिदुरतसुघटअद्भुतअंगेट ॥ इकदिसऔसीतियनिकटघाट । इकओरभक्तिपुरजनकेठाट ॥ कलगानकुलाहलकरतसंग । बाजिवहुतझांझझालरमृदंग ॥ जुपिफिरतआरतीसमैंमिष्ठ ॥ जयशब्दहोतअरुपहुपवृष्ठ ॥ इति ॥ अथदोहा ॥ इंहिंविधिजमुनापूजिकैं,धूपदीपधरिभोग ॥जमुनागुनगावतगये,जमुनातटकेलोग ५ इति॥ अथसवैया ॥ ह्नायताकीनहिंजायकहीजमुनाकहितैंजमुनादिगआवैं। स्यामाओस्यामकरैंजलकेलिहिंकूलविलासनिरैंनविहावैं ॥

नागरस्यामबसैंहियताकरिस्यामप्रत्यक्षप्रवाहबहावैं ॥ दैंअनपाय निस्यामकीभक्तिहिस्यामनदीघनस्यामांमिलावैं ॥६ ॥इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ मातातपस्वनीतहांजुएक । नरद्वारदरसआसाअनेक ॥ जिंहिंमिश्रिततपस्स्याभक्तिरंग । पयपानकरतअतिछीनअंग॥ करिदंडवत्तुकरुनाकराय । पुनचलेहैंबृंदाविपुनधाय ॥

## अथ श्रीबृंदाबनानंद छंद पद्धरी ॥

एकत्रतहांसबसाधमित्र । त्रयलोककरनिएककपवित्र ॥ इति॥ ॥ अथ दोहा ॥ सुनिब्यौहारकनाममो,ठाढेदूरउदास ॥ दौरिमिलेभरिनैंनसुनि,नामनागरीदास ॥ ७ ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ इकमिलतभुजानिभरिदौरिदौरि।इकटेरिबुलावतऔरऔर ॥ केउ चलैंजातसहजैंसुभाय । पदगायउठतभोगहिसुनाय ॥ जेपरेधूरिमध्यमत्तचित्त । तेउदौरिमिलततजिरीतनित्त ॥ अतिसैविरक्ततिनके सुभाव । जेगनतनराजारंकराव ॥ वेसिमटसिमटसबआयआय । फिरिछांडतपदपढवायग्वाय ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ बनिविहार निरससनी, निकटविहारीलाल । पानकियोइनदृगनितैं, अनुपमरूपरसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ तहांपद ॥ गाएऔसरसंजोग । बिचरसिकबिहारीहीकोभोग ॥ जब गोधूलकभयोसमयआन । सबचलेपुलिनमिलिमिलिसुजांन॥भइस मैंसौंहनीमिटचोधूप । जहांमिलीज्ञानगुदरीअनूप ॥ लैंखरीमलिनियांपहुपहार । बजिरहेजहांमहुचंगतार ॥ सबकुंडलाकारबैठे सुभाय । रहिमहापरमछबिपुलनिपाय ॥ रचिरसिकरतनमाला संवार । मनुसांझपुलनिकीनौसिंगार ॥ दंपतिबिहारगुनिगानहौंन ।

सुनिमुक्तविचारिगनैंकौंन ॥ पदगानसुनतमिलिरसिकभीर । झूकिझूमिरहेदृगपुलकनीर ॥ भइरैंनबहुतचितपगेसुप्रीति । जोनित्तसमैंसोगइयबीत ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेउहांतैंनीठउठि, अतिअभागकैंजोर ॥ सोदुखबरन्यौंजायक्यौं, समैंभयोअतिघोर॥ ॥ ९ ॥ सहिगईदुर्मतिदुखअसहि,बहिगईबुरींबयार॥ रहिगइव्रजऔसेराहिय उतरेजमुनापार ॥ १० ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ बृंदाबनसुधिकरतबात । अतिबिरहदुखितचितचलेजात ॥ पुनिकालिंदीकेकरिसनांन । फिरिरहेआयसोरूनिदांन ॥ तहांश्रीगंगाकोपरसनीर । गएपापभयेनिर्मलसरीर ॥ तहांकियोएकअनुचरअधर्म । तटिहत्योअज्यासुतपापकर्म ॥ कछुक्रोधकियोगंगाकृपाल । दइआयअचानकजलउथाल ॥ भुवफाटगिरतअररातजोर । अतिभयोभयंकरसमयसोर ॥ भजिपटकिपटकिडेरानिकार । भयभीतसकलकौतिकनिहार ॥ जबकरीसुस्तुतिसिरनायपाव । करिछिमांकियोसीतलसुभाव ॥ पुनिदुतियदिवसकियोदीपदांन । मनुकनकमईभयोतटसुथांन ॥ तटउतरिउतरिनभतैंसुहांति । बैठेनक्षत्रजनुपांतिपांति ॥ जबश्रीगंगाछबिदेततीर । जिमकनककिनारीसहितचीर ॥ बिचबहैंदीपधाराउजास । सुरसुरीरतनअभरनिप्रकास ॥ इंहिंभांतिनिरपिसुपरैंनतीर । दिनह्नायकियेपावनसरीर ॥ सिरनाथकह्योफिरिजोरिहाथ । यहदेहुगंगमोहिकरिसनाथ ॥ ११ ॥ इति ॥

## अथ कामना सवैया ॥

॥ ब्रह्मकमंडलीब्रह्मसरूपकहांलौंकहौंगुनकेगनभारे । ल्याये

भगीरथजूतुमकौंतबतैंतुमजीवअनेकउधारे ॥ नागरकीकितीबात कृपालकरूंबिनतीपरुंपायतिहारे । जेरहेआडेन्हैंकैंव्रजवासके गंगातेकाटियेपापहमारे ॥ ११ ॥ पुनःसवैया ॥ जननीउरहिंपुत्र पुनीतकीहोरनसोयेलगैंवहोतीरथकों ॥ भुवमांझलैंआयेभगीरथ जूताकेदीजैंबडाइकितीरथकौं ॥सबनागरपैंकरियेजुकृपामैंकहूंतुम आदिकतीरथकौं ॥ तुलसीवनछांडिभ्रमौंनांकितैंअबहौंजमुनाजल तीरथकौं ॥ १२ ॥ इति ॥

## अथ कपिलाश्रम आगमनि छंद पद्धरी ॥

फिरिजायरहेकपिलासुग्राम । तहांरामेश्वरासिवसिद्धधाम॥जगप्र गटितपस्थलकापिलदेव । तहांसदाअमरनरकरतसेव ॥ द्रुमकुं जकुंडजलह्नानकीन। तहांएकतपस्वीदेहछीन॥ मनुकरततपस्या हौंनसत्र । आकासदृष्टिभइग्रीवबक्र॥ करमुरेदोउबिचउरनिआन। मुखमौंननित्तपयकरतपान ॥ तपकरतकष्टसंन्यासरूप । बिनभ क्तिवृथान्हैंजक्तभूप ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेउहांहूंतैंपरैं,करि पवित्रनिजअंग ॥ नवकावलिपुलबांधिमिलि, गयेउतरिकैंगंग ॥ ॥१३॥इति॥ अथ छंद पद्धरी॥ इकनदीरामगंगासुऔर।तहांसिंघव्या घ्रअतिविषमठौर॥पुनिचलेतहांहूतैंजुह्नाय । धवलागिरिपहुंचेनिकट आय॥जहांअगमविषमदुर्गमपहार।तहांहोतनहींपंछीसंचार ॥ ढिगन दीकौसिकीकियोसिह्नांन।तीरथपुनीतबरनतपुरांन ॥ रहेबहोतदिवस कौसकिकितीर।करिचलेतहांतेसंघिबीर ॥आयेकितकादिवसमैंगंगकू ल।व्रजवासआसहियबढियफूल॥ ह्यांआयगईहोरीकुठौर । जियप

रोवुरीअतिबिरहरौर ॥ जबगयेगंगतहांपुलनिठाम । रचिबरसानौं जहांनंदग्रांम ॥ परचोखेलिगईउडिरैंनिपूर । ब्रजविनांपेलिसव मांझिधूर ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ ऐसैंहोरीपेलिकैं, सनमुख जोरेपांन ॥ बहुरिफागब्रजमैंकरूं, देहुगंगयहदांन ॥ १४ ॥ इति ॥ छंद पद्धरी ॥ वरमांगेमांगिफिरिकियोगौंन । व्रजबिरहहियैंमुपलि यैंमौंन ॥ पुनदरसकियोजमुनाकोंआय । निसतीरतीररहेसिवरछाय ॥ देष्योश्रीबृंदाबिपुनपार । बिचबहतमहागंभीरधार ॥ नहिंनाव नहींकछुऔरदाव । हेदईकहाकोजेउपाव ॥ रहैंवारलगनकौलगैं लाज । गयेपारहिंपूरैंसकलकाज ॥ इति ॥ दोहा ॥ प्रेमपंथकौंपी ठदैं, यहजीवोनसुहाय ॥ मंगलदिनहैंआजुको, प्रियसनमुषजिय जाय ॥ १५ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी ॥ यहचित्तमांझिकरिकैंबिचार । परेकूदकूदजलमध्यधार ॥ चलेपैरपैरतररायधाय । तहांभईलगन सबबिधिसहाय ॥ तरिगयेतरनिजादयोपार । गहिहाथलियेब्रजना थवार ॥ इति ॥ दोहा ॥ वाररहेरहेवारते, पारगयेभयेपार ॥ दरसे बृंदाविपिनबिच, राधानंदकुमार ॥ १६ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी ॥ गलिनिगलिनिसुखफिरिफिरिजुलेत । ज्यौंनलिनिनलिनिअलिगन मेत ॥ जहांकथाकीर्तनरूपरास । लैंछकेप्रेममकरंदबास ॥ सुखभयोहइांसोकह्योनजात । मुखचातकसबघनकहांसमात ॥ फिरिबहेनीचराजसप्रवाह । गयेइंद्रप्रस्थहियबिरहदाह ॥ दिल्ली दिवारकहकाहधाम । लियोफेरतहांतेमोहिस्याम ॥ तजिदयोतहां सबप्रवृत्तिसंग । भोव्रजसनमुषफीरिबढ्योसुरंग ॥ जबकह्योसुता लडकायभाय । लयोमोहिबोलवृषभानराय ॥ तबचलेचरनवरसाने

ओर । कियेपैंडपैंडतीरथकरोर ॥ लखेधवलमहलपर्वतउतंग। फहरातधुजाकलसनिसुरंग ॥ तहांबनपर्वतछबिरहियछाय । द्रुमबेलिसघनलपटीसुभाय ॥ वसबासकुसुमअलिकरतरौर । सरभरेबिमलजलठौरठौर ॥ रसपगेलोगनांतोसुमांन । तहांकुंवरिललीकीफिरतआन ॥ इति ॥ अथदोहा ॥ ऐसोबरसांनौंनिरपि, गहबरआयोप्रेम ॥ करतदंडवतलुटतरज, छुटिगयेराजसनेंम ॥ १७ ॥ इति ॥ अथ छंदपद्धरी॥वृषभानरायदरबारजाय।श्रीकीरतजुतदोउदरसपाय ॥ फिरिलैप्रसादगयोकुंवरिपास । जहांदंपतसुखसंपतनिवास ॥ करिकृपालदैतीभरिउसास । मुंहिनिजबरसानैंदयोसुबास ॥ इति ॥

## अथ आषाढमासबर्ननं ॥

छंदपद्धरी ॥ आसाढमासब्रजहरितभूम । नभबरसतबदराझूमझूम ॥ जितातितसुनियतहैधुनिमलार । गावतब्रजबासीनितविहार ॥ इति ॥ अथदोहा ॥सांवनमनभांवनसबनि, आयगयोसुभमास॥ निरषनिदंपतिझूलिबो, बाढ्योहियेहुलास ॥ १८ ॥ इति ॥

## अथ सावनमासबर्ननं ॥

प्रथम तीजोत्सवलिख्यते ॥ छंद पद्धरी ॥ सबबरसानैंसुषरह्योसुछाय । तिथप्रगटीसावनतीजआय ॥ ब्रजनरनारीमिलिठांहिठांहिं । सबचलेराजमंदरहिजांहि ॥ उततेंश्रीलाडिलीछबिनिदांनि। बैठीबाहिरछत्रीसुआंनि॥बाजिप्रणवबीनझालरियसंग। सहनायभेरगोमुखमृदंग ॥ तहांनचतगुनीगनभरेसुमोद । उचरतमलारझूलनिबिनोद ॥ तबतिनांहिंमिलेबौहपटप्रसाद । मननैंनश्रवनलह्योप

रमस्वाद ॥इति॥ अथ दोहा ॥नागरीदासहिंडोरनैं, सोभाछविअव
रेखि॥ प्रेमझुलनिझूल्योकरै, दंपतिझूलनिदेखि॥१९॥इतिद्वितीय॥

## अथ श्रीबलदेवजनमोत्सव लिख्यते ॥

छंदपद्धरी॥सुभसांवनपंचमिसुकलपष्प। मिलिमिलिव्रजवासी
चलेलष्ष ॥ जहांगयेगांमऊंचैंसुठाम । तहांजनमघ्घौसअभिराम
राम ॥ प्राचीदिसरोहनिउदितचंद । धुनिगानबधाईअतिअमंद ॥
मचिखेलिबह्योदधहरदछीर । व्हैरहींभवननरनारिभीर ॥ बिचइ
कढाढीअनुकरनबानि । सोपढतभयोबिचवंसआनि ॥ उनपायो
बहुसनमानदान । पुनिकियोबिदादैंतिलकपान ॥ बलदेवजनमउ
त्सवअपार । बाजतनिसानसहनायद्वार ॥ मंदिरसुखसुंदररह्योसु
छाय। कविपैंसबबरन्यौंनाहिनजाय॥पुनमनदैंसुखलैलैप्रसाद। सब
चढेकरतसुधिसमयस्वाद ॥ इति ॥

## अथ तृतीय सलौंनौं उत्सव लिख्यते ॥

जबभईसलौंनौंतिथसलौंन । कियोप्रेमसरोवरसबनिगौंन ॥
जलअमलकमलपरअतिअलिंद । नवकुंजपुंजबहैंमरुतमंद ॥ ति
हिंठामसबैंसरवरकैंतीर । इकओरभईव्रजजुवतिभीर ॥ दंपतजब
बैठेकुंजआंनि । रक्षाबंधनभइदुहुनिपांनि ॥ फिरिचढेलालितझूलैंक
दंब । झुकिझुकितमालरहेनिबअंब ॥ छबिदेतमुकटद्रुमलतनिमां
झ । झूलतापियप्यारीसमयसांझ ॥ पुनउतरररच्योमंडलपैंरास ।
व्रजप्रेमसरोवरसुखनिवास ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ सांवनगतभा

दौलग्यो । आंवनव्रजसुखसार ॥ जनमोत्सवआगमबढ्यो । घरघरमंगलचार ॥ २० ॥

## अथ भादौंमासश्रीकृष्णजन्मोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ बढिनंदग्रामसोभाअभंग । चढिधुजापताका पीतरंग ॥ गोपुरनिवासनौबतनिनाद । सहनायरागरह्योपूरस्वाद ॥ नरआवतगावतनचतनार । भइसिंहपौरिगहमहअपार ॥ कहुंकहामहामंगलअनूप । व्रजरसिकानिहियवहिवसतरूप ॥ गुनतहां गुनीप्रगटतसुभाय । कलगानवधाईरहिसुछाय ॥ बनिढाढीबोलत बंसगोप । अतिनंदभवनआनंदओप ॥ इंहिंभांतिअहर्निसगईविहाय । दधकादौंनौमीमचीआय ॥ अतिसमैंमनोहरभयोसुभोर । बिचनंदसदनआनंदसोर ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ कृष्णजनमको सुखभयो । नंदगामनिसप्रात ॥ विधिहूंतैंजातनकह्यो । मेरीकितियकबात ॥ २१ ॥ इति ॥

## अथ श्रीललिताजन्मोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ पुनिसबललिताकोजनमजानि । मिलिग्रामकरहरैंरहेआनि ॥ जहांगानवधाईश्रवनचैन । अरुभयोरासजागर्नरैंन ॥ झूलेफीरिदंपतिहोतभोर । पुनिबहुरिउतरिबैठेंकिसोर ॥ तहां करीभरीहितव्याहरीत । लइभांवरसांवरगउरमीत ॥ तबकीसोभा सुखकहैंजुकौन । बरषैंजलनैंनानिमुखहिमौन ॥ यहकारिलीला सिररासिकमौर । फिरिगयेकदमषंडीसुठौर ॥ ऐसीनठौरकोउऔर रम्य । विनकुंवरिकृपासबकौंअगम्य ॥ तहांभइंदुहुनिमैंदानकेलि ।

भरिप्रेमरहेसबसुखहिंझेलि ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ रासहिंडोरोव्याहविधि । दानकेलिअभिराम ॥ सोसबकबिनाहिंकाहिसकैं । भईकरहरैंग्राम ॥ २२ ॥

## अथ श्रीराधाजनमोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ निससप्तमिहींबरसानैंजाय । तहांसुखढाढीदेख्योसुआय ॥ वृषभानुरायकोपढतबंस। जोब्रह्मादिककृतमुखप्रसंस॥जहांबरीसानपर्वतनिवास। तहांधवलनवलउज्जलअवास॥ फहरातधुजाकलसनिउतंग ॥ ठहरातनहींलगिपवनसंग । घहरातहैंतापरघटाआंनि । लहरातइतैंबाजतनिसांनि ॥ जबभयोअष्टमीद्योसप्रात । श्रीराधाजनमउछाहगात ॥ अतिमंगलधुनिपुरगइयपूर । बजिउठेभेरसहनायतूर ॥ झंझनतझांझनौबतनिघोष। प्रतिसब्दगयोपुरजहांमोष ॥ सबगावतनाचतभरेहैंरंग । आवतअपअपनीचावसंग ॥ इकउतरतअरुइकचढतप्रात । गिरिगैलभीरनिकस्योनजात ॥ दधकादौंमांचीबढ्योसुपेलि । बहचलीजहांतहांधरनिरेलि ॥ सबहरददहीभीजेलसंत । जनुफूल्योभादौंमैंबसंत ॥ लयोदृगनिश्रवनसुखसबनिभोग । गावतखेलतमिलिचलेहैंलोग ॥ उतरैंगिरतैंछबिदेतझुंड । सबगयेह्नानवृषभानकुंड ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ इहिंविधिराधाअष्टमी, जिहिंलीनौंसुषसार ॥ ताहिनकछुकरिबोरह्योयहजानौंनिरधार ॥ २३ ॥ इति ॥ अथ छंदपद्धरी ॥ नौमीजुप्रातरविकैंप्रकास । गिरिगढबिलासजहांदेषिरास ॥ पुनिमोरकुटीघनस्यामजात । संगदामिनिभामिनिछबिसुहात ॥ अति

देतरूपसुषबरसबारि। नरएकओरइकओरनारि॥व्रजचंदटदैंगिरिसिषरओर।इतव्रजबासीइकटकचकोर॥ फिरिफैंकतलडुवाहरिसुजान। मनुदेतकृपाफलभक्तदान॥पुनियहांगानवहांमानलेत।आवतसुगंधहस्तकसमेत॥ अथ दोहा॥इंहिंठांजोकछुसुषभयो,मौपैंकह्योनजाय॥ रसनांकैंतोदृगनहीं, दृगबिनरसनांहाय॥२६॥इति अथ छंदपद्धरी॥ दसमीसबकोकिलवनहिंजांहिं। लषिरासहिंजावकबटहिंछांहिं॥सुपदेषितहांआवैंअटोर। तहांसिलाफिसलनींचढेभोर॥पदव्याहसमैंकेजहांसुहोत॥ बहरसिकनिदृगआनंदसोत। पुनिनिसबारसगढमानरास। रहैंदंपतिकरिगिरिसिषरबास॥ तिहिंभोरउतरिगिरितेकिसोर। करिदानकेलिसांकरिहिषोर॥ हसिचहनिझुकनिझ्झकनिसुहात। तहांबचनरचनबरनेनजात॥ इकग्वालगह्योगुनसैनसांधि। द्रुमडारातियनिदइचुटियाबांधि॥ व्हैंआतुरटेरचोतबहिग्वाल। सुनिअहोकहूंहैनंदलाल॥ तूकोहैंहेलाकौंनठौर। यौंकहतस्यामसिररसिकमौर॥ तबकहतग्वारभइयाछुटाय। मोबांध्योबरसांनेंकिआय॥ कहिकहाचलीतेरीरेमित्त। इनतोरेबांध्योहौंहुंनित्त॥ इति॥ अथ दोहा॥ वचनस्यामकेसुनतए, सबहिनिबाढ्योरंग॥ गिरेकईकइसुनिरहे, प्रेमपुलकिकैंअंग॥ २५॥ पुन दोहा॥ बरषागतआगमसरद, अमलअंबुआकास। बनद्रुमपातनिधूरिधुपि, छबिबाढीसुपरास॥ २६॥ पुन दोहा॥ बरसमेघअवपेककरि, वेदमंत्रधुनिगाज। वृंदावनकौंदैंगये, सुंदरताकोराज॥ २७॥ इति॥

## अथ सांझी उत्सव लिष्यते ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ शुभपष्पस्यामसांझीविलास । सुखसोनकरतरसनाप्रकास ॥ दंपतिछबिअरुझीहीयमांझ । वहिफूलनिवीननिसमयसांझ ॥ इंहिंसांझीकीसबकहतबात । बढिजायग्रंथसबकहांसमात ॥ पुनराकाआईउहिंसुथांन । जाकौंबरनतबिचवौहपुरांन ॥ वहवृंदावनवहसरदरैंन । तहांलीनौंमनलोचननिचैंन ॥ भयेठौरठौंरमंडलनिरास । व्हैरह्योबिमलनभससिप्रकास ॥ धुनिछायगईपदरासगान । वृंदाबनतनरह्योसुरबितान ॥ छतकुंजकुंजचढिरासिकभूप । जहांपधरायेसेवासरूप ॥ छबिबनीरुपहरीबाढियऔर । दंपतिसुखसंपतिठौरठौर ॥ तहांमनलोचनलयेरूपकौर । कहांकहांसुखलीजैंदौरदौर ॥ इति ॥ दोहा ॥ वृंदावनजोसरदसुष, निरष्योराकारैंन ॥ बडेभाग्यदेषैंबनैं, बरनतबनैंनबैंन ॥ २८ ॥ इति ॥

## अथ कार्तिकमास प्रथम श्रीराधाकुंडस्नान जात्रा लिष्यते ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ जबलग्योमासकातिकजुआय । मनबढ्योसबनिचौगुनौंसुचाय ॥ भइकृष्णपक्षसप्तमियरैंन । राधाकुंडआएसबसुषैंन ॥ दुहुंकुंडतीरदुतिदीपजाल । जगमगतमनहुमनिपांतमाल ॥ चहुंओरभीरधुनिहोतनाम । आनंदकुलाहलठामठाम ॥ बिचतिरतबहोतदीपकबिचित्र । मनुह्लातनछत्रहोतहैंपवित्र ॥ जबभयोअर्द्धनिसिससिउद्योत । नरनारिह्लातजलशब्दहोत ॥ ससिचढ्योगइनिसभयोसुप्रात । कछुकहिनपरतसुपसमयबात ॥ इति ॥

॥ अथ दोहा ॥ गउरस्यामकेनामपैं, गउरस्यामकेधाम । चस्मां देपनिरूपके, दोउकुंडअभिराम ॥ २९ ॥ च्यारजामबितईनिसा, बंसीदासनिकेत ॥ रुपेरासिकरसकीरतन, भयोप्रेमकोषेत ॥ ३० ॥ इहांभयोसुषसोकह्यो, आवतनांहिप्रमान ॥ चरचादंपतिप्रेमकी, कबितागानबिधान ॥३१॥ चलेप्रातसबहीजहां, गोवर्द्धनगिरिराज॥ उच्छवमनउच्छवकरनि, दीपमालिकाकाज ॥ ३२ ॥ इति ॥

## अथ श्रीगोवर्द्धन बर्नंन ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ सबउमगिचलेब्रजजहांजुसैल। चहुंओरधुंधरितभइयगैल ॥ आवतप्रवाहसलितानिरीत । गिरपरसपरसहोवनपुनीत ॥ तनिगएस्वेतचहुंधांबितांन । तिनमांझहोतागिरधरनिगांन ॥ ब्रजकटकसोरमंदोरधूम । छबिछायरहीसबसिवरभूम॥ दीपकप्रकासभयेकूहुसुरैन । उडिअंधकारचढिगयोहैंगैन॥रह्योदीपनिह्वजगमगपहार। जनुंकीनौंगिरिरतननिसिंगार॥ गिरद्रुमनिदिपनिकीचमकिहोत। मनुप्रेमसजीवनिजरीसुजोत॥दुतिदीपमांनसीगंगकूलमनुपारजातमालासुफूल॥कईकुंडमांझधसिकैंजुह्नात। कइकरतप्रदछिनांगातजात॥ कइरासदेषिदेषतसुजांन।करिदयोसुषहिसुषमैंबिहांन॥ अथ दोहा ॥ दीवारीकीरातयौं, बितईगिरकेमूल॥वहुरिप्रातअनकूटकी। हियमैंबाढीफूल ॥ ३३ ॥ अथ छंदपद्धरी ॥ गोस्वामिऔरदुजबरअनंत। ब्रजलोगवहुतसंतरुमहंत ॥ एपूजतगिरिगइयांखिलात । अनकूटलुटतभीरनसमात ॥ नरनारिप्रदछनाकरतपाय । मिलिरहेकुंडलाकारआय॥ तिहिंसमैंकह्योनहिंपरतरूप । ज

नुपहरीगिरमालाअनूप ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेसबैंगिरराजतैं। गोपअष्टमीकाज॥नंदग्रामआयेसकल। भेटेश्रीब्रजराज॥२४॥इति ॥

## अथ श्रीगोपाष्टमी उत्सव लिख्यते ॥

छंदपद्धरी ॥ कीनेसिंगारबलदेवस्याम। दोउकुंवरनिहारेअति भिराम ॥ तवनंदभवनतैंकढेलाल। सबदेखछकेनरबृंदबाल ॥ लखिवदनसबनिभूलीनिमेष। लियैंलकुटमुकुटनटवरसुबेष ॥ चलिगानकरतब्रजबधुनिसंग। लियैंवदनअधघूंघटसुरंग ॥ बडडेजुगोपचहुंधांसुहात। अतिभीरगलिनिनिकस्योनजात ॥ दधिलूटछाकमगमैंअपार। ब्रजनारिखरीसबद्दारद्दार ॥ नंदीश्वरओप्योअतिउछाह। उररातसकलब्रजबढियचाह ॥ चलिआयेजसुदाकुंडकूल। हियबढीदुहुनिबनदेखिफूल ॥ तहांकरिकैंठाढेदोउभ्रात। तबकहनिलगीब्रजबधुनिबात ॥ तुमसुनिहुगोपवडबंसनाम। येहैंबालकबलिरामस्याम ॥ बनव्याघ्रसिंहहैंजंतुऔर। कहुंदूरनजइयोविषमठौर ॥ एपितामातकेनैंनप्रांन। याब्रजकीजीवनिसुखनिदांन ॥ हौंकहौंकहांलौंकछुबढाय। एदयेतिहारीगोदमाय ॥ सुनिसुनिनातेंकेमधुरबैंन। सबलोगपुलकिरहेनीरनैंन ॥ पुनिचलेतहांतेगांनहोत। दिनप्रथमगऊचारनउदोत ॥ चलिरहेकदंबखंडीनिहारि। तहांकियोछाकलीलाविहार ॥ फबिरहीकुंडलाकारभीर। बिचकुंवरगउरसांवलसरीर ॥ फिरनंदीश्वरकौंचलतलाल। बाजतमृदंगअरुमृंगताल ॥ बिचबिचबंसीधुनिहोतजात। गोआगमगौरीरागगात ॥ आगैंअतिसोहतगउनिठाट। रहैंठटिकठटिकपुनिचलतबाट ॥

तियमुकटझलकलखिरैंनमांझ। अंगुरीनिबतावतसमयसांझ॥ सबमं दिरचढिचाढिकैंअगारि। नंदीसुरेकोराहिनिरखिनारि॥ पुनसनमुख आईभरिसुप्रीत। बिचगलिनिगलिनिगावतिसुगीत॥ सिरमंगलक लसनिधरतबाल। रुकिगईडगरजुवतिनिकेजाल॥ चलिनिजमंद रगयेदोउबीर। तबभईआरतीसमयभीर॥ इति॥ अथ दोहा॥ च लतवारतीपैंउतैं। कमलनयनकीसैंन॥ रहेकरतछकिआरती। रू पआरतीनैंन॥ ३५॥ इंहिंबिधिकरिगोपाष्टमी। नंदगोपकेग्राम॥ लीलासुमरतसबचले। अपनैंअपनैंधाम॥ ३६॥ सतसंगतसुख रूपसुख। बितयोमगसरमास॥ ब्रजबासीसुखनिधिसबैं। ब्रजसु खसदानिवास॥ ३७॥ दोहा॥ भयोपोसमैंजोकहा। कह्योसोसमैं जाय॥ कमलनयनसुखहोतसुधि। हियैंसुधिनठहरात॥ ३८॥ नामनलीनौंजातहैं। औचककबन्योसंजोग॥ कोंजियजानैंआपनौं। कैबरसानैंकेलोग॥ ३९॥ दंपतिकेलिसमंधसुख। नीकैंबितयोमा ह॥ परममुदितआगमहियैं। नवलबसंतउछाह॥ ४०॥ कुंवरिला डलीनिकटतहां, मोहनलाललसंत॥ बरसानैंअतिसुखबढ्यो, जादि नभयोवसंत॥ ४१॥ कवित्त॥ फूलेद्रुमबल्लीबनझूलेअलिगंधबौ लैंमदनसदनमानौंमंगलबधावनौं। जहांतहांआवतधुनिगांनहिंडोर तैसोकोकिलांनिकोयलकोसोरमनभावनौं॥ उमहींसकलबालआ ईवृषभानजूकेंकिसलैकलससंगसोहैंमहरांवनौं। हियेंहुलसंतविकसं तकंजतियमुखनागरबसंतबरसानेमैंसुहावनौं॥४२॥इति॥अथदोहा॥ माघमासराकाभई, प्रगटचोपूरनचंद॥ होरीडांडोरुपतहीं, बाढ्यो ब्रजआनंद॥४३॥ इति॥ कवित्त॥ लागहींवसंतैंसरसआसजुवतिं

निकौंफागरसलागभरयोवहीदिनआजहैं । उमगेसकलव्रजवासी सुखरासीमहाफिरतसुहाईयैंदुहाईरतिराजहैं ॥ होरीडांडोरोपतहीदुंदुभिस्हनायभेरनागरसमूहडफउठेवाजवाजहैं । हलचलपरीहैंधूमधीरजढहनलागेदहलानेमानगढहहलानीलाजहैं ४४॥ इति॥ अथछंदपद्धरी॥ जितितिडफसुनियतविनप्रमान।मनुमदनसदनवाजतनिसांन॥ जगिउठीलगनाचितचौंकिचाह । व्रजबाढयोघरघरअतिउछाह॥ इतबरसांनौउतनंदगांव।त्रयलोकप्रगटहैंदोउनांव॥एचाहताहितमनुहारजीत । अतिउरझेनातैंप्रीतरीत॥नरनारिरंगीलेदुहूंओर । बढिफागुउदधिआनंदहिलोर॥उतनंदीसुरतैंहितअवेस । कहिपठयोबरसानैंसंदेस॥हमआवतहोरिखेलिकाज । यहकहियोजहांवृषभानराज॥सुनिबढयोसबनिआनंदअपार । चढिचढिअगारगावतधमार ॥ नरनारखेलसजिसौंजसांनि । रहेरोकिरोकिकैंगैलआंनि ॥उततैंसबआयोनंदग्राम । बिचलियेमनोहरकुंवरस्याम॥दुहुंओरउठेबाजत्रबाजि । कलकूटनिपठगइलाजभाजि॥अतिउडिगुलालचालिरंगधारि । सबगायउठीव्रजनारिगारि ॥ उतगोपबतावतनिलजभाव।इतवहतलकुटचटचोटचाव ॥ कइलगतकईछलबलबचात ।कबिकरतफुरतफिरिकूदिजात॥घूंघटझुकिझूमकदेतनारि । रहेप्रेमपुलकिभावकनिहार॥ आतिगलिनिमांहिबढिपरयोरंग । फिरचढेसबैंमंदिरउतंग ॥ ढिगकुंवरिललीकैंभइयभीर। छाईगुलालधुंधरिअबीर ॥ छबिमुकटझलकराजतरसाल । बिचनंदगांवकेजेगुपाल ॥ व्रजबासिनिलीनौघेरिताहि ॥ पटझटकतकटिगाहिचाहिचाहि । कइनिकटआयदेगारिबोल ॥ कइआंजतअंजनदृगसलोल । कइगुदगुदायगुलचातगाल॥

मनुललितललतालपटीतमाल॥ सबसमधांनैंकीनवलनारि। बिफरी गावतजसुदाकौंगारि॥ बरसांनैंअतिसुपरह्योसुछाय। बढिपरचोरंग बरन्यौंनजाय॥ दैंकियेबिदावृषभानपान। तबचलेनंदगृहसबसु जान॥ इति॥ अथ दोहा॥ नंदग्रामकेलोगसब, इंहिंबिधिहो रीषेलि।नंदीसुरकौंफिरिचले, सबसुषसागरझेलि॥४५॥ सजीसौंज जेवसतहे,बरसांनैंकैंबास॥नंदग्रामकेषेलिकौं,सबकैंवढचोहुलास४६

## अथ नंदग्रामकीहोरी बर्नन लिख्यते

जबभयेलोगएकत्रआय। मिलिचलेदुंदुभीडफबजाय॥ सब लियेंषेलिकोंसौंजसंग। जेब्रजबासीरंगिरहेरंग॥ लटपटीसीस पगियांसुहांति। करलियेंमोरछलनचतजांति॥ तनपीरेपटफैंटनि अबीर। व्हैरहीरंगीलीडगरभीर॥ उतनंदग्रांमनरनारिठाट। इनकीसबजोवतपरेबाट॥ इतकीजबआवतदेखिभीर। वेआये सौंहैंचालिसधीर॥ जहांसुभगभूमिजसुदासुकुंड। हैंजुरेसनम्मुख दोउझुंड॥ किलकारिकारिमिलेदौरिदौरि।उड़िउडिगुलालमचिपरी रौरि॥ सिरनायेघटभरिभरिसुरंग। सबझोरबोरभयेअंगअंग॥ न हिंआपआपपहिचांनेंजात। गिरउठतएकलपटातगात॥ वेलष्ट पुष्टगनगोपपीन। एफागकेलिमैंसबप्रबीन॥ कछुकहिनपरतबढि परचोसुषेलि। बहिचलीधरनिपररंगरेलि॥ बनलालभयोफागुन बिहार। छुटिचलेसवैंमिलिनंदद्वार॥ बिचगांवअटारिनिचढिय बाल। भरिरंगकलसढारतगुलाल॥ दररातनीरभररातभीर। गावतगारीदैंओटचीर॥ उडिउडिगुलालमनुभइयसांझ। व्हैंरह्यो

कुलाहलगलिनिमांझ ॥ रसफागमहासुपासिंधुझेलि । यौंमदरप हुंचेषेलिपेलि । श्रीनंदजसोदाकुंवरदेखि ॥ लागीनतनकनैंननिनि मेष । करिउततेउममनुहारचार ॥ औसरबिचारगाईधमार ॥

## बरसांनेंकी गोपी फगुवा मांगन आई ॥

॥ अथ छंदपद्धरी ॥ वेजथासमैंगावतधमारि । वाजत मृदंगडफझांझतार ॥ रसमगनकहीकछुसुनैंकौंन । अतिगाजिरह्यो सबनंदभौंन ॥ इकसमधानौंअरूफागमास । अतिहोतपरसपर बचनहास ॥ केउछिरकतकेसरनीरआय । केउमुखरोरीलप टातजाय ॥ उडतहैंअबीरझोरनिगुलाल । बिचमंदरआंगनम च्योसुख्याल ॥ तहांबहुव्रजबासनिआयआय । वृषभानहिंगा रीदेतगाय ॥ व्हैंरह्योकतूहलनंदधाम । मुसिक्यातषरेवलराम स्याम ॥ व्रजथकितभयोकौतुकलुभाय । नंदीसुरअतिसुपरह्यो हैछाय ॥ रंगिरहीछवीलीभवनभूमि । व्रजबासनिझूमकदेतझू मि ॥ अथ दोहा ॥ इतठाढेवरसांनियां, समधीलोगनिहारि ॥ धाईएककहिबेरजुरि, नंदगांवकीनारि ॥ ४७ ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ कहिहोहोहोपिलिपरियवाल । कहांरुकैंप्रेमसलिताउथाल ॥ घिरि गईचहूंघांआयआय । तवगयेकईछलकरिपलाय ॥ उनवरसांनैं कोमोहिमांनि । सबभीरचूरिहौंगह्योजुआंनि ॥ कटिफैंटपकरिझ टकतहैंएक । हौंइकवेंव्रजदेवीअनेक ॥ व्हैंगईबहुतपैंचासुपांच । डगमगतपगनिबलमिटयोसांच ॥ इकवरसांनैंकेकोउआंनि । पट गांठिजोरिदइतांनितांनि ॥ इतउठेब्याहकेगीतगाइ । दोउओर

हासिरसरह्योछाइ ॥ मोमुपअनीरातियमांजिमांजि ॥ नैननिमैंअंजनदयोसुआंजि ॥ दोहा ॥ सांठिलगैंव्रजसौंजबैं, व्रजतियमिलवैसांठि ॥ गांठिकुनुधकीजबछुटैं, एपटबांधैंगांठि ॥ ४८ ॥ अपनवैंव्रजवासिनी, तबव्हैंव्रजसौंहेत ॥ व्रजसरूपसूझैंतबैं, व्रजतियअंजनदेत ॥ ४९ ॥ छंद पद्धरी ॥ इंहिंरीतषेलभयोनंदद्वार । सुपभांतिभांतिबाढ्योअपार ॥ पुनकियोविदाश्रीगोपराज । सनमांनपांनदेंदैंसमाज ॥ सबविधिसुपलैलैंकियोहैंगौन । डफदुंदभिबाजतचलतभौंन ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ बरसांनैंनंदगांवको, षेलिभयोजाभांति ॥ सोबतनकसोहीकह्यो, कह्योसबैंकहांजांति ॥ ५० ॥ मधुमाधवजेठोत्सवहि, यातैंबरन्यौंनांहि ॥ एकफागआगैंजिते, सबफीकेदरसांहि ॥ ५१॥ व्रजलीलाउच्छवबहुत, मनलोयनसुषदैंन॥ वेनकहेमैंतेकहे, जेदेषेनिजनैंन ॥ ५२ ॥ यहैंरंगीलोधामहैं, औरधामकछुऔर ॥ धन्यधन्यजेकरतहैं, व्रजहोंरीइकठौर ॥ ५३॥ वैकुंठादिकलोकजे, व्रजपरडारूंवार॥ उच्छववारूंफागपर, जेप्रसिद्धसंसार ॥ ५४ ॥ व्रजतैंसोभाफागकी, व्रजकीसोभाफाग ॥ फागबिनांकहालागहैं, लागबिनांकहाफाग ॥ ५५ ॥ फागलागकेसुषजिते, तिनकेयेद्वैठांव॥गउरस्यामजीवनिजहां, बरसांनौंनंदगाव॥५६॥ गउरसांवरेरासिकदोउ, यहदीजेसुषरास ॥ कबहुनागरीदासअब, तजैंनव्रजकोंवास॥५७॥माघअष्टदससतशुदस, बिचवृंदाबनबास॥ग्रंथतीरथानंदयह, कियोनागरीदास॥५८॥ इतिश्रीग्रंथतीरथानंदसं० ॥

# अथ ग्रंथ श्रीरामचरित्रमालालिख्यते ॥

श्रीरामचंद्रायनमः ॥ दोहा ॥ सियारामपदध्यायकैं, कोमलक

मलनवीन ॥ रामचरितमालारचूं, चुनिचुनिपदप्राचीन ॥ १ ॥ अथ श्रीरामजन्मसमयपद ॥ चलिरीआजुहैमंगलचार ॥ राजादसरथकेदरवार ॥ अतिसुंदरश्रीरामस्यामतनप्रगटेराजकुमार ॥ पावतगुनीदानवहौकंचनअरुमनिमुक्ताहार ॥ नागरिदासअमंगलमिटिभये मंगललोकअपार ॥ पुनपद ॥ अवधिपुरबाजतआजुबधाई ॥ भईनगरपरभीराविमाननिप्रगटिभयेरघुराई ॥ वरषतकुसमधुजाकलसनिपरिअतिसोभाउफनाई ॥ नागरिदासगानमंगलधुनिछायरहीसुषदाई ॥

## अथ बाललीला पद ॥

करतलसोहतबानधुनहियां ॥ षेलतफिरतकनकमयआंगनपहिरेलालपनहियां ॥ दसरथकौसल्याकेआगैंबसतनैनकीछहियां ॥ मानौं च्यारहंससरवरतैं वैठेआनिसदहियां ॥ रघुकुलकुमदचंद्रचिंतामणि प्रगटेभूतलमाहियां ॥ यहैंदैनआयेरघुकुलकौंआनंदनिधिसबकाहियां ॥ यहसुखतीनलोकमैंनांहींसोपइयेप्रभुपाहियां ॥ सूरदासहरिवोल भक्तकोनिवाहतदैवहियां ॥ पुनः पद ॥ छोटीसीधुनहियांपनहियांपायछोटीछोटीसीकछोटीकटिछोटीसीतरकसी ॥ राजतझगुलीझीनीदामिनीकीछविछीनीसुंदरबदनसोहैपगियांजरकसी ॥ मोमनहरनिविचित्रआभूषनकछूकछूआवतसनेहकीसरकसी ॥ सूरतकीमूरतकहीनवनैंतुलसीजोइजनजानैंजाकेंकसिकैंकरकसी ॥ पुनः पद ॥ धनुहींबांनलियैंसंगडोलत ॥ च्यारौंवीरधरिसंगअतिसोभितवचनमनोहरिबोलत ॥ लछमनिभरतसत्रुघनसुंदरराजीवलोचनराम ॥ अतिसुकुमारपरमपुरषारथअर्थधर्मधनकाम ॥ कटितटपीतपिछौरी वांधेकाकपक्षधरेंसीस ॥ सरक्रीडादेखनिदिनआवतस्यौंसुरनारिअनी

स ॥ सिवमनसोचइंद्रमनआनंददुखसुखविधिहिसमान॥दितिदुबॅल अतिअदितसुसुखमननिरखिसूरसंधान ॥ इति पद ॥

## अथ अश्वगिंदुकलीला पद ॥

रामलच्छइकओरभरतरिपुदमनलालइकओरभये ॥ सरजूतीरसमस्तभागकरिगनिगनिगुनियांवांटिलये ॥ गिंदुककेलिकुसलहयचढिचाढिमनासिजसेवानिढोकिषये ॥ करकमलविचित्रचौगानैंखेलनिलगेषेलिरिझये॥व्योमविमाननिविविधिविलोकितखेलनिछांहछये॥भूरभागअनुरागउमगिजलसकुचिसकुचिसिरनैंनिनये ॥ इकलैंवढतएकधरिफेरतप्रेमप्रमोदविनोदमये ॥ एककहैंभइहालरामकोएककहैंभइयाभरतजये॥प्रभुवकसतगजवाजसाजसौंजैधुनिगगननिसानहये॥तेसेवगजाचिकभरिजीवनिफिरिनदूसरैंद्वारगये ॥ जामअवधिकरिजाचतव्रह्मातृजिगजौंननवठांमठये॥ तुलसीतेसमांनऊपरजेप्रभुकेनिजरंगनिरये ॥ पुनः पद ॥ झरौंखैंझांकैंदसरथरानी॥कौसल्यादिसुतनिकेसुखकौंदेखतनांहिंअघानी ॥ नैननिनीरपुलकउरआनंदकौतकरहीनिहार॥च्यारूवीरअश्वगेंदुकमिलिखेलतराजकुमार ॥ ललकारतदुवटतअसितातेआवतदृष्टिनपारैहीं॥विज्जुलतासेपलटपलटहयलैंलैंगेंदनिकारैहीं ॥ वारतमातवसनभूषनमिलिवकसतनृपगजवाज ॥ भईविमाननिभीरअवधिपरिदेखतअमरसमाज॥अर्थधर्मअरुकाममोक्षयेमानहुंरूपधरैं ॥ नागररामचंदसवहीकेदृगनिकोतिमरहरैं॥पुनः पद ॥ खेलतअश्वगेंदुकवीर॥सत्रुघनअरुभरतलछमनरामसरजूतीर॥ सुभगअतिसमभूमिपरहयचपलपदगतिचार॥पत्रचलदलचलत

जनुंथरहरतमुक्ताथार॥ परसपरलैजातगैंदुककरतहथछुटदौर ॥ भ्रम तलोलपनरनिकोमनज्यौंनठहरतठौर ॥ उठतअंगझकोरसौंधेंके लिश्रमचौगांन॥ टूटमोतीमालविथुरतचिकुररजलपटांन ॥ खेलिवि चहसिहसिवहसकेवदतमधुरेबोल॥हियेनागररहोदसरथराजकुमरक लोल ॥ पुनः पद ॥ सोईखेलनिहारे॥उतरिउतरिचुचकारितुरंगनि सादरजायजुहारे ॥ वंधुसखासेवगसमाजसनमानसनेहसुहाये॥दिये वसनगजबाजसाजसुभभूसवभांतिसुहाये॥ मुदितनैंनिफलपायगाय गुनीसरसानंदसिधारे ॥ सहितसमाजराममंदिरकोंश्रीरामरायपांव धारे ॥ नितिनितिमंगलमोदअवधिसवविधिलोगसंवारे॥ तुलसीतेस मानतेऊपरजेप्रभुचरितसुखारे ॥ इति पद ॥

## अथ रिषि विस्वामित्र अजोध्याआगमनि जाचंग्या पूरन पद ॥

नृपतिघरविस्वामित्रपधारे॥पदपदार्थव्हैंवैठतहीजाचंग्यावचनउ चारे ॥ देतमहामखमांझनिसाचरअतिदुखदुष्टदुखारे ॥ तनसुंदरघन स्यामरामयेदीजैंसंगहमारे॥ रिखमुखवचननमान्योदसरथभयेमगन सरमोह॥जानीनहिंमानीजाचंग्यादुजमनउपज्योछोह ॥ फरकतअ धरअरुनलखिलोचनरहीसभाभैपाय॥ मानौंविस्वप्रलयकेकारनरुद्र उठेअकुलाय ॥ भुवडगमगतविटपिउडटूटतदिग्गजधृतडिगुलाये जान्यौंअंतहिहोतअवधिपतिजववसिष्टसमुझाये ॥ अतिसुकुमारम नोहरमूरतगउरसांवरेअंग॥नागरिदासकुमरदोउदीनेंकरितपसीकेसं ग ॥ इति पद ॥

## अथ विस्वामित्रसंगलीलापद ॥

सानुजभरतभवनउठिधाये॥पितासमीपसमाचारलैंमुदितमातपै आये॥गदगदसुरतनपुलकअधरफरकतलखिप्रीतिसुहाये॥कौसल्या लयेलायहृदयसौवलिवालिकहतकछूसुधिपाये ॥ सतानंदप्रौहितअ पनौतोहितिनातपठाये॥कुशलक्षेमरघुवीरलछिनिकीललितपत्रिका लाये ॥ दलीतारिकामारिनिशाचरमखरापेतियतारी ॥ लैबिरदसु फिरिगयेजनकपुरगुरसंगरहेसुखारी ॥ सजिपिनाकपनसुतास्वयंवर सवनृपकटकवटोरचो ॥ राजसभारघुवरमृनालज्यौंशंभुसरासनतो रचो ॥ यहसुनिसिथलसनेहवंधुदोउअंवुअंकभरिलीनें॥वारवारमुख चूंमिचापिकैंवसनन्यौछावरकीनें ॥ सुनतसवासनिचाहिअवधिघर घरआनंदवधाये॥तुलसीदासरनवासरहीसरससखीनिमंगलगाये ॥ इति पद ॥

## अथ यापदकी टीका प्रथमतारिकादि हतनि मखरिष्या पद ॥

असुरसुबाहुतारिकामारी॥सस्त्रौसवीरासनरावकरीजज्ञरखवारी॥ स्थापकधर्मअधर्मउथापकनागररामउदार ॥ धनुषवानकरलियेप्रग टिभुवभक्तहेतअवतार ॥ इति पद ॥

## अथ अहल्या झींवर समय पद ॥

चरननिकीमहिमामैंजानी॥प्रगटसिलातेंनिकसीसुंदरिपदपरसत गउतमरानी ॥ देखिचिन्हचकतभयोझींवरनावलईगहिरेपानी ॥

चरनप्रछालचढोतुमरघुवरदीनवचनबोलतबानी ॥ तरुनीमेरीता रोजोतुमहोयसकलकुलकीहानी ॥ कृष्णादासकटहरियाकेप्रभुक हाजानैंनरअभिमानी ॥ पुनपद ॥ पावनपदरजरघुवीरकी ॥ जा परसतसिलकोतनपलटयोगतिभईदेवसरीरकी ॥ ल्यावनावपेवटि बोलेप्रभुठाढेतटिनीरकी॥ चलेपलायफेरिनहिंचितवतसंकारामसधी रकी ॥ करतपरमगतिपरमकृपानिधितारिपतितभौभीरकी ॥ जा तनाववैकुंठसघरणीकुटंबसहितकीरकी ॥ सेसमहेसनिगमनारदमु निसेवाब्रह्मउजीरकी॥ परसाशुकसनकादिभजनरतिउरधारिगुनिगं भीरकी ॥ इतिपद ॥

## अथ जनकपुर प्रवेस उपवन विहार समय प्रथम दरसन पद ॥

जनकसुताउपवनमैंआई ॥ पूजनधनुषपहुपकेकारणसखीवृंदलैं धाई॥वेनावीनमृदंगसंगधुनिहोतमनोहरगान॥ चलवतचंवरसषीउड गनविचासियद्युतिचंदसमान ॥ नूपुरसब्दविपनव्यापकभयोसकल रगमगीआनि॥ झूंमझुंकावतद्रुमनिद्रुमनिछाविकनकलतासीजानि ॥ इतरिषपठयेपहुपलैंनकौंअतिसुंदररघुवीर॥ भईअचानकभेटरूपकी परीदृगनिपरभीर ॥ सजलकमलदलसेदृगइतउतरहेनिहारिनिहा रि ॥ मनमथसरनिसुमारभयेदोउरहतसह्मारिसह्मारि ॥ कठिनफिरे अपनोमनदैंदैंसुधिकारिगुरजनकांनि॥ मननैननिलयोस्वादअलौकि कनेहरूपसरसानि॥ प्रीतजहांमजोदरहतनहिंयेमजोदासागर॥इहिं रसकारननंदभवनतबप्रगटभयेनटनागर ॥ इतिपद ॥

## अथ स्वयंवर समय पद ॥

स्वयंवरजनकरच्योसीताजूकोव्याह॥ अतिअद्भुतकौतुकदेखत हीमिटतहृगनिकेदाह ॥ देसदेसकेनवनरेससुनिसुनिसववेसवनाये॥ हयगयसजदलदलतमहीथलमिलिसवमिथुलाआये ॥ भूपनिकोरूपदेखिगर्वगयोलोगसुविस्मयपाये॥ एककामसोतोहरजारचोएककोटिकामकिंहिंजाये ॥ तापीछेरघुवीरधीरलघुवीरसहितपावधारे॥ उदितभांनजनुभवनभवनप्रतिदीपकफीकफिकारे ॥ मदगजसेनृपचाहिचकितभयेओजमनोजसिधारे॥वालसिंधसमसुंदरअतिगातिराजतप्रानपियारे॥महामल्लसतअष्ठकष्टकरिधनुषसभामैंआन्यौं॥करिकरिकोउवलवंतवदनदसताहुकोभुजवलभान्यों ॥ नृपतिसमाजमध्यठाढोव्हैयौंकहिदूतवषान्यो॥जौऐंचैसोवरैंजानकीजनकयहैंपनठान्यो ॥ एकचापकोदरसकरतहींमिसहींमिसजुपलानैं॥ एकउठावतगिरतधरनिधुकिओरहिआनउठानैं ॥ दसदससहस्रगजानिकोबलनृपतेऊनिपटपिसानैं॥देखिहसेदोउवीरपरसपरलागतपरमसुहानैं ॥ तवरघुवरनवघनमूरतिश्रीसियतनमुरिमुसिक्यानैं॥दामिनिसोपटकटिलपेटछबिसोचालिचापनिरानैं ॥ तिंहिंछिनअंधवृद्धनरनारीसुरमुनिराजारानैं॥भईभीररघुवीरकेकौतुकदेषनिकौउररानैं॥ झटदैंलैंचटदैंचढायतटदैंधनुतोरिगिरायो॥ जनकमुदितजुवतीमुदितसियकोवप्रानघटआयो ॥ जैजैजैसवकहतअमरगनपहुपनिअंवरछायो ॥ नंददासवलिवलितिंहिंऔसरघरघरमंगलगायो ॥ इतिपद ॥

## अथ विवाह समय तथा अयोध्या प्रवेस समय पद ॥

च्यारदूलहवनेकुंवरअवधेसकेचलेव्याहनिआलीजनकनृपकेसद

न॥सुहेवागेवनेसरससौंधेसनेथकितव्हैंरहिगयोनिराखिसोभामदन ॥
सोहैंसिरसेहरापचतनगजगमगतलगतकमनीयअतिविमलविधुसेव
दन ॥पातवीरागरैलसतहीरापदकदमकिमुसक्यानमैंसिपरमानिसेर
दन ॥ विविधिभूपनवसनसजचितुरांगिनीलगीचकचौंधसीमिलेदि
नमनिकिरन॥ नटीछविजटीसवनचततपतनिचढीवजतनौवतमिली
सकलवाजनिपरन ॥ जनकपुरधरनगरडगरवनवाटकनिपचितम
निकोसकैंताकीसोभावरन॥ सवहीसंपतभरचोव्याहकौंदेपिकैंअवहि
मानौअमरपुरउतरिआयोधरनि ॥ लैकैंजनवासतैवागरचनाभईप
रपगजअश्वकपिऔरकौतकघनें॥ अगनिकेजंत्रतहांछुटानिलागेअग
[illegible]नजोतिमयमनहुतिंहिदिनठनें ॥वाजगजवसनअरुविविधि
भूपनसवैंतनकहुनथाकहींदेतमंगदजनें ॥ स्तुतिकरैंबंदीजनविरदव
रनैंनये॥ मिलेमांगदसवैंदुक्खवंसनिभनें ॥ वडडेअश्वनचढेकुंवरसंम
दवढेपढेकेकांनअसनचतलियेमानकौं॥उततैंसाजिसेनानिजजनकनृ
पप्रेमतैंलैंनआयेसहैंजानमनिजानकौं ॥ समधीसमधीमिलेप
रसपरप्रीतिपिलेनारिमिलिगारिदैंकरानिलगीगानकौं॥ अटानिचढिदु
रवधूवारैंभूपनवसनदेपिकैंबिवसभइरघुवंसभानकौं॥ पौरिपहुंचेतहां
चारुतोरनवंधेगजनचढिपडगसोंजायपरसे॥उतरिभीतरगयेगजमुने
गनिलयेसब्दजयजयभयेकुंवरदरसे ॥ रहिसपुरनारिसववारिसरव
सकहैंदेहधरेच्यारनृपपुन्यपरसे॥ जनककुलप्रोहितनिआयकरिआर
तीतिहिंसमैंहेमसभमोतीवरसे ॥थारमानिमानिकानिभरयोमंत्रानिस्वरो
तिलककरिदुजवधूअछितलाये॥ चातुरानिपातुरानितिंहिसमैंसोहिले
अधिकमनमोहिलेमधुरगाये॥ सफलकरिलेखनैंनैंनकारिपेषनेंदेखनें

देवदिगपालआये॥ विविधिअद्भुतवनैंघनैंनभजानसोदिसाविदिसआकाससकलछाये ॥ व्याहमंडपतरैंजायठाढेभयेयथाविधिदुजवरनव्याहठान्यौं॥ च्याररचिमाढयेतिन्हैंतहांलैंगयेकंन्यावरजोग्यतहांआनिवान्यौं ॥ लायपटगांठिपरसायकरदुहनिकेवनावनींपरसपरमोदमान्यौं ॥ फेरालिवायजूअगनकौंसाखिदैंछाडयोनृपकन्यकादानपान्यौं ॥ दुगधओदनतहांपरसपरकौमदैंनबलजुवतीजुवावहुतहरषे॥ उंहीमिसानिराखिमुखसरदउडराजसेअवधिमहाराजसुतचित्तकरषे॥ कुंवरिहूउहीमिससुघरवरवरनलखिआपअपनैंजोग्यनिजनाहपरषे॥ तिहींपुरतिहींदिवसपरममंगलभयोसंकभइलंकघनरुधिरबरषे ॥ दुजनिदइदक्षिनाग्रामगजतुरंगरथरतनपटवरनेवेजानकापैं ॥ षोलिभंडारदयेभूपसबआपनैंलेहुजाचिकजुलयोजायजापैं॥करीज्यौंनारअसचतुरविधिभोजननिरुचिसौंजैंवैजदपिवहुरिधापैं॥पूजिकुलदेवकौंपेलिजूवातहांबिछायदयेपलकाजत्थबैठेंतापैं ॥ बिबिधिदयेदायजेकरीपहिरावनींअवधिभूपालभयेंअधिकराजी ॥ इनहूंपुनिजाचकनि देयेअतिमोदसौंअनगानितबसनमनिनागबाजी ॥ चलेलैंदुलहनिकुमरनिजनगरकूंचढीवडीफौजसोअधिकछाजी ॥ चहूंदिसबजिउठेबिबिधबाजेघनैंघनज्यूंगंभीरनौबतजुगाजी ॥ आयपहूंचेकितिकदिनानिअवधिकूंअवधिनवनिधिभरीपटनिछाई ॥ कियोपरवेसंतबकारिकेगंठजोरतहांसुघरबरनवकिसोरचारूंभाई ॥ साजिकैंआरतीजननीतीनूंतबैंजुवतीजनसंगलैंसाम्हैंआई ॥ आरतीकरीजुपुनवारिमनिमानकनिबृंदावनप्रभुनिकिलईबलाई ॥ इतिश्रीदसरथप्रागटिकुंवरसमयचारित्रपद ॥

## अथ श्रीदसरथ पश्चात श्रीराममहाराज समय ॥

॥ दोहा ॥ औरकथाकरुनामई, मैंनलिपीहैंजांन ॥ अवैंवीररस धरतपद, रावनहतनिविधान ॥ १ ॥

## अथ सिया सुधि लैंन हनूमान समुद्र उल्लंघन समय पद ॥

तवैंइकअंगदवचनकह्यो । तरिकैंसिंधुसुधिलैहैकिहिंवलइतोलह्यो ॥ इतनींवातश्रवनसुनिहरष्यो, हसिवोल्योजामंत ॥ यादलमध्यप्रवल केसरीसुत, जाहिनामहनुमंत ॥ जोमनकरैंएकवासरमैं, छिनआ वैंछिनजाय ॥ स्वर्गपतालआहिताकौंगम, कहियेकहावढाय ॥ यह लैहैंसीतासुधिपलमैं, अरुऐहैंजुतुरंत ॥ इंहिंप्रतापत्रिभुवनकोपायो याकेवलहिनअंत ॥ जवैंवुलायसुचितचितव्हैंकह्यो, वच्छतवोरहि लेहु ॥ ल्यावहुजायजनककन्यासुधि, रघुपतिकौंसुषदेहु ॥ पौरपौ रप्रतिफिरहुविलोकत, गिरकंदरवनगेहु ॥ लेहुविचारिमुद्रिकादी जहु, सुनिहुमंत्रसुतएहु ॥ धरिअहिपत्रसीसमारतसुत, कह्योचौ गुनोगात ॥ चढिगिरसिखरवचनइकउचरयो, गगनउठ्योआघात ॥ कंपतसिंधुसेसवसुधानभ, रविथंम्योउतपात॥मानहुंमेरपच्छह्वैलागे, उड्योअकासहिजात ॥ चकृतभयेपरसपरवनचर, वीचकरीकिल कार ॥ तहांनिसाचरीमिलीजुअद्भुत, करिआतिमुखविस्तार ॥ पवनपूतउरपैठिविदारी, तवहींलगीनवार ॥ सूरदासस्वामीप्रतापतैं उतरयोजलनिधिपार ॥ २ ॥ इतिपद ॥

# अथ हनूमान लंका प्रवेस सियासोधन तथा दरसन संभाषन मुद्रिका दैन बिपुन विध्वंसन असुरसेना हतन रावन संभाषन पुरी प्रजारि लांगूलसांतकरी आयपुनजानकी पद परस करनसमय पद॥

हनुमानलंकाजुसिधाये॥ सूछमतनकरिभीतरआये॥ पुरगिरसकल कंदराहेरी कहूंदृष्टिनाहिंआई॥ बिपुनअसोकासिंसपाद्रुमतर जनकसुतातहांपाई॥ करिप्रनामअरुदईमुद्रिका कहीकथाजोरामकहाई बागबिध्वंसहतेदानवदल सदृढबचनकहिलंकजराई॥ बहुरआरसीतापदपरसे पहिलेउदधिलांगूलबुझाई॥ नागरीदासकह्योआग्या व्हैं जायकरौंदरसनरघुराई॥ ३॥ इतिपद॥

## अथ हनूमान प्रति संदेस कहन पद॥

देषैंहोकपिजातसंदेसकहांहोंकहौं॥ सुनिकपिइनप्राननिकोपहिरोकवलगिदेतरहौं॥ एअतिचपलचल्योईचाहतकरतनकछूविचार॥ लैलैंनामजतनकरिराषतरोकिरोकिसुखद्वार॥ बारबारअकुलायकहत हौंडरपतहौंहनुमंत॥ नांहिनसूरसुनोकाहूको दुषकरुनामयकंत॥ ॥ पुनपद॥ मेरीओरतेविनतीकीबी॥ पहिलेनामसुनायपायपरिमानिरघुनाथहाथलैंदीबी॥ मंदाकिनितटफटकिसिलापरिसुमरतसुर

तहोतउरअरनी ॥ कहाकहौंकपिकहैंवनैंअव, मुखमुपजोरितिलककीकरनी ॥ तुमहनुमंतपुनीतपवनसुतकहियोजायजुहैमैंवरनी ॥ सूरसुनैननिआनिदिषावहुमूरतदुसहदोषदुषहरनी ॥ इतिपद ॥

## अथ हनूमान रघुपति ढिगआय विज्ञासि करनि पद॥

रघुपतिवेगजतनअवकीजैं ॥ बांधिहुसिंधुवेगसुभटनिकौं आपुनिआयसुदीजैं ॥ तौलौंवेगतरौंयापौकौं द्रुमपाषाननिछाय ॥ दुतियसिंधसियनैननिकोजल जवलगिमिलैंनआय॥ यातैंबिनतीकरतकृपानिधि बारवारअकुलाय ॥ सूरदासअकालप्रलयप्रभुमेटोदरसदिषाध ॥ इतिपद ॥

## अथ श्रीरघुनाथ उदधिउलंघन समय पद ॥

उदधितटउतरतरामउदार ॥ रोषावेषकियेरघुनंदनसबाविपरीतव्यौहार ॥ सागरपरिगिरगिरपरिअंवरकपिघनकैंआकार ॥ गरजाकिलकिआवातउठतमनुदामिनपावकझार ॥ उमडतसललिसमातनसलतनिचलतउलटिकैंधार ॥ मनुरघुपतिभयभीतिसिंधुपरिपतनीपठईप्यौसार ॥ सेनासेतगगनमारगअरुचढिजलचरविचवार ॥ सीयसुगनसुभहोतसूरप्रभुजलनिधिउतरेपार ॥ इतिपद ॥

## अथ रावनप्रति मंदोदरीवचन पद ॥

सरनपियजाइयेमनक्रमबचनविचारि ॥ ऐसोकोसमरथत्रिभुवनमैंजोअबलेहिउवारि ॥ सुनिसिषिकंततदंततृनधारिकैंसहपरवारसिधारो ॥ परमपुनीतिजानकीसंगलैंकुलकलंकनिटारो ॥

एदससीसचरनतररापोतजिमतिकुटिलअधीर ॥ मेटैंगेअपराध महाप्रभुकृपाकरानरघुवीर ॥ जिहिंतोरिधनुषमुखमोरिनृपतिकौं सियास्वयंवरकीनौं ॥ छिनइकमधिभृगुपतिप्रतापवलकरपिह दोहरलीनौं ॥ लीलाकपटकनकमृगमारयोवध्योवालअभिमानी ॥ सोईदसरथकुलचंदअमितबलआयेसारंगपानी ॥ जाकोदलसु ग्रीवसुमंत्री प्रबलजूथपतिभारी ॥ महासुभटरनजीतिपवनसुत निडरबजरबपुधारी ॥ करिहैंपंकलंकछिनभीतरबजरासिलालैंधाय ॥ कुलकुटंबपरवारसहिततोहिवधतविलंबनलाय ॥ अजहूंबलगिनकरि संकरकौमांनिबचनसुनिमेरो ॥ जायमिल्योकौसलनरेसकौबंधुविभी षनतेरो ॥ कटकसोरमंदोदरसोंदिसदेखतकपिदलभीर ॥ सूरस्वा मिरघुवंसतिलकदोऊउतरेहैंजलनिधितीर ॥ इतिपद ॥

## अथ अंगदसंधिसंदेसार्थरावनढिगआवनवर्णन ॥

पद॥ वालनंदनवलीविकटवनचरमहाद्वाररघुवीरकोवीरआयो॥ पौरतैंदौरिदरवानदसमाथसौंजायसिरनायर्यौंकहिसुनायो ॥ सुनि श्रवणदसवदनसदनअभिमानकैंनैनकीसैनअंगदबुलायो॥ विविधि आयुधधरेसुभटसेवैंखरेछत्रकीछांहनिर्भयदिखायो ॥ देखिहरिवेषलं केसहरहरहस्योसुनहुभटकटककोपारपायो॥ देखिदानवमहाराजरा वनसभाकहनकोमंत्रजबकपिपठायो ॥ रेरंकरावनकहांडंकतेरोइतो दौरिकरजोरिविनतीविथारो ॥ परमअभिरामरघुनाथकेरोमपरवी सभुजसीसदसवारिडारो ॥ कोपिकरिबालगहिकाललंकाधिपतिरे मूढरामकौसीसनांउं ॥ सिंभुकीसपतकपिकुपथकायासकलस्वास

आकासवनचरउडांउ ॥ फेरिकैंचरनहैंपंचासिरपहुमिदेसबानिदेखत अरेअबसंधारौं ॥ जानकीनाथकेहाथतेरोमरनकहामतिमूढतोहिबी चमारौं ॥ तोहिवनचरअवहीदंडदैहूंदेखिकोपिअनचरनिआज्ञाउच्चा री ॥ तिहींछिनबालसुतज्ञपटपटमुकटलैपटकिभुवअसुरभयोगगन चारी ॥ मारिअसुरनिसभाजीतिपुरकनककीतिजहरिचक्रसमछोह छायो ॥ सूरप्रभुसुभटलंकेसकीलाजलैरामपदकमलसिरआयनायो॥ इतिपद ॥

## अथ रघुबीर वीर उच्छाह उच्चारनि पद॥

दूसरेकरवाननलैंहौं॥ सुनिसुग्रीवप्रतंग्यामेरीएकहिबानअसुरसब हैंहौं ॥ सिवपूजाजिहिंभांतिकरीहैंसोपंकतिसिरसंततजैहौं॥ करतप्र हारपापफलवर्जितसिरमालाकुलसहितचढैहौं ॥ करौंनविलंबकछू जोछिनइकअरिसनमुखव्हैपैहौं ॥ जैसेतूलज्जुपरतअगनिमुखजारि जडनिजमपंथपठैहौं ॥ यौंवधदुष्टदेवदुजमोचनलंकविभीषनतोकौं देहौं ॥ सीतासहितबंधुसूरप्रभुकृतपनपारिअजोध्याऐहौं॥इतिपद॥

## अथ जुद्धसमैं रावनहतन पद ॥

आजुअतिकोप्योहैरनराम॥ब्रह्मादिकआरूढविमाननिदेखतसुर संग्राम॥घनतनकवचवीरवरसाज्यौंकरसाज्यौंसारंग॥ सुचिकरिसक लवानसूधेकरिकटितटिकस्योनिषंग ॥ छुभितसिंधुसेससिरकंपतिप वनभयोगतिपंग ॥ इंद्रहस्योहरहसिविलखानेजानिबचनकोभंग ॥ टूटतध्वजापताखछत्ररथचापचमूअसत्रान॥सोभितसुभटजरतमानौं दौंद्रुमबिनसाखपान॥ घनअंबरदसहूंदिसवाढीसायककिरनसमान

मानौंमहाप्रलयकैंकारनउदितउभयपटभान ॥ श्रोणछिंछउछरतअकासलौंगजवाजनिसरलागि ॥ मनहूनगरतृणघरनिधरनितेउपजीहैं अतिआगि ॥ उठिकमंधभाहिरायभीतव्हैंपरतवजनुजरिजागि॥फिर तसृंगालसिलौसौंक।दतचलतवासिरलैंभागि ॥ रघुपतिरिसपावकप्रचंडभइसीतास्वाससमीर॥ रावनजुतकुलसघनवेणुवनऔरुसुभटरन धीर ॥ होतभस्मकछुवारनलागीज्यौंज्वालापटजीर॥ सूरदासप्रभुविपुलवाहवलछिनकमांझकियेकीर ॥ इति पद ॥

## अथ श्रीरामविजयसियामिलनि पद ॥

बाढ्योआजुलोकानंद॥ मिलतसियमुखचंद्रिकाचलिअमलरघुपतिचंद ॥ संषपटहिनिसांनमंगलगानरवऊच्चार ॥ बिभीपणहनुवंत आगैंभक्तिजनप्रतिहार ॥ धायआयेश्रवनसुनिसुनिसकलहरपितगात॥भालकपिअनगनतसेनादरसहितउतरात॥ दारछरीप्रहारआगैंनांहिपावतजान ॥ कह्योतबसबहिनप्रभूसौंवराजियेहनुमान ॥ तबैंसिविकाछांडिसीताचलीआग्यापाय ॥ रामदलबादलनिबिचमनुदामिनीं दरसाय ॥ उडीरेनुआकासपूरतकटकभटबहुसाथ ॥ दासनागरमिले आनंदजानकीरघुनाथ ॥ इतिपद ॥

## अथ अयोध्या आगमनि आनंददैनार्थ हनूमानपठावन पद ॥

वेगपवनसुतकूंदसरथसुतआनंददैनपठाये॥ कुसमविमानतैंउतरिवीरकपिनरवपुधरिकैंधाये॥ गुहिकूंसमाचारकहिकैंफिरिकहैंभरथकूं जाय॥मारिलंकपतिकौंसीतापतिआयेहैंरघुराय॥सुनिकैंमुदितचक्तत

चितवतहैंमुखतेकढैनवैन ॥ आयेसिमिटितवैंश्रवननिमैंमनन्नतप्रानरुनैंन ॥ मिल्योजायतबकृपासिंधुसौंभरतभक्तिजलसोत ॥ नागरीदासरामपदसेवततिन्हैंक्यौंनसुखहोत ॥ इतिपद ॥

## अथ विमान दरसन निकट आगमनि पद॥

देखोरामराजाव्हैंआवत ॥ दूरहितैंदुतियाकेससिलौंपुरजनव्योमविमानवतावत ॥ सियासहितवरवीराविराजतअवलोकतआनंदवढावत॥ अगैंबंदरभीरमहाभटज्यौंघनगगनपवनवसधावत ॥ निकटनगरजियजानधरयोधरजनमभूमिकीकथाचलावत ॥ यहममजनममयहैंप्रजाजूप्रियजनआपकपिनिकहिकहिसमुझावत ॥ यहवसिष्टकुलपूजिहमारेपालागिहुसबसखनिसिखावत ॥ यहस्वामीसुग्रीवविभीषणभरतहुतेमोकूंजियभावत ॥ कोजानतोकहांदशरथसुतवनजुगयेकछुबातनआवत ॥ सबकीरतिकीअवधिइहालौंबरनतअंगजहांहृदोजडावत ॥ रिपुहनिदेवकाजसुखसंपतिसकलसूरइनहीतैंपावत ॥ इतैमानकरिकृपाकृपानिधिसुरपैंठतजनकौजसगावत ॥ इतिपद ॥

## अथ अजोध्यापुरीप्रवेसानंद पद ॥

आजसखीअवधिपुरमध्यमंगलमहा ॥ सकलसुरनरनिमनमोदवरनोकहा ॥ कदलीकंचनकलसविमलनौंरतनजुतदीपतदीपावलीलसतलाजा ॥ द्वारतोरनिरचितधामधामनिधुजापुरीप्रवसितासियारामराजा ॥ घटनिसीअटनिद्युतिदामिनीकुलवधूगानधुनिकरतमुनिमननिकरषै ॥ परमउत्सवभरीअवधिपरअमरगनगगनतैंरसमगनकुसुमवर

पैं ॥संगरघुवीरलघुवीरसेनासहितवजतवादित्रचहुंधांसुहाये॥नागरी दाससुषरासरघुकुलतिलकदेवकरिकाजनिजराजआये ॥इतिपद ॥

## अथ कविबचनफल स्तुति ॥

॥ दोहा ॥ पढैंसुनैंयाग्रंथकूं, घरीएकदिनजाम ॥ जाकेहियनि तप्रतिवसो, सियारामअभिराम ॥ इतिपद ॥

॥ दोहा ॥ संमतअष्टदससतजुषट, हिंडनिसलितातीर ॥ नागर पदचुनिचुनिकियो, ग्रंथचरितरघुवीर ॥ इतिश्रीग्रंथरामचरित्रमाला संपूर्णम् ॥

## अथ मनोरथ मंजरी ॥

दोहा ॥ मोनैंननकीठौरकौं, कवलैंहैंवहरूंध ॥ तीनतापसीतल करन, सघनतरुनकीधूंध ॥ १ ॥ कववृंदावनधरनमें, चरनपरैंगे जाय ॥ लोटिधूरिधरिसीसपर, कछुमुखहूमैंपाय ॥ २ ॥ पिककेकी कोकिलकुहुक, वंदरवृंदअपार ॥ ऐसेतरुलखिनिकटतैं, कवमिलि हौंवांहपसार ॥ ३ ॥ कवैंरसीलीकुंजमैं, हौंकरिहौंपरवेस॥ लखिल खिलताजुलहलही ॥ चितव्हैंगोआवेस ॥ ४ ॥ प्रियपरकरकेसुघरज न, विरहीप्रेमनिकेत ॥ देखककैबैलपटायहौं, उनतैंहियकरहेत ॥ ५॥ मोकौंलैंएकंतमैं, मिलिमिलिरासिकबिसाल ॥ कवैंसुरतनवकुंजकी, कहिहैंवातरसाल ॥ ६ ॥ कछुमोहूमैंप्रेमलषि, तबऔरनतैंफाट ॥ कवैंपुलिनलैजाहिंगे, करनमानसीठाट ॥ ७ ॥ जमुनातटनिसिचांद नी, सुभगपुलिनमेंजाय ॥ कबएकाकीहोयहौं, मौंनबदनउरचाय ॥ ८ ॥ जुगलरूपआसवछक्यो, परेरींझकेपांन ॥ ऐसेसंतनकीरु

पा, मोपैंदंपतिजांन ॥९॥ कबैंझुकतमोओरकौं, ऐहैंमदगजचाल॥ गरवांहीदोनैंदोऊ, प्रियानवलनंदलाल ॥१०॥ सिरझलकतमंजुलमुकुल, कटिलौंलटरहिछूटि ॥ सोभितललितलिलाटकैं, उभैंभौंहकीजूटि ॥११॥ तामधिबैंदीरतनकी, तरमुकताकीहाल ॥ नैंनछकैंहैंकछुअरुन, सुंदरसरसविसाल ॥१२॥ कुंडलझलककपोलपर, राजतनानाभांति ॥ कबइननैंननिदेपिहौं, बदनचंदकीकांति ॥१३॥ ऊंचीनासापरसजल, चमकतमुकताचार ॥ करतबुलाकहलाकमन, रहिहैंनांहिसंभारि ॥१४॥ हायअधरकीअरुनई, मनलोभीकौंदाम ॥ हैरींवैरीलाजकी, धीरभगावनभाम ॥१५॥ दमकदसनिईपदहसनि, उपमासमसरहैंन ॥ फैलिपरताकिरननिनिकर, कबदेपौंइननैंन ॥१६॥ गउरबांहसुठिग्रीवपर, चूरीहरीरसाल ॥ इननैंननिकबधौंलपौं, चूंमतझुकिझुकिलाल ॥१७॥ बाहुजुगलकबदेपिहूं, भूपनवलितसलोल ॥ रीझरीझमनविवसव्है, छापींतियनितमोल ॥१८॥ कमलपांनसुंदरीचमक, विमलसौरईबीच ॥ लपटांनोंनिसादिनरहैं, कुचकुमकुमकैंकीच ॥१९॥ कबैंनवलयाकरकमल, मुसकिगहैंगेस्याम ॥ रोमऊठितनकंपव्है, कसकिजगैंगोकाम ॥२०॥ सुभगउरस्थलपरहरैं, मोतीलरैंविसाल ॥ स्यामकलेवरपरकिरन, हालकरतबेहाल ॥२१॥ सेलीमुकतावलिविचैं, रोमावलिकोहाय ॥ सुधिआयेमारतमदन, देपीकैंसैंजाय ॥२२॥ महाछीनकटिकिंकनी, मदपंडततनकाम ॥ सोअबकबहौंदेपिहौं, लाजबहावनवाम ॥२३॥ अतिसुढारजुगजंघरी, कहावरनौंमतिपंग ॥ पटपीरेंझीनैंतरैं, झलकतसांवररंग ॥२४॥ पीरीधोतीकीअहो, प

टुलीअतिछबिदेत ॥ साफफबितबनमालपधि, रसिकजननमनलेत ॥ २५ ॥ चरनलंकछबिपंकमैं, मनगजअरुझतकोट ॥ तापैंनूपरकिरनपर, बंधीरूपकोपोट ॥ २६ ॥ नषनिचंदद्युतिमंदकी, अंगुरिनअनवटपांति ॥ तरीमहावरिसौंभरी, हरीअरुनमनकांति ॥ २७ ॥ वदनविलोकतलालको, अंषियांकहाअघाय ॥ लाजनिगोडीदृष्टिकौं, सगतिपारिहैंपाय ॥ २८ ॥ सिषनषलौंकबदेषिहौं, रूपहासिमृदुमंद ॥ ताकौंचितवतहीलुटत, कामचरननषचंद ॥ २९ ॥ जोमनअरुझ्योरूपहैं, क्यौंहूंकहतवनैंन ॥ रसनाकैंतोमननहीं, मनकैंरसनांहैंन ॥ ३० ॥ अवैंकहाकहिहौंअहो, राधारूपरसाल ॥ ताकीकछुभुवभंगमैं, मोहनमदनविहाल ॥ ३१ ॥ जुगलरूपऐसोचितैं, गिरिरहेतनसुधिभूल ॥ वेनूपरझनकायकैं, जैहैंजमुनांकूल ॥ ३२॥ तबदुषदाईहोयगो, मोकौंविरहअपार ॥ रोयरोयउठिदोरिहौं, कहिकहिकितसुकुंवार ॥ ३३ ॥ ठहरिठहरिउठिहौंअहो, भहरिभहरिअतिरोय ॥ हियेषरकऔसेरकी, सुधिसवदैहैंषोय ॥ ३४ ॥ तादिनहीतैंछूटिहैं, षांनपांनअरुसैंन ॥ छीनदेहजीरनवसन, फिरिहोहियेकुचैंन ॥ ३५ ॥ नैंनद्रवैंजलधाररहैं, उपटतलेतउसास ॥ रैंनअंधेरीडोलिहौं, गावतजुगलउसास ॥ ३६ ॥ चरनछिदतकांटेनतैं, स्त्रवतरुधिरसुधिनांहि ॥ पूछतिहौंफिरिहौंभटू, पगमृगतरुवनमांहि ॥ ३७ ॥ हेरतटेरतडोलिहौं, कहिकहिस्यामसुजान ॥ फिरतगिरतवनसघनमैं, यौंहींछुटिहैंप्रान ॥ ३८ ॥ आनन्दूटिनिसिरासिमैं, अप्राकृतमिलिदेह ॥ मधिपरकरकैंदेषिहौं, सदाजुगलकोनेह ॥ ३९ ॥ कवैंमनोरथसिद्धएं, व्हैहैंमेरेलाल, सतसंगतितैंदूरिनाहें ॥ जांनैंरसिकरसाल

॥ ४० ॥ ताहिदयोसतसंगहारि, जासौंकछुराण्यौंन ॥ प्रगटभागवत कहतहैं, कहतयहैंकथहौंन ॥४१॥ जाहिकुसंगतिलैंदई, तापैंपूरनरोष ॥ जनमजनमनाहिंछूटिहैं, तीनतापदुपपोष ॥ ४२ ॥ हरिमलवो मानतनहीं, सतिसंगतिसौंकूर ॥ वासौंजोफिरिहितकरैं, ताकेमुपमें धूर ॥ ४३ ॥ परममित्रआग्यादई, मेरेहूहितवास ॥ नवलमनोरथ मंजरी, करीनागरीदास ॥ ४४ ॥ संवतसतरासैंअसी, चोदसिमंगल वार ॥ प्रगटमनोरथमंजरी, वदिआसूअवतार ॥ ४५ ॥ जोवांचैंसी पैंसुनैं, रीझिकरैंफिरिप्रष्ण ॥ सोसतसंगतिकीजियो, पहौंचैंजैश्री कृष्ण ॥४६॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीसांवतसिंघजीकृतमनोरथ मंजरीसंपूर्ण ॥

# अथ पदप्रबोध माला ग्रंथ लिख्यते ॥

## प्रथम मंगलाचरन हरिसुजस प्रचुरिकीर्तन कर्ताभक्तिजनानि प्रति स्तुति ॥

॥ पद ॥ मेरेयेईवेदव्यास ॥ श्रीहरिबंसरुव्यासगदाधरपर मानंदनंददास ॥ श्रीहरिदासबिहारनिदासबिठ्ठलविपुलसुजान ॥ रामदासनाभादामोदरअलिभगवानसर्षभगवान ॥ दासचतुर्भुज दासमेहापुनश्रीभटचतुरबिहारी ॥ प्रीतमरासिकरासिकवल्लभअरुध्रुव रसरीतउचारी ॥ तुलसीदासमीरांमाधवअरुउभैंनागरीदास ॥ आ सकरननरसीवृंदाबनरुचिमाधुरीसुपरास ॥ कृष्णदाससूरगोविंदअ रुकुंभनछीतस्वांमिअनुरक्ता ॥ श्रुतपुरानमेरैंइनकेपदहौंश्रोताये

वक्ता ॥ तजिइनकेपदअर्थसुनैंकोनानामतबिभचार ॥ मूलसाख्रसिधक्यौंहेरैंपदछाडिअमृतफलसार ॥ रसनाश्रवननिमैंइनकेपदरहो हियमैंनिर्दूषन ॥ नागरियाइनकीपदरजसोहोहुभालमोभूषन ॥ १ ॥ ॥ इतिस्तुतिपद ॥

## अथ हरिविस्मर्न कर्ता नर बाल अवस्थाबर्नन ॥

॥ पद ॥ जनमतजनमतकोदुषभूल्यो ॥ विसरगयोकरुणानिधिकेसवबालकेलिरसझूल्यो ॥ कबहुकरोवतहसतकबहुमिलिसिसुमतिमूढमहा ॥ भलीवुरीह्रूसमझतनाहींहरिगुनलहैंकहा ॥ बालापनसवयौंहीबीततनांहिस्यामसुधिश्रावैं ॥ नागरहोयतरुनतरुनीसंग फिरिहरिकूंविसरावैं ॥ २ ॥ इतिबालअवस्था ॥

## अथ तरुन अवस्था ॥

॥ पद ॥ तरुनभयोतरुनीसंगराच्यो ॥ धनकैंकारनधनउपजावतबिबिधिभांतिनटकपिज्यौंनाच्यो ॥ मोहमगनबिषियारसलंपटनिसिदिनजातनजानैं ॥ तनकैंजोरमरोरमत्तमनदेहअमरज्यौंमांनैं ॥ स्वारथहेततज्यौपरमारथनिजगृहकाजप्रबीन ॥ अपनौंकियोबृथामानतसबनागरहरिआधीन ॥३॥ इतितरुनअवस्था ॥

## अथ वृद्धअवस्था ॥

॥ पद ॥ जीवतमृतकह्रैगयोबृद्ध॥ होतनहींस्वारथपरमारथइहिंजीबेमैंकहासिद्ध ॥ उगलतकफषांसततनकांपतदेहबुद्धबलनास्यो॥ सबइंद्रिनिकीसक्तिघटिगईतनबहोरोगप्रकास्यो ॥ लेटचोरहैंप्रजंकद्वाराबिचउदरअहारनपचहीं ॥ जुराजरतमृत्यागमआयोतऊनहरि

सौंरचहीं ॥ पहिलैंसाधनकीनौंनांहीरांहिसाधनकेसंग ॥ नागरीदास लगैंअबकैसैंकृष्णभक्तिकोरंग ॥ ४ ॥ इतिवृद्धअवस्था ॥

## अथ मरनगति देषि बिस्मर्न दसा ॥

॥ पद ॥ कहांवेसुतनातीहयहाथी ॥ चलेनिसानबजायअकेले तहांकोउसंगनसाथी ॥ रहेदासदासीमुखजोवतकरमोंडैंसबलोग ॥ कालगह्योतबसबहिनछाड्योधरेरहेसबभोग ॥ जहांतहांनिसदिन विक्रमकोभट्टथट्टाविरदत्त ॥ सोसबबिसरिलगेएकैंरटरामनामककहैं सत्त ॥ बैठनदेतहुतेमाषीहूचहुंदिसचंवरसचाल ॥ लयैंहाथमैंलट्ठाता कोकूटतमित्रकपाल ॥ सौंधेभीनौंगातजारिकैकरिआयेबनढेरी ॥ घरआयैंतैंभूलिगयेसबधनमायाहरीतेरी ॥ नागरीदासबिसरियेनां हीं यहगतिअतिअसुहाती ॥ कालव्यालकौंकष्टनिवारनिभजिहरि जनमसंगाती ॥ ५ ॥ इतिमरणदसा ॥

## याभांति तीन्यूं अवस्था सतसंग बिन बिषियानं दकी आसाहीं आसामैं षोई तहां परि पद ॥

नरकोजनमबिगारतआसा ॥ स्वारथदावअठारैंचाहियतुतौंनप रतांविचुपासा ॥ यहजगहैंचौपरकीबाजीअपनैंवसनहिंव्याल ॥ ना गरीदासकरोसतसंगतछाडिजगतजंजाल ॥ ६ ॥ पुनःपद ॥ क रियतुवृथामनकीदौर ॥ जियचहतइतऔरहीउतहोतऔरकीऔर ॥ छीनआयुसुहोतनिततनकालव्यालकोकौर ॥ दासनागरव्हैनिवृत बसव्रासतीरथठौर ॥ ७ ॥

## जब आसापूरन होतनांही जबजिय अतिदुषकौं परासहोय तहांपरि सिछ्या ॥

पद ॥ अबजियकाहेकूंदुषभोवैं ॥ कबहुकहरषसोककबहूंव्हैंक बहुहसैंकबहूरोवैं ॥ याजगमैंहैंयहीतमासाऐसैंहींनितहोवैं ॥ नागरीदासभजिहूनंदनंदनजनमवृथामतषोवैं ॥ ८ ॥

भाषा—जद्यपि आसाहू धनादिक करिकैं पूरनहोय अरु सबतैं बडो कहावैं तउसतसंग बिन सुख नांहि ज्यौं अधिक बडो होय त्यौं दुखहू अधिक बडो होत जाय इंद्रपर्यंततहांपरि ॥

पद ॥ सबदुखबडेकहांयैंहोय ॥ इंद्रसबमैंबडोकहियतुरहतनिति दुषभोय ॥ उग्रतपरिषिकरतसुनिकैंलुटतसेजअंगार ॥ असुरडरअमरावतीताजिभजतबारंबार ॥ ब्रह्महत्यातैंपलानैंदुरेकंवलमृनाल ॥ अंगभगमंडितभयोगिरिगयेबृषणबिहाल ॥ बुझ्योदीपकबडोजैसैंबड्डोकहियतुभूल॥मानिलघुहरिसरननागररहैंसोसुपमूल॥९॥

भाषा—यातैं सर्वथा सतसंग करि हरिसरनरहिये तहांपरि

पद ॥ सबसुषस्यामसरनैंगयैं ॥ औरठौरनकहूंआनंदइंद्रहूकैंभयैं॥दुखमूलएकप्रवर्तमारगकाहिनमांनतकोय॥सुषपर्ग्योजिहिनिवार्तेकोमनजांनिहैंदुषसोय॥सतसंगअंबुजब्रजसरोवरकीरतनसुषबास॥कीजियेहरिबेगतिनकोभंवरनागरीदास ॥ १० ॥

भाषा—बिनसतसंग मन बस होतनांही यहमन महा चंचल नीचहैं तहांपरि मन निंदा ॥ पद ॥

मनयहनीचसंगीनीच ॥ उच्चपदकौंचढतनांहींजदिपिनियरीमी

च ॥ नवनपापकौंगवनकरिहींज्यौंवनीरउलैंड ॥ प्रवलअतिनहिं रुकतरोकैंग्यांनधूरिकीमैंड ॥ मिलतजाहीरंगआपुनहोतवाहीरंग ॥ देहुनागरीदासकौंयातैंप्रभूसतसंग ॥ ११ ॥ पुनःपद ॥ बिनसतसंगमतिबेढंग ॥ फिरतडांवांडोलमनज्यौंविनलगामतुरंग॥कवहुगिरिगिरिउठतअतिश्रमचढतक्रोधिरतंग ॥ कवहुमूरंषभ्रमतआतुरउपजअंगअनंग ॥ कहातपव्रतदानसंजमकहान्हायैंगंग ॥ दासनागरबिनासाधनसकलसाधनभंग ॥ १२ ॥

भाषा—यातैं सर्वथा साधनको सतसंग कीजै तहांपरि ॥ पद ॥

सदासुषहरिभक्तिनकेमांहिं ॥ दसरथसुतअरुनंदनंदनकीवातनिसमैंबितांहिं ॥ विविधिकलेसरुकलहकलपनांतिनमैंउपजतनांहिं ॥ नागरियाब्रह्मानंदहूतैंभजनानंदअधिकांहिं॥१३॥ पुनःपद ॥ जिंहिंजनभक्तिसुधारसपीयो ॥ स्वर्गराजसुपगेहकाजफिरिमनकवहुंनदीयो ॥ बेदकलपतरुफलमाधवताजिजगविषफलनाहिंछीयो ॥ नागरऔरसंगनहिंराचैंसाधसंगतिनकीयो ॥ १४ ॥ पुनःपद ॥ जवलगहीजगकौसुषपागैं ॥ तवलगिजियहरिभक्तिसंगकौंरंगनहींकछुलागैं ॥ गृहब्योहारपेलिगुडियनकोजवलगिहीजियभावैं ॥ तवनवजोवनव्हैंमदरामयतियपियकंठलगावैं ॥ तिनचाष्यौंअतिस्वादिअलौकिकस्यामसमधुररसपाक ॥ नागरीदासलगतजाकौंफिरिऔरवस्तुसबआक ॥ १५ ॥ ॥

भाषा—सो जानैं या रसको स्वादपायो ताकौं संसार सुष न भायो तहांपरि ॥ पद ॥

जिनकौंझूठलग्योसंसार ॥ जगसौंनिसप्रहसतसंगतिकारिलेतस

दासुषसार ॥ तेकलेसमैंपरतनकवहूसारअसारविचार ॥ नागरीदासकुसंगतिकरिकैंकौनभयोनहिंष्वार ॥ १६ ॥

भाषा—कुसंगति करिकैं मनुष्यहोय ष्वारबढैं दुखबिस्तारतहांपरि पद ॥

कलिकेजनमविगारतलोग ॥ मूरषमहादोऊवेषोवतहरिकीभक्तिविषैंसुखभोग ॥ कलहकलेसकरतादिनावितवतबिविधिविपतआस्वादी ॥ अैसैंहीसबआयुबितावतटेवतजतनहिवादी ॥ दासीदासकुटंबमित्रसवयाहीदुषरसपगे॥ नागरकोउनांहिसमुझावतसबस्वारथकेसगे ॥ १७ ॥

## पुनःकुसंसग फल दसा पद ॥

कलिमैंतेक्यौंभक्तकहावैं ॥ बृद्धहोयजोविमुषसंगफिरिदेसदेसउठिधावैं ॥ होतनिरादरदुषनहिंमानतनौंवदेतअंतिऔंडी ॥ चेततनहींबजतासिरऊपरयहघरियालकालकीडौंडी ॥ बिनजमुनापरसैंक्यौंउतरतस्वेतकचनिबिचधूर ॥ नागरस्यामवैठिनहिसुमिरतिब्रजकीजीवनमूर ॥ १८ ॥ पुनः

## कुसंगीनिकी दसापद ॥

कलिकेलोगकुमंत्रीसिगरे ॥ देतकुमंत्रविगारतमनकौंआपुनमनकेबिगरे ॥ एकपेटकेकाजाहिंषोवतदोऊलोकसुपअनुचर ॥ निजस्वामीकौंलियैंफिरतहैंज्यौंगहिवरघरवनचर॥ दुखअपमानकौंन्यापतनाहिंलोभीलोभसुपारे ॥ पापभारसबवाकूंलागतदासरहतहैंन्यारे ॥ चतुरथआश्रमआयदेताफिरलाषबरसकोनींव ॥ नागरीदासजानिउनसबकूंमहापापकीसींव ॥ १९ ॥

भाषा—यातैं नर ऐसी विजाती कुसंगको त्याग करैं तब सुख होय तहांपर पद ॥

कदलीबेरढिगपछितात ॥ पवनपरसतहलतत्यौंत्यौंगडतकंटक गात ॥ पीरबिनुवहहरीनितयहनीरावेनकुह्मिलात ॥ संगनागरतजै ताकोहोयजबकुसरात ॥ २० ॥

भाषा—यातैं सब वेद पुराननिको सार कहतहौं कुसंगतैं टरिये अरू सतसंग करिये तहांपर पद ॥

रेमनत्यागिपरमकुसंग ॥ बेगकरिसतसंगआतुरयहैतनछिनभं ग ॥ सकलवेदपुरानकैंविचसारयहउपदेस ॥ गाययेनागरसदाक रिसाधुसंगविसेस ॥ २१ ॥

भाषा—तातैं जनम साधुसंगमैं वितावनौं तहां हरि जनम करम गुन गावनौं तापरि पद ॥

रेमनजनमकरमगुनगाय॥ लोकवेदविसतारसारबिननीरसकथा बहाय ॥ कैसैंबालकेलिकौतूहलगोकुलमांझकरे ॥ कैसैंढुरिघरघर दधिचोरचोकैसैंचीरहरे ॥ कैसैंब्रजवृंदावनविहरेकैसैंगायचराई ॥ कैसैंजमुनाकूलकदमतरमोहनबैनबजाई ॥ कैसैंजग्यपतिनानिपैंभो जनमांगिलयोबलबीर ॥ कैसैंढाकनिकीछहियांमिलिछाकखातआ भीर ॥ कैसैंसुंदरहस्तकमलपरिसातद्यौसगिरधारचो ॥ कैसैंबारबा रब्रजजनकौंबोहोविधिकष्टनिवारचो ॥ कैसैंसरदनिसावनकीनैंरा सकेलिआनंद ॥ कैसैंकामबिजैकरिलीनौंथकितरह्योनभचंद ॥ कैसैंघोषनिवासनिकौंहरिसुखदीनौंबहोभांत ॥ नागरीदासकहो सोनिसदिनजातहैंआयुविहांत ॥ २२ ॥ यापदकेटीकाविस्तार ॥

## अथ हरिबाल लीला पद ॥

नंदसुतनित्यरसबाललीलामगनउदधआनंदगोकुलकलोलैं॥ गउरअरुस्यामअभिरामभइयादोऊललितलरिकानिलियैंसंगडोलैं ॥ भवनप्रतिभवनचलिचोरहींदूधदधरतनभूषनबदनतनउजेरैं ॥ स्वातलपटातढरिकातफिरिहासिभजतचक्रतव्हैभवनोंनिजभवनहेरैं ॥ कबहुगाहिगाहिफिरतपूंछबछियांनिकीकिंकिनीकनककटिमधुरबाजैं ॥ गोपगोपीनिमनदृगनिकोंखिलौनांखिलतमुखकमलमुरिहसनिभ्राजैं ॥ बदनदधिछींटछबिधूरधूसरअंगअबहींतैंमदनगतिपगनिपेलैं॥ कंठबघनांदियेंपायपैंजनझनकदासनागरहियेअंगनाखेलै॥२३ तिहारोधोटाबरजैंक्योंनाहिंमाई ॥ इनबातनवृजकौंनबसैगौबहौतबहौतनाकिआई ॥ मेरीऔरसासकीचुटियासोवतगांठिधुराई ॥ फिरदधखायजगायभज्यौहमभटभेरनिभहराई ॥ चतुरचोरछिपिछलसौंनिकसतआवतनांहिगहाई ॥ अबहीतैंनागरछछंदतेरौअरीबडोऔटपाई ॥२४॥ खेलतभइयादोउमइयाकेआगैं ॥ गोपीऔरनिरखिरहिकउतकपलकपलकनाहिंलागैं ॥ जसुमतगोदतैंबलिचलिआवतरोहिनीतैंघनस्याम ॥ भेलाव्हैंव्हैंसीसभिरावतगरजिगरजिअभिराम ॥ लरिलपटायललामिलिलोटतबालकेलिसुखदानी ॥ नागररितचितैआनंदमैंहसिहसिपरतहैरानी ॥ २५ ॥ इतिबाललीला ॥

## अथ चीर हरन लीला पद ॥

पियजियपीरकछुपहिचान ॥ चीरसबकेहरतकहाचितहरेइहिंमुसक्यान ॥ सीतबसहमजलमगनतननगनिबिनतीमान ॥ नांहिंच

हियतुम्हैंऐसीदेहुअंबरआंन ॥ हासरसआनंदकीनौंचतुरिठगईठांन ॥ प्रीतबाढीपरसपरवरदयोहरिसुषदान ॥ स्यामकैंमनगउरतन छबिब्रसीकचलपटान ॥ रहोनागरीदासकेजियबसनचोरसुजान ॥ २६ ॥ इतिचीरहरनलीला ॥

## अथ गोचार आवन लीला पद ॥

सुनतधुनिबैंनमधुरागगौरीरुचिरचढियनिजभवनतियरवनहिति अगमगी ॥ जानिघनस्यामआगमनिगोकुलवधूअटनिदुहुदिसनि मनौंदामिनीजगमगी ॥ सांझसुपसमयआनंदगहिमहिठईउडिरैंनधैं नवहोगालिनिविचरगमगी ॥ संगगोपालनटवेपिराहिदेखिसबपलकन हिंलगतमुखअलकरजसगमगी ॥ कइकहसिफूलडारतकइककांकरी कइकमगछाडिरहिसांकरीलगिमगी ॥ नागरीदासहरिमाधुरीपानक रिरहिनकछूठौरिमतिमदनबसडगमगी ॥२७॥ इतिगोचारनलीला ॥

## अथ बैनगीत पद ॥

सुनिरीसषीसुषदाई ॥ देषिअमलसरदरितुआई ॥ आईसरदगत पंकभुवभयेसुच्छअंबुअकासहैं ॥ कुंजकाननअतिप्रफुल्लतछईकुसम सुबासहैं ॥ ठौरिठौरिसरोवरीबिचअमलकमलनिपुंजरी ॥ तहांभ्रम तअलिंदमातेकरतआतुरगुंजरी ॥ सुभगवृंदावनअवनिबहैंत्रिविधि रोचकपवनहैं ॥ दासनागरदेषितिंहिठांकरतमोहनगवनहैं ॥ २८ ॥ उरमंडितवनमाला ॥ डोलैंगायनिसंगगुपाला ॥ संगगायनिकैंगु पालावेषिनवनटवराकियैं ॥ मोरपच्छिप्रसूनपुंजप्रवालजूरासिरादियैं ॥ कंजकरननिकानिंकातनधातगुंजावलिलसैं ॥ दसनकिरननिजारि

कोउरहारफैलततबहसैं ॥ मदबिघूर्नितनैंनसोहैंबंकभौंहैंमनहरैं ॥ दासनागरस्यामघनलेंपिमुरलिकाअधरनधरैं ॥ २९ ॥ पसुपंछीचहुं दिसरी ॥ सुनिधुनिगानदेहसुधिबिसरी ॥ बिसरीजुसुधिपगम्रगच कितचितमुषनकहुंकनितृनाछियैं ॥ धेनुवरपतनीरनैंननिनाहिंबछरा पयापयैं ॥ थक्योमंदसमीरसुनिद्रुमपातहुनपल्लवहलैं ॥ बिथकिज मुनाजलरह्योरथभाननाहिंआगैंचलैं ॥ नभविमाननिगिरतसीतियप तिउछंगनिवारिदी ॥ दासनागरसुनतधुनिसुरबधूदेहबिसारिदी॥३० रीतैंकौनपुन्यतपकीनौं ॥ पियकोअधरसुधारसलीनौं ॥ लीनौंअध ररससुधाबनमैंअरीबैरनबांसुरी ॥ हमभवनतलफतफिरतइतउतकि योधीरजनांसुरी ॥ उडतअंचरउरजउघरतबैंनधुनिसुधिहारिलई ॥ कवरिछुटिभइसिथिलनीबीमदनपीड़तनिर्दई ॥ कहैंसह्यारिसह्यारि कबहूकबहूआवततांवरो ॥ दासनागरध्यानतनमयभरतअंकनिसां वरो ॥ ३१ ॥ इतिबैनगीतपद ॥

## ॥ अथ जगपतिनी भोजन लीलापद ॥

पूरनब्रह्मनंदके औनां ॥ सुंदरस्यांमकंवलदलनैंनां ॥ कबदेषैंरू पप्रकास ॥ लगीजग्यपतनीनिमनआस ॥ लगीआसउदासजियमैं रहैंडारिउसासकौं ॥ नैंनभरिबनओरचितवैंज्यौंचकोरप्रकासकौं ॥ कह्योजिंहिंछिनस्यामकौसंदेसग्वारनिआयकैं ॥ उठीलैंलैंबिबि धिभोजनचलीआनंदछायकैं॥ धरतपगचंचलतऊभयेपंथकोसकरो रके ॥ चंदचाहनिघुटेछूटेवृंदमनहुंचकोरके ॥ एकरोकीगेहसोत जिदेहसबपाहिलैंगई ॥ दासनागरलालकारिउरमालतिंहिंबालाहिंलई

॥ ३२ ॥ पुनः जग्यपतनीभोजनलीलापद ॥ ढिगआईदुजवाला ॥ रहीइकटकलषिनंदलाला ॥ ठाढेपरमछविपावैं ॥ हरिकरगहिकंव लफिरावैं ॥ कंवलफेरतस्यामठाढेकंवलमुपमुसक्यावहीं ॥ कंवल मालाचरनपरसतकंवलदृगनिढुरावहीं ॥ बामभुजधरिसखाअंसहि धुकेअतिछविपायकैं ॥ तिहींछिनलखिकोटमनमथरहेहैंसिरनायकैं॥ निरखिमोहनमाधुरीदुजबधूप्रानानिवारिहीं ॥ देतभोजननेहआतुर देहकौंनसह्मारिहीं ॥ करतहीनिसत्र्यौसभामिनिसोमनोरथसवठये ॥ दासनागरनंदनंदनप्रीतहांकैंवसमये ॥ ३३ ॥ इतिजग्यपत नीभोजनलीला ॥

## अथ छाकलीला पद ॥

नवलगोपालमिलिकरनभोजनलगे ॥ तीरजमुनाविपुनभीरव होबालकनिहृदैंआनंदभरिपेलिरसरगमगे ॥ छाकलीलाललितकू लकोलाहलनिदिवसभयोजानिमनुकोकलागनजगे ॥ चहूंदिसकुं डलाकारग्वालावलीचारुब्रजचंदउडगननिविचजगमगे॥ कइकछी कांनिकइफूलफलसिलनिपारिकइकदधमधुधरानिवकुलकलैंनगे ॥ किसलैंदलकदलिदलजलजदलजघनिपारिधरतव्यंजनाविविधिपर मकौतुकपगे ॥ स्यामकरवामपरिभातधरिपातफिरिनागरीदासह सिजातबातनिपगे ॥ निरषिविधिकहतमनकहांजग्यभोग्ययेझूठप सुपालकनिकीजुतैंनहिंभगे ॥ ३४ ॥ इतिछाकलीला ॥

## अथ गोवर्द्धन धारन लीला पद ॥

सजनीनिरषिनंदकुमार ॥ धरैंगिरकरवढीछविलषिमदनबहो

वलिहार ॥ ललितअंगतृभंगकटितटिकनककिंकिनिजाल ॥ बंक भुवदृगअलकपरसतचरनपरसतमाल ॥ उदितविचव्रजचंदपूरन तिमरमेटचोघोर ॥ तहांगोपीगनतरइयांभानकुंवरिचकोर ॥ उहां वाहिरइंद्रवरषतप्रलयघनलियेंसंग ॥ दासनागरगोवर्द्धनतरइहांब रषतरंग ॥ ३५ ॥ इतिगोवर्द्धनधारनलीला ॥

## अथ रासलीला ॥

पद ॥ रासरच्योनंदलाला ॥ लीनैंसंगसकलव्रजबाला ॥ अद्भु तमंडलकीनौं ॥ अतिकलगांनसरससुरलीनौं ॥ लीनौंसरससुरराग रंजितबीचामिलिमुरलीकढी ॥ हौंनलाग्योनृत्यबहौविधिनूपुरनिधु निनभचढी ॥ डुलतकुंडलखुलतबैंनीझुलतमोतिनिमाला ॥ धरतप गड़गमगाविवसरससरासरच्योनंदलाला ॥ चितहावभावनिलूटैं ॥ अ भिनयद्रगभौंहनिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुकअंक मालभरिझेलत ॥ झेलतजुभरिभरिअंकनिसंकतमगनप्रेमानंदमैं ॥ चारुचुंबनिअरुउगाराहिधरततियमुखचंदमैं ॥ उडतअंचरप्रगटिकु चबरग्रंथपटकसछूटैं ॥ बढयोरंगसुअंगअंगाचितहावभावनिलूटैं ॥ प गनगतिकउतकमचैं ॥ कटिमुरिमुरिमध्यलचैं ॥ सिथलकिंकनी सोहैं ॥ मुकटलटकिमनमोहैं ॥ मोहैंजुमननटमुकटलटकनिमट किगतिपगधरनिकी ॥ भंवरभरहरिचहूंदिसछबिपीतपटफरहरानि की ॥ गिरचोलखिमनमथमुरछलैंभजीरतिमुखमधुअवैं ॥ नचत मनमोहनतृभंगीपगनिगतिकउतकमचैं ॥ वृंदावनसोभाबढयो ॥ तापरिव्योमबिमाननिसौंमढयो ॥ दुंदभिदेवबजावैं ॥ फूलनिअं

जुलिवहोवरपावैं ॥ वरपैंजुफूलनिअंजुलीवहोअमरगनकौतकप गे ॥ विविसअंकनिनिजवधूहियनिरखिमनमथसरलगे ॥ व्हैंगयेच रथिरसुथिरच्चराथिरसरदपूरनसासिचढ्यो ॥ दासनागररासअवसर वृंदावनसोभावढ्यो ॥ २६ ॥ पुनःपद ॥ रह्योरंगखेलतरासरसा ला ॥ तुटिगयेहारछुटिगयेअंचरश्रमडगमगनमराला ॥ जुवतिजु थजुतधसेजमुनाविचमदनमोहनातिंहिंकाला ॥ क्रीडतजनूंकरनी संगलीनैंमत्तदुरदनंदलाला ॥ गोरैंअंगमहाछविपावतभीजेवारवि साला ॥ मनौंसीतलचंदनपुतरीनसौंलगीलपटिअहिमाला ॥ छवि सोछींटनिखेलमचावतप्रेमविवसव्रजबाला ॥ जनूंउच्छवकालंदीग्र हउछरतमुक्तिनिकेजाला ॥ वाहुसुंडअवगाहिनीरवलवीरचलेगज चाला ॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरमिआयेगेहगुपाला ॥ २७ ॥ इति रासलीला दोहा ॥ इंद्रप्रस्थजमुनांनिकट । भवनपुलिनढिगचार ॥ तिंहिंठांपदरचनांकरी । मोमतिकेअनुसार ॥ २८ ॥ अष्टादससत पंचहैं । वरपपोषसुदिमास ॥ पदप्रबोधमालाकियो । ग्रंथनागरीदा स ॥ २९ ॥ इतिश्री ग्रंथपदप्रबोधमालासंपूर्णम् ॥

## श्रीजुगलभक्तबिनोदग्रंथ ॥

दोहा ॥ भक्तनिकौंअतिहरिहिप्रिय । हरिहीप्रियनिजभक्त ॥ सिर नांऊंतिनकेचरन । हरनिदुसहदुखजक्त ॥ १ ॥ कृष्णभक्तवत्सलप्रग टि । भक्तहेतअवतार ॥ तिनकौंतिनकेभक्तको । कहूंसुजसश्रुतसार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ मिथुलापुरहैभक्तनिवास । दुजश्रुतदेवनृपतिवहुलास ॥ तिन केनैंननिवढीपिपासा । नितिप्रतिरहैंहरिदरसनआसा ॥ सुनतसदा

गुनिगानस्यामके । भूलिगयेसबकामधामके ॥ तिनसुभस्वप्नेंनअवरेपे । कदलीअंबफलेबहुदेषे ॥ दोउप्रातसोवततैंजगे । अंगदाहिनैंफरकनिलगे ॥ आंगनबिचपगपंजनडौलैं । उडिकमलनिपरिकरतकलोलैं ॥ सुनतबचनसुभमुखतेंकढे । सहजहीहरपहियेमैंबढे ॥ कृष्णनांहिंभक्तनसौंऊरन । तेआयेकरनमनोरथपूरन ॥ दौरिचलेसुनिकैंअगमने । प्रेमातुरचित्तदोऊघने ॥ निरपिस्यामजगमोहनरूप । बिवसव्हैंगयेदुजअरुभूप ॥ संगदेवरिषजगहितकाज । श्रीशुकादिचहुंओरसमाज ॥ दुजनृपभक्तदोऊजेआये । बिनयबोलिप्रभुगृहपधराये ॥ रिषनिसहितकरिहैंद्वैदेह । स्यामसिधारेभक्तनिगेह ॥ चलेजातहरिजनदोउआगैं । पैंडपिछौंहैंपलकनलागैं ॥ बिथुरतमोतीवारतराजा । दुजदुहुंमुठिउछारतलाजा ॥ भूपतिसज्यारुचिररचाई । बिप्रचटाईआयबिछाई ॥ उतसुगंधभरेकंचनवेला । इतैंछिरकिधरेआगैंढेला ॥ उतहिंबिविधिकुसमावलिधरी । इंहिंरापीडुवालैंहरी ॥ उतहिंगुनीगुनप्रगटतसांचे । इतहिंमगनमनदुजहीनांचे ॥ उतसंगीतसुघरसरसांहीं । इतयहकूदतहरतनाहीं ॥ उतछबिजटीनटीसृगआंपैं । इतपांसूंकटिओंडीकांपैं ॥ उतनृपचंवरढुरावतहाथ । प्रेमबिवसनिरषतजदुनाथ ॥ दुजफौरिलैंअंगुछाफेरत । कृष्णकृष्णप्रेमातुरटेरत ॥ मनिमुक्तावलिभरीभारती । रानीनिजकरकरतआरती ॥ पहरिदुजबधूकांमरिधोती । चूंनदियाकरिकीनीजोती ॥

॥ दोहा ॥ दुहनिआरतीकरिधरी, दुजत्रियअरुनृपनारि ॥ प्रेमबिवसदोऊभई, बदननिहारिनिहारि ॥ ३ ॥ संतसदनपावनकरे, पूरेमनकेकाम ॥ एकप्रेमकैंबसभये, भक्तवत्सलघनस्याम ॥ ४ ॥ चलेदु

हुनिकेभवनतैं, दुहुनिकोभलोमनाय ॥ हरिपीतांवरपौंछदृग, कंठलगायलगाय ॥ ५ ॥ अंतरकीजानतसबैं, सुंदरपरमप्रवीन ॥ क्यौंबिसरैंऐसोप्रभू, भक्तजननिआधीन ॥ ६ ॥ अष्टादससतअष्ट पुन, संवतमाघसुमास ॥ जुगलभक्तगुनग्रंथयह, कियोनागरीदास ॥ ॥ ७ ॥ निकटकमाऊपरबतनि, विकटबिटपकीभीर ॥ तहांग्रंथरचनांभई नदीकौसकीतीर ॥८ ॥ इतिश्रीजुगलभक्तबिनोदसंपूर्णम् श्रीकृष्णचंद्रभक्तिवत्सलौजयति ॥

# अथ भक्तिसार ग्रंथ लिख्यते ॥

## अथ तप बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुपदरजबंदिकैं, करतग्रंथउच्चार ॥ इंहसंसारअसारमैं, एकभक्तिहैंसार ॥ १ ॥ महाउग्रतपकष्ठकरि, करतपर्बतनिबास ॥ कृष्णभक्तिबिनुहैंवृथा, राजस्वर्गकीआस ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ पंचानलसाधैंपौनबांधैंनासागाहिगाहिसाहिसाहिसीतदेहतपकौंबढांवहीं ॥ सेवतविषमबनबसनबकुलअंगभोगसौंउदास महाजोगदरसांवहीं ॥ अधोमुखऊर्द्धमुखभसमलगावैंगातपातकंदषनिपातकष्ठउपजांवही ॥ ऐसेव्हैप्रसिद्धहोतनागरनासिद्धजौलौंगोकुलअवाधिलीलामुखनहिंगांवही ॥ ३ ॥

## अथ अष्ठसिद्धवर्ननं ॥

अष्टसिद्धजाकौंकहत, करामातसबजक्त ॥ वादीगरकेखेलसो, बिनाकृष्णकीभक्त ॥ ४ ॥ जथाउदाहरन ॥ कवित ॥ सिंहहोतसर्प

होतगजहोतगैंडाहोतकवहूतनमूक्ष्मव्हैंजहांजहांजांवहीं ॥ इच्छा रूपधरिधरिविचरतविस्वमांझ कइकसहस्त्रकोसछिनमैंव्हैआवहीं ॥ पूजैंसबसिद्धपायभयेहैंत्रिकालदृष्टिजाकैंआगैंअष्टासिद्धठाढीसिरनांवहीं ॥ ऐसेभयेंनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलामुपनहींगावहीं ॥ ५ ॥

## अथ निर्गुनमत बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ मूलजानिनिर्गुनभजैं, करतपूरपाछिपाठ ॥ छाडिकृष्णफलअमृतकौं, मूढचचोरतकाठ ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ घटहीमैंब्रह्मकहैंघटहीमैंतीरथघटवटरमैयारामनाममुखलांवहीं । अलपनिरंजनकीजोतिहीकौंजानैंरूपगुनकौंनमानैंसुन्यसांनिलैंबतावहीं ॥ औरकौंनदेपैंएकदेपैंनासाअग्रवोरइंद्रीसबजीतीमनकितहूंनजांवहीं ॥ ऐसेभयेनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलामुखनांहिं गावहीं ॥ ७ ॥

## अथ केवल पांडित्तता बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ वसतसरस्वातिकंठनित, कृष्णभक्तिहियनांहि ॥ जगतअविद्यावहतये, वहेजुविद्यामांहि ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ सामबेदजजुरअथर्वनऔरिगबेदजानैंबिनभेदजाकेजिभ्याअग्रआंवहीं ॥ बांवनउपनिषदसास्त्रन्यायसांष्यओपातांजलमीमांसाआदिपढिकैसुनांवहीं ॥ संमृतअठाराजाग्यवल्कमिताक्षराटीकाअवरपुरानपढिपंडितकहांवहीं ॥ ऐसेभयेनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलामुखनाहिंगांवहीं ॥ ९ ॥

## अथ केवल चातुर्जता बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ बहुगुनगनतन्नमैंबसैं, जोनभक्तिकोलेस ॥ नीकोऊ फ़निबसैं, बिनानृपतिज्यौंदेस॥१०॥कवित्त ॥ संसकृतबोलैंअरुबो पुन, सुभापाकंठबाकबानीबडेचातुरकहांवहीं ॥ गानमैंसुजाननव सकेबपानवानबातनबिधानकहिजगकौंरिझावहीं ॥ रचनारचतका व्यनांनांछंदबंदनसौंसुघरसभाकेमांझवाहवाकहांवहीं ॥ ऐसेभयेना गरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलामुखनहिंगावहीं॥११॥

## अथ हरिभक्ति वहिर्मुख सप्त द्वीपराज्य बैभव बर्ननं॥

॥ दोहा ॥ सुरपतितैंबैभवअधिक, उदयअस्तलौंराज ॥ यहप्र भुताईस्वपनसुख, भक्तिबिनाकिहिंकाज ॥ १२ ॥ छंद भुजंगी ॥ जटेस्वर्णकेधामलालंप्रवालं ॥ झरोषानिझांकीबंधीमुक्तमालं ॥ कढैं रंध्रजालीअगरधूपधूमैं ॥ पुरैंचौकमोतीनसौंरत्नभूमैं ॥ करीनांहिभ क्तैंगयोभूलिकर्त्तार ॥ जुषोयोवृथाजन्मनिर्धारनिर्धार ॥ १३ ॥ जुरेजोरिगढद्वारगजवाजमाते ॥ भरेभूपदर्वारनांहींगनाते ॥ सजैंपालकीनालकीरत्थवाजी ॥ लियेंद्वारठाढेदरोगामिजाजी ॥ करीनांहिंभक्तैं० ॥ १४ ॥ समांनेतनेबेलिबूंटाजरीदी ॥ बिछीकालि यांदरविलायतखरीदी॥लगेपीठितकियाजरीदोजनीके॥बनीसूजनी फ़रसमीरंमनीके ॥ करीनांहिभक्तैंगयो० ॥ १५ ॥ मनौंतेजसिंघा सनंभानभ्राजैं ॥ तहांछत्रछाजैंमहाराजराजैं ॥ दुहुंघांचलैंचौंर चारंसुढारं ॥ महातेजभूपंसरूपंअपारं ॥ करीनांहिभक्तैं० ॥ १६ ॥ लियेस्वर्णआसापरद्वारठाढे ॥ बतावैंअदबहौतइतमांमगाढे ॥ बजैं

द्वारनीसानऊंचेसुहाये ॥ सुनैंसब्दजेतेसवैलैंरिझाये ॥ करीनांहि भक्तैं० ॥ १७ ॥ सजैंअंगभूषनृपरेआंनिआगैं ॥ लियेबीनवीना गुनीरागरागैं ॥ कियेनारिसिंगाररंगीअनंगी ॥ नचैंपातुरीचातुरी सौंसुधंगी ॥ करीनांहिभक्तैं० ॥१८॥ बडीसैंनताकैंजुसन्नाहसाजैं॥ मनौंमेघकारीघटासीबिराजैं ॥ चलैंसासनांदेसदेसंअभंगं ॥ कोऊ भूपभूमैंजुरैंनांहिजंगं ॥ करीनांहिभक्तै० ॥ १९ ॥ पढैजस्सजुद्धं सुसुद्धंप्रसिद्धं ॥ जुरैंभट्टठट्टंतिन्हैंदेतरिद्धं ॥ भईहैंविमलजोतिकीरत् जुन्हाई ॥ छईसिंधुकेतीरलौंहैंवडाई॥करीनांहिभक्तैं०॥२०॥दोहा ॥ कहावनंआश्रमकहा, कहारंककहाराय ॥ करीनजिहिंहरिभक्तितिं हिं, दीनौंजनमगमाय ॥ इतिसप्तद्वीपराज्यहरिभक्तिवहिर्मुख ॥

## अथ सप्तद्वीप हरिभक्त रिषिराज वर्नन ॥

छंदभुजंगी ॥ महाद्रव्यधारीधरान्हैंनरेसं ॥ विभोदेषिताकोल जैंजीसुरेसं ॥ इतेपैंनफूलैंरुभूलैंनमाधौं ॥ तिन्हैंहोतनांहिकभ्रूराज ब्राधौं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुधन्यंसु धन्यं ॥ २१ ॥ रचैंजन्मकर्मादिउत्सवसुहाये ॥ मनौंनंदगोकुल धरैंरूपआये ॥ बजैंसंषझालरजहांहोतअर्चा ॥ कहूंन्हैंकथामैंमहा मिष्ठचर्चा ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुध न्यंसुधन्यं ॥ २२ ॥ सदापरक्रमादंडवतनैंमुलीनैं ॥सुनैंगानगोविंद गाथाप्रवीनैं ॥ अलंकारसिंगारहरिकेवनावैं ॥ रचैंरागभोगंमहाद व्यलावैं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २३ ॥ विभौभूपअमरावतीज्यौं विसालं ॥ धरैंकुंभसिरनीरल्यावैंनृपालं ॥ निजंअंगतैंस्यामसेवा

सह्मारैं ॥ निहारैंकंवलनैंनवहोद्रंव्यवारैं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २४ ॥ वसैंनित्यपुरवागसंतंमहंतं ॥ अवरवृंदगोस्वामिदुजवर अनंतं॥चहुंओरहरिनामगुनधुनिछईहै ॥ सुनैंतैंतिहूंतापतनकीगईहैं करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २५ ॥ लगीहैंटहलहोतवहोविधिरसोई ॥ पकव्वानमेवानकपूरभोई॥ सुआतित्थ्यकररायपायंप्रछालैं॥ पवित्रं करैंभौंनलावंतभालैं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं० ॥२६॥ सुपा रायणंब्रह्मजग्यंकहूंव्है ॥ तहांभजनआनंदप्रेमांचलैंच्चै ॥ वितानंतनै अग्रसौंगंधछायो॥मनौंभक्तिउत्सवधरैंरूपआयो ॥ करैंकृष्णकीभ क्तिकौं०॥२७॥प्रथमकृष्णअर्पणकियैंवस्तुभुक्तैं ॥ रचैंहरिसमंधी रुचिरकाव्यजुक्तैं॥ भुजासंखचक्रादितुलसीसकायं ॥सहजसीतसीत लमुद्दद्दैंसुभायं॥करैंकृष्णकीभक्तिकौं०॥२८॥लसैंचंद्रवत्क्रांतिरिपि राजराजैं ॥ मनौंमांझकलिकालअंबोपआजैं ॥ रहैंराज्यकेकाजमैं भक्तिसाधैं ॥ विविधिभोग्यतिनकौंकछूनांहिवाधैं ॥ करैंकृष्णकी भक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुधन्यंसुधन्यं ॥ २९ ॥ दोहा ॥ तनमनधनकरिहरिभगत, करैंनृपतिजोकोय ॥ राजकाज सुखभोगसौं, तनकनबाधाहोय ॥ ३० ॥ करैंभक्तिव्रजरवनकी, भू पभवनकेमांहि ॥ महिमाजाकेभागकी, बरनिसकैंकाबिनांहि॥३१॥ दोहा ॥ कुंडलिया ॥ आपकुंडगोलकपिता, पित्रपिताकानीन॥ ल खोसुनागरभक्तजस, पंडवनित्यनवीन ॥ नित्यनवीनोसुजसकृष्ण मिश्रतहैंजिनको, भयेसप्तदीपेसवहोतनृपनांवनतिनको ॥ पावन कारीसुजसप्रचुरपांडवजगजापै, पुनिपुनिकरीसहायस्यामसारथि भयेआपै॥३२॥दोहा॥ महाकठिनकलमैंनअब, औरभक्तसरसात ॥

मुरलीधरधनुधरनकी, कीजैनिसदिनबात ॥ ३३ ॥ कवित्त ॥ आ योकलिकालअतिकलहकलेसछायोतामैंलैंअपनपेकौंकैसैंकैबचाइ यैं ॥ जग्यदानतपमांझचहैंदेसकालपात्रपुनिफलतुच्छस्वर्गराजभोग पाइयैं ॥ कीचहीसौंकीचधोयैंमिटैनमलीनताईकरिकैंबिमलभक्ति सुखसरसाइयैं ॥ दसरथनंदओनागरनंदनंदनकीवातैंकहिकहिनिसि दिवसविहाइयैं ॥३४॥ मिटीभूमिलषमीनरनिबडीआयुमिटीमिटीहैं अरोगगतदुखदरसाइयैं ॥ मिट्योधर्मकर्मप्रीतसज्जनसुहृदताईमि ट्योधीरहियपीरपारनांहीपाइयैं ॥ छायोकलिकालमहापायनदवा योदौरयातैंअबवोटबेगसाधनकीजाइयैं ॥ दशरथनंदओनागरनंद नंदनकीबातैंकहिकहिनिसदिवसाबिहाइयैं ॥ ३५ ॥ कीरतनश्रवण करेतैंनांहिलगैंधनअरुकायाकष्टहूनतातैंजीडराइयैं ॥ जाकेगुनसु नैंनिततहीसौंबिढतप्रीतिजासौंप्रीतताकेगुनसुनैंनअघाइयैं ॥ प्रभुज सरसनापवित्रकीजैंबारबारयतैंअबविस्वावीसयहैंजियलाइयैं॥दसर थनंदवोनागरनंदनंदनकीबातैंकहिकहिनिसबासराविहाइयैं ॥ ३६॥ कियैंचर्चासास्त्रकीतोहोतहैंअवस्यबादजहांबादभयोतहांस्वादकहां पाइयैं ॥ जोपैंस्वादजानिजानिलोककथाकीजियैंतोतामैंपरमार थनस्वार्थसरसाइयैं ॥ स्वारथपरमारथहूबिनबादस्वादभरीकथीवा लमीकसुकदेवसोसुहाइयैं ॥ दसरथनंदओनागरनंदनंदनकीबातैंक हिकहिनिसदिवसविहाइयैं ॥ ३७ ॥ अवधिविहारऔविहारब्रजगो कुलकोकरतबिचारनितनौतनहींपाइयैं ॥ सरजुकैतीरअरुतीरजमु नांकेजेवेकीनीहैंललितलीलाकाहियेकहाइयैं ॥ लघुवीरसंगइतसंग ग्वारभरेरंगडोलनिकलोलनिकौंसुमिरिसिहाइयैं ॥ दसरथनंदओना

गरनंदनंदनकीवातेंकहिकहिनिसदिवसविहाइयें ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ यहअबनागरिदासपैं, कृपाकरोहरिराय ॥ कहतसुनततिहारीकथा, सबदिनजांहिविहाय ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ कुंडलिया ॥ सुषपायोपूरन भयें, ग्रंथजुभाषाचार ॥ सतरासैनिनांनवें, हैजघौसगुरवार ॥ हैजघौसगुरवारमाससावनमनभावन ॥ कृष्णपक्षसुभमंत्रसंतजनश्रवनसुहावन ॥ भक्तिसारउच्चारकियोनिजमनसमझायो ॥ नागरिदासनकहूं विमुखकाहूसुखपायो ॥ ४० ॥ दोहा ॥ नागरिदासविचारिकहैं, जितेधर्मकेअंग ॥ सर्वोपरकलिकीरतन, अरुसाधनकोसंग ॥ ४१ ॥ इति श्रीभक्तिसारग्रंथसंपूर्ण ॥ श्रीराधाकृष्णोजयति ॥

## अथ श्रीमद्भागवतपारायनविधि प्रकास ग्रंथ लिष्यते ॥

बचनिका ॥ प्रथम सुंदर ठौरहोयतहां कदलीषंभ बंदनमालावली भूपदीपकरिकैं जथासक्ति रचना रुचिर बनाइयें ताकौंदेखिध्यानउपजैं ऐसीयावस्तुके पात्रहोय तिनकौं आमंत्रनकरि बुलाइये तिनकौं लिखिये यहकवित्त ॥ महाकलिकालघोरपावतनओरछोरभोरसांझनितेहीकुसंगमतिछीजिये ॥ यातेंअबकीरतनब्रह्मजग्यरचनांकोभयोहैंआरभसुखलीजेसुपदीजिये ॥ समयोनचूकनौंहैंसर्वोपरकाजयहैंमनमैंविचारिकैंहमारोकह्योकीजिये ॥ दसधाकोसाधनसमागमहैंसाधनिकोकृष्णकथाकीरतनकोभागआयलीजिये १ ॥ बचनिका ॥ फिरि सुभदिन देखि आरंभकराइये ता आरंभके समैं प्रथम मुष्यश्रोताहोयसो पूजाकरि आरतीकरैं तासमैंगवइया इहआरतीको पदगावैं जथासमैं

राग॥आरतीश्रीभागौतकीकीजैं॥ श्रवनसुनतजीवनफललीजैं॥गोघृतरच्चतकपूरकीबातीनिरखतजोतिजोतिभईछाती॥ जनमजनमकेबंधनजारे॥ भवसागरमैंबहतउबारे॥ तीनतापकरिडारेमंदे॥ नागरीदासफिरतआनंदे॥ २॥

भाषा–फिरितापीछैं सब बैठैं तबगवइया गावैं प्रार्थनांको यह पद राग प्रभातमैं तथा सारंगमैं तथासमय

पद॥ अहोमुनिवाहीकोसुजससुनाय॥ ब्रह्मअगनतैंजरतउबारचोमेरीकरीसहाय॥ वेजदुनाथसधीरनंदसुतसंतनसदासहाय॥ उनकीजनमकरमगुनलीलाआदिअंतलौंगाय॥ वेजगदीसईसगुरुमेरेनांहिनआंनउपाय॥ उनकोश्रवननिपायसुधारसज्यौंचितश्रनतनजाय॥ ऐसोकोअभिमानीपसुताहिहरिच्चरच्चानसुहाय॥ भववेदनिकौंवेदवेदविधिश्रोषददईबताय॥ ब्रह्मादिकसनकादिकनारदमुक्तिकियेहरिराय॥ गोविंदप्रभुकीअमृतकथाहैंसुनतनश्रवनअघाय॥२॥भा०॥यह गायचुकैं तापीछैं श्रोतापढैं प्रार्थनाके कबित॥चढततृविधितापभक्तिछुधामंदभईअंतरजरनचिंतामिटैनामिटाइयैं॥ निद्रानैंनमींटमननागरउचाटअतिरसनाकटुकवैननांहिसरसाइयैं॥करतकुपथपापवढतसंतापत्यौंत्यौंपुन्यवलछीनहोतदुखअधिकाइयैं॥ नरनकैंराजरोगबिमुषतासेटिवेकौंकृष्णकथाअमृतधन्वंतरव्हैंप्याइयैं॥ १॥ ॥पुनः॥कैसैंनंदभौननटनागरप्रगटभये बालकबिनोदकैसैंकीन्हेंसुषदाइयैं॥ कैसैंगोपगनमांझफिरिकैंचरायगायकैंसैबनढाकनकीछांहछाकपाइयैं॥ कैसैंगिरधारचोअरुमुरलीबजाईकैसैंरचीरासकेलिनिसासरदसुहाइयैं॥ बृंदाबनजमुनाश्रीनंदगांवगोकुलमैं जहांजहां

कीह्नीहरिलीलासोसुनाइयैं ॥ सवैया ॥ रूपअसूझकलोगनिकोजुद
याकरिकैंवहियांगहनींहैं । श्रौननिसींचिसुधासबकैंउरश्रंतरदाह
निकौंदहनीहैं॥होबकताहरिभक्तनिकेयातैं मेरीकहींचितमैंलहनीहैं॥
प्यारीकथारसकेजुविहारीकीसोवतुमैंगुनिकैंकहनीहैं ॥ अन्यकवि ॥
द्वादसकंधहिहैंहरिकेतनकृष्णकथाजगपावनकारी । जोव्रजकेलिक
रीसुकहोश्राछैंलागतवैष्णवश्रौननिप्यारी॥क्योंकहैंसवैंगोपीजनवल्ल
भक्यौंमुरलीधरक्यौंगिरधारी। कैसैंवृंदाबनमैंविहरेश्ररुनामभयोकै
सैंकुंजबिहारी ॥ कवित्त ॥ चलीजातआवसोनजांनीजातनावजैंसैं
लीजियेनिकासिकैंबहतभवधारसौं॥ मनश्रभिमानीकितेजनमकोबि
गरैलसुरझैनमूढमहामायाउरझारसौं ॥ श्राएहोहमारैंभागबिगरीसु
धारोजूअमंगलकौंमिटोमहामंगलउचारसौं॥ करुनाकेश्रागरकीभक्त
सुषसागरकोकहियेव्रजनागरकीकथाविस्तारसौं ॥ ५ ॥ यहीव्रजभू
मियेईगिरग्रामद्रुमजातरहेझूंमिझूंमिभरेफूलफलमौरमैं ॥ वहीव्रजवा
सीसंतपरमचतुरश्रोताद्यांईकेउपासीयेपरेहैंप्रेमरोरमैं ॥ मंजुलपुल
नियहीयहीजमुनाकेकूलमिलेदेसकालपात्रकहाकहौंश्रोरमैं ॥ यही
हैंरसिकबिहारीयेईश्रीवृंदाबनकथायाहीठौरकीसुनावोयाहीठौरमैं ॥
॥ ८ ॥ कवित्त ॥ उदतउचारसंनिपावनजगतहोतकिरनिविविधि
लीलानंदलाललहियैं ॥ परमपुनीतमनकोकनदप्रफुलितविमुषक
मोदसमदेपतहीदहियैं ॥ यहैश्रुतिसारमधिनागरसुपदरूपनवधाप्र
कासरसपीवतउमहियैं ॥ तिमरअग्यांनकलिकालकोमिटायवेकौंप्रग
टिप्रभाकरश्रीभागवतकहियैं ॥ ९ ॥ आपकेजोअकुलानिकीवा
नितोवानिहमारीकौंनाकैंलहोगे ॥ श्रापकेचाहकछूकहिवेकीतौचाह

श्रोतांनहींकीकौंचहोंगे ॥ आपजोप्रानगहायहौयामैंतौनागरप्रांनप रायेगहौगे ॥ आपकथामनदैकैंकहौगेतौऔरनिकेमनलैकैंरहौगे ॥ ॥ १० ॥ आयेशुकरूपमहामंगलवधायेआजुभईयहसुभघरीसब निजियारीकी ॥ पांवनतैंपांवनिकियौगृहआंवनिमैंकहांलौंकहौंमैं वातकृपायातिहारीकी ॥ कृष्णकेलिकौतिकसुधाकेंप्यासेनागरयेंबै ठेहैंसमूहश्रोताश्रवनतयारीकी ॥ भागवतलोगनिकौंभागवतकहिये जूलागतहैप्यारीकथाव्रजकेविहारीकी ॥११॥ कौंनैंमैंउपावाकितेनैंक नलग्योहैकोऊतातैंनिसबासरेहींचिंतानितजारिये ॥ आयेतुमप्रेरकप ठायेश्रीकरुनांनिधिबिनतीहमारीसुनिकृपाढारढरिये॥वहुतिकदिनां निकौंबढ्यौहैअंधकारहियेंऔरनबिचारयहनागरसुधारिये ॥ भक्तिम हारांनींउरभवनपधारिवेकौंभागवतदीपकप्रकासबेगकारिये ॥ १२॥ अथ दोहिवा बिजय रामकृत ॥ ॥ कवित्त ॥ कौंनपुन्यकी नैंवसुदेवदेवकीजूकहोपुरुषपुरानपुत्रपायोरूपजोतहैं ॥ तृणावर्त अघबककवकीआदिहतेकैसेंकैसैंदीनौंभक्तिनकौंआनंदउदोतहैं ॥ द्वारावतिजायकहोकीनैंकौनराजधर्मविजैरामकेतोकहोवढ्योनिज गोतहैं ॥ नारायनकथासबकहिकैंसुनाइयैंजूपारायनसुनेनरपा राइनहोतहैं ॥ १ ॥ पुनः ॥ जरय्योतिहुंतापनिसौंजनमअ्न नेकनिमैंबचनपियूषउरअंतरासिराइयैं ॥ विजैराममोहमदाबिबिधि बिकारनकौंपापकेपहारनकौंतूलसेउडाइयैं ॥ दयाकरिदीनानिअ्न सूझनिकीआंषिनकौंअंजनदैग्यानभक्तिरूपदरसाइयैं ॥ नृपतिपरी छतसौंकहीशुकदेवसोईकृपाकरिकृष्णकथाहमकौंसुनाइयैं ॥ २ ॥ ॥ पुनः ॥ कल्हापन्नांकृत ॥ कवित्त ॥ मोहजलप्रवलअथाहजामैं

पूररह्योघेरेमायाजालकहोकैसैंकरिजीजियैं ॥ चहुंवोरसवैपरवारभरेजलजंतुनिकसिनपैयेतामैंदिनप्रतिछीजिये ॥ प्राननाथविनतीकरतसवश्रोताश्रैसैंशुकरूपश्रवनहमारेंमंत्रदीजियैं ॥ वूडेजातसवहीसंसाररूपसागरमैंकृष्णकथानवकाचढायपारकीजियैं ॥ ३ ॥ अन्यसनावढहीरालालकृत ॥ कवित्त ॥ कृष्णव्रजलीलागुनगायवेकोमारगश्रोभक्तिउरश्रायवेकीविधिदरसायहैं ॥ आछेसवसुपनकोसुपहैंप्रगटभुवयहभवसागरतैंजननितिरायहैं ॥ जानमोक्षफलशुकदीनौंहोपरीक्षतकौंहीरालालकहतउपायजियभायहैं ॥ अंतरजरनिचिंताश्रजरिरहीहैंकहाभागवतसुनैंविनुहियोनासिरायहैं ॥ ४ ॥ श्रन्यविनैंचंदवैष्णवीनामचरनदासकृत ॥ कवित्त ॥ श्रुतिरुसमृत्तश्रादिसोधिसोधिदेपेसोतोसवकोसकामताश्रुभावसरसांवनौं ॥ मारगप्रवर्त्ततामैंतापननिवर्तहोतयातैंइनमांझमनवृथाहीभ्रमांवनौं ॥ चरनदासमदिरासौंमदिराहीधोयेंकहाकर्मकियैंकालपैंकलेसहीकरावनौं ॥ तातैंशुकरूपभागवतहीसुनावोहमैंभागवताविनांभक्तिरूपनहिपांवनौं ॥ ५ ॥ पुनःहरिचरनदासकृत ॥ कवित्त ॥ सर्दससिपूरनउजासमैंरमतरासमाननीमनावैंहरिवांसुरीवजायकैं ॥ काननमैंफिरैंसदागौंहननवेलिनिकेप्यारीमुखचंदचारुरहतचितायकैं ॥ व्रजकौंविहारीमनहारीपटहारीजिनलीनौंवांमकरसैलवरकौंउचायकैं ॥ अैसीसुधासानीनिगमागमवपानीपुनिकहियेकहानीदधिदानीकीसुनायकैं ६ ॥ ॥ वचनिका ॥ येकवित्त पढिचुकैं फिरि कथा होय तामैं पहिलैं श्रीभागवत महातम होचुकैं तव श्रीभागवत होय सो द्वेवेर कथा होय एक तो प्रात अरु एक घटिका रात्रिगयें सो पहर पहरही

न्हैं बीच बीच प्रेमानंद उपजत जाय अरु सरीर श्रम करि महा कष्ट पावैं तब आनंद कहा होय तातैं वक्ता श्रोतानिकौं परिश्रम न होय यालिये ऐसैं सुखेन सुनियैं पुनि बीच बीच जथा अवकास जथा समयके विष्णुपद होत जाय यामैं वक्ता हूकौं विश्राम हैं अरु स्वादहू उपजैं ऐसैं कथा होचुकैं तापीछैं वैष्णव पद्धितके विष्णुपद हौंहि फिर नावधुनि सहत प्रदक्षिनां करैं याभांति नित्य सुनत द्वादस स्कंध सर्व पूरन होचुकवेके उत्सवकैं दिवस जथा सक्ति बसन भूषन अलंकृत परकर सहित हूजे फिर श्रीभागवतको बक्ता दंडवत करि पत्रधरि ऊपनैंत करि रहैं तब श्रौता पढैं सो यह कवित्त ॥ तीनंतापतचेतेजकोरिकतरनि जैसैंजामैंजीवजरेसोनजातकछूवैंकहीं ॥ पारायनसमैंमनभावनकैं सावनसौंमेटीरजहियसियराईकौंतवैंलहीं ॥ नागरउरआनंदभोवाढीहरियारीत्यौंहुतीजीअविद्यासोजवासेलौंसबैंदही ॥ वक्ताआपगा जगाजभागवतझरलायेश्रोतासरसायेप्रेमभक्तिकीनदीवही ॥ १ ॥ पुन ॥ नागरकहायदुखसागरमेंपरेहुतेराजसअपारधारत्रानतनपहरैं ॥ हरिकेसमंधसतसंगकेंनरंगरचेकालतैंनिडरभयेहियेमैंनहहरैं ॥ ऐसेहुतेतिन्हैंकृष्णचरितविचत्रकरिरंगडारेरंगमहामाधुरीमैंगहरैं ॥ भागवतचंद्रमाप्रकासकैंकरतउरसुखकौंसमुद्रवढ्योआनंदकीलहरैं ॥ २ ॥ न्यौंतिकैंबुलायेआछैंआयेमनभायेलोगसंतओमहंतआचारजकुलनौगुनी ॥ औरहूसवादीहैंबरनतीनसोप्रवीनजिनकीरहीहैंमिटिगईमतिऔगुनी ॥ नागरउदारवक्ताविविधित्यौंनारानिसौंदईहैरसोईनोंकीसुधासनहौगुनी ॥ पंगतिनभेदकीनौंपंगतिबैठायजथाफेरयो

कथापारसबढाईभूखसौगुनी ॥ ३ ॥ नागरमनफिरैंवह्योकेतोसम
झायकह्योमायाकैंलपेटचैपायपलहूनठहिरैं ॥ हरिसमंधमैंनरहैंथि
रचंचलअतिचलतप्रचंडपौंनजेसैंपटफहिरैं ॥ ऐसोहुतोताहिकृ
ष्णाचरतिविचित्रकहिबोरिडारयोमनमहामाधुरीमेंगहिरैं ॥ भागव
तराकाससिहोतहीउदतहियैंभक्तिकोसमुद्रवाढयोआनंदकीलहिरैं ॥
॥ ४ ॥ अन्य ॥ कीनौंउचारिजिहींछिनतैंभजनानंदआनिछ
योसुछयोहैं ॥ श्रीरसिकेंद्रविहारीजूकीकथाआसवप्यायदयोसुद
योहैं ॥ जेहेअभावकतेईगयेछकिभावकरंगठयोसुठयोहैं । लोयनभी
जरहेसुरहेमनहाथतैंरीझगयोसुगयोहैं ॥ ५ ॥ गाईसोपुराननमैंपा
ईनिधिअनयासयहभूमिछाँडिहमकितहूनजावैंगे । जमुनाजलपान
रुसनानश्रीजमुनाकीरजकौंपरसप्रेमपुलिकासिहावैंगे । वृंदावनमां
हिसदासंतनिकैंबांहवलदंपतिचरित्रचारुसुनैंगेसुनावैंगे । रसिकवि
हारीप्यारीकृष्णकथाआनंदमैंऐसैंहीवितांईसमैंऐसैंहीवितांवैंगे ॥
॥ ६ ॥ अन्य ॥ चाहचितौंनलगीटकलालसौंनेहमईगतिऔरैंभ
योतन । आनंदमैंपवरयोनकछूचितबोरिदयोसुखसागरकेगन ॥
श्रीशुकत्यौंहीकथावागुपालकीमोहनवानीछकायेसबैंजन॥ झूमिझु
केरसमत्तव्हैंबावरेभीजरहेदृगरीझगयोमन ॥ ७ ॥ अन्य ॥ भट्टव्र
जनाथकृत ॥ कवित्त ॥ प्रगट्योप्रथमअनुरागहीअरुनतासौं
भयेसबलालरंगरंजितगहगहे ॥ मिटीमायानिसिचलेनवधाभक
तिपंथसूकेपापपौधाकालिकींनेजेलहलहे ॥ छिपेहरिभजनविमुखम
तिउडगनभाजेकामक्रोधचोरचितकेबहबहे ॥ नागरप्रकासभांनभा
गवतहोयकियेहियकेकंवलमहाआनंदडहिडहे॥८॥ अन्यविजैरामदा

हिवांकृत ॥ कवित्त ॥ पोषेहैंपपीहाप्रानतपतमिटायसबनृत्ततमयूर मनहरपबढायेहैं ॥ हियभूमिमांझभावअंकुरप्रगटभयेप्रीतलताफूली चारुप्रेमतरुछायेहैं ॥ पूरितप्रवाहभक्तिआपगाबढीहैंउररससिंधुभ रिकैंदृगनिउझलायेहैं ॥ शुकमुनिरूपसेहैंबकताजूबिजैरामभा गवतअमृतकोघनबरसायेहैं ॥ ९ ॥ अन्य ॥ कल्हापन्नांकृतक वित्त ॥ ग्यानकोप्रकासभयोआनंदउरानिछयोसबकेअग्यानदुषग येलैकैंपापकौं ॥ वृंदावनधामस्यामास्यामअभिरामनकीसुषदल लितलीलाकरतसुजापकौं ॥ व्यासजूकेबचननिरचनासुनायसुषपा वनकियेहैंमेटिदियेबहुआपकौं ॥ प्राननाथश्रोतांनकेश्रवनसुधाकौं सींचिभक्तिसियराईमंदकीनैंतीनतापकौं ॥ १० ॥ अन्य, सनाव ढहीरालालकृतकवित्त ॥ भक्तिलताअदभुतउलहीजुउरमांझपिय राईनीरसतामिटीसुनिधुनिकैं ॥ नवअनुरागतेईपल्लवप्रगटभयेसींचे सुधाबैंनआपरूपशुकमुनिकैं ॥ हीरालालसांवरेतमालसौंवलितअ तिललितसुमतिआलबालराष्योचुनिकैं ॥ छायरह्योछायासोउछा हतहांसबनकेफूलेमनभक्तनकेभागवतसुनिकैं ॥ ११ ॥ अन्य ॥ मुनसीकन्हींरामकृतकवित्त॥ सतजुगत्रेताकिधौंद्वापुरप्रगटकियोऔ रैंमनभयौसोनकहिवेमैंआवनौं ॥ छुटगीमलीनमतितामैंहुतेलीनअ बप्रगटीनवीनभक्तिहरिगुनगावनौं ॥ कृष्णलीलाकहिवेकीकांननि रहैंगीधुनिरूपमुनिनैंनाजियलालमनभावनौं ॥ कन्हीरामसुषधाम ब्रह्मजग्यरचनांकोहियतैंननिकसैंगौसमयसुहावनौं ॥ १२ ॥ अन्य बिनैचंदवैष्णवीनामचरनदासकृतकबित्त ॥ कारिडारयोछीनतापती नकोप्रबलदुषआनंदअपारआंनिसबकैंहियेंछयो ॥ श्रोतारसभरेअ

रुपरमउछाहभरेभरेनैंननीरप्रेमपीरठाटहैंठयो ॥ चनंदासचित्तक लिकालमांझविस्मयये औरैंगति औरैंमति औरैंलोकव्हैंगयो ॥ अहो शुकरूपब्रह्मसंहितासुनाईततैंसतजुगत्रेताकिधौंद्वापरसमैंभयो ॥ ॥ १३ ॥ महामूढमनताकीकहियेकहानीकैसीजाकोलैंकुसंग च्यारिबेदानिमैंगायोहैं ॥ हियेभरचोकदरजसुयाकेपुनीतकाजव्हैंकैं दयालआपभागवतसुनायोहैं ॥ चरनदासचिरजीव्यौवक्तासुखदरू पतिनयौंविरदभवतारवेकोपायोहैं ॥ होतीनांठौरपरचोजगप्रपंचरौ रताहिगौरकरिदौरभक्तमहलबसायोहै ॥ १४ ॥ श्रवनकरायशुकपु रानअहोवक्काजूसबउरभौंनकियोभक्तिमहारानीको ॥ कृपादृष्टितैं जुकीन्हींसुधावृष्टिचहूंकोदवनंनकहांलौंकीजेअैसीमृदुबानीको ॥ चर्नदासतुमसेतोतुमहींहोमहाराजभक्तिदांनदैवोकामतुमहीसेदांनी को ॥ समरसक्रादिगर्वमेंटिदियेहरिजैसैंआपमैंटथोहैगर्वकलिसेअभि मांनीकौ ॥ १५ ॥ बचनिका ॥ यह कवित्त पढचुकैं ता उपरांइत इत्यादि पद गावैं ॥ पद ॥ मुनिसबलोकपावनकरे ॥ प्रगटिश्रीभागवतकी नौंकनासागरढरे ॥ ल्यायभागीरथसुरसुरीपापपूरबहरे ॥ तुमजुसबउर भवनभवनमैंभक्तिदीपकधरे ॥ कृष्णचरित्रबिचत्ररसमदप्रेमगहवरभ रे ॥ सहजश्रीशुकचरननौकादासनागरतरे ॥ १६ ॥ व० पूजाकरि मुख्य श्रौता आरती करैं तावेर संख दुंदभी भेर प्रणवआदि वाद्यगीत नृत्य करि महामंगल धुनि हौंहि, पुसप और सौगंध चूरन चंदन- की बहुत वृष्टहोय, परसपर तिलककरैं सिरदूबधरैं फूलमाला पहि- रावैं गरैं पायप्रणाम भुजभरि मिलन सर्वकरैं, वैसैंही गद्गद धुनि सहित प्रदक्षिनांलैं साष्टांग दंडवत करि यासुखकौं चिंतवन करत

सब अपअपनें स्थानकजोहि, याकलिकालमैं सर्व जग्य वर्जेतअरु यह केवल ब्रह्मकीरतन जग्य करतव्यहैं सोकरैं, ताके भाग्यको वार्ष्यांनब्रह्मा आपनी आरबल प्रमानकरैं तऊपूरन न होय,ताकौंमनुष्य तुछ आर्बल कहाबरननकरैं ॥दोहा॥ जपतपसंजमनेमव्रत, जोगजग्यकरिपूर ॥ भक्तिभागवतसंगाबिनु, भक्तिनउपजैंमूर ॥ १ ॥ संमृतवेदपुरानहैं, सबहीहरिकेअंग ॥ रंगनलागैंभक्तिको, बिनांभागवतसंग ॥ २ ॥ जक्तभक्तिवहुभांतिकहैं, नानामतकेमांहि ॥ शुकमुखकैंविनुफलद्रवैं, ब्रजरसपावैंनांहि ॥ ३ ॥ नागरिदासविचारिजिय, अफलजायनहिंदेह ॥ चाखिभागवतअमृतफल, जनमसफलकरिलेह ॥ ४ ॥ लखिइच्छाबहुवैष्णवनि, नागरीहितसरसाय ॥ रचनारुचिरचिग्रंथकी, दयोश्रवनमधुपाय ॥ ५ ॥ सतरैसैंनिनांनवा, संवतसावनमास ॥ पारायनजुप्रकासविधि, कियोनागरीदास ॥ ६ ॥ इति श्रीमद्भागवतपारायनविधिप्रकासग्रंथ संपूर्णम् ॥ श्रीराधावल्लभोजयति ॥

---

इति
वैराग्यसागर समाप्त ॥

श्रीः

# नागरसमुच्चय।

तत्रादौ

# सिंगारसागर प्रारंभः।

अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधि
राजमहाराजाजी श्री श्री श्री १०८
श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरि
संबंध नाम नागरीदासजी कृत,

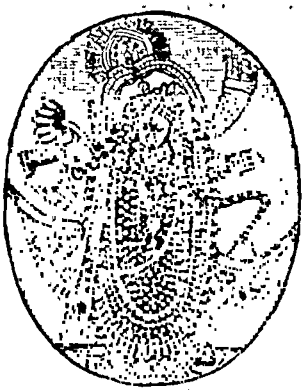
ताकौं

मुंबईमें.

ज्ञानसागर छापखानेमें

छापके प्रसिद्ध किया.

श्रीनृत्यगोपालोजयतितराम्.



श्रीनंदसुतगोपीजनवल्लभोजयति ॥

# अथ
# सिंगारसागर लिख्यते ॥

## ब्रजलीलाग्रंथ ॥

### अथ दसमस्कंधके पूर्वार्द्धानुसार श्रीब्रजलीला नंदगृह जनमोत्सव षंड लिख्यते ॥

॥ रागसोरठ ॥

पद ॥ श्रीवल्लभकुलबंदौं ॥ करिध्यानपरमआनंदौं ॥ धनि नंदजसुमतिरानी ॥ लयोकृष्ण जनमजगजानी ॥ कृष्णाजनमतभयोआनंदगृहमहामंगलठयो॥ घोषउच्छवभीरभारीनभबिमाननसौंछयो ॥ दूधदधिघृतमचीकादौंमनौंभादौंबरसहीं ॥ पोहोपवरषाकरतसुरअहलादअतिजियसरसहीं ॥ नवनिद्धिघरघरफिरतकंवलागोपकुलगनअलिनमैं ॥ छायरह्योबैकुंठतैंसुखअधिकगोकुलगलिनमैं ॥ तिहींछिनतैंसकलब्रजजनसंपदासुखसौंसजे ॥ दासनागरधन्यसोजिहिंपरमहितकरिहरिभजे ॥ १ ॥

### अथ दैत्यबधषंड ॥

झूलतपालनैंहरिराई ॥ भंज्योसकटबकोबनिआई ॥ चकितरहीब्रजबाला ॥ यहकोहैंरूपरसाला ॥ प्रथमरूपरसालधारिकैंलालगहि

लएगोदमैं ॥ कंसरिपुकौंपायपलनांपूतनांभइमोदमैं ॥ करतस्तनपानलीनैंप्रानऐंचिसुसोसमैं ॥ कृपानिधिहरिदईगतिकरिगिरितनषटकोसमैं ॥ जमलाअर्जुनतारिदईमुषमातविस्वदिषायकैं ॥ तृणावर्तअरिष्टअघवकहत्योवच्छफिरायकैं ॥ संषचूडप्रलंबकेसीव्योमधेनुकवहोहते ॥ दासनागरगोपतनहरिकियेश्रासुरसदगते ॥ २ ॥

## अथ दावानल पांनादिक ब्रजरच्छिक लीलाखंड ॥

करिपांनदावानललयो ॥ गहिकाढिकालीअहिदयो ॥ गोपनबैकुंठदिषायो ॥ हरिव्यालतैंनंदबचायो ॥ लयोनंदबचायबौंहौंविधिसकलव्रजरछ्याकरी ॥ सप्तदिनकरधारिगिरवरप्रलयजलमेटीझरी ॥ द्रुमनकेषगनगकेऊपरतिन्हैंकहुंनहिंजलछियो ॥ पर्योपायनइंद्रतवसिरअभैकरगिरधरदियो ॥ गोपगोगोपींनकैंमनसप्तदिनउच्छवरह्यो ॥ कहतजैजैसकलसुरनंदनंदगोविंदपदलह्यो ॥ विविधिलीलाकरतव्रजमैंनंदसुतअतिसौंहने ॥ दासनागरिकृष्णश्ररुबालेमहामनकेमौंहने ॥ ३ ॥

## अथ मांषन चोर लीला षंड ॥

जसुमतिसुतसुषरासी ॥ रसमग्नसकलव्रजवासी ॥ तियधामकामसबभूली ॥ रहैंवालकेलिरसझूली ॥ करतवालककेलिबौंहौंविधिसवनकेमनकौंहरैं ॥ चोरहींदधिदूधघरघरजदपिलैंकौंनैंधरैं ॥ वृंदवांदरअरूसषासबतिनहिंसंगषवावहीं ॥ देषिभवनोभवनआवततहांतैंभजिजावहीं ॥ कहूंबालकचढिअलूषलजाकैंपराफिरसांवरो ॥ रंध्रघटकरिमह्योपीवतनंदसुतमनभांवरो ॥ जग्यमैंश्रावतनकौनैंवेदमंत्रउपायकैं ॥ दासनागरसोवव्रजमैंदहीपातचुरायकैं ॥ ४ ॥

## अथ गोचारन छाक लीला षंड ॥

बनबनगायचरावैं ॥ गावैंअरुबैंनबजावैं ॥ बलिरामकृष्णसुषदाई ॥ वहौलीलाकरतसुहाई ॥ करतलीलाबिबिधिबनमैंसंगबालकमंडली ॥ छाकजैंवतढाकछहियांचितैंचकितकमंडली ॥ चहूंदिसिग्वालावलीब्रजचंदविचअवरोषिहिं॥ ललितलीलाबालकउतकसुरबिमांननिदेषिहीं ॥ परसपरचाषतचषावतहसिहसावतहेतवैं ॥ जग्यभुकक्यौंजूठजैंवतहरेबिधिबछराजवैं॥ सकलजगरह्योहेरिजाकौंसोईहेरनकौंचले ॥ दासनागरकरतभोजनफिरतमोहिलागेभले ॥ ५॥

## अथ वछराहरन लीला षंड ॥

राजसगुनमदफूलिकैं ॥ हरेग्वालवच्छविधिभूलिकैं ॥ फिरितैसेतिहिंठांचितैं ॥ गिरचोचरनचतुर्मुषहीहितैं ॥ गिरचोचरननिदंडज्यौंब्रह्मांडकर्तास्यामकैं॥वौहौरूपचितवतचतुर्भुजविचअवनिवृंदाधामकैं ॥ डारअरुफलफूलदलद्रुमकृष्णमयसबजानियैं॥अहावृंदावनमहातमकहाकहिजुवषानियैं ॥ कहींहरितरवरनिमहिमांआपुसुषबलबीरकौं ॥ रहोतिनकौंध्यांनरहेजियपरासिजमुनानीरकौं ॥ धन्यवहवनभूमिजिहिंठांलालपदपंकजधरैं ॥ दासनागरधन्यसोनरबासवृंदावनकरैं ॥ ६ ॥

## अथ जग्यपत्नी लीला षंड ॥

पूरनब्रह्मनंदकैंअैनां ॥ सुंदरस्यामकमलदलनैंना ॥ कबदेखैंरूपप्रकास ॥ लगीजगपत्नीनमनआस ॥ लगीआसउदासजियमैं

रहैंडारिउसासकौं ॥ नैनभरिवनओरचितवैंज्यौंचकोरप्रकासकौं ॥ कह्योजिहिछिनस्यामकोसंदेसग्वारनिआयकैं ॥ उठीलैलैंविविधि भोजनचलीआनंदछायकैं ॥ धरतपगचंचलतऊभयेपंथकोसकरोर के ॥ चंदचाहिनघुटेछूटेवृंदमनहुंचकोरके ॥ एकरोकीगेहसोतजिदे हसवपहिलैंगई ॥ दासनागरलालकरिउरमालतिंहिबालहिलई ॥७॥

## पुन जग्यपत्नी लीला षंड ॥

ढिगआईद्विजबाला ॥ रहीइकटकलपिनंदलाला ॥ ठाढेपरमछ त्रिपावैं ॥ हरिकरगहिकंवलफिरावैं ॥ कंवलफेरतस्यामठाढेकंवल मुषमुसकावहीं ॥ कंवलमालावरनपरसतकंवलदृगनिढुरावहीं ॥ वामभुजधरिसषाअंसहिंधुकेअतिछविछायकैं ॥ तिहींछिनलषिको टिमनमथरहेहैंसिरनायकैं ॥ निरषिमोहनमाधुरीदुजवधूप्रानानिवार हीं ॥ देतभोजननेहआतुरदेहकौंनसंम्हारहीं ॥ करतहीनिसद्यौसभा मिनसोमनोरथसबठये ॥ दासनागरनंदनंदनप्रीतहीकैंबसभए ॥८॥

## अथ चीरहरन रास बरदांन वेणुरव आरंभ षंड ॥

गोपीजनजमुनांन्हावैं ॥ देवीपूजिपूजिसिरनावैं ॥ कात्यायनी बरदीजैं ॥ हमारेनंदपुत्रपतिकीजैं ॥ नंदसुतचितचोरआएलएचीर चुरायकैं ॥ प्रीतिसांचीनिरखिकैंदयेचीरबरमुसकायकैं ॥ आयहैंअ वसरदरात्रीरमणमिलिकरिहौंजबैं ॥ सकलपूरनकामव्हैहौंमदनमद मोचततवैं ॥ सरदनिसिआईजुवेबहौमालतीफूलनछई ॥ उदितपूर नचंदकिरनैंसर्ववनव्यापकभई ॥ अतिमनोहरसमैंनिसिमुषवेणुहरि अधरनिरली ॥ दासनागरमहामोहनमंत्रधुनिदूतीचली ॥ ९ ॥

## अथ रासारंभ षंड ॥

बंसीस्यामबजाई ॥ सोमधुमयधुनिछाई ॥ परीश्रवनमैंजाकैं ॥ सुधिनांहिंरहीफिरताकैं ॥ रहीनांहिंनसुधीतनकछूजिहिंमनकश्रवन निसुनी ॥ गईछूटिसमाधिसिवकीविवसमनग्रीवाधुनी ॥ द्रुमनिपरि जाकिथाकिरहेषगरुक्योजमुनानीरहैं ॥ हलतनांहिद्रुमावलीथकिर ह्योमंदसमीरहैं ॥ चलीसुनिब्रजवालमारगनादअमृतधारकैं ॥ गेह तजिकैंनेहआतुरलोकवेदबिसारकैं ॥ रुकीसोनहिरुकीगृहबिचगई तनताजिभामिनी ॥ दासनागरस्यामघनसौंमिलीचलिज्योंदामिनी॥

## अथ रासरमण लीलाषंड ॥

अलीअवलीसबठाढी ॥ मनुचित्रचितेरैंकाढी ॥ रहीइकटकनैंन बिसाला ॥ मधिनिरषितृभंगीलाला ॥ माद्धिनटनागरतृभंगीकंवल मुषमुरलीधरैं ॥ बंकभुवमनहरनदृगसिरमुकटबनमालागरैं ॥ हरिम नोहरमाधुरीतियपिवतपललागैंनहीं ॥ जिहींतनजाकेपरेदृगथकेपु नितिहींकितहीं ॥ रहेअरबरिस्यामहूइतलषितियनिकीओरहैं ॥ बहो रूपघनमैंपरेदृगभयेभरेकेसेचोरहैं ॥ भीरबहोचंदाननीबनभयोरू पप्रकासहैं ॥ दासनागरसबनिहियमैंरासकरणहुलासहैं ॥ ११ ॥ पुनरासषंड ॥ मनमोहनहितनातैं ॥ हसिकहनलगेकछुबातैं ॥ सुन तबिंगकेबैनां ॥ भरिलीनेतियजननैनां ॥ लयेभरिकैंनैनसबरुषरोष जुतभुवभंगकी ॥ जगतविजईहितषिचीहैंमनहुंचापअनंगकी ॥ स तरहैंहैंबंकचितईलगीछबिअभिरामिनी ॥ मंदसहजसुछंदसौंफि रदयेउत्तरभामिनी ॥ तवबिहसिरसदृष्टिसौंपियसबनकौंअंकनि

भरी ॥ आरंभगानसुरासहितमिलिमहामोहनधुनिकरी ॥ करनसौं करजोरिहैंद्वैतियभईबिचश्यामकैं ॥ दासनागररच्योमंडलमध्यवृंदाधामकैं ॥ १२ ॥

## अथ रास विरहोत्पन्नलीला षंड ॥

बिहरतबनबनवारी ॥ कहुंदुरिगयेढिगलैंप्यारी ॥ विरहबिबस तियहेरैं ॥ संगमधुपगनघेरैं ॥ घेरैंमधुपसुकमोरलषिमुषओररहतचकोरहैं ॥ बिकलभईबूझतलताद्रुमकितैंनंदकिसोरहैं ॥ नीरनैननिपीरहियबिनधीरबिलपतडोलहीं ॥ कितैंहोहरिप्राणनाथयौंसहितआरतिबोलहीं ॥ लालकीलीलाललितमिलतिहिंसमैंसबहिनरची ॥ वढ्योबिरहविषादजियसुकवारिअबलातनतची ॥ पियहिहेरतफिरतटेरतसकलबनमैंरगमगी ॥ दासनागरिचंदसौंबिछुरीकिरनजनुजगमगी ॥ १३ ॥

## पुनिरास विरहोत्पन्न लीला षंड ॥

प्यारचरनचिन्हपाए ॥ रजसौंदृगसीसलगाए ॥ पियसुषसौंसुषभीनी ॥ कछुकोपीनाहिप्रवींनी ॥ नहिनकोपीप्रेमवोपीसंगगोपीजानिकैं ॥ बहुरिदेषीवहीठाढीतजीपियसुषसानिकैं ॥ रगमगीअलकैंसिथलदृगपुनिचलतधारानीरहैं ॥ तुट्योमोतिनहारउरतैंछुट्योअंचरचीरहैं ॥ डगमगतपगधुकिधरनिपरनहिंसकतराहिगहिधीरकौं ॥ मनहुंदीपकलोयलहकतपरसमंदसमीरकौं ॥ छुवतसुखद्रुमपातपल्लवसकतनहिंनिरवारिकैं॥ दासनागरिउठतपियकौंकासिकासिपुकारिकैं ॥ १४ ॥

## अथ हरिप्रागट्य व्रजबाला मिलनषंड ॥

महासघनवनआवैं ॥ तहांजीकोलोभनल्यावैं ॥ अपनैंअंगउजेरैं ॥ रूपकोसागरहेरैं ॥ रूपसागरसौंविछरितरफरतबिधिज्यौं मीनकी ॥ देषिकैंदुरिद्रुमनिमैंपिययहैंगतिगोरीनकी॥ लालदृगभरि नीरलीनैंपीरजियव्यापकभई ॥ तबहितिनमैंआयप्रगटेसलजमुष ग्रीवानई ॥ आनंदतवकोकह्योपरतनबहोरिबैठेपुलिनमैं ॥ रंगबाढ्योदुहूंदिसिहितबहसिबातैंपुलिनमैं ॥ रिनीहौंतिहारोकहतवारत अपनपोस्यामहैं ॥ दासनागरव्रजबधुनिलयेमोलहारिबिनदामहैं॥१५

## अथ रासलीलाखंड ॥

नितितहैंव्रजबामा। सुंदरछबिअभिरामा॥ दामिनितनदुतिराजैं। मुखकुंडलथहरनिभ्राजैं॥ थहरतकुंडलफहरतअंचलनहिंठहरतउरमाला ॥ खूटतबैंनीछूटतफूलसुपियमनलूटतबाला ॥ सरससगतिनिघटतनउघटततत्तरंगताक्किटकाटिलौंनी ॥ ततथेईथेईथेईधुमकटतकथोपरनानिपरतसुठौंनीं ॥ झंझंझनकतकिंकिंनिनूपरखनकत बलयाकंकन ॥ उरपातिरपनटअलगलागमैंलेतभुजनभरिअंकन ॥ चंचलतनचलदलगतबिलुलितद्युतिअलातसीसोहैं ॥ नागरीदाससुघरनितकसबगुनप्रगटतमनमोहैं ॥ १६ ॥ पुनिरासलीलाखंड ॥अनूपमरासवन्यौहैं ॥ सुरतांनबितांनतन्यौहैं ॥ गिरयोकामकामकेबाननि ॥ नभमोहेदेवविमानानि ॥ देवबिमाननिकौतिकमोहेफूलनिकौंवरसावैं ॥ प्रेममगनकौतूहलदेखतदुंदुभिपरनमिलावैं ॥ निरखिसुरबधूपीडतमनमथसवसुधबिसरिगईहैं ॥ कबरीछुटताकिसतकुस

मावलिनीवीसिथलभईहैं ॥ मधुमयरागमुरलिकामोहताथिरचरचर थिरकीनैं ॥ उडगनसहितचंद्रमाविथाकितपैंडनआगैंदीनैं ॥ मुकट लटकअरुहस्तकभेदनअदभुतरंगबढ्योहैं ॥ नागरिदासरासतैंरस मयनभलौंशब्दचढ्योहैं ॥ १७ ॥ पुनिरासलीलाखंड ॥ श्रमकनसु खव्हैंआये ॥ मनुचंदसुधाप्रगटाये ॥ खिसवेंनांझुकिमोहैं ॥ सिर सिथलचंद्रिकासोहैं ॥ सिथलचंद्रिकामुकटझुकौंहौंश्रमितअंगछवि पाये ॥ उपजतगतिकौतकपायनमनडगमगडगानिडुलाए ॥ स्वेदसु वासअंगप्रगटतभईसंगभौंरभहरावैं ॥ गउरस्यामतननीलपीतपटफै लफैलफहरावैं ॥ गिरिगिरपरताविमलनगभूषनरहोजुतनसुधिनां हीं ॥ रसानंदसागरअतिवाढ्योमगनभयेतिहिमांहीं ॥ मंडलरासवी चदोउउरझेगरबांहीपियप्यारी ॥ नागरिदासवसौहियराधाअरु श्रीकुंजविहारी ॥ १८ ॥

## अथ रासोत्तरजलविहार खंड ॥

रासमैंरंगरह्योहैं ॥ सोनहिजातकह्योहैं ॥ श्रमितअंगसरसाये ॥ तबचलिजमुनांआये ॥ आयेजुजमुनांतटपुलिनतहांकंवलसौरभआ वहीं ॥ धसेजलरसमत्तक्रीडताछिरकितनाछिरकावहीं ॥ अंजुलनिज लछुटतछविकविकहतजुगलविचारिकैं ॥ गृहतरनिजाउछाहमुकता मनुउछारतवारिकैं ॥ चंद्रिकामैंचमकिबूंदैंगिरतयौंछविपावई ॥ जा निवहौउडपतिअवनिउडिउडिगगनतैंआवई ॥ पारजातकेजोत मयजनुफूलखेलतफैलहीं ॥ दासनागरिजलकलोलतछविसौं छिरकतछैलहीं ॥ १९ ॥

## पुनःजलविहारखंड ॥

भीजेतनछबिपावैं ॥ पियकेलखिनैंनासिरावैं ॥ प्रेमसनीतियजलसनी ॥ राजतज्यौंकंचनकुमुदनी ॥ मनहुंकंचनकुमुदनीजलबीचदुतिजगमगरही ॥ भईलखिब्रजचंदप्रफुलितपरतनहिंसोभाकही ॥ तनछबीलेवारभीजेलगेअतिछबिपायकैं ॥ ज्यौंबचंदनपूतरिनसौंरहेअहिलपटायकैं ॥ कबहुतनजलमगनबिथुरेकचनिबिचमुखदेखियैं ॥ ज्यौंसिवारनचंदउरझेनिरतजलअवरेखियें ॥ रूपजगमगरह्योसलिताखिलीराकाजोतिहैं ॥ दासनागरिरीतिहिंसमैंजलकेलिबहौबिधिहोतहैं ॥ २० ॥

## अथ जलबिहार उतरगृह आगमन खंड ॥

क्रीडतजुवतिनसंग ॥ हरिक्रीडतकोटिअनंग ॥ कामकेलिरसभीने ॥ निसिबिबिधिकुतूहलकीने ॥ कीनैंकुतूहलबिबिधनिसरसमंडलीआनंदछई ॥ रूपसरसनिअंगपरसनिरंगवरसनिअतिभई ॥ नीरबिचबलबीरगजज्यौंसंगकरनिनिसुखलियो ॥ बाहुसुंडादंडसौंअतिअंबुअवगाहनकियो ॥ झोलिसुखसागरचलेनिसनैंनउन्मीलताकियैं ॥ रहिमनोहरमंडलीछकिप्रेमरसमदिरापियैं ॥ काव्यआश्रयभईबातैंसुधाश्रवनसुहावहीं ॥ दासनागरधन्यसोब्रजललितलीलागावहीं ॥ २१

इति श्रीब्रजलीलापदप्रबंधसंपूर्णम् ॥

## अथ गोपीप्रेमप्रकासग्रंथलिख्यते ॥

दोहा ॥ गोपीगोपीनाथके, एकप्रानद्वैगात ॥ तिनहींकौंसिरना

यकैं, तिनकीवरनौंबात ॥ १॥ अथ वचनिका ॥ श्रीकृष्ण उद्धवकौं व्रजपठये, ताको जगप्रसिद्ध प्रयोजनतो यह, जो श्रीनंद जसोदा गोपी गोपनको समाधान करनौं, प्रीति लोकरीति अनुसरनौं, इति प्रथम प्रयोजन ॥ अथ द्वतीयप्रयोजन ॥ श्रीकृष्ण लीलापुरुषोत्तम अवतारी सो जाकैं अभिमान होय ताको अभिमान रहन न दे, सो देख्यो उद्धव ज्ञानको अवतारहैं, अरुयाकै अभिमानहैं, जो ग्यानउपरांत औरपदारथ कोऊनांहीं, याकैलियैं इनकौं व्रजपठये, अरु उद्धवके चितमैं जो मुष्य आसयहो सोई श्रीकृष्ण उन्हकौं यालियैं कहायो, जो इनकैं उनकैं यही चरचाहोइ, जो गोपी प्रेमभक्तिको स्वरूपहैं, उनके मुखकी बात सुनि उनकी दसादेखि इनको वह मत्तअरुअभिमान दूरि होयगो ॥ दोहा ॥ कहाउद्धवकहाइंद्रअरु, मदनमहामदखान ॥ काहूकैंतनतनकहरि, रहनदयोनाहिंमान ॥ २ ॥ इति द्वितीयप्रयोजनम् ॥ अथ तृतीयप्रयोजनम् ॥ जो सगुन निर्गुन सास्त्र दोऊगावत हैं सो उद्धवकेतो निर्गुन ब्रह्मकोआसै ॥ अरु गोपीनके प्रेमरूपको आसै, यो ग्यानी वे अनुरागी सो इनदोवनके चरचा करावनौं सो जामैं जोसरस रहैं अरु आपनौं रंग वाकौं लगायदेवैं सोही मत मुष्य जगमैं प्रसिद्धहोय ॥ दोहा ॥ प्रेमरूपमोहनमई, उमगैंउदधिउलैंड ॥ कौंनसकैंतबरोकिकैं, ग्यानधूरिकीमैंड ॥ ॥ ३ ॥ इतिप्रयोजनतृतीयम् ॥ ॥ अथ चतुर्थ प्रयोजन ॥ जो श्रीकृष्ण तो सिंगारमय परम रसिक मनि, अरु उद्धव निकटवर्ती सषा सो महारूपेग्यानी, सो इन उनके संगमैं सदा रंग

सुष क्यौंकरि निबहैं, एकमत प्रकृतबिन तातें हरि सुजान जानि मनजानि कृपाकरि ब्रजके रंगकी रैनीमैं रंगाय मंगाये, ॥ दोहा ॥ प्रेमभक्तिनवरंगकी, रैनीब्रजअभिराम ॥ बिनारंगैंवहिरंगमन, ढिग क्यौंराषैंस्याम ॥४॥ इतिचतुर्थप्रयोजन ॥ अथ पंचम प्रयोजन ॥ जो श्रीकुंजबिहारी तिनको नित्यविहार श्रीवृंदावनमैं, तिन यह बिचारी जोउद्धव निजसषाहैं, ताकौं श्रीवृंदावनमैं राषियैं, सोयाकी बिनउतकंठा कैसैं बास होय सो याहूतैं उहांपठये, जो गोपी सतसंगके रंगको सुषभिदैं तब वाठौरको बास चाहैंगे सो औसैंहीं भयो उद्धव परार्थनांबचन ॥ श्लोक ॥ आसामहोचर्णरेणु जुषामहंस्यां वृंदाबनेकिमपिगुल्मलतौषधीनां ॥ यादुस्त्यजंस्वज नमार्यपथंचहित्वा ॥ भेजुर्मुकुंदपदवींश्रुतिभिर्विमृग्यां ॥ ५ ॥ अर्थ सो औसी इनकी प्रार्थनां वृथाकैसैंजाय, तातें श्रीकृष्ण कृपा-करि गोप्यस्वरूप द्रुमलता स्वरूप करि श्रीवृंदावन राषे, सो औरनकौं चर्मदृष्टि करि कैसैं दीसैं, अरु वृजवासी हरिगुन गा-यक वैष्णव उद्धौको एकअंककरिकैंभये, सूरदास सोतो श्रीम-तगोस्वामी बिठ्ठलनाथजी द्वारा यहभेदजान्यौं, तथा उनके पद भ-मरगीतके अनुभवीक तिनहूतैं जान्यौंपरचो पदस्तुति ॥ दोहा ॥ किधौंसूरकोसरलग्यो, किधौंसूरकीपीर ॥ किधौंसूरकोपदलग्यो, यातैंविकलसरीर ॥ ६ ॥ सो अब उनहीके पदनि करिकैं प्रसंग वर्नन करियतुहैं ॥

## अथ उद्धवप्रति श्रीकृष्ण बचन॥

॥ पद ॥ उद्धवबेगहीब्रजजाहु ॥ श्रुतसंदेससुनायमेटोवल्लविन

कोदाहु ॥ कामपावकतूलतनमनबिरहस्वाससमीर ॥ भस्मनांहिन होंनपावतलोचनानिकेनीर ॥ आजिलौंइहिंभांतिउद्धवकछूकुसल सरीर ॥ इतेपरविनसमाधांनहिंजरहिंगीतियधीर॥ बारबारकहाकहौं सुनिसपासाधुप्रवीन॥सूरसुमतिबिचारिजैसैंजियहिजलविनमीन ॥७

## ॥ अथ गोपीप्रति गोपीबचन पद ॥

कोऊवैसींहीउनिहारि॥ मधुवनतनतैंआवतहैंरीदेषोनैंनानिहारि ॥ वैसेहीमुकटमनोहरकुंडलपीतवसनरुचिकारि ॥ वैसैंहीबातकहतसा रथिसौंव्रजतनबांहपसारि ॥ इतनैंहूंअंतरयौंमानतमनौंवीतेजुगच्या रिं । सूरसकलतलफतआतुरव्हैंज्यौंवमीनाविनवारि ॥

## अथ कविबचन तथा गोपीप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ देष्योनंदद्वाररथठाढो ॥ वहुरिसपीसुफलकसुतआयो परयोसंदेहउरगाढो ॥ प्राणहमारेतबहीगयोलैंअबकिंहिंकारनआ यो ॥ मैंजांनीइहिंबातसत्यकैंक्रियाकरनउठिधायो ॥ इतनैंअंतरल षिसुफलकसुततिहिंछिनदरसनदीनौं । तबपहिचानिसषाहरिजूको परमसुचितमनकीनौं ॥ तबप्रनामकियोअतिरुचिकरिकैंऔरसब निकरजोरे । सुनियतहुतेतैसेहीदेषेपरमसुहृदअतिभोरे ॥ तुह्मारो दरसनपायआयभोजन्मसुफलकरिजान्यौं । सूरसुउद्धवमिलतभ योसुषज्यौंझषपायोपांन्यौं ॥ ९ ॥

## अथ गोपीप्रति उद्धव बचन ॥

॥ पद ॥ सुनहुगोपिहरिकोसंदेस ॥ करिसमादिअंतरगतिध्या वोयहहरिकोउपदेस॥ हौंअवगतिअबिनासीपूरनघटघटरह्योसमाई॥

जोगतत्वविनमुकतनहोईबेदपुराननिगाई ॥ सगुनरूपतजिनिर्गुन ध्यवैंइकमनइकचितलाय ॥ यहउपायकरिविरहतरोतुमामिलैंब्रह्म तवआय ॥ द्रुसहसंदेससुनतमाधौकोगोपीजनबिलपानी । सूरबिर हकीकहांलगिकहियेनैंननिबरषतपानी ॥ १० ॥

## अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौयाब्रजकीदसाबिचारो । तापीछैंयहसिद्धिआप नीयोगकथाबिस्तारो ॥ जाकारनपठयेतुममाधौसोसोचहुमनमाहीं। कितकबीचबिरहपरमारथजांनतहोकिधौंनाही ॥ परमचतुरनिजदा सस्यामकेसंततनिकटरहतहो । जलबूडतअवलंबफेनुकौंफिरिफि रिकहागहतहो ॥ वहअतिललितमनोहरआननकौंनैंजतनाबिसारौं॥ जोगजुगतअरुमुकतिबापुरीवामुरलीपरवारौं ॥ जिंहिंउरवसतस्या मघनसुंदरतहांनिर्गुनक्यौंआवैं॥ सूरदाससोईभजनवहांउंजाहिदूस रोभावैं ॥ ११ ॥ पुनःपद ॥ मधुकरकौंनमनायोमानैं॥ अबिनासी अतिअगमअगोचरकहाप्रीतकीजानैं ॥ सिषवहुजायसमाधिजोगम तजेसबलोगसयानैं । हमअपनैंअैसैंब्रजबासिहैंबिरहबायबौरानैं ॥ जागतसोवतसुप्रन्नौसनिसरहिहैंरूपरवानैं ॥ बालकुमारकिसोरली लासुषसिंधुसुधासौंसानैं ॥ जिनकैंतनमनप्रानसूरहरिमृदुमुसकानि बिकानैं । परीजुबूंदअलपपयनिधिमैंबहुरिनकोऊपहिचानैं ॥१२॥

## अथ गोपीनप्रति उद्धव बचन ॥

॥ पद ॥ ग्यांनबिनांहोयसचुनांही ॥ घटघटव्यापकदारुअग्नि ज्यौंसदाबसैंउरमांही ॥ सगुनछाडिनिर्गुनकौंध्यावोयौंजुकरोकिन

नांही ॥ तत्वभजैंऐसीव्हैंजैहोज्यौंतनकीपरछांही ॥ देषोयातैंसबस चुपावतजेअबलौंअवगांहीं ॥ सूरदासनिर्गुनबिनकैसैंउरमैंऔर समांही ॥ १३ ॥

## अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौनिर्गुनकैसैंध्यावैं ॥ जोध्यावैंतोकहाकहिध्यावैंरू परेषबिनध्यानन आवैं ॥ अगमअगाधिअगोचरकहियतअबिना सीकोपावैं । नागरस्वादनआवैंजोकोऊबहुतउवासीषावैं ॥ १४ ॥ पुनपद ॥ ऊधौजलमांगतजिनदेउसयानी ॥ घटहीमैंगंगाघटहीमैं जमुनांभरिभरिपीवोपांनी॥ स्वादनआवततुसफाकतज्यौंनिर्गुनबात षपानी॥नैननिप्यासमिटैंजबमिलिहैंनागरसुखसागरदधिदानी ५१

## अथ गोपीनप्रति ऊधौ बचन ॥

पद ॥ जबलगहृदैंग्याननहिंआवैं ॥ तोलौंकोटिकजतनकरोको ऊबिनबिबेकनहिंपावैं॥बिनविचारसबहैंसुपनौंसोमैंदेष्योसबजोय ॥ नानादारूसूरज्यौंपावकप्रगटमथैतैंहोय ॥ १६ ॥

## अथ ऊधौप्रति गोपीनबचन पद ॥

नांहिनरहीमनमैंठौर ॥ नंदनंदबिनऊंचतैंकैसैंआनियेउरऔर ॥ ओसजागतचलतचितवतसुपनसोवतराति ॥ हृदैतैंव्हैंमदनमूरति छिननइतउतजात ॥ कहतकथाअनेकउधौलोकलोभादिपाय ॥ क हाकरैंहितप्रेमपूरनवटनिसिंधुसमाय ॥ स्यामगातसरोजआननल लितमधुरसहास । सूरऐसेरूपकौंयेमरतलोचनप्यास ॥ १७ ॥ पुन

पद ॥ ऊधौचरचाकरीनाहिंजाय ॥ तुमनजानतप्रेमपथहमकहत जियसकुचाय ॥ कथाअकथसनेहकीबिनउरनआवतओर ॥ बेदस मृतउपनिषदकौंरहीनाहिनठौर॥ मौनहीमैंकहनताकीसुनतश्रोतानै न । सोवनागरतुमनजानतकहिनआवतबैन ॥ १८ ॥

## अथ गोपीप्रति उद्धव बचन पद ॥

मानहुजोगकह्योहैंमाधौ ॥ करिबिचारअपनेजियसाधौ ॥ इला पिंगलासुषमननारी ॥ सुन्यधारनाबिनआकारी ॥ ब्रह्मभावकरि सबकौंजानौं ॥ सूरपरमतत्वयहपाहिचानौं ॥ १९ ॥

## अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

पद॥ सबपोटेमधुबनकेलोग ॥ जिनकेसंगस्यामसुंदरपियसीषेहैं उपजोग॥भलीकरीऊधौंब्रजआयेदुषतिनकौंलैंजोग॥ आसनध्यान नैंनमूंदेतैंकैसैंजातबिजोग ॥ तुमहिंउनहिंयहभलीबनिआईकुबज्या सौंसंजोग ॥ सूरसुबैदकहालैकीजैकहैंनजांनैरोग ॥ २० ॥ पुनः पद ॥ ब्रजजनसकलस्यामव्रतधारी ॥ बिनांगुपालनहिंआंनउ पासनअनतकहूंबिभचारी ॥ जोगपोटसिरभारबहनकौंकतब्रजमां झउतारी॥इतनिकदूरिजाहुचलिकासीउहांबिकातहैंभारी॥ऐसेग्यान हिंकौंनछुवतहैंमंडलीअनन्यहमारी ॥ जोप्रभुवहरसरीतउपदेशीसो क्यौंजातबिसारी॥ इहांमुकतिकोऊनहिंपरसतजदपिपदारथचारी॥ सूरदासप्रभुजुवतिबृंदबरदरसनकीजुभिपारी ॥ २१ ॥

## अथ गोपीप्रति ऊधौ बचन पद ॥

गोपीपद्मासनचितलावो ॥ नैंनमूंदिअंतरगतिध्यावो ॥ हृदयक

मलमयजोतिप्रकासी ॥ सोअच्युतअवगतअविनासी ॥ इहिंउपायविरहातनमेटो ॥ सूरजोगजगदीसहिमेटो ॥ २२ ॥

## अथ ऊधौप्रति गोपीवचन ॥

पद॥ऊधौमुपहिंआवतगारि । कहाकरौंनंदनंदकीकारिकांनिदेतहौटारि ॥ वहमनोहरमाधुरीलपिमंदमृदुमुसिक्यात । ह्लैफिरिसुधीरहीकैसैंजोबानिर्गुनवात ॥ जानियतहैंयहतिहारैंकहनहींकेनैन ॥ कलपवीतैंपलपरनमैंहोतहांक्यौंचैन ॥ नवलनागररूपनिधिमैंव्हैरह्योजोलीन । मुरस्थलमैंडारियेक्यौंकहेतैंमनमीन ॥ २३ ॥ पुनः पद ॥ ऊधौतुमनजानतप्रेम ॥ वसोमथुराराजधानीतहांव्यापकनेम ॥ कथननिर्गुनग्यानसूकोराजनीतप्रबंध ॥ प्रीतनैंनानिरूपरीझनिकहाजानैंअंध ॥ इहांब्रजमैंवृथाकीजैंजोगनीरसपाठ ॥ छांडिनटनागरमधुरफलकौंनचाबैंकाठ ॥ २४ ॥

## अथ गोपीनप्रतिऊधौवचन ॥

पद ॥ तुमअपनैंघटहीमैंदेखो ॥ बिलपतिकहाबावरीसीव्हैंबाहिरढूंढतयहकहालेषो॥ सर्वब्रह्मकौंनहींदूसरोयहसबहीचितमैंअवरेषो॥ सूरदासजदुनाथमिलनकोछांडिदेहुहियपरमपरेखो ॥ २५ ॥

## अथ ऊधौप्रतिगोपीवचन ॥

पद ॥ परेखोकौंनबातकोकीजैं ॥ नांहरिजातनपांतिहमारीकतहींमांनिदुखलीजैं ॥ बासदेवजादूकुलदीपकबंदीजनब्रह्मावैं ॥ नंदनंदनगोपीजनवल्लभनांहिनकान्हकहावैं ॥ नांहिनमोरचंद्रिकामा

थैंनांहिनउरबनमाल ॥ सोभितहैंभूपनिकेभूपनसुंदरश्यामतमाल॥ बिसरिगयोगृहबनकोनांतोऔरहमारोरंग ॥ सूरदासप्रभुगईसगाई वामुरलीकेसंग ॥ २६ ॥ पुनःपद ॥ हाहाऊधौकहियैंबात ॥ सुरमुरलीसौंमोहीसबहमअबसुरसंखबजात ॥ रंगरसतजिरनरसबसभये कछुमृदुकर्कसलखिजात ॥ सहिनसकेसरनैंनहमारेक्यौंसरसा रसुहात ॥ पीतझगाकोलगतभारतबकवचकसतक्यौंगात ॥ मूंठि गुलालगतअबलाकरअबनगदाडरपात ॥ सुनिसुनिहमयहसहि नसकतहैंहोतदृगनिजलपात ॥ जगतकहतहमैंभईबावरीप्रीतिरी तिकेनांत ॥ मुरलीमुकटलटकन्हैंछबिकीहियतैंनांहिनजात ॥ राज सिंघप्रभुकरयोंकहायहधरीदयानहिंगात ॥ २७ ॥

## अथ गोपीप्रतिऊधौबचन ॥

पद ॥ जानिकैंबावरीजिनहोहु ॥ तत्वभजैंऐसीव्हैंजैहोज्यौंपार सपरसैंलोहु ॥ मेरेबचनसत्यकैमांनौंछाडोसबसौंमोहु ॥ तोलौंयहस बनीकीचुपरीजोलौंअस्तुतिद्रोहु ॥ अरेअरेमधुपबातयहऐसीक्यौंक हिआवैंतोहिं ॥ सूरसुबसतीछाडिघरबसेहमहिबतावतखोह ॥ २८ ॥

## अथ ऊधवप्रतिगोपीबचन ॥

पद॥ ऊधौअपनौंजतनकरो ॥ हितकीकहैंअहितलागतहैंइहांबे काजपरो ॥ जायकरोउपचारआपनौंहौंजुदेतासिखजीकी ॥ कछूक हतकछुवैंकहिआवतधुनिदेखतनाहिनीकी॥ साधुहोयताहिऊतरदीजैं तुह्मसौंमानीहारि ॥ यहजियजानिस्यामसुंदरतुमदीनौंढिगतैंटारि ॥ मथुरादौरिगहोइनपायनबाढयोहैतनरोग ॥ सूरसुबैदबेगिकिनहेरोभ

येअरघजलजोग ॥ २९ ॥ पुनःपद ॥ नूह्यांकहतकौनकीबातैं ॥ सुनिऊधौहमसमझतनाहींफिरिबूझतहैंतातैं ॥ कोनृपभयोकंसकिहिंमार्योकोवसुदेवसुकाहि ॥ ह्यांजसुदासुतपरममनोहरजीजतहैंमुखचाहि ॥ दिनप्रतिजातधेनुबनचारनगोपसखनकेसंग॥ बासरगतरजनीमुखआगमकरतहृगनिगतिपंग ॥ कोपूरनव्यापकअविनासीकोविधिवेदअपार ॥ सूरवृथावकबादकरतकतह्यांव्रजनंदकुमार ॥ ३०॥

## अथ गोपीप्रति ऊधौबचन पद ॥

॥ पद ॥ अबतुममांनलेहुव्रजबाल । हौंजुकरतउपदेसतत्वकोपचतभयोबहुकाल॥ छाडिहुमायामोहहियेकोविरहाविषमविसाल । सूरदासनिर्गुनकौंध्यावतमिटिहैंहितजंजाल ॥ ३१ ॥

## अथ ऊधौप्रति गोपी बचन॥

पद॥ऊधौवृथाकरतबकवादि॥हमजान्यौंतुमजानतनांहीरूपसुधासुषस्वादि ॥ सकलव्रजमोहनमईहैंगोपअरुगोपीगाय ॥ तिनैंतोविनघनस्यामसुंदरकैसैंऔरसुहाय ॥हमारेतनकारिषंडषंडज्यौंदेहुभूमिमैंडारि ॥ न्यारेन्यारेलपटिजांहिलषिनागरनंदकुंवार ॥ ३२ ॥ पुनःपद॥ ऊधौयहतनजोकोऊफेरिबनावैं ॥ तऊनंदनंदनताजिप्यारेकौंऔरुनमनमैंआवैं ॥ जोयातनकीतुचाकाढिकैंलेकरिदुंदाभिसजई ॥ मधुरउतंगसब्दसुरनिकसैंलाललालहीबजई ॥ छूटैंप्रानमिलैंतनमाटीद्रुमलागैंतिंहिंठाम ॥ कहअबसूरफूलफलसापालेतउठैंहरिनाम ॥ ३३ ॥

## अथ कबिबचन ॥

॥ दोहा ॥ ऊधौमनपलटयोनिरषि, गोपीप्रेमउमंग। बिनलाग्योकवहुनसुन्यौं, प्रेमभक्तिकोरंग ॥ ३४ ॥

## अथ गोपीप्रति ऊधौबचन ॥

॥ पद ॥ अबअतिपंगभयोमनमेरो ॥ पठयोहोनिर्गुनउपदेसनभयोसगुनकोचेरो॥ जोकछुकह्योग्यानगाथासोतुमहिनपरसतनेरो॥ मैंसठबादकियोसोयाँहींकह्योसुन्यौंउनकेरो ॥ मैंजान्यौंनाहिप्रेमतैंपलभरिह्यांपटमासबसेरो॥ सूरस्यामपैंआग्यादीजैंबोरयोजोगकोबेरो

## अथ कबिबचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौबारबारसिरनावत। गदगदकंठपुलकिबिव्हलमनकरपायनसौंछूवावत॥ धन्यगोपीतुमरंगीस्यामरंगतज्योसकलचितचैन। गुल्मलताव्हैंरहियेइहिंठांतनरंजितब्रजरैन ॥ प्रेमभक्तिरससुधापियोमैंअबचितअनतनजाय॥ तुममेरेगुरुकह्योछिमहुसबपरततह्यारैंपाय॥ यौंकहिऊधौउठेगवनकौंफेरसकतनहिंपीठ॥ नागरमनयहांरायेराषिकैंतनपहुचायोनीठ ॥ ३६ ॥

## अथ ऊधौमधुपुरी आगमानि श्रीकृष्णप्राति बचन ॥

॥ पद ॥ माधौजूयहब्रजकोव्यौहार। मेरोकह्योपवनकोभुसभयोगावतनंदकुंवार ॥ एकग्वालगोसुतव्हैंरैंगतएकलकुटिकरलेत॥ एकमंडलीकारिबैठीरातिछाकबांटिकैंदेत ॥ एकग्वालनटवतसबलीलाएककर्मगुनगावत ॥ अनेकभांतिकरिमैंसमुझाईनैंकनउरमैंआ

वत ॥ निसवासरएहीटकब्रजमैंदिनदिननौतनप्रीत ॥ सूरग्यानसब फीकोव्हैंगयोदेषतवहरसरीत ॥ ३७ ॥ पुनःपद ॥ मैंसमुझाईकारि अपनौंसो ॥ तदपिउन्हैंप्रतीतनउपजीलग्योसबैंसुपनौंसो ॥ कहीतु ह्मारीसबैंसुनाईऔरकछूअपनी ॥ सुनतबचनममगयोभ्रितमनऔरउ ठीकपनी ॥ कोऊकहैबनायपचासकउनकैंबातजुएक ॥ धन्यसुब्रज कीनारिजुतिनकैंबिनदरसनकछुऔरनटेक ॥ देषनउनकोप्रेमइहाँ कीधरीरहीसबऊल्यौं ॥ सूरस्यामहौंरह्योठग्योसोज्यौंमृगचोका मूल्यौं ॥ ३८ ॥

## अथ ऊधौप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौइतेदिवसक्यौंलाये ॥ पठयेहुतेजोगकहिआवनतु मषटमासबिताये ॥ तुमबकताव्हैंबिरमिरहेकिधौउनकछुकहिबिर माये ॥ सूरस्यामउनश्रोताकरिमोहिसबैंग्यानबिसराये ॥ ३९ ॥

## अथ श्रीकृष्णप्रति ऊधौ बचन ॥

॥ पद ॥ उनमैंपांचदिवसजोबासिये ॥ नाथतुह्मारीसौंजीउपज तफारिअपनपौकासिये ॥ वहलीलासबब्रजगोपिनकीदेषतहीबनि आवैं ॥ मोकौंबहुरिकहांवैंसोसुषबडभागीसोपावैं ॥ मनसाबचकर मनाकहियतुनांहिकछूअबराषी ॥ सूरकाढिडारचोब्रजतैंज्यौंदूधमां झतैंमांषी ॥ ४० ॥ पुनःपद ॥ होहरिअहुरिदावदैहारचो ॥ आग्या भंगहोयक्यौंमोपैंब्रचनतुह्मारोपारचो ॥ हारिमांनिउठिचल्योदीनव्हैं मांनिअपनपोकैद ॥ जांनिलेहुइतनेमैंमाधौकहाकरैंनीमनकोबैद ॥ उत्तरकोउत्तरनहिंआवततबउनहींमिलिजात ॥ मेरीकितकबातब्रह्मा

हूअद्धवचनमैंमात ॥ अपनीबातसमझिमनहीमनचल्योबसीठींतोरि सूरएकहूअंगनकाचीमैंदेषीटकटोरि ॥ ४१ ॥

## अथ ऊधौप्रति श्रीकृष्णबचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौतुमसेसषासुजान ॥ क्यौंउपदेसलग्योनहिउन कौंगाथागूढविधान ॥ तुमजुग्यानऔतारप्रगटजगवेअबलाअन जान ॥ सूरदासवहिरंगरंगेतह्मदीसतबिसरचोग्यान ॥ ४२ ॥

## अथ श्रीकृष्ण प्रति उद्धवबचन ॥

॥ पद ॥ माधौसुनहुब्रजकोप्रेम ॥ बूझिमैंषटमासदेष्योगोपिक निकोनेम॥हृदैतैंनहिंटरतकबहूस्यामकामबिजेत ॥ आंसूसलिलप्रबा हमांनौंअर्घनैंनजुदेत ॥ देहगेहसमेतअर्पनकमललोचनध्यान॥ सूरव हरसभजनदेषतगयोउडिसबग्यान ॥ ४३ ॥ पुनःपद ॥ नीकैंसुन हुस्यामसुजान ॥ कौंनमानैंबातनीरससकलब्रजरसपान ॥ तुमजुहे विधिबेदबक्ताप्रगटश्रीभगवान ॥ उहिमनोहरमंडलीमैंक्यौंनराष्यो ग्यान ॥ कबहुतुमकौंलैनचायेजोरिपानानिपान॥ कबहुछ्वायोमुकट चरननिकियोउतजबमान ॥ कबहुवैंनीगूंथिनिजकरपगमहावरसा न । कबहुठाढेजोरिकरकारिंदीनाचितसनमान॥ प्रेमआगैंनेमकीकछु चलतनांहिनिदान ॥ रनोंव्हैंछूटेवहांक्यौंनवलनागरप्रान ॥ ४४ ॥

## अथ ऊधौप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौअबतुमहमरेलायक ॥ रूषीबातनकहतहोभीजेक हतप्रेमकेबायक ॥ मोअनुरागरंगरैंनीब्रजरंगिआयेमनरंग ॥ सूरस षाप्रियमेरोतेरोअबैंबन्यौंहैसंग ॥ ४५ ॥

## अथ कृष्णप्रति ऊधौ बचन ॥

॥ पद ॥ कहांलौंकहियेब्रजकीबात ॥ सुनहुस्यामतुमबिनउनलोग निजैसैंद्यौसबिहात॥ जाकौंआवतदेषतहैंमिलिबूझतहैंकुसलात॥ चल ननदेतप्रेमउरआतुरफिरिफिरिपगलपटात॥ गायग्वालगोपीगोसुत सबबिलषिबदनकृसगात ॥ परमदीनजनुसिसरहेमहतअंबुजगनबि नपात॥पिकचातिकबनबसननपावतबायसबलहिनषात॥ सूरदाससं देसनकैंडरिपथकनवहमगजात ॥ ४६ ॥ पुनःपद ॥ ब्रजकीजुव तिअतितनछींन ॥ रहतइकटकचित्तचातकस्यामघनतनलीन ॥ नां हिपलटतबसनभूषनदृगनिदीपकतात॥ बिलषिबदनमलीनतनज्यौं तरुनिबिनजलजात ॥ कहतज्यौंहौंकह्योश्रुतिमतपच्योकरिउपदे स ॥ धरतनलनींबूंदज्यौंजलबचनहियेप्रवेस॥ वहैंमुरलीमोरचंद्रिका पीतपटबनमाल ॥ रहीवहछबिअंगअंगनिलतालपटितमाल ॥ दिव सज्यौंबितवतसकलमिलिकहतगुनिबलवीर ॥ रैंनउडपतिनिराषित लफतमीनज्यौंजलतीर ॥ अहोकरुनासिंधुस्वामीहोहुबेगसहाय ॥ सूरप्रभुअबकैंदरसदैंमरतलेहुजिवाय ॥ ४७ ॥

## अथ उद्धवप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौसबब्रजभूलतनांहीं ॥ हंससुताकूलनिकीसोभाअ रुकुंजनिकीछांहीं ॥ वहसुरभीगउबच्छदोहनींषरकदुहावनजांहीं ॥ ग्वालबालमिलिकरतकुलाहलनृत्ततगहिगहिबांहीं॥लीलाबहुतभांति हमकीनीजसुमतिनंदनिबांहीं । जबजबसुरतिहोतवासुषकीमनउम

गतिमनमांहीं ॥ यहद्वारिकारचीकनककीमनिमुक्तावलिजांहीं ॥ सूरदासप्रभुसुमरिसुमरिसुषयौंकहिकहिपछितांहीं ॥ ४८ ॥

## अथ श्रीकृष्णप्रति उद्धव बचन ॥

॥पद॥ चितदैंसुनौंस्यामप्रबीन ॥ हरितुह्मारेबिरहराधामैंजुदेषी पीन ॥ कहतजबहिसंदेससुंदरगमनमोतनकीन ॥ छूटिछुद्रावलि अरुझिपगधरानिधुकिबलहीन॥ उलटितबहिसंभारिभटलौंपरमसाह सकीन ॥ कहतबैंननबोलआवैंहृदैंपरिअसुभीन ॥ नैंनइकटकसुर तबिनज्यौंग्रस्तआपददीन ॥ सूरप्रभुकरुनाकरोयौंजीवतआसाधी न ॥ ४९ ॥ पुन पद ॥ बातैंबूझतयौंबहरावत ॥ सुनहुस्यामवैंसषी सयानीपावसरितुराधेनजनावत ॥ घनगरजतवहकहतकुसलमति गरजतगुहासिंघसमुदावत ॥ नहिंदामिनद्रुमदवासैलपरिबावउलटि तातीझरिआवत ॥ दादुरमोरपपीहाबोलतग्वालमंडलीषगनिपिजा वत ॥ कबहुकप्रगटिपपीहाबोलततबामिलिकरतारीजुबजावत ॥ नहिनभवृष्टिझरतझरनाधरपरिपरिबूंदउछटिइतआवत ॥ सूरदासप्र भुकहौंकहांलगितुह्मारेदरसबिनांदुषपावत ॥ ५० ॥

## अथ ऊधौप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ मोहिगोपीजननहिंबिसरत ॥ उनकीप्रीतिरीतिअंतर कीतनकनपुषतैंनिसरत ॥ सबहिचतुरसबआनंदमूरतिसबतनप्रेम अछेह॥तिनमैंश्रीराधाकेमेरेएकप्रानद्वैदेह ॥ जदपिविभौह्यांअमराव तिसोरह्योसकलसुषछाय ॥ तद्यपिसुधिआवतव्रजकीतबसुधिहुकी

सुधिजाय॥ऊधौपरमप्रवीनसषाप्रियतुमविनकासौंकहियैं ॥ नागरी
दासदुसहमनहीमनविरहपीरानितसहियैं ॥ ५१ ॥

## अथ कबि वचन ॥

॥ पद ॥ जद्यपिपाईहैंरजधानी ॥ बारवारवृंदावनकीहरिकाहि
कहिउठतकहानी ॥ जद्यपिकनकजटितमंदिरमैंरचीरुचिरकमनी ॥
ज्यौंसुषपत्रविछायराधिकासुषसोतेअवनी ॥ जद्यपिभूपनवहुतभां
तियेमर्कतलालमनी ॥ सूरदासवागुंजपुंजकीसोभापैनवनी ॥ ५२॥

## अथ कविप्रार्थना कवि बचन ॥

॥ पद ॥ हमारैंमुरलीवारोस्याम ॥ विनमुरलीबनमालचंद्रिका
नहिंपहिचांनतनाम ॥ गोपरूपवृंदावनचारीव्रजजनपूरनकाम ॥
याहीसौंहितचित्तवढोनितादिनदिनपलछिनजाम ॥ नंदगांवगोवर्द्ध
नगोकुलवरसांनौंविश्राम ॥ नागरीदासद्वारिकामथुराइनसौंकैसो
काम ॥ ५३ ॥ पुनःपद ॥ जोकोऊव्रजलीलारसचाषैं ॥ ताकोफि
रिकहुंऔरकथामैंकवहुनमनअभिलाषैं ॥ षटरसछप्पनभोगनभाव
तजोव्रजगोरसपावैं ॥ हितब्रजरसिकउपासिकसौंकरिआंनसौंमनन
मिलावैं ॥ नागरियाब्रजमहिमारसनातनकहुजातकहीनां ॥ विनरस
रूपाभक्तिजक्तज्यौंमुरधरजेठमहीनां ॥ ५४ ॥ पुनःपद ॥ हमव्र
जसुषीव्रजकेजीव । प्रानतनमननैनसर्वसुराधिकाकोपीव ॥ कहां
आनंदमुक्तिमैंयेकहांकेलिविधान ॥ कहांललितनिकुंजलीलामुर
लिकाकलगान ॥ कहांपूरनसरदरजनीजौंह्नजगमगजोत ॥ कहां
नूपुरबीनधुनिमिलिरासमंडलहोत ॥ कहांपांतिकदंबकीझुकिरही

जमुनाबीच ॥ कहांरंगबिहारफागुनमचतकेसरिकीच ॥ कहां गहबरविपनमैंतियरोकिबोमिसदान ॥ कहांगोधनमध्यमोहनचिकुर रजलपटानि ॥ कहांलंगरसपासोहनकहांउनकोहास ॥ कहांगोरस छाछिटैंटीछाकबिपनबिलास ॥ औरठौरनकहूंयेसुपबिनांब्रजइहिं धाम ॥ दासनागरघोषतजिचहैंमोपसौंबेकाम ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ प्रभुतासोभास्वादिबिन, मननलगतअभिराम ॥ करनफूलमाणिक नकके, मधुकरकेकिहिंकाम ॥ ५६ ॥ रसलीलाबैकुंठकी, सुनीन नित्यनवेलि ॥ तीनलोकमैंगाइयैं, नउतनहींब्रजकेलि ॥ ५७ ॥ मारमापतिसंखकौं, वहुधाकोउबरनैंन ॥ तीनलोकमैंगाइयैं ॥ गो पीमोहनबैन ॥ ५८ ॥ लखमीदयोभ्रमायजग, बोरतलषमीभोग ॥ गोपीजनगुनगायकैं, तरतजुकलिकेलोग ॥ ५९ ॥ स्यामहिंसब गोपीप्रिये, गोपिनकौंप्रियस्याम ॥ सोनागरियाहियबसो, निसदि नपलछिनजाम ॥ ६० ॥ संमतअठारैसैंसुकल, पक्षजेठशुभमास ॥ गोपीप्रेमप्रकासयह, कियोनागरीदास ॥ ६१ ॥ इतिश्रीगोपीप्रेम प्रकासग्रंथसंपूर्णम् ॥

## अथ पद प्रसंगमाला लिख्यते ॥

श्रीरसिकरायमुरलीधरनजयति ॥ प्रथमपूर्वसाक्षी ॥ श्लोक ॥ नाहंसबामिबैकुंठेयोगिनांहृदयेनच ॥ मद्भक्तायत्रगायंते तत्रतिष्ठा मिनारद ॥ १ ॥ अर्थ—श्रीकृष्ण भक्तिवत्सल तिनकौं के- वल भक्तिप्रिय, सो भक्तिनवधा, तामैंमुख्य श्रवण अरु कीर्त्तन सो एक कीर्तनमैं है धर्म, श्रवणहू अरु कीर्त-

नहू तातैं कीर्तनसार, कीर्तनहूमें गान सहित कीर्तन सो यह यातैं अधिक जो चित्तकी एकाग्रता करि उद्दीपन करैं हैं, व्रजवधूनके चित्त गानहीसौं आकर्षन करि बुलाई, गानहीसौं आकर्षन करि नारद श्रीकृष्णकौं हृदयमें बुलावतहैं, अरु शिवके गानहीसौं रीझि हरि जलव्है द्रवगये, ऐसे गान प्रिय स्यामसुजान तिनकी लीला पद छंदबंध रचना करिकैं वैष्णव गावत आयेहैं, तिनके कछूक पदप्रसंग लिषौंहौं, श्रीजयदेवजी गीतगोविंदकी अष्टपदी बनावतहुते, तामैं यहधरचो चाहतहेजु ॥ स्मरगरलषंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं ॥ फिर चित्तमैं आईजु, भगवान विषैं यहकैसैं संभवैं, याही चिंताकरत जयदेवजी तो देहकृत्यकौंगये, अरु पीछैंतैं ठाकुर आइकैं श्रीहस्तकमलसौं वहीपदलिषगयेजु ॥ स्मरगरलषंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं॥ सोवह यहअष्टपदी ॥ आसावरीरागे ॥ अठताले ॥ वदसियदिकिंचिदपिदंतरुचिकौमुदी हरतिदरतिमरमतिघोरं ॥ स्फुरदधरसीधवेतवबदनचंद्रमा रोचयतिलोचनचकोरं ॥ १ ॥ प्रियेचारुशीले प्रियेचारुशीले मुंचमयिमानमनिदानं ॥ सपदिमदनानलोदहतिममभानसं देहिमुखकमलमधुपानं ॥ सत्यमेवासियदि सुदतिमयिकोपिनी देहिखरनखरशरघातं घटयभुजबंदनं रचयरदखंडनं येनवाभवतिसुखजातं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ २ ॥ त्वमसिममभूषणं त्वमसिममजीवनं त्वमसिममभवजलधिरत्नं ॥ भवतुभवतीहमयि सततमनुरोधिनी तत्रममहृदयमतियत्नं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ३ ॥ नीलनलिनाभमपि तन्वितलोचनं धारयतिकोक-

नदरूपं ॥ कुसमशरबाण भावेनयदिरंजयसि कृष्णमिदमेतदनु-रूपं। प्रियेचारुशीले ॥४॥ स्फुरतकुचकुंभयो रुपरिमणिमंजरी रंजयतुतवहृदयदेशं ॥ रसतुरसनापितव वनजघनमंडले घोषयतुमनमथदिनेशं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ५ ॥ स्थलकमलगंजनं ममहृदयरंजनं जनितरतिरंगपरभागं ॥ भणममृणबाणिकर वाणि-पदपंकजं सरसलसदलक्तकसुरागं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ६ ॥ स्मरगरलखंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं ॥ ज्वलतिमयिदारुणो मदनकदनानलो हरतुतदुपहितविकारं ॥ प्रियेचारुशीले ॥७॥ इतिचटुलचाटुपटुचारुमधुवैरिणो राधिकामधिवचनजातं॥ जयतिजयदेवकविभारतीभूषितं मानिनीजनजनितशातं ॥ प्रिये-चारुशीले ॥८॥१ ॥ पुन ॥ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीजयदेवजी एक-समैं एकराजापैंरहे उनकी स्त्री पदमावतीजी सोरानीपैंरहैं सोरानी निंदक बुद्धिहीन हुती, सो पदमावतीजीकी अरु जयदेवजीकी प्रीत परिछाके निमत रानी झूठबनाइ कह्यो, पदमावतीजीसूंजु राजा सिंघकी सिकार गयेहैं, सो जयदेवजीने सिंघनैं मारे, यहकहि एकपाग आंनि धरी, ताहीछिन सुनत पदमावतीजीनैं प्रान छाडिदये,रानीको मुह सूकिगयो,इतनेमैं राजा अरु जयदेवजी आये घरआये, यहवृत्तांत सुनि राजानैंतो बहौत पेदकियो, अरु जयदेवजी आप पदमावतीजीके मृतक सरीरकैं ढिग गीतगोविंदकी अष्टपदी गावतभये, तबताहीछिन पदमावतीजी सरजीवत व्है संगगावनलागे, सो वह इत्यादि अष्टपदी ॥ देसीबैराडीरागे ॥ बह-तिमलयसमीरे मदनमुपनिधाय ॥ स्फुटति कुसमनिकरे बिरहिहृ

दयदलनाय ॥ १ ॥ सखिसीदतितवविरहेवनमाली ॥ दहतिशिशि रमयूखे मरणमनुकरोति ॥ पततिमदनविशिखे विलपतिविकलक रोति ॥२॥ ध्वनितमधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति ॥ मनसिवलितवि रहे निशिनिशिरुजमुपयाति ॥ ३ ॥ वसतिविपिनविताने त्यजति ललितमपितवनाम ॥ लुठतिधरणिशयने वहुविलपतितवनाम ॥४॥ भणतिकविजयदेव इतिविरहविलसतेन ॥ मनसिरभसविभवे हरि रुदयतुसुकृतेन ॥ ५ ॥ इति ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ श्रीजयदेवजी गीतगोविंदवनायो ॥ तामें अष्टपदी वनावतहे सो जाअष्टपदीमैं येअछर आयेजु ॥ पततिपतत्रेविचलतिपत्रे॥तहां जयदेवजी इनअछरनके अरथपर रीझि प्रेमानंदमें मगन भये, वाहीछिन इनहीं अछरनि अरु जयदेवजीपर रीझि, श्रीराधामा धौ तवही तहां वनमैं आय दरसन दीनौं, अरु आग्यादई, जो ए अष्टपदी कोऊगावैंगो तवतहां मैं आयसुनौंगो, सो औरकोऊ गावें ए अष्टपदी गावैं तव कैतो मंदिरमैं गावैं कैएकांत स्थल वैठिगा वैं, अरु एक मालीकी लरकिनी भोरी तानें यह इतनौंहीं सीपि लियोजु ॥ धीरसमीरे जमुनातीरे वसतवने वनमाली ॥ सो इतनौं वैंगनकीवारीमैं गावत डोलैं, ताके संग संग ठाकुर फिरे, ठाकुरके जामाको दावन वैंगनके कांटेनमैं उरझि टूकटूकभयो, अरु ठाकरहू रीझि टूक टूक भये, सो जहां श्रीमंदिरमैं श्रीजगन्नाथ-देव ठाकुरको विग्रह सरूपहो, तहां जामांको दावन फट्यो देष्यो, अरु वैंगनके कांटा अरुझेदेषे, तव सवनि भीतरिया आदि प्रार्थ-नांकरी जु, महाराज यहकहा व्रतांतहैं, तव ठाकुर सुपनैंमें सवही

कही, सो सुनि वहांको पृथ्वीपतिहो तानैं दुहाईफेरी, जोकोऊ चलत फिरत अष्टपदी न गावैं जोकोऊ गावैं सो मंदिरकी ठौर तथा औरनीकी ठौर गावैं, जा अष्टपदीपर ठाकुर रीझि मालीकी लरकनीके संग संग फिरे, अरु पततिपतत्रे यह अछर धरत रीझि श्रीठाकुर जयदेवजीकौं दरसनदीनौं, जो वह यह अष्टपदी॥ रतिसुषसारे गतिमभिसारे मदनमनोहरबेषं ॥ नकुरुनितंबिनि गवनविलंवन मनुसरतंहृदयेशं॥१॥धीरसमीरे यमुनातीरे वसतवनेवनमाली॥गोपीपीन पयोधर मर्दन चंचलकर युगशाली॥नामसभेतं कृत संकेतं वादयतेमृदुबेणुं॥बहुमनुते तनुते तनुसंगति पवनचलतिमपिरेणुं॥२॥पतितिपतत्रे बिचलतिपत्रे शंकितभवदुपयानं॥रचयतिशयनं सचकितनयनं पश्यतितत्रपंथानं॥ ३ ॥ मुखरमधीरं त्यजमंजीरं रिपुमिवकेलिसुलोलं॥ चलिसखिकुंजं सतिमिरपुंजं शीलयनीलनिचोलं ॥ ४ ॥ उरसिमुरारे रुपहितहारेधनइव तरलवलाके ॥ तडिदिवपीते रतिबिपरीते राजतिसुकृत बिपाके॥ ५ ॥ बिगलित बसनं परिहृतरसनं घटयजघनमपिधानं ॥ किशलयशयने पंकजनयने निधिमिवहर्षनिधानं॥ ६ ॥ हरिरभिमानी रजनिरिदानी मियमपियातिबिरामम् ॥ कुरुममबचनं सत्वररचनं पूरयमधुरिपु कामं ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयं ॥ प्रमुदितहृदये हरिमतिसदयं नमतसुकृतकमनीयं ॥ ८ ॥ या अष्टपदीमैं जयदेवजीकौं श्री ठाकुर दरसन दियो, सो यह प्रसंग प्राचीन व्यासजी सुनि रीझि एक पद बनायो, सो वह यह पद है ॥ जयदेवसेरसिकनकोईजिनलीलारसगायो ॥ जाकीजुगतिअ

पंडितमंडितसवहीकेमनभायो ॥ १ ॥ विविधविलासकलाकविमं डनजीवनिकेभागनिआयो ॥ पततिपतत्रेमुपनिसरतहीराधामाधव कोदरसनपायो ॥ २ ॥ वृंदावनरसमायावैभवपहिलैंसवैंसुनायो ॥ तापीछैंऔरनकछुपायोसोरससत्वनिचपायो ॥ ३ ॥ पद्मावतिहरिच रननचारीजिहिंगोविंदरिझायो ॥ व्यासनआसकरीकाहूकीकुंज निस्यामवुलायो ॥ ४ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीमद्वल्लभाचार्यजीसौं काहू सेवकनैं कहीजु, राजश्री वृंदाव नमें एक वैरागी नांव परमानंददास कीरतन आछ्यो करैहै, राजि सुनियैं, तव श्रीआचार्य्यजी गोप्यपधारिकैं परमानंददासके कीरतनसुने, तहां बिरहको कीरतन सुनिकैं आवेस स्थित भये, उहां तैं सेवक उठाइ लैआये, सात आठ दिनलौं प्रसाद लैवेकी देहकी कछु सुधि रही नहीं, अंतरंगरहे, सो वह यह पद ॥ हरितेरीलीलाकीसुधिआवैं ॥ कंवलनैंनमोहनमूरतिकेमनमनाचित्र वनावैं ॥ कवहुकनिविडतिमिरआलिंगत कवहुकपिकसुरगावैं ॥ कवहुकसंभ्रमक्वासिक्वासिकहिसंगहिलिमिलिउठिधावैं ॥ कवहुक नैनमूंदिउरअंतरिमनिमालपहिरावैं ॥ मृदुमुसकानिबंकअविलोक निचालछबीलीभावैं ॥ एकवारजाहिमिलहिकृपाकरिसोकैसैंविस रावैं ॥ परमानंदप्रभुस्यामध्यानधरिऐसैंविरहगमावैं ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ नामदेवजूकी बाल अवस्थासो इनको गृहमैं चितलगैं नांहीं, लरि कांनहूके संग पेलैं नांहीं, जोपेलैं तो काहू बस्तुको एक ठाकुर वनांवैं, कछु वस्तु हाथमैं लैकैं वाकी आरती करैं, सब सेवाको अनुकरन करैं, तथा

ठाकुरके देहुरैं जहां सतसंग अरु दरसन होय तहां बिसेस जांहिं, तब इनकी महितारी देष्यो, कि एकतो घरको कसब न सीषैंगो, फिरि काहू अतीतके साथ उठि जायगो तोहु बुरीबात, यातें नामदेवजूकौं बहुत षिजकैं बरजत भई कि तुम देहरैं मतिजाहु, ताही दिन नामदेवजूकौं महावैराग्य उपजिकैं कविताशक्ति व्हैंआई, सो एक पद नयो बनाय अपनी माताकौं गाय सुनावत भये, सो ऐसैं प्रथमही बनायो ॥ सो वह यह पद ॥ तूजिनबरजैंमायरीमोहिदेवलजातां ॥ मोहनमेरैंमनबस्योचरणौंचितरातां ॥ करम छाडिकुकरमकरूंतोनूबरजैंमाई ॥ मोहनमेरैंमनबस्योमोपैंरह्योन जाई ॥ बिनदीपकमंदिरकिसोबालकबिनमाता ॥ रामसनेहीनांमदे हरिकेरंगराता ॥१॥ पुनः अन्यपदप्रसंग ॥ दक्षिनमैं ठाकुर श्री पंडुरनाथ जू, तिनको दरसन होतहो आगैं एक नटी नृत्त्यकरतही, संकीरन ठौरमें भीर बहुत भईही तासमय नामदेवजू दरसनकौं आये, तिनकौं लोगनि ठौर न दई जहां बैठे तहां तहां कहूंनीपयेनिसौं लोग ठेलधकेलिदेवैं तब ये मंदरके पाछैं आय बैठे, दरसनके अंतरको बहुत दुष मानि अकुलानि सहित एक नयो, पद बनाय गावत भये, ताहीसमय पाछली ओर द्वार व्हैंगयो, आगैं बैठेहे तिनकौं पीठको दरसन होतभयो, अरु नांमदेवजूकी ओर श्रीमुखभयो, सब दौरि नांमदेवजू के पाय निपरे, यह बात जगतमैं बहुत प्रसिद्ध भई, सो नांमदेवजू जासमय पाछैं बैठि पद गायेतें दरस नपायो, सो वह यह पद ॥ हींणहोजातमेरीजादूराया ॥ कलिमैंनांमदेयाकाहेकौंपठाया ॥ तालपषावजबाजैंपातरनाचैं ॥ हमा

रीभगतविठ्ठलकाहेकूंराचैं ॥ पंडुरप्रभुजूवचनसुनीजे ॥ नांमदेस्वामीदरसनदीजे ॥ २ ॥ पुनःअन्यप्रसंगपद ॥ एक समय नांमदेवजू आलको गाडा लियैं आवतहे, सो कहूं मारगमैं गाडाको पहिया पोटका व्हैं कैं फसिगयो, वैल दुर्वल तिनसौं निकसैं नांहीं, तव येनिरउद्यमव्हैंकैं एक नयो पद वनाय गायवेकौं वैठिगये, ताही समैं एक वडो वैल दृष्टि परिगयो, नांमदेवजू जानी जोमैं प्रारथना करी सोहीभई, वा वैलकूं गाडा सौं लगाय गाडा निकासि हांक्यो अरु वृषभगवान अंतर्ध्यान भये, सो ज्या प्रार्थनाके पदकौं वनाय गायें ठाकुर वृषभव्हैं कैं नामदेवजूको गाडा निकासिदियो, सो वह यह पद ॥ पैडोअटक्योहोवाबला ॥ जींकीजीवनतूसांवला ॥ कालिपोटीकुसमलिकलिकाल ॥ भववंधनमेटोगोपाल ॥ काटिनरायणजमकाफंध ॥ समरथहोयकारिवाडोकंध ॥ नामदेकी नरहरिपूरोसार ॥ होयकरिपहुणउतारोपार ॥ ३१ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ वैष्णव श्री नांमदेवजू सवही जीवमात्रमैं भगवानहींकौं देषैं, काहूसमय वैष्णव तिलोचनजू नांमदेवजूसौं कह्यो, जो हमपर ऐसी कृपाकरो, जो भगवांनको दरसन होय, हमतैं तो यह वस्तु दूरिहैं, अरु तुह्मारी अनुग्रहतैं दूर नांहीं, तव नांमदेवजूनें कही, हमतो नित्य सवनिमैं भगवानहीकौं देषतहैं, ऐसैंही तुमदेषो, यह कुत्ताठाढौहैं याहूमैं भगवानहैं, जो चितकी सचाईतैं याहूसैं प्रभू दरसनदैं, तव तिलोचनजू विवाद चरचातो इनसौं कैसैं करैं, सुनि मुसिक्याय चुप व्हैरहे, तव नांमदेवजू फैंट मैंतैं तार निकास वा कुताके बरननको एक नयो पद वनाय गावत भये, सो

कुतातैं दृष्टि आयबेतैं रहिगयो, अरुवाकी ठौर भगवानको दरसन होत भयो, सो जापद गायबेतैं भगवान दरसन दीनो, सो वह यह पद ॥ एप्रभुअंधारेघरकेमदनराय ॥ चाकीचाटैंचूनपाय॥चूला मांझिप्रभुकीसेज॥ छींकाकांनीअधिकतेज ॥ रुगचुगरुगचुगप्रभुकी चाल॥पूंछहलैंज्यौंजौकीबाल॥छांनछायअबबहोरचांआये॥ आगैंरो टीचुपरिंजिमाये ॥ कातीमैंयाप्रभुकोभोग॥गहिगहिलकुटिघिरावैंलो ग ॥ तीनतापयेमेटैंरोग ॥ नांमदेवस्वामीबण्यासंजोग ॥ ४ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ काहू समय नांमदेवजू सौं कबीरजू कही, जो तुम अकेलेही भगवानके दरसन करि अपनौं स्वारथकरो हो, कबहू हमारोहू परमारथ करो, तब नांमदेवजू कही, तुम सब जानौंहोही हमसौं कहाकहो, दरसनकी कमी नांहीं, जीवके वि-स्वासकी कमीहैं, ऐसे दोऊ महापुरुसननैं बातैं कीनी, ताके पश्चात कितेक दिवस पीछैं एक मुगल नांमदेवजूकौं बेगार पकरि मूंडपैं गंठरियादैं आगैं चलायें लियें जातहो, तासमय वा ओरतैं कबीरजू आवतहे, तिनपूछीतुह्मारी ये कहा गति हैं, तब या उत्तरकौं तबही एक नयोपद बनाय चले जात गावन लगे, जबपदके भोगकीतुकि सुनि कबीरजू मुगलके पायन परे, ताही समय मुगल दृष्टि न आवत भयो, अरु वाकी ठौर श्रीरा मचंद्रजूको दरसन करत भये, सो जापदगांयैं नांमदेवजू अरु कबीरजूकौं श्रीरामजूको दरसन भयो, सो वह यह पद ॥ हैं यहरामजीकहाजानूंहौंन ॥ भगतिकरतबेठिपकरैंकौंन ॥ पूबप्रभुकी तसबीपूबहैंसुगल ॥ द्वारिकानगरमैंएहीमुगल ॥ कालोघोराजरदप

लान ॥ताजकुलहसोहैंरहमांन॥कहतनांमदेवसुनौंकबीर ॥चरनगहो येईरघुबीर ॥ ५ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ एक समय कबीरजू बनमैं बैठेहे, तहां इनपैं एकांत स्थलमैं द्वै अपसरा स्वर्ग तैं आई, तब कबीरजूनैं बिचारी, इनसौं संभाषन करिनौं भलो नांहीं, ज्यौं इनको ऐसो रूप देषिनौंभलो नांहीं त्यौं इनकी बोल निहू सुननी भली नांहीं, यह बिचार नयोपद बनायगावत भये, वापदहीमैं उनकौं उठजावे कोउतरदयो, अपसरा निरासव्हैं जात रही, वासमय गायो सो वह यह पद ॥ तुमघरजावोमेरीबैंनांइहांतु मारोलैनांनदैनां ॥ रामबिनागोविंदबिनाबिषलागैंयेनैनां॥ जगमगा तपटभूषननगमयउरमोतिनकेहार ॥ इंद्रलोकतैंमोहनआईमोहिक रनभरतार ॥ इनबातिनकौंछांडिदेहुरीगोबिंदकोगुनगावो ॥ तुल सीमालक्योंनहिंपहिरोपारब्रह्मपदपावो ॥ इंद्रलोकमैंटोटभयोक हाहमसोऔरनकोई ॥ तुमतोहमैंडिगावांनिआईजाहुदईकीषोई ॥ बहुतैंतपसीबांधिबिगोएकचैंसूतकैंधागैं ॥ जेतुमजतनकरोबहुतेरो जलमैंआगनलागैं ॥ हौंतोकेवलहरिकैंसरनैंतुमहोझूठीमाया ॥ गुरपरतापसाधकीसंगतिसोमैंजुपरमपदपाया ॥ नांवकबीरजातजु लाहागृहबनरहौंउदासी ॥ जोतुममांनमहतकारिआंईतोईकमाई दूजीकमासी ॥ १ ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ काहू समैं रैदासजूको उत्ककर्ष बहुत लोकनिकौं करत देषि कित नेक ब्राह्मन आंनधर्म अभिमानीहे, तिनकैं बहुत मत्सरता ऊपजी, तब बहुत सुबुधी सुहृद ब्राह्मन वैष्णव धर्ममैं सावधान हे तिन उनकौं मनैंकीनें,तथा भक्ति महातम कहि सुनायो, तऊ उनके

मनमैं न आई, वैसीहीं वैसी मंडली मिलि राजापैं जाय पुकार करीजु, यह हीन जात ठाकुर क्यौं सेवैं, धर्मशास्त्रमैं मनैं हैं, याकोदोस तुह्मैं पहुंचैंहैं, तब राजानैं यह कही, जोभक्तिमहातम घटि नहि, अरु शास्त्रहू षंडन न कियोजाय यातैं ठाकुर बीचमैं पधरावो, एक और तुह्म बैठो एक और वे बैठैं, तुमहू आराधन करो वेहू आराधन करो, जासुं ठाकुर प्रसन्नहौंहिगे ताहीकी ओर सुतहसिद्धि सिंघासन सहित पधारैंगे,तब ऐसैंहीं कियो, एक ओर ब्राह्मन अपरस होय बेद पाठ करत करत हैं पहर बिताये, कंठ रहिगये, बहुत श्रमतव्हैं चित्तमैं दुषमानि बैठिरहे, फिरि रैदासजू सौं कह्यो अब तुम आरंभकरो, तब इनकौं और कछुतो आवतहो नहीं, हैमंजीरा फैंटमैंतैं निकास एक नयोपद बनाय अकेलेही गदगद कंठ दीनता करुणां सहित गावन लागे, तब भोगकौतुक आयचुकी, वाही छिन ठाकुर सेवाको सिंघासन सब देषत चल्यो सोरैदासजूकी गोदमैं आय रह्यो, सो यह प्रसंग अरु पद जगतमैं बहुत प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ आयोआयोहोदेवादिदेवतुमसरनआयो॥ परमसुखकोमूलजाकैंनांहिंसमतूलसोचरनमूल पायो ॥ लियोबिबिधिजोंनबासजमकीअगमत्रासतुह्मारेभजनबिनभ्रमताफिरयो ॥ मायामोहविषयरसलंपटयहदुपदुसतरातिरयो ॥ तिहारेनांवबिसवासछाडीआंनकीआससंसारीधरममेरोमनधीजैं ॥ रैदासदासकीसेवामानहोदेवापततपावननांवप्रगटिकीजैं ॥ १ ॥

॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ ब्राह्मन नरसीमहता गुजरातमैं महावैष्णव महानुभाव भये, तिनकी दोहितीको व्याहतो, तहां

गये, सो एतो वैष्णवनकी टहल कारि भगवत इच्छा तैं द्रव्य करि हीन हुते, तातैं इनको आदर न कियो, उनके चितमैं माहेराकी चाह, इनकैं माहेरो कहां दैंनकौं, तब इन कीरतन बनाइकैं गायो तब माहेराकी सामग्री सब सिद्ध होय गई, वहौ सुश्रूषा भई, सो वह यह पद ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ नरसीमहता ठाकुर सेवा आगैं अपनी स्त्रीकौं संगलैं नित्य कीरतन नृत्य करते, तब ठाकुर इनकौं फूलनकी माला देते, यह वार्ता उहांके पृथ्वीपति सुनि नरसीजीके ठाकुरके दरसनकौं अचांनक आये परीछाके निमत्त नरसीसौं कहीजु, हम देषत ठाकुर तुमकौं मालादे तो भलेहैं, नांहीतो या पाषंडको फल पावोगे, तब नरसी कही हूंतो कछु जांनौं नहीं, ठाकुरके आगैं कीरतन करौंगो इच्छा उनकी होहिगी तो देहिंगे, यह कहि कीर-तन करन लग्यो ठाकुर कृपा कारि मालादई, सो वह यह पद ॥ देवाअमांनैंतोतुमांनानांवनोआसरोकरमचालेषभूंच्यानजाई ॥ राजामंडलीकप्रेरपेरप्राहुवैंछवीलाबिनादुषकैंनकहाई ॥ कोईकहैलंपटकोईकहैंलोभियोकोईकहैंतालकूटियोरेषोटो ॥ दीनजांणेंनैंदयाकरेदामोदरमालाआपैंतोनूंनाथमोटो ॥ बिहूपाससुंदरीकंठबाहोधरीकेसवाकीरतनएमहोई ॥ अजांणलोगतेअजांणबांणीवदैंपुन्यवंतपुरुषतेप्रेमजोई ॥ आगवैंबिबाहिएघणूंबिगोयोउण्णजलमोलिनैंहासकीधो ॥ द्वादसमेघमोकल्याश्रीपतिआपणूंभक्तिनैंमांनदीधो ॥ सोरठमांहिसहूसाचोकह्योपुत्रीनोमाहेरोएमकीधो ॥ नागरीन्यातिनैंईंडोचढाइयोनरसीयानैंअभैंदानदीधो ॥ देवाअमचीवे

रकांईबिधहोयलाआपणूंभक्तिरखैबिसारिगईला ॥ मलेछमांहितुमे कबीरनैंऊधरचोनामैंनाछापरागयोछावी ॥ जयदेवनैंपदमावती आपीनागरैंमाटरषेभूलिजावी ॥ अमेपलभलतांतुमेपलभलस्योसुषैं वैकुंठमैंकेमरहस्यो ॥ वृंदावनमैंराधिकानैंसंगअमानैंएकलोछाडि तुमेविनोदकरस्यो ॥ आगैंमोनैंरावमंडलीकमारसीमुठडेकधूलिहो यजायथासे ॥ भगतकरतांनरसीयोमारियोभगतबछलतांहरोविर दजासे ॥ श्रीकृष्णसांवलामूंकिमनआंवलाऊठिगोपालजीअसुरथा से ॥ नरसीयानैंएकहारडोआपतांतांहराबापरोस्यौंजासे ॥२॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ वचनिका॥मेडतैं मीरांबाई तिनकौं रानाके छोटे भाईसौं व्याही, यह जग प्रसिद्धहैंही सो कितनेक दिन उपरांत काहूसमैं रानाके वा भाईको देहांत भयो, अरु रानाहुतेसो मीरां-बाईसौं दुषपायरहेहींहे, ये बैष्णवनिको सतसंग करितेयातैं, वासमैं रानानैं कहाई, जो यह औसरहैं तुम भरताके संग सतीहोहु, तब मीरांबाई भगवत रंगआगैं लगेहे, त्यौंहीं लगेरहे यासमैं कछू पेदमानी नाहीं, अरु याबातके उत्तरकौं एक विष्णुपद नयोव नाय रानाकौं लिपि पठयो, पद बहुत प्रसिद्ध भयो ॥ सो वह यह पद ॥ मीरांकेरंगलग्योहरीकोऔररंगसबअटकपरी॥ गिरधर गास्यांसतीनहोस्यांमनमोह्योघननामी॥ जेठबहूकोनातोनहींराणा जीथेसेवगम्हेस्यामी॥ चूडोदोवडोतिलकज्रुमालासीलवर्तसिंगार ॥ औरसिंगारभावैंनहींराणाजीयौंगुरग्यानहमार॥कोईनिंदोकोईबिंदो गुणगोबिंदरागास्यां॥जिणमारगवैंसंतपहूंतातिणमारगम्हेजास्यां॥ जोरीकरांनजीवसंतावांकाईकरसीम्हांरोकोई ॥ हसतीचढिगधैंन

हींचढांयातोबातनहोई ॥ राजकरंतानरकपडेसीभोगीडाजमकेली या ॥ भगतकरंतामुक्तपहूंताजोगकरंताजीया ॥ गिरधरधणीकटूंबो गिरधरमातपितासुतभाई॥ थेथांहरैम्हेह्मांहांरैंहोराणाजीयौंकहैंमीरां बाई ॥ १ ॥ पुन ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ मीरांबाईसौं राना वहौत दुषपायैंरहैं, रानाके घरकी रीततैं इनके भिन्य रीत, यह भगवत संबंध सत्यसंग बिसेसकरैं, देह संबंधको नातो व्यौहार कछु न मांनैं, राना बहुत समुझाय रह्यो, निदांन एक बिषको प्यालो उनकौं पठियो, कह्यो चरनामृतको नामलेकैं दीजियो, उनकैं प्रणहैं, चरणामृतके नामतैं पीहीजांयगे, सो ऐसैंहीभयो, जांनि बूझ पीयो, रानातो इनके मरिबेकी राहदेषतरह्यो, अरु यह झांझ मृदंग संगलैंकैं परम रंगसौं एक नयो पद बनाय ठाकुर आगैं गावतभये, पद बहुत प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ रानैंजूबि षदीनौंहमजानी ॥ जानबूझिचरनामृतसुनिपियोनहींबौरीभोरा नी ॥ कंचनकसतकसोटीजैसैंतनरह्योबारहबानी ॥ आपुनगिरधर न्यावकियोयहछांन्योदूधरुपानी ॥ रानाकोटकवारौंजिहिंपरहौंतिं हिंहाथबिकानी ॥ मीरांप्रभुगिरधरनागरकैंचरनकमललपटानी॥२ पुन ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ रानाको छोटोभाई मीरांको देहसंबंधको भर्ताहो, सो ताको परलोक भयो, तापीछैं मीरांबाई . . . क तीरथ करिकैं अरु श्रीवृंदावनहू आये, तहां जीऊगुसांईजूको प्रण स्त्रीके न देषिवेको छुटाय सबसौं गुरुगोबिंदवत सनमान सत्यसंगकरि द्वारिकाकौं चले, ऊहां वास करिवेकैं लियैं तहां एक मारगमैं नयोपद बनायो, बहुत प्रसिद्ध भयो, सोवह यह

पद, रायश्रीरनछोडदीज्योद्वारिकाकोबास ॥ संखचक्रगदापद्मद रसैंमिटैजमकीत्रास ॥ सकलतीरथगोमतीकेरहतानित्तनिवास॥ संष झालरझांझबाजैंसदासुषकीरास ॥ तज्योदेसरुबेसहूतजितज्योरा नाराज ॥ दासमीरांसरनआवततुह्मैंअबसबलाज ॥ ३ ॥ पुनःप्रसं ग ॥ सो याभांति मनोरथ करत यह पद गावत द्वारिका पहुंचे, तहां कोईदिनरहे तापीछैं मीरांबाईके संग प्रौहितादिक जे रा-नाकेलो कहे, तिनकह्यो अब वहुत दिन भयेहैं अब देसकौं चलो, रानाकी आग्याहैं, ऐसैं है तीन दिन तो कह्यो, फिरि मीरांबाई परि धरनांकियो, तब मीरांबाई ठाकुर श्रीरनछोडजूसौं बिदा ह्हैंबेको नांवलैं मंदरिमैं अकेलेही जाय महाआरति सहित एक नयो पद बनाय गायो, सो वह यह पद ॥ हरिकरिहो जनकीभीर ॥ द्रोपदाकीलाजराषीतुमबढायोचीर ॥ भक्ति कारनरूपनरसिंघधरयोआपसरीर ॥ हरिनकस्यपमारिलीनौंध रयोनांहिनधीर ॥ बूडतैंगजग्राहतारयोंकियोबाहिरनीर ॥ दासमी रांलालगिधरदुषजहांतहांपीर॥४॥सोयहपद गायेंहूं उततैंन टरे,तब महाआरति प्रेमावेस सहित एक औरपद बनायगायो, तबही ठाकुर आपमैं उनकौं याही सरीरतैं लीन करिलीनें देहहूनरही, सो जापद केगायें लीनभये, सो वहयहपद ॥ सजनसुधिज्यौंजांनैंज्यौंलीजैं ॥ तुमबिनमेरैंऔरनकोईकृपारावरीकीजैं ॥ द्यौसनभूषरैंननाहिंनिद्राय हतनपलपलछीजैं ॥ मीरांप्रभुगिरधरनागरअबामिलिबिछुरानिनाहिं कीजैं॥५॥सो येदोऊ पद निकट हारकैं इनकी पर्मचतुर बैष्णवसषी न कंठकरिलीनैं, तथा लिपिलीने तेप्रसिद्ध भये ॥ ५ ॥ पुनःअन्य

पदप्रसंग ॥ मीरांबाईकी कई भांतिकी चरचा निंदकजन राना-आगैं बहुत करन लागे, तब एकसमैं रानानैं अपनैं अंतहपुरकी एक स्त्रीकौं पठाई कह्यो कि आधीराति उपरांत जहां वेहोय तहां चलीजाई जाइये काहूकी हटकी मतरहिये सो वानैं अैसैंही कियो, मीरांबाई अटारीपर सोई सोई जागतही सौंहैं, चंद्रमाकौं देषि देषि हरि प्रीतमके अंतरायको बिरह सह सहतहीं उनकी भांवनां करि करि परी उसास लेतही,इतनेंहीं येजाय ठाढी भई,ताकूं मीरां बाई कह्यो, तनकेक बैठिकैं हमारो दुष सुनौं, यासमैं हमकूं तुम बडे श्रोता मिले, सो जद्यपि वह बिजातीही, परंतु ज्यो कोऊ अति अधीर अनुरागी होय, ताकूं बिजाती सजातीको ग्यान नांहीरहैं, वहि अपने चित्तकी कहैं सो कहैं ही कहैं, यातैं वाके आगैं वाही बेर एक पद बनाय वनायकैं गांवनलगी, सो पद सुनि इनकी अवस्था देषि वह आई हुती सो परम अनुरागमैं मूरछित व्हैंगई, इनकीही निकटवर्ती परम बैष्णव भई, फिरि रानाके अंतहपुरमैं न गई, फिरि राना और काहू स्त्रीनिकौं इनपैं पठावैं सोई नटजाइ, अरु कहैं ज्यो उनपैं ज्यो जायहैं, सो बावरीव्है जातहैं, तातैं हम नजांहिगी, यह बात इनकें बहुत प्रसिद्ध भई, सो पिछली रातके समैं जापदके सुनैंतैं रानाकी सहचरीकी उनमत्तदसा व्हैंगई,सो वह यह पद ॥ सषीमेरीनींदनसांनीहो ॥ पियकोपंथनिहारतां सबरैंनबिहांनी ॥ सषीयनिमिलिसीषदईमनएकनमांनी ॥ बिनदेषैं कलनापरैजियऔसीठांनी॥अंगछींनव्याकुलभईमुषपियापियबांनी॥ अंतरबेदनविरहकीवाहिपीरनजांनी ॥ ज्यौंचातकघनकौंरटैमछरी

विनपांनो॥ मीरांव्याकुलबिरहिनीसुधिबुधिबिसरांनी॥८॥ अन्यपद प्रसंग॥ मारवारमैं गांव एक पालरी तामैं वैष्णव, एक रामानुजी चतुरदासजू नाम रहैं, तिनको षोजी नाम प्रसिद्ध भयो, सो ज्याभांति षोजीजू नाम भयो सो ताको प्रसंग भक्तमालके टीकामैंहैं, बिस्तारव्हैबेकौं यामैं धरचो नांहीं, ये सापीमैं तो षोजी नांव धरते, अरु विष्णुपदमैं चतुरदास नांवधरते, सो यह चतुरदासजू एकसमैं श्रीमतभागवत पाठ करतहे, औरहू श्रोता वहुत वैठेहे, तहां एक कांजर घूंस ताकौं कोल कहतहैं, ताको फंदालयें आय निकस्यो, सरीरकी मलीनदसाहैं, मूंडके ऊपर झेवार आंपिनिपरि आय रहेहैं, सिरपरि छावडी तामैं रोटींनके टूक तथा नाजहैं, अरु मुप तैं यह पुकारतहैं, कोई कुडमंडाडेहो कोईकुड, याभांति कांजरकौं देपि सब श्रोताहसे, अरु चतुरदासजू आसन छांडिकैं दौरे सो वाके पायनमैं मूंड जायदियो, तव सवनि मिलिकही स्वामीजू बावरे व्हैगये, वा कांजरकौं च हूंऔर सब श्रोता ठाढेहैं, अरु स्वामी दंडवतकरतहैं, इतेहीमैं वाकांजरके सरूप भगवानहे सो अंतर ध्यान व्हैगये, तब चतुरदासजूको प्रभाव सवनि ज़ान्यौं, अरु बिस्मय रहे, अरु सव ठौर यह बात बहुत प्रसिद्ध भई, यासमयको तवही एकपद बनायो सो वह यह पद॥ कांजरनहोयबाबोकमलाकंत॥ तीनलोकजाकेमुषभीतरअंतरजांमीसवजीवजंत॥ पांणीमैंपाषांणतिरायेसोतुमल्योहाबिचारी॥ मच्छकच्छवाराहरुनरासिंघवांवनहैंफरसधारी॥ पंडूमपकरुणामयकाजैंजिनकेपावपपारे॥ कां

धैंकूडधारिकालिजुगमैंजनकैंद्वारपधारे ॥ मांडीपातपलकमैंषालक आपणरह्योछिपाई॥चतुरदासदिसपूरणदेषींमारतकोलविलाई ॥१॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ मुरधरदेसमैं एक गांव बलौंदा तहां मुरारिदास बैष्णव रहैं, तिंनकैं बरसवैंदिन गुरको महोच्छव होत हो, ता महोच्छवमैं ए उठि नृत्य कीरतन करतहे, सो एक महोच्छवमैं नृत्य करतहे अभिनय बतावतहे, पद गावतहे, ता पदमैं यह तुक आईजु ॥ जातनावबैकुंठसघरणीकुटंबसहि तचलीकीरकी ॥ तब प्रेमबिबस व्हैंगये, अरु देह छूटिगई, सो वह यह पद ॥ प॰वनपदरजरघुबीरकी ॥ जापरसतासिलकोतनप लटचोगतिभइदेवसरीरकी ॥ ल्यावनावषवटकहिबोलेप्रभुठाढेतट नीरकी ॥ चलेपलायफेरनहिचितवतसंकारामसधीरकी॥ करतपर मगतिपरमकृपानिधितारिपतितभोभीरकी ॥ जातनावबैकुंठसधर णीकुटंबसहितचलीकीरकी ॥ सेसमहेसनिगमनारदमुनिसेवाब्रह्मउ जीरकी ॥ परसाशुकसनकादिभजनरतिउरधारिगुनगंभीरकी ॥१॥ अथअन्यपदप्रसंग ॥ एकसमैं बैष्णव राघोदासजी धमारि बनाव तहे, सो कितेक तुकैं तो बनाई, अरु जहां ए तुकआई, मनुअवनी परमेघकौघेरिरहेबहौचंद॥सो यह तुक लिषतही प्रेम बिबस व्हैंकैं देह छोडि दई तब तहां राघोदासजूकी स्त्री बैठीहुती तानैं उनकी देहक्रिया तो पाछैंकीनी, पहिलैं उनको भोगदैं धमारि पूरीकरी, सोवह यहधमारि ॥ चलिजांहिजहांहरिषेलतगोपिनसंगा ॥ आंनकबहुबाजेतालमुरजमुषचंगा ॥ गावतसुनिभावतमंदमधुरमु षवानी ॥ जनौंहरषिपरसपरमनहूंमदनगतिबानी ॥ ॥ टेक ॥

चलिजांहिजहांक्रीडतनंदनंदनझांझप्रणवडफभारी ॥ बीनउपंग मृदंगचंगबहौदेतपरसपरगारी ॥ करपीचकवीकचमुपकटिपट्ट वेषबनायो ॥ जनुगुदरदैंनकौंबानिवसंतव्रजआयो ॥ हाटिक मनिगनषचितबिविधकरजेरीसाजैं ॥ रुंजमुंजसहनाईढोलढो लकडफबाजैं ॥ आवजअ्रतिआतुरबजैंव्रजजनषेलैंफाग ॥ तां नतरंगनिबायबध्योछायरह्योअनुराग ॥ धुनिसुनितपियारनुकु मकुमभूषनकीनैं ॥ बहौरंगबसनतनजावकचरननिदीनैं ॥ कंव रीकव्रजसवारिनिरषिउपमांकौंहारी ॥ मानौंहाटकलतारहीषगिप न्नगनारी ॥ श्रवनतारउरहारछबिअरुमुकतासरससुढार ॥ जनुजु गगिरबिचदेपियेधसीसुरसुरीधार ॥ रचितिलकभालभालपरमृगम देपसंवारी ॥ जनुयुगलजीभधरिपन्नगपीवतसुधारी ॥ षंजनमीन अधीनदेषिदृगसांगलाजैं ॥ बदनचंदभुवचापस्वातिसुतनासासा जैं ॥ उपमांकौंअविलोककवियासमनांहीऔर॥ मनौंकीरउडिगन गहैंचुगतनहींसुनिऔर॥अतिअधरअरुनछबिअरुदसननिदुतिपाई॥ जनुबिज्जुलबीजनिबिद्रुमबारिबनाई॥ कंठकपोतलजातिकरनअंग दजगमगियो ॥ मानौंजलजमृनालसरदससिबालकलजियो ॥ पौं हचनिअतिपुंहचीसिघनसुंदरस्यामसुपास ॥ मनौंकंजकेकंठलागि भृंगरहेमधुहास ॥ बनिचलीसकलतियपगनूपुरसुरमारी ॥ मानौं बिबिधकामकलहंसकरतकिलकारी ॥ साषिजवादिसुगंधकुमकुमा केसरिघोरी ॥ भाजनिभरिलैंचलीसकलतियगावतहोरी ॥ नषसिष तैंअविलोकिछबिनागरिमोहैंगान ॥ मानौंसंगीतसालापढीघटिबढि परतनतान ॥ छबिसिंधुललनतनदेषतलोचनभूले ॥ स्यामास्या

मरमैंअतिरंगसौंकेसनिपूले ॥ बरनबरनसिरपागश्रवनकुंडलमनिम यअति ॥ मनौंस्यामनगसिषरतरनिजुगरमतितरलगति ॥ उरबन मालबिसालछबिविविधिसुमनबहौबेष ॥ मनौंजलदमैंप्रगटअतिस तमषसारंगरेष ॥ रचितिलकमलैकोपियकरपौरवनाई ॥ मनौंजुग लअहिनिसासिंघनिपरदईदिपाई ॥ घनतनदेषिलजातकंजदृगक्यौं समपावैं ॥ मुषससिस्यामभुजानिदेषिअहिवपुहिलजावैं ॥ नषसि पतैंअबिलोकिछबिकटिपटुपीतसुदेस ॥ मनौंजलदधुरबासषीदामि निरहीप्रवेस ॥ छबिश्रीमोहनतनलघुमतिबरनीनजाई ॥ चितवति चितचोरतमनमथरह्योहैलजाई ॥ तियनिपरसपरहरषिहरितकराडि गेनबाजे ॥ उठेगोपकिलकारलागिदुहुंदिसतेबाजे ॥ एकनिकुमकु मालियोएकनिघोरिगुलाल ॥ चलीसकलब्रजसुंदरीपकरिनमदन गोपाल ॥ सैंननहीमोहनहलधरादियेहैंबताइ ॥ गंहिनीलवसनतनदै बिंदुदियेछिटकाइ॥सबनिमिलिपकरेस्यामसुमुरलीतबलईछिनाई ॥ तबहितरुनिमुसकाइसाषिभाजनलैंधाई ॥ छींटनिछिरकतभरतब होप्रेमछकीनंदनंद ॥ मनुअवनीपरमेघकौंघेरिरहेबहोचंद्र ॥ निर षतविथकतनभजहांजहांअमरबिमान ॥ बरषतसुरसुमननिऔब जाइनिसान ॥ रह्योपरसपररंगसकलतियभवननिआई ॥ तबहि तिनहिंब्रजराजबिबिधपटदईमठाई ॥ आयतरनितनयासलिलमंज नाकियोबलवीर ॥ पहरिवसनआयेभवनसंगसकलआभीर ॥ दुति यामोहनतनराजतपीतसुबास ॥ बैठेसिंगासनवनिबलिबलिराघो दास ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समै तुलसीदासजू कासीनगर रहैं, तहां सहजही एक ओर

वहिर भूमिकौं गयो करते, अवसेष जल रहतो सो नित्यही एक वृच्छके मूलमैं डारयो करते, तामैं एक प्रेत रहतो, सो जलकरि तृप्तहोतो, वह एकसमैं उनकौं प्रतच्छ भयो, अरु कह्यो कि मैं प्रेतहूं, तुम मोकौं जल करि तृपति करतहो सो बडो गुन करतहौ, मैंहू तुमसौं गुन करूंगौ, याओरकौं रामायणकी कथा होयहै, तहां हनूमान जू आवैं हैं, यह उनकीपरीछाहै, षोरे दुबैल वृद्ध ब्राह्मनके स्वरूप, सब श्रोतानिके पहिलैं तो आवैं हैं, अरु पाछैं जायहैं, सो तुलसीदासजू यह सुनि अरु वेकथा सुनि जातहे, तहां उनके पांवनि सीस दैकैं पांव गहि रहे, हनूमानजू बहुत नटे कह्योमैं वृद्ध ब्राह्मनहूं, मोपूं कहा कहैं हैं, इननि पाव नाहीं छाडे तब हनूमानजूनैं कही, तू चाहतहै सो मांगि, अरु मेरो पैंडो छोडि, तब तुलसीदासजू कही, मोकूं श्रीराम लक्ष्मणजूको दरसन करावो, तब हनूमानजू कही बहुत चिंताकरि कह्यो, तैं बहुत दुर्लभ बस्तु मांगी भला कहा कीजे, इच्छा उनहींकी, तब बाहिर एक बनमैं टीबाबतायो, तू यापरि जाय बैठि, इहां तोकूं दरसन होयगो. तहां तुलसी दासजी बैठे, सहित आरत देषत रहे, इतेही मैं श्रीराम लक्ष्मणजू मनुष्यको स्वरूप याभांति कियें आगैं आय निकसे, मलीन तो बस्त्रहैं, हाथमैं धनुहीं अरु तीरहैं, एक मृग मारयोहै, ताकौं उलटायैं लियें जायहैं, लोही गिरत जाय हैं, तब तुलसीदासजू उनतैं निजर टारि भूमिकी ओर देषि रहे, चित्तमैं कह्यो ऐसे निर्दईन मनुष्यौंकौं मैं कहा देषूं, अब वेग निकस जांहिंगे, सो याभांति श्रीरामजी तो निकसि गये, अरु ए तिनके

पाछैं वहुत बेरलौं वैठे, श्रीरामजूके आयवेको मारग देष्यो करे, फेर तहां हनूमानजूको दरसन वाही भांति होत भयो, तिनसौं इन कही मोकूं श्रीरामजूको दरसन कवहोइगो, मैं वहुतवेरको वैठ्यौ हौं, तव हनूमानजूनैं कही, वेमृगिया वारेनिको स्वरूप कियैं श्रीराम लक्ष्मणहीहे, तव तुलसीदासजू रोवनलगे, वहुत पश्चात्ताप कियो, अरु वाहीसमयको तवहीं एक पदवनायो ॥ सो वहयहपद ॥ लोचनरहेवैरीहोय ॥ जानिपूछअकाजकीनौंदयेभुवमैंगोय ॥ अवगतिजूतेरीगतिनजानूरह्योजागतसोय ॥ सवैंरूपकेअवधिमेरेनिकसगयेढिगहोय ॥ कर्महीनहिंपायहीरादयो पलमैंपोय ॥ तुलसीदासश्रीरामविछुरैंकहोकैसीहोय ॥ १ ॥ पुनःअन्यपदप्रसंग ॥ वैष्णव श्रीतुलसीदासजी श्रीराम उपासिकरहैं, तहां कोई एक स्त्री हुती सो सतीहौंनकौं जातही, तानैं मारगमैं तुलसीदासजूसौं दंडौतकरी, तव इनकह्यो सौभाग्यवतीहोहु, यह कहतही वाको पति जीय उठ्यो, यह वातसुनि पातिसाह जाहांगीर तुलसीदासजूसौं वुलायकही, कछु करामात दिषावो, तव इन कही, हम करामातती कछू जानैंनहीं, तव इनकौं कैदकारि राषे, तासमैं राजा अनीराय वडगूजर तुलसीदासजूके पास आये, वीनतीकीनीजु महाराज असोकीजियैं हिंदवनके मारगकी घटती न दीसैं, अरु आगैंतैं कोई वैष्णवनकौं संतावैंनहीं, तापर इननि एक नयो पद वनाय वाकौं गांवनलगे, ताहीसमैं अगनित वादर उपद्रव करत पातिसाहकी दृष्टिपरे, तव पातिसाह भयमानि इनिके पाइनि आंनिपरिकैं छमाकरवाइ सीपदई, चलतीवेर तुलसीदासजी

नैं यह आग्याकीनी कि यहां श्रीरामजीके सेवक हनुमानको पर करआयो सो यहठौर उनकीभई, तुम औरठौर जायरहो, यहां तुम्हारेही कुटंबके बंदीवांन व्हैंरहैंगे, यह सुनि पातिसाहनैं सलेम गढ छोडिदयो, सो अबतकभी पातिसाहके कुटंबके उहां कैद रहतुहैं सो जापदकौं बनाय गायेतैं यहलीलाभई सो वह यहपद ॥ तुमहिंनऐसीचाहियेहनुमानहठीले॥ साहीबसीतारामसेतुमसेजुवसी ले ॥ तुमरेदेखतसिंघकेसिसुमैंडुकलीले ॥ जानतिहूंकलितेरेऊमनु गुनगनकीले ॥ हाकसुनतदसकंधकेभयेबंधनढीले॥ सोबलगयोकि धौंभयेअबगरबगहीले ॥ सेवककोपरदाफटैंतुमसमरथसीले ॥ सास तितुलसीदासकीसुनिसुजसतुहींले ॥ तिहूंकालतिनकोभलोजेरामरं गीले ॥ २ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ बैष्णव तुलसीदासजू सो श्रीरामचंद्रजूके उपासिक महाअनन्य, ऐसेजू औरु अवतारी अवतारानिके गुन बर्नन न करैं, न औरनिके गुन सुनैं, स्वइछासौं न औरनिके स्वरूपको जाय दरसन करैं, अरु औरु महानुभाव बडे जो प्रीतकरि दरसननकूं लेजांहिं, तो उनको अनादरहू कैसें करैं, यातैं जांहिं परंतु बिनां श्रीरामचंद्रजूके स्वरूप औरनिकौं दंडवत नाहीं करैं, एक समय श्रीगोवर्धन आय निकसे तहां श्रीगुसांईजू तुलसीदासजूकौं, श्रीगोवर्द्धननाथजूके दरसनकौं लैंगये तहां दरसन करि तुलसीदासजू, यह दोहा कह्यो ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछबिआजुकी, भलेबनेहौ नाथ ॥ तुलसीमस्तकजबनमैं, धनुषबांनल्योहाथ ॥ १ ॥ सो श्री ठाकुरतो भक्तिआधीन वाही समय धनुषबांन हाथलियैं सब-

निकी दृष्टिपरे, तब तुलसीदासजूनैं दंडवत करी, अरु सबनिके मनमैं इनकी ओरको बडो उत्कर्ष आयो, अरु सबनि कही, जो भक्तिनिके बिषैं आश्चर्य कहा, आगैं तो ठाकुर अपनी प्रतग्याहू मेटि भक्त भीषमजूकी प्रतग्या राषीही, सो ऐसी औट-पाई अनन्यताती इनहीतैं बनि आवैं, अरु या बारतापरि जो कोऊ संदेह उठावैंजु अवतारनिके बिषैं भेदाभेद क्यौंचहियैं, तथा चतुर्व्यूहके बिषैं भेदाभेद क्यौंचहिये तथा ब्रह्मा विष्णु म-हेश इन तीन्यूं देवतानिबिषैं भेदाभेद क्यौं चहिये, सो याकी यह बार्त्ताहैंजु सास्त्रही कीतो आग्याहैं, अरु अनन्यताकी अरु सास्त्रहीको आग्याहैं, भेदाभेद न राषिबेकी, सो दोऊही सत्य हैं, ऐश्वर्ज बुद्धिमैं तो भेदनहीं अरु आसक्ति उपासना भेद बिन क्यौं बनैं, ताको दृष्टांत जो जा राजाके नगरके लोग तथा देसके लोगहौहिं तिनकौं तो राजाके बिषैं तथा राजाके पुत्रके बिषैं तथा मंत्रीस्वरनिकैं बिषैं एक राजाहीके सरीर तुल्य जांनिबेकी बुद्धि चाहियैं, यहजांनैंजु यह सब राजाहीको स्वरूप हैं, अरु राजाकी स्त्रीनिकौं यह बुद्धिनचाहिये, वे यह बुद्धिराषैं तो दोषलगैं, यातैं सास्त्रकही सो जथापात्र दोऊही सत्य हैं, सो तुलसीदासजू ऐसे महाअनन्यहे तिन सौं काहू बैष्णव मित्रनैं बहुत कही, जो महाराज तुह्मारी ऐसी कविता अरु तुम श्रीकृष्णचंद्रको कोऊ एक हू पद बनायो नांहीं, सो ऐसैं कहत कई दिनतो निकासे, फिरि उनकौं बहुत आग्रह जा-नि, एक पद बनायो, तामैं हूं श्रीरामचंद्रजूकी मिश्रतता छाडी

नाहीं, सो यह पद सुनि कितेक रसिकानिकौं बहुत चाहभयो, पद बहुत प्रसिद्धता पाई, सो वह यह पद ॥ बरनौंअवधिगोकुलग्राम॥ उतबिराजतज्यानकीबरइतांहिस्यामास्याम ॥ उहांसरजूबहतअद्भुत इहांजमुनानीर ॥ हरतकलिमलदोऊमूरतसकलजनकीपीर ॥ मनि जटतासिरकीटराजतसंगलक्ष्मनिबाल॥ मोरमुकटरुवैनकरह्यांनिक टहलधरिग्वाल ॥ उहांपेवटसषातारेबिहसिकैंरघुनाथ ॥ इहांनृग जदुनाथतारयोकूपगहिनिजहाथ॥ उहांसिवरीस्वर्गदीनौंसीलसागर राम॥ इहांकुबजाल्यायचंदनकियेपूरनकाम॥ भक्तिहितश्रीरामकृ ष्णसुधरयोनरअवतार॥दासतुलसीदोऊआसाकोऊउतारोपार॥३॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥एक समय गोस्वामी श्रीविठ्ठलनाथजू किते कजीव कृतारथ करिबेकौं इंद्रप्रस्थ पधारे, सो एक सेवगकैं पधारे, ताकैं परोस एक सरावगी महाजन मानकचंद नामरहैं, सो वेहू तमा सो देषिबेकूं आय ठाढोभयो, अरु वाके चित्तमैं आयगई सो कह्यो, महाराज सवारैं मेरी रसोई अंगीकार कीजैं, तब श्रीगुसांईजू आग्याकरी, आंनधर्मीकी रसोई लैबेकी हमारे पद्धति नहींहैं कैसैं लेवैं, तब दूसरैं दिवस फिरि आयो, तासमैं श्रीगुसांईजू श्रीमतभागौतको पाठ सारथक नित्यनेम को करतहे, बहुत जग्यासी श्रोता हू बैठेहे, सो गुसांईजूके मुषके वचन सुनतही वाको चित्त बहुत फिरिगयो, दौरि पांवन परयो, कह्यो मोकौं सिष्यकरो, मैं सरावगीनको धर्म छोड्यो, बहुत हठ कियो तब श्रीगुसांईजू भगवत इछ्या जानि सिष्य कियो, सो मंत्र सुनाय कंठी बांधतहीं याके प्रेम व्है आयो, अरु सुतह सिद्दि कबिता

सक्ति व्है आई, श्री गुसांईजूकौं श्रीठाकुरको स्वरूप मान वाही समैं पद बनाय गाय उठ्यो, पद बहुत प्रसिद्ध भयो सो वह यह ॥ पद ॥ प्रगटेश्रीबिट्ठलनाथहमारेद्वापुरवसुधाभारहरचो ॥ अबकलजुगजीव उधारेजबबसुदेवगृहप्रगटहोयकैंकंसादिकारिपु मारे ॥ अबबल्लभगृहप्रगटहोयकैंमायाबादनिवारे ॥ ऐसोको कबिहैंकलमहियांगुनबरनतजुतिहारे ॥ मानकचंदप्रभुकौंषोजत गावतबेदपुकारे ॥ १ ॥ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ छीतु स्वामी सो स्वामी तो पीछैं कहाये, पहिलैं छीतू मुथरिया कहावतहे, चितमैं वहोत रिंद कुटीचर रहैं, शैवहुते, श्रीगुसांईजूकी कोऊ स्तुति करैं अरु कहैं जोए श्रीगोवर्द्धननाथ को स्वरूपहैं, तब ए चित्तमैं बहुत उद्वेगकौं प्राप्त व्है, ईरषा मांनैं, एक दिवस एक नारियरमैं राष भरिकैं श्रीगुसांईजूकौं जाय दरसन करि वह नारियर भेट कियो, तब श्रीगुसांईजू आग्याकरी वाहीकौं, जो तू या नारियरकी गिरी काढि सबनिकौं बांटि दैं, तब यह चित्तमैं सकुच्योजू, इनके इते सिष्य शाषा बैठेहैं सो राषदेषिकैं मोकौं लात मूकीनतैं मारिडारैंगे, यह जांनि वाको ससोक मुष व्हैंगयो, तब गुसांईजू फेर आग्याकरीजू तू चिंता करातिहैं सुमति करि, अरु गिरी बांटिदेहु तब वानैं जटा दूरिकरी बांटिवेकौं, तब राषकी ठौर गिरी सुंदर निकसी, सो सबकौं बरताइ दई, छीतू मुथरियाके चित्तमैं बडो चमत्कार भयो, दंडवत करि शिष्य भयो, तब वाही ठौर एक बिष्णु पद बनायो, सो वह यह पद ॥ जेबसुदेवकियेपूरनतपतेईफलफलितश्री

वल्लभदेव ॥ जेगोपालहुतेगोकुलमैंतेईअबआंनिबसेकरगेह ॥ ते वेगोपबधूहुतीव्रजमैंजेअबबेदरिचाभईयेह ॥ छीतस्वामिगिरधरन श्रीबिठ्ठलवेईयेईयेईबेईकछुनसंदेह ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीगुसांई हरिबंस, श्रीवृंदाबन बास करैं, रसिक वैष्णवनकौं सबभांति औसें सुषदेंहि, भजनानंदमैंजु राति दिन जात जान्यौं न परैं, सो याही बीच एकसमैं श्रीहरिबंसजू श्रीवृंदाबन पायो, नित्य सिधपरकरमैं प्रवेस करयो, पाछैं सब रसिक वैष्णवनकौं महा बिरह भयो, राग रंग सुष समाज भजनानंद मिटगयो, व्यासजी एक कोटरीमैं बैठि रहे, भीतरकी सांकरी लगाय विरह दुषतैं बाहिर न निकसैं, प्रसाद कछु न लेह, एक समैं सब बैष्णवनि मिलि बाहिर निकासे, सो बाहिर आय बैष्णवनके समाजमैं एक नयो पद बनाय सुनायो, सो सुनतही सबनिकौं हरिबंसजीको बिरह आवेस भयो, कितेक मूर्छित भये, सो वह यह पद ॥ हुतोसुषरसिकनकोआधार ॥ बिनहरिबंसजुरसरीतिनिकोकापैंचलिहैंभार ॥ कोराधादुलरावैंगावैंबचनसुनावैंचार ॥ वृंदावनकीसहजमाधुरीकहिहैंकौंनउदार ॥ वडोअभाग्यअनन्यसभाकोउठिगयोठाटसिंगार ॥ व्यासएककुलकुमदचंदबिनुउडगनझूठेथार १॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ बुंदेलषंडके एक प्रोहित व्यासजी महा पंडित दिगबिजैकौं फिरतहे, सो श्री वृंदावनहू आइ निकसे, पूछ्यो इहां कोऊ पंडितभीहैं, तब काहूनैं कह्यो हरिबंसजीहैं, तब बाद करिबेकौं हरिबंसजी

पास आये, कह्यो मोसौं विद्याकी चरचाकरो, तासमैं हरिवंसजी ठाकुरकै रसोई करतहे, तब व्यासजी बोले भलें, विद्याकी चरचा रसोई करि चुकैं पीछैं करियैंगी, इतनें कछूसुलपसंभाषनतोकियेंजाइये, तबश्रीहरिवंसजू टोकनीउतारि चूलाजलतैं बुझाइदयो, तबव्यासजूबोले, इतनौक्यौंकियो, दोऊ बात करत जाते, तबश्रीहरिवंसजू वाहीसमैं नयोपद बनाइ सुनायो, सो पद सुनतही व्यासजू, सर्व पुस्तक संग्रह ऊंटनपैं लदेउतारि श्रीजमुनामैंडारिदिये, विवाद उदवेगछोडि वृंदावनबासकियो, याभांति व्यासजूकैं उपदेसलग्यो॥सो वहयहपद ॥ यहजुएकमनबहौतठौरकरिकहिकौंनैंसचुपायो ॥ जहांतहांविपतिजारजुवतीलौंप्रगटपिंगलागायो ॥ द्वैतुरंगपरिजोरचढतहठिपरतकौनपैंधायो॥ कहिधौंकौनअंकपरराख्योजोगानिकासुतजायो ॥ जैश्रीहितहरिवंसप्रपंचबंचिसबकालव्यालकोखायो ॥ यह जियजानिस्यामस्यामापदकमलसंगीसिरनायो ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीगुसांई हरिवंसजूके दरसन परसन संभाषन उपदेश बिष्णुपद तुक ॥ यहजुएकमनबहुतठौरकरिकहिकौंनैंसचुपायो ॥ इत्यादि सुनि व्यासजू श्रीवृंदाबन आय निकसेहे, सोचित्तकौं संसारतैं निबर्तकरि बैठि रहे, बास करिबेकैं अर्थ वाही दिन श्रीगुरुगोविंदकृपातैं कबिता शक्ति व्है आई, प्रथमही एक बिष्णु पद बनायो ॥ सो वह यह पद ॥ कहाकहानहिंसह्योसरीर ॥ स्यामसरनबिनकामसहायनजनममरनकीपीर ॥ करुनांवंत साधुसंगतबिनुमनहिंदैहिंकोधीर ॥ भक्तिभागवतबिनकोमेटैंसुखदैं

दुखकीभीर ॥ बिनअपराधचहूंदिसबरषतपिसुनबचनअतितीर ॥ कृष्णकृपाकवचऊबरैडरपचढ़ीउरपीर ॥ नामासेनधनारैदासदीन ताकरीकबीर ॥ तिनकीबातसुनतश्रवननिसुखबरपतनैननिनीर ॥ चेतहुअबैबेगकलिबाढीकामनदीगंभीर ॥ व्यासबचनबृंदाबनबासि सेवहुकुंजिकुटीर ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग॥ श्रीव्यासजू बृंदावन आय बासकियो तिनकौं लेजायबेके वासतैं बुंदेलाराजा श्रीवृंदावन आयो, बोहोत हठ कीनो, राजाकह्यो तुम न चालोगेतोमैंहूं यहांतैं न जाऊंगो, तब व्यासजूकूं येबातैं सुनि सुनि बोहोत दुख भयो, बृंदावन छोडयो न भायो, ता समय एक नयो पद बनाय गांवत रोवत फिरनलगे, जाबृच्छसौं जायमिलैं तावृच्छकूं छोडैंनहीं, बृंदावनमैं तो वृच्छ बहोत इनके चित्तमैं अनुराग बहोत, अरये अकेले कहांलग मिलैं, है तीन दिन बिना प्रसाद जल ऐसैं ब्रितीत कीने, सो जापदकौं गाय गाय रोय रोय वृच्छनसौं मिले, सोवह यह पद॥ बृंदावनकेरूंषहमारे मातपितासुतबंधु॥ गुरुगोविंदसाधुगतिमतिसुपफलफूलनिकोगंधु॥ इनहिंपीठिदैंदीठअनतकरैंसोअंधनमैंअंधु ॥ व्यासइनहिंछोड़ैंरुछुडावैंताकोपरियोकंधु॥ ॥ ३ ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग ॥ एकसमैं श्रीबृंदाबन रासहोतहो तहांसबगुसाईं महंतुबैष्णव गृहस्थ दरसनकरत, तहांनृत्यकरतश्रीठकुरानीजुको नूपुरटूटिगयो, सो व्यासजूहू उहांबैठेहे, इन अपनी जनेऊ तोरि पाइके अंगूठामैं पकरि बटदैं नूपुर पोय चरननकैं बांधिदियो, यहदेषि कितेकतो रीझिगये,बहोत लोगनि निंदाकरी, तबव्यासजूनैं यहकही, इतनें दिन यहडोरा टोयो हो, सो

आजहीकामआयो, फिरि यापर एक पदवनायो ॥ सोवहयहप द ॥ रसिक अनन्यहमारी जाति ॥ कुलदेवीराधावरसांनौ पेरोव्र जवासिनसौंपांति ॥ गोत गोपालजनेऊमालासिपासिपंडीहरिमंदि रभाल ॥ हरिगुनगानवेदधुनिसुनियतमुंजपपावजकुसकरताल ॥ सापाजमुनापटकर्मप्रसादप्रानधनरास ॥ सेवाविधिनिषेदजडसं गतिव्रत्तसदावृंदावनवास ॥ संमृतभागवतसंध्यातर्पनअरुगायत्री जाप ॥ वंसीरिपजजमानकलपतरु व्यासनदेतअसीससराप ॥ ॥ ४ ॥ पुनः अन्यपपप्रसंग ॥ व्यासजूवैष्णवनिको सीतप्रसा द प्रसिद्धलैनलगे, तबकितेक यावातकी चरचाकरनलगेजु, तुम कुटंत्र रापतहो, तुमारे कौंन व्याहनकौं आवैंगो,अरुतुम्हारेपुत्र कौंनकेव्याहोगे, कुटंबीनकौं ये जोगनाहीं, तबयाकहिवेपरि व्या सजूनैं एकपद वनाय सबानिकौं सुनायदियो ॥ सोवहयहपद ॥ इ तनैहैंसबकुंटबहमारो ॥ सेनधनानामांपीपाकवीररैदासचमारो ॥ रूपसनातनकोसेवकगंगजलभट्टसुपारो ॥ सूरदासपरमानंदमे हामीरांभक्तिबिचारो ॥ वांभनराजपुत्रकुलउत्तमकरतजातकौंगा रो ॥ आदिअंतभक्तनकोसर्वसराधावल्लभप्यारो ॥ आसूकोहरि दासरसिकहरिवंसनमोहिबिसारो ॥ इहिंबिविचलतस्यामस्यामा कैव्यासहिबोरोभावैतारो ॥ ५ ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग ॥ एकसमैं व्यासजू कितक वैष्णूनौतेहे, तिनकौं अपनेघर प्रसाद लिवावतहे, उनकीपंकतिमैं आपहूबैठेहे, तहां व्यासजूकी स्त्री परोसतही, सोदूधप्रसादी सबवैसनवौंकौं परोसतआई, व्यासजूबैठेहे, तहां सबमलाई व्यासजूकौंपरोसदई, यावातसौं व्यासजू वहोतदुष पाय

लरनलगे, जो न कहिवेके वचनहेसो कहे, अरु वाठौरकौं छोडि औरठौरि वैष्णवनकें जायरहे, केतेकादिन वीते, तब बईसनवनि व्यासजूसौं हठिकरि घरिकूं ले गये ॥ उनकी स्त्री को अपराध छिमा करायो, तब स्त्रीकूं सिछ्या देवेकूं एक नयो पद बनाय सुनायो, सो वह यह पद ॥ बिनतीसुनियोराधादासी॥ जासरीरमैंबसतनिरंतरनरकबातपितपासी ॥ ताहिभुलायहरिहिंट्ठगहियोहसतसंगसुपरासी ॥ बढैंसुहागताहिमनदीनैंऔरुबराकविसासी॥ ताहिछांडिहितकरैंऔरुसौंगरैंपरैंजमफासी ॥ दीपकहाथपरैंकूवामैंजगतकरैंसबहांसी ॥ सर्बोपरिराधापतिसौंहितकरतअनन्याबिलासी ॥ तिनकीपदरजसरनव्यासजूकौंगतिवृंदाबनवासी६॥ ॥ पुनः ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ व्यासजू श्रीवृंदावन रहैं, सो एक समैं कोइक दिन निर्तक, वैष्णूं रसिकानिको सतिसंग रंग सुष समाज सब मिटि गयो, भले भले वैष्णूं अंतर ध्यान भये, यातैं बाह्य सुष भगवत सनबंधी सब जात रह्यो, केवल भावनामैं अंतरंग चितरहैं, तब लौंही सुष, फिर बाहिर चित आयो, अरु महा दुष व्यापैं तब व्यासजू, एक नयो पद बनाय बैष्णावनके बिरहमैं गावत रोवत फिरन लागे, जहां तहां कुंजगलीनमैं, ऐसैं कितेक दिन बिरह दुषमैं विताये, पद प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ विहारहिंस्वामीबिनकोगावैं ॥ बिनहरिवंसाहिराधाबरकौंकोरसरीतिसुनावैं ॥ रूपसनातनविनकोवृंदाबिपुनमाधुरीपावैं ॥ कृष्णदासबिनगिरधरजूकौंकोअबलाडलडावैं ॥ मीरांबाईबिनकोभक्तनिपिताजानिउरलावैं ॥ स्वारथपरमारथजे

मलविनुकोसकबंधकहावै ॥ परमानंददासबिनअबकोलीलागाय सुनावै ॥ सूरदासबिनपदरचनाकौंकौनकबहिकहिआवै ॥ औरसकलसाधनबिनकोअबकलिकालकटावै ॥ व्यासदासइनबिनुकोअबतनकीतपतिबुझावै ॥७॥ पुनः॥ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीव्यासजूके देहांतको समैं आयो, तब इनके बहन बेटादिक कुटंबके निकट आय बैठे, व्यासजूकों कहन लागे, जो तुम अब हमकूं कौनकूं सौंपोहो अरु कहा कहोहो, हम कहा करैं, तब व्यासजू और कछु बोलेनांहीं अरु एक नयो पद बनाय उनकूं सुनाय दयो, सो वह यह पद ॥ बहिनीबेटाहारिकौंभजियो ॥ जासंगतितैंपतिगतिनासैंसोसंगतितैंलजियो ॥ मातपिताभइयाभामिनिकुलसभीसपासुषतजियो ॥ साधनिकेपंथचलियेऊबटचलैंसुबेगवरजियो ॥ गुरुहिंनआवैंगारिबातकीसोसांगरीसंजियो॥ व्यासाबिमुषदुजहूपरिहरिकैंसुपचभक्तिकीओटउबरियो ॥ ८ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ दोऊ नेत्र करि हीन एक ब्रजबासीको लरिका ब्रजमें सूरदास, सो हरिके भंडउवा बनावै हतुकिया, ताके वासतैं श्रीगुसांईजूसौं जाइ लोगनिनैं कही, तापर श्रीगुसांईजू वा लरिकाकौं बुलाय वाके भंडउवा सुनें ऐसे, श्रीमुषतैं कह्योजु लरिका तू भगवत जस बनाय, श्रीभागौतके अनुसार प्रथम जनमहीकी लीला गाय, तब वानैं कही राजहूं कहा जांनौं, तब आग्या करी भगवत इच्छाहैं, तू बनावैंगो, ऐसैं श्रीगुसांईजूकी आग्यातैं भगवतलीला भ्यासी, सरस्वती जिव्हाग्र भई, प्रथमही प्रथम श्रीसूरदासजू, जनमलीलाकी वधाई बनाय अरु श्रीगुसांईजू

कौं सुनवाई, तब वहोत प्रसन्न भये, कंठी दुपटा महाप्रसाद दयो, अरु सबनसौं आग्या करीजु श्रीठाकुरजूकी आग्यातैं हम कहतहैं, बरसवैं दिन जनमाष्टमींकी जनम लीलाकी जनमाष्टमीकौं श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगैं प्रथम एही बधाई गावैंगे सो अब लौं एही बधाई गावत हैं, सो वह यह पद ॥ राग आसावरी॥ ब्रजभयोमहरकैंपूतजबयहबातसुनी ॥ सुनिआनंदेसबलोकगोकुल गानिकगुनी॥ग्रहलगननछतबलसोधिकीनीबेदधुनी ॥ अतिपूरबपूरेपुन्यरुपीकुलअचलथुनी ॥ सुनिधाईसबब्रजनारिसहजासिंगार कियैं ॥ तनपहरैंनवतनचीरकाजरनैंनदियैं ॥ कसिकंचुकीतिलक लिलाटसोभितहारहियैं ॥ करकंकनकंचनथारमंगलसाजालियैं ॥ अपअपनैंघरतैंनिकसीभांतिभली ॥ मनौंलालसुनिनकीपांतिपिंजरनिचूरिचली ॥ गावैंमंगलगीतमिलिदसपांचअली ॥ मनौंभोरभयैंरबिदेषिफूलीकमलकली ॥ मनिश्रवनानितरलतरवनीबैंनी सिथलगुही ॥ सिरबरषतसुमनसुदेसमानौंमेघफुही ॥ मुषमांडैं रोरीरंगसैंदुरमांगछुही ॥ उरअंचरउडतनजानैंसारीसुरंगसुही ॥ पियपहिंचलैंपहुंचीजायअतिआनंदभरी ॥ लईभीतरिभवनबुलाइसबसिसुपाइपरी ॥ इकबदनउघारिनिहारिदेतअसीसपरी ॥ चिरजीवोजसोदानंदपूरनकामकरी ॥ धनिदिनधनियहरातिधनियहपहरघरी ॥ धनिधनिमहरिकीकूषिभागसुहागभरी ॥ जिंहिंजायोऐसोपूतसबसुषफरानिफरी ॥ थिरथाप्योसबपरवारमनकीसूलहरी ॥ सुनिग्वालनिगाइबहोरिबालकबोलिलियैं ॥ गुहिगुंजावासिबनधानआंगनचित्रकियैं ॥ सिरदधिमा

षनकेमाटगावतगीतनये ॥ मिलिझांझमृदंगबजातसवनंदभवनगये॥ इकनाचतकरतकनूलछिरकतहरददही ॥ मानौंवरषतभादौंमासन दीघृतदूधबही ॥ जहांजहांचलिजांहिकौतकतहींतहीं ॥ अतिआ नंदमगनगुवालकाहूवदतनहीं ॥ इकधाइनंदपैंजाइपुनपुनपाइप रैं ॥ इकआपआपहींमांहिहसिहसिअंकभरैं ॥ इकअंबरसबैंउतार देतनसंककरैं ॥ इकदधिरोचनअरुदूबसबनिकेसीसधरैं ॥ तबनंद न्हाइभयेठाढेअरुकुसहाथधरैं ॥ नंदीमुखपितरपुजाइअंतरसोकहरैं॥ घसिचंदनचारुमगाइबिप्रनितिलककरैं ॥ वरगुरुजनद्विजपहिराइ सबनिकेपायपरैं ॥ गइयागनीनजांहितरुनसुबछबढी ॥ चरैंजमुन कैंकाछदूनैंदूधचढी ॥ पुररूपैंतांबैंपीठसोवनसींगमढी ॥ दीनीद्वि जनिअनेकहरषिअसीसपढी ॥ वंदीजनमागधसुतआगनभवनभरे॥ सबबोलैंलैंलैंनामहितकोऊनांबिसरे ॥ अतिदानमानपरधांनपूरन कामकरे ॥ जोजिंहिंजाच्योसोइदीनौंरसनंदरायढरे ॥ अपनेमित्र सबंधहसिहसिबोलिलियैं ॥ मथिमृगमदमलयकफूरमाथैंतिलककि यैं ॥ मनिमालापहिरायवस्त्रविचित्रदियैं ॥ मानौंवरषतमासअसा ढदादुरमोरजियैं ॥ तवरोहिनीअंबरमंगायसारीसुरंगधनी ॥ दीनी बधूनिबुलाइजैसीजांहिबनी ॥ सबनिकसीदेतअसीसरुचिअपनी अपनी॥ अतिआनंदसौंबहुरीनिजगृहगोपधनी॥ घरघरभेरमृदंगप टहनिसांनबजे ॥ बांधीबंदनवारधुजाकलकलससजे ॥ तादिन तेएलोकसुखसंपतिनतजे ॥ सुनिसूरसबानिकीयहगतिजिनह रिचरनभजे ॥ १ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ एकसमैंश्रीसूरदा सजू, बाहिर एकांत स्थानबैठेहे, तहांहरि कृपा शद्वाहट सुन्यौ

तब नेत्रनिकौं चितमैं दुख करिकैं पद बनायो॥सो वह यह पद॥कहावतऐसेत्यागीदान॥च्यारपदारथदयेसुदामांगुरकेसुतदयेआन॥वभीषनकौंलंकदीनींप्रेमप्रीतपहिचान॥ रावनकेदसमस्तकछेदेदृढगहिसारंगपान॥प्रल्हादकौंनिजकृपाकीन्हीसुरपतिकियेनिदान॥सूरदासपरवहुतनिठुरतानैंननहूकीहान॥२॥सो वह यह पद॥बनाय गायो, तबनेत्रव्हैंआये, अरु हरिदरसन भयो, तासमैं आग्याभई, तूकछुमांगि तबसूरदास यहमांगीजु मेरेनेत्र वैसेही मुदिजाय, यह रूप नैननिमैंलैकैं, अवऔरकहादेखौं, तबफिर वैसेही नेत्रहीन व्हैं गये, सो याभांति दरसनकरिकैं वाहीसमैं बनायो यहपद, सो वह यह पद॥सनमुषआवतबोलतबैंन॥नांजांनूंलिहिंसमैंजुमेरैंसबतनश्रवनकिनैंन॥ रौंमरौंममैंसुरतिसद्धकीनषसिषलोचनऐंन॥इतेमांझबांनीचंचलतासुनीनसमझीसैंन॥ तबजाकिथकिचकिठईमौंनसुषश्रवनपरैं चितचैंन॥सुनहुमूरयहसत्यकिसंभ्रमकिधौंसुपनौंदिनरैंन॥२॥

पुनः अन्य पद प्रसंग॥ वैष्णूं सूरदासजू तिनके बहोत पद हैं, अरु प्रसिद्ध हैं तिन सूरदासजूकी, स्तुति पातिसाह अकबर सुनि अरु सूरदासजू सौं मिलि, अरुउनकी परिछालैंनकौं यह कहीजु, तुम्हारी कविताकी बहोत बडाई सुनीहैं, तातैं कछुहमारोहू वर्नन करो तापर सूरदासजू, या बातके उतरकौं, एकपदही पढि सुनायो, सो सुनि पातसाह सहित सब सभा रीझिगई, सो वह यह पद॥ मनमैंरहीनाहिनठौर॥ नंदनंदनअच्युतकैसैंआंनियेउरऔर॥ द्यौंसजागतचलतचितवतिसपनसोवतराति॥ हृदैतैंवहमदनमूरतिछिनननइतउतजाति॥कहतकथाअनेकऊधौलोकलोभदिषाइ॥

कहाकरहिहितप्रेमपूरनघटनासिंधुसमाइ ॥ स्यामगातसरोजआनन ललितमधुरसहास ॥ सूरऐसेरूपकौंयहमरतलोचनप्यास ॥ ३ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं अकबर पातसाह तांनसैंनसौं बूझीजु, तैं कौंनसौं गाइबोसीष्यो कोऊ तोहूतैं अधिक गावैं हैं, तब यानैं कहीजु मैं कौंनगनतीमैंहूं, श्रीवृंदावन मैं, हरिदास जी नांमैं वैष्णव हैं, तिनके गायबेको हूं सिष्यहूं यह सुनि पातसाह तांनसैंनकै संग जलधरीलैं श्रीवृंदावन स्वामीजूपैं आयो, पहि लैं तांनसैंन गायो बिनती करी महाराज कछु बोलिये तब श्री हरिदासजू, आलाप चारीकरी मलार रागकी, चैत्र बैसापको महीनौं हुतो, तब ताही बेर घटा घुमडि आई, मोर बोलनि लगे तब नयो बनाई विष्णु पद गायो, तब ताही बेर बरपा हौंन लगी सो वह यह पद ॥ ऐसीरितुसदासरबदाजोरहैंबोलतिमोरनि ॥ आछेबादरआछेधनुषचहूंदिसआछीनीकीमेघनिकीघोरनि ॥ आ छीभूमिहरीहरीतापैंबूंदनिकीरैंगनिकामकरोरनि ॥ हरिदासकेस्वा मीस्यामाकुंजबिहारीकैंगावतरागमलारजम्पोकिसोरकिसोरनि १॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं सूरदासजू कृष्णदासजूसौं मि ले, अरु पद चरचा करत भये, तासमैं गोधूलि कबरियां जांनि सूरदासजू कृष्णदासजूसौं कह्यो, यासमैं को एक पद अब हमहू बनावत हैं अरु तुम हू अब बनावो, सो सूरदासजूनें तो दोय च्यार बनायलये, कृष्णदासजू बनाइबेकौं लगे, सो तत-काल बन्यौं नाहीं, यातैं संकोच भयो, तब ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ आप पद बनाय पत्रमैं लिषि कृष्णदासजूकी गोदमैं डारि दियो,

तव कृष्णदासजू आसश्चर्य मानि पत्रलैं पढिउठे, सो सुनि सूर-दासजू रीझे बडे महानुभाव हैं, जानि गये क़ह्यो, यह तो तुमारी हिमायत वडी ठौरतैं भई, सो श्रीठाकुरजूनैं बनायो, सो वह यह पद ॥ रागगोरी॥आवतबनैंकांन्हगोपबालकनिसंगनईचुकीएुरैंनछुरतअलिकावली ॥ भौंहमनमथचापबंकलोचनबांनसीससोभतमत्तमोरचंद्रावली ॥ उदितउडराजसुंदरासिरोमनवदनानिराषिफूलीनवलजुवतिकुमदावली ॥ अरुनसकुचितअधरबिंवफलउपहसतकछुकप्रगटितहोतकुंददसनावली ॥ श्रवनकुंडलभालतिलकबेसारिनाककंठकउस्तभमनीसुभगत्रिबलावली ॥ रतनहाटकषचितउरसिपदकनिपांतिबीचराजतसुभ्रझलकमुक्तावली ॥ बलयकंकनबाजूबंधआजांनुभुजमुद्रिकाकरतलबिराजतनपावली ॥ कुणितकरसुरलिकामोहतसकलबिश्वगोपिकाजनमनसुग्रथितप्रेमावली ॥ कटिछुद्रघंटिकाजटितहीरामईनाभअंबुजबलितभृंगरोमावली ॥ धाइकबहुकचलतभक्तिहितजानिपियगंडमंडलरचितश्रमजलकनावली॥ पीतकोसेयपरधानसुंदरअंगचरननूपरबजितगीतसब्दावली ॥ हृदयकृष्णदासबलिगिरधरनलालकीचरननषचंद्रिकाहरतातिमरावली ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं अधिकारी श्रीकृष्णदासजू श्रीठाकुर गोवर्द्धननाथजूकें कछु बसन भूषनादिक सामग्री लैबेकौं श्रीगोवर्द्धनतैं दिल्ली आये, तहां रात्रिके समैं काहूकी अटारी पर एक रामजनी गायबेमैं महा प्रबीन ही सो गावत नाचत हुती, ताको गान सुनि मारगमैं रीझि थकित व्हैरहे, जान्यौंजु याको राग श्रीगोवर्द्धननाथ रिझवारके

सुनायबे जोग्य हैं, फिर वहैं उहां सौं अपनें घरकौं चली, तब ए वाकौं भगवत इछातैं बहोत द्रव्य देकैं लैं आये, वासौं कह्योजु ह मारैं सरदारहैं सो बडे रिझवारहैं उदार सुंदर अपार चायकहैं, तुह्मारैं सब भांतको परम लाभ होयगो, ऐसैं मारगमैं उपदेस देत आये, वाहूकैं पराचीन सुध करिकैं श्रवनानुराग बढत गयो, ए श्रीगोवर्द्धन पहुंचे अरु वाकौं मंदिरमैंलैंआये, तहां लौं वानैं भेद भगवत सेवा सरूपको न जान्यौं हो, कीरतन आरंभ कियो कृष्णदासजू एक अपनौं बनायो एक पद कंठ करायो हो,सो गावत भई, इतनैंहीमैं टेरा षैंच्यो, तब महा सुंदर माधुरी देषि, सजल नैननि इक टक रीझि छकि रहि गई ॥ दोहा ॥ सषियांकषियां हाथदैं, तनराष्योठहराय ॥ मनहरिमंदिराछबिछक्यो, दईनारिल रिकाय ॥ १ ॥ ऐसैंकृष्णदासजूकीभेटठाकुरकैंअंगीकारभई ॥ वाकीमति आकर्षन करिलई, फिरि याभांति अश्रुधाराचलत महा प्रेमावेस सहितअभिनय बनावत गावत जबभोगकौतुकआई, तब वाकोसरीर छुटिगयो, सबनि बिस्मयव्है धनि धनि करचो, बडेबडे मर्यादाछाडि वाकीदेहक्रिया करन संगगये, सोजापदगावतमैंश्रीकृष्णदासजूकीकृपासतिसंगतैं रामजनीभी सरीरछाडि भगवतप्राप्ति भई ॥ सो वह यह पद ॥ मोमनगिरधरछबिपरअटक्यो ॥ ललिततृभंगानिपरचलिगयो तहांहिंठटक्यो ॥ सजलश्यामघनबरनलीनव्है फिरचितअनततनभटक्यो ॥ कृष्णदासकियेप्राननौछावरयह तनजगासिरपटक्यो ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ काहू समैं श्रीगोस्वामि विठ्ठलनाथजू, भगवत इच्छा आधीन व्हैकैं श्रीगोवर्द्ध-

नतैं फेर बिदेसकौं गवन कीनौं, कलिके जीवनिकौं ब्रह्म संबंध करिबेकौं, तहां अपनौं सेवक कुंभनदास हुतो, ताहूकौं संगलीनो सो गुर आग्यातैं नांही न करिसक्यो, जहां पहिलेई दिवस जाइ उतरे, तहां सब बृछनितैं ऊंचो एक बृच्छ देषि ताबृच्छकी टिगुसी-पर कुंभनदास चढे, श्रीमंदिरको दरसन करिबेकौं, एक पहरहीकी अंतरायमैं, जहां एक पद नयो बनायकैं गायो, सो वा पदको भोग आयो, तब टिगुसीतैं भूमिपर गिर्‌यो, श्रीठाकुरकी कृपातैं जीवसौं बच्यो, यह देषि, महाश्रा सक्तवानजानि श्रीगुसांईजू कुंभनदासकौं श्रीजी पासिही छो डिगये, सो वह यह पद ॥ कितेकदिनव्हैंगयेबिनदेषें ॥ तरुनाकि सोररासिकनंदनंदनकछुकउठतमुखरेषैं॥ वहचितवनिवहचालमनोह रवहबांनिकनटभेषैं ॥ वहसोभावहकांतिवदनछबिकोटिकचंदाबिसे षैं ॥ मदनगोपालसंगखेलनकीआवतहियैंउमेषैं ॥ कुंभनदासलाल गिरधरबिनजीवनजनजनमअलेखैं ॥ १ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीगोवर्द्धनपर श्रीगोवर्द्धननाथजूको मंदिर,तामंदिरके सामुहैंगांव जमुनावतो, तहां गौरवाकुंभनदासनांव, श्रीगुसांईजूको सेवगर हैं, सोदिनकौंतो जथाजोग्य भजन व्यवहार जथाजोग्य समैंहो यसो सबकरैं,अरु राति बहोतजाय तबसोइबेकौं अपनी ऊंची मैरी तहांजाय, सो व्हांजातही प्रेमावेस व्हैंजाय,यहदसाहोते कितेक दि नभये, एकसमैं पूरनप्रेम अवस्था न भई, कछुथोरीभई तबतहांदूर तैं, श्रीगोवर्द्धननाथके मंदिरके दीपगकौं देखिदेखि, अश्रुपुलकि प्रेमसहित एकपद बनाय बनायगायो, सोवहपदसुन्यौंसबानियहभेद

जान्यौं ॥ जोयेमंदिरकेदीपगकौंदेखिनित्यआवेसास्थितहोतहैं ॥ सोवहयहपद॥ वेदेखोवरतझरोखनिदीपकहरिपौढेऊंचीचित्रसारी॥ सुंदरबदननिहारनकारनरापेहैंबहोतजतनकरिप्यारी ॥ कंठलगाय भुजदैंसिरहानैंअधरअमृतपीवतापियप्यारी ॥ तनमनमिलीप्रानप्यारेसौंनउतमरसबाढ्योअतिभारी ॥ कुंभनदासप्रभुसौभगसीवांजोरी भलीबनीइकसारी ॥ नवनागरीमनोहरराधेनवललालगोवर्द्धनधारी ॥ २ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीमद्गोस्वामिविठ्ठलनाथजीभगवतइच्छाआधीनव्हैकैं बिदेसपधारे, कलिकेजीवनिकौं ब्रह्मसंबंध करिबेकौं, तहां अपनौं सेवकचतुर्भुजदास तिनहूकौं संगलीनौं, तहांविदेसमैं, श्रीगोवर्द्धननाथके विरहतैं, एकपदचतुर्भुजदासजीनैं बनायो, तापदपर रीझिकैं ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ दरसन दीनौं अरु यह अग्यादईजुयापदकौं कोऊ जो बरसादिनतक नित्यप्रति गावैंगो, जो मेरो दरसन पावैगो, सो आगैं गायो तिहिं श्रीगोवर्द्धन विषैं ॥ श्रीगोवर्द्धननाथ बिराजते ॥ तहां तिनको दरसन पायो, अब गावति हैं सो मेवारमैं सिहारगांव तहां वेही ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ बिराजत हैं तहां जाय दरसन पावत हैं, सो वह यह पद ॥ गोवर्द्धनबासीसांवरेतुमाबिनरह्योहिन जायहो ॥ बंकचितैंमुसकायकैंसुंदरबदनादिखायहो ॥ लोचन तरफैंमीनज्यौंजुगभारिघरीविहायहो ॥ सप्तकसुरबंधानसौंमोहनवेंनवजाय ॥ सुरतिसुहाईबांधिकैंमधुरैंमधुरैंगाय ॥ रसिकरसीलीबोलनींगिरचढिगायबुलाय ॥ गायबुलाईधूमरीऊंचैंटेरिसुनाय ॥ दृष्टिपरेजाद्यौसतैंतबतैंरुचैंनआंन ॥ रजनीनींदनआवहींबिसरेभोजन

पान ॥ दरसनकौंनैंनातपैंबचनसुननकौंकान ॥ मिलबेकौंहियरा तपैंजियकेजीवनप्रान ॥ मनअभिलाषायहरहैंलागैंननैंनानिमेष ॥ इकटकदेषौंभांवतोनागरनटवरभेष ॥ पूरनससिमुषदेपिकैंचितचि हुटयोवाहिंओर ॥ रूपसुधारसपानकौंजैसैंकुमदचकोर ॥ लोकला जाबिधबेदकेमैंछाडेसबैंबिबेष॥कमलकलीरबिज्यौंबढैंछिनुछिनुप्रीत बिसेष॥मनमथकोटिकवारनैंदेपिडगमगीचाल ॥ जुवतीजनमनफं दनाअंबुजनैंनबिसाल ॥ कुंजभवनाक्रिडाकरोसुषनिधिमदनगोपा ल ॥ हमबृंदाबनमालतीतुमभोगीभंवरभुवाल॥ यहरटलागीलाडि लेजैसैंचातकमोर ॥ प्रेमनीरबरषायहैंनवघननंदकिसोर ॥ जुगजु गअबिचलरापियैंइहिंसुषसैलानिवास ॥ श्रीगोवर्द्धनधररूपपरबलि जायचतुर्भुजदास ॥ २॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ और भट श्रीग- दाधरजी महापंडित विष्णुपद बोहोत सुंदर बनावैं सो सुनि सुनि बृंदाबनमैं वैष्णव बहोतरीझे, एक समैं एक बिष्णु पद बनायो, तामैं ऐसी तुक बनाई ( हूंतोस्यामरंगरंगी, ) सो यह पद सब वैष्णवननैं पत्री लिषि अरु लिष्योजु, दूर बैठेहीं तुमारो चित- रंग्यो गयो सो यहऊआसचर्य, अरु हरि कृपाकी परा अव- धिताहैं, परंतु स्याम रंगकीरैंनीतो श्रीवृंदावन हैं, यहां आयें औरभी वहोत गहरौ रंगचढैंगो, यह पत्री लै एक बैष्णव गयो, सो भट गदाधरजी नगरके बाहिर एक कूपपर बैठे दांतन करत हुते, भटजी वैष्णवकौं देषि पूछ्यो तुम कहां रहो हो, तब वैष्णव कह्यो श्रीबृंदाबन रहौंहौं, भट गदाधरजीपैं आयोहूं, सब वै- ष्णूंनै पठयो हैं, यह सुनि भाग्य मानि आनंद मैं मूर्छित भये,

तब बैष्णूनै और लोगनिसौं पूछी, एकौंनहैं, तब सबनैं कही भट गदाधरजी एई हैं, तब भटजीकी बाह्यदसा भई, तब वहैं पत्री उहांहीं पढि उहांहींतैं, श्रीबृंदावनकौं उठि चले, घरां न गये, श्रीबृंदावन आये, बहोत रंगसौं श्रीबृंदाबन वास कीनौं, इनकौं इनहींके पदकी वार्ता चातुर्य्यतासौं लिषि बृंदावन बुलाये, सो वह यह पद ॥ हूंतोस्यामरंगरंगी ॥ देषिबिकायगईवहमूरतिसूरतिमांझपगी ॥ पौढीहुतीअपनैंस्वपनैंसषीसोयगईरंगभोय ॥ जागेतैंआगैंदृष्टिपरैंवहिनैंकनन्यारोहोय ॥ एकजुकन्हैयामेरेनैंननिमैंनिसद्योसरह्योकरिभौंन ॥ गायचरावनजातसुन्यौंसषीसोधौंकन्हैयाकौंन ॥ कासोंकहूंकोपतियायमेरैंकौंनकरैंवकवाद ॥ कैसैंकैंकह्योजातगदाधरगूंगेपैंगुरस्वाद ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक सूरधज ब्राह्मण गृहस्थ उनकैं नेत्र तो आछेहे, परंतु नाम सूरदासजी, पातसाही एक परगनांके दिवांनहे, सो हरिगुर बैष्णवन कीटहल तन मन धन प्रेमकारिकैं करते, अपने घरके रुपीयातो बैष्णावनकौं षुवावतेही, परंतु कछु पातसाही षजानेकेभी रुपीया वैष्णावनकौं षुवाइ देते, एक समैं ऐसो भयोजुपरगनांके सब रुपीया बैष्णवनकौं षुवाइदये, कछु बाकीन राषी, थेलीनमैं पथर भरिभरि बीजककी ठौर एक विष्णुपद लिषि सव थेलीनमैं, वह कागज डारि दियो, सो उनथेलीके संदूक तो पातिसाहकी वोर चलवायो, अरु आप गृहस्थकौं त्यागकरि आधीराति भागि आइ बृंदाबन आइ बैठे, जो बीजककी ठौर पद लिषि थेलीनमैं धरच्योहो सो वह यह पद ॥ तेरालापसंडेलैंउपजे ॥ सबसाधनमि

लिगटके ॥ सूरदासमदनमोहनमिलि । आधीरातिसटके ॥ १ ॥
अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं ठाकुर श्रीमदनमोहनजीकैं उत्सवपर गुसांई महंत वैसनव एकठे भये, एक काहू बैष्णूंके मनमैं आइजुसूरदास मदन मोहन यह पद बनायो हैं, ताकी भोगकी तुकमैं यह धरचो हैं, ॥ सूरदासमदनमोहनजनमजनम गांऊं, ॥ संतनकीपांनहीकोरच्छिकाकहांऊं, ताकी आज परिच्छा लीजैं सो सूरदास वाही समैं दरसनकौं आवति हुते, तब वा बैष्णूंनैं द्वारपैं ठाढैं सूरदास सौं यह कहीजु, मेरी पांनही धरीहैं, तुम देषत रहियो, मैं दरसनकौं जातहौं, सो यह कहि बैष्णूं तो मंदिरमैं आयो, अरु सूरदास उनकी पांनही हाथ लियें ठाढे रहे, और बैष्णनवकी पांनहींही, सोऊ बनाय बनाय धरी, ठाढेरषवा रीकरी, भीतरि सौं गुसांई महंत बुलावैं, ये न जाय, कहैं महाराज मेरो तो मनोरथ आजही पूरन भयो हैं, बैष्णावनकी पांनहींकी सेवा करतहूं, तब सब प्रसन्न भये, जो बैष्णाव परीच्छा लेतहुतो सो रीझिपाइनपरचो इततैं एऊगिरे, सो जा पदपर ऐसी भांति परीच्छा लई, सो वह यह पद ॥ मेरैगतितुमहीअनेकतोषपांऊं चरनकमलनषमनिपरबिपैंसुषवहांऊं ॥ घरघरजोडोलौंहरितोतुम्हैं लजांऊं ॥ तुह्मारोकहायकैंअबकहोकौंनकोकहांऊं ॥ तुमसेप्रभूछा डिकहादीननिकौंधांऊं ॥ सीसतुह्मैंनायकैंअबकौनकौनवांऊं ॥ कं चनउरहारछाडिकाचक्योंबनाऊं ॥ सोभासुभहांनिकरौंजगतसब हंसांऊं ॥ हाथीतैंउतारिकहागदहाचढिधाऊं ॥ कुंमकुंमकोलेपछा डिकाजरमुंहलांऊं ॥ कामधेनुघरमैंताजिअजाक्यौंदुहांऊं ॥ कनक महलछाडिक्यौंअबतृनमंडईछांऊं ॥ पाइनजोपेलोप्रभूतोनअनत

जांऊं ॥ सूरदासमदनमोहनगुनजनमजनमगांऊं ॥ भक्तनकीपांन हीकौरच्छिकाकहांऊं ॥ २ ॥ पुनअन्यपदप्रसंग ॥ एई सूरधजसूर दास गृहस्थको त्यागकरि श्रीवृंदावन आयवैठे ठाकुर श्रीमदनमो हनजीके सेवक आसक्त वांनहे, केवल सिंगार रसहिके पदवनाव ते, जहां अपनौं भोग पदमैं धरते, तहां सूरदासमदनमोहन या भांति धरते, तातैंसूरदासमदनमोहन यहइनके नामकी छाप परी, एपद बनावते सो वेगप्रसिद्ध वहोत होतो, एकसमैं एक पद सरद की पूरनवासीके दिवसबनायो, सोपद जादिन वन्यो वाहीदिन च्यारसैं कोसपर भगवत कृपातैं काहूठौर सरदकी पूरनवासीकौ हो बैष्णवनमैं प्रगटभयो, वोहोत बैष्णवननैं कंठकियो, जव बै- ष्णवश्रीवृंदावन आये, अरु वह पद उन वैष्णवनगायो, तव औरलोगननैं पूछी, जोतुम यहपद कहांसुनिकंठकियो, तव उन बैष्णवन कहीकि यहांतैं च्यारसैकोस ( अमकेदेसमैं ) सरद की पूरन वासी कौसुनि कंठकियोहै॥ तवयहपरच्यो जान्यौं ॥सो वह यह •पद ॥ उरझीकुंडललटबेसरिसौंपीतपटबनमालाबीचआ यउरझेहैंदोऊजन ॥ नैननिसौंनैनबैनबैनानिउरझिरहेचटकीलीछ बिदेषलपटातस्यामघन ॥ होडाहोडीनृत्यकरैंरीझरीझअंकभरैंतता थेईथेईथेईकहतमगनमन ॥ सूरदासमदनमोहनरासमंडलमैंप्यारी कोअंचरलैलैंपौंछतिहैंश्रमकन ॥ ३ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक सूरधज ब्राह्मन तिनकेनेत्रतोहुते, परंतु ठाकुरके बिष्णुपद वना वते, तामैंभोगसूरदास मदनमोहन ऐसोधरते, यातैं इनकी सू रदासमदन मोहन छापभई, ठाकुर श्रीमदनमोहनजूके वडे आ-

सक्तवान वैष्णवभये, तिनको हृदै केवलसिंगार रसमईही व्हैगयो, ब्रजभूमिमैं जोलीलादेषैं सोइनकौं सिंगाररसमईही भासैं, काहूसमय मथुरा श्रीकेसौरायजूकैं मंदर चोरीभई ठाकुरके आभरनादिक द्रव्यगयो, ताकी जहां तहां बातैं हौंनलगी बहोत, सो सुनिकैं सूरदासमदनमोहनजूकौं यहभासी, ठाकुरसुसरारिपधारेहैं, तहांके लोकरीत अनुसारि सुसरारिके अंतहपुरके लोकनिनैं हासके लियैं भूषनादिक चुरायधरेहैं, तबयाही भावको नयो एक बिष्णुपदबनायगायो, तासमैं बहुत प्रसिद्धभयो, सो वह यह पद ॥ गहनौचुरायोमाईकाहूकेसोरायको ॥ माथेकोमुकटलीनौंकंगनांजरायको ॥ मुषकीमुरलीलीनीजोरालीनौंपायको ॥ गांवबरसांनौंसबसुषदायको ॥ स्यामजूकीसुसरारिराधेजूकोमायको॥ चोरहूकेभागजागेसबसुषदायबो ॥ सूरदासमदनमोहनबहुरिघबरायबो ॥ ४ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक गृहस्थकायथ महाबैष्णव, षरगसैंननाम, सो बिष्णुपद बहोत बनायो करैं, अरुताकी रास दरसनसौं बहोतअधिक रुचि, सोबहोत द्रव्य लगाय लगाय रास उत्सव कियोकरैं, सो एकसमैं सरदकी पूरनवासीकौं रासमंलके चौतरापर रासमैं, एक पदबनावत हुते, सो जब भोगदैं चुके, तब अपनैंई पदपैं रीझिप्रेम बिबसव्हैं देहछोडिदई, सो वह यह पद ॥ हैगोपिनाबिचाबिचनंदलाला ॥ स्याममेघकैंदुहूंओरराजत नवदामिनबाला ॥ करतनृत्यसंगीतभेदगतिगंजतगर्वमराला ॥ फहरतअंचलचंचलकुंडलथहरतहैंउरमाला ॥ मध्यरलीमुरलीमोहन धुनिगानवितानछयोतिहिंकाला ॥ चलियझमाकिझंकारवलयामि

लिनूंपूरकिंकनिजाला ॥ देवबिमाननिकौतकमोहेलपिभयोमदन विहाला ॥ षर्गसैंनप्रभुरैनसरदकीबाढयोरंगरसाला ॥ १ ॥ अथअ न्यपदप्रसंग ॥ श्री ब्रजमैं एक नरवांहननाम जमींदाररहैं, सौदौ डिकारि काफला मारयोकरैं, एकसमैं एक काफलापरदौरे, गृहस्थ एकलाषनिको द्रव्यालियैं जातहो, ताकोद्रव्यालियो सहित पकरि ल्याये, अपनैघर वंदीपानैंमैंदियो, सो वहगृहस्थ श्रीहरिवंसजी को शिष्यहुतो, अरुयह नरबाहनहू शिष्य हरिवंसजी कोही हुतो, सो इन दोऊनकौं पवारि नही, जो हम एक गुरके शिष्यहैं, सो वह गृहस्थ एक समैं भुरहरीकी वेर वंदीपां- नांमैं पद पाठ करन लग्यो, हरि वंसजीकी चौरासीके, वाके नित्य नेमहो, सो सुनि नरवाहन दोरि जाय पूछ्यो, तुम कौनके शिष्यहो, तब वानैं हरिवंसजीको नाम लियो, सो सुनिवाको द्रव्य वाकौंदैं दंडोत करि सीष दई, यह वात श्रीहरिवंसजी सुनि आ- ग्या करीजु, या कलिकालमैं लाषनिको द्रव्यदैं डारिवो गुरके नाम पर, महा कठिनहैं, वहोत प्रसन्न भये, सो द्वै पद बनाये, तामैं अपनैं शिष्य नरवांहनको भोग दीनौं, सो अजहूं वेपद चोरासी केपदनिमैं उनको पाठ, उनके शिष्य साषा पाठ करतहैं, सो वह यह पद ॥ मंजुलकलकुंजदेसराधाहरिविसदवेस राकानभकुमदव धूसरदजामिनी ॥ सांवलदुतिकनकअंगविहरतामिलिएकसंग नीरद मनिनीलमधिलसतिदामिनी ॥ अरुनपीतनवदुकूल अनुपमअनूरा गमूल सौरभजुतसीतअमितमंदगामिनी ॥ किसलयदलरचितसैंन बोलतपियचारुबैंनमांनसहितप्रतिपदप्रतिकूलकामिनी ॥ मोहनम

नमथतमार परसतकुचनीवीहार वेपथजुतनेतिनोतिवदतिभामिनी॥ नरवाहनप्रभुकेलिबहुबिधभरेभरतझेलि सौरभरसरूपनदीजगतपावनी ॥ १ ॥ चलहिराधिकेसुजानतेरेहितसुषनिधान रासरच्यो स्यामतटकलिंदनंदिनी ॥ नृतितजुवतीसमूहरागरंगअतिकतूहलबाजतिरसमौलिमुरलिकाअनंदिनी ॥ बंसीबटानिकटजहां परमरचनभूमितहां सकलसुषदमलयबहैं वायुमंदिनी ॥ जातीइषदविकास काननअतिसैंसुबासराकानिससरदमासबिमलचांदिनी ॥ नरवाहनप्रभुबिहारिलोचनभरिघोषनारिनषसिषसौंदर्यकामदुषनिकंदिनी ॥ २ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ जिन बुंदेलांनके राजगुरप्रोहित व्यासजी हुते, सो बुंदेलाको नाम मधुकर साह राजा, परम भक्तिवांन भये कंठी तिलक धारी बैष्णव मात्र आवैं, तिन सबकी सेवा प्रीत करि रीतपूर्बक भली भांति करैं, अरु सतसंग जाको करैं ताको समझिकैं करैं, सो वा मधुकर साहके भाई बंधु कितनेंक इनकी बहोत निंदाकरैं, दुष मानैं कहैं कि देषो कितेक बैष्णव प्रतच्छ औगुन भरे आवैं, तऊ ए सेवाकरैं, एकंठी तिलक ही देष लेवैं हैं,इनकौं और कछु षबर नहीं, तब उन सबन मिलिमतो करि, एक गधाके बहोतसी कंठी बांधि गहगहे तिलक छापे करि आगले दोऊ षुरनिमैं सुमिरणा पहिराई। कारे डोरांनकी गूदडी उढाई। जहां मधुकरसाह भीतर बैठे हे। तहां वा गधाकौं छोडि आगैं उनपैं चलाय दियो, तब मधुकरसाह देखि उठि साम्हैं आये और दंडोत करी, परकरमां करी, उनकैं गनेसदे नांव रानी हुती, सो झारीलैं आई, कह्यो इनको चरनामृत लेहु,

तव चरनामृत ले पियो, घर छिरक्यो, पवित्र करणके लियें, सो यह वार्ता व्यासजी सुनि वहोत राजी प्रसन्न भये, अरु एक पद बनायो, तामैं मधुकरसाहकोहू नांव दियो, सो वह यह पद ॥ भक्तिबिनकिनअपमानसह्यो ॥ कहाकहानअसाधनकीनौंहरिबलधर्मरह्यो ॥ अधमराजमदमातैंलैरथसौंजडभरथनह्यो ॥ पठञ्जटकतद्रौपदीनमटकीहरिकोसरनचह्यो ॥ मत्तसभाकैरवनिविदुरसौंकहाकहानकह्यो ॥ सरनागतिआरतिगजपतिकौंआपुनचक्रगह्यो ॥ हाहरिनाथपुकारतआरतकौंनऔरनिबह्यो ॥ व्यासवचनसुनिमधुकरसाहैंभक्तिपनसदालह्यो ॥ २ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ एक बैष्णव बिरक्त नाम नागरीदास, अति महानुभाव, पूरन कृपा पात्र तदाकार, श्री स्वामिनीजीको उपासिक, सो बरसानैं बासकरैं, एक कुटीमैं रहत हे, सो वाकुटीको दरसन प्रदछिनाजात्री जायहैं सो अब लौंकरैंहैं, अैसे नागरीदासजी भये तिनकौं श्रीस्वामिनीजी रहस्यसमैं दरसन दीनौं, वासमैं तो बिवस व्हैंगये, फिर वहोत बेर पाछैं बाह्य दसा भई, तब एक पद बनायो, जाभांति दरसन भयो हो, वाही भांतिको, सो वह पद गावत रोवत फिरन लगे, तब यह प्रसिद्ध भयो, सोवह यह पद श्रीराग ॥ गहवरगिरसाकरीगली ॥ रहीनसंभारदेहसुधिबिसरीमिलीऔंचकवृषभानलली ॥ दच्छिनकरगैंदुककुसमनकीबांमअंसभुजसुहृदअली ॥ अंचरडारैंआधैंसिरछबिमत्तदुरदगतिआवतचली॥ गुनप्रयोगसहचारिसंभरावतहृदैंरूपमूर्छासुचली ॥ नागरीदासमिटायललकरातिमिलतउरजउरगतिबदली ॥ ३ ॥

अथ अन्यपद प्रसंग ॥ वैष्णव एक भगवानदासजी महानुभाव सिंहीं उपासिक, सो एक समैं उनकों देहांत हौंन लग्यो, ता समैं सावधान होय उठि बैठे, तब लौगनिनैं पूच्छो, महाराज तुम्हारो अब चित्त कौंन ठौर हैं, तब कह्योकि मोकौं, तंमूरा आंनिदेहु जहां मेरो चित्त हैं, सो बतांऊं, तब तमूरा लेकैं एक पद गायो, सो वापदके भोगकी तुक यह आईज़ु, ॥ सुमिरन मांझ समांनीरी ॥वाही समैं तमूरा तो हाथमैं रह्यो अरु इनकी देह छुटि गई ॥ सो वह यह पद ॥ मैंचलीरीतहांजहांमोहनमुरलीमधुरमधुरसुरबाजैंरी ॥ जमुनापुलिनसुभगवृंदाबनमदनगोपालबिराजैंरी ॥ सजलनीलघनस्यामबरनतनबसनदामिनीछाजैंरी ॥ मोरमुकटकी सोभाबरनौंइंद्रधनुपद्युतिलाजैंरी॥ घूघरवारीअलकैंझलकैंचंदनतिलकालिलाटैंरी ॥ अमलकमलदलमंजुलनैंनाजोवतदैंममबाटैंरी ॥ कुंडलकिरनकंठकउस्तभमानिआनंदपुण्यप्रकासीरी ॥ देषैंबनैंवह चरनधरनगतिकौतककुंजनिवासीरी ॥ जाकोमनमिलिरह्योकृष्णसौंताकीअकथकहानीरी ॥ कहैंभगवानहितरामरायप्रभुसुमिरनमांझसमानीरी ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं छीतस्वामी राजा बीरबलकौं दरसन दैंन आगरैं आये, सो छीतस्वामीहू श्री गुसांईजूके सेवक हुते, अरु बीरबलहू श्रीगुसांईजूको सेवक बैष्णव जान्यौं हुतो, यानातैं कोई दिवस बीरबल ढिग रहे, फिर इनकी बिदाकीनी सौ बिदा कियैं उपरांति एक दिवस । भगवत चर्चा करतमैं छीतस्वामी बिष्णु पद पढ्यो, ताकौं सुनि राजा बीरबल कह्यो, इतनांभी तो बढिकैं कहनां क्या लाजम. सो सुनि

छीतस्वामी दुप पाइ आइ रुपइया वीरवलनैं भेट किये हुते, सो मालजादीनके मंडलमैं, ठाढे होय उनकौं बांटिकैं चले आये व्रजकौं, कह्यो कि तिह्नकैं गुरु नेष्टा नहीं। उनके रुपइया, भगवत सनमंध न लगैं, ये मालजादीन लायकही हुते, सो या विष्णु पद पर इतनौं भयो॥ सो वह यह पद॥ जे वसुदेव किये पूरनतपतेईफलफलितश्रीवल्लभदेव ॥ जेगोपालहुतेगोकलमैंतेईअ वआंनिवसेकरगेह ॥ तेवेगोपवधूहुतीव्रजमैंजेअववेदारिचाभईएह ॥ छीतस्वामिगिरधरनश्रीविट्ठलवेईयेईयेईवेईकछुनसंदेह ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीव्यासजीके छोटे वेटा किसोरीदासजी श्री वृंदावनमैं रहैं, पद वहोत आछे वनावैं, एक समैं एक पद रासको वनायो, सो वा पदको गांन वहोत वन वीच नित्त सिद्ध पर करमैं सुन्यौं, महानुभावहे, तिन किसोरीदासजी सहित दरसन तो काहूकौं न भयो, अरु वह पद गावतही सुनि सव विवस भये, सो वह पद वैष्णव तथा रासधारी मात्र तिन सवेमैं अवलौं वहोत प्रसिद्धहैं। सर्व रासधारी गावतहैं ॥ सो वह यह पद ॥ एदोउनृत्ततिरासमैंरसिकप्यारीदेषतिसवनिकोमनहरैं ॥नष सिषकुंवरिसिंगारीछविउपजतभारीतत्तथेई बोलतलालनविहारी ॥ ॥ १ ॥ मृदंगवजावतललितारीसुधंगदेसीन्यारी एकवजावततारी॥ मिलवतगतिन्यारी तिनमैंराधिकाप्यारीलेतउरपतिरपारीलालनरी झिकैंवारतकंठकीमुकतामालारी॥२॥ सुपदवृंदावनसघनफूलेपुहपा रीत्रिविधिपवनसुषकारी ॥ जमुनापुलिननिसारीतैंसियसुभगराका री ॥ प्राचीदिसभयोउडिराजारीकहतनवनैंसुच्छसरदकीउजिया

री॥३॥ किंकिनीनूपुरबाजारीधुनिसुनिदेहविसारीदोऊरासमैंमगन्नर हतसदाव्यैहारी॥च्यारचरनरजाकिसोरीदाससिरधारीवृषभानकीदु लारीतिनपरकरैंतनम नबलिहारी॥४॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥ एक कोई गृहस्थ महापंडित सो शास्त्रकी चरचा बिवाद करिकरि बहोत पंडितन कौं हरायो करैं, ताकौं भगवत इच्छातैं अरु पराचीन सुधितैं, बैष्णवको सतसंग भयो, तासौं रसरूपा भक्ति उत्पन्नभई, सा-स्त्रकी बिबाद चरचा सब छाडिदई, जगत सौं बैराग उपज्यो, तब वह पंडित देशांतर सौं श्रीबृंदाबन आयो, ताके चित्तमैं यहैंजु इहांके बैष्णावनसौं सब भांतिकी चरचा बिबाद करि झग-रौंगो, जो कोऊ या बृंदाबनके सांचे रंगमैं रंग रह्यो होयगो, सो मोसौं बिबाद चरचा न करैंगो, ताहीको शिष्यव्है बैठि रहूंगो, सोवानैं बहोतन सौं बिवाद चरचा कीनी,करत करत पहर पहर द्वै द्वै पहर बिताई, बिबादमैं कितेकनकौं बिरोधहू उपजायो, अपनैं मनतैं कोऊहारयो नहीं, ऐसै कितेक दिन बीते,तब उन भगवान सषीनाम बैष्णव तिनपैं आय कह्यो, हमसौं चरचा करो, सो तासमैं भगवान सषी कीरतन करतहे, इनकौं उतरहू न दियो, केवल दंडौतही कीनी ऐसैं द्वै तीन बेरभई, निधान वा पंडितनैं, भगवान सषी सौं कही कि केवल कीरतनही करि जानतिहो कि कछु समझोबीहो हमकौं तो तुम असमझसे दीसो हो कछु समझो होतो बोलो, तब वैष्णव भगवान सषीजी एकनयो पद बनाय वाके समझाय बेकौं गायो सो सुनिकैं वाके प्रेमके अश्रु पुलकि व्हैं आये, दौरि पायनि परयो, अरु उनको बरजोरी

शिष्य व्हैकैं, गृहस्थ त्याग बृंदावन बास कीनौं, वह पद तब व्रजमैं बहोत प्रसिद्ध भयो, अब लौंभी प्रसिद्ध हैं, सोवहयह पद ॥ ओरकोऊसमझ्झोसोसमझ्झोइतनीहमकौंसमझिभली ॥ ठाकुर नंदकिसोरहमारैंठकुरायनिवृषभानलली ॥ सुबलआदिसबसखा स्यामसंगस्यामासंगललितादिअली ॥ व्रजसुखबाससैलबनविहरन कुंजनकुंजनरंगरली॥ तिनकोलाडचावसेवासुखभावबेलिबढिसुफल फली ॥ कहैंभगवानहितरामरायप्रभुसबतैंउनकीकृपाबली ॥ २ ॥

॥ अथअन्यपदप्रसंग, ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथजीको कीरतनियां नाम स्यामदास बहोत भावक बैष्णु तानैं एक धमारि बनाई, जापर श्रीगोवर्द्धननाथ रीझि श्रीगुसांई विठ्ठलनाथजीसौं आग्याकीनी, जो होरिके दिननिमैं यह धमारि नित्य हमकौंसु नायोकरैं, यह कीरतनियां हमारोहैं, यह तथा याकेवंसको कैसो हीहोहु, मेरेयांहीं कीरतन कियोकरैं, जाधमारिपर याभांति स्या मदासकौं अपनायबो प्रसिद्धभयो, सो वह यहधमारि ॥ होरीषेल तमदनगोपालफागसुहांवनौं ॥ व्रजजीवनिनंदलालअनंगलजांव नौं ॥ सुबलसुबाहुश्रीदामासषासंगराजहीं ॥ बौहआवजरुंजमुरज मुरलीडफबाजहीं ॥ करनिकनकपिचकारीफैंटअवीरकी ॥ भरि भांवरिसौंकावरिकेसरिनीरकी ॥ इहिंबिधिसाजसमाजचलेवृषभा नकैं ॥ मुनिमनसागइभूलिसुनतधुनिकानकैं ॥ उततैंझुंडनिचलि आईव्रजवासिनी ॥ तिनमैंकुंवरिकिसोरीनिकुंजविलासिनी ॥ संग रंगीलोसाजलियैंनवनागरी ॥ इकबरनवरनालियेराजतफूलनकीछ री ॥ आयजुरेदोऊटोलपौरिव्रजरायकी ॥ उतहिचैतइतगारीदैंहि

बहुभायकी ॥ जेकबहूनबहूदरसिरबिनैंकहू ॥ तेगुरजनकीलाजक
रतिनहिंनैंकहू ॥ षेलनिकौंहरिपैंहुलसीसबआंवहीं ॥ भरिकुमकुम
कनककटोरनिश्रोटदुरांवहीं ॥ छिरकतभरतषरसपरमोहनभामिनी
उडतगुलालअबीरकियोदिनजामिनी ॥ संगसषानहिंसूझैंकहौंधौं
कहांगये ॥ सबसषियनमिलिस्यामअचानकगहिलये ॥ घिरआईस
बबामठौरदसबीसतैं ॥ दियोहैंअरगजाढारिमनोहरसीसतैं ॥ लैंल
लितादइगांठिनीलपटपीतसौं ॥ घनदामिनराजतमोहनमीतसौं ॥
फगुवामांगतरंगरह्योनकह्योपरैं ॥ यहसुषनिरषतकौंनअबधीरजकौं
धरैं ॥ षेलिफागनरनारिभरेअनुरागसौं ॥ व्रजबासिनकैंसंगस्यामब
डभागसौं ॥ ४ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक नराइनदास नाम न
टवा, महाबैष्णवप्रेमी, सो वह जहां भलोबैष्णव श्रोतासुनैं, जहां
जाइ निर्लोभ कीरतनकरैं, सो एकसमैं काहू नबाबनैं, हंडियासरा
यमैं, बडेहठनिसौं नचायो, वहिमाला तुलछीकी आगैंधरिवा
आगैंनाच्यो, नबाबहू देषतरह्यो, बहोतरीझ्यो पदगावतिहो, ता
मैंयहतुकआईजु ॥ मदनमोहनरंगरातो ॥ ताको भाव तृभंगीन्हैं
दिषावतहो, सोतृभंगीही रहिगयो, महाप्रेम आवेसमैं देहछूटिगई
सो वहयहपद ॥ सांचोप्रीतहीकोनांतो ॥ कैंजानैंवृषभाननंदिनी
कैंमदनमोहनरंगरातो ॥ यहैंसंपलाअतिबलवंतीबंध्योप्रेमगजमा
तो ॥ मीरांप्रभुगिधरनागरकुंजमहलबसातो ॥ ५ ॥ अथ अन्य
पद प्रसंग ॥ परम भागवत श्रीकृष्णके अनन्यउपासि
क, महाराजा रूपसिंघजू, भगवतइच्छा आधीन दिल्लीसकी
आग्यातैं बलषकौं गयेहे, तहां बहोतादिनबीते, बिन सतसंग रंग

चितभंगरहैं, तब एकदिवस अकुलाय एकविष्णुपद प्रार्थनाको बनाय लिपिरूपनगर, श्रीगोवर्द्धननाथ उनके सीस बिराजतहे तहां पठयो, भींतरियांनकौं लिष्यो कि, यह बिनती पत्र ठाकुरके चरनन आगैंधरियो, सो अैसैंहींकीनौं, वाहीवेर वाहीराति परम भगवदीय भींतरिया हुतो ताकौं स्वप्नमैं ठाकुर आग्याकीनी, जो हम उनको प्रार्थनांमानी, आजुही उनकौं उहांतैं बुलायेहैं, सो या दिन यहआग्याभई, ताही दिन रूपनगरतैं कासीदचलाये, सो जा मिती आग्याभईही कि आजुहमबुलाये, सो वह मिती अरु जादिवस वहांतैं कूचकियो, सो वह मिती एकही मिलिगई, सो सुनि सबनिकौं बडो आश्चर्यभयो, महाराज प्रेमानंदतैं बिबसभये फेर बेगआय आपनैं राज्यस्थानमैं, श्रीगोवर्द्धननाथको दरसन कीनौं सो जापदकौं ठाकुर अंगीकार करि बलषसौं बुलाये, सो वह यह पद ॥ प्रभुजुइहांरहैंकछुनांई ॥ करियेगवनभवनादिसआप नैंसुनियैंअरजगुसांईं॥ देपिबलषबरफहूदेपीअधमअसुरअवलोके॥ मध्यमदेसबेसहूमध्यमइहांकहांलैंरोके ॥ भक्तवछलकरुणामयसुष निधिकृपाकरोगिरधारी ॥ रूपसिंघप्रभुविरदलजतहैं व्रजलैंबसो बिहारी॥१॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥ एक विष्णुपद फागकोसुफाग के दिन आवैं तब वा पदमाफिकही श्रीगोवर्द्धननाथकै सिंगारहोय, रूपनगर मध्य वादिन बडो फागको ठाटहोय, सब उपासिक-लोग वादिन दरसनकौं वहोत आवैं, अरु यह कहि कहि अपनैं घरसौं दौरैंजु आजु वापदको ठाटहैं, बेगिचलो, सो वहपद सुनि सुनि सरूप दरसन करि करि भावकलोग वादिन प्रेमावेस व्हैं व्हैं

वहोतगिरैं, सब जानीजु यहपद ठाकुर रीझिकैं अंगीकार कियोहैं, सो एकबरस अैसो जोग बन्यौ जु फागुनमैं यहपद न गायो नां वह सिंगारभयो, यह सर्वे ठाटही नांभयो तव श्रीगोवर्द्धननाथ परमरसिक सुजान सुपनमैं द्वैबेर आग्याकीजु यहपदगवावो, सो वह यह पद ॥ रूपबावरोनंदमहरकोबोहोरिबन्यैंहोरीकोछैल ॥ रोकतटोकतघूंघटपोलतभरिपिचकारीतकतउरोजानिगोकुलरीमाई चलतनगैल॥छलसौंमसरिगुलालकपोलनिचितैंरहतपलभूलिनिलज व्हैंहियैंभरतजोबनकेफैल ॥ ढुटोबैसंधिबैससहचरिसुखमदनमवास रहतनताकैंअंगअंगरीझिकटीलीसैल॥१॥अथअन्यपदप्रसंग ॥ रूप नगरश्रीठाकुर गोवर्द्धननाथजी जनमाष्टमीकैं दिवस एकव्रजबासी गुनी, नाम तुलाराम ताकी प्रसिद्ध छाप बावरीसखी, सो नृत्य गान प्रेम सहित ठाकुर आगैं करतभयो, अरु बहोतरंगपरयो अरु पद गावतहो, तामैं यह तुक आई ॥ बडभागीनंदबैठादैंदासुंहमांगी ठकुराईयां॥ तहां ठाकुर रीझे, फूलनकी माला ठाकुरके गरेमैंही सो टूटि दूरि जाय रही एकभींतरिया वृद्ध अपरस वोट बैठोहो, सो स्वतैं सिद्ध वह उठिआय मालाउठाय जो गुनींव्रजबासी नृत्य करत गावतहो, ताकौं पहराइदई, औरहू वडे वडे सेवगठाढेहे, परंतु ठाकुर माला वाहीकौं दिवाई, सो जापदपर ठाकुर रीझि मालादई ॥ सोवहयहपद ॥ जसोदेवधाइयां ॥ नंदरानीदे लालउपनांससीनिहियांसबैंजिवाइयां ॥ सोहनीयांसबगोपियांतोघरआइयां ॥ पुत्रजायाजगजीवनरीतैंपैंरुंलगीवडाइयां ॥ तैंडाभाग सुलछननींसइयेंसभैंवोलिघुमाइयां ॥ अमृतसारजुलध्यानीसइयेपू

रियांकितीकमाइयां ॥ साजनचंदारवकीताऐसीफूलियांअंगनमाइ यां ॥ षुसीहुयेसुरनरमुनिजनजनुरंकानिधपाइयां ॥ दूधदहीसिरपां वदेनाचंदेग्वालास्वेडमचाइयां ॥ बडभागीनंदवहठादैंदामुंहमांगीठ-कुराइयां ॥ रामरायप्रभुप्रगटियाभगवानगलांमनभाइयां ॥ २ ॥

॥ अथअन्यपदप्रसंग ॥ रूपनगर श्रीगोवर्द्धननाथजी हिंडोरेके दिननिमैं हिंडोरैंझूलैं, तहां आगैं मुरलीदासादिक कीरतनियां कीरतन करैं, तहां एक बिष्णुपद ठाकुररीझकियो यह बिष्णुपद गावैं तब बरिषा झूलत बेर बहोतव्हैं परैं, औरपदगावैं तब रहि-जांहि, यहगावैं तब बहोतहोय, सेवग भीतरिया सब जानिगये, सो यहपद गवावैं हिंडोरेमैं,तब नौछावरि भोगआदिक बहोतउच्छव होय, बरिषाको लवलेसहू कहूं आकास बिषैंनहीं होय तऊ घटा-निको संघठ व्हैं बहोत मेह बरसैं, ठाकुरभीजैं, फैंटा चंद्रिका झुकि-जाय मोतिनकी मालाउघरिआवैं श्रीअंग बहोत सोभादेवैं, सब बिमोहित व्हैं जाय, सो श्रीठाकुर गोवर्द्धननाथजीकी रीझिकैं पद याभांति प्रसिद्धभयो ॥ सोवहयहपद ॥ रमकिरमकिझूलनिमैंझम किमेहआयोनहिंसुरझतिबातनितैं ॥ नवपल्लवसंकुलितफूलफलब रनबरनद्रुमलतातरैंझुलवतभयोबचावपातनितैं ॥ मंदमंदझुलावत लागीथंभनिसौंओढैंअंबरजलघातनितैं ॥ कृष्णदासगिरधारीतऊभी ज्योवागोसारीभौंरनकीभीरभारीटरतनटारीक्यौंहूंउपजीछबीलीघ टांनिजगातनितैं ॥ ३ ॥ अथअन्यपदप्रसंग ॥ एक रजपूत बडे-उमरावनमैं रूपनगरको चाकरहुतौ, परम अनन्य बैष्णव वृंदा-बनको उपासिकरहैं, सो वह श्रीबृंदावन जात्राकौं आवतो. तब

भद्रभेषव्हैं तूंबी हाथले विरक्तनमैं मिलि ब्रज बृंदावन माधुरी अवलोकन करतो, सो एक समैं असैंहीं आयो हुतो, श्रीगोवर्द्धनकीपरिक्रमा देतहो, रात्रिके समैं चैत्र बैसाखकी चांदिनी खुलिरही वैसेही रंगीले भावक संग च्यार पांचक वैष्णव अर वह आपमिलि एक पदगावत जात हे, प्रेम आवेसजुत सोवहीपद, गोवर्द्धनकी ओरहू गावत सुननलगे, तब इननि जान्यौं जो हमगावतहैं ताही की झांई परबततैं आवतहैं, तब ये चुपव्हैंरहे, तऊ वह धुनि वैसैंही आई, तब ए वाही धुनिकी वोर चले सो ज्यौंज्यौंएचले जांहि त्यौंत्यौं वह धुनि नजीक न आवत जाय, उतनीहीं दूर सुनी जात, सो पहिलैं यहजानीही, काहू स्थलमैं वैरागीनके बालक तथा व्रजवासीनके बालक सुनि वेहू गांवनलगे हैं, सो परबतके अधफरैं आय स्थलमनुष्य हेरिरहे, सो कहूंही न पाये, तहां इनकौं बोहोत प्रेमआवेस भयो मूर्छित व्हैं परे, हुतीसोजानी जो नित्यबिहारके परकरमैं यहपदगायो, फिर बाहीभांति प्रेममैं गावत गावत परिक्रमां बडेरंगसौं पूरीकीनी भौर व्हैं आयो, अद्भुत समैं सुखभयो. सो जोपद गोवर्द्धनकी वोरतैं बालकनकेसे पतरेगरेनतैं नित्य सिद्धसमाजमैं श्रीमुखगावतसुन्यौं, फिरपदप्रसिद्धभयो ॥ सोवहयहपद ॥ रागबिहागरो तालचपक ॥ मोरबोलहींविमलचंदउजियारी ॥ पुनिप्रतिसब्दहोतवृंदावनगरजतगिरकंदिरासारी ॥ अतिआनंदभयोकोलाहलरहीपाछलीपहरानिसारी ॥ नागरीदासस्यामस्यामारातिसमैंअनूपमऊंचीअटारी ॥ ४ ॥ अथअन्यपद प्रसंग ॥ रूपनगर मांधि एक हवेली दुखंडी, तहां कीरतनियां

कीरतन करतहुते, सो एकपद बहुतबन्यौं जो भावक होय ताकौं तो सुनिकैं भावउपजैं, परंतु विजाती एक फकीर वापदपैं रीझि प्रेमावेस होय ऊपरतैंगिरयो सो ठौरतो ऐसी ऊंचीहीजु, भूमि तक आवतैं पहलीही बीचहींमैं प्रान निकसिजाय, परंतु यह वहांतैं गिरयो सो जीयो, वाही पदकौं गावत भयो, ॥ सो वह यह पद ॥ अरीहूंबाटनजानूंरीकोईबतावैंवाकोधाम ॥ यावनमांझअचांनकहूउरलाइलईअभिराम ॥ मनलैंगयोनामनहिं जांनौंहोसुंदरतनस्याम ॥ नागरीदासठगीहूंअबलाअबनकछूबस वाम ॥ मनभयोसिथलचरनकांपतसरमारतनिर्दईकाम ॥ ५ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ वैष्णव एक नाममुरलीदास गौडिया, स्यामनदी वृंदावन वासी, वडे महानुभाव, सो रूपनगर आये हुते, सो एकसमैं, अपनी ठौरतैं उठि आये, बहोत प्रेम आवेस संयुक्त, तहां एक पद ताहीबेर बन्यौंहो, काहू सुन्यौं नांहींहो, वह पद लिषतही ताही छिन मुरलीदास आवत पहिलैं पोसामैं राष्यो हो, दुवात कलम ढिगही धरीही, सो वापदकी यह तुकगावतही आये ॥ हियेहारिमूरतिमंडरावैं ॥ गावत गावत याही तुकमैं अंत-रंग दसा ह्वै गई, कछू सरीर सुधि न रही, बहोत बेरतक यह दसा-रही, सो पद सुनैं बिनहीं वाकी तुक प्रेम आवेस युत गावत आये, अति आश्चर्य्य भयो ॥ सो वह यह पद ॥ आवैंआवैंहो बांसुरीधुनिआवैं॥अबमोहिगृहअंगनांनसुहावैं ॥ मेरोमिलनप्रानअकुलावैं ॥ मनमथलहारिघुमावैं ॥ हियेहारिमूरतिमंडरावैं ॥ नागरीदासचल्योनहिंजावैं । उठिउठिफिरमुरछावैं ॥ अथ पद प्रसंग ॥

बल्लभ रसिकजू महावांके उपासिक आसक्तवान मिहींन सो उनकी रीत उनकी बांनीतैं जानी परतहीहैं सो एक समय श्रीवृंदाबनमैं सरीरकी व्यथा करिकैं असक्ति भये देहांत होत जांनिकैं ढिग लोग नामकीरतन करनलगे तासमय इनकौं सुधि व्हैं आई, तव षिजकैं कह्यो जो हमसौं अरु या महातमसौं लेषो कहा, तव एक पद भगवान सषीजूकोहो सो बतायो जो यह गावो सो अबहू गावो अरु देहांत भये पश्चात बाहिर लेचलो, तबहू यहही गावत जाइयो सो सबनि मिलि वैसैंहीं कीनौं सो जापदसौं या समय लौं रीझनि बाही अरु यह वार्ता प्रसिद्ध भई ॥ सो वह यह पद ॥ मनहरनिछैलनंदरायकोछबिसौंइतनिकस्योआय ॥ देषतहीदृगछकिरहेमेरोजियरह्योललचाय ॥ चंपकलीधरैंकुटिलअलकपरिऐंडौंऐंडभरयोऐंडाय ॥ सूंघतकमलकमलदललोचनचितैंचितैंमुसिकाय॥ एरी अंगअंगछविकहाकहौंतनसांवलरंगचुचाय ॥ मोहिदेषिठाढोरह्योप्यारोपगियापेचबनाय ॥ रौमरौमनपसिषरस्यौंमनरमिलईरमाय ॥ कहैंभगवानहितरामरायपियसबबिधिरहेसमाय ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीव्रजभूमि महिमा प्रगट करन हेत श्रीकृष्णचंद्रकी इच्छातैं कोई एक वासमैंके जूथकी सषी, श्रीव्रजमैं जन्म प्रगट कियो गूजरीभई, ताको नाम गौरी, परमसुंदरी ऐसीजो काहूसौं भरिदृष्ठि वाकोरूप सहारयो न जाय, सो वह नित्य भोजनसामग्री, अपनै घरतैं बनाय, गोप्यलेजाय,बन कौं गोवर्द्धनकी तलहटी तहांसाछ्यात व्हैं, श्रीठाकुर भोजन करैं ऐसैं कितेक दिनवीतैं, एक समैं वाके भर्तानैं जानीजु ए काहू

पुरसपास लेजायहैं, तब वह तरवारलेकैं, पीछैं दूर दूर वाके संग चल्यो, सो सघन वृछहे तिनकी ओट पीछैं जाय ठाढो रह्यो, तब ठाकुर भोजन करतही उठिभाजे, तब याके श्रवननिमैं नूपरकीतो झनकपरी, अरु महा सौंगंध आई, पीतांबरकी फहरानिदेषी, और अधिक दरसन न भयो, यह मूर्छित व्हैं गिरचो, फिर सचेतव्हैं प्रेमावेस सहित, गौरी गूजरीके पाइन परचो, तादिनतैं यह बात बहोत प्रसिद्ध भई, अैसीजु यह घरतैं जब बाहिर निकसैं तब गांवके लरिका याके चहूं और संग हौंहि षिजाइवेकौं, यह कहति जांहिजु अरी वेदेषि गोपाल आये तब यह फिरि घूंघट उघारिदेषैं तब लरिका तारिदैंदैं हंसिपरैं याके पदहू व्रज मैं बोहोत लोगननैं वनाये हुते, परंतु एक सिरोमनिनैं वनायो सो ठाकुर बोहोत अंगीकार कीनौं तातैं अधिक प्रसिद्ध भयो, ॥ सो वह यह पद ॥ गौरीगूजरीमनमोहनकीयारी ॥ सबव्रजकेटो कतरहैंतातैंनिकसैंघूंघटमारि ॥ जबकोऊझूटैंकहैंवेआयेमदनमुरारि ॥ रहिनसकैंइतउततकैंदुरिदेषैंबदनउघारि ॥ तनसुषकीसारी लसैंकंचनसोतनपाइ ॥ मनुदामिनकीदेहसौंरहीजौंन्हलपटाइ ॥ धरतपगनिलालीफिरैंभरैंढरैंरतिजाइ ॥ काचकरौतीजलरंग्योकछु यहजुगतिठहराइ ॥ गुरनितंबमधिपातरोउरजभारअधिकाइ ॥ लग्योलंकमनलालकोवाकीलचकनिलचक्योजाइ ॥ बरनबरनपट पलटहींनूतननूतनरंग ॥ जबहितबहिनिकसैंफिरैंवहहरिहिदिपावैं अंग ॥ छूटीअलकनैंनाबडेओप्योसोमुषचंद ॥ अरुनअधरमुसकातसेदियेंभालसिंदूरकोबिंद॥ लगानिलगीनंदलालसौंकरैंनिबाहन

काज ॥ चढयोचाकचितचतुरिकोवाकेप्रेमहिंआयोराज ॥ लाल लपैंलालचबढयोउतसासंत्रासापियराइ ॥ यहसंजोगनिबिरह नीतातैंअरझीबीचसुभाइ ॥ नरनारीएकतभयेमिलिमिलिकरत चवाव ॥ सिरोमनप्रभुदोऊसुनैंतातैंबढैंचौगुनौंचाव ॥ १ ॥ अथ पद स्तुति पद ॥ जिंहिंजिंहिंहरिपदसौंरतिठानी ॥ तिंहिं तिंहिंकीपदसाषिप्रगटजगसुनौंपुरातमबानी ॥ कलिमैंसारकीरत नकहियतुभक्तनमनसुषदानी ॥ नागरीदासधन्यजोरसनाहरि जसरसउरझानी ॥ २ ॥ पुनःपद॥हरिपदरचनांरुचिरबनइये ॥ आपुनपढिपढिवइयेऔरैंहरिपदसुनिरुसुनइये ॥ हरिपदगावतहरि पदपावतहरिपदरतिउरझइये ॥ नागरियापदपरमपदारथहरिपद रससरसइये ॥ २ ॥ इतिश्रीपदप्रसंगमालासंपूर्ण ॥

## अथ ब्रजवैकुंठतुला लिष्यते ॥

॥ ब्रजचंद्रोजयति ॥ मंगलाचरन दोहा ॥भजनप्रेमआनंदमय, बंदौंब्रजजनवृंद ॥ सुषहूकोसुषसारतिन, पायोहैंनंदनंद ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीभागवतआदिपुरान । तामैंसुनीकथासुषदान॥ कहूंताहिब्रबभाषाकरिकैं । सुनहरसिकरसआनंदभरिकैं ॥ २ ॥ सबलोकानिपरबइकुंठलोक । गुनातीतपदहर्षनसोक ॥ यातैंबडोन कोऊपदारथ । तामैंसबजीवनकोस्वारथ ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सुरनर मुनिजनअहरनिस, मनबचक्रमकरिहोय ॥ ब्रह्मानंदबइकुंठकौं, ध्यावतहैंसबकोय ॥ ४ ॥ ब्रह्मानंदबईकुंठमैं, ब्रजमैंप्रेमानंद ॥ कौंनअधिकइनमैंबसो, सुनिलीजेरसकंद ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥

करैशास्त्रस्तुतिजाकीताकी।ताकीकछुराषतनहिंवाकी॥ ऐसैकेसैवदै प्रतीत । जाकेव्याहताहीकेगीत ॥ ६ ॥ औरैंविधिकाहिमननाहिं आनैं ॥ जिहिंदेषीताहीकीमांनैं ॥ पैंकोऊवैकुंठहिजावैं । सोतो वहोरिकहननहिंआवैं ॥ ७ ॥ जोवहमध्यपुराननिकह्यो । सोमैंयह सोधौंकरिलह्यो ॥ व्रजगोपनप्रेमानंदपायो । तिनहींकौंवइकुंठदि पायो ॥ ८ ॥ तेफिरिआयेलषिजगदीस । यातैंग्वालनकहींसुवि स्वाबीस ॥ ९ ॥

## अथ गोपबइकुंठ दरसन समय कवि बचन ॥

॥ दोहा ॥ गुनातीतबइकुंठकौं, गोपवृंदसबहेर ॥ रहेआंगुरीघ रिदसन, भैचकलगितिंहिंवेर॥ ९॥ अथ व्रज गोपबाक्य॥ श्लोक॥ सोयंहरिस्तत्रसखाप्रतीतःक्ष्वेलीचयैः सर्वशएवनित्यं ॥ एतेनसंक्री डनमद्भुतंनोतेवैसमाराच्चियतंस्थितास्म ॥१० ॥ पितानपुत्रंपरिला लयेदसौमातायसोदानसुतं प्रयाति ॥ गावश्चनैवाग्रतएवनिसृतास स्वीन्नकृष्णः सहगछतीह ॥ ११ ॥ गोप्यःकिलानेनविहारमुग्रता नवैवनंततकुसमाकरंच ॥ नचात्रभानो स्तनयातटानि नमर्कटा स्तेहरिबल्लभावे ॥ १२ ॥ अयंप्रभुर्दूरतएवसेव्यो वयंतुभृत्याइव दूरतःस्थिता ॥ कथंवसामोत्रविकुंठवासेपुनर्व्रजंदेहि जगन्निवास ॥ ॥ १३ ॥ पुन कवि बचन ॥दोहा ॥ प्रीतिजहांऐस्वर्जनाहिं, ऐस्व र्जजहांनप्रीति ॥ प्रीतिविनाआनंदनाहिं, मेरैयहप्रतीति ॥ १४ ॥ पुनिकाविबचन, दृष्टांत ॥दोहा॥ प्रभुतासोभास्वादिविन, मननलग तअभिराम ॥ करनफूलमनिकनकके, मधुकरकोकिंहिकाम ॥१५॥

चांवररूपेकेजदपि, दारिकनककीहोय॥ रोटीरतनजरायकी, तद पिनषावैंकोय ॥१६॥ अथ गोप बचन ॥ दोहा॥ बइकुंठबइकुंठना थतैं, प्यारेव्रजव्रजचंद॥धिगजोव्रजआनंदविसरि, चाहैंब्रह्मानंद ॥ जथा उदाहरन॥ कवित्त ॥ महातेजतनमैंप्रकासमानजैसैंभानबाढै चकचौंधआंषैं आंषिनिसौंजुरीमैं॥ देषौंबइकुंठनाथसंषचक्रगदाहाथ लागैंभयभारीनकहतबातदुरीमैं ॥ डोलतकलोलतनबोलतननागर ह्यांरहैचुपचापयहदेषीबातबुरीमैं ॥ ऐसीनसहैंगेव्रजमारगगहैंगे यहांछिनद्वूरहैंगेनांहिटगटगापुरीमैं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ इहांरातिदिन होतनहिं, नहींसांझनहिंभोर ॥ जथासमयलीलाकरत, उंहिव्रजनंद किसोर ॥ १९ ॥ जथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ हमतोनभै याकोऊसंषहिंबजायजांनैंयेतोर्लीनैंमहासंपसबानिनिहाररे ॥ व्रजब तरानिहसिगारीदैंनलगैंमीठीकैसैंकारंआवैंदेववानीकोउचाररे॥ चि त्रकेसेकाढेकौंनठाढेरहैं नागरह्यांकहांवहवृंदावनबीथनिबिहाररे॥कै सैंकैं कन्हैयासंगपेलनकोसुषपावैंढोवैंकौंनइहांच्यारहाथनकोभाररे॥ ॥ २० ॥ दोहा ॥ व्रजवृंदावनबिहारिबो, मोहनमदनप्रताप ॥ सो तजिकैंह्यांकोबसैं, लैंनविप्रकोश्राप ॥ २१॥ जथा उदाहरन ॥ क- बित्त ॥ भैयाभैयामधुरकन्हैयाकीकहनअरुअमृतचहनिकोयेकांन निसौंच्छैरहैं॥ जोलौंचरैंगैयांतोलौंद्रुमछैयांसोवैंस्यामकाहूगोदसीस काहूगोदपायदैंरहैं ॥ आपुचढिकांधैंकभूऔरनिचढायचलैं नागरन करतरौरि पेलिरसच्वैंरहैं॥ऐसोसषाप्रीतनांतोछांडिवागुपालकोरेकौं नह्यांवैकुंठग्वालद्वारपालव्हैंरहैं ॥ २२ ॥ पुन कवित्त ॥ कहांवह वृंदाबनकहांजमुनाकेकूलगुंजनकेहारफूलगहनौंबनायबो ॥ बह

विधिषेलिनंदलालसंगसंगसदा आनंदमगनव्हैकैंमुरलीबजायबो॥घ
ननकीघोरापिकमोरनिकोसोरकहांबंसीवटतटिगायहोरिंदैंझुलायबो ॥
व्रजसुखछायोचलिनागरलुभायोमनहमकौंनभायोइहांबैकुंठकोआ
यबो ॥२३॥ दोहा ॥ व्रजमैंअरुबैकुंठमैं, जोजोकछुदरसात ॥ तुला
धारिकरिचित्तकौं, तौलौंसबहीबात ॥ २४ ॥ जथा उदाहरन ॥
कबित्त ॥ ऊहांमनमोहनकुंवर नामरसभींनेंइहांनामजीरननारायन
कहांवहीं ॥ उहांकरकमलफिरांवेंअलिबेलिभांतिइहांगदाचक्रलये
सबकौंडरांवहीं ॥ उहांगोपवधूवृंदमांझगरबांहींदियेंइहांएकरमांता
पैंपायपलुटांवहीं॥ पसुपंछीजमुनाथकितहोतनागरयौंउहांबाजैंबंसी
इहांसंषहींधुधांवहीं ॥ २५ ॥

## अथ बैंनगांनबर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ मुरलीअधरनिधरतहीं, छबिलषिलज्जितमैंन ॥ चर
थिरथिरचरहोतसुनि, कमलनैंनकीबैंन ॥ २६ ॥ जथा उदाहरन
॥ कबित्त ॥ ललितकदंबतरैंमुरलीअधरधरैंठाढेव्हतृभंगछबिछाजैंब
नमालकी ॥ धैंनुनचरततृणबछरानपीवैंछीरमृगानिकैंनीरदृगभीर
तिहिंकालकी ॥ उडतपंखेरूनभबीचठहरायरहैंनागरबिबसगतिजु
वतिनिजालकी ॥ जमुनागवनथकिथकिकैंपवनरहैंबाजैजबवृंदाब
नबंसीनंदलालकी ॥ २७ ॥ दोहा ॥ कहिकैसैंकैसैंकहैं, जैसेंकिये
बिहार ॥ छिनवहिबिसरतनांहिव्रज, मांखनचाखनहार ॥ २८ ॥

## अथ माखन चोरलीला समर्ण ॥

सवैया ॥ रातहितैंव्रजगोपनकेलरकालियैंसंगफिरैंअंधियारैं ॥

भौंननिकौंननिमांझदुरचोदधिलेतनिकारिकैंअंगउजारैं ॥ नागरखायखवावतहैंहंसिजाछिनकोसुखकौंनउचारैं ॥ रेबसिकैंबइकुंठहुमैंधिगजोवहमाखनचोरबिसारैं ॥ २९ ॥

## अथ बनभोजन लीलासमर्ण ॥

दोहा ॥ बनभोजनलीलाललित, किंहिंविधिबिसरीजांहिं ॥ बिन गुपालबइकुंठबासि, कहो कौनसंगखांहिं ॥३० ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ इहांकहांनंदओजसोदामैयाकरुनांमैंऔरहूनकोऊकरइयापुंजपाककी ॥ गोवर्द्धनकहांकहांखेलिनिकीठौरिआछीव्रजसोभाकहनिनसकतहोतबाककी ॥ नागरहंसिभोजनकरैंनंदलालप्यारेपीतपटवारेछबिछाजैंछांहढाककी ॥ मुक्तलोकवारूंहौंतोजबजबानिहारूंहैंगोपमध्यमंडलघमंडलीलाछाककी ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ भोजनकरिबनविहरिव्रज, आवतमदगजचाल ॥ सोधनदृगासियरातलपि, गोधनसंगनंदलाल ॥ ३२ ॥

## अथ गोधनसंग व्रजआगमन लीला समर्ण ॥

कवित्त ॥ नीलघनराजतअरनतनसोभादेतरंगरंगआभानगअभरनजालकी ॥ कंचनदुकूलछोरदुहूंओरफहराततैंसीझुकिझूलनिललितबनमालकी ॥ संगसुरभीतअंगरंजितपहुपरैंननागरलटाकिगतिगंजतमरालकी ॥ कमलाफिरावनिऔआवनिअनूपलसीबसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ ३३ ॥ पुन कवित्त ॥ बेरगऊभूलकसुनतितियगोरीगांनदामिनीनिकरसीनिकरगृहतैंघिरैं ॥ गोधनकैंपाछैंआछैंनटवेषकाछैंस्यामचलतकटाछैंतियनैंननैंनसौंभिरैं ॥ गोखनि

झरोषनिओबारिनिअटारिनतैंनागरियाफूलपातीगैलछैलपैंगिरैं ॥ हो तजबसांझउहिंगोकुलगलीनमांझकोटिबइकुंठसुखसहजबहोफिरैं ॥

## अथ दधि दानलीला समर्ण ॥

दोहा ॥ ब्रजझगरोदधिदानको, राधानंदकुंवार ॥ झगरतहैंबइकुंठमैं, द्वारपालदुजच्यार ॥ ३५ ॥

## अथ दधि दानलीला समर्ण ॥

कवित्त. गोरसकैलेतजहांजोरसप्रगटहोतसोरसबैकुंठनाथहून जानैंभारिये॥इतैंनंदलालअरुकीरतिकुंवरिउतैंरूपकीघटासीदुहुंओ रनिनिहारिये ॥ बातैंअनपीलीकहैंनैंनसनमानलहैं नागरगहत पटझुकिझिझकारिये ॥ मुक्तलोकबसिबेमैंसबहीबिचारिदेषोदानके लिकौतुककोंकैसैंकैबिसारिये ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ दानकेलिदैंआदिब्रज, लीलाबहुसुषदाय ॥ पैंसुधिआवतफागजब, सुधिहूकी सुधिजाय ॥ ३७ ॥

## अथ फाग बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ फागमासरितुउठतबहु, द्रुमनवपल्लवलाग ॥ जडहूकैंरोमांचव्हैं, बिथामदनतनजाग ॥ ३८ ॥ बरसांनैंनंदगांवअति, उमडैंदलदोउवोर ॥ समरषेतसंकेतमैं, होतफागजुधजोर ॥ ३९ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जोपैंमहासर्वोपरराजतबैकुंठधामतोपैं कौनकामअइस्वर्जतेजसौंडरैं ॥ नंदीसुरबरसांनौंनांहिंइहांसमधांनौं फागबिनलागबिनऐसैंदिनक्योंभरैं ॥ कौंनगावैंगारनिधमारनिमचावैंधूमिनागरकुंवरबिनकौंनमनकौंहरैं ॥इतस्यामउतगोरीब्रजरीति

रंगबोरीहोरीबिनकोरीठकुराईलैंकहाकरें ॥ ४० ॥ दोहा ॥ सुर नरमुनिजनबिबसलषि, ब्रजहोरीअभिराम॥आनंदकैंआनंदउलहि, बढतकामकैंकाम ॥ ४१ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ ब्रह्म लोकआनंदब्रजआनंदसमकहैंलैकैंवहिनीरसकीरसनादहायद्यूं॥ जबहिरहसरसबाढतबहसपेलिनागरजियजानैंऔरकौनपैकहायद्यूं ॥ दोऊवोरघुमंडिघटाज्यौंत्ररसतरंगतिंहिंसमैंकोध्यानमोहियतैंनहाय द्यूं ॥ स्यामअरुगौरिपरिएकब्रजहोरीपरिकोटिकबैकुंठनिकसुषहिं बहायद्यूं ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ होतरंगीलेफागमैं, हियेरंगीलेअैंन ॥ महारंगीलेदिनसबैं, महारंगीलीरैंन॥४३॥ जथा उदाहरन ॥कवित्त॥ ठौरिठौरिचाचरचहुलमचैंचंगनकीअंगनिकीऔरैंदसाऔरैंरूपछांव हीं ॥ आनंदउरनिअतिअमितअपंडबाढैंनागरमिलनिदिनदावस रसांवहीं ॥ लाजओरुपाईतियसंगलैविवेकपातिभाजैंब्रजमैंतैंमारवा ननिदबांवहीं ॥ पौढिप्रीतजागनिनवलनेहलागनिं न्हांफागनसनेह निकेभागनिसौंआंवहीं ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ छैलछलीव्रजरसिकजहां चोषचतुरईदाव ॥ नितहोरीकेषेलमैं, चितचोरीकोच्चाव ॥ ४५ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ रचिकैंकपटवेषडोलैंब्रजबाप्ररांन छलिआवैंछैलजेछबीलीनवबामहैं ॥ कबहूसिमिटिगहिलेतगोपवधू बूंदआंखिआंजिमांडमुषछाडैंगहिदामहैं ॥ उतदेतगारीइतभंडकुट होतभारीनागरकतूहलबढतधामधामहैं ॥ आनंदनिवासनित्यफाग कोहुलासऐसैंहोरीबिनहासमुक्तबासकौनकामहैं ॥ ४६ ॥ दोहा॥ उडिगुलालआंधीपहल, डफगरजनअभिराम॥ रंगधारबरसततहां, गउरघटाअरुस्याम ॥ ४७ ॥ जथाउदाहरनकवित्त ॥ खेलतबिहा

रीझरीजवकुंजकुंजनिमेंवूडेंमनआनंदमेंहेरेंनहिरतहैं ॥ नागरगुला लधूमिधूंधरिगगनचढेंछूटेंपिचकारीधारधारसौंभिरतहैं ॥ नूपुरनिना दसौंरहतपूरिवृंदावनधावतभरतनगभूपनगिरतहैं ॥ लागेंमुखरोरी उरतोरीमालबोरीरंगहोरीमांझगोरीझकझोरीसीफिरतहैं ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ पटछूटतछूटतनहीं, रहैंखेलिरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपर त, हारनमांनतकोय ॥ ४९ ॥ अथ कविवचन ॥ दोहा ॥ नागरि यागतिरीझकी, क्यौंहौंजातकहीन ॥ दंपतिफागविहाररसर, भयो लीनमनमीन ॥ ५० ॥ जाकोहोरीपेलसौं, तनकहुहूवोनहेत ॥ पा लओढसोमनुषकी, भयोमुलम्माप्रेत ॥ ५१ ॥ मुक्तादिकजेलोकस ब, व्रजपरिडारूंवार ॥ उच्छववारौंफागपरि, जेप्रसिद्धसंसार ॥ ५२ ॥ धनव्रजधनव्रजबासिया, धनव्रजपरमउपास ॥ धन्यफागरसरीति व्रज, नागरहियेंनिवास, ॥ ५३ ॥ समतअठारासैंजुइक, दिनवसं तसुभमास ॥ व्रजबैकुंठतुलाकियो, ग्रंथनागरीदास ॥ ५४ ॥ इति श्रीव्रजबैकुंठतुलाग्रंथसंपूर्ण ॥

## अथ व्रजसार ग्रंथ लिख्यते ॥

श्रीव्रजरवनजयति ॥ दोहा–व्रजमोहनमोहनाप्रिया, अरुव्रज बिपुनबिहार ॥ जनव्रजभुववर्ननकरौं, मोमतिकेंअनुसार ॥ १ ॥

## अथ व्रजभूमिमहिमाबर्ननं ॥

दोहा–बिचरतचढिवहुवांहननि, भूमनपरसतऔर ॥ व्रजमेंफिरतउ वाहिनें, स्यामरसिकसिरमोर ॥ २ ॥ अथउदाहरन ॥ कवित्त ॥ कहूं कबिमानानिपेंकहूंखगपतिपीठहोतहैंअरोहधरपरसतनांहिनें ॥ कहूं

गजराजहयसाजरथकंचनकेजापैंजदुबंसभांनसैंनत्रायेदाहिनें ॥ जहांअतिप्रीतितहांदेतनऐस्वर्जसोभानागरभयेहैंगोपलीलाअवगाहिनें॥ प्रभुताईनांहिनैंनआंनैमनमांहिनैंद्यांत्यागावहिनैंकौंव्रजडोलतउवाहिनें ॥ ३ ॥

## अथ व्रजभूमि अंगराग बर्ननं ॥

दोहा ॥ औरैंतीरथभूमिजे, इहिंबिधिनाहिंदरसात ॥ व्रजभुवहरिपदकवलरंग, रंगीरहतदिनरात ॥ ४ ॥ जथाउदाहरनकबित्त ॥ कोऊभूमितीरथकीश्रोणितसौंसनिरहीमहारथीबीरनकीसैंनजांलरीहैं ॥ कोऊभूमितीरथकीभस्मकुंडमंडितहैंधूमजग्यधूंधिरातिबिप्रमिलिकरीहैं ॥ मथुराश्रीजमुनानिकटसुपरासीभूमिकोसचौरासीजिहिंनागरमतिहरीहैं ॥ गोपीकुचकुंकुमलग्योहैंलालपायनसौंव्रजभूमिहरीउहिंकुंकुमसौंभरीहैं ॥ ५ ॥

## अथ व्रजरज महिमा बर्ननं ॥

दोहा ॥ जद्यपिन्हातनउर्द्धगति, जातिच्यारुहैंपांनि ॥ तदपिनतीरथजलकोऊ, व्रजकीधूरिसमांनि ॥ ६ ॥ अथ उदाहरन कवित्त ॥ चाहैंगुल्मलताभयोऊधौव्रजधूरिकाजदंडवतबिधिइंद्रपरसतथलहैं ॥ लुटतअक्रूरव्रजधूरिमांझभूरभागपरसतरागबाढ्योउरमैंअमलहैं ॥ बालकबिनोदलीलानागरगुपालकरैंव्रजधूरिचापैंसापैंसपाजेसकलहैं ॥ व्रजधूरिधूसरतस्यामअंगरापैंव्रजधूरिकैंनसमऔरतीरथकोजलहैं ॥ ७ ॥

## अथ ब्रजभूमि कृष्णमुख कमलस्परस बर्नन ॥

दोहा ॥ अतिप्यारीसबअवनितैं, ब्रजअवनीअभिराम ॥ ल्हैस रूपबछरानिकैं, चांपतचूंमतस्याम ॥ ८ ॥ यथाउदाहरनकबित्त॥ तीरथमहीहैंजेपुराननिकहीहैंसबतामैंयहसबौंपरधारालेहुजानिकैं ॥ कोसचवरासीसुपरासीबनकोससबताकीयेअभासीनैंकधामच्यारपानिकैं ॥ नागरकमलपदअंकितकरतपुनयाहूतैंअधिककीसोसुनिजियआंनिकैं ॥ भईजगधूमैंकहामहिमांकहूंमैंदेषोब्रजभूमिचूमैंहरिरूपबछरानिकैं ॥ ९ ॥

## अथ ब्रजाथिरचर कृष्णमय बर्नन ॥

दोहा ॥ कहतकहतकहांलगिकहैं, अबमहिमासरसांनि ॥ थिर चरजुतब्रजभूमिसब, कृष्णमईहैंजांनि ॥ १० ॥ जथाउदाहरनकवित्त॥कृष्णरूपगोपीगोपगायसबकृष्णरूपजमुनागोवर्द्धनयेकृष्णरूपमांनिलैं॥कृष्णरूपद्रुमजातफूलफलपातपातबिधिकौंदिषायेकृष्णरूपउरआंनिलैं ॥ कृष्णरूपनागरकपोतशुकसारकादिकृष्णलीलागावैंमनप्रेमसरसांनिलैं॥ कृष्णकेलिकौतिककोआलयआनंदरूपजेतोब्रजमंडलसोकृष्णमईजांनिलैं॥११॥तदनांतर नंद जसोमति गोपी गोपनि प्रति गोपाल प्रीति बर्नन॥दोहा॥ब्रजमहिमाकहिअब कहूं,जोब्रजजनसौंप्रीत॥राषीनागरनेहकी, जगसौंउलटीरीत॥१२॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जाकेपदपरसनिकौंतरसतविश्वजिहिंब्रजग्वालपेलिमांझपयेनचढायेहैं ॥ जाकौंदेवजग्यमैंबुलावैंनावैसोपौ ब्रजनंदएकथारमांझजैंयकैंसिहायेहैं ॥ जाकीमायाबांधिराषे

सुरनरमुनिगननागरसोजसुधापैऊपरबंधायेहैं ॥ जांनैलैनचायेऔ रदारमईपूतरीज्यौंप्रेमबसताकौंब्रजबालनिनचायेहैं ॥ १३ ॥

## अथ ब्रजजन प्रत्य हरि आधीनता बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ हरिजलब्रजजनमीनहैं, ब्रजजनजलहरिमीन ॥ ब्रजजनहरिआधीनहैं, हरिब्रजजनआधीन ॥ १४ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ आवतबुलायेंदौरिगावतगवायेस्यामनाचतनचायेंनित्यकरैंकह्योकह्योहैं ॥ जैंवतजिवायैंजलपीवतपिवायेंहठमांगैंतरसायैंमधुमईवहमह्योहैं ॥ नागरचरावैंगायटहलमेंसावधानबनरषवारैंप्यारैंवामसिरसह्योहैं ॥ बिश्वकेचराचरसकलबसऔरजाकैंसोह्यांब्रजदेबिनकैंबसपरिरह्योहैं॥१५॥तदनंतर मोहनमुष केवल श्रीवृषभाननंदनी नाम रटन बर्नन ॥ दोहा ॥ मुरलीकीमालाकरी, नंदलालाबसहेत ॥ राधेराधेरटतनित, गूढमंत्रसंकेत ॥ १६ ॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जाकोनामसेसरटैंसिवआदिसुररटैंमुनिगननरनारिरटतनहटहीं ॥ देवओअदेवबधूनागबधूनृपबधूरटतहैं नांवछाडिवटकेकपटहीं ॥ कमलाकमलमुषअमलरटननामसेवासावधानरहैंपायननिकटहीं ॥ जाकौंसवरटैंसोनागरतटजमुनाकेंमुरलीमैंराधेराधेनामनित्यरटहीं ॥ १७ ॥

## अथ प्रियाप्रति प्रियलालसा बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ मनमोहनकीलालसा, सबजगउरसरसात ॥ मोहनकैंप्रियलालसा, मिटतनहींदिनरात ॥ १८ ॥ यथा उदाहरन ॥ ॥ कवित्त ॥ औरजाकोबंसीसुनिबेकौंतरसतसोवराधाबैनसुनिबेकौं

हियैंसरसतहैं ॥ ताकीसवरूपाचहैंचहैंरूपाराधाकीसोइकटकरहैं नैननांहिअरसतहैं ॥ जाकेपायपंकजनिरापैंकुचबीचाकितीनागारि यापायनसौंनैंनपरसतहैं ॥ जाकेदेषिवेकौंसवतरसतसोईहरिराधा मुषदेषिवेकौंनित्यतरसतहैं ॥ १९ ॥

## पुन लालसा बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ मोहनमतिबौरीभई, ढौरीलागीचित्त॥ राधादरसनका रनैं,रहतअटातरनित्त ॥२०॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त॥सांवरेविहारी जूकैंगौरीएकचितचुभीताकेअटाछांहमैंअथांईप्रेमफंदकी॥ लौचनच कोररहैचौंकतसेवाहीऔरबाढीअतिआसामुषचंद्रिकाअमंदकी॥ षर कैंकिंवारजबषिरकीकेनागरियाटकझकलागिउठैंप्यारेनंदनंदकी ॥ झांकतहीरूपकोउजारोव्हैंदरीचैंमांझनैननिकौंसौंचैवेमरीचैंमुषचं दकी ॥ २१ ॥

## तदनांतर प्रियापद महावर टहल बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ जगलषमीसेवतजुवह, सेवतहरिकेपाय ॥ सोहरिरा धापगनिनित, जावकदेतबनाय ॥ २२ ॥ यथा उदाहरन॥कवित्त॥ जाकेलियैंसिंधुमथ्योकरिकैंजुश्रमभारीताकीछटाजगमैंभईप्रकास मानहैं ॥ तनसुषत्यागैंनरताकैंकाजतपकरैंदेवओअदेवचहैंरू पासरसानहैं ॥ ब्रह्मविश्वजानीवइकुंठरानीसर्वोपरनागरकहांलौं करौंप्रभुताबषानहैं ॥ ऐसीयेरमासोताकेपायनपलौटैंसोतोराधापद जावककोसेवामैंसुजानहैं ॥ २३ ॥

## अथ प्रियापद कमल महावर भरन बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ राधापदपंकजनिरषि, इकटकलाललुभाय ॥ लियैं महावरहाथमैं, रंगभरयोनहिंजाय ॥ २४ ॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ पीतपठपौंछपायदेतहैंमहावरपीतरवनिरूपरीझनैंनानि षगायबो ॥ रंगहिभरतहियदोऊरंगरंगेजांहिदोऊवोरबाढयोप्रेमप गिबोपगायबो॥ कंपरोमस्वेदअंगलगतअनंगतंद्रातबबनमालगहिला लहिंजगायबो ॥ लियैंपायगोदरहैंनागरवेभूलिभूलिघरोपावपावक लौंजावकलगायबो ॥ २५ ॥

## अथ महावर सिंगारांतर बैनीगूंथन बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ सेवाअंगसिंगारमैं, परमचतुरघनस्याम ॥ गोरीकी बैंनीगुहत, पुरवैंमनकेकाम ॥ २६ ॥ यथा उदाहरन ॥ कबित्त ॥ ह्वायकैंगुलाबजलबारबगरायबडेबैठीआयबनीजहांफूलनिकोसैंनी जू ॥ आगैंधरिदर्पननिहारैंमुषमोहनकोताहीमांझचलतकटाच्छल च्छपैनीजू ॥ पीतजुहीफूलनकौंनागररचतसीसबैठेजुगजानुकाटि चापसुपदैनीजू ॥ ल्यायभुजबीचअरसायअंगमुरिहुरिरीझबैंनीगूंथ नकीदेतमृगनैंनीजू ॥ २७ ॥

## अथ बैंनी गूंथनांतर सिंगाररचन बर्ननं॥

दोहा ॥ परसतहीन्हैंबिबसापिय, राधेतनसुकुंवार॥ सुघररायकहि यततऊ, करिनहिंसकतसिंगार ॥ २८ ॥ यथा उदाहरणकवित्त ॥ षंजनसेनैंनस्यामअंजनसकैंनभरिउतैंकंपइतैंप्रेमजलसरसातहैं ॥

हारपहिनातपियहाथजातकहूंतबटेढीकरिभौंहैंसौंहैंस्यामासतरातहैं॥ सीरोतनस्वेदअंगपिस्योपटपीत्तरंगउपजअनंगसुरभंगबतरातहैं॥ सपीसह्यरावैंसबधीरजबंधांवैंतऊनागरसिंगारमैंसह्मारभूलेजातहैं२९॥

## अथ सिंगारांतरप्रियामुखकवल बीरीदैंन बर्ननं ॥

दोहा–तियासिंगारापियपांनदैं, चितईकरिभुवभंग॥ बीरीनीरीहूनगइ, भईनैननिगतिपंग॥ ३०॥ यथाउदाहरनकवित्त॥ नागरीनवलगुनआगरीरंगीलीजाकोबाढ्योहैंप्रकासमुखचंदकुंजभौंनमैं॥ बांकीभौंहैंबडेनैनकहतबनैंनछबिरह्योहैसरसरंगवरसाचितौंनमैं॥ चहैंसुखदैंनमुपदैंनबीरीप्यारीजूकैपैंनचलैंकरउतरूपसरसौंनमैं॥ सकिजातचकिजातछकिछकिजातलालसिथलव्हैंजातगातभौंहभंगहौंनमैं॥ ३१॥

## बीरीदैनांतराप्रियाबदनइकटकरीझाचितैबौ बर्ननं ॥

दोहा–मोहनकेदृगमत्तअलि, इतउतकहूंनजाय॥ राधाआननकमलमैं, इकटकरहैंलुभाय॥ ३२॥ यथाउदाहरन॥ कवित्त॥ सारीकोकिनारीगिर्देकंचनदिवारमांझदृगद्रैसभासरप्रफुल्लकौलसौंभरे॥ भौंहैंमधुपावलिसिंगारलताअलकानिफबेकर्नफूलफूलफूलेछबिसौंभरे॥ नासिकासिरूकैढिगलालागुलक्यारीबालानागरिअधररंगचितबितकौंहरे॥ राधामुखबागबीचखंजनगुपालनैंनभूलेभ्राजचंचलताइकटकव्हैंपरे॥ ३३॥

## तदनांतराप्रियाअंगसुगंधलगावानि बर्ननं ॥

दोहा–इततैंइकटकलखिकुंवर, अतरलगावतअंग॥ उततैंअद्भु

तन्हैपरत, भौंहभंगमैंरंग ॥ ३४ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ रचि कैंसिंगारचारस्यामाअभिरामाबैठीढिगस्यामसुंदरकैंसोभासरसात ही ॥ दोऊओरमोरछलहलतचलतभौंरभूषनबसनउठीजोतिउफना तही ॥ करलैंसुगंधस्यामहेरयोमुषनागरिकोचितईढुराइनैंनकछूमु सक्यातही ॥ तबलालल्लागेअंगरागाहिलगावेंनिएसतरव्हैंजातगात अतरलगातही ॥ ३५ ॥

## अथ सबगंधादिसिंगारांतरप्रियापिय गांन बर्ननं ॥

दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गानतांन अबरहसिकी, बहसिबढीदुहुंओर ॥ ३६ ॥ कहावीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर ॥ लहलहातनीकोउठैं, तांननिरंगहिलोर ॥ ॥ ३७ ॥ पियधीरजठहरैंनहीं, गाहिरैंसुरगुनगांन ॥ रागरसासवसिं धुकी, लहिरैंउपजततांन ॥ ३८ ॥ रूपअगाधाचतुरमनि, राधा रागउचारि ॥ कियेमूरछितस्यामकौं, बंसीबैरसभारि ॥ ३९ ॥ य थाउदाहरनकवित्त ॥ दुहूंसीसजूरासोहैंहाथनितंमूराबीनपरमप्रवी नगोरीगांनलैंउचारयोहैं ॥ छायोसुरकाननिछकायेपियप्राननिओ छूटिगिरयोअंसजंत्रस्यामनसझारयोहैं ॥ रीझिमुरछावैंमुरछाय ठहिरावैंअंगनागरितरंगतांनमनबोरिडारयोहैं ॥ ताहिकियोबिबस घुमायगतिमतिडारीजाकीबांसुरीनैंब्रजबडोसोरपारयोहैं ॥ ४० ॥

## अथ गानांतरप्रियामुखचितैंभंवर निवारन बर्ननं ॥

दोहा ॥ मोहनराधामुषलपैं, अमलउजारीमांह ॥ बहुरिचंदको डीठडरि, करतमुकटकीछांह ॥ ४१ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥

नवलनिकुंजमंजुकालंदीकेकूलजहांरहीझुकिझूलिलताफूलनिकेभा रहीं ॥ स्यामासुखदाईतहांअमलजुन्हाईआईऔरैंछबिछाईछितसे व्यकोटिमारहीं ॥ नागररसिकलालप्रेममतवारेप्यारेराधारूपदेषिदे षितोरितृणडारहीं॥चंद्रमाकोडीठडरिकरतमुकुटछांहपीतांबरगाहिठा ढेभंवरनिवारहीं ॥ ४२ ॥

## तदनांतरबिहार बर्नन ॥

दोहा॥ नवनिकुंजनिभृतसुतहां, रहीछिपाछबिपाय ॥ बिचगो रीअरुसांवरैं, रह्योरंगसरसाय ॥ ४३ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ लहकिलहकिजातलगिकैंपवनलतामहकिमहकिऊठैंमालतीसुवास हैं ॥ गहकिगहकिगावैंकोकिलातरनचढीकुंजछबिपुंजकामसेवतनि वासहैं ॥ नागरियास्यामास्यामसौंहैंसुषसैंनीपरदेषैंद्रुमरंध्रनिनकोऊ सर्पपासहैं ॥ दोऊमनहरैंदोऊरीझिरीझिअंकभरैंअंगनिअनंगबा ढ्योरंगमैंबिलासहैं ॥४४॥ दोहा ॥ बाढीछबिरतिसुखसमैं, काढीत नककढैंन ॥ जुगलकेलिमनरसरंग्यो, औरैंरंगचढैंन ॥४५॥ यथा उदाहरन ॥ कवित ॥ राधामनमोहनअगाधारूपरंगभरेभुजभररि झलिकामकेलिसरसायदी ॥ पगशुकसारिकादिजकिथाकिकारिडा रेनूपुरऔकिंकिनींकीझनकसुनायदी ॥ दूरहीहटकरापीकुंजद्वारअ लिसैंनीस्वेदअंगमिलीलैंसुबासपहुंचायदी ॥ हुतीललितादिजेलता नवोटनागरितेदेषनसकतप्रेमछकनिछकायदी ॥ ४६ ॥ अथसुरतां त सरूप बर्नन ॥दोहा॥ प्यारीछबिन्यारीवढी, तनआलसबसमैंन॥ मुषलषिपियविस्मयरहे, नैंननिपललगैंन ॥ ४७ ॥ यथा उदाह

रनकवित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिआननपैंआधैंसीससीसफूलबैंनांझुकिगोमहा ॥ टेढ़ैभईबैंदीहारसरकोसिंगारलषिमोहूसौंहैंन्यारेमेरेलोयनकरैंहहा ॥ बदनगुराईमांझअरुनाईपियराईनागारियाकैसैंनैंनसिथलढुरैंमहा ॥ रूपहैंकिठैारीहौंकिनैंनानिठगौरीहैंकिस्वपनौंकिसंभ्रमकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ ४८ ॥

## अथ सुरतात्त आरसनैंननि सरूप बिलोक बर्नन ॥

यथाउदाहरन ॥ दोहा ॥ जुरैंजुरैंफिरिहसिमुरैं, घुरैंढुरैंरहिजांहि ॥ लोयनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहरैंनांहि ॥४९ ॥ अरसांनैंघूमतझुकत, सरसांनैंछबिछैंन ॥ बिहसिढुरांनैंपीयपैं, नींदघुरांनैंनैंन ॥ ५० ॥ जबपलआवैंझुकतपिय, दर्पनदेतादिषाय ॥ तबअपनीअंषियांनपर, अंषियांरहतलुभाय ॥ ५१ ॥ नींदझुकीपलनिरषिपिय, देतहैंपानबनाय ॥ उतनैंनानिकेषुलतही, इतबीरीछुटिजाय ॥ ५२ ॥ भौंरनिवारतबदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगावतलालतब, पुलैंनैंनमुसिक्यात ॥ ५३ ॥ सषीलषैंदुरिद्रुमनिमैं, व्हैंगइचित्रसरीर ॥ निसउनदौंहैंदृगनिपैं,भईदृगनिकीभीर५४ अरसांनीनिरषतप्रिया, जातबिहानीरैंन ॥ नैंननिलषिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ५५ ॥ धरैंचिबुकतरहाथदृग, देषतनींदषुमार ॥ लगेरूपकैंरहचटैं, नाहिंपौढतरिझवार ॥ ५६ ॥ लषिउरझेसुरझैंनहीं, सबनिसगईबिहाय॥आरसउरझेदृगनिमैं,पीयरहेउरझाय॥५७॥ क्यौंसुरझैंआरसभरे, नैंननिउरझेनैंन ॥ नागरियाकेहियबसो, यहरूपारसरैंन ॥ ५८ ॥ यारूपारसरैंनिकौं, जबहीसकैंनिहारि ॥

तनकेनैनानिमूंदिदैं, मनकेनैनउघारि ॥ ५९ ॥ नागरिनैंननिजिहिं लष्यो, यहरूपारसरैन ॥ तिनकेनैंनसुनैनहैं, औरनैननहिनैन ६० सारसदृगआरसभरे, चितवनिकरतविलास ॥ यारसकेवारसस रस, व्रजजननागरिदास ॥ ६१ ॥ परमतत्वकोतत्त्वव्रज, नागर बिपनविहार ॥ जान्यौंचाहैंसारयह, तोतूपढिव्रजसार ॥ ६२ ॥ स त्रहसौनिंन्यानवैं, पोसजुसुदिरविबार ॥ नोमीनागरिदासयह, कि योग्रंथव्रजसार ॥ ६३ ॥ इति श्रीव्रजसारग्रंथसंपूर्ण ॥

## अथ बिहार चंद्रिका लिष्यते ॥

दोहा ॥ कुंडलिया ॥ नवलजुगलसहचरिनवल, श्रीगुरुवनन वकुंज ॥ इनकीकृपामनाइकहौं, नवलकेलिरसपुंज ॥ १ ॥ नवल केलिरसपुंजकहौं गिरबनजमुनांकी ॥ नागरकृपामनांउमुरलिहरि दुपदमनांकी ॥ अरुवंदौंअनुराग दुहुनिकौंअमितअमलकल ॥ नवकासरितबिहारचंद्रिकाकहौंकछुनवल ॥ नवलजुगलसहचरिन वलश्रीगुरुवननवकुंज ॥ इनकीकृपामनाइकहौंनवलकेलिरसपुंज ॥ ॥ १ ॥ कवित्त ॥ वृंदावनकुंजनकेरहसिउपासकजेनिसदिनस्या मास्यामहीकोगुनगांवनौं ॥ सज्जनसनेहीसुपदाइकरसिकमहासुनि लीलालोचननिनीरढरकांवनौं ॥ नागरियादासहौंहितिह्नैसंतप्यारे यहैचंद्रिकाविहारग्रंथताहीकौंसुनांवनौं ॥ बादीआंनधरमीताकैंबि द्याअभिमानहोइजासौंयहजाहीताहीभांतिकैंदुरांवनौं॥ २ ॥ दोहा॥ नित्यबिहारीलालसंग, परमप्रियासुकमार ॥ भूमिरैंनतारेनतैं, इन केअधिकबिहार ॥ ३ ॥ ॥ छप्पय ॥ नितिराधानंदलालरूपर

सरासससनेही ॥ नित्यलगनरसमगनकरतकलकोलिअछेही ॥ नित्य दुहुनिचितचाहचटपटीचौंपनवेली ॥ नित्यसुपदसंकेतरचावतरुचि रसहेली ॥ तैसोकुसमितवनमनौंमनमथसरपंजरकियो ॥ नागरनि त्तबिहारकौंलषिदंपतिहुलसतहियो ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ उज्जल पक्षिकीरैंनिचैंनउज्जलरसदैंनी ॥ उदितभयोउडिराजअरुनदुतिम नहरलैंनी ॥ ५ ॥ महाकुपितव्हैंकामब्रह्मअस्त्रहिंछोडयोमनौं ॥ प्राचीदिसतैंप्रजुरतिआवतिअगनिउठीजनौं ॥ ६ ॥ दहनमानपुर भयेमिलनकौंमनहुलसावत ॥ छावतछिपाअमंदचंदज्योंज्यौंनभ आवत ॥ ७ ॥ जगमगातवनजोतिसोतसुअमृतधारासे ॥ नवद्रुम किसलयदलनिचारुचमकततारासे ॥ ८ ॥ स्वेतरजतकीरैंनचैंनचि तमैनउमहनी ॥ तैसीमंदसुगंधपौंनदिनमनिदुपदहनी ॥ ९ ॥ म धिनायकगिरराजपदिकबृंदाबनभूपन ॥ फटिकसिलामणिश्रृंगज गमगतदुतिनिदूपन ॥ १० ॥ सिलसिलाप्रतिचंदचमाकिकिरननि छबिछाई ॥ बिचबिचअंबकदंबझंबझुकिपायनिआई ॥ ११ ॥ ठौरठौरचहुंफेरढेरफूलनकेसोहत ॥ आवतसुपदसुगंधअंधमदभंवर बिमोहत ॥ १२ ॥ बिमलनीरनिर्झरतिकहौंझरनासुपकरना ॥ महा सुगंधितसहजबासकुंकुममदहरनां॥१३॥ कहौंकहौंहीरनपचितराचि तमंडलसुरासके ॥ जटितनगनकहौंजुगलषंभझूलनविलासके ॥ ॥ १४ ॥ ठौरठौरलषिठौररहतमनमथसोभारी ॥ बिहरतविबिधिवि हारतहांगिरपरगिरधारी ॥ दोहा ॥ कहतिकहतिकहांलगिकहैं, अ बकबिछबिअभिराम ॥ प्रियाकमलपदपरसहित, धरयोरूपगिर स्याम ॥ १६ ॥ छिपातीयबनमित्रसौं, मिलतभई बसरूप ॥ निर

षिभयेआतुरअतन, रसिककुंवरव्रजभूप ॥ ॥ चौपाई ॥ चलेल
टकिगिरवोरलालचितचोरबिहारी ॥ मिलनमनोरथकरतबसीउर
प्रानपियारी ॥ १८ ॥ चढिगिररसिककिसोर मुरलिकाअधरधरींहैं
अतिआकर्षनमंत्रमधुमईधुनिउचरींहैं॥१९॥ कुहकिउठेबनमोरकंदि
रागरजतझांई॥चितचकृतमृगबृंदबिथामनमथसरसांई॥२०॥ पहुंची
महलनिजायकछुकधुनिथोरीथोरी॥राधेराधेसुनतनांमानिजचलीकि
सोरि॥२१॥कवित्त॥भीतरतैंबाहिरनिकासिपायधारचोतबअंधकारि
फारीभूमिपैठचोढिगसेसकैं॥ परीहैंअवाईचंद्रचंद्रिकाओदामिनीपैंउ
तसुभसुगनव्हैंकुंवरव्रजेसकैं॥भोरकैसोजानिकैंप्रकासपंछीबोलिउठे
घिरिगईभौंरभीरनागरिसुदेसकैं ॥ देषीतबचलतअचलतेऊचलभये
हलचलपरीधूमधीरजनरेसकैं ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ धोषैंपरेचकोर
मोरअलिशुकसंगधाए ॥ चित्तचाकितव्हैंरहतअरबरतअतिअकुला
ए ॥ २३ ॥ झुनकिझुनकिनूपुरनिछईधुनिबनसुषसाधा ॥ कुंजनि
कुंजप्रकासहोतआवतश्रीराधा ॥ २४ ॥ दोहा ॥ आवतदेषीभांव
ती,रूपरासिसुकवार ॥ मुरलीकटिअटकाइकैं,उततरतनंदकुंवार
॥ २५ ॥ सवैयो ॥ मानहरैंहरैंपायधरैंउतरैंगिरश्रृंगतैंबांहझुलाए ॥
छोरपीतांबरमोरगहैंछविसौंमगहीमगल्यावतलाए ॥ बाहुलतानिल
तानिरवारिकहौंझुकिकैंनिकसैंअकुलाए ॥ छाकचढीगिरकेजुउता
रकीनागरिदेषतदेहभुलाए ॥ २६ ॥ दोहा ॥ किधौंचंदप्रतिचंद्रि
का,किधौंदामिनिघनघोर ॥ योंमिलिगरबहियांचले, जमुनावोर
किसोर ॥ २७ ॥ कवित्त ॥ चलेगिरवोरतैंमरालचालप्रियापीवगा
वैंगांनमंदधुनिआवैंतटिजलकैं ॥ चहौंओरभौंरमृगवृंदघेरैंहरैंसुप

ललितलुनाईरूपआननपैंललकैं ॥ नागरिकुंवरिमुषश्रमकनवारि ताहिपौंछैंपीतपटसौंनिपटहरिहलकैं ॥ दोऊगरबांहींधरैंदोऊदेतपै डहरैंदोऊमुरिदेषबेमैंलागतनपलकैं ॥ २८ ॥ दोहा ॥ तिमरकुंज आवततऊ, मगपावततिहिंबेर ॥ दंपतिअंगउजासकौ, भौमंडल चहैंफेर ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ अतिनिर्जनएकांतमदनतसकरसेवतब न ॥ द्रुमपातनकीछांहछिपाछबिछाइरहीघन ॥ जहांजहांसुंदरटो रलहतआनंदरसबाढे ॥ ठठकितहांगहिलतालूंबिफिररहतहैंठाढे ॥ ॥ ३० ॥ तांनलेतपियसंगमिलीऊचैंसुरस्यामा ॥ गावतकरतकलो ललोललोचनबहोभामा ॥ ३१ ॥ इहिंबिधिरागसमाजसाजलैंजमु नाआए ॥ मत्तद्विरदमनौंअगडतोडिगहगडसौंधाए ॥ ३२ ॥ नाव चावसौंचतुरसपिनजमुनाताटलाई ॥ बरनबिमानबिमानकरतसो भाउफनाई ॥ ३३ ॥ हाटिकहीरनजटितस्वेतअगनितछबिबाढी ॥ ससिकिरननिमिलिझलमलातअतिद्युतिभईगाढी ॥ ३४ ॥ बंगला चारसुढारमंजुमोतिनकीझालरि ॥ जगमगातनवजोतिकरतिचकचौं धिहालरि ॥ ३५ ॥ जारीजरीजराइकटहराजगमगजोति ॥ ठौरठौ रफबिलगेअमलमनिगनबहोमोती ॥ ३६ ॥ कनककमलमनिज टितअग्रअतिसैंछबिसोहत ॥ ताबिचआएभंवरस्यामसमनमथमनमो हत ॥ ३७ ॥ छबिसौंनिहुरिचढावतिप्रियहिभुजनभरिप्यारे ॥ दु हुंदिसिइकटकरहेरूपचितवतद्दगतारे ॥ ३८ ॥ सोभासंपतिजीतिं मीतमिलिबैठेदंपति ॥ चढैंललितललितादिनवलनवकाकछुकंपति ॥ ३९ ॥ परसिअमलपदकमलमनौंसात्विकभयेभारी ॥ कंपनीर डगमगनिलगनियातेंसुषकारी ॥ ४० ॥ दोहा ॥ लपटिरहीपतिवा

रइक, नवलसपीसुकुमार ॥ मानौंकदलीषंभप्रति, मुक्ताबेलिविहार ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ नवलमलाहैंदेषिद्दगनकोछुटितसलाहैं ॥ चलवतिचंपाचारुकरनजगमगतछलाहैं ॥ ४२ ॥ सोहतस्वेतलिबासतासकेललितलपेटा ॥ सिरकलगोकीहलनिचलनिमनोंमैंनचपेटा ॥ ४३ ॥ हलतनवीनैंहारुचारुझीनैंतनजामां ॥ अतिसुदेसनरबेसबनीनवसुंदरबामां ॥ ४४ ॥ चमकिचपलताटंकबंकअलकैंझुकिझूलत ॥ मुषगावतगुनस्यामकामधुनिसुनिसुधिभूलत ॥ ४५ ॥ चंपावलिदुहुंओरचलतऐसीछबिलागैं ॥ मनौंबहोपाइनिपाइधाइकढिसोभाआगैं॥४६॥यौंजमुनांबिचिनावधारहीधारचलाई ॥ पूरनचंदप्रकासछाइराहिबिमलजुन्हाई ॥४७ ॥दोहा॥ हीरनकेभूषनमुकट, रजतबसनसिंगार॥ उभैंअंगबांनिकभई,जोंन्हछांहतिंहिंबार४८॥चौपाई॥बैठीदंपतिनिकटिललितललितादिकगावें ॥ रसगोलकढोलकबाजिबींननिपरनमिलावैं॥४९॥ रागतरंगनिरंगहासरसरासबढ्योहैं ॥ चितछाजैंआनंदमहलकैंउमगिचढ्योहैं ॥ ५० ॥ प्रियागांनरसमत्तभयेतनमनसववारत ॥ रीझकोऊसिरनावतकोउमुषभंवरनिवारत ॥ ५१ ॥ काननितांननिकेबितांनसेतानिदयेहैं ॥ पसुपंछीहूसुनतगांनधुनिबिबिसभयेहैं ॥ ५२ ॥ धुनतसीससिरबधूसुनताविचमुरलीमोहन ॥ नभबिमानसंकुलितफूलबरषातिथकिगोंहन ॥ ५३ ॥ कुसमितमईप्रवाहभईकालिंद्रीगोरी ॥ जिततितनवकाचलतभ्रमरतितबरपतझोरी ॥ ५४ ॥ दुहूंतीरतरुभीरुनीरसाषाझुकिपरसत ॥ बिचिबिचिवृंदाटहलमहलफूलनकेसरसत ॥ ५५ ॥ कहौंनलिनकेदलिनरुचिररुचिराषीसैंनी ॥ सीतलपवनपरागलियैंआवतसुपदैंनी।

॥ ५६ ॥ सुंदरपुलिनपुनीतकहूंकहूंबिचनिकरीहैं ॥ समरषेतकिधौं सेतजरीकीफ़रसिकरीहैं ॥५७॥ दोहा॥ सलिलबीचसुथरोपुलिन, तहांलेसनहिंपंक॥ मानौंमोहनहितलियैं, जमुनांअंकपरजंक ॥५८॥ चौपाई॥दुहुंदिसितहांगंभीरतीरानिरमलगतिहरई ॥ चलतनावचित चावचमकिजलमीनउछरई ॥५९॥ मनहुरजतदुतिपत्रतत्रचमकंत सुहाई ॥पूरनचंदप्रकासनीरझिलमिलिछबिछाई ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ जमुनांकेबीचफैलेझिलिमिलिछिपाकरकीपावतनपारतिहिंसोभा केबषानको ॥ चलीजातमध्यधारनवकाबिहारचारकैधौंप्रतिबिंबय हताकेरतनानिको ॥ किधौंदीपमालकाकोउच्छवबरुनगृहनागरप्र कासयहजोतिसरसानिको ॥ किधौंकोरिकोरिकअह्लातचंदचारुकि धौंचमकैंचपलभयोचूरचपलानिको ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ झिलिमि लिहीझिलमिलिचले, हिलमिलिकरतबिनोद ॥ फिरेदूरतैंपूररस, षेलतहसतप्रमोद ॥ ६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ रहीपाछलीरातिरसम सीनवलरंगीली ॥ निरषिप्रियेंआलसबसअंपियांपरमरसीली ॥ ॥ ६३ ॥ पायचैनरसअैनसैनहितचलेभांवते ॥ महामधुरधुनिगांन तांनवहभांतिगांवते ॥ ६४ ॥ पुनतलहटीतीरनीरसोभाजुभली हैं ॥ पातनकीपरछैंयांआवतनावचलीहैं ॥ ६५ ॥ चितवति चलतिनिकुंजकुंजरहबोनिसजामैं ॥ यामैंयामैंकहतयामैंनहिवामैंवा मैं ॥ ६६ ॥ मदनजुहैयाकुंजसदनसरसीदरसीइक ॥ परमप्रभा कीरासिनिरषिउपजतदृगकौतिक ॥ ६७ ॥ तहांकुंजकेमूलनावच लिलगीकिनारैं ॥ पहिलैंप्रीतमउतरिपानिगहिप्रियाउतारैं ॥ ६८ ॥ ॥ दोहा ॥ मदगयंदगतिमिलिचले, ॥ आलसअमलरसाल ॥ होत

चालमैंचालचित, मालमहालमैंहाल ॥६९॥ चलतजातसुमिरनकरत, नवलजावकीकेलि ॥ कीनोंकुंजप्रवेसमिलि, सबसुषसागरझेलि ॥ ७० ॥ प्रियारहीपलटनिबसनि, गएअटापरश्याम ॥ कोटिकामसेवतसदा, सोसुंदरसुषधाम ॥७१॥ कबित्त ॥ सोएसुपसैंनीपरछबिसौंरसाललालउरतरउसीसादियैंप्यारीमगहेरहैं ॥ धाइधुनिनूपुरनिआईहैंबधाईदैंननागरउमंगअंगआनंदउरेरहैं ॥ ललितसहेलिनमैंललिताबलितकरलटपटीडगपगपरतअवेरहैं ॥ मंदगतिआवतिठटकिहासिहेरिहेरिपियमनहोतमहाआनंदकेढेरहैं ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ बिछरीघनज्यौंदामिनी, उतरीसखीमिलाइ ॥ दईरंकनिधिबहुतजिम, लईलालउरलाइ ॥ ७३ ॥ कबित ॥ उज्जलमहलउच्चसुच्छचंद्रिकाप्रकासमंदगतिसीतलबयारसुषकारीजू ॥ कसितसुडोरीसेजचोसरचबेलीबेलीफूलिरहीफूलनिकीबासमनुहारीजू ॥ चौकीचारुअतरगुलाबसीसेचमकतससिकीमयूषैंमिलिकौतकउजारीजू ॥ पूरनसरदरैंनींबिलसतसुषसैंनींकोककलानागरबिहारनिबिहारीजू ॥ ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ सींचतनीरगुलाबसौं, पियतियउरजसुढार ॥ कंजमनौंमकरंदकी, ढौरतशिवपरधार ॥ ७५ ॥ कवित्त ॥ तनकतनकबाजैंझनकचुरीनकीओगरैंहरवाईवातभनकसुहांवती ॥ तूटेहारफूलनकेछूटेउरबंधनिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभासरसांवती ॥ लटपटाइमूरतिगुलाबजलभीजरहीबिगलितबारवासमदनबढांवती॥ रूपबसनागररसिकहसिहेरिहेरिफेरिफेरिभेटतभुजांनभरिभांवती॥७६॥ ॥ दोहा ॥ प्यारीमोहनलालप्रत्ति, हिलनिमिलनिइहिंभाइ ॥ मांनौंतरासिंगाररहि, पीतलतालपटाइ ॥ ७७ ॥ कवित्त ॥ रतिरसबा

तनिकरतमुसक्यातजाततत्यौंत्यौंहोतआनंदकीअंगअंगभीरहैं ॥ परसतहाथनाथलेटिलपटातगातकोइलसीकुहकिहरतउरपीरहैं ॥ घुरतद्युरतहसिज्ञुरततिरीछीदीठसरकिसरकिढिगढरतसधीरहैं ॥ उघरेउरोजनभरतअंकनागरसुकसिगसिजातमनौंएकहीसरीरहैं ॥७८॥ ॥ दोहा ॥ दोउकोककलानिमैं, पंडितपरमप्रवीन ॥ सोबसनांकैसैंकहौं, रसनांनैंननिहींन ॥ ७९ ॥ कवित्त ॥ मरगजीसुबासबसआसपासभंवरभीरभ्रमतअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांदिनिमैंसोएमिलिसुरतश्रमितअंगआनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥ झींनोंपटफारिफैंलीबाहिरबदनकांतमांनौंजौंह्नजीतबेकौंचलीहैंउमाहिकैं ॥ नागरियाअरुझांनेग्रीवनिमृनालभुजपुलिजातआंषैंजबराहिजातचाहिकैं ॥ ८० ॥ दोहा ॥ चनकमूंदिजहांतहांभई, निद्राबसिबिश्राम ॥ दंपतिपाइपलोटहीं, नवलसषीमनभाम ॥ ८१ ॥ सवैयो ॥ भौरव्हैंआयोनभायोदुहूंनकौंबोलेविहंगमबानीसुहांते ॥ बीनांनिमांझप्रबीननिरागबिभाससुनाइजगाएजहांते ॥ बैठेतबैंउठिआरसअंगव्हैंनागररूपमहाउफनाते ॥ नींदभरेलगिआवतलोचनरूपकेलोभपुलैंरसमाते ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ नींदभरेतनलटपटे, छकेदृगनिकीहेर ॥ नागरियाकेहियबसो, कुंजभुरहरीबेर ॥ ८३ ॥ जमुनांवृंदाबिपुनकी, बरनीकेलिअनूप ॥ करैभांवनांनित्तजो, होइभांवनांरूप॥८४॥सतरैसैंअठ्यासिया, संवतसांवनमास॥नवविहारयहचंद्रिका, करीनागरीदास॥८५॥इतिश्रीविहारचंद्रिकासंपूर्ण॥

## अथ भोरलीला लिष्यते ॥

दोहा ॥ प्रेमानंदसरूपश्री, गुरपदपंकजवंद॥दंपतिलीलाभोर

की, कछुवरनौंरसकंद ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हरिहितमूरतिप्रियारमतर जनीविहोंभतियां ॥ रह्योरंगनहिंपरतकह्योरहिपहरिकरतियां ॥ नैं ननिबैंननिअंगअंगआलसजबछायो ॥ सोयेसौंधीसेझमिहींपटदुहुं नउढायो ॥ २ ॥ चनकमूंदिबिश्रामकुंजपोढेपियप्यारी ॥ छ बिसौंबाहुमृनालनकीअरुझनहोंन्यारी ॥ नींदउचटिपुलिजातजव हिजाकेढिगजेरत ॥ जोइरीझछकिरहतनिकटइकटकमुपहेरत ॥ ॥ ३ ॥ इंहविधिकरिसुपसैंनचैनजुतबितईरजनी ॥ भईभुरहरीबे रजानिझुरिआईसजनी ॥ लैकैंबीनप्रबीनललितललिताजुबजायो॥ अद्भुतरागविभासकुंजमंदिरविचछायो ॥ ४ ॥ चहचहाटपंछीन कियोसुषसमैंसुहावन ॥ सीतलपवनपरागकंवलजलपरसतआवन सियरोलग्योसमीरभनकपरिकाननमहियां ॥ उठेलटपटेलालबा लदीनैंगरबाहियां ॥ ५ ॥ घूंमतझूंमतझुकतरुकतअंगनिअलसावैं ॥ सुनिसुनितांनसुजांनमुंदीआंषनिमुसक्यावैं ॥ अंगमरगजीबास महकिभौंरानिबिचआई ॥ व्हैगयोरूपउजासकुंजऔरैछबिछाई ॥ ॥ ६ ॥ रंगभरेमुसक्यातिलतामंदिरतैंनिकसे ॥ सहचरिआइझू मिमुदितदृगबारिजबिकसे ॥ एकढुरावतपवनएकमुषबीरीदैंहीं ॥ एकदुहुंनिपैंरीझिबलइयाफिरिफिरिलैंहीं ॥ ७ ॥ अस्तबिस्तअव तसएकगहितिह्नैंसंवारत ॥ इकतोरतत्रिनएकवारिमोतिनलरडारत पीककपोलनिलीकानिरषिअंजनधरनीपर ॥ मनहींमनमुसक्यातस पीआनंदहियेभर ॥ ८ ॥ दर्पनकुंजकीओरचोरचितकेपधराये ॥ चहूंओरतियवृंदमत्तगजगतिचलिआये ॥ दांतनमंजनकरतलगीनैं मुकहीवरियां ॥ फिरबैठेनियराइसौंजासिंगारसुधरियां ॥ ९ ॥

गउरस्याभअभिरामअंगमिलिदर्पनदेषैं ॥ भूलतसबैंसिंगारहगनन हिंलगतनिमेषैं ॥ सबैंसषीसंभरावतजावतभंवरउडावत ॥ रचिरचिरुचिरसंवारसुघरासिंगारबनावत ॥ १० ॥ गउरपीठश्राभिरामस्यामगहिगूंथतवैंनी ॥ तियफिरअंजनदेतकमलनैंननिमृगनैंनी ॥ बनीकरनकवनीयबनीउतलटघुघरारी ॥ करनफूलपरफूलधरतइतफूलबिहारी ॥ ११ ॥ परमहंसौंहैइंदुबिंदुरचिहींमुषगौरैं ॥ धरैंचिबुकतरहाथनाथहगसौंहगजोरैं ॥ भयेजातउरहारहारपहनांवतमोहन ॥ बढतरंगभुवभंगकछुकप्यारीऽहैंसोहन ॥ १२ ॥ नथबेसरिकैंदेतदुहुंदिसरंगबढयोहैं ॥ नासाचढनिसरूपस्यामकेचितजुचढयोहै ॥ बैनांभालबनायबहोरिमुषकमलनिहारत ॥ उतफैंटासिरपीतझुकतिकछुप्रियासंवारत ॥ १३ ॥ पेचनकीचहुंवोरमैंडअैंडानिलचिढौंहीं ॥ सुंदरकरनबनायचंद्रिकाधरीटिढौंही ॥ रतनपेचरचिबांध्योहारिकैंअतिरंगभीनौं ॥ छुटींकिरनिचहुंफेरघेरछबिमंडलकीनौं ॥ १४ ॥ पटभूषनसबसाजश्यामपहराईसारी ॥ बनिठनिठाढेसरसपरसपरप्रीतमप्यारी ॥ तबराधापदगोदमोदजुतलैंअनुरागी ॥ चरनकंजमंजीरबैठिबांधतबडभागी ॥ १५ ॥ चलिबैठेसैनायसषीदर्पनलैंठाढी ॥ अंगअतरलपटावनिदावनिबहोबिधबाढी ॥ प्रीतमकेसुषसुषीकरतपियसोईभावत ॥ दंपतिमनकोलगनिकहोकौंनैंपैंआवत ॥ १६ ॥ दोहा ॥ कैसैंहूजातनकहो, सुषबरष्योतिहिंकाल ॥ लालसिंगारतबालकौं, बालसिंगारतलाल॥१७॥ चौपाई ॥ षटरसभोजनसौंजाबिबिधभांतनकरिश्रांनी ॥ सुंदरसीतलबिमलसुबासतभरिधरपानी ॥ करपल्लवच्छैंजातअधरअधरनि

मुसक्याते ॥ देतपरसपरग्रसाकछूइहिंलोभलुभाते ॥ १८ ॥ नैंन निनैंननिपगेपगेरसरूपरंगीले ॥ जैंवतवेरअवेरकरतअनहितरंग बोले ॥ कौंनैंलौंनैंरूपकोरनैंनानिकौंभावत ॥ घरीपलकछिनजा मजुगलइंहिकामबितावत ॥ १९ ॥ दोहा ॥ मिलिजैंवतदोउदरस रसरसनारसबिसराय ॥ गईछुधासबउदरकीरहीदृगनिमैंआय॥२०॥ चौपाई ॥ सषिनलयोअवसेपरह्योआनंदहियैंभर॥अचवनकरिकैंदई दुहुंनबीरीसुपह्सुंदर ॥ परदादयेउठायअगरबरिधूमसुवासत ॥ चली आरतीसाजजोतजगमगतप्रभासत ॥ २१ ॥ मोतिनझूंमतझवाझ लकिरहिदीपकबतियां ॥ वरतकदालिकपूरआरतीआवनअतियां ॥ गावततोडीरागतांनमधुरैंसुरसांची ॥ नियरैंआईझूंमिरूपगहमहसी मांची ॥ २२ ॥ दोहा ॥ चलतवारतीपैंउतैं, कवलनैंनकीसैंन ॥ र हेकरतछकिआरती, रूपआरतीनैंन ॥ २३ चौपाई ॥ दर्पनमंदिर मांझआरतीकरिकैंबहौरी ॥ बदनमाधुरीपानकरतअंषियांनअहो री ॥ सुमनसेझउठिसोयेभोयेरतिरसघातन ॥ अरुझेतनमननैंनक रतहितउरझीबातन ॥ २४ ॥ बैठीबाहिरठौरसषीललितादिसुघर मुनि ठीकदुपहरीबेरबजतबीनांसारंगधुनि ॥ इहिंबिधिलीलानित्त प्रातकीकछुकसुनाई ॥ दिनदिनकोसुषसषीकह्योकौंनैंपैंजाई॥२५॥ दोहा ॥ हरिगुरसंतनिकरिकृपा, दीनौंप्रेरहुलास ॥ लीलाभोरसुहां वनी, कहीनागरीदास ॥ २६ ॥ दंपतिलीलाभोरकी, पढैंसुनैंजो भोर ॥ जाकेहियनिसदिनरहैं, झलकतजुगलकिसोर ॥ २७ ॥ इतिश्रीभोरलीलासंपूर्ण ॥

# अथ प्रातरसमंजरी लिष्यते ॥

दोहा ॥ सपीभोरलपिछकिरही, स्यामास्यामसुजान ॥ मुंदी पलकअलकैंपुली, अधरथकितमुसक्यान ॥ १ ॥ लताभवनललि तादिसपि, बजवतबीनबिधान ॥ मुदेनैंनमुसकांवही, सुनिसुनितां नसुजान ॥ २ ॥ पहपियरीपियरीसमैं, लषिदंपतिसुकुमार ॥ रंग भरीलपटानितन, अरुझेहारसिंगार ॥ ३ ॥ बहियांसीसअदाहसौं, धरिपौढेमिलिमित्त ॥ सोवनकीसोवनमही, जगैंलगौंहौंचित्त ॥ ४॥ भईभुरहरीकरनदैं, कुंजछांहसुषसैंन ॥ केलिपगेसबनिसजगे, अ रुंहिलगेहैंनैंन ॥ ५ ॥ कैसैंनीदनिवारियैं, अरुअंगनिउरझानि ॥ भोरभयोदिनकरकिरनि, आईरंध्रलतानि ॥ ६ ॥ छुटतनआरसर सपगे, जानतभयोजुप्रात ॥ ओढैंपियरौपटदोऊ, फेरफेरलपटा त ॥ ७ ॥ निसबीतीसबरंगमैं, उठेभोरसुकुमार ॥ आयसंवारत सहचरी, भूषनबसनसिंगार ॥ ८ ॥ लगेलगेदृगआंवहीं, बैठेपगे किसोर ॥ नीलपीतपटपलटगे जगेरगमगेभोर ॥ ९ ॥ अलसौंहैं निसकेजगे, सरबरसौंहैंनैंन ॥ इकटकसौंहैंअधषुले, सहजहसौंहैं नैंन ॥ १० ॥ आननसौंआननछियैं, पाननरचेकपोल ॥ लषिरी झछबिआरसी, बिहसैंलोयनलोल ॥ ११ ॥ आरससौंअरुझी पलंक, अलकजुबेसरिमांहि ॥ अरुझ्योबैंनादेषिकैं, पियमन सुरझ्योनांहि ॥ १२ ॥ लसतभोरढीलेदृगानि, ढीलीमृदुमुसकानि॥ पियमनगाढैंबंधिगयो, सुनिढीलीबतरानि ॥ १३ ॥ उनदौंहांअंषि यांनकी, पलकैंझलकिअनंग ॥ पियगहरैंरंगमैंरंग्यो, अधरनिफो

केरंग ॥ १४ ॥ छबिझलकैंअलकैंसिथल, सबतनसिथलसिंगार ॥ सूचततियतनसिथलता, निसद्दढलगनबिहार ॥ १५ ॥ रसउरझी निसस्यामसौं, आरसउरझेवैन ॥ तेरीउरझीअलकमैं, मेरेउरझे नैन ॥ १६ ॥ नींदभरेतनलटपटे, छकेदृगनिकोहेर ॥ नागरिया केउरबसो, कुंजभुरहरीबेर ॥ १७ ॥ इतिप्रातरसमंजरीसंपूर्ण ॥

## अथ भोजनानंद अष्टक लिख्यते ॥

दोहा ॥ स्यामास्यामसिंगारसजि, जैंवतदृगसुखदैंन ॥ कोजन कविबरननकरैं, वहमिलिभोजनलैंन ॥ १ ॥ नवलकिसोरीलैंगसा दसनखंडकरिदेत ॥ रसिकसांवरोतिहिंफलहिं, भागसफलकरिले त ॥ २ ॥ मिलिजैंवतदोउदरसरस, रसनांरसबिसराय ॥ गईछुधा सबउदरकी, रहीदृगनिमैंआय ॥ ३ ॥ देतगसामुपतीयकैं, चित ईकरिभुवभंग॥रह्योकौंरहीहाथमैं, भईदृगनिगतिपंग॥४॥ सरसपरस कौंतरसिजिय, लालकौंरकरलेत ॥ चतुरचौंकितबलाडिली, अधर छुवननहिंदेत ॥ ५ ॥ कौंरलेतकरकंपव्है, देतबीचछुटिजात ॥ स्वे दसिथिलासियरायतन, छुवतअधरमुसक्यात ॥ ६ ॥ देतकौंरहासि परसपर, नैननिनैनमिलाय ॥ भूलिजातभोजनदोऊ, दीठरहतठह राय ॥ ७ ॥ अचवनिमैंरचवनिभई, हसिहासिबीरीदैंन ॥ नीरीनाग रियासखी, लपिसियरावतनैंन॥८॥इति भोजनानंदअष्टकसंपूर्णम् ॥

## अथ जुगलरस माधुरी लिख्यते ॥

दोहा ॥ हरिराधावृंदाबिपुन, नितबिहाररसएक ॥ बिछुरतनां हींपलकहू, बीततकलपअनेक ॥ १ ॥ नवनिकुंजमनकौंअगम, से

वतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअखंडितरंग ॥ २ ॥ नैननैनसियरांवहीं, बैनसजीवनमंत्र ॥ मुहाचहींजीयज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतंत्र ॥ ३ ॥ दंपतिढिगनवकुंजसषि, करतगांनसारंग ॥ बीनतंमूराखंजरी, बजिदायरमुहचंग ॥ ४ ॥ रससंपतिमिलिबिलसहीं, दंपतिदैंगरबांह ॥ ढिगबीनांबीनांसषी, बजवतिद्रुमकीछांह ॥ ५ ॥ बडेबारछबिसौंछुटे, अंसर्षानकटिछीन ॥ सबरिझवारनिकेमनौं, मनभरिकावारिलीन ॥ ६ ॥ ललिततमूराबालढिग, सोहतहैंइहिंभाय ॥ समरजीतिदृगसरानिसौं, तरगसलियोछिनाय ॥ ७ ॥ सषीरूपकीमंजरी, खंजरीटसेनैन ॥ बजैंकरनिमैंषंजरी, लजैंपरेवाबैन ॥ ८ ॥ चलतदायरेपैंचपल, चारअंगुरियनरूप ॥ अछियांमाछियांसीनचैं, मनौंअमृतकैंकूप ॥ ९ ॥ चंगैमुंहमुंहचंगातिय, बजवतिहैंगतिकार॥ बैठचोकमलदराराबिच, मनौंअलिकरतगुंजार ॥ १० ॥ गहगडरागसमाजजुत, राजतबिचनवकुंज ॥ प्रेमरूपगहबरभरे, गौरस्यामरसपुंज ॥ ११ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचबृंदाबनबाग ॥ नागरियाहियमैंबसो, स्यामास्यामसुहाग ॥ १२ ॥ इति जुगलरसमाधुरीसंपूर्णम् ॥

## अथ फूलबिलास लिख्यते ॥

दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेताबिच, अलिबैठेमधुलैंन ॥ हरिहितवृंदाविपुनमनौं, धारेअगनितनैंन ॥ १ ॥ बनफूल्योफूल्योजुमन, फूलवेसअभिराम, सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगोरीस्याम ॥ २ ॥ रंगरंगभूषनफूलके, रहेफूलितनझूल ॥ अंतरकीबाहिरमनौं, प्रगटी

अंगअंगफूल ॥ ३ ॥ मिलतनवावतनवल्लता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाडोदुहुंनितन, फूलनिबींनतफूल ॥ ४ ॥ झूमिझुकावतद्रुम लता, उघरतउरउरमाल ॥ फूलनितोरतदेतफल, मनमोहनकौबा ल ॥ ५ ॥ धरतप्रियाकेश्रवनपर, लालकुसमकवनीय ॥ वहौरिबलै यालेतप्रिय, निरषिबदनरमनीय ॥ ६ ॥ छ्वैंकपोलछबिसौंरह्यो, न हिंउपमांकोउतूल ॥ हालहालकरैंहालदिल, करनफूलपरफूल ॥७॥ फूलनिसौंबैंनीगुहत, रचतफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोउ, भुज भरिदृढअंकवार ॥ ८ ॥ कौतगलागेबालकैं, संगडोलतनंदलाल ॥ छुवतजुहीकेफूलकौं, होतजुहीकीमाल ॥ ९ ॥ दुरिदुरिभेटतद्रुमनि मैं, फूलभरीसुकुंवार ॥ लंपटमधुपनवांवहीं, पीतजुहीकीडार१०॥ दोउमिलिफूलनिबीनहीं, जमुनाकूलंनिसांझ ॥ रंगरलीअतिव्है रही, कुंजगलीकेमांझ ॥ ११ ॥ फूलनिमिसतियसौंमिलत, सपीरू पराचिछैल ॥ नागरियाकेहियबसो, कुंजरंगीलीसैल ॥ १२ ॥ इति फूलबिलाससंपूर्ण ॥

## अथ गोधन आगम लिख्यते ॥

दोहा ॥ सृंगतालदलवांसुरी, आईधुनिमनलैंन ॥ फिरेकन्हाई बिपुनतैं, गौरजछाईगैंन ॥ १ ॥ नटानटीलूकरतहीं, अवलषिरूप रसाल ॥ समैंभईनटरागकी, आवतनटवरलाल ॥ २ ॥ गोधूलिक वरियांभई, मिट्योबिरहदुषदंद ॥ प्रफुलिततियकुमदावली, आव तलषिब्रजचंद ॥ ३ ॥ आछैंकाछैंबेपनट, गायनिपाछैंलाल ॥ च लैंकटाछैंफूलसर, भूलतसुधिब्रजवाल ॥ ४ ॥ चहूंओरगडदारसे,

करतकतूहलग्वाल ॥ आवतमनमथदलमलत, मत्तद्विरदनंदलाल ॥ ॥ ५ ॥ आवतलषिनंदलालकौं, झूंमिझरोपनिझांक ॥ कलीफूलडारतअली, लिषलिषहितकेआंक ॥ ६ ॥ नटनागरकलगांवहीं, बीचरागनटबैन ॥ सुंदरतननटवरचलत, नटचेटकसेनैंन ॥ ७ ॥ नटनागरलषिकैंउतैं, वेऊगुनसरसात ॥ घूंघटहीमैंनैंननट, उलटपुलटकरिजात ॥ ८ ॥ कमलमालहियकरकमल, कमलनैंनसंगधैंन ॥ प्रफुलितकमलपरागजुत, यौंमुषमंडितरैंन ॥ ९ ॥ घटकीसटकीलाजसब, गोधनसंगलषिलाल ॥ अटकीनटकीदृगनिमैं ॥ वहलटकीलीचाल ॥ १० ॥ नागरिमोहीललनलषि, कीनैंनटवरबेस ॥ सबकोमनलैधेनुसंग, कीनौंभवनप्रवेस॥११॥इति श्रीगोधनआगमसंपूर्ण ॥

## अथ दोहनानंद अष्टक लिख्यते ॥

दोहा ॥ गोरंभनगहमहपरिक, सांझदुहारीबेर ॥ पलकनिपौंछतरजतहां, पियापीयमुषहेर ॥ १ ॥ देतसौंहनीदौंहनीं, लेतलालमुसकाय ॥ भूलिहाथउतहीरहे, डीठडीठठहराय ॥ २ ॥ परीषारिकगोपालकैं, निजगौंहैंतजिभौंन ॥ भौंहैंलषिसौंहैंरहे, दौंहैंगइयांकौंन ॥ ॥ ३ ॥ धेनुदुहतमोहनठगे, राधारूपनिहार ॥ परतदौंहनीतैंनिकसि, अैंडीबैंडीधार ॥ ४ ॥ मुषचितवतगइयांदुहत, परतधरानिपयसोत ॥ मानौंमंगलदृगनिमनौं, दूधनिबरषाहोत ॥ ५ ॥ गोदोहतगोपालतिय, चितचोरयोमुसकाय ॥ वैसैंहींकरचलतरहे, गईसरकिकैंगाय ॥ ६ ॥ धेनुदुहतस्यामहिठगे, रूपसौंहनीदीस ॥ गिरीगोदतैंदोहनी, परीमोहनीसीस ॥ ७ ॥ लालगिरतग्वालनिगहे, प्रि

यलइतियानिसंभारि ॥ इतउतदोउसरभररहे, व्हैंट्टगसरनिसुमार ॥ ॥ ८ ॥ धेनुदुहतजानीसवनि, गउरस्यामकीप्रीति ॥ नागरियाकेहिय बसो, षरिकटहलकीरीति ॥ ९ ॥ इति श्रीदोहनानंद अष्टकसंपूर्णम् ॥

## अथ लग्नाष्टक लिष्यते ॥

दोहा ॥ जवतैंचितयेनैनभरि, तवतैंछिननहिचैंन ॥ मनमोहनगोह नफिरत, जागतस्वप्नैंसैंन ॥ १ ॥ मोहनलपिमोहनभई, कहालग्योयह हौंन ॥ सबसूझतमोहनमई, दईभईगतिकौंन ॥ २ ॥ लगीलगनिह रिमुखनिरषि, डारयोसवसुखरूंद ॥ जोहूंऐसोजानती, रहतीनैंन निमूंद ॥ ३ ॥ कौंनघरीकीलगनियह, अरीभरीनहिंजात ॥ मिट तनांहिदिनरातिजिय, स्यामरूपउतपात ॥ ४ ॥ घरवनकहुंनहिंल गतमन, रहतस्यामतनलीन ॥ अरीढटोनांनंदकैं, कछुटौनापढिदी न ॥ ५ ॥ नैंननिदुषनैंनानिलगैं, तनमनदुषदुपगेह ॥ एदइयाकौंनैं दयो, दुषकोनांमसनेह ॥ ६ ॥ हरिसौंलगनलगायकैं, भरीरहतनि तनीर ॥ रिझवारनिअंषियांनसौं, हौंहारीरीवीर ॥ ७ ॥ नागरसैंन निसैंनमिलि, वनिजुनैननिनैन ॥ वनतवनतऐसीवनी, कहतव नैंनहिंवैन ॥ ८ ॥ इतिश्रीलगनाष्टकसंपूर्ण ॥

## अथ फागबिलास लिष्यते ॥

दोहा ॥ फागविनांकहालागसुष, लागविनांकहाफाग ॥ फाग लागकीठौरव्रज, निरषैसोवडभाग ॥ १ ॥ व्रजतैंसोभाफागकी, व्र जकीसोभाग ॥ सबजगमैंव्रजफागको, गावतहैंअनुराग ॥ २ ॥ ग्या रेनहिंप्यारेलगैं, सोफीसदाउदास ॥ इस्कअैसमादिरापियैं, कैफी

फागुनमास ॥ ३ ॥ कियेरंगीलेफागमैं, हियेरंगीलेऐंन ॥ महारंगीलेदिनसबैं, महारंगीलीरैंन ॥ ४ ॥ फागजुरसिकनहितभयो, रसिकफागकेहेत ॥ चंदाबिनानिससांवरी, निसबिनचंदासेत ॥ ५ ॥ जाकौंहोरीषेलसौं, तनकहुहुवोनहेत ॥ षालवोढिसोमनुषकी, कियोमुलम्माप्रेत ॥ ६ ॥ फागमासरितुउठतवहो, द्रुमनवपल्लवलागि ॥ जडहूकैरोमांचव्है. त्रिथामंदनतनजागि ॥ ७ ॥ इहिंरितुऔसरफागकैं, होतलगनकोराज ॥ डफमोहनमुरलीसुनत, छुटतवधुनकीलाज़ ॥ ८ ॥ सुनिरीडफबाजनलगे, सिरपरआयोफाग ॥ अबकैसैंदबिहैंदई, अंतरकोअनुराग ॥ ९ ॥ सुलगीलगनहियेनमैं, जुलगीहोरीआय ॥ पुलिगीग्रंथबिचारकी, ॥ मीतमिलनदरसाय ॥ १० ॥ छिनदेषैंबिनदेतदुष, लोयनपरेजुगैल ॥ फागवावरेदिनानिमैं, रूपबावरोछैल ॥ ११ ॥ गृहकौंनैंजातनरह्यो, परतअगौंनैंपाव ॥ नितहोरीकेषेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ १२ ॥ बरसांनैंनंदगांवअति, उमगेदलदुहुंओर ॥ समरषेतसंकेतमैं, आजफागजुधजोर ॥ १३ ॥ ढोलकढोलमृदंगबजि, मुरलीडफसहनाय ॥ गहगडगांनधमारिधुनि, रह्योकुलाहलछाय ॥ १४ ॥ उडिगुलालआंधीपहल, डफगरजनिअभिराम ॥ रंगधारबरसनलगी, गउरघटाअरुस्याम ॥ १५ ॥ मचीदुहुंनिमैं फागइत, राधेउतनंदलाल ॥ जमुनांधरगिरतरुलता, पगमृगभरेगुलाल ॥ १६ ॥ लालमईसबदेषियत, घुमंडयोगगनगुलाल ॥ मनुदंपतिअनुरागको, डारयोव्रजपरजाल ॥ १७ ॥ राजतिधूंधिगुलालमैं, भरिभरिभाजतबाल ॥ मानौंफूलीसांझबिच, चमकतच

पलाजाल ॥ १८ ॥ दृगनहिंचहतगुलालकौं, तनचहैंउड्योगुलाल ॥ घूंघरिमैंदुरिऔचकां, भुजभरिलीजैंबाल ॥ १९ ॥ सकैंन दृगभरिदेषिकैं, तिनकोबदनमयंक ॥ जिनकौंहोरीपेलमिस, अंक निभरतनिसंक ॥ २० ॥ कौंधिउठतज्यौंदामिनी, भरतभामिनी आय ॥ पियमनलैकैंपलटिफिरि, मिलैंझुंडमैंजाय ॥ २१ ॥ आवतमुठीगुलालकी, छबिसौंछैलवचात ॥ पैंअचूकदृगलगिहियैं, वारपारभयेजात ॥ २२ ॥ रोकतघूंघटओटसौं, मुरितियापिचकी धार ॥ यहैंबचावनिदेपिउत, बचतनहींरिझवार ॥ २३ ॥ अजूकहांआंषैंभरो, कौंनरीतिकोषेल ॥ इनवातनिरहिहैंनहीं, हमसौंतुम सौंमेल ॥ २४ ॥ लगैंसुफिरनिकसैंनहीं, करीनभावतओट ॥ होरी मैंअंषियानकी, आंषिनहींपैंचोट ॥ २५ ॥ आंषैंभरतगुलालसौं, यहधौंकौंनसुभाय ॥ वदनमाधुरीपानमैं, अंतरपारतहाय ॥ २६ ॥ चतुराईकरिकैंदयो, पौंछनिदृगनिगुलाल ॥ कहतचलावतउतगयो, भोरैंछूटिरुमाल ॥ २७ ॥ चलतगुलालनिझोरियां, माची धूमधमारि॥ फागपेलझकझोरियां, फिरतगोरियांग्वारि॥२८॥पटछूटतछूटतनहीं, रहेषेलरसभोय॥हारटूटिपाइनपरत, हारनमानतकोय ॥२९॥ नागरियागतिरीझकी, क्यौंहूजातकहीन॥दंपतिफागबिहारसर, भयोलीनमनमीन ॥ ३० ॥ इतिश्रीफागबिहारसंपूर्ण ॥

## अथ ग्रीषम बिहार लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ जेठमासकीदुपहरी, आधीरातिसमान ॥ दुरिमिलि सुषबहोविधिकरैं, स्यामास्यामसुजान ॥ १ ॥ ग्रीषममैंगतिसिसर

वन, निबिडयौसअंधियार ॥ मुषउजियारैंकरततहां, दंपतिबितन बिहार ॥ २ ॥ सैंनीकदलीदलनकी, रचीकमलदलनैंन ॥ कुंज छांहदंपतिकरत, ग्रीषमरितुसुषसैंन ॥ तनसांनैंसउगंधसौं, मनठा नैंहितढेर ॥ कबहूतहपांनैंमिलैं, ठीकदुपहरीबेर ॥ ४ ॥ चंदनअं गलगांवहीं, आपलगेसेजात ॥ दंपतिमनसियरांवहीं, सषीनैंनसि यरात ॥ ५ ॥ रितुगरमीगरमीजुहित, तनगरमीनहिंलाल ॥ ढांपी ढोरिगुलाबपैं, चितसरमीक्योंबाल ॥ ६ ॥ अमितफुंहारेकौझुकी, नीरफुंहारैंलेत ॥ गाढीजोबनमदछकी, ठाढीरापतपेत ॥ ७ ॥ मुववरुनीअलकानिरही, फविजलजंत्रफुंहार ॥ सरदकमलपरओ सज्यौं, लषिरीझैंरिझवार ॥ ८ ॥ आईतियजलहोजबिच, चिंहुटे भीजीनिचोल ॥ पियदृगसीतलकरिकरैं, ग्रीषमकुंजकलोल ॥ ९ ॥ षेलतछींटनिजलमगन, तियनसंगनंदलाल ॥ मानौंउत्सववरुनगृ ह, उछरतमुक्ताजाल ॥ १० ॥ तिरततियाजलहोजबिच, रही जोतितनजागि ॥ पांनीऊपरफिरतहैं, मनौंफिरंगकीआगि ॥११॥ चुभकीलैंतियपरसहीं, अंगसरसईकाम ॥ रंगबरसहींदृगनिमैं, हो जमोजअभिराम ॥ १२ ॥ मुषबाहिरजलकेलिमैं, ताहिनचाहत जीव ॥ बहैंबूडिबोईभलो, तामैंपरसतपीव ॥ १३ ॥ भीजेमुपबा हिरलसैं, तियगनहोजअहांहि ॥ अमलकमलसेजोतिके, जगमगा तजलमांहि ॥ १४ ॥ आसपासमुषतियनकैं, फैलतजलबिचबार॥ डोलतहैंमनौंउदधिबिच, उरझेचंदसिंवार ॥ १५ ॥ निकसीकरि ...केलिसब, चितवतिनंदकिसोर ॥ दुरेअंगलषिप्रगटदृग, भये भरेकेचोर ॥ १६ ॥ जलभीजेनवतियनके, चुवैंवसनतनहेम ॥ अं

तरतैंउमडयोमनौं, लोपिनेमकौप्रेम ॥ १७ ॥ सुंदरगौरैतनलगे, भी जेवारविसाल ॥ सीतलचंदनपूतरितु, मनुपलटेअहिजाल ॥ १८ ॥ दिनगतिनिसआगमठयो, कीनैतियनसिंगार ॥ स्यामसजीवनिग ननिमनु, दमकेदीपगजार ॥ १९ ॥ सजिमुकेसकेवेसतिय, म नहुमैंनकीफोज ॥ फूलझरीछोडतकरानि, अजवहोजपरमोज २०॥ दिनग्रीपमसुपमुपकहा, कहैंनागरीदास ॥ फिरसजनीदंपतिकरत, रजनीरुचिराविलास ॥ २१ ॥ इति श्रीग्रीपमाविहारसंपूर्ण ॥

## अथ पावसपचीसी लिख्यते ॥

दोहा ॥ जडअवनीरितुवंतव्हैं, रसमैंनीरसठौर ॥ भीजीपावसरि तुरची, रूपीरितुसबऔर ॥ १ ॥ आवैंबदराकामदल, मोरनकी बअवाज ॥ फिरैंदुहाईसवसदन, होतमदनकोराज ॥ २ ॥ वरिपा घनघहराइतब, धीरनहींटहराय ॥ उठैंजुहियहहरायमुनि, तपता रीछुटिजाय ॥३॥ कीनौमैंनिरधारसुनि, पावसघनघहरांन ॥सवके मनजतिमदन, बाजतसदननिसांन ॥ ४ ॥ घुंमडिमेघचुंवितधर नि, अंधकारबढिगैंन ॥ बिछुरिगयेचकवाचमकि, समझिऔसकौ रैंन ॥ ५ ॥ कनकमालदामिनिहलैं, श्रमजलकनिवरषान ॥ काम मैथरतिभूमिकौं, देतमनौंरतिदांन ॥ ६ ॥ घनधाराझरहरिकरत, अवनीफारिप्रबेस ॥ चलेबहोसररसमरमनौं करनमूरछितसेस ॥ ७॥ इतझरलाग्योमेहको, इतसैंनानिझरनेह ॥ गउरस्यामचढिचढिअटा, भीजतरीझाविदेह ॥ ८ घटाबतावैंभांवती, छटाबतावैस्याम ॥ रस भीजेसैंनानिकरैं, जलभीजेचढिधाम ॥ ९ ॥ सुवधनुकेचधुरवालटे,

दसनदामिनीवृंद ॥ रूपघटाराधेअटा, गानगरजिधुनिमंद ॥१०॥ घनतनदामिनपीतपट, बगमु ऽ अभिराम ॥ मुरलीगरजनिरंगझर, बरसतहैंघनस्याम ॥ ११ ॥ हरिमलारपूरितअटा, घुमडीघटाअछेह ॥ ज्यौंज्यौंबाजैंमुरलिया, त्यौंत्यौंबरसैंमेह ॥ १२ ॥ बरिपारितुद्रुमगहबरे, बहोफलफूलनिझूंमि ॥ रचेकदंबहिंडोरनां, हरितभईब्रजभूमि ॥ १३ ॥ उतरिझमकिझूलैंचढैं, रंगरंगपहरिनिचोल ॥ लालमुनीयनकेमनौं, झुंडनिमचीकिलोल ॥ १४ ॥ कारीसारीगोरमुष, झूलतीतियरसकंद ॥ आवतजातविमानज्यौं, घटालपेटैंचंद ॥ १५ ॥ झूलतछबिउमचीअधिक, मचकतदुंमचीबाम ॥ उचटैंचोटीपीठमनुं, लगैंचमौंठीकाम ॥ १६ ॥ रमकतप्रियाहिंडोरनैं, छबिदुरिदेषतपीय ॥ वेझूलतवेश्रमितकटि, लचकानिलचकतजीय ॥ १७ ॥ झूलतठाढीप्रियाहिलषि, रहेलालसुधिभूल ॥ फहरतअंचलचंद्रिका, बैंनीबरसतफूल ॥ १८ ॥ दुरेलालगहिलतनिमैं प्रियसंगदयेझुलाय ॥ कंपितरौंमकटयातकर, डोरीगहीनजाय॥१९॥ दांवनिलांवनिदुहुंनिके, वाजतआवतजोर ॥ बैंनीहारहिलोरहीं, बढिझौटाझकझोर ॥ २० ॥ झूलतझोटाचढिगगन, मुरलीगरजानितूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरषतहारनिफूल ॥ २१ ॥ दिनझूलनिसंकेतमिस, मिलतमीतकरितोत ॥ फिरपावसकारीनिसा, अतिसुषकारीहोत ॥ २२ ॥ निसबरपाभिजईमिलत, तियारिझईनंदलाल ॥ पंथअंध्यारोबनबिषम, चपलातहांमसाल ॥ २३ ॥ मिलिएकैंछतनांतरैं, रहैंकदमकेमूल॥अतिरसभीजतभीजहीं, पीरोनीलदुकूल॥२४स्यामघटाव्रजस्यामघन, गउरघटासुकुंवारि॥नागरियाहि

यभूमिबिच,नितवरसोरसवारि॥२५॥इतिश्रीपावसपचीसीसंपूर्णा१०

## अथ गोपीबैंन बिलास लिष्यते ॥

दोहा ॥ वरषागतआगमसरद, अमलअंबुआकास॥बनद्रुमपात निधूरिधुपि, छबिबाढीसुषरास ॥ १ ॥ वरसमेघअवपेककारि, बेद मंत्रधुनिगाज ॥ वृंदावनकौंदैंगये, सुंदरताकोराज ॥ २ ॥ सुच्छि सुहाईसरदरितु, भूमिबिहाईपंक ॥ प्रफुलितकमलनिपरभ्रमैं, माते मधुपनिसंक ॥ ३ ॥ घनबूंदैंरहिठहरिकैं, कंजदलनिआधार ॥ ह रिहितलियैंसरोवरी, मनुमोतिनभरिथार ॥ ४ ॥ सषीदेषिनट बेषहरि, मत्तद्विरदकीचाल ॥ मुदितबजावतबैंनबन, गोचारतगो पाल॥५॥लषिसषिधातसुरंगरंग, अंगत्रिभंगीलाल॥सीसपिच्छमुषबैं णउर, गुंजापुंजप्रवाल ॥ ६ ॥ जमुनानें रसमीरगति, षगमृगव छराधैंन ॥ रहेथकितव्हैएसषी, सुनिसुनिरीधुनिबैंन ॥ ७॥ हलैंन अवलिकदंबकी, थक्योपंथरथभान ॥ मोहनमुरलीसुनिभये, नभ संकुलितविमान ॥ ८ ॥ सुनिबंसीनीवीसिथल, षिसिप्रसूनषुलिबा र ॥ भईविमाननसुरवधू, मनमथसरनिसुमार ॥ १० ॥ सबकोम नमोहनकरत, मनमोहनमुपलाग ॥ न्यारीहोतनवंसुरिया, प्यारी तुववडभाग ॥ ११ ॥ वंसवंसमैंप्रगटभइ, सवजगकरतप्रसंस ॥ बं सीहरिमुषसौंलगी, धन्यवंसकोवंस ॥ १२ ॥ अलकचंदरचांपत करन, अधरउसीसालाल ॥ कौंनपुन्यकियेबांसुरी, यहसुषलहत रसाल ॥ १३ ॥ अहेबांसकीबंसुरिया, तैंतपकीनैंकौंन ॥ अधरस धापियकोपियैं, हमतरसतबिचभौंन ॥ १४ ॥ देहुश्रवनसुषसवनि

कौं, करअधरनिरसपांन ॥ जिनडारैंधुनिमुरलिया, अरीहमारैं कांन ॥ १५ ॥ अरीछिमाकरमुरलिया, परततिहारेपाय ॥ और सुषीसुनिहोतसब, महादुषीहमहाय ॥ १६ ॥ कियोनकरिहैंकौंन नहिं, पियसुहागकोराज ॥ अहेबावरीबंसुरिया, मुषलागीमति गाज ॥ १७ ॥ तोकारनगृहसुपतजे, सह्योजगतकोघैर ॥ हमसौं तोसौंमुरलिया, कौंनजनमकोबैर ॥ १८ ॥ एअभिमानीमुरलिया, करीसुहागनिस्याम ॥ अरीचलायेसबनिपैं, भलेचांमकेदांम ॥ ॥१९॥मुषमूंदैंरहुमुरलिया; कहाकरतउतपात ॥ तेरैंहांसीघरबसी, औरनकेघरजात ॥ २० ॥ हरिचितलियोचुरायकैं, रह्योपरतनहिं भौंन॥ तापरबंसीबाजमति, देतकटेपरलौंन ॥ २१ ॥ तूहूब्रजकी मुरलिया, हमहूब्रजकीनारि ॥ एकबासकीकांनकरि, पाढेप ढिमंत्रनमारि ॥ २२ ॥ मतिमारैंसरतांनिकैं, नांतोइतोबिचा रि ॥ तीनलोकसंगगाइये, बंसीअरुब्रजनारि ॥ २३ ॥ सब-कोमनलैंहाथमैं, पकरिनचाईहाथ ॥ एकहाथकीमुरलिया, ल-गिपियअधरनिसाथ ॥ २४ ॥ पीयहमारेकोलियो, अधरसुधातेंछी न ॥ हमतलफतसुनिबांसुरी, ज्यौंबिनजलकीमीन ॥ २५ ॥ बो लचलावतमुरलिया, कहासुहागकोतोत ॥ तोसौंपियटेढेरहैं, हमसौं सूधेहोत ॥२६॥ हमहीकीतूदूतिका, मुरलीसबजगसाषि ॥ हमहीं परगाजतभली, जूठहमारीचाषि ॥ २७ ॥ बाजैंमतिमतिबांसुरी, म तिपियअधरनिलागि॥अरीघरबसीदेतक्यौं, रौंमरौंममैंआगि ॥२८॥ फूंकनिकेचलितीरतन, लगैंपरतनहिचैंन ॥ अंगअंगआपबिंधाइकैं, हमहूबेधतबैंन ॥ २९ ॥ धीरतजैंनहिरनसुभट, ज्यौंतनसहैंप्रहार॥

त्यौंबंसीसुरसरलगैं, रहैंसम्हारिसम्हारि ॥ ३० ॥ हाहाअवरहि मौंनगहि, मुरलीकरतअधीर ॥ मोसीन्हैंजोतूसुनैं, तवकछुपावैंपीर ॥ ३१ ॥ सबदसुनावतहमहिनू, देतनहींछिनचैंन ॥ अनबोली रहुतनकतो, एबकबादीबैंन ॥ ३२ ॥ थिरकीनैंचरचरसुथिर, हरिमुषमुरलीबाजि ॥ गरबसुकीयेसबनिके, महागरबसौंगाजि ॥ ३३ ॥ अमलचलायोआपुनौं, मुरलीगरजिगुमांन, हियसूनैंकरितियनके, प्रानबसायेकांन ॥ ३४ ॥ बैठिअधरमैंमुरलिया, अधरमनैंकानिवारि ॥ कहाजगतजसलेहुगी, तूअबलनिकौंमारि ॥ ३५ ॥ घूमैंभूमैं धुकिउठैं, तुवबंसीसुरलागि ॥ कहरजहरलहरैंचढी, डसीभुवंगमराग ॥ ३६ ॥ जिंहिंमोहीसबव्रजबधू, मोहनमृदुमुसकाय ॥ सो मोहीतैंमुरलिया, वनघनमैंलेजाय ॥ ३७ ॥ अहेमुरलियामोहनी, तोसौंकहावसाय॥ अधरसुधारसप्याइकैं, प्रीतमलियोछिनाय॥३८॥ पीयलियोपियमनलियो, लियोअधररसझूंम ॥ इतोलयोतैंकहादयो, वैरनिवंसीसूंम ॥ ३९ ॥ वंसीवंसीनामयह, काहूधरयोप्रवीन॥ तांनतांनकीडोरिसौं, पैंचतहैंमनमीन ॥ ४० ॥ बडेकढेगुनवांसुरी, बांवनसीलघुबेस ॥ भलीनचाइनाचहम, तोकौंहैंआदेस ॥ ४१ ॥ आपषुदीनूकरतरी, भईमुसद्दीमैंन ॥ गुद्दीपरक्यौंचढतहैं, मुद्दीन्हैं करिबैंन॥ ४२ ॥ कहाजानैंतूबांसुरी, भीजेमनकीपीर ॥ कोरीसूकेहीयकी, अनबोलीरहुबीर ॥ ४३ ॥ गांठिगंठीलेवंसकी, महाद्रोहकीषांनि ॥ मतिमारैंरीमुरलिया, तांनानिबिषकेबांन ॥ ४४ ॥ हमहारीगारीजुदैं, जडसौंकहावसाय ॥ मौंनगहतनहिंमुरलिया, हायहायफिरिहाय ॥ ४५ ॥ मुरलीसुनितनमैंभई, आंसूदृगनिवि

साल ॥ सुपआवैंसेइकहैं, प्रेमबिबसब्रजबाल ॥ ४६ ॥ नागरिहिय हरिहिलगकी, दारूधरीदबाय ॥ आगिरागबंसीलपट, पुंहचउठी भभकाय ॥ ४७ ॥ इतिश्रीगोपीबैंनबिलाससंपूर्ण ॥ १२ ॥

## अथ रासरसलता लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ निससर्देत्फुल्लमल्लिका, ककुंभकांतराकेसि ॥ गहीबैंणुहरिनिरषिवन, रासरमणआबेस ॥ १ ॥ पूरनससिनिसिस रदकी, चलिबनमलयसमीर ॥ होतबैंणरवरासहित, तरुनतनइया तीर ॥ २ ॥ बंसीधुनिदूतीपठैं, वोलीहैंब्रजबाल ॥ समरबिजेआरं भरस, रासकरननंदलाल ॥ ३ ॥ परमप्रेमआरूढरथ, बिपमपंथधु निबैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहित, चलीमदनगढलैंन ॥ ४ ॥ बिमलजु न्हइयाजगमगी, रहीबैंनधुनिछाय ॥ प्रेमनदीतियरगमगी, बृंदा काननआय ॥ ५ ॥ रुकीनकापैंतियगई, छाडिकाजगृहचाह ॥ मिल्योस्यामरससिंधुमन, सलिताप्रेमप्रवाह ॥ ६ ॥ जुरेकरनिकर कमलबिच, अमलजुन्हइयाजोति ॥ हावभाववहोगांनगति, रास रंगअतिहोत ॥ ७ ॥ नूपुरकंकनकिंकिनी, मिल्योझमाकिझंकार ॥ कोटिकामदलदलमलति, पायनिमतिबिसतार ॥ ८ ॥ अतिदरसी सरसीजुछबि, द्वैतियमधिनंदलरल ॥ कंचनमणिबिचस्याममणि, मनौमैंनकोमाल ॥ ९ ॥ पदंन्यासउठिरासमैं, कुसमसुगंधितधूर ॥ रह्योनूपुरनिनादसौं, नववृंदाबनपूर ॥ १० ॥ लगेहौंनरससरासमैं, बहोसंगीतप्रकार ॥ गांनतांनअतिगतिनके, कहिनसकतबिस्तार ॥ ॥ ११ ॥ रासकरतनंदलालतिय, संगसरदकीरात ॥ लाघवतातन

फिरनकी, मनौंमैनआलात ॥ १२ ॥ फुरतहरवईपगानिकी, नचत मांझदरसाय ॥ बालालालाफूलपर, उरपातिरपलैंजाय ॥ १३ ॥ लषिडपजतचपलांनिचित, सीषनकीललचांन ॥ लगेलंकललनांनिकी, अलगलागलैंजांन ॥ १४ ॥ निकसिनिकसिमंडलनितैं, लेतललितगतिलाल॥ देषिदेषिअंकानिभरत॥ रीझिरीझिबसबाल॥१५॥ मुकटलटकपटफरहरानि, भृंगभरहरानिसंग ॥ मुषमुरलीधुनिघरहरनि, नृत्ततस्यामसुधंग ॥ १६ ॥ ग्रीवढौरिगतिलैंचलनि, हलनिअलकउरहार ॥ पायनिमनमथदलमलनि. नचतललनिछबिसार ॥ ॥ १७ ॥ कबहूप्रियमंडलकढत, अतिगतिबढतसुधंग ॥ हरिकेमन लोचनफिरत, उरझेपायनिसंग ॥ १८ ॥ वैंनीचलानितंबपर, छनकछलाअंगुरीन ॥ नचैंचंचलासीकला,कोबिदप्रियाप्रवीन ॥ ॥ १९ ॥ लाललईउरलाइलषि, रीझेगतिसरसांनि ॥ मंडलमैंसुरझैं नहीं, अंकमालउरझांनि ॥ २० ॥ उतअरझीकुंडलअलक, इतवेसारिबनमाल ॥ गउरस्यामअरुझेदोऊ, मंडलरासरसाल ॥ २१ ॥ गरवाहियांगतिलेतमिलि, श्रमबससिथिलतपाय ॥ डारेमनलैसबनिके, डगमगडगतिडुलाय ॥२२॥ लेतबलइयारीझदोऊ, दोऊपौंछतश्रमवारि ॥ नचतसनीअतिरंगसौं, बनीमदनमनुहारि ॥ २३ ॥ उतैंझुकौंहौंनवमुकट, इतैचंद्रिकाचार ॥ भयेरासरसमगनतन, सरकेसकलसिंगार ॥ २४ ॥ पूटिपूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेबार ॥ अमितरासरसरंगमैं ॥ टूटिटूटिगयेहार ॥२५॥ कहतकहतकहांलगिकहैं, कविमतिमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहविलासमैं. कोरिकोरिव्है रास ॥ २६ ॥ नागरियादयरासमैं, अगनितकलपवितायि ॥ मन

मथहूकोमनमथ्यो, कथ्योकौनपैंजाय ॥२७॥इतिश्रीरासलतासंपूर्ण

## अथ रैनरूपारस लिष्यते ॥

दोहा ॥ सरसाईबृंदाबिपुन, अमलजुन्हाईरैन ॥ लगतसुहाईदृगनिकौं, कुंजनछबिसुखदैंन ॥ १ ॥ स्वेतफूलफूलेलतनि, बिलुलितहीराहार ॥ ज्यौंन्हओढिपटरूपहरी, कुंजनिकरेसिंगार ॥ २ ॥ छईछिपाछबिदेतछित, पत्रविपुनइहिंभाय ॥ ससिकारीगररूपहरी, अफसांकियोबनाय ॥३॥ चितैंबदनब्रजचंदको, रीझिचंदभयोचूर ॥ छिपाकिधौंवहिजोतिमैं, कुंजनिबिषरयोनूर ॥ ४ ॥ फैलीचमकतचंद्रिका, बिचानिकुंजबनबाग ॥ कतरिस्वेतमुक्केसमनु, रतिपतिषेल्योफाग ॥५॥ कुंजसर्वव्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत ॥ आईदेषनसगुनमनु, निगुनब्रह्मकीजोति ॥६॥ नवनिकुंजराकारुचिर, अतिसितअमलउजास ॥ लसतफटकफानूसनभ ॥ बिचससिदीपप्रकास ॥ ॥ ७ ॥ चंदचंद्रिकामंदकी, दंपतिअंगउजास ॥ लताकुंजरंध्रनिकढ्यो, किरननिनिकरप्रकास ॥ ८ ॥ मैनरंगरसरगमगे, जगेउजारीरैंन ॥ षगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसोंहैंनैंन ॥ ९ ॥ अंपियनआरसछबिलषैं, अमलउजारीमांहि ॥ बहुरिचंदकीडीठडरि, करतमुकटकीछांहि ॥ १० ॥ पलकैंपाननपीकसौं, रंगीजुरंगनववाल ॥ रीझिरहेसोईनिरषि, निसनींदभरेदृगलाल ॥ ११ ॥ सहजछकेसेरसछके, छकेनींदअरसांन ॥ छकेछकावैंपीयकौं, नैंनरूपमदपांन ॥ १२ ॥ जुरैंजुरैंफिरिहासिमुरैं, घुरैंढुरैंरहिजांहि॥ लोयनलहिरैंनिरपिपिय, धीरजठहरैंनांहि ॥ १३ ॥ श्रवननिछ्वैं

छविसौंफिरैं, लोयनवंकविसाल ॥ पुलैनआरसअधपुले, करत लालपरहाल ॥ १४ ॥ अरसांनैंघूंमतझुकत, सरसांनैंछविऐन ॥ विहसिदुरानैंपीयपर, नींदघुरांनेनैंन ॥ १५ ॥ रैंनघटैंत्यौंत्यौंव ढैं, आरसरूपझकोर ॥ नींदभरैंपियउरअरैं, नैंननिपैंनींकोर ॥ ॥ १६ ॥ जवपलआवैंझुकतपिय, दरपनदेतदिखाय ॥ तवअप नीअंपियांनपर, अंपियांरहतलुभाय ॥ १७ ॥ नींदझुकीपलनिरपि पिय, देतहैंपांनवनाय ॥ उतनैंननिकेपुलतही, इतवीरीछुटिजाय ॥ ॥ १८ ॥ भौंरनिवारतवदनलपि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगा वतलालजव, पुलेनैंनमुसक्यात ॥ १९ ॥ सपीलखैंदुरिद्रुमनिमैं, व्हैंगइचित्रसरीर ॥ निसउनदोहैंद्दगनिमैं, भईद्दगनिकीभीर ॥२०॥ अरसांनींनिरपतप्रिया, जातविहानीरैंन ॥ नैंननिलखिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ २१ ॥ धरैंचित्रुकतरहाथद्दग, देपतनींदडुमार ॥ लगेरूपकेरहचटैं, पौंढतनहिंरिझवार ॥ २२ ॥ लपिउरझेसुरझैंन हीं, सवनिसगईविहाय ॥ आरसउरझेद्दगनिमैं, पीयरहेठहराय ॥ ॥ २३ ॥ क्यौंसुरझैंआरसभरे, नैंननिउरझेनैंन ॥ नागरियाहियमैं वसो, यहरूपारसरैंन ॥ २४ ॥ नागरिनैंननिरूपव्हैं, दोहापढिनै नानि, अछरनिहूकैंनैंनभये ॥ कहिनसकैंवैनानि ॥ २५ ॥ इति श्रीरैंनरूपारससंपूर्ण ॥

## अथ सीतसार लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ सीतनिसासंकेतहित, रचिवरचौपरितोत, हितपक्वे नांहिनउठैं, फिरिफिरिकच्चेहोत ॥ १ ॥ समझिदावपियचूकिकैं,

चलतसारिसुपसारि ॥ पकरिपिछौंहौंदेतकरि, नवलडकीलीनारि ॥ २ ॥ फंटकसारगहिलटकसौं, देतछबीलीवाल ॥ परतझगरईपेलविच, होतस्वेततैंलाल ॥ ३ ॥ पीतसारघनस्यामकैं, स्यामसारसुकंवारि ॥ खेलसारललितादिलषि, मनधनडारतवारि ॥ ४ ॥ प्रियजीतैंतियसलजदृग, चितईजुतअंगरानि, बाजीबाजीलषिउठी, बाजीठहरीजानि ॥ ५ ॥ समैंदानदुपदानभो, पांनिहुसकैंन जोर ॥ गुलहाथनिगुलगीरलैं, गुलकीनैंगुलमोर ॥ ६ ॥ सिघरीधरिनियरैंकरत, इकटकडीठामिलाप, मीतसीतमैंदृगनिकी, तापिबुझावतताप ॥ ७ ॥ दोऊसनमुषबैठिकैं, तपैंअंगीठीमीत ॥ अंगुरीअंगुरीपरसतैं, अधिकअधिकव्हैसीत ॥ ८ ॥ लोयकदैंमुषलोयनन, बुझैंहोतसुषअंग ॥ सीतरैंनदोउमीतकैं, तापनहीमैरंग ॥ ९ ॥ सीतकियोबससीतकैं, मीतकियोवसबाल, सालसालकरिदृगनिकौंढांप्योअंगरसाल ॥ १० ॥ अबररंगकीसालबिच, हसिफेरयोमुषचंद ॥ अतनातसमैरीझिकैं, पियमनभोइसफंद ॥ ११ ॥ थरहराततनबचनचल, चंचललोयनवंक ॥ भईभीतबससीतकैं, सरकतआवतअंक ॥ १२ ॥ अनदेषैंदृगतरफरत, बिनांमिलैंबेहाल ॥ एकनिहालीसौंभये, दोऊनिपटनिहाल ॥ १३ ॥ नेहपगेरहियेलगे, नागरहिमरितुधाम, सुंदरपांनिपसहितहैं, तियउरगरमहमाम॥१४॥ इतिश्रीसीतसारसंपूर्ण ॥

## अथ इस्क चिमन लिष्यते ॥

दोहा ॥ इस्क उसीकीझलकहैं, ज्यौंसूरजकीधूप ॥ जहांइस्कत

हांआपहैं, कादरनादररूप ॥ १ ॥ कहूंकियानहिंइस्कका, इस्तैंमालसंवार ॥ सोसाहिबसौंइस्कवह, करिक्यासकैंगंवार ॥ २ ॥ सरमिंदाहोइइस्कसौं, सोदेवैंसबपोइ ॥ निंदासहदांनेबजैं, सोईचुनिंदा होइ ॥ ३ ॥ दुनियांदारफकीरक्या, हैंसबजितनीजात ॥ बिगर इस्कमस्तीअरे, सबकीकिस्तीबात ॥ ४ ॥ सादेजेप्यादेसवैं, जद्यपिधनअनपार ॥ इस्कअमलमस्तीलियैं, सोहस्तीअसवार ॥ ५ ॥ सबमहजबसबइल्मअरु, सबैंऐसकेस्वाद ॥ अरेइस्ककेअसरविन, एसबहीबरवाद ॥ ६ ॥ आयाइस्कलपेटमैं, लागीचस्मचपेट॥ सोईआयापलकमैं, औरभरइयापेट ॥ ७ ॥ जरबाजीबिनखलकके, कामनसंवरैंकोइ ॥ एकइस्कबाजीअरे, ज्यांबाजीसौंहोइ ॥ ८ ॥ सीसकांटिकरभूधरैं, ऊपररप्पैंपाव ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, ऐसाहैंतो आव ॥ ९ ॥ जिनपांवौंसौंपलकमैं, चलैंसुधरिमतिपाव ॥ सिरके पांऊंसौंचला, इस्कचिमनमैंआव ॥ १०॥ कोइनपहुंचाउहांतलक, आसिकनामअनेक ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, आयामजनूंएक॥११ इस्कचिमनमहबूबका, जहांनजावैंकोइ ॥ जावैंसोजीवैंनहीं, जीवैं सुबौराहोइ ॥ १२ ॥ अरेइस्ककेचिमनमैं, सम्हलिकैंपगधरिआव ॥ बीचराहकेबूडनां, ऊबटमांहिबचाव ॥ १३ ॥ मारेफिरिफिरिमारिये चस्मतीरसौंपूब ॥ कियेंअदालतजुलमकी, जहांबैठामहबूब ॥१४॥ आसिकपीरहमेसदिल, लगैंचस्मकेतीर ॥ कियापुदामहबूबकौं, सदासस्वतबेपीर ॥ १५ ॥ आसिकासिरअपनाअरे, धरिदेपैंरूल्याय ॥ बेनिसाफमहबूबकैं, करैंदूरिअनपाय ॥ १६ ॥ पूंनकरैं लडबावरे, महबूबौंकेनैंन ॥ आसिकासिरकीगैंदसौं, खेलैंतबहिचैं

न ॥ १७५ ॥ सुरषचस्ममहबूबनैं, पंजरकियेसंवार ॥ निकलैंले हूसौंरंगे, आसिकपंजरपार ॥ १८ ॥ इस्कखेतसौंनहिटलैं, आवैंबे उसवास ॥ चस्मचोटसौंसिरउडैं, धडबोलैंस्यावास ॥ १९ ॥ पल ककियाषालिकअरे, हसनेंहींकौंषूब ॥ सहनैंकौंआसिककिया, मारनकौंमहबूब ॥ २० ॥ चस्मौंसौंजष्मीकरैं, रसगस्मौंबिचषेत ॥ लटतस्मौंसौंबांधिकैं, दिलबस्मौंकरिलेत ॥ २१ ॥ पंडितपूजापाक दिल, एदिमागमतिल्याय ॥ लगैंजरबअंषियांनकी, सबैंगरबउडि जाय ॥ २२ ॥ पावसकैंनहिठहरिकैं, छुरीचस्मकीपीर ॥ जोजानैं जिसकेलगैं, कहरजहरकेतीर ॥ २३ ॥ तीरनिगाहौंकेलगैं, दरद मुकरराहाय ॥ जरराहभीजरराहसौं, मिलैंनउरकेघाय ॥ २४ ॥ एतबीबउठिजाहुघर,अबसछुवैंक्याहाथ॥ चढीइस्ककीकैफयह,उत रैंसिरकेसाथ ॥ २५ ॥ कस्मौंतुम्हैंकरीमकी, सुनियोसवेंजिहान ॥ चस्मौंकीलागीगिरह, छूटैंछूटैंज्यान ॥ २६ ॥ क्याराजाक्यापात सा, क्यागरीबकंगाल ॥ लागेतैंछूटैंनहीं, नैननिवडोजंजाल॥२७॥ लगातीरजमधरछिपैं, छिपैंछिपाईसैफ ॥ नहिंउतरैंनांहींछिपैं, हैं फइस्ककीकैफ ॥ २८ ॥ अरेपियारेक्याकरौं, जाहिरहोहैंलाग ॥ क्यौंकरिदिलबारूदमैं, छिपैंइस्ककीआग ॥ २९ ॥ आतसलपटैं रागकी, पहुंचैंदिलबिचजाय ॥ दबीइस्कबारूदकी, भभकानिला गीलाय ॥ ३० ॥ उठैंआगिउरइस्ककी, जलैंऐसआराम ॥ चलैंन कैफीचस्मबिच, घुटैंधुयेंकेधाम ॥ ३१ ॥ गिरेरहैंभिजेरहैं, मुतल कभीसम्हलैंन ॥ हुस्नपियालापीयकैं, हुयेहैंमदवेनैंन ॥ ३२ ॥ गिरे तहांहीगिररहे, पलभीपलउघरैंन ॥ पूरेमदवेहुस्नके, मजनूंहीकेनै

न ॥ ३३ ॥ चलीकहानीषलकमैं, इस्ककमायाखूब ॥ मजनूंसेआसिकनहीं, लैलीसीमहबूब ॥ ३४ ॥ मजनूंकौंकहैंसबअसल, और नकलकेभाय ॥ कछुहोदिलमैंअसलतब, सकैंनकलभीलाय॥३५॥ नकलसांचसौंसरसकरि, करिलीनैंदिलदस्त ॥ हरीदासकेहालमैं, दरदिवालभीमस्त ॥ ३६ ॥ इस्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय, हरीदाससबकौंगया, चेटकरूपदिखाय ॥ ३७॥ इस्कहुस्नकीबातक्यौं, सकैंसुपनमैंआय ॥ दिलचस्मौंकेजुबांहोय, तब कछुकहैंसुनाय ॥ ३८ ॥ कहीजायकहांइस्ककी, कहैंनमानैंकोय॥ जानैंसोजानैंअरे, जिससिरबीतीहोय ॥ ३९ ॥ पलकनमानैंएकभी अबसकियेंबकबाद ॥षूबकमावैंइस्ककौं, तबकछुपावैंस्वाद ॥४०॥ मजाअजायबहुस्नका, चष्षैंचस्मजुबान ॥ इस्कचिमनरष्षैंसोई, आबादानसुजान ॥ ४१ ॥ चस्मौंकेचस्मांझरैं, झरनांआबफिराक ॥ इस्कचिमनतबसब्बरहैं, दिलजिमीनहोयपाक ॥ ४२ ॥ इस्कचिमनआबादकरि, इस्कचिमनकौंगाव ॥ नागरघरमहबूबकैं, इस्कचिमनमैंआव ॥ ४३ ॥ जिगरजष्मजारीजहां, नितलोहूकाकीच ॥ नागरआसिकलुटिरहे, इस्कचिमनकेबीच ॥ ४४ ॥ चलैंतेगनागरहरफ,इस्कतेजकीधार ॥ औरकटैंनहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवार ॥ ४५ ॥ इति श्रीइस्कचिमनसंपूर्ण ॥

## अथ छूटक दोहा मजलस मंडन लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ मोरपखउवाबांसुरी, बेसरिगुंजाहार ॥ ब्रजमोहन हियमैंबसौ, जाकोयहैंसिंगार ॥ १ ॥ नीलांबरसिरचंद्रिका, गडर

अंगअभिराम ॥ सोमेरेहियमैंबसो, मोहनमोहनभाम ॥ २ ॥ जसब्रजभूषनबिनअवन, नहिंसोभाकेत्रैन ॥ विनांलालरसनाकहा स्यामबरनबिनमैंन ॥ ३ ॥ सुभरेवाकेकुचनिपर, डीठिपरीहैं पैठि ॥ मनौंपरेवासिसतरू, रहेबराबरबैठि ॥ ४ ॥ अदभुतगतिक हितनवनैं, भईजुमोमतिबांझ ॥ चितयेतोमुषचंदमैं, घटादामि नीसांझ ॥ ५ ॥ बोलनिडोलनिहसनिमैं, रहैंसदाहैंसंग ॥ देषिफि दाहैनैंनये, अजबअदाहैंअंग ॥ ६ ॥ प्रेमगलीबिचरूपकी, षंवा षसीव्हैंपूर ॥ लोचनदुब्रलवापुरे, भयेजातहैंचूर ॥ ७ ॥ न्याजत्रै डसौंपैंडदें, निजरिनिजरिसौंजोरि ॥ अजबअदबसौंनिजरकरि, लीनैंप्रानमरोरि ॥ ८ ॥ उडिनजायनाजकनिपट, उरजउठेहैं पीन ॥ बनकबनेमनौंकनकके, मीरफरसधरिदीन ॥ ९ ॥ चलत नचतसीहसतसी, पलटतसीलैंतांन ॥ चातुरपातुरसीभई, तेरीभौं हसुजांन ॥ १० ॥ भीनैंबिमलकपोलपर, लगीछूटिलटसाफ ॥ षुसनवीसमुनसीमदन, लिष्योकाचपरकाफ ॥ ११ ॥ कुचकुरसी बिचउरबसी, ऊंचीलसीसुतोर ॥ पियमनपातिसाहीकरन, रचीअदा लतठौर ॥ १२ ॥ गउरसरीरादेषिछबि, भएअधीरालाल ॥ बीरा सीकटिलपटिरही, हीरावंदनमाल ॥ १३ ॥ आननभूपनआन कैं, ऐसीसोभादूर ॥ आइजेबजैसीजगी, पायजेबपयपूर ॥ १४ ॥ तनऊंचैंअंगियांतनी, सुंदरसाफतरास ॥ पियदृगबिहरनकौंकरी, मनमथफरसफरास॥१५॥ अंगनाअंगआंगीतनी, ओपीलालसुरंग॥ मनौंमैंनपतिसाहके, पेमापरेउतंग ॥ १६ ॥ चरनहरनमनिनहनिमैं, दीमेंहदीसुषदान ॥ बैठेपंकजदलनिमनौं, मंगलमंगलमान ॥ १७ ॥

रुचिररूपकोमलबिमल, सहजअरुनईपाइ ॥ मनुअनुरागीदृगनि को, रंगरह्योलपटाई ॥ १८ ॥ पाइनफूलींसांझसी, चित्रतजावक कीन ॥ मलिनभयेलपिनलिनमुष, सोतिनकेछविछीन ॥ १९ ॥ तनविवेकबगतरकस्यो, धरमढाललइवोट ॥ तऊलागिनिकसी परैं, चषचितवनिकीचोट ॥ २० ॥ घावअवैंनाहिंनैंकहूं जायरुधिर तनसूकि ॥ जवजूटैंफूटैंपरैं, नैंनाअनींअचूक ॥ २१ ॥ चाहभरी चितवनिचतुर, चितवतभामिनअंग ॥ उततैंअदभुतव्हैंपरत, भौंह भंगमैंरंग ॥ २२ ॥ चितवनिमैंझुकिझांकतैं, तियदृगदुतिदरसाय ॥ मनौंजालअनुरागके, पंजनअरुझेआय ॥ २३ ॥ अंतराहितवृतप कमहा, ऊपररूपेमीत ॥ सोइनलोइनमैंलही, मोइनकीसीरीत ॥ ॥ २४ ॥ कांनींकीनींकीलगैं, कांनींकीउनिहारि ॥ तुपकचलावत सैंनकी, एकनैंनकीनारि ॥ २५ ॥ चटकमटककरिटहरिया, ओ ढिलहिरियाचीर ॥ गईसहरियाकरिदृगनि, मारिमहरियातीर ॥२६॥ नैंनकथकवांचतकथा, मोहनसैंनासिलोक ॥ पीवतश्रोतानागरी, इहरसइकटकओक ॥ २७ ॥ टाटीऔझिलपारधी, करनहरनकौं लोट ॥ ज्यौंपांपियनकीओटसौं, अंपियनकरहीचोट ॥ २८ ॥ अच्छीआंपियांदच्छिनी, कच्छीमनमथस्वार ॥ नेजाफेरिकटा च्छिके, गईकरेजाफार ॥ २९ ॥ कवहुउठैंअधविचरहैं, निपटमु कैंबसलाज ॥ मनुमुरीदव्हैमैंनके, नैनयेकरतानिवाज ॥ ३० ॥ ढि गभौंहैंमहराबकैं, झुकिकरनैंननिवाज ॥ वरुनीहाथउठाइकैं, मांग तहैंकहाआज ॥३१॥ मुषमूंदैंहींहसतअति, करैंनदसनउद्योत ॥ बा हिरजाहिरहोयतो, दबैंजंवाहरजोत ॥ ३२ ॥ तनकनसौंहींहोतहैं,

नवलनेहदृगकोर ॥ घूंघटहीमैंरंगभरी, मुसकतिलजतिलजोर॥३३॥ बलगनभुवमदतरुनई, रुचिररूपअभिमान ॥ मचकनिमोरमजे जकी, मगजभरीमुसक्यान ॥ ३४ ॥ सिलमुदाजसेदृगनिसब, स्यामसोरझलकाय ॥ देषैंस्यामभयूरतब, द्रवीभूतव्हैजाय ॥ ३५ ॥ पहिलैंएआंपैंमिलत, तनमनअंपियनसंग ॥ हिलनमिलनकीचाह को, झलकतअंषियनरंग ॥ ३६ ॥ मिलेसजातीनैंनहासि, सैंनउर निउरजोर ॥ करतसलौनैंरूपकी, मिझमांनीदुहुंओर ॥ ३७ ॥ काचैंहितचितनवलतिय, सकैंनइकटकहेर ॥ भजैंलजैंदृगदबि उठैं, कबहुकरैंभटभेर ॥ ३८ ॥ इकटकरहिरहिजाहिदृग, दियैंदीठ मैंदीठ ॥ नेहपूररनसूरज्यौं, चलैंनदैकैंपीठ ॥ ३९ ॥ मोहिकहततू स्यामसौं, मिलीनतनमनबैन ॥ कहारह्योमिलिबोतबैं, मिलेनैंनसौं नैन ॥ ४० ॥ अरुननैंनषूंनीषरे, करतमैंनउतपात ॥ धुकिधुकिमो हीपैंचलैं, रुधिरलपेटेगात ॥ ४१ ॥ दृगपायकसेकरनगहि, हाव भावकिरपान ॥ घावजातकरिदावसौं, पावफुरतसोठान ॥ ४२ ॥ मनहरिमेरौलैंगयौ, तवनभयोचितचेत ॥ ज्यौंदिल्लीबाजारठग, जे बकतरधनलेत ॥ ४३ ॥ नावनासिकाबदनसर, बंसीगुंजघुमाव ॥ मोदृगउरझेमीनज्यौं, नहिंछुटिबेकौदाव ॥ ४४ ॥ अकलबिकलभ इप्रीतसौं, सकलसपिनकेमांझ ॥ नकलपरैंयातैंकरैं, नकलभोरअरु सांझ ॥ ४५ ॥ इतषैंचतमनकीलगन, उतपैंचतकुलकान ॥ पैंचापैं चीजातहैं, तूटेप्रानसुजान ॥ ४६ ॥ नेहअनलबहुदिनानिको, कछु केरह्योहियजागि ॥ पांतीदैफूंकैंकहा, दबीदबाईआगि ॥ ४७ ॥ रहतगगननहिंठहरिसासि, डोलनिहींकीबांनि ॥ फिरैंचकोरनिहेर

तो, दरसउपासिकजांनि ॥ ४८ ॥ प्रेमप्रबलसबतैंबडो, यातैंकौंन बिसाल ॥ जाहिनचायोजगतसब, तःहिनचायोबाल ॥ ४९ ॥ जापैंचितचिकनायनाहिं, ताकीरूपीवान ॥ कटीलगावतचटपटी, नकटीनकटीजांन ॥ ५० ॥ कजरौंहीअंषियानमैं, बस्योरहैंदिनरात ॥ प्रीतमप्यारोहेसषी, यातैंसांवलगात ॥ ५१ ॥ दीठहाथलीनैं रहत, नहिंछाडतदिनजाम ॥ मेरेभोरेहगनकौं, रसिकपिलौंना स्याम ॥ ५२ ॥ जबडरतैंचाहतकह्यो, तबमुषआवतमौंन ॥ नेहरूपनेहौंनकौं, बरनिसकैंकहिकौंन ॥ ५३ ॥ सपीलपीनंदलालजू, कहतबालहासिगाथ ॥ तुमजोयाकेरिपुभये, यातैंमींडतहाथ ॥ ५४ ॥ ताजिदबातधरिअंतराढिग, छाडिमानचलिसाथ ॥ अजबइलमलीनौं सषी, रहैंकलमानितहाथ ॥ ५५ ॥ गहगहाटभोवदनपर, मदनकें पायोगात ॥ रसनादसनानिदाबिकैं, तिरछैंतकिराहिजात ॥ ५६ ॥ चमकिचौंपमुखहसनिमैं, नैंनाझमाकिलजाय ॥ तमकिमैंनतनकंपि ह्वैं, यौंचितईअलसाय ॥ ५७ ॥ ओटतओठहिंश्रमितमुख, चिहुंटिलगीलटभीजि ॥ पुभेनैंननैंनानिमहीं, मुसकावतिहैंरीझि ॥ ५८ ॥ यहस्यौंलीनैंजातअब, मानदानदयोभाम ॥ आनदांनफिरिमदनकी, पांनदांनकिंहिंकाम ॥ ५९ ॥ मिलेमीतदोउजीतचित, भरि भुजदृढअंकवारि ॥ बैंनीकीदिसबीचितैं, हारगयोहैंहारि ॥ ६० ॥ पियदेषततियहारको, फूलगिरयोकहाभेव ॥ छातीछातीमिलनकी, देतहैंपातीदेव ॥ ६१ ॥ चौंपचतुरईचाहचित, लगैंनैंनतनमैंन ॥ इनगुनगनबिनतनबसैं, मजलसरंगबनैंन ॥ ६२ ॥ आलसनींदउचाटचित, क्रोधईरषालाज ॥ दबकानिहियमैंधकधकी, मेटतरंगस

माज ॥ ६३ ॥ महलआयनैंबिचपरी, समझिमांयनैसांच ॥ हसिमुषअंचरदैरही, छातिलग्योलपिकाच ॥ ६४ ॥ मसनंदक्यारीकामकी, प्यारीगुलरंगीन ॥ संकमानतसुपलेतमैं, प्रीतमभंवरप्रबीन ॥ ॥ ६५ ॥ अरीजोरछलपियकियो, लियोमोरछलबोल ॥ भौंरउडावनमिसछुवत, दूरहितैंजुकपोल ॥ ६६ तिलकछरीगहिकनककी, स्यौंरीतेजजसोल ॥ करतअनषइतमांमकौं, पियनहिंसकैंसकोल ॥ ६७ ॥ पीकदांनबीनांबनी, मीनांरंगसुढार ॥ याहूकौंलखिसुंदरी, प्रीतमदेतउगार ॥ ६८ बनिबैठीजगमगतदुति, पातुरचतुरसुहांति ॥ जोयधरीमनमथमनौं, सिभैंदानकीपांति ६९ ॥ गईताब्रमहताबकी, मुखदुतिउदितमनोज ॥ तनसुगंधउठिकैंदबैं, किस्तसोजकीओज ॥ ७० ॥ सबचौगांनचलाकसी, उमडीतांननिऔर ॥ आपआपकोलेतहैं, मनगैंदकबरजोर ॥ ७१ ॥ पैंच्योआवतनांहिनैं, मनमत्तंगबलवान ॥ ताहिमिंहीनप्रबीनकी, तानलेतहैंतान॥ ॥ ७२ ॥ ढीलेअंगआलसबलित, कछुकनवायैंनारि ॥ देतबुलावनसैंनसी, चातुरऊंघानिहारि ॥ ७३ ॥ तनकबातअनमिललगैं, रसमजलसकौंसाल ॥ देतमुंईहूदुषअमिल, मुषमृदंगकीषाल ॥ ७४ ॥ घूमैंसीसनमनघुमैं, सुनतउठौंहिंतांन ॥ ताकेतननांहिनविंधैं, अर्जुनहूकैबांन ॥ ७५ ॥ सिरअंचरपिसवाजके, छुटेबंधउरहार ॥ ढिगभौंहैमहरावकैं, मुखनैंचाकजदार ॥ ७६ ॥ पीवतहुकाहोंजपर, पियासाहितरसझूम ॥ बिरहअनलमनौंबरिबुझी, कढतधुवांकीधूम ॥ ॥ ७७ ॥ अललअंगभौंहैंचढी, नैंनछकौंहैंलाल ॥ अतिगतिलेतगमांनकी, नवगरबीलीबाल ॥ ७८ ॥ औरहुतियबीनानिकुसम, ज

तहैंवनकीओर ॥ पैंमेरेहींपेंडेंपरे, शुकपिकमोरचकोर ॥ ७९ ॥ आं गनगुलबाजीरची, पियसंगरंगरसाल ॥ बाजीज्यांबाजीकरैं, दृगवाजीमैंबाल ॥ ८० ॥ बुरेकहावैंआपतैं, बुरेकियेतैंकाम ॥ औरनकौं आंधेकरैं, यातैंआंधीनाम ॥ ८१ ॥ भलोबुरोनांहिनलखैं, सबही सौंभटभेर ॥ यातैंआंधीकहतहैं, हियमैंबडोअंधेर ॥ ८२ ॥ मोती मूंगापाटके, फूंदाफाबिनप्रकास ॥ हरिराखीअंखियांनकौं, करिराषीवसिपास ॥ ८३ ॥ पाईचितकीचातुरी, सुनौंकुंवरब्रजनाथ ॥ नीलपीतरंगपाटकी, राषीरापीहाथ ॥ ८४ ॥ हरिकरराषीलालरंग, धूंमकरतबडभाग ॥ झूंमिरहेमनौंकमलढिग, भंवरभरेअनुराग ॥ ॥ ८५ ॥ रंगरंगरापीरुचिर, रहीप्रियाकरझूल ॥ रूपलतालागेमनौं, बरनबरनकेफूल ॥ ८६ ॥ लैंरहिपांनापांनिमैं, लगैंननैंनानिमेष ॥ चित्रलिखीसीव्हैंरही, मित्रचित्रकोदेष ॥ ८७ ॥ पूरेजेबादन करैं, करैंअधूरेबाद ॥ बादजहांतोस्वादनाहिं, स्वादजहांनाहिंबाद ॥ ८८ ॥ कविकैंअरुतियनवलकैं, दोहाछविसरसात ॥ दोहासिर बैंदीदई, सुनिचतुरनियहबात ॥ ८९ ॥ बहोगुनगनतननमैंभरे, जो ननेहकोलेस ॥ नीकोऊफीकोलगैं, बिनांनृपतिज्यौंदेस ॥ ९० ॥ मनतनकौंकाटैंजबैं, कविताअरुकरवार ॥ जबगुनतिनमैंतीनव्हैं, सारधारअरुभार ॥ ९१ ॥ जिरमआंनरससरंगबिन, तजिकुडोलछंदभंग ॥ लीजैंकवितारतनमैं, संगढंगअरुरंग ॥ ९२ ॥ जद्यपिनीकीवस्तुहू, बिनओसरनसुहाय ॥ पोसमाहमैंचांदनी, कोऊनदेषैं जाय ॥ ९३ ॥ जोप्रभुफिरमानुषरचैं, तोबिनतीसुनिकांन ॥ बहोरिमोहिमतिदीजिये, रीझबावरीबान ॥ ९४ ॥ गुनहीतैंएकामके, गु

नहींतैंसनमान ॥ बिनगुनकाहूकामनहिं, मानुषगुडीकमान ॥९५॥ धनजोबनअरुरूपये, दिनांच्यारहीजांन ॥ जनमसंगातीहैंसदा, कृष्णकीरतनगांन ॥ ९६ ॥ तांनानिसौंमनतांनिकैं, प्राननिकरतअधीर ॥ बाजैंबनबंसीअरी, सुनिरीसुनिवहबीर ॥ ९७ ॥ यामुरलीतैं मोहनी, दीनीब्रजबगराय ॥ कौनओटदीजेदई, कीजैंकहाउपाय ॥ ॥ ९८ ॥ बहोंतरहींसमझायहौं, समझतनांहिंइहिंबेर ॥ बैंनसुनतचितरहतनांहिं, किहिंबिधिरापौंघेर ॥ ९९ ॥ दसनअंगुरियादैंरहैं, कबहुचलैंललचाय ॥ नागरसुनिसुनिमुरलिया, उठिउठिफिरिमुरछाय ॥ १०० ॥ लोकबडाईहैंजहां, लगैंभक्तिकौरंग ॥ तिनकैंमनबस कीजिये, तजिअधमनिकोसंग ॥ १०१ ॥ मनतूऊंचीठौरलगि, तहांनपहुंचैंऔर॥जहांबैठैंनीचिलगैं, सबऊंचीऊंचीठौर॥१०२॥किंहिं कीनौंफिरिआयकैं, जगदुषमांझनिबाह॥ जोझांक्योउततनैंकहू, चढिदिवालकहकाह॥१०३॥नागरन्यारीरीतजहां,नेहनृपतिकोराज ॥ लाजकियेंलाजनरहैं,लाजतजैंरहलाज॥१०४॥रागरूपअच्छरलगैं, जांनिपरैंरिझवारि॥सूरातबहींजांनिये, जबनिकसैंतरवार॥१०५॥मनगजरोकैंनाहिंरुक्यौ, गुरजनबचनानितीर॥लोकबेदकुलकांनिकी, तोरिचल्योजंजीर ॥ १०६ ॥ जिहिंमनमोहनरूपको, कीनौंमदरापांन ॥ भयोअयांनौंछिनकमैं, उडिगौसबैंसयांन ॥१०७॥ ज्यौं ज्यौंदृगनिकटाच्छिके, मनकैंलागतघाव ॥ त्यौंत्यौंरनछकसूर ज्यौं, धरतअगौंहैंपाव ॥ १०८ ॥ बिषरिपरचोमननिरापिकैं, नवनागरनंदनंद ॥ ज्यौंबालकलडबावरो, चहतापिलौनांचंद १०९॥ घूमैंसीसनमनघुमैं, रूपसहितलगितांन ॥ ताकेतननांहींबिधैं, अ

र्जुनहूकेबांन ॥ ११० ॥ नागरियानितततवैं, लपिलागतमुखमौन॥ भईजातमनकीकुगति, गतिबरनैंसोकौन ॥ १११॥ कहूंरहतकहूंवैं चलत, डोलतकाहूओर॥ प्यारीजूकेंहाथहैं, लालगुडीकीडोर११२ रूपभारनहिंसहिसकत, बीततमहाअचैंन ॥ रीझरोगदुपदूबरे,द वेजातहैंनैंन ॥ ११३ ॥ ज्यौंबंदूकदारूदवैं, सहसगुनोव्हैंगौंन ॥ त्यौंदृगलाजदबेनकी, चोटसहारैंकौंन ॥ ११४ ॥ दोहा ॥ भगी कबिनकीचतुरई, लगीरूपकीलाय ॥ रसनाकोवसनाचलैं, नैंनपु कारैंहाय ॥ ११५ ॥ अंगअंगरूपअनूपमैं, लपटीआनिअदाय ॥ रसनाकोबसनाचलैंनैंनपुकारैंहाय ॥ ११६ ॥ समझिसराहकसुघर मनि, चाहककाव्यसुठौंन ॥ हरिगुनगाहकआपाविन, प्रीतनिबाह ककौंन ॥ ११७ ॥ ईश्वरचाहैंसोकरैं, काढिसकैंकोव्यंग ॥ महादे वसबजगतपैं, प्रगटपुजावतालिंग ॥११८॥ छोटीचंचलरंगसरस, रहैं चितौंनाचितचाह ॥ दृसीउत्तमलालमुनि, वाहवाहफिरवाह॥११९॥ सर्वोपरव्रजचंदव्रज, व्रजगोपीव्रजगोप॥ जहांतहांजगमगरही,व्रजा नंदकीओप ॥१२०॥ मंगलवपुव्रजलोगनिति, नितिव्रजमंगलचार॥ नितिदुलहमंगलमई,श्रीव्रजइंद्रकुंवार॥१२१॥औरठौरकीआसतैं,हो यजगतमेंहास॥आसनरापूंऔरकी, व्रजबासनिकीआस॥१२२॥व्रज मेंसुखकोलूटनर, लूटतभरिअनुराग॥यहलूटलूटनसकैं, ताकेबडेअ भाग ॥ १२३ ॥ (रासअनुक्रमके दोहा)॥ नागरन्यारीरीतजहां, नेहनृपतिकोराज ॥ लाजकियैंलाजनरहैं, लाजतजैंरहैंलाज ॥ ॥ १ ॥ नागरियागतिलेततव, प्यारीसुलपसुधंग ॥ पियकेमन लोचनफिरैं, अरुझेपायनिसंग ॥ २ ॥ नागरियाप्यारीनचत, पि

यमनउपजतसंक ॥ लचकेजातहैंप्रानउत,जवइतलचकतलंक॥३॥ नागरियादीसतदोऊ, वनैंबंधअपार ॥ सूरैंरनमेंजानियें, रासमां हिरिझवार ॥ ४ ॥ नागरियानिर्ततवैं,लषिलागतपुपमौंन ॥ भई जातमनकीकुगति, गतिवरनैंसोकौंन ॥ ५ नागरसैंननिसैनमिलि, वनीजुनैंननिनैंन ॥ वनतवनतऐसीवनी, कहतवनैंनहिवैंन ॥ ६ ॥

## अथ अरिल्लाष्टक लिष्यते ॥

टौंनासोपढिदीनठटौंनानंदकैं ॥ रह्योपरतनहिंदियेंहगानिआनं दकैं ॥ जोकछुत्रोतैंमोहिसुकहतिबनैंनहैं ॥ इतघरघेरोहोइलगेउत नैंनहैं ॥ १ ॥ घरीघरीघुटिप्रानउसासनिजातहैं ॥ अरीजरीयहप्री तिभरीनहिंजातहैं ॥ घरबनपरतनचैंनगईभजिनींदहैं ॥ सासछुटा वतबासवीरवहनींदहैं ॥ २ ॥ कन्हूंनिकसिनहिंसकतगेहकेकौंनतैं॥ नेहआपदासहौंकहैंदुषकौंनतैं॥ उरअंतरकेमांझनिरंतरपीरहैं॥अचि रजकीयहबातनपावतपीरहैं॥३॥मिलीछैलकौंबालगैलजहांसांकरी॥ घूंघटलाजकपाटलगीकरसांकरी ॥ बलनिउघारतबदनरंगदुहूंधां रह्यो ॥ व्हैगयोरूपउजासस्यामइकटकरह्यो ॥ ४ ॥ दूरिरहोजिन छुवोअवैंइतनायहौं ॥ लियोचहतरसबराहिंबाहगाहिनायहौं ॥ भूलि नेहनहिंकरूंयहैंजियआंवहीं ॥ तुमलैंजानतचित्तनदेबोआंवहीं ५॥ तुमसौंलागेनैंननसूझतऔरहैं ॥ तुमस्वारथरसमगनलगनकछुऔ रहैं ॥ तुमछिनदेषैंविनांहगनिअंसुवापरैं ॥ तुमसौंअटकैंलालतिन्हैं कलक्योंपरैं ॥ ६ ॥ सुधिनलेतहोलालसुक्योंफिरमोहिये ॥ यहैंअं देसोसदारहतहैंमोहियैं ॥ छिनहूविसरतनांहिंहमैंनिसमोरई ॥ कहर

करतहैंहायतिहारीभोरई ॥ ७ ॥ लपिसुधिभूलतभूलतउरउपरैंनियां ॥ अजूस्यामहमहरीरंगकीरैंनियां ॥ लालबिहारीआपमोहितन पीतकी ॥ नागरीदासनजायकहीगतिपीतकी ॥ ८ ॥

## अथ सदाकीमांझैं लिष्यते ॥

इस्कछकीअंषियांअलसौंहींव्हैंइकटकमुसक्यावैं । धीरजधरम सरमकोकैसोसुधिकोसुधिबिसरावैं ॥ भायभरीभौंहैंमदमातीइतराती फिरजावैं । नागरीदासरौंमरौंमतबहायहायरटलावैं॥१॥छरीछबीली गहैंहाथमैंअरीछैलइतआयो । गौंहनिमैंकाहूमिसिफिरिकैंकछुमोह नमुसकायो ॥ नैंननिसौंउरझायनैंनउंहिमनसौंमनउरझायो । अ बनागरिसुरझावतिहौंचितसुरझतनाहिंसुरझायो ॥ २ ॥ सबमैंग्वाल सांवलाअच्छाभायगयामुझकौंभी । दोइचस्मौंकोइऐसादेखाकस्मौं हैंतुझकौंभी ॥ करीनिगाहैंअजबइस्कसौंतबहिंइधरमुहफेरा । नाग रीदासखडेसबदेखेंचोरिलियादिलमेरा ॥ ३ ॥ सौंहनामुपसिरसुरप लपेटाधरैंमोरकीपांपैं । गरबभरीमदरूपअमानीअजबजरबकीआं पैं ॥ हसनैंमैंघाइलकरिडारीदरदहमेसांसहिये । नागरीदाससरमकी वातैंअबक्याआगैंकाहिये ॥ ४ ॥ निधरकप्रानइस्करनसूरेमुतलक नांहिडरांहैं । वारकरैंमहबूबषूबजबहोयसुमारगिराहैं ॥ मुसकनचित वनसौंघायलव्हैंमायलपरेकराहैं । नागरीदासवाहवाहकहिलगीचो टसराहैं ॥ ५ ॥ जिसकौंबढीफिराकफिकरतिसऐसनहींदिनआनी । नागरियालगिचस्मचोटफिरऔरनचौटसुहानी ॥ सरईबांननलगी लगौंहींसुनिकैंइस्ककहानी । फहमिंदाईजतनाहिंपाईमजलसतहां

दिवानी ॥ ६ ॥ सेतडोरियेकादुपटासिरखुलेवारबिथरैंहैं । सूंघत फूलगुलाबसहजदृगझुकिझुकिजातछकैंहैं ॥ नेहसनौंचितवनचितवतहैंमोहनसोहनसौंहैं । नागरिदासछुवावतछविसौंफूलतैंअधरहसौंहैं ॥ ७ ॥ जेदिवारकहकाहकेबासीआयपरेहैंबाहिर । मुषमैंमौननीरनैंननैंमैंकुछनकरिसकैंजाहिर ॥ जकिथकिरहैंजरदतनजडज्यौंबूझिबूझिसबहारे । नागरिदासऔरलोगौंकेवेकिसकामाविचारे ॥ ८ ॥ गायरोयजेसकैंनकबहीदुपउसासकैंसंग । आयगयेहैंजगकुपेचमैंपरिगयेकैदफरंग ॥ भईजग्यपसुदसादुहेलीकहनिमात्ररह्योअंग । नागरियाकाहिबेकौंमनकीमनकीगतिभइपंग ॥ ९ ॥ गांवनिरोवनिमौंनाहिमैंहैंमौंनाहिंमांझसराहनि । रोकतउर्धउसासमौनमैंयहदुषकठिननिबाहनि ॥ बुरेबिजातीनिकटकाठसेलगेरहैंहियदाहनि । नागरसुखसागरकिनमेटोयहअबदुषअवगाहनि ॥ १० ॥

## अथ बरषा रितुकी मांझ लिष्यते ॥

ठाढेदोउअटाअपअपनीघटाजुरीचहुंघांतैं ॥ गावतरागमलारपरसपरआवतश्रवनसुहांतैं ॥ चिहुंटेपटपानपतनउघरेनेहमेहसरसांतैं ॥ नागरियानागरलषिउरझेदृगनहिंटरततहांतैं ॥ भीजतदोऊएकछतनांतरलगिलपटायरहेहैं ॥ मधुकरमत्तबासरसभूलेलगिलपटायरहेहैं ॥ गउरस्यामतननीलपीतपटलगिलपटायरहेहैं ॥ नागरियातबतैंइननैंननिलगिलपटायरहेहैं ॥ २ ॥ रमकतरंगहिंडोरैंमोहनमुरलीमधुरबजावैं ॥ सुरमलारसुनिसुनिचहुंघांतैंबदराघिरिघिरिआवैं ॥ मुकटझलकबनमालहिलोरतपीतांबरफहरावैं ॥ नागरियातिं

हिंछिनब्रजबालाअंकभरानिललचावैं ॥ ३ ॥ रसघातनिद्रुमपातानि कैंतरबातनिमैंडरिझेहैं ॥ बरसतमेहनेहरसदंपततउनतहांसुरिझेहैं ॥ भीजेकचकपोलचहुंटेलषिरातिपतिमनमुरिझेहैं ॥ नागरियानागरचि तयेंयौंमनलोयनजुरिझेहैं ॥ ४ ॥ स्यामाजूझूलतझूलेपरमोहनकर तषवासी ॥ लियेंमोरछलषरेजमींपरटहलचतुरसुषरासी ॥ वूंदपरैं तांनतपीतांबरसोभितव्याहसभासी ॥ नागरसषीनिरषरहिइकटक कोतककुंजविलासी ॥ ५ ॥ जरीजवाहिरजुगजेहराढिगलांवनलगी किनारी ॥ निकसीहुतीअबहिइतव्हैंकैंपहरिकसूंभीसारी ॥ फिरी वहुरिवनवनतैंभीजतओढेंकामरिकारी ॥ मैंनागरिजांन्यौंजान्यौंज हांव्हैंआईयहप्यारी ॥ ६ ॥

## अथ होरीकी मांझैं लिष्यते ॥

केसरिरंगरंगीपगियांमुषजोबनजोतिषुलीहैं ॥ तैसियभालगुला ललालअलकैंझुकिझूंमिझुलीहैं ॥ भौंहकसीमृदुहसीउरबसीमैंननिसैं नतुलीहैं ॥ नागरिदासनवलजुवतिनकीमनसादेषिढुलीहैं ॥ १ ॥ चलतललितगतिलैंलैंदंपतिअद्भुतनृत्यरचीहैं ॥ बीननवीनपगानिनू पुरधुनिसुलफसुधंगसचीहैं ॥ आयआयभरभरपलटतछविसौंआति धूंममचीहैं ॥ नागरियालषिमोजहोजपरमनमथफोजलचीहैं ॥ २ ॥ छविसौंछैलछोरतपिचकारीप्यारीओटबचावैं ॥ दुहुंदिसचतुरषेलर सनायकचाचरिचहोलमचावैं ॥ हावभावअरुदुरनिमुरनिकोरंगक होक्यौंजावैं ॥ नागरियानैंननिकोदेषीबैंनानिमैंनहिंआवैं॥३॥छुटी अलकभुवबंकजुटीउरमोतिनमालतुटीहैं ॥ चलिअंचलचंचलनैंनानि

गतिपियमतिदेषिलुटीहैं ॥ भलीगुलालवालषुलिपेलतश्रांगनकुंज कुटीहैं ॥ नागरिनवलकेलिअलबेलीरतिजियदेषिघुटीहैं ॥ ४ ॥ दिठ्ठाग्वारगारिसुरमिठ्ठागावतइस्कलपेटा ॥ मदअलसौंहींनैनसैंनदैं मारतमैंनचपेटा ॥ पियगोरीदाछैलहोरीदासुंदरअंगअंगेटा॥ नागरि दासदिवानीहुइयांदेषिअजबमहरेटा ॥५॥ इतिहोरीकीमांझैंसंपूर्ण ॥

## अथ सरदकी मांझ ॥

ठहेदोउदर्पनमंडलपराबिमलकलपतरुछहियां ॥ झुकिझुकिकै प्रतिबिंबनिहारतछबिसौंदैगरबाहियां॥निरषिरूपनिजसंपतिदंपतिरी झतहैंमनमाहियां।रासरसिकनागरनागरितहांचमकिचंद्रिकारहियां१

## श्रीठाकुरके जन्म उछवके कवित्त ॥

हरीभईभूमिद्रुमफूलिफलझूमिआयेफरहरमौरनचैंश्रानंदभोभारो हैं ॥ नानामणिधाततेगिरिंदनिप्रगटकीनीगायद्रवैंदूधतनभारबढ्यो न्यारोहैं ॥ गोपीगोपनागरयेकुमदसेफूलेफिरैंगोकुलकोचंद्रमांसब नलग्योप्यारोहैं ॥ सांचेहैंमरीचैंसुपसंपदाश्रमंदआजनंदकैंदुलारो भयोव्रजउजियारोहैं ॥ १ ॥ सुतहोतजसुधाकैंआनंदउदोतभयो नंदहूकैंश्रानंदउठ्यौहैंउफनायकैं ॥ नागरसुगोपगोपीआनंदभरीहैं गावैंबनमोरमृगरहेश्रानंदलुभायकैं ॥ व्रजभूमिजमुनांगोवर्द्धनश्रीवृं दावनसोभादेतश्रानंदमैंआनंदसमायकैं ॥ स्यामसुषधामअभिराम कामहरैंमनरूपधरैंश्रानंदप्रगटभयोश्रायकैं ॥ २ ॥ सुंदरसांवरो बालकहोतनचेसबनागररंगरचाये ॥ जेजनजाचकतेउठिनाचतदे तवेलेतनवेलरचाये ॥ नाचतगोपिकागोपभरेहरदीदधिदूधतैंपेलम

चाये ॥ ग्वायेबधायेजसोमतिपैंमिलिआंगनमैंगहिनंदनचाये ॥ ३ ॥ गरबीलेडोलैंगोपओपअतिआनंदकीव्रजपतिजूकैबेलिसुकृतकीफलीहैं॥ पुत्रउदैहेतहेमरतनअनेकलच्छिभिच्छुकनदेतदेहदारिदकीदलीहैं॥ नागरकुसमदामराजतसदनसोभातोरनपताकाद्दारसोहैंभांतिभलीहैं ॥ नंदघरआवतहैंगावतबधाईअलीगोकुलकीगलीगलीआजरंगरलीहैं ॥४॥ जसुदाकैंसुतभयोसुनिसुनिगोपिनिकीबाढीहैंचहलचहूओरनिकलीनकी॥ टूटीमोतीमालउरअंचरउसरगयेछूटेकेसपाससोभाकुसमकलीनकी ॥ आननअमितभालकुंकुमतिलकफैलेछबिबरनीनजातचंचलचलीनकी ॥ नागरमगनमनतनकीसह्मारभूलीगोकुलगलीगलीनभीरयौंअलीनकी ॥ ५ ॥ नंदगोपराजसुनऔरैंव्रजओपआजतेरैंपुत्रभयोभैयापुंन्यफलजापको ॥ ब्रह्मरिषद्वारबहोदेवताविमाननिपैंछायोसुरबेदगांनभेदकेअलापको ॥ घरघरसंपदाअपारबढीदेषियतहमपैंनकीनौंजातबर्ननप्रतापको ॥ नागरयौंब्रेरबेरग्वारकहैंटेरटेरतेरोघरमांनौंपरमेसुरकेबापको ॥ ६ ॥ एहोव्रजराजएकभेषधारीकोऊआजपुत्रकोजनमसुनिआयोतेरैंभौंनहैं ॥ मोतीमणिमालपटकंचननचाहैंरंचहयगयभूमिग्रामलेतहमसौंनहैं ॥ नागरअहोटैनांहिंव्रजरजलोटैंवहिअलषलष्योहैयोंउचारैंतजिमौंनहैं ॥ बालककेपायलैलैंजटासौंछुवायनाचैंजोगीतीनआंषिकोकहांतैंआयोकौनहैं ॥ ७ ॥ सवैया ॥ नंदकैंपुत्रभयोयौंआनंदकीआंनिअचांनकबातसुनाई ॥ फूलउठेरसझूलसबैंसुउमंगनिअंगसह्मारिभुलाई ॥ नागरमंगलमादिककीनरनारिनकेमनमैंछकिछाई ॥ लायचलेरटएकहीएकबधाईबधाईबधाईबधाई ॥ ८ ॥

## श्रीठकुरानीजीके जनमउछवके कवित्त ॥

राधाकैंजनमआजरावरअगाधाओपहोतग ानमंगलमृदंगतारपं
जरी॥ औरैंछबिढरेनरनारीडोलैंमोदभरेभानुसुत ासुनिकैंप्रफूलेमुषकं
जरी ॥ कीरतिकीकीरातिकिकाढीचंदचीरतज्य ाँउपमांअमलकोलैं
डारीगतिगंजरी ॥ सोभाव्रजनागरीप्रकटभई रूपगोभाकैधौंनंदनं
दनकेआनंदकीमंजरी ॥ १ ॥ कीरतिकैकन्या होतमाचीदधिकादौं
अतिमानौंलोपितीरकौंचल्योसमुद्रछीरको ॥ बेदधुनिगांनधुनिना
गरनिसांनधुनिब्रह्मलोकगईपुरभेदिसुनांसीरको ॥ मोतिनकैंभारभ
रीमोतिनकेहारदेतजुरीहैंरमासीगोपीपारहैंनभी रको ॥ देवताबिमा
ननबिलोकिकहैंबारबारधन्यआजअवनिमैंभव नअहीरको ॥ २ ॥
काननकुंजसबैंउमगेउमगीजमुनांसुनिकैंसलत ारी ॥ यौंउमगीअव
नीव्रनकीरचिहैंमिलिरासानिसाउजियारी ॥ न ागारिगोपीसबैंउमगी
फिरैंआनंदआननवोपसंवारी ॥ कीरतिकैंभई कन्याअनूपममोहन
कोमनमोहनहारी ॥ ३ ॥ उठिनागरनंदजसो मतिमोदसौंधायेबधा
येलैंगोकुलसैं ॥ अतिआनंदअंगनिवोपचढी बालिगोपनदीजियेका
तुलसैं ॥ व्रजमैंनरनारिंउछाहछकेछबिनाचत गावतमंजुलसैं ॥ वृ
षभानकेकन्याभईसुनिकैंललनांपलनांमैंहसैंहु लसैं ॥ ४ ॥ चौगुनौं
चावबढ्योव्रजमैंयहकीरतकन्याअनूपमजाई ॥ चौगुनेदानबिधान
औगांनचहूंदिसचौगुनीयेधुनिछाई ॥ नागरपु त्रभयेहुतैंचौगुनीमोद
भरीहैंजसोमतमाई ॥ चौगुनीनाचतगोपीआन नंदसौंचौगुनिनंदकैंवा
जैंबधाई ॥ ५ ॥ भईवृषभानजूकैंरूपकीनिद ानसुताबाजतानिसांन

धुनिछाईचहूंकोदमैं ॥ देवताअकासवृष्टिफूलनिकीकरैंठाढेभूमिव्र जवासीजुरेभरेमहामोदमैं ॥ आयेनंदरायलैंबधायेसंगरनवासनाग रियामिलिरानीरानीयौंबिनोदमैं ॥ कीरतनैंललीलैंदईहैंगोदजसुधा कैंजसुधानैंलालदयोकीरतकीगोदमैं ॥ ६ ॥ ललीकैंजन्मदिनबर सांनैंसोभाभलीमहलनिउतंगधुजाव्यौंमपरसतुहैं ॥ दामिनीघटांनि मैंअटांनिमैंज्यौंभामनीहैंइनकीसुदेहद्युतिदूनीदरसतुहैं ॥ भादौंघन घोरनितैंपौरिवृषभानजूकीनागरानिसांनानिकोघोपसरसतुहैं ॥ इंद्र अमरावतीकोनीरबरसतह्यांभयानेकौंमहिंद्रहीरचीरबरसतुहैं ॥ ७ ॥ कवित्त ॥ कीरतकैंकन्याभईसुनिसुनिव्रजबधूलैलैभेटधाईसबआनं दबहवही ॥ थारउरहारनिकैंभारबेसह्मारपगधरैंडिगुलातलगेलंक निलहलही ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैंपूररनवासनागरसुबासअंगअत रमहमही ॥ रूपकीघटासीकरिगानकीगरजउठीवाजिपरीसिंघद्वार नौवतगहगही ॥ ८ ॥ राधाकोजनमसुनिआनंदअगाधारानीजसुम तआईवेगदौरिदरबरहैं ॥ कीरतकैंआंगनभवनभीरलछमीसीलछन जुरीहैंगोपीउछवकौंभरहैं ॥ फूलनिकेहारओसुगंधनिकेउदगारवट तकपूरपाननागरअतरहैं ॥ नितगांनतांनकेबिधानसनमांनहोतआ जसपौरावारिमैंलाग्योरंगझरहैं ॥ ९ ॥ लपिकैंवृषभानसुताकौंजसो मतिलायलईहियमोदमहा ॥ मुषचूंमकैंचांपिसुवायदईभईमोहमई अबकैसीअहा ॥ जियमैंइकआवैंअचंभोयहैंकहिनागरीयाबलिमो सौंहहा ॥ अरीउंचैंनिहारिकैंझोरीपसारिनजांनियेरानीजूमांग्योक हा ॥ १० ॥ कीरतदारानीवृषभानआदिगोपगोपीकैसैंधन्यधन्य व्हैकैंजगजसपावते ॥ कौनतपकरतोयाव्रजबासकारिबेकौंकौनबः

कुंठहूकेसुपविसरावते ॥ नागरियाराधेजूप्रगटजोनहौंतीतोबस्याम परकामहीकेविपतीकहावते ॥ छायजातीजडताबिलायजातेकबि सबजरिजातोरसओरसिककहागावते ॥ ११ ॥ राधेकैंजनमसमैंगो पिकासमूहमिलिबैठीवृषभांनभौनबातेंवतरावेंहैं ॥ कौंनहैंचतुर्मुषसो भिक्षुकनिमांहिंठाढोकौंनजटाधारीयहवीनाहिंबजावेंहैं ॥ कौंनतीन आंषनिकोबाघंबरओढिआयोकौंनच्यारबालकरीनागरसुहावेंहैं ॥ कौंनबदरांनिमैंवेदुंदभीबजावैंगावैंकौंनएकहांतेंदैयाफूलबरसावेंहैं॥ ॥ कबित्त ॥ जनमसुताकैंहोतताकैंमणिमोतिनिकीभिक्षुकनिदैंनल च्छलागीतकसतहैं ॥ बिसमैंबरूथहौंहिंदेवादिगपालनिकेऐसीमौज फौंबकोऊकटिनकसतहैं ॥ राजानिकेराजामहाराजावृषभानजूके दानकीउमंडनिकुमेरअकसतहैं ॥ रथमारतंडगहेंसुंडबलबंडऐसेना गरवितुंडनिकेझुंडबकसतहैं ॥ १३ ॥ ॥ सवैयो ॥ कैसीअलोकि कभानजूकैंप्रगटीनिधिसुकृतपुंजाकियाकी ॥ देवताओनरनागनिकी सबकन्याश्रीराधापैंवारिछियाकी ॥ कीरतअंकमेंअंचरओटदिपैंदुति नागरिठौराहियाकी ॥ जैसैंबयारमैंढांपिलईझलकैंमनुनिर्मलदीय दियाकी ॥ १४ ॥ ॥ कवित्त ॥ कीरतिकेकीरतप्रगटभईराधेश्रा जजितिततछाईहैंबधाईसुपदाइयै ॥ जगमागेउठचोब्रजबढीओप आनंदकीबरनीनजातसोभाआतिसरसाइयै ॥ भामिनीजुरीहैंभौंन आंगनमैंगोपगनभीरवृषभांनजूकैंनागरसुहाइयै ॥ द्वारैंदेवरिषि ठाढेकहैंपायछीवनिकौंजीवनिकेजीवनिकीजीवनिदिपाइयैं ॥ १५॥ ॥ सवईयौ ॥ कन्याभईवृषभानजूकैंउरअमृतधारिकरूपविसे षा ॥ फूलेकमोदनिज्यौंकुलदेषिसुलागतहैंनाहिंनैननिमेषा ॥ कीर

तकूपदिसातैंउदैंजाकोसीतलतेजलसैंलघुवेपा ॥ नागरियाजगवंदनकौंप्रगटीमनुहैंजकेचंदकीरेपा ॥ १६ ॥ कबित्त ॥ मांचीदधकादौंबृषभानजूकैंसुताहोतभयेनरनारिअंगआनंदअगमगे ॥ नेकनसह्मारतनबसनरसनछूटैंछूटैंनांहिपेलतमैंरंगनिरगमगे ॥ बीरनिकेबृंदअरुहीरनिकेहारनगनागरागिरेहैंवेप्रस्वेदानिसगमगे ॥ जैसैंनभमंडलमैंतरइनकीसोभाऐसैंपरेब्रजमंडलमैंभूपनजगमगे ॥ १७ ॥

## अथ सांझीके कबित्त ॥

रंगसरसांनैंबरसांनैंबनवागस्यामापेलैंसांझीसांझबहोसाथनिसिंगारकैं ॥ नूपरनिनादपूररह्योहैद्रुमनिमांझजहांतहांलेतकलीकुसमउतारिकैं ॥ सांवरीनवेलीवालनीलमनिबेलीसीअकेलीफिरैंवांहांजोरीसंगसुकुवांरिकैं ॥ डारिहिनवावैंमिलिबीनैंफूलपावैंफलनागरियावारैंमनकोतिकनिहारिकैं ॥ १ ॥ सोहैंमुपकमलपैंभौंहैंलटभृंगपांतिनैंनलमछौंहैंकलगाकीजनुपपियां ॥ नासिकासरूंसीक्यारीअधरदुपहरियाकीमुसकनिमंदमकरंदसीमैंलापियां ॥ प्रीतसांझीकाजकीनीकामकाछिछबिआछीऔरसाछीकोहैताकीसाछीसबसापियां ॥ फूलीबयसंधिसांझराधारूपबागमांझडोलैंआजफूलभरीनागरकीअंषियां ॥ २ ॥ फूलनकेउरहारहमेलालियेंकरपंकजफूलाफिरावैं ॥ फूलनकीनवलासनिसौंकईफूलनकीगुहिगैंदचलावैं ॥ फूलहियेंबिचपीयलियेंअलिनागररंगअलेलसौंगावैं ॥ मेलिकैंअंसभुजासुपझेलयेंपेलकैंसांझीयैंस्यांमाजूआवैं ॥ ३ ॥ सांझीफूललैंनसुषदैंनमननैननिकौंस्यामाजूसाथजूथजुवतिनकेधाएहैं ॥ चलतअधिकछबि

छाजतछबीलनिरंगीलनिकेरंगरंगपटफहराएहैं ॥ नागरिनिसांनना दनूपुरसमूहबाजैंअंगकीसुबासनिभ्रमरछूटआएहैं ॥ वृंदावनबीच धायधरतउठीयौंगायमानौंधनस्यामैंजानिमोरकुहकाएहैं ॥ ४ ॥

## अथ सांझीफूलबीननिसमैं संवाद अनुक्रम लिष्यते॥

॥ सांझीकेकवित्त ॥ अथ सषीनिप्रति नंदकुमार बचन कवित्त ॥

ऐसेयासघनबनानिर्जनकेमांहिंमैंतोआवतीयजानीनांहिंजानीज बगाईहो ॥ औरहैंनसंगकोऊएकजातजुवतीहोविनहींबिचारैंजोर जोबनकैंधाईहो ॥ अबफिरजाहुआपआपकैंभवनसवठौरसुइको सौंफिरेमदनदुहाईहो ॥ कैंधौंतुमनागरिहोहमैंसमझायकहौकौंनकी पठाईइहांकौंनकाजआईहो ॥ १ ॥ उत्तर ॥ सषी बचन कवित्त ॥ फूलनिकेबींनवेकौंआईइंहिंबनमिलिबूझिबेकोहियैंऐसीधरनिबक्यौं धरी ॥ टेढीयेचितौंनदीसैंटेढीटेढीबातैंकहोटेढेह्वैंकैंठाढेछलीछैलरो पिकैंछरी ॥ उचितनहींह्यांअकेलेरहोजुवतिनिमैंनागरनिकोसिजाहु याहीसांकरीगरी ॥ नांतोअनबोलेरहोछांडिमगमेरहमआवैंगीहजा रवेरतुमकौंकहापरी ॥ २ ॥ उत्तर नंदकुमार वचन कवित्त ॥ ह महींकौंचिंताइंहिंबनकीरहतनितिनितिरषवारेरहैंलाग्योचितचेतुहैं ॥ हमआठौंजामसेवैंकामनृपधामयहसहैंवनघामअतितातैंहियहेतुहैं ॥ हमहीतैंगहबरहरचोहैंरह्योहैंमहानागरियाप्यारोमीनकेतरसषेतुहैं ॥ हमहीकौंदेकैंकछुलैंनौंहैंसुलेहुयौंपरायेफलफूलनिकौंकौंनलैंनदेतु हैं॥उत्तर सषी वचन कवित्त ॥ कहाहैंपरायोसबदीसतसोराधेहीको विनहीबिचारैंझूठेबचनउचारेजू ॥ राधेहीकीभूमियहराधेहीकेपगसू

गराधेहीकोनांवरटैंसांझश्रौसंवारेजू॥ राधेहीकेसरवरयेतरवरहैंराधेके राधेकेफूलफलनागरानिहारेजू॥ राधेकीदुहाईफिरैंराधेहीकोवृंदावन तुमकौंनलालाबीचइटकनिहारेजू ॥४॥ उत्तर नंद कुमारबचन कबित्त॥ राधेजूकेहमहीहैंहमैंअपनायलेहुज्यौंबमुषसुधाधरदेपिदेपि जीजियैं ॥ निकटबुलायमोहिपायनिलगायरापोसपीहोकुंवरिजूकी पुनसिनपीजियैं ॥ हारेतुमश्रागैंवनद्रुमएतिहारेअवनागरियादुहूं श्रौररसवनभीजियैं ॥ नीकैंसनमानकछूकरिरपवारनकोपाछैंवहो फूलनिसौंफूलनिकौंलीजियैं॥ ५॥ उत्तर सपीवचन कवित्वं ॥ फूलहैंहमारेहमलैंहगींवतुम्हैंकहाश्रैपैंअैसैंटोकिबोनकीजैंबालिहारी जू ॥ दीनताकरतव्रजराजकेकुंवर अवपहिलैंजेवातैंकहीवेसव बिसारीजू ॥ नीकेहीहोनागरहोबिमनेनहोहुतातैंव्हैंकारेनिसं कदिसआइयेहमारीजू ॥ बनकेबिहारीवारीलीजैंद्रुमरखवारी लालयेतिहारीमनुहारनिसौंहारीजू ॥ ६ ॥ कबिवचन ॥ ॥ साहससम्हारिस्यामश्रागैंआयेप्यारीजूकैंरूपकोअतुलभारपरत नसह्योहैं ॥ बीचनीलअंवरकैंबदनमयंकलषिचकतचितौंनगैं चकोरव्रतलह्योहैं ॥ पायडिगुलातजातपीतपटछूटगयोनागरपरत हियेधीरजनगह्योहैं ॥ पगेरूपचैंनानिमैंबैंननफुरत्तमनालियोचहैंहाथ मनहाथमैंनरह्योहैं ॥ ७ ॥ फूलनिकौंगईउतसषीमिलिजहांत हांइतकौंरंगीलेकछुश्रौरैंढारमैंढरे ॥ रसिकरसालबालदयोचाहैंउर मालजबनंदलालहसिआगैंहाथलैंकरे ॥ उरझौंचितौंनकंपस्वेदसुर भंगभयेनागरियानागरअनंगरंगसौंभरे ॥ राधेजूदयोहैंहारमोति नकोमोहनकूंमोहनजूहोरहोयराधेकेगरैंपरे ॥ ८ ॥ राधमनमोहन

अगाधारूपरंगभरेभुजभरिझोलिकामकेलिसरसायदी ॥ षगशुकसारिकादिजाकिथकिकरिडारेनूपुरओकिंकिनीकीझनकसुनायदी ॥ दूरहीहटकराषीकुंजद्वारअलिसैंनीस्वेदअंगमिलीलैंसुबासपहुंचायदी ॥ हुतीललितादिजेलतानवोटनागरितेदेंषनसकतप्रेमछकनिछकायदी ॥ ९ ॥ जेतेद्रुमकुंजनिकलपवृच्छएप्रतच्छदुहुनकोंवांछितदईहैंनिधिभलियां ॥ स्यामास्यामकरैंकेलिआनंदअलेलमत्तबेलनयेनेहकीअछेहफूलफलियां ॥ दंपतिकोसुषसोईसंपतिहैनैंनानिकीनागरियादेषिदेषिजीवतहैअलियां ॥ नैंकदिनरातकेबिहातकीनजानीजातवृंदाबनहोतीनितिनईरंगरलियां ॥ १० ॥ वृंदाबनआनंदबिहारचारुदंपतिकेताकीदिनरातबातसोसुनिजियोकरो॥ललितहिंडोरासांझीरासरंगदीपमालाफूलनिकीकुंजरुचिरचनाकियोकरो॥नितिहीबसंतइहांहोरीचितचोरीचावनागरियाकेलियेसकेलिकैलियोकरो ॥ दियोकरोयेईअरुयेईसुषलियोकरोयेईदिनरैंनरसरसिकपियोकरो ॥ ११ ॥

## अथ रासके कबित्त ॥

राधानंदलालरासमंडलरसालनचैंएकतनव्हैकैंएकफूलनकेहारमैं ॥ एकजारीदारसेतओढनीकोंओढिदोऊनृत्ततिसुधंगगतिमिलितितकारमैं ॥ मुषनैंनभूषनचिकुरकरकांतिषुलीचांदिनीसरदसुच्छसागरकेबारमैं ॥ नागरमयंकमीनमानौंमनिगनसिंवारकंजकामधींवरगहेहैंरूपजारमैं ॥ १ ॥ सरदसुहाईनिसप्रफुलितबल्लीबनबहोछबिछाईचारुचंद्रिकापुलनिमैं ॥ गानकेबिधानतहांनृत्तभेदहावभावर

चयोहैंबिलासरासमंजुलपुलनिमैं ॥ लेतगतिनागरियानागरसुमंडल मैंकोरिकमदननांहिआवतनुलनिमैं ॥ बेरबेरझूलैंमोतीमालाकोझु लनिमनदेषिदेषिडुल्योजातकुंडलडुलनिमैं ॥ २ ॥ एकरातहीमैंक ईकलपअलपजानैंऐसीकेलिकवनीयइनहीसौंहोसकैं ॥ एकवांसुरी कीधुनिथिरचरमोहिडारेत्रिभुवनकौंनसुनिधीरगहिजोसकैं ॥ एकन टनागरकीमुकटलटकमांझअटकिपरयोहैंमनछूटिनांहिंसोसकैं ॥ ए कभुवभंगमैंअनंगमानभंगहोतताकेरासरंगकोवषांनकरिकोसकैं॥३॥ उदितसरदचंदचंद्रिकाकिरनकढीदिनमानितापतनमेटतकहलहैं ॥ ऐसेसमैंअ.ईव्रजवालानंदलालाढिगातिन्हैंदेषिकोटिरतिलागतिसह लहैं ॥ गांवैंगीतमीतमिलिनागरिसंगीतनचैंचंचलताचितैंरहीमो मातिहहलहैं ॥ मिलीघनस्यामैंमानौंधाईनभमंडलसौंवीचिरास मंडलकैंदामनीलहलहैं ॥ ४ ॥

## अथ चांदनीके कवित्त ॥

पूरनसरदससिउदितप्रकासमानकैंसीछबिछाईदेषोविमलजुन्हा ईहैं ॥ अवनिअकासगिरकाननओजलथलव्यापकभईसोजियला गतसुहाईहैं ॥ मुकताकपूरचूरपारदरजतआदिउपमायेउज्जलकी नागरनभाईहैं ॥ वृंदाव्रनचंदचारुसगुनबिलोकवेकौंनिरगुनकीजो तिजनूकुंजनमैंआईहैं ॥ १ ॥ छाईजुन्हाईनिकाईचितचितैंनागरकैं सुषवाढयोनवीनौं ॥ जोतिजगीरुपहैरीजहांतहांदैंकाबियौंउपमाजु प्रवीनौं ॥ चंदमरीचनिकीवरकैंभरिकैंभुवओनभहूमंढिदीनौं ॥ मा नहुकामकारीगरनैंव्रसमैंकारिकैंवसमैंमनकीनौं ॥ २ ॥ आईनिसस

रदसुहाईलगैवृंदावनजगमगजोतजगीअमलअपारहैं ॥ नवललतां निबीचस्वेतफूलफूलेसोईललितहलिताहियैंहीरानिकेहारहैं ॥ चांदनी बिमलवोढेंतासकेरूपैरीपटनागरसुगंधअंगअतरबयारहैं ॥ भरीरूपसंपतिसौंदंपतिकेसुषकाजकीनौंसषीआजनवकुंजनिसिंगारहैं ॥३ कढतनिसाकरदिवाकरसोदीठपरिडरिअंधकारएकपलमैंपलायोहैं ॥ भोरभयोजानिकैंबिहंगनिमैंसोरमच्योअवनिअकासमैंप्रकाससरसायोहैं ॥ परीचलचालबालचमूंचतुरंगनीमैंनागरतपततेजव्रजपरआयोहैं ॥ चांदनीनहोययहमाननीकेजीतबेकौंमैनमहारथीब्रह्मअस्त्रहिचलायोहैं ॥ ४ ॥ छाईछिपादिनज्यौंदरसीमिलिकैंचकवानिबियोगबिसारच्यो ॥ सौगुनौंबाढ्योप्रकासदिसानिमैंचौगुनौंचावनजातउचारच्यो ॥ कैसीपिलीहैंअलोकिकचांदनीनागरताकोंबिचारबिचारच्यो ॥ राधेजूऊंचीअटाचढिकैंकहुंआजनीलांबरघूंघटटारच्यो ५

## अथ दिवारीके कवित्त ॥

कुहुकचचूंनरीसितारेदारसोईनभसहजअंगआभाप्रकासपुंजधारीहैं ॥ मनिगनभूषनसुदीपकजगीहैंजोतिमोतिनिकीआवमहताबउनहारीहैं ॥ फूलझरीहासमैंनिवासमहामोहनीकोकुंजनकैंपुंजचपचौंधिबिसतारीहैं ॥ औरठौरदीपनकीदुतिसौंदिवारीहोतनागरबिहारीकैंदिवारीनितप्यारीहैं ॥ १ ॥ जसुदाकैंफिरैंमुकतांनकीबेलीसीनागरिराधेसिंगारकरैं ॥ बरबैंनीकेभारऔहारनिकेडगपाइनकीडिगुलातधरैं ॥ अतिआननजोतिमईअंगनांभयोरूपकथाकहिकोउचरैं ॥ जितजायसंवारतबातबिधूतितदीपनकीदुतिफीकीपरैं ॥ २ ॥ जहां

तहांदीपनिकीदीप्तदिपतद्रूनीज्यौंजरीसजीवानिकेपौधालैलगाए हैं ॥ कैधौंदेषिदंपातिकीसंपातिविहारचारइंद्रपारजातकेपहुपबरषाए हैं ॥ कैधौंपुषरागनिकेनागरपरेहैंओलाकैधौंअंगअवानिसुनैंनसरसा येहैं ॥ कैधौंनभमंडलतैंवृंदावनचंदजूपैंव्हैकैपांतिपांतिनिनछत्रजुरि आएहैं ॥ ३ ॥ नवकुंजकैंचौकदिवारीकीरातिसुप्यारीजहांअतिसो भासची ॥ जरतारीकीसारीओअंगजवाहिरसीसमुकेसकीषौररची॥ इहिंबांनकनागरिसंगसषीलखिलालनिकीमनसाललची ॥ सबपांति व्हैंछोडतफूलझरीतहांहोजपैंरूपकीमोजमची ॥ ४ ॥

## अथ गोरधनधारनका कबित्त ॥

कुंवरिकिसोरीकहूंदरसीकुंवरकान्हजाछिनतैंमिलिबेकीरीतियह ठांनीहैं॥ गोपनकीमतिफेरिमघवाकीबलमेटीबरष्योपुरंद्रतबप्रलैपौंन पानीहैं॥ छूटिगईसहजैंबिपातिमांझलोकलाजरापीगिरधारीनी रैंराधा रससानीहैं ॥ नागरविषमबिषसीचीहित्तबेलीऐसैंलगनलगेकीहेली अकहकहानीहैं ॥ १ ॥ जांनैंरीबलैयाकितबरषैंप्रबलपांनीकितपरैं ओलाकितमेघमालाअनीकी ॥ पायोप्रानपीतमनिहारैंछबिगिरधरैं चंदहिचकोरीजिमनेहचितवनीकी ॥ नीरीसुपबीरीदेतलेतरूपनैंन सुधापगिरहेबातानिपरमाहितसनीकी ॥ नागरदिनसातरैंनचैनमैंन जानीजातघनीधनबर्षामैंबनीबनांबनीकी ॥ २ ॥ मत्तमोरचंद्रिका रतनपेचपगियांपैंसुंदरसुमनगुच्छसोभानवभालकी ॥ घूर्नितनयन बंकभुवमुषमंदहासपरसतपौंनजुगअलकसचालकी ॥ ठाढोव्हैंत्रिभं गनिसौंगिरिराजकरधरैंनागरझुलनिझुकिसोभाबनमालकी ॥ होत

मदभंगमनमथराजसुरराजदेपसर्पीदेपिआजछबिनंदलालकी ॥३॥ गोवर्द्धनकरधरैंबीचठाढेनंदलालचहूंओरबालसुपसमैंसरसतहैं ॥ राधेजूचितौंनमैंभरतअंकमोहनकौंमोहनचितौंनअंगअंगपरसतहैं ॥ दूरहीतैंदुहुनकेस्वेदरौंमकंपहोतनागरनिहारिनेहदसादरसतहैं ॥ उतइंद्रकोपिकोपिवरसतमेहअतिइतगिरधारीप्यारीरंगवरसतहैं ॥ ४ ॥

वारीहौंतोआजब्रजराजकेकुंवरजूपैंनीकैकैनिहारिकैसैंठाढेहैंसुढारसौं ॥ एककरगिरधारैंएककरकटितटनाचतज्यौंनिर्तकारीनागरसह्मारसौं ॥ गोवर्द्धनतरैंचंदमुषकैंउजारैंवंधीरूपरिझवारिनिकीदीठइकतारसौं ॥ आयआयसबकीभईहैंइकठौरीआंखैंयाहीतैंत्रिभंगअंगव्हैंरहेहैंभारसौं ॥ ५ ॥ सुरओअसुरनरनागजेवलीतैंवलीतिनकीनचलीमनीमनकीबिसारीहैं ॥ रावअमरावतीकोधूरिमैंलुटतइंद्रऐसीरजधानीघोपमोपहूतैंभारीहैं ॥ भारीहैंगोवर्द्धनआतपत्रफेरयौंसबऊपरलैंनागरअटलराजदीनौंसुभकारीहैं ॥ औरछत्रधारनिकेकईछत्रभंगहोतएकरससदाब्रजबासीछत्रधारीहैं ॥ ६ ॥

## अथ होरीके कवित्त ॥

ठौरठौरचाचरचहुलमचीचंगनकीअंगनकीऔरैंदसाऔरैंरूपछायोहैं ॥ आनंदउरनिआतिअमितअखंडबाढ्योनागरमिलनिदिनदावदरसायोहैं ॥ लाजओरुधाईतियसंगलैंबिवेकपतिभाज्योब्रजमैंतैंमारबाननिदवायोहैं ॥ पौढीप्रीतजागानिनवलनेहलागानियौंफागुनसनेहिनकेभागनिसौंआयोहैं ॥ १ ॥ आईवरसांनैंतैंअकेलीकोऊजसुदापैंग्वारनिभिजोइडारीपेलवीजबैंगयो ॥ सुनिपुरभानतैंदुलारी

चलीकीरतिकीधूममचिपरीभारीगारीघोपछवैंगयो ॥ नागरीचमकि रहीचहूंवोरचपलासीघेरेघनस्यामसब्दहोहोलोकहैंगयो ॥ धरलाल तरलालकेकीसुकपिकलालघुमड्योगुलालव्रजलालमईव्हैंगयो ॥२॥ षेलताबिहारीजूसौंप्यारीआजुकुंजनिमैंबूड्योमनआनंदमैंहेरेचोनाहि रतुहैं ॥ नागरगुलालधूमधूंधरिगगनचढीछूटैंपिचकारीधारधारसौं भिरतहैं ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैंपूरिवृंदाबनधावतधरनिनगभूषन गिरतहैं ॥ लागीमुखरोरीउरतोरीमालबोरीरंगहोरीमांझगोरीझकझो रीसीफिरतहैं ॥ ३ ॥ षेलैंमनमोहनसौंहोरीव्रजगोरीआजमैंनसैंनरैं नधूमधूंधरसीउठीहैं ॥ केसरिसौंभीजेपटनिपटमिहीनतामैंहीरनके हारचारचमकैंअंगूठीहैं ॥ दुहूंवोरचतुरसमाजअतिरंगरह्योउपमा बिलोकिहावभावभईझूठीहैं ॥ लैलैंओटघूंघटकीनागरिगुलालभरैंउ तउठैंमूठीइतमुरतिअनूंठीहैं ॥ ४ ॥ नागरिषिलारऔटपाईकौंअके लीमिलीडारिपिचकारीगहिराषीकरकामिनी ॥ केसरिदुकूलभेदभू षनकिरनकढीथहरानित्यागिथिरठाढीमनौंदामनी ॥ षेलबोबिसरि मनमोहनविबसभयेहैंहूंछकिरहेलषिसोभाअभिरामनी ॥ भौंहन कसौंहैंठाढीबदनहसौंहैंदेतसौंहैंअलसौंहैंगातसौंहैंभीजीभामिनी॥५॥ केसरिकेहोजनिपैंमोजमचीआनंदकीनागरियाषेलैंसबसंगसुकवारी की ॥ धायकैंचलावनिबचावनिअदायनिसौंदुरनिमुरनिओटभीजी तनसारीकी ॥ रसियाकुंवरजूकेहाथनकीलाघवताकहांलौंसराहौंउ तषेलनषिलारीकी ॥ सघनजघनकटिकुचनिकपोलनिपैंमनकीपर नितहांभरनिपिचकारीकी ॥ ६ ॥ मनहींमैंरीझरीझरीझतिहूंरीझ हीपैंगतिनकहतबनैंमेरीहेलीहालकी ॥ हीयोभरिगरोभरिनैंनभरिढ

रैपैनटरैंहैंनैंनहूतैंसोभातिहिंकालकी ॥ होरीमैंनागरिमातिचोरीचि
तैंचातुरीसौंआतुरीसौंआंवनिझमकिपगबालकी ॥ बांएपांनघूंघट
कीगहनिचहानिहसिदांहिनैंतैंटेढैताकिभरनगुलालकी ॥ ७ ॥ होरी
मैंरूपठगोरीसीडारतवारतप्रानललामतभावन ॥ षेलिकैंरंगअलेल
चढीछबिकैसीलगैंगहिघूंघटआवन ॥ दामिनसीदबिअंबरमैंमुरि
जातउतैंताकिमूंठिउठावन ॥ धीररहैंनहिंनागरकौंलषिचीरकोओट
अबीरबचावन ॥ ८ ॥ थोरीसीबैसमैंनागरिगोरीकरैंचित्तचोरीरुहो
रीमचावैं ॥ कुंडमैंतारीबजाइउठैंकाहिहोहोजबैंउतकौंयहधावैं ॥ जां
हिसबैंअवसांनजकीलगिनागरकैंकरकंपउपावैं॥ नांहिअवाईसह्मारि
सकैंजबरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं ॥९॥ पेलपेलचायनचतुरचौंकिचा
चरिमैंठाढेथकिइतउतैंभीरसषियांनकी॥ मंदमंदपवनडुलावतनवेलि
यांजुहीकीपीतफूलनगुहीलैपषियांनकी ॥ चाहैंनवनागरबदनराधा
रंगभरचोदोऊनेहनददोऊगतिझपियांनकी ॥ बिनहींगुलालरंगर
सियाउठावैमूंठदेखनकौंझझाकिरंगीलीआंषियांनकी ॥ १० ॥ देव
नकेरुरमापतिकेदोऊधामकीबेदनकीनीबडाई ॥ संषओचक्रगदाअ
रुपद्मसरूपचतुर्भुजकीअधिकाई ॥ अमृतपानबिमाननिबैठिबोना
गरकेतीकहीयेंनभाई ॥ स्वर्गबैकुंठमैंहोरीजोनांहितोकोरीकहालैक
रैंठकुराई ॥ ११ ॥ आईहोरीपेलिमैंनवेलीकोऊनंदगेहस्यामैंरहीदे
षिरूपकोतकलुभायकैं ॥ गोरैंअंगरंगभरीग्रीवाहिनिहोरैंठाढीजोरैंदृ
गनागरसौंथोरैंमुसिकायकैं ॥ चाहतगुलालडारचोलालपैंनडा
रैंसांकिरसनांदसनदाबिरहैंसकुचायकैं ॥ लाजकीलपेटमैंअंगेट
हिलपेटैंपटनिपटमसुसैंमरैंरीझिअकुलायकैं ॥ १२ ॥ लालगुलाल

कोधूमभचायकैंधूंधरधामअंध्यारोकरोहो ॥ तामधिधावतहोछिपकैं छलिसौंकछुऔरहीढारढरोहो ॥ नैंकतोलोककीलाजधरोजियनां हिडरोवरजोरीअरोहो ॥ हारगरैंपहनावतनागरआयपरायेगरैंहीप रोहो ॥ १३ ॥ षेलिकैंवाढीरहीसबनागरिअंगडमंगनिआंनिअरी जे ॥ गोरीनकीश्रमसौंछबिबाढीगुलालनिबालसनीसिगरीजे ॥ अं चरषूटिसिंगारषसेमनूमैंनकीछूटिकेमांझपरीजे ॥ केसछुटेउरमाला टुटीनंदलालानिसंकनिअंकभरीजे ॥ १४ ॥ आवतहेनंदगांवतेंगा वतेसंगसषाडफलीनैंनवींनैं ॥ रंगनिसौंभरिडारेसबैंहमहाथमरोरकैं चंगहैंछीनैं ॥ आपुनकेकरबांधिकैंहारसौंप्यारीकेपायनिपारेअधीनैं॥ काल्हिकीबातैंयेभूलिकैंनागरआजहुवेईभलेढंगलीनैं ॥ १५ ॥ सिर तैंसरकढीलेपेचढिगझूलैंबैंनांअंचरउतरगयाकौंनहाललाजका ॥आं षौमैंगुलालडालल्यायेहोरूमालअबकहांलौंबयांनकरौंतुह्मारीरिवा जका ॥ ऐसीबरजोरीकितबदीहोरीषेलबीचटुकभीनतुह्मैंसकसुघर समाजका ॥ दीजेंमुझेंजांवनपरौंहौंप्यारेपावनमैंछोडोमनभावन जीदावनपिसवाजका ॥ १६ ॥ कीनीअंध्यारीगुलालउडायकैंमो मतिताछिनतैंभरमीहैं ॥ कैसैंदुरैंतिनसौंछलसांवरेरावरेजेमनकेमर मीहैं ॥ फीकोभयोअधरांनिकोरंगअनंगकीआननपैंगरमीहैं ॥ ना गरदेषोजूप्यारीतिहारीकौंवेअबहीअबक्यौंसरमीहैं ॥ १७ ॥ औंच कांहींआयप्यारीसौंधौंवगरायजातदुपटामुकेसीसीसअंचलसुभाय सौं ॥जरीदरदावनमैंपायदरसायजातरहींजेबपायपन्नापायजेबपाय सौं॥ तनकौंनछवायजातआपकौंबचायजातधीठयोदैंधिरायजातना गरसुचायसौं ॥ नैंननिमिलायजातकछुमुसकायजातगैंदलैंचलाय

जातअजबअदायसौं॥१८॥गांसगसीलेंयेबातैंछिपाइयेइस्कनगाइये गाइयेहोलियां॥ गैंदबहांनैंनवीरोचलाइयसूधैंगुलालचलाइयेझोलि यां॥ लोगबुरेचतुरेलपिपावैंगेदाबैंरहोदिलप्रीतकलोलियां॥ पायप रूंजीडरोटुकनागरहायकरोमतवोलियांठोलियां॥१९॥ बसंतब नैंनं॥ कवित्त॥ फूलेद्रुमबल्लीबनझूलेअलिगंधबोलैंमदनसदनमां नौंमंगलबधांवनौं॥ जहांतहांआवतधुनिगानहिंडोलतैसोकोकिला निकोयलकोसोरमनभांवनौं॥ उमहींसकलबालआईवृषभानजूकें किसलैकलससंगसोहैंमहरांवनौं॥ हियेहुलसंतविकसंतकंजातिय मुपनागरबसंतबरसानैंमैंसुहांवनौं॥२०॥ सवैया॥ काननकेसू पिलेसुभलेद्रुममंजरीमौरानिदीहींदिपाई॥ झौंरनिझौंरनिभौंरनिको रवआतुरकोयलकूकमचाई॥ क्यौंनामिलैंप्यारेनागरसौंउठिकामउ देगभरीरितुआई॥ रूपकोगर्वरहैंगोनहींरीबसंतकीआंनिपरीहैंअ वाई॥२१॥ द्वैघटकंचनकेपैंमनौंनवपल्लवलाललसैंअधरारी॥ना सिकारूपकीमंजरीसीमृदुस्वाससमीरसुगंधमहारी॥ मौररुमाव लिकोकिलबानिहरयानीलतातुवनागरियारी। रीझिरहेरसवंतालि कंतबसंतसीबैसहैंप्यारीतिहारी॥२२॥

## अथ फागषेलसमैं अनुक्रम॥

सखांनि प्रति नंदकुमार वचन॥ कवित्त॥ आवो सबासिमाटिरचावोमिलिफूलफागसुबलसुबाहुश्रीदामाआंनिअरो रे॥ गावोगारिधूंमाहिंमचावोलैबजावोडफऐसीफिरिपावोकबबा तमनधरोरे॥ दरबरदौरिदौरिहोहोकहिरोरिकारिव्हैंकैइकठौर

होरीहासिअनुसरोरे ॥ कोऊबरसांनैंकीहैपोलिसरसांनैंकीहैंआंषिनमैं देगुलालरंगनि सौंभरोरे ॥ १ ॥ सषी प्रति सषी बचन कवित्त ॥ ज्यौंरन जामिलैंसमसूरपिलैंरंगआननपैंरतनारे ॥ यौंबनेंगोकुल के रकानषतैंसिपलैंअंगअंगसंवारे ॥ आजुबचोगेंनजेहोसषासु धैरापोहैमूंदिकैंदैकारितारे॥ बाजतहैंडफहेलीमनौंमनमत्थहिकेमतवा रेनगारे ॥ २ ॥ सषीनिप्रतिसषाबचन ॥ सवैया ॥ तुमठाढीरहोकि नगाढीन्हैंफागमैंएदिननांहिंनिहोरनिके ॥ सुषलीजिएजूबहोभांत निसौंरसफागुनिसिंधुहिलोरनिके ॥ इतआएहैंकामकेपायकनायक नागरचंदचकोरिनिके ॥ मदमोकलहैंगजगोकुलकेयेतोदूलहगोप किसोरिनिके ॥ ३ ॥ सवैया ॥ बाजरहीरसषेतमैंदुंदभीहोरीमची अबकैसैंटरैंगे ॥ राजभयोमहाराजमनोजकेवाहीकीआग्याकेंढारढ रैंगे ॥ आजुनचूकिहैंफागकेऔसरनागरियौंमनभायोकरैंगे ॥ अंग निकौंभरिरंगनिसौंहमआयनिसंकन्हैंअंकभरैंगें ॥ ३ ॥ सवैया ॥ फागुनकेदिनबावरेयेइनमैंनसयांनपतानिबहैंहैं ॥ कामदुहाईरही फिरिकैंअबकोउनकाहूकीकूकिलहैंहैं ॥ आयकेंरंगनिसौंभरिहैंटरिहैं नाहिंनागरिसांचीकहैंहैं ॥ चोरीनहींबरजोरीनहींइहिंहोरीमैंकौनधौं कोरीरहैंहैं ॥४॥ फागमैंप्रेमहिंकोइकराजहैंकाहबेकाजकरोहोचराब र ॥ रूपउपासीतिहारेहैंजूहमगोकुलबासीकरैंनसराबर ॥ नागरि नैंकछुयेंतैंकहाजोगिरचोलुटिकैछितमांझछराबर ॥ क्यौंसतरांतहो गोरीकिसोरीजूहोरीमैंराजारुरंकबराबर ॥ ५ ॥

## अथ प्रीतमप्रति ब्रजबल्लवीन बचन ॥

कवित्त ॥ मानसबिलोकिटोकिमगरोकियतहैंजूरावरोबिदतगुन

बाटघाटचोरीके ॥ लैगुलालमूठमेरीआंषनिमैडारिलालष्यालअैसे होतहैयेहालबराजोरीके ॥ लाजहिलजायढोटालोचनअंजायआये टौंडकभयेहोपिलारनएहोरीके ॥ घेरेहेगलीमैंजबनाचवहुतेरेनचे रेन्हैछुटेहेकाल्हिनवलकिसोरीके ॥ १ ॥ आवतहेनंदगांवतेगावतेसं गसषाडफलीनैनवीने ॥ रंगनिसौंभरिडारेसबैहमहाथमरोरिकैंचंग हिंछीने ॥ आपनकेकरबांधिकैहारसौंप्यारीकेपायनिपारेअधीने ॥ काल्हिकीबातैयेभूलिकैंनागरआजुहूवेईभलेढंगलीने ॥ २ ॥ होरीमैं चोरीकरोहोकितीबरजोरीहूकेतुमढारढुरेहो ॥ रोकनटोकनकौंजुव तीगनजैसेहैतैसेकहूंनदुरेहो ॥ नागरहोलंगराइकेआगरचारचवांय नतैनमुरेहो ॥ फागमैन्हैरहेजूमदमोकलगोकुलमैढंगसीपेलुरेहो ॥ ॥३॥ कबित्त ॥ फागमैफेरहूफूलेफिरोहोकछूजियजानतलाजको आयबो ॥ हाहाषवायनचायकैछाडेहेधन्यतिहारीएबातैभुलायबो॥ गावतगारीठठोलीचलावतनागरक्यौंजुवतिनिदबायबो ॥ रावरेपे लिकीजानीकलासबएतीललानहिंजीभचलायबो ॥ ४ ॥ काल्हनये भयेछैलपिलारयौंजोसुनैनंदतोहीपछतैहो ॥ रोकतहोमगमैरसषांन चलावतहाथम ..ुपहो॥टूटैंछराबछरादिकगोधनजोधनहैगृहसोध नदैहो॥जैहैजुभूषनकाहूतियाकेतोमोलछलाकेललानबिकैहो॥५॥अ थ सवैया ॥ फागकैऔसरलागभरीकोउसोजसुधागृहपाहुनीआई ॥ घूंघटआधेमैंआधीचितौंनसौंचाहिलएदृगकौंनैकहाई ॥ नागररूप कीभीरपरीजियप्रेमकीपीरदबैनदबाई ॥ भूलिगईगुरुलोगनितापि नआंषिनहींबिचहोरीमचाई ॥ १ ॥ कबित्त ॥ होरीमधिनैननिकी चोरीलषिपाईसासतादिनतैगोरीकौंझुकतहैझरझरात ॥ मारिकैंकिं

वारनिकौंसोवतननंदनोरैंचौकसरहतचितचौंकियेभरभरात॥नागरइ तेपैंउप्ररारैं व्हैंअंध्यारैंछैलअछनअछनआयोप्रानानिफरफरात।बंधेभु जपासनिवेस्वासनिकौंरोकैंतउलगिकैंहियेसौंहियेसुनियैंधरधरात २

## अथ फागबिहार ग्रंथ लिष्यते ॥

॥ श्रीव्रजछैलजू ॥ मंगलाचरनप्रार्थना ॥ दोहा ॥ फागबावरे दिनानिके, रूपबावरेछैल ॥ रंगभरेरसबरसिये, मोरसनांकीगैल ॥ ॥ १ ॥ नवमैंमुष्यसिंगाररस, रसिकनिहियेंसुहात ॥ सोमतवारो फागमैं, ताकीबरनौंबात ॥ २ ॥

## अथ फागुनमास समय ॥

॥ दोहा ॥ ग्यारेनहिप्यारेलगैं, सादेसहजउदास ॥ प्रेममत्तम दरापियें, कैफीफागुनमास ॥३॥ फागमासरितुउठतबहो, नवद्रुम पल्लवलागि ॥ जडहूकैरोमांचव्हे, बिथामदनतनजागि ॥ ४ ॥ हियेरंगीलेफागमैं, कियेरंगीलेअैंन ॥ महारंगीलेदिनसवैं, महारंगी लीरैंन ॥ ५ ॥ गृहकोनैंजातनरह्यो, परतअ्रगौनैंपाव ॥ इंहिंहोरी केषेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ ६ ॥ बैकुंठादिकलोकजेव्रजपरिडा रूवार ॥ उत्सववारूफागपरि, जेप्रसिद्धसंसार ॥ ७ ॥ अथ सवै या ॥ देवनिकेरुरमापतिकेदोऊधामकीवेदनिकीनीवडाई ॥ संष ओचक्रगदाअरुपद्मसरूपचतुर्भुजकीअ्रधिकाई ॥ अमृतपानवि माननिवैठिवोनागरकेतीकहींपैंनभाई ॥ स्वर्गवैकुंठमैंहोरीजोनांहि तोकोरीकहालैकरैंठकुराई ॥ दोहा ॥ व्रजतैंसोभाफागकी, व्रजकी सोभाफाग ॥ दवेदुहूंदिसप्रगटिहीं, अंतरकेअनुराग ॥ ९ ॥

## अथ ब्रजफागआगमानि ॥

॥ दोहा ॥ इंहिंरितुऔसरफागकैं, भयोलगनकोराज ॥ डफ मोहनमुरलीसुनैं, बधुनिडगमगीलाज॥१०॥ जथा कवित्त ॥ लागी हीबसंतैंसरसआसजुवतिनिकोंफागरसलागभरयोवहिदिनआजहैं ॥ उमगेसकलव्रजवासीसुपरासीमहाफिरतसुहाईयैंदुहाईरीतिराजहैं ॥ होरीडांडोरोपतहीदुंदुभिस्हैंनायभेरनागरसमूहडफउठेबाजबाजहैं ॥ हल्चलपरीहैंधूंमिधीरजढहनलागेदहलांनेमानगढहहलांनीलाजहैं ॥ ॥ पुन कवित्त ॥ ठौंरठौंरचाचरचहुलमचीचंगनिकीअंगनिकीऔरैंद साऔरैंरूपछायोहैं॥ आंनंदउरनिअतिअमितअपंडबाढयोनागरमि लिनिदिनदावदरसायोहैं ॥ लाजओरुषाइतियसंगलैंबिवेकपतिभा ज्योब्रजमैंतैंमारबांनानिदवायोहैं ॥ पौढीप्रीतजागनिनवलनेहलाग निकौंफागुनसनेहिनिकेभागनिसौंआयोहैं ॥ १२ ॥

## अथ नित्य सहजषेलि आरंभ ॥

॥ दोहा ॥ सबैंफागरसरगमगे, व्रजओप्योअभिराम ॥ होरी चितचोरीकरत, घरघरपेलतस्याम ॥ १३ ॥ जथा कवित्त ॥ रचि कैंकपटबेपडोलैंव्रजबाषरानिछलिआवैंछैलजेछबीलीनवबामहैं ॥ क बहूसिमटिगहिलेतगोपबधूवृंदआंषिआंजिमांडमुषछांडैंगहिदामहैं॥ उतदेतगारीइतभंडकुटहोतभारीनागरकतूहलवढतधामधामहैं ॥ आनंदनिवासनित्यफागकोहुलासऐसैंहोरीबिनहासमुक्तवासकौंन कामहैं ॥ १४ ॥

## अथ अनायासवहौषेलिव्है परनि ॥

दोहा॥ कढीअथांईनिआयकोउ, बरसांनैंकीबाल॥गागरिसिरढरकायदी, फागमत्तसबग्वाल॥१५॥जथा कबित्त॥ आईबरसांनैंतैंअकेलीकोउजसुदापैंग्वारनिभिजोयडारीषेलिबीजबैंगयो॥ सुनिपुरभानतैंदुलारीचलीकीरतकीधूममचिपरीभारीगारीघोपछ्वैंगयो॥ नागरचमकरहीचहूंओरचपलासीघेरैंघनस्यामसब्दहोहोलोकद्वैंगयो॥धरलालतरलालकेकीसुकपिकलालघुमडचोगुलालव्रजलालमईव्हैंगयो॥ १६ ॥ पुन कबित्त ॥ षेलतबिहारीप्यारीआजकुंजपुंजनिमैंबूडचोमनआनंदमैंहेरचोनहिरतुहैं ॥ नागरगुलालधूमधूंधरिगगनचढीछूटैंपिचकारीधारधारसौंभिरतुहैं ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैंपूरिवृंदावनधावतचपलनगभूषनषिरतुहैं ॥ लागीमुषरोरीउरतोरीमालबोरीरंगहोरीमांझगोरीझकझोरीसीफिरतुहैं ॥ १७ ॥ पुन कबित्त ॥ पेलैंमनमोहनसौंहोरीव्रजगोरीआजुमैंनसैंनरैंनधूंमधूंधरिसीउठीहैं ॥ केसरिसौंभीजेपटनिपटमिंहिंनतामैंहीरानिकेहारचारुचमकिअंगूठीहैं ॥ दुहूंओरचतुरसमाजअतिरंगरह्योउपमाविलोकिहावभावभईझूठीहैं ॥ लैंलैंओटघूंघटकीनागरगुलालभरैंउतउठैंमूठीइतमुरानिअनूठीहैं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ बरसांनैंनंदगांवके, मुरतनदलदुहुंओर ॥ समरषेतसंकेतमैं, मच्योफागजुधजोर ॥ १९ ॥ पटछूटतछूटतनहीं, रहेषेलरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपरत, हारनमानतकोय ॥ २० ॥

## अथ बिबिधषेलि बर्नन कबिबचन ॥

॥ दोहा ॥ करतषेलिमैंषेलिबहौ, आंनंदप्रेमअलेलि ॥ सोबर

नौंबिचषेलकैं, न्यारेन्यारेषेलि ॥ २१ ॥ इकइककाढिकाढिझुंडतैं, आवतमूठउठाय ॥ बिसरिषेलिछबिनिरषिपिय, इकटकरहतलुभाय ॥ २२ ॥ सवैया ॥ होरीमैंरूपठगोरीसीडारतवारतप्रानललामनभावन ॥ षेलिकैंरंगअलेलचढींछबिकैंसीलगैंगहिघूंघटआवन ॥ दामिनसीदबअंबरमैंमुरिजातउतैंतकिमूंठिउठावन ॥ धीररहैंनाहिंनागरकौंसपिचीरकीओटअबीरबचावन ॥ २३ ॥ पुन सवैया ॥ थोरीसीबैसमैंगोरीकिसोरीकरैंचितचोरीरुहोरीमचावैं ॥ झुंडमैंतारीबजायउठैंकहिहोहोतबैंउतकौंयहधावैं ॥ जाहिसबैंअवसांनजकीलगिनागरकेकरकंपउपावैं ॥ नांहिंअवाईसह्मारिसकैंजलरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं ॥ २४ ॥ दोहा ॥ कबहूंदुरिइतधुंधमैं, परसजातपियबाल ॥ जबअनषौंहेवैंनकाहि, हुयेलषौंहैंलाल ॥२५॥ सवैया ॥ लालगुलालकीधूंमिमचायकैंधूंधरधामअंध्यारोकरोहो ॥ तामधिधावतहोछिपकैंछलसौंकछूऔरहीढारढरोहो ॥ नैंकतोलोककीलाजधरोजियनांहिंडरोबरजोरीअरोहो ॥ हारगरैंपहिनावतनागरआयपरायेगरैंहींपरोहो २६ ॥ पुन सवैया ॥ कीनीअंध्यारीगुलालउडायकैंमोमतितानिछिनतैंभरमीहैं ॥ कैसैंदुरैंतिनसौंछलसांवरेरावरेजेमनकेमरमीहैं ॥ फीकोभयोअधरांनिकोरंगअनंगकीआननपैंगरमीहैं नागरदेषोजूप्यारीतिहारीकौवेअबहीअबक्यौंसरमीहैं ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ केतेषेलिगुलालबिच, षेलेरसिकरसाल ॥ फिरिपिचकारीकरलई, रूपलालचीलाल ॥२८॥ कबित्त ॥ केसरिकेहौजनिपैंमोजमचीआनंदकीनागरियाषेलैंसबसंगसुकुंवारीकी ॥ धायकैंचलांवनिबचांवनिअदायनिसौंदुरनिमुरनिओटभीजीतनसारीकी ॥

रसियाकुंवरजूकेहाथनिकीलाघवताकहांलौंसरांहौंउतपेलनिपिला रीकी ॥ सघनजघनकटिकुचनिकपोलनिपैंमनकीपरनितहांभरनि पिचकारीकी ॥ २९ ॥ नागरषिलारिऔंटपाइँलैंछबीलीभांतिडारी पिचकारिगहिरापीकरकामिनी ॥ केसरिदुकूलभेदभूषनकिरनक ढीथहरनित्यागिथिरगढीमनौंदामिनी ॥ पेलिबोबिसारिमनमोहन बिबसभयेहौंहूंछकिरहींदेषिसोभाअभिरामिनी ॥ भौंहनिकसौंहेंठा ढीबदनहसौंहेंदेतसौंहैंअलसौंहैंगातसौंहैंभीजिभामिनी ॥ ३० ॥ इ तिषेलि ॥ अथ दोहा ॥ फागमांझब्रजमैंवढी, हरियारीसुपसा रि ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरसथँभीरसबारि ॥ ३१ ॥ कवित्त ॥ पेलिपेलिचांयनिचतुरचौंकिचाचरिमैंठाढेथाकिइतउतैंभरिसापियांनि की ॥ मंदमंदपवनडुलावतनवेलियांजुहीकीपीतफूलनिगुहीलैंपपि यांनिकी ॥ चाहैंनवनागरबदनराधारंगभरयोदोऊनेहनददोऊगति झपियांनिकी ॥ विनहींगुलाललालरसियाउठावैंमूठिदेषनिकौंझझ करंगीलीअंपियांनिकी ॥ ३२ ॥

## अथ षेलांतब्रजवल्लवी समूह सरूप बर्नन ॥

सवैया ॥ षेलिकैंठाढीरहीसवनागरअंगउमंगनिआंनिअरीजे ॥ गोरिनिकीश्रमसौंछबिवाढी ( औकेसरिनीर ) गुलालनिवालसनीं सिगरीजे ॥ अंचरषूटिसिंगारषिसेमनुंमैनकीलूटिकेमांझपरीजे ॥ केसछुटेउरमालातुटीनंदलालनिसंकनिअंकभरीजे ॥३३॥ इति ॥

## अथ षेलांत स्यामसरूप वर्नन ॥

सवैया ॥ सुंदरफैंटारह्योझुकिकैंब्रजबल्लवीरंगनिकेघटढोरे ॥

भीजकपोललगीअलकैंरंगकेसरिसौंभयेस्यामतेंगोरे ॥ छूटिगिरचो पियरोपटनागरटूटिकैंहाररहेउरथोरे ॥ रूपकोराजाभिषेकसोपाय कैंठाढेललासुपसिंधुझकोरे ॥ ३४ ॥ इति ॥

## अथ षेलांत स्यामासरूप बर्नन ॥

सवैया ॥ केसरिरंगरंग्योचहुंटचोपटटूटिरहीमुकतांनकीमाला ॥ ग्रीवपैबैंनांरह्योझुकिझूलिषयोंनिपरेपुलिबारबिसाला ॥ बेसरिसौंउर झीअलकावलिनागरिसोछबिबाढीरसाला ॥ षेलिकैस्यामाभरीश्रम सोहतव्हैरहेतापैलटूनंदलाला ॥ ३५ ॥ इति ॥

## अथ दंपति प्रीतरीत प्रगटि हौंन ॥

कवित्त ॥ होरीषेलिठाढेदोऊकेसरिकीकीचबीचमोर्तीबिसुमारप रेहारनिरलकमैं ॥ रंगनिवसनभीजेअंगनिलपटिरहेसरकोसिंगारदे पिबिसरीपलकमैं ॥ स्यामाकेसह्यारतहैंनागरियाभूषनकौत्यौंहीस पीस्यामकीसुआनंदललकमैं ॥ लालनकबेसारिसुपाइप्यारीबिसरिमैं प्यारीकर्नफूलपायोलालकीअलकमैं ॥ ३६ ॥

## अथ षेलांत कुंजप्रवेस बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ दंपतिअंसनिमेलिभुज, षेलिलटपटैबेस ॥ समरषेतसं केतमिलि, कीनौंकुंजप्रवेस ॥ ३७ ॥ गउरस्यामअभिरामतैं, चहत औरकछुनांहि ॥ फागषेलिगहगडसहित, बसोनित्यहियमांहि ॥ ॥ ३८ ॥ फागलागकीएकहू, बातकहीनहिंजाय ॥ जैसैंचातगचौंच पुट, सबघनकहांसमाय ॥ ३९ ॥ जोशुकतैंनकहीगई, ब्रजहोरीकी

वात ॥ सोमोपैंनदवीरही, ओछैंघटउफनात ॥ ४० ॥ कृष्णकेलि सिंगाररस, ताकीकथाअनेक ॥ पैंप्राचीनधमारिकैं, होतनसमकोउ एक ॥ ४१ ॥ कह्योधमारनिमैंकछू, रसिकनिजोरससार ॥ सिलो कियोउनकोजुयह, मोमतिकैंअनुसार ॥ ४२ ॥ नागरियागतिरीझ की, क्यौंहूंजातकहीन ॥ दंपतिफागबिहाररसर, भयोलीनमनमीन ॥ ॥ ४३ ॥ जाकौंइंहिरसफागसौं, तनकहुहुवोनहेत ॥ पालओढसोम नुषकी, भयोसुलम्माप्रेत ॥४४॥ धन्यव्रजधन्यव्रजवासिया, धन्यव्र जपरमउपास ॥ धन्यफागरसरीतव्रज, नागरहियेंनिवास ॥ ४५ ॥ नागरबैष्णवजोग्ययह, ग्रंथजुफागबिहार ॥ रहसिउपासिकरसभरे, समझवाररिझवार ॥ ४६ ॥ कवित्त ॥ ब्रह्मलोकआनंदव्रजआनं दसमकहैंलैंकैंवहिनीरसकीरसनांदहायघूं ॥ जवहीरहसिरसवादतव हसषेलिनागरहीजांनैंऔरकौंनपैंकहायघूं ॥ दोऊओरघुंमडिघटा ज्यौंबरसतरंगतासमैंकौध्यानमेरेहियतैंनहायघूं॥ स्यामअरुगोरीपरि एकव्रजहोरीपरिकोटिकबैंकुंठनिकेसुषाहिंबहायघूं ॥ ४७ ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ समतअष्टदससतजुपुनअष्टवर्षमधुमास ॥ ग्रंथगंगतट कृष्णपक्षकियोनागरीदास ॥४८॥ इतिश्रीग्रंथफागबिहारसंपूर्ण॥१॥

## अथफागगोकुलाष्टकलिष्यते ॥

सवैया ॥ जाउंकहांजितहीनिकसौंतितहीलषियेअतिऊधमभा रो ॥ गावतगारीठठोलठगीसुतनंदकोछंधभरयोहैंधुतारो ॥ रंगनि सौंभरिदेतहैंअंगनिनागरियाबसनांहिहमारो ॥ औरहुगांवसपीब हुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहिन्यारो ॥ छैलछछंदीछलीअटक्योहट

क्योनपरैंमगमैंबटपारो ॥ आयोकहींतैंजुफागदईनितलाजकोहैरी एबैरीहमारो॥ होरीकेडोलैंहुरचावयेनागरकैसैंबचैंतुमहीधौंबिचारो ॥ औरहुगांवसपीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोईन्यारो ॥ २ ॥ डोलत ग्वारियाफागभरेमनमैंधनजोबनकोअतिगारो ॥ नागरसांवरोहैंतिनकैंमधिसोऊमहाठगियाबटपारो ॥ कैसैंरहैंदुरिभौंनकेकौंनउडाइगुलालधकेलतद्वारो ॥ औरहुगांवसषीबहुतैंपरगोकुलगांदकोपैंडोहिन्यारो ॥ ३ ॥ ठाढेहींदेषियेरीठगसेमगमैंनटरैंकरतेजुबिगारो ॥ पेलिबधूनकेघूंघटकौंलपटावतिहैंमुपकुंकुमगारौ ॥ नागरिकापैंपुकारियेहोसबकोमनप्रानहैंनंददुलारो ॥ ओरहुगांवसषीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ४ ॥ लायरहैंटकघूंवटकौदिसलोभकीआंपिननंददुलारो ॥ जातछलीमुपसौंमुपछ्वाग्रउडायगुलालकैंकैंआंधियारो ॥ हारनसौंउरझायदैहाररीहोतहैनागरन्यारोअंवारो ॥ औरहुगांवसषीव्रहुतैंपरगोकुलगांवकौपैंडोहीन्यारो ॥ ५ ॥ आयअचांनकमींडतहैंमुषरौरीकहाअबलानिकोचारो ॥ पोलतहैंअंगियाकीतनीउरलावतकेसरकौकारिगारो ॥ नागरऐसोभयोनंदरायकैंआहाबडेनकोपुन्यनिहारो ॥ औरहुगांवसषीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ६ ॥ आंषिनमांझगुलालदेनागरहेररहैंहियहारढरारो ॥ लाजकीवातकहीनपरैंमुषकैसैंकहूंवहनांमउघारो ॥ बाटतैंबैरीटरैंनकहूंवितयामगऐबोरुजैवोहमारो ॥ औरहुगांवसषीबहूतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ७ ॥ गावतऔरधमारिघमारिरुग्वारनकैंमुषधुंधधमारो ॥ लेतहैंनामबुरेउघरेव्रजमाच्योहैफागउदंगलभारो ॥

धूरऔछारकीमारबढीनहिंसूझतनागरिव्हैंअंधियारो ॥ औरहुगांवस
षीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ८ ॥

## ॥ अथहिंडोराकेकवित्त ॥

जमुनांकैतीरभीरभईहैहिंडोरनपैंदूरहीतैंगहगड्कीगतिदरसतहैं
गानधुनिमंदमंदआवतिहैकांननिमैंबीचबीचबंसीप्रानपैंठिपरसतहैं ॥
देपिकारेद्रुमकीलतानिमांझिदामनीसोपटफहरातपीतसोभासरसतु
हैं ॥ हाहाचलिनागरपैंहीयौतरसतहेलीआजवाकदंवतररंगबरसतहैं
सपीसांवरीगोरीयेझूलतकौनहैंझूलनिदेपिहियोहहरैं ॥ ढरक्योअ
तिस्वेदरोमांचभयेंलषिनैननिलाजछटाछहरैं ॥ यहरैतनफूलदुकूल
पिसैंनसंभारैंदोऊअंचराफहरैं ॥ करकंपतडोरीनजाईगहीनहिंनाग
रपापटुलीठहरैं ॥ २ ॥ स्वेतबहूफूलनिसौंफूलिरह्योवृंदाबनठौरठौ
रसरसोकहींनकछुवैपरैं ॥ एकओरघटाकारीएकओरउजियारीसो
भाभईभारीप्रतिबिंबनिसद्वैपरैं ॥ ऐसेसमैंस्यामास्यामहरषिहिंडोरैं
झूलैंगानधुनिजीलकीतरंगरंगव्वैपरैं ॥ बढ़ैझोटात्यौंहींतहांनागरअ
धरधरैंइतबाजैंबंसीउतमोरसोरव्हैपरैं ॥ ३ ॥ हरेहरेद्रुमपरेसुमननि
भारभरेझुकिकैंकदंबअंबजमुनांपरसहीं ॥ झूलैंजहांस्यामअभिराम
कोटिकामहूतैंदेषिव्रजबालाअंकमालाकौंतरसहीं ॥ बासरसभूलेभौं
रहारकीहिलोरनिमैंलपटतआवैंसोभासिंधुसौंसरसहीं ॥ पीतपटना
गरअरझिरह्योपातनिमैंलगिकैंमुकटलताफूलनिबरसहीं ॥ ४ ॥ र
तनजटितकलकंचनकेराजैंषंभतैंसीबरबानिकमयूरंमरवांनकी ॥ झू
लतनवेलीअलबेलीराधारंगभरीपन्नापटुलीपैंछबिछाजैंतरवांनकी ॥

चलैंदुहूंवोरमेरछलनिसौंभौंरभीरहलैंछोरबादलेकेगतिगरवांनकी॥ नागरचितलीनौंचौरझोटाकीझकोरमैंकूटचोउरछोरझकझोरहरवांन की ॥ ५ ॥ वैठीहैंहिंडोरैंबीचतषतमुरसैकारीजेबसरदारीकीमजेज नभुलांवहीं ॥ दुहूंओरचंवरचलांवैंसषीचौरदारआयेवांनसंगसोझुका यैंहीजुलांवहीं ॥ पुलेवारहारानिजवाहिरजगमगातदेषिसौंहैंलालठा ढेदीठनडुलांवहीं ॥ नागरिअतरकीसुगंधउठैंझोटासंगझूलैंस्यामा साहिबमुसाहिबझुलांवहीं ॥ ६ ॥ झूलतरंगाहिंडोरनैंस्यामाजूसंगसु देससषीवहुभांयनि ॥ भूमहरीउनईबरषासुरऊंचैंछकीछविगांवैंगुसां यनि ॥ रापतनांहिनिहोरैंहूतैंसुबढीरमकैंतरुनाईकेचांयनि ॥ किंक निनागरिकोरनकैंझनकैंविछियांनकीपंकतपांयनि ॥ ७ ॥

## ॥ बरषाकेकवित्त ॥

लगिकैंप्रचंडपौंनद्रुमलतालहरातझूमिझहरातनीरकारीअतिजामि नी ॥ सोरनदीजलजोरघोरघहरातघननांहिंठहराताछिनदमकतदा मिनी ॥ ऐसेसमैंप्यारीमिल्योचाहैंविहारीजूसौंद्वारलगिजायरुकै नागरिअभिरामिनी ॥ कबहूअनंगअंगथहरायआगैंचलैंकबूहहराय रहैंभीतवसभामिनी ॥ १ ॥ घनभीजतहीवनओरचलीतियकामत हांचटसारपढैं॥ चहुंटेपटपानिपसौंउघरेतनलालचितैंचितचाहबढैं॥ दइनागरचूंनरीलैंकमरीसुपकोकविकुंजकुटीकोरढैं ॥ उतसारीनि चोवतरंगचुवैंइतनेहनयोत्यौंत्यौंरंगचढैं ॥ २ ॥ आवतनांहिकहीघ नस्यामकीमाधुरीमोमनकौंवहरूदैं ॥ भीज्योपीतांवरशोतनमैंवनमैं परेमालतीमालहिगूंदैं ॥ फैंटासुढारझुकयोजलभारसौंपेचपुलेचुवैंरं

गनिकूदैं ॥ भौंहनिकुंतलपैंबरुनीनपैंनागरनीकीलसैंजलबूंदैं ॥ ॥ ३ ॥ पावसनिकुंजराधामोहनबिहारचारुआनंदअपाररसढारनि ढरतुहैं ॥ जागैंनिससांवनमैंलगैंमनभावनसोबाजैंद्रुमपातनिपैंबूंदैंजे परतुहैं ॥ श्रमकीसुबासतनमहकतमालतीह्वैनागरभंवरभरिधीरनध रतुहैं ॥ दामिनीउज्यारैंरूपमाधुरीनिहारैंरीझिभीजेअंगअंगदोऊअं कनिभरतुहैं॥४॥राजतकिसोरदोऊघोरघनजोरआयोपरतसजोरधर नीपैंधूमकरकर ॥ च्वैचलेपनारेओकिनारेतटनीकेपरैंटूटतबिटपड़ा रसब्दहोततरतर ॥ मोरसोरचहूंओरव्हैरह्योकुनूलभारीतररितदामि नीउठतधरपरपर ॥ औसेसमैंनागरबिहारीसंगभायभरीलपटतलाडि लीभुजांनिबीचिडरडर ॥ ५ ॥ बरसनलाग्योमेहमदनदुहाईफिरी आईधाइब्रजपरछाईघटाकारीहैं ॥ तामैंचलीप्यारीउतआवतबिहा रीइतदुहुनिकेमिलिबेकीचाहचितभारीहैं ॥ सूझतनपंथद्रुमलतारही झूमझूमसबजलमईभूमिझुकीअंधियारीहैं ॥ दामिनीदमाकिगईतामैं भटभेरभईनागरदुहुनिहंसिभरीअंकवारीहैं ॥ ६ ॥ भादौंकीकारीअं ध्यारीनिसाझुकीबादरमंदफुहीबरसावैं ॥ स्यामाजूआपनीउंचीअ टापैंछकीरसमीतमलारहिंगावैं ॥ तासमैंनागरकेदृगदूरितैंआतुररू पकीभीषयोंपावैं ॥ पौंनमयाकरिघूंघटटारैंदयाकरिदांमनिदीपदि षावैं ॥ ७ ॥ दसौंदिसघोरिघोरिकीनौंहैंघटानिघेरोकुहकतमोरमहा आनंदअछेहसौं ॥ झुकिगलिललितलतारुकिगीडगरसबभईजलमई भूमिबरसतमेहसौं ॥ औसेसमैंठाढेदोउलगिकैंकदंबमूलनागरियाना गरहैंबिबसबिदेहसौं ॥ रसभीजेबैंनतहांनैंनरूपरीझिभीजैंतनभीजे बूंदनसौंमनभीजेनेहसौं ॥ ८ ॥ तरनितनूजातीरतरवरतठाढीविरह

वसायवीरवुंदनवढैलगी ॥ वदरनवृंदवढिधुकिधरआनधायेकुंजन कदंवकेकीकूकनकढैलगी ॥ चौंकिचौंकिचातकचहूंतैंचितचोरैंलेत लहरलहरनदनैरनचढैलगी ॥ छल्यनविलोकोवलिवृच्छनिमढैलगी सुकोककारिकानिकारीकोकिलपढैलगी ॥ ९ ॥

## अथ छूटक कवित्त लिष्यते ॥

व्हैंगयोअचानकउजासवनगहवरघिरिआयेपंछीमृगभूलेगौंनगे हरी ॥ छायगईसौरभओघायचलीअलिसैंनानाचिउठेमोरमहाआ नंदअछेहरी ॥ आगमकैंहोतहीलतानिमैंनिहारीकोऊनागरिवरासि गईरूपकोवमेहरी ॥ कहाजांनूंकौंनहीकहांतैंआईकितैंगईघनसेवस नतामैंदामिनीसीदेहरी ॥ १ ॥ देष्योमैंसुपनाकिधौंसांप्रतिहीहुतो आलीभोरकीहूंठाढीवनबासराबितैंगयो ॥ नूपुरझनकअजौंकांननतैं कढैनांहिकहाजानौंकौंनमेरोमनलैंकितैंगयो ॥ एकबेरलतानैंकहा लिकैंउठिहीफिरनागरिसपीनजांनूंचित्तलैंतितैंगयो ॥ हायमेरीवी रमनव्याकुलअधीरअतिसांवरासोकोउमंदहसानिचितैंगयो ॥ २ ॥ स्यामरूपसागरमेंनैंनपैरवारथकेजोबनतरंगअंगअंगरगमगीहैं ॥ गा जतगहरधुनिबाजतललितबैंनराजतसिंवारलटसौंधैसगमगीहैं ॥ भं वरात्रिभंगताईपांनिपलुनाईजामैंमोतीमनिजालनकीजोतिजगमगी हैं।प्रेमयौंनप्रबलझकोरानिसौंनागरियाआजराधेलाजकीजिहाजडग नगीहैं ॥ ३ ॥ देषिसषीआनंदअगाधापलबाधामेटिराधारूपउद धिअपारकौंनपारहैं ॥ चितवनिभौंरमैंभ्रमतमनप्रीतमकोलहरिअ द्रायनितैंनांहिननिकारहैं ॥ एतेपरनागरिफिरावैंकरकंजसोईकाम

कीझकोरजोरबहतबयारहैं ॥ धीरजउपावनिकीनावकोनदावतहां आजब्रजराजकोकुमारवेसम्हारहैं ॥ ४ ॥ एकतोतिहारोहेलीरूप हीहरतमनतामैंएछकेसेंनैंनमुसकिमिलाइहैं ॥ हारनकेभारलंकलच कतनागरीसुगागरीलियेतैंसीसतनथहराइहैं ॥ ल्यायबोरीनीरतूनि वारितीरजमुनाकोउतहींमैंऔंटपाइनंदकोजोआइहैं ॥ वनिजैंहैंऔर फिरिपरिजैंहैंझोरब्रजपनघटजायजाकोपनघटिजाइहैं॥४॥ चाहतदु रायोतोसौंकोलगिदुरांउदैयासाचहीकहूंरीबीरसुनिसवकानदैं॥ सांव रोसुनागरनिकटतीरजमुनांकैंमोतननिहारिनीरभरिअंपियानदैं ॥ता छिनतैंमेरीहृदसाकौंकछुपूछैंमतिचाहैंतोजिवायोमोहिवहरूपदानदैं। हाहाकरौंपायपरिरह्योहूनजायघरपनघटजांनदैरीपनघनजानदैं॥५ घूंघटझीनैंदुकूलकोझूलैंझुकेदृगवंकितकाननछ्वैं ॥ जुगभौंहनिवीच थक्योमनगौंहनहोठनलालरह्योरंगच्वै ॥ मंदहसैंसुपनागरकौंमुषचौं पनकोउपमातबन्है ॥ तिमरावलिसांवरेदंतनिकौंहितमैंनधरेमनौंदी पकन्हैं ॥ ६ ॥ हसिहेरीरहीप्रयप्रीतमकौंलपिचौंपनिचौंपकेपुंजब ढे॥ उपमादसनांनिकीसोंधितनागरऔरनपांवैंविचारमढे॥ मुषमंजु लकंजसुबासितयौंमधुपावलिबातनिठाटगढे ॥ सुनिआएहैंकीराति काननसौंमनौंजागिनुभौंरनिपाठिचढे ॥ ७ ॥ धीरतोहमारोहरिलीनौं वाचितौनचारुधीराबिनबीरहमैंबौरीलाषेरोकीभौंन ॥ बाहिरविम लचंदचांदनीचमकिरहीजैसीकूलकुंजनिकीसीतलसुगंधपौंन ॥ सु धिआयैंस्यामसुधिनागरिरहतनांहिपाइपरिराषीहाइअबसोकरतगौं न ॥ तूहींकहिरैंनिकौंनिहारिकैंविचारिअबएतेपरबंसीबनवाजैंतोउ पायकौंन ॥ ८ ॥ जाहीछिनधुनिआंनिकांननमैंपरैंबीरछुटिजाय

धीरअरुकिजायसांसुरी॥ मोहमईहोतमतिवारीमतिमैंनपागिजागि जागीउठैकछुन्यारीहीरपांसुरी॥ लेतहैंहमारोलगिनागरअधररसला जगृहकाजसुषसाजकीनैनांसुरी ॥ मंत्रहैंकिजंत्रहैंकिमोहनीकिमा दिकहैंसोतिहैंकिसालहैंकिबैरानिहैबांसुरी॥१०॥ आईधुनिआवनदैव जैहैबजावनदैनूतोउतपावनदैदृढकैसुभावरी ॥ मुरलीकौंसुनैमतिसु रभेदचुनैमतिसीसहूकौंधुनैमतिरिझकौरुकावरी॥ नागरियाघूमैंमति झुकिझुकिझूमैमतिधुकिगिरैंमूमैंमतिधीरठहरावरी॥ अबसबसहनौं हैं पाइरोपिरहनौहैंफिरिवासौंकहनौहैंबाजैमतिबावरी॥११॥ केउनिहा रिसुमारभईलगिनैनप्रहाराहियेसुधिमोचन॥ केउहियेलगिढोरीरहीके उवौरीव्हैताघरकीपरसोचन ॥ केउभईमननैनमईतजिलाजदईत उरंचसंकोचन॥मोहिपरेरेहियेउरझेरेसुनागरतेरेअनोषेएलोचन १२ पोइकैकोइनसौंमनडारचोसुलाजकीबैरनिबावरीपेषी ॥ रूषीभईअ बभूषीएप्रानकीआंनकीऐसीअनीतनलेषी॥नागररूपहिकैंअभिमा नपरीलडबावरीबांनिबिसेषी ॥ मारैंघरीकघरीकउबारैंएआंषैंअनौं पीतिहारैंहीदेषी ॥ १३ ॥ तरफैंछबिसांवरीदेषैंबिनाजुछुटीजलज्यौं थलमैंझषियां ॥ पलचैनननदेतषरीविपरीतऔकछूमृदुहासचषीचषि यां ॥ अरबीलीअनोषीउचाटभरीअरीनागरिनांहिरहैंरषियां ॥ दुष चायनिसौंअररानीपरैंअतिबैरनिबावरीएआंषिय ॥ १४ ॥ एरेलो भीमनसुनिदौरिदौरिजातहुतोरूपकोलुभायोसमुझायोहोदरदमैं ॥ इतहोनचैनबसकीनैंआपनैंनपरयोआधिकबाधिकपांनिआंनिमैंनमद मैं ॥ पायोफलनागरफसायोमुसकांनभौंहकसनिकसायोलैमिलायो गरदमैं॥ काटिकैंकटाछिनसौंबेधितीपेकोयनसौंचूरकरिलोयनसौं

डारचोनेहनदमें ॥ १५ ॥ पावकप्रजरिलगोअंगकैंनिसंकबीरछूटत नधीरपीरपावतनदेहरी ॥ मारोबांनतांनतनतरलगरलभारितऊमा नैंसुषघटहोतसमसेहरी ॥ यहैंदुषदारुननकाहूपैंसहारचोजायहाय हायरटिरटिकीजैंद्योसछेहरी ॥ नागरनिहोरिकरजोरिमांगौंबि धनासौंलागोसेलसरपैंनलागोजिननेहरी ॥ १६ ॥ लोचनकटाछि बांनहसनिकृपानतेरीहूलअंगरानिसूलसाल्योईकरतहैं ॥ लागैंसेलस रअसिपागैंसुषमनऐंपैंतनकरुषाईज्वालमालासौंजरतहैं ॥ वारपार बरछीदुसारतीरतनकईसीसकटिलटक्योपैंनैंकनटरतहैं ॥ नेहरनछ क्योसूरघावनसौंपूरचूरतऊदेषिअरीपैंडआगैंहीपरतहैं ॥ १७ ॥ भ रौंजोउसाससुनिघूरिरहैंसासननदीकेत्रासभईगतिपंगहैंपगनकी ॥ चलूंउठिपौरओरकरझकझोरधरैंभौंनदुरिबैठौंपौंनलहूंनगगनकी ॥ लि षूंजोपतउवापैंपातीआंसूंअंजनसौंफिरिपहुचांउकैसैंपंषदैंषगनकी ॥ कापैंकरूंरीसयहीलिषीबिस्वावीसमेरैंएरीआईसीसऐसीआपदाल गनकी ॥ १८ ॥ गोरीगनैंगनपैंडधरैंगतिमैंगजमत्तकेमानकौंमो रत ॥ पायनमांझअदायनकेवहौभेदभरेमनरंगमैंबोरत ॥ छींनमहा लचकीकटिजातनिघातसौंहोतहैंग्रीवकेढोरत ॥ नागरकेदृगतीषेन कीतबडोठगडैंजबपीठमरोरत ॥ १९ ॥ राजतरानीजसोमतिपैंदुलही पियछैलछिलैंहितजोटैं ॥ कैसैंनिसंकानिहारैंछकेछाविबीचपरीकुल कांनिकीपोटैं ॥ लाजझुकेदृगनागरिकेतिरछैंचलिचूरैंदुकूलकीओ टैं ॥ दोऊमैंहोतनकोऊलषैंवेसनेहसौंभीजीचितौंनकीचोटैं ॥ २० ॥ चंचलताज्यौंलताल्हकैंगुनकीसलितारसरंगाभिजावत ॥ हारनिबा रछुटेनकेभारनिलंकलग्योलचिकैंबीचजावत ॥ अंसतमूराफन्यो

छबिसौंचटकीलीअंगेटअदाहैंदिषावत ॥ कांननिभावतनैंनछकावत नागरिसुंदरस्यामैंरिझावत ॥ २१ ॥ आईगांवगौंनैंतनसौंनैंसेसलौं नैंनैंनभीररूपकौतिगकीव्हैंरहीसुव्हैंरही॥ दिनकंजमालसीहैंरैनिकौं मसालसीहैंफूलीद्रुमडालसीहैंनैंरहीसुनैंरही॥ जौंन्हजोतिजामिनीसी नागरियादामिनीसीदेषिघनस्यामैंमनदैंरहीसुदैंरही ॥ षोलैंमनमूं दैंमुषनीचीरुषभीनीसुषहरिहूकोहरिमनलैंरहीसुलैंरही ॥ २२ ॥ तेरे नैंनमेरेनैंनमेरेनैंनतेरेनैंनऔरठौरचलिबेकौंदीठकैंनपगहैं ॥ तेरीप्रीति मेरीप्रीतिमेरीप्रीतितेरीप्रीतिप्रीतकीप्रतीतदोऊवोरबैठीलगहैं ॥ तेरेप्रा नमेरेप्रानमेरेप्रानतेरेप्राननागरियाएकप्रानजानैंसबजगहैं ॥ तेरोमन मेरोमनमेरोमनतेरोमनमेरोमनठगिबेकौंतेरोमनठगहैं॥२३॥नैंणसौंनैं णामिलायाजद्यांहीकोकालिजासोक्यौंहीकाढिलियोहैं ॥ एकघडी भीघरांनहींआलगैंआवैंभरयोभरयोझांरोहियोहैं ॥ सावलीसूरति देषैंबिनांबाईहायछिणेकनजायजियोहैं ॥ हौंसांमरांमिलबाकीक रांकांईकांन्हजीकांमणमैंनैंकियोहैं ॥ २४ ॥ फैंटासीसकेसरीसुदे सरीत्रनायबांध्योतापररतनपेचसोभानवभालकी ॥ बदनमयंकबं कभौंहैंबिचबैंदीलालकरतबिहालसैंननैंननिबिसालकी ॥ लटघुघ रारीनिटनागरकपोलनिमैंरंजितकिरनबीचकुंडलकेहालकी ॥ ऊंची नासाबेसरिसुअधरानिमंदहासबसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी २५ कालिंदीकेतीरलतापरसतनीरतहांठाढेपरछैयांस्यामललिततमाल की ॥ लकुटीलपेटपायछबिसौंलटकिरहेछुटेबंधहियसोभामोतिनके जालकी ॥ उठीभौंहैंझुकेनैंनप्रियाध्यानआसवसौंरलकैंअलकजुग पवनसचालकी ॥ मुषसोभालसीप्रेमगसीजियनागरकैंबसीउरऐ

सीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ २६ ॥ नीलघनराजतबरनतनसोभादेत
रंगरंगआभानगअभरनजालकी ॥ कंचनदुकूलछोरदुहूंओरफहरा
ततैसीझुकिझूलनिललितबनमालकी ॥ संगसुरभीनअंगरंजितपौ
होपरैंननागरलटकिगतिगंजतमरालकी ॥ कंवलफिरावनिओआंव
निअनूपलसीबसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ २७ ॥ आवैंघरी
ज्यौंभरीहीघरीघरीदेषतरूपरहैंउघरीहैं ॥ मूंदीमुंदैंनहींरूंदैंहीमार
तबावरीरीझकैंरंगभरीहैं ॥ टारीटरैंनडरैंनागरएपरैंउररांनीअमांनी
परीहैं ॥ जातनहींरपियांसपियांअंषियांरिझवारनपैंडैंपरीहैं ॥ २८॥
देषतहीअटकीअतिहीहठकीनटनागरसौंनटरीहैं ॥ जोहूघरीकनदेषैं
हरीतोपरीअंसुवांनकीहोतझरीहैं ॥ मोहूकोंव्हैंकारिमोसौंसपीनरहैंरी
रषीअरिव्हैंकैंअरीहैं ॥ जातनहींरपियांसपियांअंपियांरिझवारनपैं
डैंपरीहैं ॥ २९ ॥ रूपकीरीझमैंभीजिगईअतिरीझहीरींझमैंरीझभ
री.हैं ॥ रीझनदीउमडीरहैंदीठमैंलाजहूरीझिगरीसगरीहैं ॥ आपुन
रिझिरिझाइहैंमोहूकौंनागरमोमतिरीझढरीहैं ॥ जातनहींरपियां
सपियांअंषियांरिझवारनपैंडैंपरीहैं ॥ ३० ॥ भांतिकितौसमझायर
हीपैंनमांनतयेउनमादभरीहैं ॥ नांहींरहैंउररैंउतजअपिलाजजंजीर
नसौंजकरीहैं ॥ नागररूपकीरीझकैंचावरीव्हैंलडबावरीसीबिषरी
हैं ॥ जातनहींरपियांसपियांअंषियांरिझवारनपैंडैंपरीहैं ॥३१॥ कैंसे
घरीकहौंरूसरहौंएतोनैंननिमेषकीओटसहैंनां ॥ नागररूपकेआग
रसौंचितनैंकहूअंतरधीरलहैंनां ॥ देषतहींसुसक्यायपरौंरूपमेरीरूपा
इकीटेवगहैंनां ॥ जाछिनव्हैंभटभेरचितौंनकीताछिनमानकोमानर
हैंनां ॥ ३२ ॥ भालमहावरओठनिअंजनसौंहैंहसौंहौंसोआनन

आंनैं ॥ आवैंझुकीपलपीकभरीरिसभ्राननभौंहकीतांननतांनैं ॥ रैंनकेजागेतैंरूपजग्योमुकरैंकपटीहठठांननठांनैं ॥ नागरस्याम सौंमानकरौंपैंअमानीएलोयनमांननमांनैं ॥ ३२ ॥ तेरेनैंनबानउर मोहनकैंलगेआनतबतैंनवाकैंवीरधीरठहरायहैं ॥ पलकनिमूंदिमूंदि गहरेउसासलेतहोतनसचेतमुषरटैंहायहायहैं ॥ जमुनांकोकूलकुंज सीतलकुसमपुंजलगैंतनतातेतेजाविषमबलायहैं ॥ एरीचलिनागरी तूसींचिसुधाचाहानिसौंआंपिनिकेघायनकौंआंखैंहीउपायहैं ॥ ३३ ॥ बिछुरेहैंमोहनहमारेफिरवादिनतैंअंषियांपियूषिमुषपांनहूनकीनौंरी। रौंमरौंमरोवैंकाहिसोवैंकौंनकैंसीभांतिछूटचोरंककरतैंरतनरंगभीनौंरी ॥ एकबेरआयतैंहूंदीनौंहोसुपनाफिरिफूंकिनेहआगिसुदुषतमनमीनौं री ॥ अहेबजमारीबहुबैरानिनिगोडीनींदनागरामिलायतैंउघरदुपदी नौंरी ॥ ३४ ॥ मनहीकीथिरतासौंसूरतागंभीरताईमनहीकीथिरता ईसबैदुखकौंदहैं ॥ मनहीकीथिरताइचहियतधर्ममांझमनहीकीथिर तासौंकाजसबहीलहैं ॥ मनहींलगायाथिरकीजैंहरिभक्तिमांझनागर चरनाचितजबाथिरव्हैंगहैं ॥ कलिकालपवनझकोरजोरझिकुरातइहम नदीपककीलोयथिरक्यौंरहैं ॥ ३५ ॥ (अथ अष्टक ) बोलतहैंतुत रातहरैंमनचंदकौंमांगतहैंकरिआरो॥ कंदुककौंघुटरूंमनिआंगनधा दैंजग्योमतिप्रानअधारो ॥ केसरिचित्रकपोलनिमैंहगकंजनअंजन दैंजानियारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंननिमांझवसोनितनागरनंददुलारो॥ ॥ ३६ लालकेकौतिकमांझपगीललनामिलिआवतहोतसंवारो ॥ दैं चुटकीचुचकारतहैंबिहसैंहुलसैंतनसांवरोबारो ॥ कंठलसैंबघनांमानि भूषनचंदसोआननकोउजियारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंननिमांझबसो

नितनागरनंदढुलारो ॥ ३७ ॥ छत्रकियोगिरकौंकरबामधरयोछि
गुनीव्रजकोरषवारो ॥ मोदमईसबगोपबधूमघवाजलढारिमहापचि
हारो ॥ चंद्रिकाचारुबनीबनमालबिलोकतआवतमैंनतवारो ॥ याछ
बिसौंमेरेनैननिमांझबसोनितनागरनंदढुलारो ॥ ३८ ॥ जैंवतछाक
कतूहलसौंहरिलेतहसैंकरकोपनवारो ॥ आयोहुतोअभिमानधरैंबि
सरयोसबग्यानबिरंचिबिचारो ॥ मंडलगोपकुमारनकैंमधिसोहतहैं
वनसेघटवारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंनानिमांझबसोनितनागरनंदढुला
रो ॥ ३९ ॥ चित्रितिहैंतनधातबिचित्रधरैंसिरमोराकिरीटसुढारो ॥
गौरजसौंमुषमंडितयौंअरबिंदपरागभरयोजनुभारो ॥ भावतगोपकु
मारनमैंवहआवतलालजसोमतिवारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंनानिमांझब
सोनितनागरनंदढुलारो ॥ ४० ॥ लाललसैंपगियांनवलालकैंपीतझ
गातनघूंमघुमारो ॥ मालमनोहरमोतिनकीउरकैंउरकैंमधिआनंद
भारो ॥ गोरिचकोरनिकेचितकौंमुसकायहरैंव्रजचंदपियारो ॥ या
छबिसौंमेरेनैंनानिमांझबसोनितनागरनंदढुलारो ॥ ४१ ॥ मोतिन
कीसुथरीदुलरीगरसोहतसुंदरसीसटिपारो ॥ आननपाननरंगरच्यो
निरखैंचखचंचललोचनतारो ॥ गोकुलगांवगलीबिहरैंलियेंकंजक
लीकरस्रूपउजारो ॥ याछबिसौंमेरेनैननिमांझवसोनितनागरनंदढु
लारो ॥ ४२ ॥ ठाढोत्रिभंगानिसौंमुरलीमुषसुंदरताहरैंकामकोगारो ॥
सांवरेअंसनिपैंपियरोपटुवेसरिकेसरिषोरिनिहारो ॥ गुच्छनकेअवतं
समनोहरगुंजनकोहियहारढरारो ॥ याछाविसौंमेरेनैंनानिमांझवसो
नितनागरनंदढुलारो ॥ ४३ ॥ सबैंदेवदानवप्रकोपैंमिलिएकओर
सातसिंधुहूज्यौंदयोचाहतवहायहैं ॥ आवतपहारचलिचूरकारिबेकौं

कायधावतदिसानितेजेदिग्गजकहायहैं ॥ नागरमहारथीनिकेवरू थचहूंघांतैंबीरतावलगिब्रह्मअस्त्रनिदहायहैं ॥ एतेपचहारिरहैंतऊन पिसतबारज्याकैंएकअर्जुनकोसारथीसहायहैं ॥ ४४ सषीफूलतोसू लसेसेझकेलागतजागतवासुररैंनगई ॥ सुषपांनओपानहलाहलसे लगैंबैरीसबैंगृहभामभई ॥ हितनागरकैंनिकरैंजियराफिरआवतआ सतैंरीतिनई ॥ चितचाहिसरैंनगरैंपरीरूपसुनोजलगोयहनेहदई ॥ ॥ ४५ ॥ एरेमनमेरेतोहिचंचलहीसंगदेकैंनीकैंबहरांउरैबहरिबह रांनिमैं ॥ चंचलहीचंद्रिकारुचंचलहीनूहैंतहांरहिकैंछबीलीवाफ हरिफहरांनिमैं ॥ कंपतहैंकुंडलद्दगंचलकटाछिनतैंउनिहींमैंनूह्वैहै हरिहहरांनिमैं ॥ नागरमुपारबिंदमांझनकबेसरिकेमोतीमतवारेकीथ हरिथहरांनिमैं ॥ ४६ ॥ बदनहसौंहैंबैठीसौंहैंप्यारीप्रीतमकैंउरज उठौंहैंसोभाहारनसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंश्रौंनाकि धौंमंत्रधुनिमीनकेतकैंनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचौंकाकीचमकहोत अछिनअलच्छनकटाच्छसरदेतहैं॥नागरियावोटदैंतंबूराहासिहेरिहेरि फेरिफेरितानानिफिरांयैंमनलेतहैं ॥ ४७॥ सीतलसुगंधपौंनमनकौंह रनलाग्योचंद्रमाढरनिलाग्योसूचिंतबिहानकौं ॥ रहीरैंनथोरीरंगबो रीकौंननींदपरीउठीअकुलायकैंरिझांवनसुजानकौं ॥ चातुरपरम प्रीतआतुरयानागरिकैंकंटकैसैंदाजैंकहोकोकिलासमानकौं ॥ आ यगीअटारीपरछायगीसुगंधतबगायगईतांनानिरिझायगईप्रानकौं ॥ ॥ ४८ ॥ जावनकौंसवलोकरटैंहरिकेलिविधानपुरांनपुकारैं ॥ कुं जगलीनिगलीअजहूंजहांगावतानित्तनवानिविहारैं ॥ नागरतापनसैं मनकेतुलसीबनकेद्रुमपुंजनिहारैं ॥ यागृहमैंजोबनैंनबनैंकहियोहम

कौंवावनैंनविसारैं ॥ ४९ ॥ सीपेकुलछनव्हैंलडबावरेमैंसमुझायसु केझिझकारे ॥ मूंददयेपलबीचकिंवारानितोऊरहेनाकितोपचिहारे ॥ सुंदरताईकौंजीततजूपमैंहारतहैंमनसेधनभारे ॥ नागरपेलैंबिनांनर हैंभयेएट्टगरूपजुवारीहमारे ॥ ५० ॥ आगैंकह्योसमुझायकितोजि यनावेरषूंनकरैंइनिआगें ॥ आगैंनमानीअमानीमहारनसूरज्यौंपाय दैंआगैंहींआगैं ॥ आगैंविध्योसररूपकटाच्छनिताछिनतैंचितचैंनन आगैं॥आगैंलगेसोतोसालतहैंअवलागतनागरसालिहैंआगैं ॥५१॥ मं दहोतचंद्रिकाचिराकैंलपिफीकीलगैंमुपपटटारकैंअगौंहींजबबढहीं॥ सोरपरैंसुधरानिकेजोरपरैंजीवनपैंकबिनकैंमोंनहोतउपमानपढहीं ॥ तबरंगदेवीसीसुगायगतिलैंकैंचलैंनागरजकीसीलगिमादकसौंचढहीं नैंननतैंनीरकढैंधीरकढैंहियतैंसुवाहवाहहायहायमुपमैंतैंकढहीं ।५२। रूपनिकाईमहासुधराईदुहूंनतैंलैंसबकेमनलूटे ॥ जानैंलपीछबिरास सपीतबताहियेंप्रेमकपाटसेपूटे ॥ वाकीसबीहुलिपीनगईगुनिनांहिं सकेकहिहारीअहूटे ॥ चित्रलिपैंयाकितेकबिनागरकाननहाथलगा यकैंछूटे ॥ ५३ ॥ गुनिसलितासीरासरंगनिविलासीचारुचंपकलता सीचपलासीस्यामघनकी ॥ ग्रीवकीढुरांवनिडुलांवनिसुबाहुनकीमं दधुनिगांवनिभुलाईसुधितनकी ॥ पारदज्यौंथारथहरातनृत्तअवनी मैंदेषीरवनीमैंकछूबातनकहनकी ॥ ठोकरनिठेलिठेलिपायतररूंद रूंदगतिमैंकुगतिकरीनागरयामनकी ॥ ५४ ॥ एविधनांयहकी नौंकहाअरमोमतप्रेमउमंगभरीक्यौं ॥ प्रेमउमंगभरीतोभरीहुती सुंदररूपकरचोतैंहरीक्यौं ॥ सुंदररूपकरचोतोकरचोतामैंनागर एतीअदायेंधरीक्यौं ॥ जोपैंअदायेंधरीतोधरीपरयेअंपियांरिझवार

करीक्रयौ॥५५॥गानकियोवहैपाननिपातछुटीलट आननरंगभरचोई॥ मौनहीमैंझलकीसुघराईहियेगुनकोसनसोउघरचोई ॥ पीचितचंच लकौंप्यारीनागररिघेरिअदायनिमैंपकरचोई ॥ लैंनितमूराहीकोमैंल यौमनगायब्रोधौरह्योआगैंधरचोई ॥ ५६ ॥ दीठकीलाजजंजीरानि तोरिषरेबिपरेपकरेऊरहैनां ॥ धीरबिनांभहरायउठैंठहरैंनकहूंजक जीवपरैंनां ॥ नागररूपहिरूपलगीरटनांहिकछूकहिजातहैंबैंनां॥ ला गैंनऔषदग्यानकहूंभयेरीझकीबायसौंबावरेनैंनां ॥ ५७ ॥ दासकी छापदईतुमहींतुमहींसतसंगतैंदेतक्यौंटारैं ॥ जांनिकैंआपनिवारत मोहिसुकौंनपैंरावरीचूकपुकारैं ॥ हौंतोसदाहरिचाहतयौंअरपौंचि तपंकजपायतिहारैं ॥ नागरऔरहिंसौंपतवेबिगरेमनकेमनमेंशेबि गारैं ॥ ५८ ॥ ज्यौंज्यौंइतदेपियतमूरपबिमुषलोगत्यौंत्यौंसुपरासी ब्रजवासीजियभावैंहैं ॥ पारेजलछीलरदुषारेअंधकूपाचितैंकालंदीकैं काजमहामनललचावैंहैं ॥ जैसीअबबीततसुकहतनआवैंबैंननागर नचैंनपरैंप्रानअकुलावैंहैं ॥ थोहरफरासदेषिदेषिकैंबंबूलबुरेहाय हरेहरेवेतमालसुधिआवैंहैं ॥ ५९ ॥ भूमिहरीद्रुमझूमिरहेलषिठौररहैं दृगठौरसुहांतैं ॥ न्यारेसेलोगरंगीलेतहांकेमिलैंहंसिप्रेमहियेसरसातैं नांवनआवैंरूआवैंगरोभरिनागरनांवहिलेतहैंयातैं ॥ सांवरीएकन दीपैंबसैंहैंकहोकिनकोऊवागांवकीबातैं ॥६० ॥ नांहितुलैंवइकुंठहू कोसुषघोषकीजोकबहूसमतोलैं ॥ जेउंहिंठांसबआनंदमैंगिरधारी केवांहकीछांहकलोलैं ॥ नागरटारिदयेजिनकौंअबवेभटकैंमनमा रिमलोलैं ॥ देसबिदेसअभागीफिरैंवडभागीजोईब्रजभूमिमैंडोलैं ॥ ॥ ६१ ॥ ब्रह्मकमंडलीब्रह्मसरूपकहांलौंकहौंगुनकेगनभारे ॥ ला

येभगीरथजूतुमकौंतबतैंतुमजीवअनेकउधारे ॥ नागरकीसुकितीक हैंवातकरूंविनतीपरूंपायतिहारे ॥ जेरहेआडेव्हैंकैंब्रजवासकेंगंगातेकाटियेपापहमारे ॥ ६२ ॥ जननीउंहिंपुत्रपुनीतकींहोरनसोएलगैंबहोतीरथकौं ॥ भुवमांझलैंआयेभगीरथजूताकेंदीजैंबडाईकितीरथकौं ॥ करियेलैंकृपाअवनागरपैंसुकहूंतुमआदिकतीरथकौं ॥ तुलसीवनछाडिभ्रमौंनकितैं अबहौंजमुनाजलतीरथकौं ॥ ६३ ॥ आईतूषरिकतैंवसांझवीतैंऔरैंदसामोसूंकाहिसांचीजिनरापैंमनअरस्यो॥ पाननिकोरंगमिटिआननपैंरंगचढ्योनूटीमोतीमालउरआनंदहूसरस्यो ॥ स्वेदहैंकिनीरतनचहूंटतचीरतेरैंनागरियाआजकहूंमेहहूनबरस्यो ॥ तोकुलकीसौंहकहिब्राजुमदमोकलयागोकुलकीजीवनिगुपालकहूंपरस्यो ॥ ६४ ॥ सवैयो ॥ इतआवतहैंवहरंगभरीनितऔरतियांनकैंसंगरली ॥ पटअंगलपेटैंतऊवेअंगेटैंदुरैंनाहिंसांचैंढरीज्यौंभली ॥ लषिनागरकौंमगआगरमैंबदलैंगतिनारिनवायअली ॥ दबिलाजमैंआंषैंछिपायबडीमुरिढूरसौंदेषिकैंजायचली ॥ ६५ ॥

## ॥ अथनीतकेकवित्त ॥

हीराहीकेफूटेतैंविकांनीकनीहाटहाटजांनताजिहांनगुनफूटेंतैंसवैगयो ॥ फूटभईलंकामैंविभीषनमिल्योहैरामैंरावनसहतकुलनासप्रानकोठयो ॥ कहैंकबिसंतजेदुजोधनसेमहाबलीफूटकेपरेतैंअभिमानमनकोनयो ॥ नरदकेफूटेंउठजायबाजीचौपरिकीआपसकेफूटैंकहोकौंनकोभलोभयो ॥ ६६ ॥ ॥ कवित्त ॥ केकईकेकहेतैंउदंगलअमंगलभोदसरथप्रानदैकेंउर्द्धलोककौंगयो ॥ मुंथरीकेकहेतैंजुसर्व

सगमायोरानीताकोअपबादसदालोकनमैंहैनयो ॥ जांनकीकेकहेतैं गएहैंऊठदेवरजूभएबिनभाभीदसकंधहरिलैंगयो ॥ नागरानिपटक थाजगमेंउजागरहैनारिनकेकहैंकहोकौंनकोभलोभयो ॥ ६७ ॥ सवैया ॥ ज्ञातकेहैंहमतोब्रजबासीसुनांहिरहिऔरजातकीबाधा ॥ देसहैंवोपनचाहतमोपकौंतीरथश्रीजमुनासुपसाधा ॥ संतनिकोसतसंगआजीवकाकुंजविहारअहारअगाधा ॥ नागरकेकुलदेवगोवर्द्धनमोहनमंत्ररुइष्टहैंराधा ॥ ६८ ॥ कवित्त ॥ ऊग्योउडराजकेसोसमयोहैंआजप्यारेसुनियैंजूकहतसुजांननिकेनाथमैं ॥ लालमुरलीसौंसुधाअधररलीसौंकछुपूरतकरोलैंरागरंगभरीगाथमैं ॥ तबहैंतृभंगअंगनागरबजाईबैंनगायउठीप्यारीतहांप्रीतमकेसाथमैं ॥ पायडिगुलांनेस्यामरहेससवांनेंसेपैंहाथमैंरह्योनमनबंसीरहीहाथमैं ॥ ६९ ॥ आवतहीलपेजेहरिकौंमनजेहरिलैंगएहेलगिगोहन ॥ घूंघटमोहनलैसकीजासमैंमोहनकेमनकीयहमोहन ॥ नागरनागरिभैंटकैंकौतिकनागारिऔरहूठाढीहैंजोंहन ॥ देषिरहीनाहिंदेषिरहीमुरिसौंहींहसौंहींकसौंहींसीभौंहन ॥ ७० ॥ कवित्त ॥ औरबंगलाजोकुम्हिलातधरयोधूपमांझयहबंगलासुमेहहीमैंकुम्हिलांवैंहैं ॥ औरुबंगलापैंभंवैंवापुरेभंवरअरुइहिबंगलापैंवृद्धबालकभ्रमावैंहै ॥ औरुबंगलाकेहितमालनिसुपीव्हैंजातइहिंबंगलातैंहलवाईसुषपावैंहैं ॥ औरुबंगलापैंअतिआपैंललचावैंसंतसीतलकेबंगलापैंजिभ्यालल चावैंहैं ॥७१॥ सवैया ॥ अंषियानिकेधर्मनिवाहकभोरामिलेजमुनाजगजोरनिसौं ॥ तहांन्हायगुपालओबालहूघाटमैंबैठबंधेहितडोरनिसौं ॥ मुषमौंनव्हैनागरमालालियैंतिरछेचितवैंद्दकोरनिसौं ॥ परमेसुरकेज

पकोफलसोजपक्यौंनिबैरंदोउऔरनिसौं ॥ ७२ ॥ मंजनपंजनने नीकियोतनमोतीसेधोतीफबीहैंतियाकी ॥ मोहनगोहनमैंललचेल लनालहकातिज्यौंलोयदियाकी ॥ नागरिजूरादियैंगडुवाकरपंकति पायनिमैंबिछियाकी ॥ न्हायचलीजमुनांजलमैंकिलगायचलीसंग आंषैंपियाकी ॥ ७३ ॥ त्यागिसबैंपानिहारनिकोसंगआवतजातअ केलीभईक्यौं ॥ काहेउदासउसासभरैंचितचक्रतसीतनमांहितई क्यौं ॥ नागरकारेबिस्यारेसौंपायबचायनदीनौंतैंहायदईक्यौं ॥ दी सतहैंअबऔरहीघाटसुघाटकौंछोडिकुघाटगईक्यौं ॥ ७४ ॥ पाछैं गुपालआगैंगुरुलोगरहीअतिलाजनिसौंदबिनीठमैं ॥ ग्रीवफिरायन चाहिसकीमुरिसौंहैंनआएवेमेरीयेदीठमैं ॥ नागरप्यारेकेदेषनिकौं सषिवासमैंआंनीयहैंउरईठमैं ॥ आंषैंभईमुषपैंकिहिंकाजयाबेरक्यौं आंषैंभईनहिंपीठमैं ॥ ७५ ॥ गोकुलगांवगलीमैंमिलीगोरीऊजरीसा रीउठीतनमैंलसि ॥ आवतदेषिकैंमोहनकौंरहिगोहनसौंहनजौंन्हज नूंबसि ॥ नागरनारिकैंढचोनटरीव्हैंनिसंकतबंकजुटीभ्रुकुटीकसि ॥ पातरेलंककीलंगरिग्वारिसुआंगुरीगालगडायगईहसि॥७६॥कवित्त॥ सुनीहीकहावतसोसांचीकीनीमाछरनिछोटेइतेषोटेमहादसनकराल हैं ॥ सूइनिकीसज्ज्याहैंकिबिषकीफुंहारैंपरैंकिधौंलेपकैंवचकोकरैं तनलालहैं ॥ सुरनरनागरयेसबैंनाकआयेतनकाटिकाटिषायेभ येनिपटबिहालहैं ॥ बिष्णुदुरेजलमांझब्रह्माकंजनालमधिमहादेवहा रमानिओढीगजषालहैं ॥७७॥ सवैया ॥ वेबनबासकुठोरकरैंइनवा समुषांबुजकोपनपारचो ॥ वेषासिआगिबढावतहैंइनकांननमैंरसअ मृतडारचो ॥ नागरवेनहिंआनंददाइनआनंदलैंब्रजमैंबिसतारचो ॥

देषोअरीहारिकोब्रंसुरीइनकैंसेकुबंसकोनांवसुधारचो ॥ ७८ ॥ बन बेलनिमांझअकेलीगईआजुबीननिकौंनवकुंदकली ॥ तहांमोहनमो हेभरैंअंसुवांनिरहीलषिहौंद्रुमछाडिगली ॥ पटपीतगिरचोसुधिभूले हैंनागरअंतररूपसमाधिरली ॥ कदलीकौंरहेपररंभनदैंअलीजांनि कैंवेव्रषभानलली ॥ ७९ ॥ कवित्त ॥ आगैंहुतीऔरअबऔंरसौंभईतू औरठौरनरहताछिनछाडीसंगसषियां ॥ मोहनकोनांवसुनिरूषीन्हैल जौंहिंहोतजाततिरछौंहींठाढीरहतनराषियां ॥ ऊंचीभौंहैंनीचीदीठदी ठनमिलातसौंहैंनागरनवलनेहचापीरसचषियां ॥ भौंडीभलीजांनि बेकौंडौंडीतोनफेरैंकोऊऔंड़ीबातकहतकनौंडीतेरीअंषियां ॥ ८०॥ ललितापठाईपातीद्वारकाकन्हाईजूपैंइतैंकुसरातबातचाहैंसुभधुरकी दूसरोबिबाहकीनौंमोमनउछाहभीनौंलीनौंसुषसारनारिडारिरूपसु रकी ॥ बिवरसुसरारिमैंपधारिकैंबिहारकैंल्यायेबरवधूजसभयोसौं हगुरकी ॥ कामदुतिचूरतकीअबैंमृदुमूरतकीनागरपठैंहोलिषिसूरत ससुरकी ॥ ८१ ॥ कहतबिसाषावदिबडीआंपैंप्यारीजूकीजैसीपासिं धुकेझकोरनिकोझपियां ॥ ललितानमानैंहठठानैंयौंबषानैंआंपैंला लकीबडीहैंजनुपंकजकीपषियां ॥ नागरवहंसिसुनिनैंननैंनजोरिबे कौंसरकेहैंनोरैंझूमिआईसबसषियां ॥ रीझिप्रानवारेनसम्हारेअंगरं गभरीजामसैंमपीहैंलगिआपियांसौंअषियां ॥ ८२ ॥ मोहनीलतातैं मधुमंजरीश्रवतकैंधौंकाननमैंरीझकीदुहाईसीफिरतरे ॥ मादिकसौं भरीषरीकोमलमिहींनमहालहलहातहरईसुकंठमांझअतरे ॥ सांच भरीसौंहनोंचटकंदारचिकनौंहींबीनहूकौलगतकठोरसंगगतरे ॥ ना गरमैंजानिकैंकहींहीफिरजांनिलेहुतांनयासुजांनकीसुजांनसुनौंमत

रे ॥ ८३ ॥ ग्रीषमविहारभौनसांवरेकैढिगगोरीक्रीडतसभासरसहेलीलियैंसंगकी ॥ होतजलकेलनिकेबिविधिविधानतहांबाढीहैंललकउरआनंदउमंगकी ॥ जासमैंभईजोसोभावरनीनजातमोपैंदमांकिउठीहैंदुतिदूनीअंगअंगकी ॥ नागरिवेकैसीलगैंतिरततरंगनिमैंपानीपरपावकज्यौंफिरतफरंगकी ॥ ८४ ॥ राधामनमोहनकरतजलकेलिजहांछींटनिकौंखेलिसुषझेलिबिसतारैंहैं ॥ कैधौंव्रजचंदकौंकमोदनिकेमंडलमैंआवैंलषितारागनतननसम्हारैंहैं ॥ कैधौंसुरवृंदवैठेअलछबिमाननितैंनागरवेपारजातफूलनिकौंडारैंहैं ॥ कैधौंकिकालिंदीजूकैंदंमतिपधारेतातैंउच्छवमगनमनसुकताउछारैंहैं ॥ ८५ ॥ तीरथसनांनीअरुबडेबडेमहादांनीजिनकीकहांनीजगजौंन्हजिमछैरही ॥ जपियांनिजपलीनंभोजनअलपकीनेंकोनेंतपतपसीनिवुद्धिव्रह्ममैरही ॥ सुरओअसुरनरनागपुनदेवरिषजिनकीचलावैंकौंनरमाहूरितैंरही ॥ नागरवताएतत्वतिनहूंकोतत्वचारुसुषनिकोसारव्रजनारिलूटिलैंरही ॥ ८६ ॥ सेजसुषसिंधुकेझकोरानितैंझिकुरातकमलकलीसीरसबिलसीअलिंदकी ॥ दुहूंओरदीनैंकरकापियांसषीओस्यामबीचआभिरामप्यारीमूरतआनंदकी ॥ टूटेहारछूटेबारअंचरहूवेसह्मारनागरिचलनिनीकीलागैंमंदमंदकी ॥ बासवसभौंरभीरआवतहैंपाछैंपाछैंआगैंआगैंफैलतउजारीमुषचंदकी ॥ ८७ ॥ सुंदरसुघरस्यामराधाठकुरायनजूजोरीजगभूपनसुआनंदअगमगी ॥ तारकसीबसनजवाहिरकीजेबलसीवैठेकुरसीपैंप्रीतनौतनसगमगी ॥ जरवफ्तीसमियांनेंसमैंदांनकिस्तसोजनागरअगरधूमिधूंधरिरगमगी ॥ दिपैंदीपमालछविछूटैंअगनजंत्रजालअजबजलूसजोतिजीनतजगम

गी ॥ ८८ ॥ सवैया ब्रह्मपुरीसिवजूकीपुरीअरुइंद्रपुरीहूकहाजिय धारौं ॥ देवअदेवनिकीजेपुरीपुनिनागपुरीसुखतैंननिकारौं ॥ औरु पुरीभुवमंडलकीतिनकेबकितेकहौंनांवउचारौं ॥ नागरयेजुकहीसो पुरीसबगोकुलरावरऊपरवारौं ॥ ८९ ॥ मांगौनमोषभयोबासघोष मैंऔरअबैंनकछूजियधारौं ॥ यारजकैंबिनजोजगमैंसबसोसुषलो भहितुच्छबिचारौं ॥ लछनछत्रपतीनकीलच्छमिनागरनैंननिहूनानि हारौं ॥ राजसबैंभुवमंडलकेव्रजमंडलऊपरवारिकैंडारौं ॥ ९० ॥ कवित ॥ हासीहैंतिहारैंभायेऔरनकेघरजातनाहकपरायोमनलैंन क्यौंउमहियैं॥ तुमहीकैंवडीवडीलालएअनोषीआंषैंबरजोजूंकेसैंलो कलाजलैंनिबाहियैं ॥ दोऊकरजोरजोराबिनतीकरतहहानागरहोनैंसु कदयाकोरीतगाहियैं ॥ डारतहैंमारैंपरीगोहनहमारैंइहिंरावरीचितौंन कौंसह्यारैंनैंकराहियैं॥९१॥सवैया॥घूंघटओटकियैंहूरहेनहिंहैंउतपाती मोछातीकेदाहक ॥ न्यायकियेबिधनामुषकारेमहासठयेहठकेजुनि बाहक ॥ चारबिचारनजानैंकछूअतिआतुरनागररूपकेगाहक ॥ मे रेइनैंननिगोडेबुरेमनदीनौंफसायबिचारोअनाहक ॥ ९२ ॥ कवित॥ सुंदरअंगेटहिंलपेटैंपटलाजभरीआधैंमुषघूंघटकीसोभासरसातहैं ॥ ग्रीवकौंझुकायेंओझुलायेंबांहलियैंमौंनसंगसंगनागरिकैंभौंरभहरात हैं ॥ मोहनमैंमोहनजूनिकसेहैंआयकरितिरछीचितौंनचोटचलीमस क्यातहैं ॥जैसैंभलेभटहथछूटककेहाथकीसुओछपैंअलछिद्दकहत्थी बहिजातहैं ॥ ९३ ॥ सवैया ॥ नागरमैंनसरोवरमीनकिपंकजकीपं षियांअनियारी ॥ स्यांनैंमांटौहिरणांनींबतावियैंजूवोतमेसहूसोचि बिचारी ॥ गोयाममोलेयाखंजनपासेतारीफकरैंक्याजुबांनहमारी ॥

बीजोनमौंढलागैंकाइओपमांकान्हजोरीआंष्यांकोमणगारी ॥ ९४॥ कालिंदीकेतटहाटकवेलिसीन्हायकछूकढिठाढीयेहोती ॥ भीजिकैं बारलगेसटकारेओतामैंदिपैंदुतिज्यौंतनमोती ॥ देखिगुपालहिंवेर लगावतनागरऐसीप्रवीनहैंकोती ॥ जोरतनैंनमरोरतभौंहनिचोरत चित्तनिचोरतधोती ॥ ९५ ॥ लैंचुबकीजमुनातैंकढीतहांअंगनकोदु तिदूनीयैंबाढी ॥ भीजेमिंहीपटकीजुलपेटमैंआछीअंगेटरहीफबिगा ढी ॥ औरलईतनधारिकैंधोवतीबारानिचोवतचित्रज्यौंकाढी ॥ दे षिकैंनागरईठफिरीवहिपीठदैंअंगअंगोछतठाढी ॥ ९६ ॥ कवित ॥ न्हायबडैंभोरवहअपसरसोईकौंहैसौंहैंमोहिगोधनकीचोरिचितलैंग ई ॥ चटकीलीधोवतीमैंजूराकीउचनिआछीपावरीपहरिपगपायल बजैंगई ॥ पातुरीअंगेटभलीभरतभरीसीगोरीपींडुरीदुरौंनमतिमेरी ललचैंगई ॥ नागरियाकौंनकैसेगोपकीबधूटीहायआईआगिलैंनकौं पैंदूनौंआगिदैंगई ॥ ९७ ॥ सवैया ॥ हैंयहनायकदछनछैलसुतैंअ नकूलकियोचितचोरहैं ॥ हैंअभिमानीसुआपनैंरूपकोदीनव्हैंतोसौं रह्योनिसभोरहैं ॥ हैंतनसांवरोगौररंगयोमनतेरईप्रेमपरचोझकझोर हैं ॥ हैंसुखदायकनैंननिनागरहैंब्रजचंदपैंतेरोचकोरहैं ॥ ९८ ॥ चं चलनातजिषंजननैंनभयेथिररावरेरूपकीओरहैं ॥ लायरहैंटकघूंघ टकीदिसबांधतप्रेमचितौंनकीडोरहैं ॥ तोमुषअमृतपांनछक्योछिन जाननतनांहिकितैंनिसभोरहैं ॥ नेहअमंदप्रकासितनागरहैंब्रजचंदपैं तेरोचकोरहैं ॥ ९९ ॥ कवित्त ॥ प्रातपुन्यकाललालकालिंदीकेकू लआपपरमपुनीतनीतऐसीधारियतुहैं ॥ अबलाअकेलीएकगोपबधू न्हायबेकौंआईअनजांनैंसोबयौंनिहारियतुहैं ॥ तीषेनैंनबांनानिकेघा

यनिसौंघूंमैंपरीतापैंधौंअनेकधनधामवारियतुहैं ॥ नागरनिपुनबडे कामकेहोवीरऐपैंतोरथकैंतीरकहूंतीरमारियतुहैं ॥ १०० ॥ सवैया ॥ सषिआवतआजअकेलीहरैंहरैंपायनिगाढेगडेकंकरी ॥ तहांमोहन सौंभटभेरभईउहिंगोहनबीचगईनंकरी ॥ गहिमोहिलईइंहिंभांतिभट्ट निधिपाईहैंनागरज्यौंरंकरी ॥ सुनिसोईकहावतसांचीहुईइतमारनौं बैलगरीसंकरी ॥ १०१ ॥ कवित ॥ आसनजटितनगबैठेरीजुग ललगिजगमगभूपननिजोतिफैलीचारती ॥ दर्पनकेमंदरमैंचहूंओ रजानीपरैंछांहधरैंवांहगरैंझुकतकुंवारती ॥कहीनपरतमोपैंआरतीकी प्रभाभट्टहौंतोभईलट्टूलखिसोभाउहिंबारती ॥ नवलसखीसरूपल हलहीछबिवारीकीनीलाजघूंघटसौंनेहभीनीआरती ॥ १०२ ॥ कब बइकुंठमांहिगायनचरायआएकौंनरिझवारिउहांबंधीप्रेमपासतैं ॥ क बबइकुंठमांहिमोहनींबजीहैंबैंनप्यारिनकैंहेतरासरंगकेबिलासतैं॥ क बबइकुंठमांहिकेलिकीनीइहांजैसीकहूंकैसीकैसीजियनागरहूलासतैं ब्रजहीसमंधीरूपलीलासबजगगाईपाईपरमेसुरहूसोभाब्रजबासतैं ॥ ॥ १०३ ॥ ब्रजहीमैंमोरनकेपच्छकोमुकटधारयोब्रजहीमैंरासकेलि करनहूलासतैं ॥ ब्रजहीमैंजूरादैंबनायोनटवतरूपब्रजहीकेलोगन कौंवांधेप्रेमपासतैं ॥ ब्रजहीकेफूलनिसिंगारेरहौंनिसद्योसब्रजहीके नागरकहांवैंगुनरासतैं ॥ ब्रजहीसमंधीरूपलीलासबजगगाईपाईप रमेसुरहूसोभाब्रजबासतैं ॥ १०४ ॥ छप्पय ॥ जहांवेणुवनसघ नतहांकहाअनलनब्रजरैं ॥ जहांमिलतमंजारिकहाकर्कसनहिंउच रैं ॥ जहांलुहारघरतहांकहाचिनगैंनहिछूटैं ॥ जहांहलैंमिलिकाच पात्रतहांकहानफूटैं ॥ कलहकलपतरुसीसवैंबहुतबसैंजुवतीजहां ॥

नागरियाउहांकलहबिनकहोंचैननिवहैंकहां ॥ १०५ ॥ मत्तवारुनीपानमदविघूर्नितहगघूंमैं ॥ नीलांवरतनगौरश्रवनकुंडलइकझूमैं॥ दुविदप्रलंबादिकजुदुष्टगतप्रानकरनकर ॥ कैरवक्रूरमदंधनम्रअतिकियेकरपिहर ॥ जादवेंद्रकुलकमलरविवकतृनवनपावकप्रलय ॥ प्रणवतनागरिदासनितिजयजयजयबलदेवजय ॥ १०६ ॥ जक्तभक्तिहैंबैरसुनीयहप्रकटकहावत ॥ जक्तकहतकछुऔरभक्तकछुऔरहिगावत ॥ जक्तभक्तिमेंवडोभेदलैंप्रभूकियासो ॥ जक्तकह्योजिंहिंकियोछियोनहिंभक्तिहियोसो ॥ कृष्णभक्तिसुपछाडिकैंजगकोभलोमनाइयैं ॥ नागरियाईहिंभांतिसौंकहोक्यौंनदुषपाइयैं ॥ १०७ ॥

## अथ बनबिनोद ग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीनंदलालगोपालबालजयति ॥ चौपई ॥ ब्रजबासनिकीपदरजध्यांऊं ॥ नंदकुंवारकतूहलगांऊं ॥ बनकीलीलालालुभाये ॥ लागतगायनसंगसुहाये ॥ १ ॥ कटिमुरलीलकुटीलियैंहाथ ॥ ब्रजबासनिकेलरिकासाथ ॥ पेलतपेलतगयेअटोर ॥ हरेचनांचितयेउहिओर ॥ २ ॥ पेतपेतसौंलागिरहेषेत ॥ डहरभरेलहिरैंसीलेत ॥ देषिदेपिकतरायेग्वाल ॥ वातबताईनंदकैंलाल ॥ ३ ॥ बालकएकबारतरहूक्यो ॥ ताहिदेषिरषवारोकूक्यो ॥ सुनतसषासब्रगयेपलाय ॥ बिचहरिपीतांबरफहराय ॥ ४ ॥ बरसांनैंकेग्वैरयैंआये ॥ देषिचनाकेषेतलुभाये ॥ पैठेंअछनधरतपगआछैं ॥ बूंटउपारतचितवतपाछैं ॥ ५ ॥ तहांरषवारनिलपिललकारे ॥ गारींदैंदैंसबानिनिकारे ॥ भाजेलरिकालैंलैंबूंट ॥ न्यारेन्यारेअपनीजूंट ॥ ६ ॥ गव

दाग्वालभजननिनहिंपायो ॥ मिलिब्रजवासनिपकरिमुकायो ॥ सहितगुपालहसैंफिरिफिरिसब ॥ गारिदेतहैंगवदरायतब ॥ ७ ॥ इनकाहूनहिंवाहिछुटायो ॥ हाहाषायपगनिपरिआयो ॥ फिरिमिलिभाजेदिससंकेत ॥ पीतांबरराहिगोउहिंपेत ॥ ८ ॥ उपरेचनांउहींपटबांधैं ॥ चलीपुकारनिधरिकैंकांधैं ॥ जहांबैठेकीरतवृषभान ॥ बकीतहांरपवारनिआन ॥ ९ ॥ पेतउजारिकैंगयेपलाय ॥ नंदगांवकेलरकाआय ॥ पटपहिचांनिहियेअतिहुलसे ॥ महरमहरिदोऊदेषिकैंहसे ॥ १० ॥ बहोतवात्सलभावसौंभरे ॥ पुलंकितअंगकंठगहबरे ॥ पीतांबरकीओढनीकीनी ॥ सोलैकैंराधाकौंदीनी ॥ ११ ॥ अंगसुवासरौमांचितभई ॥ कुंवरिकीसलजव्हैंआंपियांनई ॥ कितेकबेरपीछैंउठस्यामा ॥ पेलनिचलीसहजअभिरामा ॥ १२ ॥ आईजबसंकेतसघनमैं ॥ जहांछैलाछिपषातहेबनमैं ॥ सुनिआहटजान्यौंसबग्वारनि ॥ आईवहींपेतरषवारनि ॥ १३ ॥ भाजेदिसनंदीसुरग्वाल ॥ रहिगयेइकलेनंदकेलाल ॥ मिलबैठेदोउमीतमनोहर ॥ बातैंकहतभईहीजोघर ॥ १४ ॥ नावलैंलैंबतरानिसुहाई ॥ कछूसयांनपकछुभुराई ॥ राजतलाललंलीकैंसाथ ॥ मनलियेंहाथहाथलियेंहाथ ॥ १५ ॥ मोहनलालनेहसौंसने ॥ छीलछीलअपनेंकरचनें ॥ रापतप्रियाअधरनिबिचहरे ॥ मनौंबिद्रुमपरपन्नांधरे ॥ १६ ॥ पातपवावतहसतहसावत ॥ फूलनकेभूषनिपहनावत ॥ गउरस्यांमवातनिरसघुरे ॥ बैठेसघनद्रुमनिमैंदुरे ॥ १७ ॥ कबहुकमोरओचकउडभागैं ॥ कुंवरिचौंकिडरिउरसौंलागैं ॥ गावतडोलतदैंगरवांहीं ॥ दोऊबसोनागरमननांहीं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ दहीचपटिया

चोरिकैं, चोरेचंरिाकिसोर ॥ लालमननकेचोरअब, भयेचननिके चोर ॥ १॥ मथुरालीलाद्वारका, डारीमनपगपेलि ॥ वसीनागरीदा सहियएव्रजग्वैईकेलि ॥ २ ॥ समतअठारासैंजुनव, कृष्णपक्षमधु मास ॥ बनबिनोदकलग्रंथयह, कियोनागरीदास ॥ १ ॥ इतिश्रीव नाविनोदग्रंथसमाप्तं ॥

## श्रीनंदकुंवारजयति अथ बालविनोद ग्रंथ लिष्यते॥

दोहा ॥ सोरठा ॥ हियधरिनंदकुंवार, बरनौंबालबिनोदइक ॥ नंदमहरकेद्वारचहलपहलानितपेलिकी ॥ १ ॥ अथ अरिल्ल ॥ बैठेमोहनलालअथांयनिआयकैं ॥ चहुंदिसबालकवृंदरहेछविपायकैं ॥ पढततहांमधुमंगलसुपदसुभायको ॥ हसिहासिपरतगुपालकुंवरनं दरायको ॥ २ ॥

## अथ नायकामुष वर्ननं ॥

मधुमंगलवाक्य दोहा ॥ बैंनीआईउलटिकैं रहीभालपरिझूलि ॥ मनौंजतीकेसीसपैं, बैठेबगुलापांति ॥ ३ ॥ फटकरंगकीभौंहहैं, धूंमधौंरहरनैंनि ॥ मनमांनकचहलैंपरचो, देषतचंचलकांन ॥ ४॥ पटकीलीसीनासिका, अधरावलिरहिझूल ॥ दसनजीभरहिलट किकैं, लषिअटक्योमनमोर ॥ ५॥ ऊगेचिबुककपोलपरि, पीतरं गकेकेस ॥ मानौंकलीअनारपरि, भंवररहेलपटाय ॥६॥ अरिल्ल ॥ मुषबरन्यौंमधुमंगलसोकहियेकहा ॥ अबतनबरनतसुबलजुन्हैकैंक त्रिमहा ॥ बाढचोकउतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिहसि०॥७॥

## अथ नायकातन बर्नन ॥

सुबलवाक्य ॥ दोहा ॥ रनिशृंगासीग्रीवपरि, ऊगेहाथअनूप ॥ ज्यौंमुरगाबीछांनिपरि, बैठीपांषिपसारि ॥ ८ ॥ कुचसोहतल हिंगातरैं, ज्यौंवृच्छनिकेमीन ॥ नाभमनौंमुपासिंधको, कटहलसीक टिजांनि ॥ ९ ॥ गुप्तअंगझूलतरहैं, अनंनासकेरूप ॥ कंचुकिछी ननितंबविच, दियैंदमामोजाय ॥ १० ॥ चरनांनिकीसोभाकछूब रननकरीनजाय ॥ चोवाकैंचहलैंपरेमनौंकाछवादोय ॥ ११ ॥ इति ॥ अथ अरिल्ल ॥ भूषनबरनतयाकेअबैंसुबाहुजू ॥ सुनियेंसुंदर स्यामबढैंचितजाहुजू ॥ वाढचोकउतकचावसुबालसुभायको॥ हसि हसि० ॥ १२ ॥

## अथ याकेभूषन बर्नन ॥

सुबाहुवाक्य॥ दोहा ॥ सीसफूलसोभानिरषि, इकटकरहिगये दांत ॥ मानौंकांमरिगंठरिया, धरैंमूंडपरिदोय ॥ १३ ॥ नथमोती जगमगरहे, रसटपकततिहिंसंग ॥ ज्यौंहाथीकेसींगपरि, करततप स्याऊंठ ॥ १४ ॥ करनफूलदादुरमनौं, करतहैंसोरअकास ॥ सबदांतनिकीचौंपतरि, घंटावलिछविदेत ॥ १५ ॥ सोहतकंकनकं ठको,तामैंघूघरनाद ॥ कारेधुरवाकुचनिबिच,बाजूबंधविसाल१६॥ पौंचीमुद्रावलिललित, कांपनिमैंफहरात ॥ बजितकिंकनीपीठप रि गुफासिंघघुररांन ॥ १७ ॥ नूपरजेहरबीछिया, जंघनिपरिछवि देत ॥ मानौंषंभषिजूरकैं, लपटिरहेहैंनाग ॥१८॥ इति ॥ अथ अ रिल्ल ॥ श्रीदामालच्छनकहत, सुनौइहिंनारिके ॥ परमाबिचच्छनश्रो

तामोहनयारके ॥ बाढचोकउतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिह सिपरत० ॥ १९ ॥

## अथ या नायकाके लच्छन बर्ननं ॥

श्रीदामावाक्यं दोहा ॥ रंगभरीचितवनिचलत, मनौंदवानल आहि ॥ मुसकिफिगगफूफूपवन, लहिंगाकीकरिओट ॥ २० ॥ मृदुबोलनिसंगश्रवतजल, हियहहलतसबकोय ॥ सुघरसहजमैंरसभरे, घुरकतजनौंबाराह ॥ २१ ॥ चतुरचलतराहदारडग, पगपगछिरकतगैल ॥ मनौंसलीताडारिकैं, कोयलकूदतजात ॥ २२ ॥ सिर लहिंगालाबनउलटि, ठनगनठनकअलोल ॥ ऊंचेल्पायनितंबझुकि, भजीकटाछैंमारि ॥ २३ ॥ इति अथ अरिल्ल ॥ गवदरायसुनि बोल्योमोहिदिषाइये ॥ वहैंनायकाबेगतहांचलिजाइये ॥ बाढचोक उतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिहसिपरत० ॥ २४ ॥

## अथ गवदराय वाक्य ॥

दोहा ॥ गवदरायभोरोसषा, चक्रितरह्योनिहारि ॥ फिरिबोल्योहठिसबनिसौं, मोहिदिषावोनारि ॥ २५ ॥ रेभइयाचलिनंदकेतोकौंमेरीसौंहु ॥ अतिसुंदरवहिनायका, देषूंगोरेहौंहु ॥ २६ ॥ तब गुपालहासिउठिचले, सषालियैंसबसंग ॥ गवदरायआगैंतहां, आतुरअदबदअंग ॥ २७ ॥ गवदाकौंसबारिंदमिलि, लैंगयेबनत्रहिकाय ॥ कीचबीचइकलोटती, दीनीभैंसदिषाय ॥ २८ ॥ स्यामसहित भागेसषा, किलकीदैंकरिपेलि ॥ गारीकाढतगवदवा, लियैंहाथमैंडेलि ॥ २९ ॥ गवदरायपाछैंलग्यो, डेलिचलावतजात ॥ स्वासस

मातनअतिहियें, अमितासिथलभयोगात ॥ ३० ॥ करीपुकारहिजायजहां, बैठेहेव्रजराज ॥ वाबाजूइनसबनिमिलि, हौंबहिकायोआज ॥ ३१ ॥ तवहसिनंदमंगायदये, बहौपकवानप्रकार ॥ सुषीभयेकारिगवदवा, भोजनभीमअहार ॥ ३२ ॥ वालकेलिकहांलगिकहौं, जेजेकरतगुपाल॥ब्रह्मादिपछितावही, हमनभयेब्रजग्वाल ३३॥ नंदगांवब्रजवालकनि, देपतवढ्योहुलास ॥ कीनौंबालबिनोदयह, ग्रंथनागरीदास ॥ ३४ ॥ समतअष्टदससतजुनव, मासअश्विनभृगुवार ॥ तिथपष्टीअरुश्रुकलपष, रच्योग्रंथविस्तार ॥ ३५ ॥ इतिश्रीवालविनोदग्रंसंसंपूर्ण ॥ १ ॥

## अथ सुजनानंद ग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीनंदनंदनवृषभाननंदिनीजयतां ॥ मंगलाचरन ॥ दोहा ॥ बंदौंब्रजकेचंदद्वै, गौरस्यामसुपरास॥ सिगरोब्रजजगमगरह्यो, जिनकेरूपउजास ॥ १ ॥ इनहीकोपरकरसवैं, एव्रजवासीजानि ॥ तिनकीइच्छातैंकहूं, ग्रंथश्रवनसुपदानि ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ ब्रजवासिनिकीपदरजध्याऊं ॥ब्रजहीकीकछुलीलागाऊं॥ जोदेषीमैंअपनेनैंना ॥ सोबजथामतिबरनौंवैंना ॥ ब्रजसबअतिआनंदनिझिल्यो ॥ सूरजसमैंकमलज्यौंपिल्यो ॥ सुषीदेपियतसबहीलोग ॥ तिनकैंधनगोधनकेभोग ॥ वहीसमैंजोनंदराइकी ॥ प्रगटीफिरिसुभदिनसुभाइकी ॥ उतनंदीसुरनंदसुथान ॥ इतवरसानैंश्रीवृषभान एदोऊयाब्रजकेभूप ॥ तिनकेगृहद्वैरतनअनूप ॥ इनअपनेपरकरकौंहेरि ॥ रूपरामकोमनदियोपेरि ॥ नंदराइबोलेवरसानैं ॥ दुहं

दिसिघरघरमंगलठांनैं ॥ सनमुपलेनचलेब्रजबासी ॥ हयगयरथसें नांछविरासी ॥ उततेंनंदमहरिचलिआए ॥ बजनलगेबाजित्रसुहाए ॥ छप्पै ॥ ब्रजबासीथटनिकटबीरवरछनिगहिआगें ॥ ठहकि ढालढिगढालघटाकारीजिंमिलागें ॥ घमसिघटनिघटपूरधूरिउडि लगीअकासैं ॥ गरजिनौबतनिघोषसक्तिदलदामिनीभासैं ॥ मचि भीरसोरनागरमहापरीसुनतनहिंकानसौं ॥ श्रीनंदगोपमहाराजजब चलेमिलनवृषभानसौं ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ आगैंनंदऔपाछैंज सुधा ॥ तिनकीयहसबब्रजकीबसुधा ॥ तापीछैंदोऊभैयाचले ॥ गौरस्यामआनंदरसरले ॥ चंवरछत्रछबिअतिसरसात ॥ नरनारीम गमेंनसमात ॥ घहरतगजफहरतपटवांने ॥ दरसनहितनरवहुउर रांनें ॥ इतमगजोवतहोबरसांनौं ॥ लष्योदूरितेंनंदकोआंनों ॥ ब्रजजुवतीआनंदसरसाई ॥ लैलैकलससनमुषीआंई ॥ गहमहभीर भईमिलिभारी ॥ कईद्वारतियकईअटारी ॥ फूलभरीफूलनिबर सांवैं ॥ समधांनेंकीगारीगांवैं ॥ पाछेंतहांकुंवरदोउसंग ॥ तिनमें छोटेसांवरअंग ॥ सोआंनंदितनननसंभारैं ॥ इकटकमहलनिऔर निहारें ॥ यौंब्रजराजगांवविचआए ॥ घरघरमंगलकलससबंदाए॥ चहलपहलअतिआनंदरली ॥ भरिगइफूलनिसौंसबगली ॥ बरसां नेंसोभाउफनात ॥ महाभीरानिकस्योनहिंजात ॥ हरैंहरैंआएनिज ठौर ॥ श्रीनंदरायगोपसिरमौर ॥ दोहा ॥ जोमगमेंसमयोभयो, रह्योहियैंमंडराइ ॥ मनमेंनांजानैंदोऊ, कह्योकौंनपैंजाइ ॥

## अथ भवन प्रवेस ॥

॥ चौपाई ॥ नंदभवनजबकियोप्रवेस ॥ जरीपांवडेपरेसुदेस ॥

बरषेफूलरजतकंचनके ॥ लुटतभिछुकनिगनबहुधनके ॥ श्रीवृष भांननंदमहाराज॥ निकटकुंवरमनहरनसमाज॥पढतबंसबंदीजनह रषैं ॥ भानओरतैंबहुधनबरषैं ॥ नाचतगुनीगवैयागावैं ॥ बीनमृदं गसुधंगबजावैं ॥ सुरधुनिप्रेमानंदछकाए ॥ इंहिंसमयेमेंएपदगाए॥ ॥ १ ॥ रागपंभावची ॥ नंदवृपभानइकभवनराजैं ॥ भईभटनट निकीभीरवृपभानपुरपौरअतिमत्तगजराजगाजैं ॥ दुहूंकुलदीपकेकु लहिंमंगदभनैंजुरेगनगुनीसंगीतसाजैं ॥ समधीसमधीमिलनिगोप गरईसभाप्रभाआनंदकछुऔरआजैं ॥ गारिगावनसकलमिल्योमह रावनौंकियेंघूंघटलियेंहियैंलाजैं ॥ महलमहलनिचहलपहलमंगल महाद्वारसहनाइनीसांनबाजैं ॥ बटततहांपानकपूरअरुअरगजागो पकुलकरतसनमांनभ्राजैं ॥ नागरीदासतहांफिरतउच्छवटहलपरम आनंदछकचढेछाजैं ॥ ॥ चौपाई ॥ कीरतिजसुधाएइकठौर ॥ सबव्रजकीदोऊसिरमौर ॥ जहांभीरब्रजजुवतिनिकरी ॥ सनमुष गारीगावतिषरी ॥ नंदहूगौरगौरतुमरानी ॥ कुंवररस्यामयहहमसब जानी ॥ आजकोदिनधनिधनिसुषदाई॥ तूवृषभानकेधरमेंआई ॥ योंकहिकरतकुतूहूलनारी ॥ गावतहंसतदेतकरतारी ॥ भावकजन यहसमयनिहारे ॥ बहतप्रेमकीदृगजलधारैं ॥ जेविरक्तवनबासी संत ॥ पगनितियनिकेलुटतअनंत ॥ ब्रजबासिनिआंगननहिंमावत लैलैभेटगांवतीआवत ॥ कांनपरीसुनियतनहिंकही ॥ गहमहरावर मैंव्हैरही॥ समधनिमिलीउच्छवसरसांनौं॥जगमगरह्योरूपबरसांनौं यहउच्छवबढिपरचोअपार॥ कुंवरिलाडिलीकैंप्यौसार ॥ इंहिंसुषब हुदिनपलभरिजानैं ॥ श्रवननैंनमननांहिअघांनैं ॥ बहुमनुहारैंबहु

ज्यौंनारैं ॥ दानमानदएबहुतप्रकारैं ॥ मांगतनंदविदाकरजोरि ॥ राषतश्रीवृषभाननिहोरि ॥ यौंवृषभानरापिदिनघनें ॥ कियेबिदाव्हैकैंअनमनें ॥ छप्पैं ॥ करिकरिलोचनसजलवचनाहितअम्रतभाषे॥ पांनसुगंधबिधानआंनिमुषआगैंराषे ॥ पहराएनरनारिबहुतकंचनधनबरसे ॥ नेगिनिदीनेनेगसबैंआनंदहियसरसे ॥ गजराजबाजिपटरतनबहुनागरहठकरिसंगदिये ॥ श्रीमहेंद्रवृषभाननैंपुनिऐसैंनंदबिदाकिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ नंदासिधाएनिजभवन, रहिगएजकिसबहेरि ॥ जगतकहानीरहिगई, रहिगईसुषऔसेर ॥ १ ॥ यहउच्छवअद्भुतरच्यो, धन्यधन्यअनुराग ॥ भलीकरीसंपतिसफल, रूपरामबडभाग ॥ २ ॥ सबबिधिनांहींकहिसक्यो, बहुतरहीअवसेष ॥ कहीजथामतिरीझवस ॥ नागरउत्सवदेषि ॥ ३ ॥ संमतअष्टदससतजुदस, बरसानेकेबास॥ग्रंथसुजनानंदयह, कियोनागरीदास ॥४॥ इतिश्रीग्रंथसुजनानंदमाहाराजनागरीदासजीकृतसंपूर्णं ॥

## अथ रासअनुक्रमके कबित्त ॥

ठौरठौरबृंदाबनमुकलितमालतीयौंउलहेकदंबकेलिनउतननूतिका ॥ चंद्रमाकिरनद्रुमरंध्रनिव्हैंआंईसोबमांनौंछबिदेतछरीकामकलधूतिका ॥ ऐसेसमैंमोहनलगेहैंमुरलीकैंकांनदईलैपठायमंत्रपढिकैंअभूतिका ॥ नागरियाजहांतहांश्रवननिरलीआयबोलितियलैंचलीसुबंसीब्रजदूतिका ॥ १ ॥ उदितसरदचंदचंद्रिकाकिरनकढीदिनमनितापतनमेंटतकहलहैं ॥ ऐसेसमैंआईब्रजबालानंदलालाढिग

तिन्हैंदेषिकोटिरतिलागतसहलहैं ॥ गावैंगीतमीतमिलिनागरिसंगी तनचैंचंचलताचितैंरहीमोमतिहहलहैं ॥ मिलीघनस्यामैंमांनौंधांई नभमंडलसौंबीचरासमंडलकैंदामिनीलहलहैं ॥ २ ॥ वृंदाबनकान नपैंभीरहैविमाननिकीदेवबधूदेषिदेषिभईहैंमनंचला ॥ बंसीकलगा नकैंवितानधुनिबायवंध्योरमालोकलोभितव्हैंभूलीउरअंचला ॥ द्वै द्वैबिचगोपिनिकैंललिततृभंगीलालनागरियापदन्यासबाजैछनछंछ ला ॥ रासरंगमंडलअषंडनितैहौंनलाग्योसंगव्हैंभ्रमतमानौंमेघचक्र चंचला ॥ ३ ॥ सरदसुहाईनिसप्रफुलितबल्लीबनबहोछबिछाईचारु चंद्रिकापुलनिमैं ॥ गानकेबिधानतहांनितभेदहावभावरच्योहैंबिला सरासमंजुलपुलनिमैं ॥ लेतगतिनागरियानागरसुमंडलमैंकोरिकम दननांहिंआवततुलनिमैं ॥ बेरबेरझूलैंमोतीमालाकीझुलनिमनदेषि देषिडुल्योजातकुंडलडुलनिमैं ॥ राधानंदलालरासमंडलरसालन चैंएकतनव्हैंकैंएकफूलनिकेहारमैं ॥ एकजारीदारसेतओढनीकौं ओढिदोऊनिर्तंतसुधंगगतिमिलिततकारमैं ॥ मुपनैंनभूषनचिकुरक रकांतिपुलीचांदनीसरदसुच्छसागरकेबारमैं ॥ नागरमयंकमीनमा नौंमनिगनसिंवारकंजकामधींवरगहेरूपजारमैं ॥ ५ ॥ एकराति हीमैंकईकलपत्रलपजानैंऐसींकेलिकंवनीयइनहींसौंहोसकैं ॥ एक बांसुरीकीधुनिथिरचरमोहिडारेतृभुवनकौंनसुनिधीरगहिजोसकैं ॥ एकनटनागरकीमुकटलटकमांझअटकिपरचोहैंमनछूटिनांहिंसोसकैं एकभुवभंगमैंअनंगमानभंगहोतताकेरासरंगकोबषानकारिकोसकैं ॥ ॥ ६ ॥ ठाढीअभिरामास्यामाबीचरासमंडलकैंआगैंस्यामनिर्ततहैं सुलपसुधंगमैं ॥ नूपुरमृदंगबीनतारसुरसांचलीनपैरतप्रबीनगुनसा

गरतरंगमैं ॥ नागरियाराधेरीझिभृकुटीनचायतवदईमनमानीमौज
आनंदउमंगमैं ॥ प्रीतमकैअंगनिअनंगचलचालपरीभएतालभंगला
लबालभौंहभंगमैं ॥ ७ ॥ थेईतात्थेईथुंगधमकटतक्काधलांगउघट
सुघटघाटठटक्योसुठटक्यो॥ देषिनवरंगीकीललितकटिभंगीतहांक
टयोहैंनिकटभूलिभटक्योसुभटक्यो ॥ नागरनवलनटनितकारीकौं
निहारिलोकविधिवेदवादपटक्योसुपटक्यो ॥ पीतपटचटकरु
लटमैंलपटिमनमुकटलटकिमांझअटक्योसुअटक्यौ ॥ ८ ॥
नितितनवेलीअलबेलीप्यारी मंडलमैंसारी जरतारीरहीझींनींझलम
लिकैं ॥ सषियांनिहारैंप्रानवारैंरिझवारैंरीझिउठतआनंदउरप्रे
प्रेमकलमलिकैं ॥ नागरियास्वामिनीकीउरपतिरपदेषिदामिनीवि
चारिरहैंहाथमलमलिकैं ॥ प्रीतमकेलोयनलगायलयेपायनसौं
मनतरवायनसौंडारयोदलमलिकैं ॥ ९ ॥ नटराजभेषधरैंर
तिराजरंगभरयोनितसुघरस्यामतालनिअटपटी ॥ ठाढेचहूंओरजू
थचतुरचकोरिनिकोचितैंब्रजचंदपरीमदनसटपटी ॥ किंकिनींकुणि
तकलनूपुररुणितपायनागरछुटयोहैंपटभांतानिलटपटी ॥ गतिलेत
ललितसलोलमालाकुंडलहैंललानिलगायराषीलोयनचटपटी ॥१०॥
प्यारीजूकीसुलफसुधंगदेषिरंगभरीकैसीनीकीलागतहैंगुनगरवांनि
की ॥ चंचलसमीरबसचंद्रकारुअंचलहैं छूटेकेसपासनिकुसमझरवां
निकी ॥ नागरियापन्ननिकीपायजेबसोहैंपायप्रीतमकोमनलाग्यो
छबितरुवांनिकी ॥ बेसरिकोमोतीझूलिझूलतहैंझूमकहैंतैसीगातिलैं
निमैंहलनिहरवांनिकी ॥ ११ ॥ रासकेश्रमितआवैंकुंजकैंनिवासदो
ऊललिताबिछावैंआगैंपंकजकीपाषियां ॥ स्यामदुहूंहाथनिपैंधरैंहाथ

स्यामाजूकोतहांभईसबहीकीआंखैंमधुमषियां ॥ नागरियांनागरव नकबनींसैंनीपरबैठेहासिचतुरचितौंनचपैचपियां ॥ प्यारीमुपस्वेद हिंसुखावैंपियफूंकदैंदैंत्यौंत्यौंउतभीजीजातसुषमांहिंसषियां ॥१२॥ नवलनिकुंजमंजुकालिंदीकेकूलजहांरहींझुकिझूलिलताफूलनिके भारहीं ॥ स्यामासुपदाईतहांअमलजुन्हाईआईऔरैंछबिछाईछित सैंव्यकोटमारहीं ॥ नागररसिकलालप्रेममतवारेप्यारेराधारूपदेषिदे पितोरितृणडारहीं ॥ चंद्रमांकीडीठडरिकरतमुकटछांहपीतांबरगहि ठाढेभंवरनिवारहीं ॥१३॥ लहकिलहकिजातलगिकैंपवनलतामहकि महकिउठैंमालतीसुबासहैं ॥ गहकिगहकिगावैंकोकिलातरनिचढी कुंजछबिपुंजकामसेवतनिवासहैं ॥ नागरियास्यामास्यामसोहैंसुख सैंनीपरदेषैंद्रुमरंध्रनिनकोऊसषीपासहैं ॥ दोऊमनहरैंदोऊरीझिरी झिअंकभरैंअंगनिअनंगबाढ्योरंगमैंबिलासहैं ॥ १४ ॥ तनकतन कबाजेंझनकचुरीनिकीओगरैंहरवाईबातभनकसुहांवती ॥ टूटेहार फूलनिकेछूटेउरबंधानिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभासरसांवती ॥ लटप टायमूरतगुलाबजलभीजिरहीबिगलतिबारबासमदनबढांवती ॥ रू पबसनागररसिकहासिहेरिहेरिफेरफेरभेटतभुजानिभरिभांवती ॥१५ छीनकटिछूटेबारआएफैलिआननपैंआधैंसीससीसफूलवैंनांझुकिगो महा ॥ टेढीभईबैंदीहारसरकेसिंगारलषिमोहूसौंन्हैंन्यारेमेरेलोयन करैंहहा ॥ बदनगुराईमांझअरुनाईपियराईनागरियाकेसैंनैंनसिथल हुरैंअहा ॥ रूपहैंकिढौरीहैंकिनैंनानिठगोरीहैंकिस्वपनौंकिसंभ्रमकि सांचहैंकिहैंकहा ॥ १६ ॥ मगंजीसुबासबसआसपासभौंरभीरभ्रम तअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांदनीमैंसोएमिलिसुरतिश्रमितअंग

आनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥ झींनौंपटफारिफैलींबाहिरबद नकांतमानौंजोन्हजीतिबेकौंचलीहैंउमाहिकैं ॥ नागरियाअरझांनैं ग्रीवनिमृनालभुजपुलिजातिआंखैंजबरहिजातिचाहिकैं ॥ १७ ॥

## अथ निकुंजबिलासग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीविहारनिबिहारीजूजयति ॥ दोहा ॥ श्रीगुरुनेहसरूपससि, हियमैंकरोप्रकास ॥ अष्टप्रहरकीकोलिको, जानिपरैंआभास ॥ १ ॥ श्रीस्यामाअरुस्यामके, अमलकमलपदचार ॥ तिनकौंवंदनकरि कहुं, तिनकोकछूबिहार ॥ २ ॥ गउरस्यामनितिएकरस, नउतनने हअछेह ॥ एकबयक्रमएकमन, एकप्रानद्वैदेह ॥ ३ ॥ पियप्या रीवृंदाविपुन, नितिबिहाररसएक ॥ बिछुरतनांहींपलकहू, बीतत कलपअनेक ॥ ४ ॥ नवनिकुंजमनकौंअगम, सेवतकोटअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअखंडितरंग ॥ ५ ॥ नैंननैंनासियरांव हीं, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुंहांचहींजियज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतं त्र ॥ ६ ॥ लालकैंसर्बसबालहैं, बालकैंसर्बसलाल ॥ दुहुनिकैंवृंदा विपुनके, सर्बसतालतमाल ॥ ७ ॥

## अथ श्रीवृंदाबन सोभा बर्ननं ॥

दोहा ॥ सोभासंपतविपुनकी, वरनतबनैंजबैंन ॥ दंपतिहूछकि रहतलषि, बढतमैंनकैंमैंन ॥ ८ ॥ लताफूलफलसंकुलित, कामकु टीअनयास ॥ कदलीअंबकदंबमिलि, बनिबानिरहेअवास ॥ ९ ॥ तालतमालनिजालविच, सुभगसरोवरनीर ॥ अमलकमलप्रफुलि ततहां, रोचकत्रबिधिसमीर ॥ १० ॥ जलवृंदैंरहिठहरिकैं, कंजदल

निश्राधार ॥ दंपतिकैंहितसरलियें, मनुमोतानिकेथार ॥ ११ ॥ सुकसारिकअरुकोकिला, मत्तमधुपकलहंस ॥ नितिअपनीबानीनिसौं, करतहैंकेलिप्रसंस ॥ १२ ॥ हरितकूलजमुनांसरित, कहूंपुलनिमृदुठौर ॥ ठौररहतलपिठौरमति, होतऔरकीऔर ॥ १३ ॥ बृंदाबनभुवअंकुरित, सबैंहरितनवरंग ॥ जुगलकमलपदपरसकैं, भईरोमांचितअंग ॥ १४ ॥ हरितभूमिपररतनकी, वारौंअवनिकठोर ॥ द्रुमसोभासमलगतनहिं, महल्लजरावकरोर ॥ १५ ॥ प्रभुताकर्कसक्रांतहू, मननलगतअभिराम ॥ कर्नफूलमनिकनकके, मधुकरकैंकिहिंकाम ॥ १६ ॥ हरितअंकुरितभूमिबन, कनकमईहूनित्त ॥ जाहीकोबरननकरैं, जोभावैंजिहिंचित्त ॥ १७ ॥ हरितभूमिनवअंकुरित, निकरसरनिजलजात ॥ बनद्रुमनोकेलगतमोहि, भरेफूलफलपात ॥ १७ ॥ बिपुनकुसमरजधुंधरित, ज्यौंसरपंजरकाम ॥ तहांबिछौनांफूलके, परेरहैंअभिराम ॥ १९ ॥ सदाएकरसबनअवनि, हरितद्रुमानिकीभीर ॥ कुंवरिकमलदलदृगनिकी, चितवनिसींच्योनीर ॥ २० ॥ असेवृंदाबिपुनमैं, नितिविहाररसएक॥ कहूंजथामतितनकही, कौतुककेलिअनेक ॥ २१ ॥

## अथ प्रातसमैं बर्ननं ॥

चौपाई ॥ कछुकभुरहरीसषियांआई ॥ बीनबजायमधुरसुरगाई ॥ कोउकोउहसिडारतहैंफूल ॥ दोउपौढैंइकओढिदुकूल ॥ लटपटायसोवततैंजगे ॥ अरसौंहेंदृगदृगनिमैंपगे ॥ बैठैंलपटिलटकिफिरिसोवैं ॥ यहसुपसपीद्रुमनिमैंजोवैं ॥ बहुरिपरसपरदर्पनदेखैं ॥ नि

जमुपलषिंनहिंलगतनिमेषैं ॥ पौंछतपियप्यारीकीपलकैं ॥ प्यारी सुघरसंवारतअलकैं ॥ हारबारअरझेसुरझात ॥ तामैंअरझेआपही जात ॥ प्रेमरूपकैंचहलैंफसे ॥ नीठिनीठिनिकसेलजिहसे ॥ आंग नमैंभईठाढीबाल ॥ पवनढुरावतरसिकरसाल ॥ पियरैंपटपौंछतापि यश्रमकन ॥ प्यारीहसततबैंमनहींमन ॥ स्यामकरनिकंचुकीकासि बांधैं ॥ स्यामाचितवनिफिरिफिरिसांधैं ॥ पुनगरबहियांमिलिकैंच ले ॥ आयतबैंसषियनिमैंरले ॥ स्नानकुंजमैंआयेदोऊ ॥ तहांज लठौरऔरनहिंकोऊ ॥

## अथ स्नानकेलि ॥

दोहा ॥ नीरसदनलषिमदनकी, उमगिउठीफिरिफौज ॥ ला जगईतहांताजिमनी, बनीहौजपरमौज ॥ २२ ॥ प्यारीन्हातन्हवा तपियरसलंपटरिझवार॥ भीजेतनलपटांनिको, लेतदोऊसुषसार २३ मंजनकुंजमैंहोतसुख, बरनतबनैंनबैंन॥मौंनहींमैंताकीकहनि, जांन तमनकेनैंन ॥ २४ ॥ भयेजुठाढेन्हायदोऊ, चुवैंछबीलेबार ॥ मनौं स्याममपतूलतैं, मुक्तागिरैंसुढार ॥ २५ ॥ चौपई ॥ भीजेबारब डेछबिदैहीं ॥ दुहूंदिसछुटेबांधिमनलैंहीं ॥ बिमलस्वेतपटतनहिल पेटैं ॥ तामैंछिपतनसुछबिअंगेटैं ॥

## अथ सिंगार ॥

चौपाई ॥ आयेकुंजसिंगारमैंजबैं ॥ जिहिंठांसौंजधरीहैंसबैं ॥ पहिलैंल्याईसषीमहाउर ॥ पियकैंआंनंदबढ्योमहाउर ॥ मुदितला लजबलगेलगावनि ॥ पौंछपौंछपीतांबरपावनि ॥ कंपतकररंगभ

रयोनजाय ॥ रहोरहोकहतकुंवारिमुसक्याय ॥ प्यारीकरतापिछौंहों पांवहिं ॥ तबपियनैननिहाहाषांवहिं ॥ पियझुकिनैननिछ्वावनिला गैं ॥ ढांपतप्रियपगधरतनआगैं ॥ सतरव्हैस्यामभौंहचढावत ॥ तबप्रीतमइतसीसहिनावत ॥ रंगभरनिमैंबाढ्योरंग ॥ लषिव्हैसाषिय निकेदृगपंग ॥ पुनदंपतिमिलिदर्पनदेषैं ॥ करतसिंगारनलगतनिमे षैं ॥ तनप्रतिबिंबैंज्यौंदर्पनमैं ॥ ज्यौंदर्पनप्रतिबिंबततनमैं ॥ दर्प नसेतनतनमैंझलकैं ॥ लषिझलकैंलागतनाहिंपलकैं ॥ सषीसुघरभूष नपहिनांवैं ॥ बिचबिचकछुकहिहसैंहसांवैं ॥ प्यारीकीबैनीपियगु हैं ॥ सौंहिंदेषतदर्पनमुहैं ॥ जान्हुदबततबसतरतभामिन ॥ मनुमु रिमिल्योचहतघनदामिन ॥ बैंनीगुहीदिषांवैंअंसनि ॥ तबस्यामा हसिकरैंप्रसंसनि ॥ पुनघुरिढुरिअरसायाकिसोरी ॥ भुजनिबीचमुष लैकैंगोरी ॥ स्यामहिप्यावैंअधरसुधारस ॥ अतिसुषबिबसहोयदोउ रसबस ॥ फिरदोउदेतपरसपरअंजन ॥ कंपतकरानियरेदृगषंजन॥ वेंदीदेताचिबुककरतलयौं ॥ नीलकमलपरअरुनकमलज्यौं ॥ प्या रीनिकटनैंनसकुचाय ॥ होयपिछौंहीमुरिहसिजाय ॥ पुनमुषजोरैं देषिआरसी ॥ सषीलिषीराहिचित्रकारसी ॥ लालमालपहिनावतबा लहि॥ बिचबिचकरतचपलकरचालहि ॥ जबैंहोतलोयनअनषैंहैं ॥ करतकुंवरिभौंहैंसतरौंहैं ॥ कहताकिसोरीकहाकरतहो ॥ कौंनलोभ कैंढारढरतहो ॥ बचनरचनयौंचितवनिसरसनि ॥ करतसिंगार होततनपरसनि ॥ पंदरहबिधिकोहोयसिंगार ॥ सोसबबरनतव्हैं विस्तार ॥ गउरस्यामछबिरहैंनिहारिकैं ॥ सषीदेतमनवारिवारि कैं ॥ गउरचरननूपरसुषकारी ॥ बांधतबैठिकैंरसिकबिहारी ॥

दोहा ॥ ऊंचैंस्यामनिहारिहीं, जैसैंचंदचकोर ॥ नूपरडोरजुरीनहीं जुरीदृगनिकीडोर ॥ २६ ॥ जोसुषवढ्योसिंगारमैं, वरन्योजातनबैन ॥ रिझवारानिसपियांनिके, जांनतहैंवेनैंन ॥ २७ ॥ इतिसिंगार ॥

## अथ भोजन समैं ॥

दोहा ॥ पुनभोजनल्याईसषी, दईजवनकाडारि ॥ कोजनकबिरसनांइकैं, वहिसुषसकैंउचारि ॥ २८ ॥ मिलिजैंवतदोउद्‌रसरस,रसनांरसबिसराय ॥ गईक्षुधासवउदरकी, रहैंदृगनिमैंआय २९ अचवनकरिबीरीजुलैं, सोतोकहतवनैंन॥ पंडपंडमनकेकरैं, पंडपंड करिलैंन ॥ ३० ॥ इतिभोजन ॥

## अथ आरती समय ॥

चौपाई ॥ सषीझूमिसवानियरैंआई ॥ दंपतिछविअं.पियांसियराई ॥ दीठलगनकैंकाजैंडरी ॥ तबतिहिंसमैंआरतीकरी ॥ दोहा ॥ रूपआरतीसषिकरैं, लियेंआरतीसाथ ॥ आवैंमनुसउदामिनीलैंसउदामिनीहाथ ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ रूपरतनदीपकमिलिपुंज ॥ जगमगायरहैंदर्पनकूंज ॥ बीनमृदंगगानधुनिभोय ॥ मंगलधरीमनोहरहोय ॥ इति आरती ॥

## अथ दुपहरी समय दुतियकुंज प्रवेस ॥

चौपाई ॥ पुनिकियोगवनतहांतैंप्यारैं ॥ प्यारीकेअंसनिभुजधारैं ॥ जलतटसघनकुंजसुपकारी ॥ चहुंदिसफूलरहीफुलवारी॥ बैठेतहांआयदोऊसंग ॥ गावतसपीरागसारंग ॥ पियहूगावैंमनहिंलु

भांवैं ॥ प्यारीजूकीरुचिउपजांवैं ॥ बैठीसरकिकुंवारितिहिंवेरी ॥ कछुकतमूरातनहसिहेरी ॥ जथासवैया ॥ गानकियोचहैपाननिषातछुटीलटआननरंगभरयोई ॥ मौंनहींमैंझलकीसुघराईहियेंगुनकोसनसोउधरयोई ॥ पीचितचंचलकौंप्यारीनागरिघेरिअदायनिमैंपकरयोई ॥ लैंनतमूराहीकीमैंलयोमनगायबौधौंरह्योआगैंधरयौई॥३२॥ दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गानतानरसरहसकी, बहसबढीदोउओर ॥ ३३ ॥ होतरागसारंगधुनि, दंपतिकुंजनवीन॥ बिचबिचगायबजांवहीं, बीननिपरनप्रवीन ॥ ३४॥ धीरजपगठहिरैंनहीं,सुरगहिरैंगुनगान॥रागरसासवसिंधुकी, लहिरैंउपजततान ॥ ३५ ॥ कहाबीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर॥ लहलहातनीकीउठैंतांननिरंगहिलोर ॥ ३६ ॥ अथ कवित्त ॥ नागरिहसौंहैंमुषसौंहैंबिथरौंहैंबारउरजउठौंहैंसोभाहारनिसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंस्यामैंकिधौंमंत्रधुनिमोनकेतकौंनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचौकाकीचमकिहोतअच्छनितिरीछेतैंकटाछसरदेतहैं ॥ वेरवेरओटदैंतमूराहसिहेरिहेरिफेरिफेरितानानिफिरायेंमनलेतहैं ॥ ३७॥ दोहा ॥ जदपिकहावतहेवहुत, प्यारेस्यामसुजान ॥ पैइनतैंअतिबढिपरयो, प्यारीजूकोगान ॥ ३८ ॥ कबहुचेतिबलिहारिकहि,कबहूहोतबिचेत॥प्यारीतांनतरंगमैं, पियमनबूडकलेत ॥ ३९ ॥ धुकेधरनिकौंसांवरे,ललिताग्रहेसम्हारि ॥ रागरूपकीचोटसौं, गिरैंक्यौंनरिझवारि ॥ ४० ॥ जीतीमेरीस्वामिनी, गुननिधिराधानाम ॥ मोनकेतरसपेतमैं, पौढेमूर्छितस्याम ॥ ४१ ॥

## अथ रहसकेलि ॥

चौपई ॥ कहैंसषीतबसुनियैंप्यारी ॥ हमसबओटहोतहैंन्यारी॥ यौंकहिउठिललितादिकसषियां ॥ द्रुमनिलगिरहीज्यौंमधुमषियां॥ भुजभरिपियकौंकंठलगाये ॥ अधरसुधारसप्पायजगाये ॥ मग्नभयेदोउरतिरसगहिरैं ॥ कामउदधिकीबाढीलहिरैं ॥ टूटेहारबारबरछूटे ॥ कटितटग्रंथिबसनषुलिषूटे ॥ लटपटायलपटायकैंरहे ॥ रसमसेरूपनआवतकहे ॥ मिलेअधरमिलिबाहियांबहियां ॥ सुरतिश्रमानिपौढैंद्रुमछहियां ॥ कोकिलसुकसारिकमृदुबानी ॥ तिहिंछिनकामकोकहतकहानी ॥ ठीकदुपहरीसुषविश्राम ॥ पौढेरसनिधिस्यामास्याम॥वहुरिपहरदिनपिछलोरह्यो॥दोऊचलेउठिकरकरगह्यो

## अथ जमुनाकूलकुंजबिहरानि ॥

चौपई ॥ सीतलसमयेजमुनाकूल ॥तहांद्रुमलताझुकीफलफूल॥ सीतलमंदसुगंधपवनतहां ॥ सषियनिजुतदोऊकियोगवनजहां ॥ हसैंहसावैंमिलिमिलिगावैं ॥ फूलनिगहनैंगेंदबनावैं ॥ द्रुमपूरितमधुपनिकीगुंजनि ॥ तहांदंपतिफिरैंकुंजनिकुंजनि ॥ चहुंदिसडोलैंसषीउमहियां ॥ दुहुनिकीविचिछुटतनगरबाहियां ॥ दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेतबिच, अलिबैठेमधुलैंन ॥ दंपतिहितवृंदाबिपुन, धारेअगनितनैंन ॥ ४२ ॥ बनफूलेफूलेजुमन, फूलवेसअभिराम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिमिलिगोरीस्याम ॥ ४३ ॥ रंगरंगभूषनफूलके,रहेफूलतनझूल ॥ अंतरकीबाहिरमनौं, प्रगटीअंगअंगफूल॥४४॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाढीदुहुनिमन,

फूलनिबीनतफूल ॥ ४५ ॥ झूंमिझुकावतद्रुमलता, उघरतउरउ रमाल ॥ फूलनितोरतदेतफल, मनमोहनकौंबाल ॥ ४६ ॥ धरत प्रियाकेश्रवनपर, लालकुसमकवनीय ॥ बहुरिबलइयालेतपिय, निरषिबदनरमनीय ॥ ४७ ॥ छ्वैंकपोलछबिसौंरहे, नाहिंउपमाको उतूल ॥ हालहालकरैंहालमन, करनफूलपरफूल ॥ ४८ ॥ फूल निसौंवैंनीगुही, रचेफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोऊ, भुजभरिद्द ढअंकवार ॥४९॥ लालचलागेबालकैं, संगडोलतहैंलाल॥छुवतजुही केफूलकौं, होतजुहीकीमाल ॥५०॥ दोउलटकिकलहंसगति, निस आगमगतसांझ ॥ आयेबिपुनबिहारकरि, कुंजजुन्हइयामांझ॥५१॥

## अथ कुंजजुन्हइया बर्ननं ॥

दोहा ॥ स्वेतफूलफूलेद्रुमनि, फटकमननिकीठौर ॥ बिमलचं द्रिकाजगमगत, तहांमदनकीरौर ॥ ५२ ॥ कुंजसर्बब्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत ॥ आईदेषानिसगुनमनु,निर्गुनब्रह्मकिजोत॥५३॥ नवनिकुंजराकारुचिर, अतिसितअमलउजास ॥ लसतफटकफा नूसनभ, बिचससिदीपप्रकास ॥ ५४ ॥ फैलीचमकतचंद्रिका, बि चनिकुंजबनबाग ॥ कतारिस्वेतमुक्केसमनु,रतिपतिषेल्योफाग॥५५॥ छईछिपाछबिदेतछित, पत्रबिपुनइहिंभाय ॥ ससिकारीगररुपहरी, अफसांकियोबनाय ॥ ५६ ॥ स्वेतफूलफूलेलतनि, बिलुलितहीरा हार ॥ जौंन्हओढिपटरुपहरी, कुंजनिकरेसिंगार ॥ ५७ ॥ इति अथ दोहा ॥ तहांभोजनकरिमिलिदोऊ, राकारैंननिहारि ॥ बसन रुपहरीअरुमुकट, साजेबहुरिसिंगारि ॥ ५८ ॥ निकासिकुंजठाढे

रहे, आंगनभरेहुलास॥ दंपतिचंदमयूषमिलि, जगमगरहेप्रकास५९ प्यारीमुपपियनिरषिहीं, अमलउज्यारीमांह ॥ तहांचंदकीदीठडारि, करतमुकटकीछांह ॥६०॥ चितैचंददंपतिबदन, रीझिचंदभयोचूर ॥ छिपाकिधौंवहिजोतिमय, कुंजनिविषरचोनूर ॥ ६१ ॥ स्वेतफूल रहेफूलिकैं, उडगनमनौंअमंद ॥ उभयचंदकिरनावली, चहुंदिसजु वर्तावृंद ॥ ६२ ॥ ललितादिकसबसहचरी, दंपतिकीपरछांह ॥ रूपचंद्रिकासीषरी,बिमलचंद्रिकामांह ॥ ६३ ॥

## अथ नृतगान सुषसमैं वर्ननं ॥

दोहा॥ तहांपियप्यारीमनकियो, निरषिउजारीरैंन॥ नितगान आरंभमिलि, कीजैंसबसुषदैंन ॥ ६४ ॥ रसबिलासनवकुंजसुप, रासकरनिकैंकाज ॥ कितिकसहचरीकरनिलये, अपनेअपनेसाज ॥ ६५ ॥ बीनतमूरापंजरी, बाजनिलगेसुधंग ॥ एकतालसुर सांचमिलि, मिलिमृदंगमहुचंग ॥ ६६ ॥ बडेवारछबिसौंछुटे, अं सबीनकटिछीन॥ सबरिझवारिनिकेमनौं, मनभरिकावारिलीन ६७ ललिततमूराबालढिग,सोहतहैंइंहिंभाय॥समरजीतिदृगसरानिसौं, तर कसलियोछिनाय ॥ ६८ ॥ सषीरूपकीमंजरी, पंजरीटसेनैन ॥ बजैंकरनिमैंपंजरी, लजैंपरेवाबैंन ॥ ६९ ॥ मुषमृदंगउपमांकछू, यहआवतमनमांहि ॥ दृगपुतरीकैंबैंनभये, रोकेरुकैंजुनांहि ॥७०॥ कटितटिसुंदरबालकैं, हैंमृदंगयहिंभाय ॥ मनौंलयोरतिमूरछित, दुहुंकरकामउठाय ॥ ७१ ॥ चंगैंमुंहमुंहचंगतिय, बजवतहैंगतिका र ॥ बैठयोकमलदरारिबिच, मनुअलिकरतगुंजार ॥ ७२ ॥ चौप

## अथ निज मन प्रति प्रीतमउक्ति सुरतांत समय ॥

कबित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिश्राननपैंआधेंसीससीस फूलबैंनांझुकिगोमहा ॥ टेढीभईबैंदीहारसरकोसिंगारलषिमोहूसौंव्हैं न्यारेमेरेलोयनकरैंहहा ॥ नागरियास्वेदमुषअरुनाईपियराईआई अबकैसेनैंनसिथलद्दुरैंअहा ॥ रूपहैंकिढौरीहौंकिनैंननिठगौरीहौंकि सुपनौंकिसंभ्रमकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ जुरैंजुरैंफिरि हसिमुरैं, घुरैंदुरैंरहिजांहिं ॥ लोयनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहिरैंनां हिं ॥८९॥ अरसांनैंघूंमतझूकत, सरसांनैंछबिऐंन ॥ बिहसिदुरांनैं पीयपैं, नींदघुरांनैंनैंन ॥९०॥ जबपलआवैंझुकतपिय, दर्पनदेतदि षाय ॥ तबअपनीअंषियांनिपैं, अंषियांरहतलुभाय ॥ ९१ ॥ नींद भरीपलनिरषिपिय, देतहैंपानबनाय॥ उतनैंननिकैंघुलतहीं, इतबीरी छुटिजाय ॥९२॥ भौंरनिवारतबदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूं किजगावतलालतव, षुलैंनैंनमुसक्यात ॥९३ ॥ सषीलषैंद्वारेंद्रुमानि मैं, व्हैरहिचित्रसरीर॥निसउनदौंहैंद्दगनिपैं, भईद्दगनिकीभीर॥९४ अरसांनीनिरषतप्रिया, जातविहांनीरैंन ॥ नैंननिलषिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ९५ ॥ धरैंचिबुकतरहाथद्दग, देषतनींदघुमार ॥ लगेरूपकेरहचटैं, नाहिंपौढतरिझवार ॥ ९६ ॥ लषिउरझसुरझैंन हीं, सबनिसगईबिहाय ॥ आरसउरझेद्दगनिमैं, पीयरहेउरझाय९७

## अथ सैनसमैं ॥

दोहा ॥ रहीरैंनथोरीजबैं, सोयेगोरीस्याम ॥ नागरिसाषिसहरां वहीं, चरनकमलअभिराम ॥९८॥ एकैंस्वेतदुकूलबिच, पौढेलागि

बलइयारीझिदोऊ, दोऊपौंछतश्रमबारि ॥ नचतसनोश्रतिरंग सौं, बनीमदनमनुहारि ॥ ८३ ॥ उतैंझुकौंहैंनवमुकट, इतैंचंद्रिकाचार ॥ भयेरासरसमग्नतन, सरकेसकलसिंगार ॥ ८४ ॥ पूटिपूटिअंचररहे, छूटिछूटिरहेबार ॥ श्रमितरासरससरंगमैं, टूटिटूटिरहेहार ॥ ८५ ॥ कहतकहतकहांलगिकहैं, कबिमतिमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहविलासमैं, कोरिकोरिव्हैंरास ॥ ८६ ॥ इति नृत्तगांन ॥

## अथ निभ्रतनिकुंजरहसि बिहार सैंन समय ॥

चौपई ॥ निर्त्तषेदतनव्हैंरसमसे ॥ गउरस्यामगरवहियांलसे ॥ उरझेतनमनप्यारीपीयहि॥आयेनिस्मृतकुंजसयनीयहि ॥ सेवतकोरिककामनिवास॥महकिरहीजहांफूलनिबास॥रससंपतिदंपतितहांलूटी॥ लाजगढीदृढतिहिंछिनटूटी तनउरझेउरझेहैंनैंनानि ॥ गउरस्यामउरझेरसबैंनानि ॥ अधरउचयसैंननिदैंआछैं ॥ अधपुलिअंषियनिकरतकटाछैं ॥ छुटैंकेसश्रमकनिमुपझलकैं ॥ लोयनमांझकामरसललकैं॥ गरवहियांमुषमुषपरझुकैं ॥ प्रेमाविवसरसमननाहिंरुकैं॥ आधेआधेनिकसतबैंन ॥ चढ्योमहामादिकमनमैंन ॥ कंपतअंगहोतसुरभंग ॥ छिनछिनवाढतरंगअनंग ॥ दुहुंदिसबाहुकसनिसौं कसे ॥ अधरबिंबअधरानिबिच्चबसे ॥ अतिरसबससुपतंद्रालगी ॥ अधपुलिदीठदीठमैंपगी ॥ कछुसीकरैंकरैंभुवभंग ॥ अंषियानिलगिअंषियांव्हैंपंग ॥ चनकमूंदद्रुमकुंजउछीर ॥ सोरकरताकिंकिनिमंजीर ॥ सबरातिसुषकाहिसकतनवैंना ॥ पंगहोतलाषिमनकेनैंना ॥ दोहा ॥ उरझेहारसिंगारमैं, लषिअंषियांउरझाहिं ॥ सुरझैंतनसुषसुरतसौं, पैंमनसुरझैंनांहिं ॥ ८७ ॥

पाछगोबिंदआगेंस्याम ॥ पैठ्योगोबिंदमंदरिमांझ ॥ जहांआरती समयेसांझ ॥ दौरिदईगिल्लीकीजाय ॥ काढ्योलोगानिपकरिमुक्याय ॥ परनिलगेझापटकेझुंड ॥ गयोगोबिंदागोबिंदकुंड ॥ बैठ्योरूसिग्रकेलोजाय ॥ इतगिरिधरभोजननाहिंपाय ॥ कह्योगुसांईसौं ल्लाडिलैंलाल ॥ लैंआवोगोबिंदाग्वाल ॥ नींठमनायलैंआयेताहि ॥ मंदरिमांहिंमूंदिदयोजांहि ॥ नागरमिलिभोजनकियोमीत ॥ प्रीतकैंआगैंरहतनरीत ॥ २ ॥ इकदिनभोरसमैकीबार ॥ जायभींतरियनकरीपुकार ॥ श्रीगोस्वामिसुनौंकरिचेत ॥ यहगोबिंदाजीवतप्रेत॥हैंअपराधीपठवोगंग ॥ आजुकरीमजोदाभंग ॥ छलसौंछिपमंदरमैंआय ॥ गलीबीचदुरिबैठ्योजाय ॥ आवतलीनौंभोगउतार ॥ वीचअमानियांषायोथार ॥ ताडनिकोमान्यौंनहिंत्रास ॥ बिनचाबहीनिगलेग्रास ॥ पूछ्योवाकौंपकरिमंगाय ॥ जबवहिकहिदइसबानिसुनाय ॥ भोरसमैंगिरिधरबनजात ॥ हौंफिरौंसंगभूषोबिललात ॥ यहसुनिकैंहियलयोलगाय ॥ कृपासिंधुश्रीविठ्ठलराय ॥ नागरीदासप्रीतहियमांहिं ॥ रहनिदेतमजोदानांहिं ॥ ३ ॥ इकदिनआयोगोबिंदग्वाल ॥ मंदरमैंजहांगिरधरलाल ॥ टेरादूरकियौजिहिंबेर ॥ रह्योमाधुरीइकटहेर ॥ देषीपागयांसूधीसीस ॥ उपजिपरीमनमैंअतिरीस ॥ चारबिचाररह्योचितनांहिं ॥ दौरिकैंपैठ्योमंदरिमांहिं ॥ पगियांमोरिदईलैंगारि ॥ परिगइझटपटझापटमारि ॥ रूपलपेटमांहिंजोपरयो ॥ सोकबहूनकाहूतैंडरयो ॥ मानतसुषजारिबेकोअंग ॥ दीपकपरज्यौंपरैंपतंग ॥ जायनगह्योनआवतकह्यो ॥ रूपअमलजाकौंचढिरह्यो ॥ इंहिंतनसपादुतियतनसपी ॥ नितिदेषतलीलामधुमषी ॥ नागरीदासभएइंहिंभाय ॥ जेअपनायेश्रीविठ्ठलराय ॥ ॥ ४ ॥ इतिश्रीगोविंदपरचईसंपूर्ण ॥

लपटाय ॥ मुषझींनैंबदरातरैं, हैंससिसेदरसाय ॥ ९९ ॥ चनकमूंदभइनीदबस, कुंजज़ुन्हइयामांहिं ॥ बाललालतनपरलसी, पातनिकीपरछांहिं ॥ १०० ॥ कियोदोउसुपसैंनजहां, छुटीछिपातहां आनि ॥ ढरानिलग्योजबचंद्रमा, सूचतसमैंबिहानि॥१॥ इतिसैन ॥

## अथ कविबचन ॥

दोहा ॥ यहवृंदाबनयहसमैं, यहदंपतिकीप्रीत ॥ नागरियाकैंहियबसो, नितिबिहाररसरीत ॥ २ ॥ उचितनहींकहनींइती, रहसकेलिरसकाम ॥ नागरियाकौंदोसकहा, प्रेरकस्यामास्याम ॥ ३॥ श्रीराधेकीजैंकृपा, चहतनागरीदास ॥ अपनैंवृंदाबिपुनको, देहुबाससुपरास ॥ ४ ॥ सतरासैंचौरांनवां, पून्यौंअगहनमास ॥ ग्रंथनिकुंजबिलासयह, कियोनागरीदास॥५॥इतिग्रंथनिकुंजबिलाससं०

## ॥ अथ गोविंद परचईलिष्यते ॥

रागकालहरो॥तिताल॥श्रीवल्लभसुतबिठ्ठलराय॥जिनकोसुजसजगतरह्योछाय॥गोबिंदस्वामीतिनकोदास॥गिरगोवर्द्धनवाकौवास॥गुरुविठ्ठलबलकृपाअछेह॥गिरधरसंगषेलनइहिंदेह॥कृपाकछूआवतनहिंकही ॥ मुक्तसमीपइहींतनलही ॥ एकदिवसगोबिंदबनमांह ॥गयोदिसाआकानिकीछांह ॥ जग्यभूमिहारिआवतनहीं ॥ बहिर्भूमिचलिआएतहीं ॥ उतगोबिंदइतनंदकुमार ॥ अकडोडिनिकीमांचीमार॥ गोबिंदहूसौंहैंकरैंचोट ॥ लगैंस्यामकैंतनाविनओट ॥(जहां)॥ नागरीदासषेलीहितहोय ॥ लघुदीरघतागनैंनकोय ॥ १ ॥ एकदिवसगोबिंदगोपाल ॥ गिल्लीडंडाषेलतप्याल॥ दावमारिभाजेदिसधाम॥

श्रीः

# नागरसमुच्चय।

तत्रादौ

## पदसागर प्रारंभः।

अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधि
राजमहाराजाजी श्री श्री श्री १०८
श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरि
संबंध नाम नागरीदासजी कृत,

ताकों

मुंबईमें.

ज्ञानसागर छापखानेमें
छापके प्रसिद्ध किया.

इति
सिंगारसागर समाप्त ॥

श्रीः।

# अथ पदसागर प्रारंभः।

## बनजन प्रसंसग्रंथ पदप्रबंध लिष्यते।

### प्रथम श्रीबृंदाबन स्तुति बर्ननं॥

॥ श्रीराधाकृष्णौजयति ॥ चर्चरी ॥ जयतिवृंदाविपनविस्वबंदनमहीमहिमाअद्भुतनिगमगाजगाजैं ॥ बननिबनराजब्रजराजसुतप्रियतहांसहजसुपनित्तरितुराजराजैं ॥ कथतश्रीमुपकथाकृष्णबलप्रतिजथाफूलफलझूमिछबिछाजछाजैं ॥ कोसदसदोयअनुरागरैंनीरचीपरसिमनबिरंगताभाजिभाजैं ॥ दासनागररंगवागराधासदानिरपिदृगकामरतिलाजलाजैं ॥ १ ॥ तथा पद ॥ धनधनश्रीगुरुदेवगुसांई ॥ वृंदाबनरसमगदरसायोऊबटबाटछुटांई ॥ भूलेहेबहुतेजनमनकेफिरतअंधकीनांई ॥ नागरीदासबसायेकुंजनिसबैंछुडायदांहिनीबांई ॥ २ ॥ धन्यधन्यहैंजोइपुरान ॥ ताकैंमध्यश्रीवृंदाबनकीकथापरमसुपदान ॥ बिनवृंदाबनबानीमेरैंकबहुपरोजिनकान ॥ नागरब्रजवृंदाबनबिनकोनहींभावतभगवान ॥ ३ ॥ धनधनवृंदाबनयहनांउं ॥ सबतत्तनिकोसाररसारसुषपरमपियारोठांउं॥ सोवतसुपनैंनितिनिसबासुरयाहीकौनितिगांउं ॥ नागरियाजाकैंमुषप्रगटैतामुपकीबलिजाउं ॥ ४ ॥

# श्रीराधाकृष्ण प्रसन्न.



धनधनवृंदावनकेकविजन ॥ वृंदावनकीलीलाबरनतवाहीमैंनितर
हैंलग्योमन ॥ रचतरुचिरअतिअच्छररचनांजथारूपदरसावैं ॥ देव
बांनीतैंब्रजबांनीकरिश्रवनसुधासोप्यावैं ॥ हरिलीलासास्त्रभाजन
केद्रवीहैंसबलोग ॥ इनहींतैंनवरसबिंजनकेकरतरासिकजनभोग ॥ इ
नबिनसबहीकोरेरहतेगतरसरूषीछाती ॥ इनबिनदंपतिरससंपतिकी
नहिंप्रवीनताआती ॥ एतुलसीबनबसिकुंजनिमैंकुजकेलिबिस्तारैं ॥
नागरीदासभागइनकेकौंकहांलगिकोऊउचारैं ॥ १२ ॥ धनधन
वृंदाविपुनगवइया ॥ तांनतालबंधांनगांनमैंजुगलरूपदिषवइया ॥
मनलैनीबांनीपैंनीकेसरअमोघचलवइया ॥ भजनकरनचितहरन
चतुरअतिहियैंभावभरवइया ॥ नागरीदासप्रकासिकउच्छवनैंनानिनी
रढरवइया ॥ १३ ॥ धनधनवृंदावनकेदुजबर ॥ एकसंषअरुषीर
भरेपुनिरांषैयारजमैंधर ॥ सबैंपूजिबासीतीरथमैंपावनकरताघरघर ॥
जमुनांतटजमुनांकेजाचिगनागरीदाससुघरनर ॥ १४ ॥ धनधनवृं
दावनकेलिषिया ॥ जिनउत्तमलेषकव्रतधारीसुंदरअक्षरानिसिषिया ॥
सहजसिमटिकैंरहैंनैंनमनचंचलताछुटिजाय ॥ हरिगुनकथालिष
तहींतिनकौंसबदिनजातबिहाय ॥ सिद्धिकरनपरमारथस्वारथबसि
तुलसीबनमांहीं ॥ नागरीदासभागइनकोकोउबरनसकतहैंनांहीं ॥
॥ १५ ॥ धनधनवृंदावनकेतिलकिया ॥ भक्तिचिह्नमुषछापरचित
करपरमपुनीतासिलकिया ॥ बैठतघाटघाटपरसहजहींचितवतरूप
चिलकिया ॥ नागरियाजजमांनश्रीजमुनांलैंहरिनामाकिलकिया ॥
॥ १६ ॥ धनधनवृंदावनकेभाट ॥ राधाकृष्णजनमउच्छवमैंपढतबं
सकेठाट ॥ ब्रजवासनिकेजसकौंबरनतनहिबरनतबैराट ॥ नागरी

## अथ समस्त वृंदाबनबासी प्रसंस ॥

पद॥ धनधनबृंदाबिपुनगुसांईजेते ॥ जिनदछ्यासिछयाकरकैंनर हरिसनमुषकियेकेते ॥ परमपुनीतपूज्यकुलसबकैंकृपाभक्तिफलदेते ॥ नागरभएरुहैंअबहौंनैंसबजगबंदिततेते ॥ ५ ॥ धनधनबृंदाबनकेसंत ॥ कहाबिरक्तकहाकुंजनिवासीबडेमहामहंत ॥ जिनसुदेसउपदेसनितैंबनबसिरहैंलोगअनंत ॥ जहांतहांऊसरतैंसरकीनैंनागरियारसवंत ॥ ६ ॥ धनधनबृंदाबिपुनबिरक्त ॥ संग्रहभजनकियोतजिसंग्रहछांडिबांतज्यौंजक्त ॥ कृष्णकथामकरंदकेमधुकरबृत्तिआसक्त ॥ नागरफिरतछौंनतनकुंजनिभयेपुष्टहरिभक्त ॥ ७ ॥ धनधनबृंदावनकेकुंजनिवासीसाध ॥ हरिगुरुसनिसेवानिसंग्रहउच्छवकरतअगाध ॥ सबनिदेतबिश्रांमधामबनमेटततनमनव्याध ॥ नागरीदासलेतएसबसुषहरिराधाआराध ॥ ८ ॥ धनधनबृंदाबनके महामहंत ॥ बृंदावनअधिकारभारभरभक्तिकृपाउलहंत ॥ बृंदाबासिप्रतापतेजअनमींनरानिकरनवांवैं ॥ उपदेसकनृपासिंघमदंधनिबृंदाबनदरसावैं ॥ सर्वोपरबृंदावनादिग्गजमहंतसभासमुदाय ॥ नागरीदासबासबृंदाबनरहेनिसांनबजाय ॥ ९ ॥ धनधनबृंदाबनके पंडित ॥ बिद्यावंतबोधदानतीरथमैंदेतपरमगुनमंडित ॥ परमारथस्वारथकीसंपतसंचितहियेअषंडित ॥ नागरभयेकितेनरइनतैंदोऊलोगअषंडित ॥ १० ॥ धनधनबृंदावनकेबक्ता ॥ उपदेसकहरिबिमलभक्तिकेपरमप्रेमअनुरक्ता ॥ तुलसीबनअमृतरसलीलाश्रवनदारलैंप्यावैं ॥ नागरीदासरसिकश्रोताजेअलिमकरंदलुभावैं ॥ ११ ॥

नागरीदासदासअतिरुचिहिंउंहिंप्रसादकौंपांवैं ॥ २२ ॥ धनधनवृंदात्रिपुनकसेरा ॥ बडेपात्रपात्रनकौंदेंहींकरकरअमलउजेरा ॥ सबकोधर्मचलतइनहींतैंझांझनिरवझनकेरा ॥ नागरीदाससौंजसेवाकीबरनतसांझसवेरा ॥ २३ ॥ धनधनवृंदाविपुनपसारी ॥ तिनकीसौंजमंदिरनिपहुंचैंसहवासनिसुपकारी ॥ केसरअगरओचंदनवंदनहरितनलेपलगावैं ॥ मिरचलवंगमसालेनांनांभोगनिमांझमिलावैं ॥ अंगरागअरुरसनापोषकसबरोगनकेहंता ॥ नागरीदासवसतबडभागीजहांराधिकाकंता ॥ २४ ॥ धनधनवृंदावनकेबैद ॥ साधसंतकोतनदुषमेटतमेटपाटकीकैद ॥ स्वारथमैंपरमारथकरहींभेषजकैंउपचार ॥ नागरीदासनहींसमइनकैंस्वर्गअश्वनीकार ॥ २५ ॥ धनधनवृंदाविपुनश्वांनचावारे ॥ हरिउच्छवमेलामंगलमैंलगतसबनिकौंप्यारे ॥ पःटीमीठीहूंगसलौंनींथैलानिभरिभरिलेत ॥ नागरीदाससाधसंतनकीरसनाकौंसुषदेत ॥ २६ ॥ धनधनवृंदावनकेचतुरतमोरी ॥ तिनकीबीरीभोगलगततहांगउरस्यांमकीजोरी ॥ सबकैंरंगरचतइनसौंजहांउच्छवमंगलगान ॥ तहांप्रसादीपावतहैंबडभागीनागरपान ॥ २७ ॥ धनधनवृंदावनकेमालीमालनि ॥ उच्छवभवनद्वारसोभितएकरफूलनिकीडालनि ॥ इनहींतैंरचनाफूलनिकीफूलनहरषउछालनि ॥ मंगलरूपावृंदावासीनागरभागविसालनि ॥ ॥ २८ ॥ धनधनवृंदावनकेबारी ॥ इनकौंकलपवृच्छपत्रनकीदेतजीवकाभारी ॥ रुचिररचतपनवारेदौनासाधनकौंसुपकारी ॥ नागरीदाससुफलकरकीयेवडेभागव्रतधारी ॥ २९ ॥ धनधनवृंदावनकेरांज ॥ करनीबलकुंजनिकीरचनांकरतपरमसुभकाज ॥ विसकर

दासबडेघरकेएकौंनकरसकैंनाट ॥ १७ ॥ धनधनवृंदाबनमहाङ्कुकरिया ॥ निर्विकारनिर्दूसततनव्हैंअतिकूसकूबसुकरिया ॥ पूसमासमैं जमुनांन्हावैंडरतनहींमरवेसौं ॥ कालहुकोबसचलतनतिनपैंपरमभक्तिकरवेसौं ॥ लैलठियाकरकटिनवायकैंबडेभोरहीधावैं ॥ च्यारकोसपरकर्मादैंकेंनितिनागरघरआवैं ॥ १८ ॥ धनधनजेवृंदावनबाई॥ तिनकौंश्रीराधाकरुणाकरअपनैंबागबसाई ॥ दंपतिगावैंजमुनांह्लावैंतनलोईलपटाई ॥ कथाकीरतनदरसनकैंहितरहनितनागरमंडराई ॥ १९ ॥ धनधनवृंदाबनकेबजाज ॥ मोटेमिहींपटनघटढांपतराषतसबकीलाज ॥ बिग्रहरूपजुगलकैंतनमैंमृदुतनजेबिसाज ॥ नागरीदासबासकुंजनिकरकरतआपनौंकाज ॥ २० ॥ धनधनवृंदाबनकेमोदी ॥ जिनआसाजात्रीआवैंलेतजिनसभरिगोदी ॥ इनतैंसहबासीसुषपावैंसबकौंअनधनदेत ॥ छुधितनरहनदेतहैंकाहूदयामयाहियहेत ॥ इनहींतैंहैंचहलपहलह्यांइनहींतैंआनंद ॥ नागरीदासबसायेइनकौंश्रीवृंदाबनचंद ॥ २१ ॥ धनधनवृंदाबनकेमधुमयतईचढनियां ॥ बिबिधिभांतिकेमधुरपाकवेरचतहैंभोगअमनियां ॥ गूंझागूंदीमोदिकमठरीषाजाबुरमापासे ॥ रसदुरकीमुरकीरुजलेबीपूवापुरीपतासे ॥ सक्करपारेपेरेमिश्रीमावामोहनभोग ॥ षांड़पिलौंनांषांडसंठेलीबालबिनौदीजोग ॥ फैंनीमधुरतूकौंनसुहारीसेतगुलाबीघेवर ॥ षिलीषिजूरपूरिघृतपावैंरेवंतीकोदेवर ॥ मींजीपाकचिरौंजीपाकपेठापाकनये ॥ तिनगनींतेजइलाचीदांनैंपरसुगंधितठये ॥ फुलीफुलोरीसेवसलौंनीगरमागरमकचोरी ॥ वरनौंकहानिकाईतिनकेदरसनमांझठगोरी ॥ इत्यादिकसुंदरसामग्रीसबमंदरनिपठावैं ॥

गोरजगंगान्हातन्हातपुनजमुनांजातहैंपार ॥ विपुनबासदइटहलगउनकीनागरपरमउदार ॥ ३८ ॥ धनधनवृंदावनकेकोली ॥ सबहीमैंअतिआनंदकरताइनसृदंगत्रितजोली ॥ लेतबजायनौछावरीरहरिकीअरुप्रसादभरिझोली ॥ नागरियाइहैंमिलकदईकोरिजनमोत्सवअरुहोली ॥ ३९ ॥ धनधनवृंदावनकेनाई ॥ संतजननिकेभद्रहेत्तएबसतयहांसुषदाई ॥ सैंनबंसपांवनकियोबनबसिबरनौंकहानिकाई॥ नागरीदासदासदासनिकेभलीटहलइनपाई॥४०॥धनधनवृंदावनकेबढई ॥ हरिसिंघासनसंतपावरीतिनकौंनितिप्रतिगढई ॥ रचतकपाटकुंजकीरिच्छाबडेद्रुमनिकेनाई ॥ नागरीदासकहांलौंकहियैंइनकीभागबडाई ॥ ४१ ॥ धनधनवृंदावनकेकुम्हार ॥ वृंदावनरजजीवनजिनकेवृंदावनरजसार ॥ वृंदावनरजतनमंडितरहैंमनरजलगतसुप्यार ॥ वृंदावनरजभाजनलैंसुषनागरलहतअपार ॥ ४२ ॥ धनधनवृंदावनकेचुहरा ॥ तिनकीसमताआदिसापमैंकहतहैंलोकसमूहरा ॥ बेचतसूपधूरधूसरतनगालियांझारतभले ॥ नागरीदासबसतयाभूमैंसंतसीतसौंपले ॥ ४३ ॥ धनधनवृंदावनजेबसैं ॥ न्यारेन्यारेकहाबरनौंसबस्वर्गमुक्तकौंहसैं ॥ कहाआयककहाजायकह्यांकेअतिवडभागीलसैं ॥ नागरएदेषतऔरनकैंपापसकलतननसैं ॥ ४४ ॥ धनधनवृंदावनजेआवैं ॥ सुंदरकरतप्रीतसंतनसौंनितिप्रतिनौंताजिमावैं ॥ मनबचक्रमसौंसेवतसाधनचरननिलगिलपटावैं ॥ नागरीदासभागतिनकोकोऊकहांलगिबरनसुनावैं ॥ ४५ ॥ धनधनवृंदावनजिनकोमन ॥ वृंदावनहिततरफतब्याकुलपरबसदूरघरघोतन ॥ वृंदावनकोध्यानहियेमैंवृंदावनकौगावैं ॥ वृंदावनबासिनसौंनागरप्रेमपुलकिलपटावैं ॥ ४६ ॥

मांहरिमंदिरकेबांधतश्रीजमुनांपाज ॥ नागरीदासलियैंगजवाजीनि तरहैंजुरेसमाज ॥ ३० ॥ धनधनवृंदावनकेसुनार ॥ जुगलरूपसे वाकेंभूषनदेतहैंसदासंवार ॥ काजइहांकोबडभागनतैंदयोतिहैंकर तार ॥ नागरीदासबसततहांतिनकीमहिमाकोनहिपार ॥ ३१ ॥ धनधनवृंदावनकेतेली ॥ तिनकोनेहप्रकासतघरघरदिनगतजोति नवेली ॥ हरिमंदिरनितीरजमुनांकेंदीपगपुन्यबढावें ॥ नागरीदास महातमइनकोकोऊकहांलगिगांवैं ॥ ३२ ॥ धनधनवृंदावनकेगंधी कुंजगलिनकौंकरतसुवासतसंगअलिफिरतमदंधी ॥ सेवास्यामास्या मसेजसुषसदासुगंधसुबासे ॥ नागरइहैंबसायेदंपतिवृंदाबिपुननिवा से ॥ ३३ ॥ धनधनवृंदावनकेदरजी ॥ सिसरहेमरितुकारनअपनें बिपनबसायेहरिजी ॥ होततनसुषीतोरथबासीइनकेहाथनिकरजी॥ नागरनिपुनफारकैंजोरत ॥ पटरचनाकेघरजी ॥ ३४ ॥ धनधनवृं दावनकेजोटेरटेरफलदैंहीं ॥ अंबअनारजंबूनींबूषिरनीरसअमृतमैं हीं ॥ आडूसफतालूरुफालसेकेलापुनिअंजीर ॥ कुंजगलिनमैंटेरत डोलतसुनिसिसुहोतअधीर॥स्यामास्यामप्रेरमनजनकोफलनिपिया रेपावैं ॥ नागरीदासभागइनकोकोऊसुकबिकहांलगिगावैं ॥ ३५ ॥ धनधनवृंदावनकेपटुवा ॥ रसिकजननिकेपोवतमालाकंठीबटुवा ॥ पाटस्यामअरुपीतकनकरंगरचनांरुचिरसंवारे ॥ ब्रजभूषनकेभूषन साजतनागरभागअपारे ॥ ३६ ॥ धनधनवृंदावनकेरंगिया ॥ मनमो हनकोफैंरंगहींउतकोसारीआंगिया ॥ बरषाव्याहगृहस्थतरुनजनपट घटरंगेसुरंग ॥ यावनकोरंगसबोंपरांचिनागरबिबिधिप्रसंग ॥ ३७ ॥ धनधनवृंदावनकेग्वार ॥ गऊचरावतजहांचराईमोहननंदकुंवार ॥

धनधनबृंदावनकेगदहा ॥ चूंनामाटीईंटकेढोहकसाधनकेसुषसधहा ॥ हरिमंदिरअरुकुंजघाटसबइनाहिंपीठनिबनें ॥ नागरएपरमारथीपूरेयादुर्ल्लभरजसनें ॥ ५३ ॥ धनधनबृंदावनकेकाग ॥ मापनचोरकेकरतैंरोटीलैंभाजैंबडभाग ॥ कुंजनिमांझबसेरोकरहींकुंजनिसौंअनुराग ॥ नागरषेसुभबोलतहैंनितिसंतसौंतसौंलाग ॥ ५४ ॥ धनधनबृंदावनकेपच्छी ॥ कोयलकीरकपोतकोकिलामोरचकोरानिलच्छी ॥ बोलतकलबांनीकुंजनिमैंदंपतिकेमनभाए ॥ नागरानित्तबिहारजुगलकैंकबिरसिकनिएगाए ॥ ५५ ॥ धनधनबृंदाबनकेजंत ॥ छोटेमोटेकहांलगिवरनौंतिनकीजातअनंत ॥ उपजतषपतइहांएईसबअधिकारीहांनैंहैंअंत ॥ नागरीदाससकलबडभागीजेइहरेणबसंत ॥ ५६ ॥ कितेदिनबिनबृंदाबनषोये ॥ यौंहींवृथागएतेअबलौंराजसरंगसमोये ॥ छाडिपुलिनिफूलनिकीसज्जासूलसरनिपरसोये ॥ भींजेरसिकअनन्यनदरसेबिमुषनिकेमुषजोये॥हरिबिहारकीठौररहेनाहिंअतिअभाग्यबलवोये ॥ कलहसरायबसायभिठारीमायारांडबिगोये॥इकरसह्यांकेसुपतजिकैंव्हांकभूहसेकभूरोये ॥ कियोनअपनौंकाजपरायेभारसीसपरढोये ॥ पायोनहींआंनंदलसमैंसबैंदेसटकटोये ॥ नागरीदासबसेकुंजनिमैंजबसबबिधिसुपभोये ॥ ५७ ॥ कृष्णकृपागुनजातनगायो ॥ मनहुंनपरसकरिसकैंसोसुपइनहींदृगनिदिषायो ॥ गृहब्यौहारभुरटकोभारोसिरपरसौंउतरायो ॥ नागरियाकौंश्रीबृंदावनभक्तितख्तबैठायो ॥ ५८ ॥ हमारीबांहगहीबृंदाबन ॥ राष्योअपनीसीतलछांहियांजगदुपघामतच्योतन ॥ मोमैंककूकृपाबलनांहींहौंजानूंअपनेंमन ॥ नागरीदासनांदहितसौंकरिक

## अथ इनबृंदाबनबासीनिके ब्यौहारसहायक बर्ननं ॥

धनधनबृंदाबनब्यौहारकेरच्छक ॥ राजाहाकिमधर्मसहायकब नबासिनिकेपच्छक ॥ बृंदाबनकीनांवछापसिरपूरबपुन्यप्रतच्छक ॥ नागरीदाससबनिसौंसूधेंदुष्टनिकौंनाहरसेमच्छक ॥ ४७ ॥ धनध नबृंदाबनकेभूमियांलोग ॥ जैसैंवारवनीकांटनकीरचेस्यामत्यौंरछया जोग ॥ ह्यांहींउपजषपतहैंह्यांहींअनतजायनहिंकरैंबियोग ॥ नागरी दाससुधीयारजमैंतिनकैंदूधदहीकेभोग ॥ ४८ ॥

## अथ पसुपच्छी जंतु बर्ननं ॥

धनधनबृंदाबनकीगइयां ॥ बृंदाबनमैंचरतहरेतृणबृंदाबनकीछइ यां ॥ बृंदावनगोपालफिरेसंगजिनकीजगतप्रसंस ॥ एसुरभीबृंदाबन कीसोहैंउनहींकोअंस ॥ बृंदावनमैंबसतनिरंतरबृंदाबनजनछीवैं ॥ नागरबडभागीसोइनकोदूधप्रसादीपीवैं ॥ ४९ ॥ धनधनबृंदाबनकेबां दर ॥ अपनैंभुजबलभोजनकरहींमांगतनहींपायनपर ॥ गोपिनके घरबालकेलमैंलियैंफिरेगोपाल ॥ माषनचोरषवायोमांषनअरुपक वानरसाल ॥ तिनकौंबंसबसतएकुंजनकुंजकलपद्रुमध्यावैं ॥ नाग रियानितअनायासहीमनबंछितफलपावैं ॥ ५० ॥ धनधनबृंदाबन केस्वान ॥ संतसीतकीकरैंजीवकाजमुनांजलकोपान ॥ कुंजद्वारचौ कोमैंचौकसइहिंरजकरतसनान ॥ नागरियाजेबिमुषमनुपहैंतेइनके नसमान ॥ ५१ ॥ धनधनबृंदाविपुनबिलइया ॥ महाप्रसादछलसौं छिपिलेहींघरघरकीजुहिलइया ॥ ह्यांउपजतअरुलीनहोतह्यांबाहि रनाहिंनिकलइया ॥ नागरियाजेजंतहहांकेसबतनरेणमिलइया ॥ ५२ ॥

तननितिप्रतिगतिमतिरहतउमहियां ॥ नित्तबासतहांनागरीदासहिं स्यामास्यामदयोगहिंबांहियां॥६५॥वृंदाबनसुबसतजमुनातीर॥ सदा रूपकीपैठलगीरहैंकबहुनहोतउछीर ॥ प्रेमनदीसीफिरतरगमगीग लिनिगलिनिबिचभीर ॥ नागरियानितिमिलेदोषियतसांवलगउरस रीर॥६६॥हमारीअबसबबनीभलीहैं ॥ कुंजमहलकीटहलदईमोहिज हांनितिरंगरलीहैं॥साहिबस्यामास्यामउसीलीललितालसितअलीहैं। नागरियापैंकृपाकरीअतिश्रीवृषभानललीहैं ॥ ६७ ॥ वृंदाविपुनर सिकरजधानी॥राजारसिकबिहारीसुंदरसुंदररसिकाविहारनिरानी॥ ललितादिकाढिगरसिकसहचरीजुगलरूपमदपानी ॥ रसिकटहल नीवृंदादेवीरचनारुचिरानिकुंजरवानी ॥ जमुनारसिकरसिकद्रुमबे लीरसिकभूमिसुपदानी ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियारसिकहीरसि कहीरसिकसबैंगुनगानी ॥ ६८ ॥ रायगिरधरननवकुजरजधानिबि चसंगश्रीराधिकारानिराजैं ॥ मोरचहुंऔरहयहींसहलचलचमृगहर जलघोषनिसानबाजैं ॥ कोकिलाकीरकलहंसबंदीबहुतबडेनितिके लिकेविरदगाजैं ॥ प्रेमपरधानमतिमदनमंत्रीमहादेतरसमंत्रसत्रसु षनिसाजैं ॥ मत्तमधुमाधौंकुतवालकेदूतअलिफिरतकुसमसौरंभके काजैं ॥ सुफलफलदेततरुदेवबडभांतिअरुनगरकुलदेवीवृंदाबि राजैं ॥ रूपउत्सवसदासहजमंगलट्टगनिउभैंआसक्तलषिलाजला जैं ॥ दासनागरनिकटललितललितादितहांराजआनंदछाकिचाढि यछाजैं ॥ ६९ ॥ कुंजछविपुंजबहोवितनसेवतसदाजुगलआसक्त रसएकआनंद ॥ लिबढिरहिद्रुमलतामत्तअलिकुसमप्रतिपलहुनाहिं घामरांविविरहदुषदंद ॥ मधुरकलकंठललितादिपूरितमहारंगमय

पांकरायौंधनधन ॥ ५९ ॥ देहधरैंकोअन्नफलपायो ॥ बीतेबहुतव
बरसअसमंजसमायानाचनचायो ॥ थोहरवनतैंमोहिकादिथिरवृं
दाविपुनबसायो ॥ कौंनकृपाअनियासभईहौंनिजमनहेरिहिरायो ॥
निसदिनपहरघरीछिनछिननितिआनंदरहैंसरसायो ॥ नागरीदास
दासन्हैकैंजोइहांनआयोसोपछतायो ॥ ६० ॥ अबतोयहीबातमन
मानी ॥ छांडौंनहींस्यामस्यामाकीवृंदाबनरजधानी ॥ भ्रम्योबहुत
लघुधामबिलोकतछिनभंगुरदुषदानी ॥ सर्बोपरआनंदअपंडितसो
जियठौरसुहानी ॥ हरिभक्तनिमैंरक्तितिन्हैहौंनिंदामुषअभिमानी ॥
नागरियानागरकरगहिहैंरहिहैंजक्तकहानी ॥ ६१ ॥ हमारीसबही
बातसुधारी ॥ कृपाकरीश्रीकुंजबिहारनिअरुश्रीकुंजबिहारी ॥ रा
ष्योअपनैंवृंदावनमैंजिहिंठांरूपउजारी ॥ नित्तकेलिआनंदअपंडि
तरसिकसंगसुषकारी ॥ कलहकलेसनव्यापैइहिंठांठौराविश्वतैंन्या
री ॥ नागरीदासइहिंजनमजितायोबलिहारीबलिहारी ॥ ६२ ॥ हम
तोवृंदाबनरसअटके ॥ जबलगिइहिंरसअटकेनाहींतबलगिबहोवि
धिभटके ॥ भयेमगनसुषसिंधुमांझह्यांसबतजिकैंजगपटके ॥ अब
बिलासरसरासहिनिरषतनागरिनागरनटके ॥ ६३ ॥ भयेहमवृंदा
बनरसभोगी ॥ ज्ञारसभोगहिंकरनसकततजेजगतबिपतकेरोगी ॥
रासबिलासरुकथाकीरतनहरिउच्छवआनंद ॥ निसदिनमंगलमई
समयतहांनटनागरव्रजचंद ॥ ६४ ॥ नितिआनंदवृंदावनमांहियां ॥
नित्तकेलिकउतकरसलीलानिराषिनिरषिदृगहारतनांहियां ॥ नित्तह
रेद्रुमफूलफलनिद्रुतजमुनातटअतिसीतलछहियां ॥ नितिनउतनस
बलोगसनेहीप्रीतरीतयहऔरनकहियां ॥ नित्तिरासनितिकथाकीर

छिबरनैं ॥ रंगभरीभांमिनसबसंगसुघरसुघसमाज ॥ कमलासीकरन लियैंअपनौंअपनौंसाज ॥ काहूपैंअतरबरगुलाबजुतसुगंधसीसी ॥ काहूपैंबिमलदर्पनकलकांतचंद्रकीसी ॥ काहूपैंसुठिसुगंधसहितपां नदांनबीरा ॥ काहूपैंहारधरेउतारझलमलातंहीरा ॥ काहूपैं चंवरचारुचपलभँवरनिनिरवारैं ॥ काहूपैंकुसमकलितबिजनां मंदमंदढारैं ॥ काहूपैंमालमरगजीहैंसुरतसेजटूटी ॥ घा वतिसुधिसमैंबासमदनपुरियलूटी ॥ काहूपैंबनकबनीयठनियक नकपीकदांनी ॥ काहुपैंधूपदांनबरतबहोसुगंधसांनी ॥ काहूपैंसूर जमुषियसुच्छमोरपिच्छवारी॥मुकटभावउदैंहेतनाहिंनकरतन्यारी॥ काहूपैंसुघरसारमूवामधुरबचनबोलैं ॥ काहूपैंअंसबीनसोनबीनबर अमोलैं ॥ आवतधुंनिजंत्रमैंनमंत्रसेबजावैं ॥ रैनिकेबिहारगायमादि कसौंप्यावैं॥रंगरागनवसुहागआनंदरसबोरी॥ नागरियाहृदैंबसोभां नकीकिसोरी ॥३॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेनेए दोहा ॥ निसिबीतीसबरंगमैं, उठेभोरसुकंवार॥ आयसँवारतसहचरी, भूषन बसनसिंगार ॥ १ ॥ लगेलगेट्टगआवहीं, बैठेपगेकिसोर ॥ नीलपी तपटपलटगे, जगेरगमगेभोर॥२॥अलसौंहींअंषियांनकी, चितवनि बलगवनैंन ॥ नागरियादोउभोरलषि, भुरयेमेरेनैंन ॥ ३ ॥ पद रागबिभास॥ तालचर्चरी ॥आलसरसरंजितरमनीयरूपरासिमिथुन लटपटातप्रातजगेबिथुरितबरबैंनीं ॥ चंचरीकचहूंओरबिचरतिसुप गतिमदंधमहकतसुगंधअंगछलकतरंगरैंनी ॥ प्रबलपव[illegible]वनकेलि बिलुलितपियकनकबेलिबिव्हलट्टगासियलसुलसतस[illegible]नीं ॥ बिस्मैं व्हैरहतकुंवरानिराषिबदनछबिअभूतपौंछतपलपीका[illegible]गतमसृगनैं

रागसारंगधुनिमंद ॥ दासिनागरितहांस्यामस्यामानिकटठाढीइक टकजुरहीनिरषिमुषचंद ॥७० ॥ दोहा ॥ अष्टादससतदसजुनव, संवतमाघसुमास॥बनजनप्रसंसकलग्रंथयह, कियोनागरीदास॥७१॥ इतिश्रीबनजनप्रसंसपदप्रबंधग्रंथसंपूर्ण ॥

## अथ पदमुक्तावली लिष्यते॥

श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैनेंए दोहा ॥ सषीभोरलषिछकिरही, स्यांमास्यांमसुजांन ॥ मुंदीपलकअलकैंघुली, अधरथकितमुसक्यांन ॥ १ ॥ पोहापियरीसियरी समैं, लषिदंपतिसुकंवार, ॥ रंगभरीलपटांनितन, अरुझेहारसिंगार ॥ २ ॥ लताभवनललितादिसषि, बजवतबींनाबिधांन ॥ मुंदेनैंनमुसकांवहीं, सुंनिसुंनितांनसुजांन ॥ ३ ॥ नींदभरेतनलटपटे, छकेदृगनकीहेर ॥ नागरियाकेहियबसो, कुंजमुरहरीवेर॥४॥ पदरागभैरू ॥ इकतालचर्चरी ॥ देषिसषीदंपतिपौढेहैंरंगभीनैं ॥ पीयप्रियारीप्यारीजीवनिभुजनबीचलीनैं ॥ बोलतलोहोचिरियां चतुरभोरभयोजांनैं ॥ त्यौंत्योंचंदवदनदेषिफिरिफिरिरतितांनैं ॥ बाजतकटिकिंकनीकलनूपुरधुनिआवैं॥ पाईहैंपियरंकसुनिधिछोडी क्यौंभावैं॥नागरीदासउरझेतनसुरतिसुरझिछूटे ॥ चलेहैंउठिसनांन कुंजमदनसैंनलूटे ॥ २ ॥ इकताल ॥ भोरहींनिकुंजतैंउठिचलीहैं कुंवरिराधा॥अरुननैंनासिथलबसनरूपछाबिअगाधा ॥ बिथरेबारहार अरुझिआलसबसगोरी॥मनहुमधुपकनकलतानिधरकझकझोरी ॥ सारदासचीसीलुठतिसहचरीनचरनैं ॥ तिनकीचारुचूडामणिकैं

अनुरागरंगभरेजागतरैंनबिहाय ॥ बारबारसपनैंहूसूचतसूरतरंगके भाय ॥ यहछबिनिरपिसषीजनप्रमुदितनागरीदासबलिजाय ॥ १॥ तिताल ॥ आंवनिमैंउरझ्योमनमेरोसोधौंबहुरिनआयो ॥ रसिक कुंवरकीसोभासंपतिलोभीदेषिलुभायो ॥ सीसलटपटीपागियांअल कैंचिहुंटिकपोलनिलागी ॥ अलसौंहींअलबेलीअंषियांझपकतपल निसजागी ॥ छुटेबंधउरमालमरगजीभंवरभीरचहुंओरैं ॥ मनौंग जराजमत्तगतिआवतमैंनमवासहितोरैं ॥ गहवरकुंजकुटीतैंनिकसे सुरतसमरछिततनमैं ॥ नागरियालियैंरैंनचैंनकीवहैंभावनांमनमैं ४ तिताल ॥ अरिइनअंषियानिकैंसैंसमझांऊं ॥ एउतजायमिलतवर जोरिहौंगहिगहिलैंआंऊं ॥ तुमजुकहतयहनिडरभईहौंबिनदेषैंअ कुलांऊं ॥ नागरीस्यामगईहूंदेषानिवादिनकौंपछितांऊं ॥ ५ ॥ ति ताल ॥ पलकपरनिहींगनतकलपसी ॥ भोरहिबिछुरनिभईअलप सी ॥ आयमिलेदोऊदैंगरबांहियां ॥ जमुनांकूलकदमकीछहियां ॥ अस्तविस्तासिंगारलसौंहैं ॥ निसजागेनैंनांअलसौंहैं ॥ ललितादिक सहचरिजुरिआई ॥ गांनरंगबरपावरषाई ॥ बिहरतमादिकप्रेमपि यैं ॥ संगनागरिनागरियाहिलियैं ॥ ६ ॥ रागरामकली ॥ तिता ल ॥ अबदेषोदेषोरीदोऊप्रातरंगीले ॥ दृगउनमीलेबसनरसनढी लेढीले ॥ गउरस्यांमरसीलेसोहतलटपटीले ॥ छुटिरहेचिकुरछवी ले ॥ लताभवनतैंनिकसतनहींसकुजीले ॥ तनमनउरझीले नाग रिसषीसुसीले ॥ सौंहैंठाढीआरसीले ॥ लषिमुषलजतलजीले ॥७॥ इकताल ॥ रीदोउउठेभोरलषिलताभवनमैंआरसअरुझेअंग॥ रैंनरसमसेआननराजतपांननिकेफीकेरंग ॥ स्यांमांसोहैंनैंनलजोहैं

नी ॥ घुरतढुरतजुरतमुरतनैंनमींनासिंधुसुरतिथकिछकिचाकिचलत चारुचितवानिमनलैंनी ॥ नागरियानेहउरझिबिवससकतनहिंनसु रझिउठिउठिचलिमिलितमगनसुरिमुरिढुरिचैंनी ॥ ३ ॥ तालचर चरी ॥ चलेहैंभोरनवकिसोरसंगलगेललचिताहिरसबसअधषुलिय पलकचितवतसुषमोरिमोरि ॥ मंदमंदचलतचारुचरननमंजीरसब्द डगनिडगनिकउतगलपिमदनलुटतकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभू मिझूमिझूमिललिताढिकलतनिओटदेषतढुरिडारततृनतोरितोरि ॥ नागरियासंगमसुषस्वेदषेदचिहुटिचीरसुषवतपियछबीलीपीठबिज नांपौंनढोरिढोरि ॥४॥ तालचर्चरी ॥ पियकेसुषसंगतैंचलीभोरकुं जआवतप्रियामरगजेउरहारहियेबारपीठछूटे ॥ सिथलरसनबसन हसनमंदमंदअधरनिमनौंचंचलदृगरंजनपियषंजनजुगजूटे ॥ अस्त बिस्तअभरनबरबाजूबंदढूरनतेंसेलगिलगिरहेकरनिनिकरबलयषं डफूटे ॥ नागरीचहूंओरभीरभँवरानिटारतअधीरकीरओचकोरमोर निरषिपरतटूटे ॥५॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमेंदेनेएदोहा॥ बहियांसीसअदाहसौं, धरिपौढेमिलिमित्त ॥ सोवनकीसोवनमहीं, जगैलगोंहौंचित्त ॥ १ ॥ भईभुरहरीकरनदैं, कुंजछांहसुषसैंन ॥ के लिपगेसबनिसजगे, अबहिलगेहैंनैंन ॥ २ ॥ कैसैंनींदनिवारिये, अरुअंगनिउरझांनि॥ भोरभयोदिनकरकिरन, आईरंध्रलतानि॥३॥ छुटतनआरसरसपगे, जांनतभयोजुप्रात ॥ ओढैंपियरोपटदोऊ, फेरिफेरिलपटाति ॥ ४ ॥ चहतनिवार्योसैंनसुष, लोकलाजडर चित्त ॥ नागरियादोउक्यौंऊठैं, तनमनअरुझेमित्त ॥ ५ ॥ पदरा गरामकली ॥ इकताल ॥ अबहींनैंकसोयेहैंअलसाय ॥ कांमकोले

ल्यावतहौंगाहिजातहैंनासिनासि ॥ नागरियाईसौंकाहिहाहाजिन चितवोजूबसिबसि ॥ ५ ॥ इकताल ॥ रेमोहनांमोततैंतोमन हरिलीनौं ॥ हौंनांजांनौंलैंनाप्यारेतैंटौंनांकहाकीनौंदुरिहैंनां हिप्रीतनागरअबइनसोचनितनभयोछीनौं ॥ करिहैंचारचवाव अथांइनिइहगोकुलमतिहीनौं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ जीनैंणांनीं दघुलैंछैं ॥ आयरहीछैंथोडीरात ॥ कांइकेडैंलग्याछोनंदलाल ॥ अतिअलसायोम्हांरोगात ॥ घरघरचारचवावचलैंलोनिपटबुरीछैंया वात ॥ रसिकविहारीथेरसलुब्धाव्हैंआसीपरभात ॥७॥ तिताल॥ हो कांन्हजीरातराउणींदारंगराता ॥ निसरैंध्यांनएमुंदीपलकआवैं ललकमदनमदमाता ॥ अलकमांहिअणवटप्यारीरोल्यायाथेउ लझाता ॥ रसिकविहारीलागोछोप्यारामुसक्याताअलसाता ॥ ॥ ८ ॥ तिताल ॥ तिहारीहसिचितवनिघरघालनि ॥ तैंसियमेरीए जुनिगोडीअंषियांरूपजंजालनि ॥ दिननाहिंचैंनरैंननींदनआवैं हियेमैंनचलचालनिनागरनवलरूपअभिमांनीक्योंकरीहमैंइनहाल नि ॥ ९ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैंनेंएदोहा ॥ आव तभावतलालछबि, छैलअदाहैंअंग ॥ कंवलफिरावतफिरतमन, य हकछुहुंनराफिरंग ॥१॥ अरीछैलइहिगैलव्हैं, अबहीनिकस्योआय॥ नैंननिनैंनमिलायकैं, लैगयोमनबहराय ॥ २ ॥ भौंहतननिमैंतनत मन, मोहनरूपरसाल ॥ होतचालमैंचालचित, मालहालमैंहाल ॥ ॥ ३ ॥ छुटेबंधअलकैंछुटी, जुटीभौंहमुसकाय ॥ आयछकौंहैंनैंन मन, डारचोछैलछकाय ॥ ४ ॥ पीतफूलादियैंअलकपर, लियैंहाथ चकडोर ॥ गयोछैलकैंहाथमन, हाथरह्योनाहिंमोर ॥ ५ ॥ नागरि

भौंहैंचापअनंग ॥ चिबुकउठायनिरषिरहेनागरभईदीठगतिपंग ८॥ तिताल ॥ प्रफुलितकमलतरुनजातीरे ॥ विचरतअलिमकरंदअधीरे ॥ कूजतहंसबंसकलकीरे ॥ कुसमितद्रुमतटिधीरसमीरे ॥ क्षणक्षणक्षीणतिमरगंभीरे ॥ सूचतप्रातप्रभानभपीरे ॥ हरिराधास्थितकुंजकुटीरे ॥ गतनिद्रारसवलितसरीरे ॥ रतिरणछितछविमंडितवीरे ॥ तंद्रितलोचनविगलितचीरे ॥ पश्यतअलछततजिमंजीरे ॥ नागरिसषीपुलकदृगनीरे ॥ १२॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमेंदनेएदोहा ॥ अलसौंहैंनिसिकेजगे, सरबरसौंहैंमैंन ॥ इकटकसौंहैंअधषुले ॥ सहजहसौंहैंजैंन ॥ १ ॥ आननसौंआननछियैं ॥ पांननरचेकपोल ॥ लषिरीझेछबिआरसीविहसैंलोयनलोल ॥ २ ॥ आरससौंअरुझीपलक ॥ अलकजुवेसारिमांहि ॥ अरुझ्योबैंनांदेषिकैंपियमनसुरझ्योनांहि ॥ ३ ॥ पयपौंछतपटपीतसौं ॥ प्रियाकपोलनिपीक ॥ नागरिपौंछतलालके, अधरनिअंजनलीक ॥ ४ ॥ पदरागललित ॥ तिताल ॥ नींदभरीअंषियाजुबडीबडी ॥ लाललालडोरेकजरौंहींकोरैंपियहियमांझअरीयेगडीगडी ॥ सूचतरैंनिचैंनकीबातैंरंगपीकछाविछायमंडीमंडी ॥ नागरिदासमदनमोहनकैंवहोभांतिनिनिसलाडलडीलडी ॥५ ॥ तिताल ॥ राधेतेरेनैंनमहामतवारे ॥ मोहनरूपबारुनीपीकैंमत्तभयेछबिभारे ॥ घूमतझुकतधुकतउघटतसेरुकिरुकिचलतअवारे ॥ देषिछकनिछकिगयेछबीलेपियनागरनटवारे ॥ ४॥ रागललितकाष्याल ॥ तिताल ॥ अबतोबांधिडारचोमेरोमनहसिहसिहसिहसि ॥ मोहनइतअविलोकितरसवसकहाकरौंभौंहैंकासिकासि ॥ लोकलाजअरुधीरजअंतर

चरगहिहसिचाहिरहैंमुषहूंजियमैंसकुचांउरी ॥ नागरीदासउतैं उरझेरोइतैंचवइयागांउरी ॥ २ ॥ याअनुक्रमकी अलापचारीमें दैने ए ॥ दोहा ॥ हरिमूरतिचितमैंचुभी, नैनविपुलकतनीर ॥ सीसगगरियागिरतसी, जकिरहीजमुनांतीर॥२॥घैरुहोतजांन्यौंनउर, उडतनजान्यौंचीर ॥ गिरतनजांनीगगरिया, रहतनछांनीपीर ॥ ३ ॥ हरीहरीकहिलेहुरी, बिसरीदधिकोनांव ॥ कृष्णमईग्वारनिभई, कौतुगलाग्योगांव ॥ ४ ॥ महारूपमदिराछकी, चलतडगमगतपाय॥ जोदेषतग्वारनिछकी, तिन्हैंछकनिचढिजाय ॥ ५ ॥ गिरैंनग्वारनिधुकिउठैं, घायलमनरिझवार ॥ नागरियारनसुभटज्यौं, रहतसह्मारिसह्मारि ॥ ६ ॥ पद रागदेवगंधार ॥चौताल ॥ मोहनमुषलषिमोहिरह्योनपरतघरीहूनघरमांई ॥ बीथनिमैंफेरीकिरैंहरैंहरैं पैंडभरैंसीसपैंदहेरीधरैंप्रेमरसछकनिछकाई ॥ संगभौंरभीरचलैंनैननिमैंनीरबीरपीराहियैंनेहविषलहरिदबाई ॥ नागरियाकृष्णरूपभईभूलीदेहदधिनांमभूलीकहैंटेरलेहुरीकन्हाई ॥ २ ॥ तिताल ॥ हरिसौंअटकीग्वारनिगोरीलगिरहीरूपसुरतचितडोरी ॥ मदमोकलगजज्यौंगोकुलमैंकुलसंकुलगहितोरी ॥ बिनदीधहीदधिबेचतबीथनिकछुसुधिरहीनथोरी ॥ बिरहबिबसजांनीनगईकहूंसिरतैंगिरतकमोरी ॥ नागरियाकौंतिकसबलागीबालकबैसाकिसोरी ॥ षुलिगयेबारसुधिनअंचरकोफिरतप्रेमझकझोरी ॥ ३ ॥ या पदके अनुक्रमकीअलापचारीमें दैने ए दोहा ॥ अंसुवनिजलतैंबुझतनहिं, हियेस्यांमघनगेह ॥ यहकौनैंकीवेदवा, लगीदवानलदेह ॥ १ ॥ तुमबिनतनग्रीषमतपत, कलनपरतादिनरैंन ॥ उर

यानंदलालललषि, रहीहियैंहहराय ॥ छलीछैलईहिगैलहैं, अलीलि यैंमनजाय ॥ ६ ॥ पदरागबिलावल ॥ इकताल ॥ हूंहरिहेरानिमां झठगी ॥ सौंहीमदअलसौंहीअंषियांहियमैंश्रांनिषगी ॥ नांहींकछू ग्रहकाजबनतजियढौरीरहतलगी ॥ नागरियामोहनमिलिवेकीचिं ताज्वालजगी ॥ ७ ॥ इकताल ॥ अरीबहिसुंदरछैलछली ॥ कब हूठाढोपनघटकबहूंघटघटबीचअली ॥ काहूकीडोरीगहितोरतचोर तइंडुरियाजुभली ॥ नागरियाबहोछंदबंदकरिकरतहैंरंगरली ॥ ८ ॥ इकताल ॥ इंडुरियालैंगयोकोऊकस्यांमसरीर ॥ कैसैंसीसधरौंरीग गरीजकिरहिजमुनातीर ॥ तबतोमैंकछुजान्यौंनाहींत्तनकतउठीहि पीर ॥ नागरियाअबवाधोटाबिननांहिरहतहैंधीर ॥ ९ ॥ इनदानली लाकेअनुक्रमकी अलापचारीमें दैनें ए दोहा ॥ दांनकेलिजोमनबसैं, ताहिनकछूसुहाय ॥ ताजिवृंदाबनमाधुरी, अनतनकबहूजाय ॥ १ ॥ मेरेनितचितमैंबसौ, दंपतिदानबिहार ॥ मुषपरझूठीझगरई, नैंननि करतजुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहुंनिकी, दांनकेलिबतरांनि ॥ नैं ननिहाहाषांनिइत, उतसौंहैंसतरांनि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उनईनीरसनेह॥ पौरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरस मांगतकरतदोऊ, नैंनसैंनसनमांन ॥ नागरियाकेहियबसो, दांनरं गबतरांन ॥ ५ ॥ पदरागबिलावलकाष्याल ॥ तिताल ॥ मांगैंघन स्यांमदांनदई ॥ गोरसदांनसुन्यौंनाहिंकबहूंयहअबकैसीभई ॥ दि योनहिलेतहायहसिहेरतनैंकनकरतगई ॥ नागरीदासकौंनाबिधिब निहैंयहब्रजरीतिनई ॥ १ ॥ तिताल ॥ नितदांनमांगैंगहबरगैलमैं कितजांउरी ॥ सांवरोसोधोटाअरबोलोहैमनमोहननांउरी ॥ अं

ताल ॥ कहियेकौंनसौंकोमांनैं ॥ जोहैंबिथाहियेमैंहेलीसोमनकोमनजांनैं ॥ सबवेपीरपीरनाहिंसमुझैंदेतअनापिमोहितांनैं ॥ नागरियामोहनबिनदेपैंमनलोचनउररानैं ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मनकीमुषतैंकहाजातबषांनीं ॥ कौंनैंकहीकहैंगोकोअबलगीलगनिकीअकथकहांनी ॥ मौंनिहूसौंनहिरह्योपरतरीनिकसतहैंहियतैंउररांनी ॥ वारूमुठीअनलबिचदारूनागरीदासरहैंकहांछांनी ॥ ६ ॥ तिताल ॥ मनमोहनहूकीनींकनौंड़ी ॥ दोसयहैंमोहीकौंयेरीमेरीबैरानिअपियांभौंडी ॥ प्रीतिवेलिफैलीउरअंतरअबलागीदुखबौंडी ॥ नागरियाब्रजबगरबगरमैंबजीनेहकीडौंड़ी ॥ ७ ॥ तिताल ॥ जोगनिरूपसुधाकीप्यासी ॥ अंगबिभूतरच्योमुषपांननिआंननचंदकलासी ॥ अटकीनवलजोगियासौंसुषपूरनप्रीतिप्रकासी ॥ नागरदोऊनेहनगरकेमनमथनाथउपासी ॥ ८ ॥ तिताल ॥ कोइयकजोगीरूपकियैं ॥ भैंहिंबंकछकौंहैंलोयनचलिचलिकोयनिकांनछियैं ॥ देषिस्यामतनबेऋमनोहरबारवारजलवारिपियैं ॥ नागरमनमथअलषजगावतगावतकांधैंबीनलियैं ॥ ९ ॥ तिताल ॥ प्यारेयेइनिगालियांआव ॥ नैंननिजलसौंधोयसंवारीअछनअछनधरिपाव ॥ व्याकुलतृषतचकोरहगनिकौंवदनचंददरसाव ॥ रसिकबिहारीलालसलौंनेंजिनकरिनिठुरसुभाव ॥ १० ॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैंनेंएदोहा ॥ जूरावांधतदेषिकैं, भएमजूरानैंन ॥ रहैंहजुराहीपरे, दरसअजूरालैंन ॥ १ ॥ बैठीन्हायसुगंधजल, दुरिदेखतनंदनंद ॥ इकटकहगपंजनफसे, जूरावांधनिफंद ॥ २ ॥ मंजनकरिपंजननयन, बैठीन्यौंरतिवार ॥ कचअंगुरिनबिचदीठदैं, निरषतनंदकुवार ॥३॥

निवासपियरावरो, छिरकतभिस्तनैंन ॥ २ ॥ बिरहबांनबेधींगई, नांछिनलगतउपाव ॥ स्यामसुघरजरराहबिन, मिलैंनउरकेघाव ॥ ॥ ३ ॥ तनकादिषाईदैंगये, पीतांबरफहराय ॥ सरसौंसीफूल्योकरैं, तबतेंनैंनानिश्राय ॥ ४ ॥ तिरतसेतघरनावज्यौं, नैंननिकेजल मांहिं ॥ इंहींनीरमैंबूडिबो, जोपियमिलिहैंनांहि ॥ ५ ॥ बिनदेषैंन हिंकलपरैं, धीरकौंनठहराय ॥ जोजानैंजाकैंलगैं, हगविसहारेघाव ॥ ६ ॥ नैंनलगेलागैंनहीं, बकैंमौंनिमैंहाय ॥ नागरपियढिगनांहितऊ, नितआगैंदरसाय ॥ ७ ॥ पदरागआसावरी ॥ तिताल ॥ पीयपीतकरीहमैंबोरी ॥ सुनतनादमुरलीश्रवननिमैंताजितजिलाजहिआवतदोरी ॥ जोघरसांझरहैंतोइकटकठाढीजोवतपोरी ॥ नागरियाछिनकलनपरतहैंडारीकहाठगोरी ॥ १ ॥ तिताल ॥ लगनिकीपीरनजातभरी ॥ रातिद्यौसतलफतहीबीतैं ॥ चैंननहींजियएकघरी ॥ बिनांमिलैंघनस्यामबरनतनतपतिबुझैंनांजातजरी ॥ नागरियाव्याकुलबनबीथनिटेरतडोलतहरीहरी ॥२॥इकताल ॥मैंकोजांणूंकमलीपैरणांवोइस्ककहरदारियाव ॥ मुजधीरजदीबिचुपईझकझौकाषांदीनांव ॥ बेपरवाईयारदीचलैंबुरापवनपरवाव ॥ नागरएकमलाहबिहूणांसबहीदावकुदाव॥३॥ तिताल ॥ पनघटमोहनरीमेरैंकिनदयोगौंहनलगाय॥ जबझुकिजमुनांजलभरौंएरीमोहिछींटनिदेचौंकाय॥चाहौंसिरगागरिधरयोएरीमेरीइंढुरियालेतचुराय ॥ जबमेरोश्रंचराछुटैंएरीवहिबिनकहैंउरसतआय॥घूंघटदिसटकबांधिकैंएरीरहैंइकटकनैंनामिलाय ॥ नहिंमानैंसैंननिषिज्योएरीवहिढ्योपरतअकुलाय ॥ नागरियाकहिकहाकरूंएरीमनमेरोहूललचाय ॥ ४ ॥ ति

सीनकरिहैंजैसीतुमकीनीं ॥ पहलैंप्रीतकरीवैसैंअवअैसोआंनांकां नींदीनीं ॥ तुमतोकपटअधीननंदसुतहमनैननिआधीनीं॥ नागरिया देषीनसुंनीकहूंयहहितरीतनवीनीं ॥ ४ ॥ तिताल ॥ कहाकरौंहेअं षियाअमांनी ॥ हटकनमांनतरूपललचीढहीपरतअकुलांनी ॥ गो कुलचंदचकोरिदृगनकीघरघरचलतकहांनीं ॥ नागरीदासनेहकीउ रझनिक्यौंहूंरहतनछांनी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मैंड़ादरदनजानैंहोआ पवेदरदी ॥ सोफीनूंकीपबरअसाढेगाढेइस्कअसरदी ॥ मैंनहिनेह कियापहिलैंवहचलिआयादिसघरदी ॥ नागरीदासनंददेनागरमन लीतामरदौंमरदी ॥ ६ ॥ इकताल ॥ नितदानमांगैंगहवरगैलमैं कितजांवरी ॥ सांवरोधोटाअरवीलोहैंमनमोहननांवरी ॥ अंचरग हिहंसिकहिरहैंमुषहूंजियमैंसकुचांवरी ॥ नागरीदासउतैंउरझेरोइतैं चवईयागांवरी ॥ ७ ॥ याजुगलभोजनकेपदनकेअनुक्रमकी अला पचारीमैंदैने ए ॥ दोहा ॥ मिलिजैंवतदोऊदरसरस, रसनांरसविस राय ॥ गईछुधासबउदरकी, रहीदृगनिमेंआय ॥ १ ॥ जोव्यंजन करपल्लवनि, छुवतछबीलीबाल ॥ ताकौंरुचिसौंलेतहैं ॥ नवलरंगी लेलाल ॥ २ ॥ दंतगसामुषतीयकैं, चितईकरिभुवभंग ॥ रह्योकौं रहीहाथमैं, भईदृगनिगतिपंग ॥ ३ ॥ सरसपरसकौंतरसजिय, लालकौंरकरलेत ॥ चतुरचौंकितबलोढिली, अधरछुवननहिंदेत ॥ ॥ ४ ॥ कौंरलेतकरकंपव्है, देतबीचछुटिजात ॥ स्वेदसिथलसिय रायतन छुवतअधरमुसकात ॥ ५ ॥ जैंवतस्यांमास्यांमदोऊ, नाग रियासुखदैन ॥ कोजनकाविबरननकरैं, वहमिलिभोजनलैंन ॥६॥ पदराग सारंग चौताल ॥ जैंवतरासिकरासिकनीसंग, पियहठिकौंर

नीठसंभारतसांवरो, नागरचितवतईठ ॥ जूरावांधतपीठदे, लईबा घिपियदीठ ॥ ४ ॥ पदरागतोडीचौताल ॥ मुरलीवजाईस्यांमसघ नविपुनजायतासमैंबैठीहीबालकरिकैंजुमंजन ॥ सुधिबुधिभूलीअ्र लीहियैंवनमालीवस्योहाथरह्योकजरासकीनभरिअंजन ॥ कहतअ्र धीरबैंनभरिआयेनैंनमांनौंप्रेमजलभींजितरफतजुगखंजन ॥ नागरि यासपीढिगथांमैंओसंवारैंवारघुलिगयेतारजेसिंवारछविगंजन ॥ १ ॥ तिताल ॥ देखोरीजायनटवररूपकीयैं ॥ प्रेममदमादिकसौंपीयैं ॥ ठाढोरीकदंबतरैंमुरलीअधरधरैंश्रवननिकुंडलजगमगातबांमवरभुज छीयैं ॥ फूलफलमंजरीप्रवालनकेगुच्छास्वच्छवीचचारुचंद्रिका यौंजूरासीसदीयैं ॥ नटकाछकाछैंआछैंचलतकटाछैंजाकीगुंजमाल लहलहातहियैं ॥ धुंववंकनैंनलटमंडितपहुपरैंनवेसरिसुदेसपौरिकेस रिकीकियैं ॥ नागरीदासऐसोमोहनत्रिभंगीलालचलिसषीवनवीगि देषिदेषिजीयैं ॥ २ ॥ रागतोड़ीकाष्याल ॥ इकताल ॥ मोकौंग योरीठागिग्वार ॥ कटितटीपीतपिछौरीबांधैंसांवरेअंगसुढार ॥ मद नमंत्रसेबैंनबोलिकछुनैंनावंकनिहार ॥ नागरीदासमिलैंफिरिमोहन करिराखोंउरहार ॥ १ ॥ इकताल ॥ जरददुपटेवालानींसांवला ॥ कैफभरीसीभौंहैंचढियांसिरकलगीउरमाला ॥ बिनदेषैंदुषदेतअमां नीमौहनसौंहनग्वाला ॥ नागरीदासदिवानीआंषियांफिरिपीयाइस्क पियाला ॥ २ ॥ इकताल ॥ हौंकहांजाऊंरीकौनघाटकौनबाट कितपाऊंनंदनंदन ॥ हरिगयोरीमनमांनिकमेरोकरिगयोधीरनिकं दन ॥ मंदहासिहसिकैंकसिभौंहैंबासिकीनीरसफंदन ॥ नागरीदास बचैंकोऊकैसेंवाठगकेछंदबंदन ॥ ३ ॥ इकताल ॥ पीयाकोऊऐ

दाविपुनरासिकरजधांनी ॥ राजारसिकबिहारीसुंदरसुंदररसिकवि हारानिरांनीं ॥ ललितादिकढिगरसिकसहचरीजुगलरूपमधुपांनीं ॥ रसिकटहलनीवृंदादेवीरचनारुचिरनिकुंजरवांनी ॥ जमुनांरसिक रसिकद्रुंमबेलीरसिकभूमिसुषदांनि ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियार सिकहीरसिकसबैगुनगांनी ॥२॥ तालचर्चरी ॥ कुंजछबिपुंजबहो बित्तनसेवतसदाजुगलआशक्तरसएकआनंद ॥ लिबढिरहीद्रुंमलता मत्तअलिकुसमप्रतिपलहुनहिंधांमरबिबिरहदुपदंद ॥ मधुरकलकं ठललितादिपूरितमहारंगमयरागसारंगधुनिमंद ॥ दासनागरतहां स्यांमस्यांमानिकटठाढीइकटकजुरहीनिराषिमुषचंद ॥ ३ ॥ ताल चर्चरी ॥ करतसुपसंगनवरंगललनाललन ॥ स्यांमजुगभुजनिबि चगउरतनभांमिनीसजलघनमांझमनौंदांमिनीझलमलन ॥ छुटत वरबारअरुतुटतहारावलीषोलिहीबिमलबिधुवदनघूंघटबलन ॥ नैंन हसिहसिमिलत्तरसछकीदृष्टसौंतैसीयेछबिभरीबंकभृकुटीचलन ॥ म हकिरहीमालतीकुंजकुसमितमहलटहलललितादितहांभूलिलागतप लन ॥ नागरीदाससुषरासलीलाललितकोरकोरकनिमदमदनदल दलन ॥ ४ ॥ तालचर्चरी ॥ कुंजरसकेलिकवनीयदंपतिकरत ॥ परसपरहितबिवसरूपमादिकछकेदूरिककरिबसनउरदृढअंकनिभ रत ॥ पियतमधुअधरसुपासिंधुमैंमगनमननिकटतिंहिंसमैंचषच्यारषं जनलरत ॥ कबहुभुवभंगजुतसीकरतरंगसौंअंगप्रतिअंगपियपरस दैंमनहरत ॥ बिथुरेबिचकचनमुषगउरनिकसतश्रमितचंदतैंसघनम नुंस्यांमबादरटरत ॥ सुरतसुषस्वेदतैंमहकिकेसरिचलीबासलहिना गरीदासधीरनधरत ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमेंदेंने ए ॥ दोहा ॥

देतप्यारीमुषपरसतअधरहोतभुवभंग ॥ वीचिवीचिनतरानिमधुरई अतिरसभोजनबाढयोरंग ॥ नागरिसपीसौंजलियैंटाढीइकटकभई दृगनिगतिपंग ॥ १ ॥ चौताल ॥ अरीएजैंवतहूंनहिंपाये ॥ इकटक रहेवदनचितवतहीअंषियनहाथविकाये ॥ जबकछुकौरपरसपरदी नैंतवतबमैंसम्हराये ॥ अतिआसक्तस्यांमस्यांमाकीनागरियालषि नैंनसिराये ॥ २ ॥ या अनुक्रमकी अलाप चारीमैं दैने ए दोहा ॥ हरिराधावृंदाविपुन, नितविहाररसएक ॥ विछुरतनांहींपलकहू, वी ततकलपअनेक ॥ १ ॥ प्रेमरासिदोऊरासिकवर, विलसतानित्यवि हार ॥ ललितादिकनितलेतहैं, तिहिंसुषकोरससार ॥ २॥ नवानिकुं जमनकौअगम, सेवतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअ षंडितरंग ॥ ३ ॥ नैंननिनैंनासिरांवहीं, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुहांच हींजियज्यांवहीं, स्यांमास्यांमसुतंत्र ॥ ४ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, विचवृंदावनवाग ॥ नागरियाहियमैंबसो, स्यांमास्यांमसुहाग ॥ ॥ ५ ॥ पद रागसारंग ॥ तालचर्चरी ॥ रायगिरधरननवकुंजर जथानिविचसंगश्रीराधिकारानीराजें ॥ मोरचहुंओरहयहींसहल चलचमूंगहरजलघोषनीसांनबाजें ॥ कोकिलाकीरकलहंसबंदी बहोत बडेनितकेलिकेबिरदगाजैं ॥ प्रेमपरधानमतिमदनमं त्रीमहादेतरसमंत्रसबसुषानिसाजैं ॥ मत्तमधुमाधोकुतवालके दूतअलिफिरतकरकुसमसौरंभकैंकाजैं ॥ सुफलफलदेततरुदेव बहोभांतिअरुनगरकुलदेविवृंदाविराजैं ॥ रूपउतसवसदासहजमं गलदृगनिउभयआशक्तलषिलाजलाजैं ॥ दासनागरनिकटलले तललितादितहांराजआनंदछकचाढियछाजैं ॥ १ ॥ चौताल ॥ वृं

भोजनलगे ॥ तीरजमुनांविपुनभीरवहोवालकनिहृदैंआनंदभरिपेल रसरगमगे ॥ छाकलीलालितकूलकोलाहलनिदिवसभयोजांनिम नुकोकिलागनजगे ॥ चहूंदिसिकुंडलाकारग्वालावलीचारुब्रजचंद उडगनानिबिचजगमगे ॥ कईकछींकांनकईफूलफलसिलनिपरकई कदाधिमधुधरनवकुलकललैंनगे ॥ किसलैदलकदालिदलजलजद लजघनिपरधरतब्यंजनाबिबिधिपरमकौतिकपगे॥ स्यांमकरबांमपर भातधरिपातफिरनागरीदासहसिजातबातनिषगे॥ निरषिबिधिकहत मनकहांजगिभोगयेजूठपसुपालकनकीजुतैंनहिंभगे ॥ १ ॥ तालच र्चरी ॥ आजुबरबिपुनमैंछाकलीलारची ॥ गोपबडडेनकेकंवरउड गनलसतबीचब्रजचंदअतिसरससोभासची॥उरसिबनकैंकिधौंचारु चमकतभईइंद्रमणिनीलकलकनककुंदनगची ॥ परसपरकरतमि लिमोदजुतचपलताबदनलपटातदधिमारमोदकमची॥लेतझुकिझप टिकरकौंरहारिसबनितैदेतगंडूकतकितकअंपियांनची ॥ नागरीदा सभयेबहुतबिस्मैंनिरषिचित्रलौंपांतिसुरगगनमंडलषची ॥ २ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ ठाढोहरिगिरकीसिपर चरनलकुटिलपटाय ॥ पीतांबरफहरातलषि, त्यौंत्यौंमनफहराय ॥ १ ॥ करगहैंडारकदंबकी, ठाढेअतिछबिअैंन ॥ प्रियाध्यांनमा दिकछके, रहेलालझुकिनैंन ॥ २ ॥ व्हैंठाढेछबिसौंरहे, चढिगिरसि षरकिसोर ॥ जवहीमुरलीधुनिकरत, कुहकीउठतबनमोर ॥ ३ ॥ लषिऊंचैंब्रजचंदकौं, तियअंगुरीनिबतांहि ॥ नागरियामनागिरसि षर, चढयोसुउतरतनांहि ॥ ४ ॥ पद ॥ रागसारंग ॥ इकताल॥ठा ढोनंदकोगोपाल ॥ बांमभुजतरलकुटिदीयैंचरनपरसतमाल ॥ रूप

नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गांनतांनरसरहसिकी, वहसिवदीदुहूंओर ॥ १ ॥ होतरागसारंगधुनि, ॥ दंपतिकुंजनवीन ॥ बिचबिचगायबजांवहीं, वीनानिपरानिप्रवीन ॥२॥ धीरजपगठहरैंनहीं ॥ सुरगहरैंगुनगांन, रागरसासवसिंधुकी ॥ लहरैंउपजततांन ॥ ३ ॥ संगमृदंगसुधंगगति, रागरंगअभिराम ॥ स्यामैंरिझई नागरी, नागररिझयेस्यांम ॥ ४ ॥ पद ॥ रागसारंग ॥ बनेमाधुरीकेमहल ॥ कूलजमुनांफूलफलभारिभँवरचहलापहल ॥ सघननवसंकुलितडारैंमिटतदिनमनिकहल ॥ विछयेजलछींटनिछिरकिविचकदलीदलकेपहल ॥ तहांबिहरतिप्रियाहरिसंगतजिसुरतरनदहल॥ दासनागरसषीफूलीफिरतआनंदटहल ॥ १ ॥ इनछाकलीलाकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ तजिरतननिकेथारकौं, करधरिजैंवतछाक ॥ हरिकौंभावैंभवनतैं, याव्रजकेवनढाक ॥ १ ॥ लकरीधोवैंभैंषनैं, बिधिसौंकरैंजुपाक ॥ जाकारनषटपटकरैं, ताकोभावतछाक ॥ २ ॥ आवैंनहिंसुरमुनिनकैं, कीयैंजग्यजंजाल ॥ सोग्वारनकेबीचमैं, जैंवतछाकगुपाल ॥ ३ ॥ जैंवतहरिलरिकांनिमैं, द्रुमछहिंयांजलकूल ॥ देषिमंडलीछाककी, रह्योकमंडलीभूल ॥ ॥ ४ ॥ हरिवनभोजनकेलिलषि, बिथकीबांनीबाक ॥ नागरियानितचितरहैं, चहीछाककीछाक ॥ ५ ॥ पद ॥ रागसारंग ॥ ॥ चौताल ॥ छोटेछोटेग्वालनिमैंछोटेनंदछइया ॥ राजतदोऊकुंवरअतिसुंदरगिरधरस्यांमगउरबलभइया ॥ लयेवनायढाककेदौंनाएकबैससबग्वारपिलइया ॥ नागरीदासतहांमधुमंगलमाथिमाथिदेतदूधकोघइया ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ नवलगोपालमिलिकरन

कौनघरीउतगईहुतहीजमुनाकरनसनान ॥ गागरियाविनचाहेमेरे बनिगईवातअजान ॥ २ ॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमेंदेनेए दोहा ॥ अरेपरेचितवतबदन, कहासरीजियआस ॥ गाइगईबछ रासहित, मोहनदुहतअकास ॥ १ ॥ परीपरिकगोपालकैं, निजगौ हनतजिभौंन ॥ सौहैंलषिभौंहैंरहे, दोहैंगइयांकौन ॥ २ ॥ इकटक रहिरहिजांहिदृग, दयैंदीठमैंदीठ ॥ नेहपूररनसूरज्यौं, चलैंनदेकैंपी ठ ॥ ३ ॥ लालगिरतग्वालनगहे, पियलइतियनसंभार ॥ इतउत दोऊसरभररहे, व्हैदृगसरानिसुमार ॥४ ॥ धेनुदुहतमोहनठगे, राधा रूपनिहारि ॥परतदौहनीतैंनिकसि, अंडीबैंडीधार ॥ ५ ॥ मुषचि तवतगइयांदुहत, परतधरनिपयसोत ॥ मांनौंमंगलदृगनिमनौं, दु धनिवरषाहोत ॥ ६ ॥ धेनुदुहतस्यांमहिठगे, रूपसौंहनीदीस ॥ गिरिगोदतैंदोहनी, परीमोहनीसीस ॥ ७ ॥ देतसौंहनीदौहनी, लेतलालमुसकाय ॥ भूलिहाथउतहीरहे, दीठदीठहराय ॥ ८ ॥ धेनुदुहतजांनीसबनि, गउरस्यांमकीप्रीत ॥ नागरियाकेहियवसो, परिकटहलकीरीत ॥ ९ ॥ पदरागसारंग ॥ तालचपक ॥ देषतब दनदसाभईऔर ॥ दौहनीलेतरह्योकरउतहीचितवतचाकितरसिक सिरमौर ॥ डगमगायपगधुकेधरनिकौंभुजभरिलयेग्वारबिचदौर ॥ आयगयोश्रमजलआननपरकंपिततनमनमथकीरौर ॥ मदनमो हनकोमनताहीछिनव्हैगयोरूपअसनिकोकोर ॥ नागरीदास स्यामकरिघायलपलटिचलीनागरिनिजठोर ॥ १ ॥ चर्चरीइक ताल ॥ ॥ चलीहैकुंवारिराधिकानिकुंजभवनरवनपाससजि सुबामत्तभंवरसंगसंगसंग ॥ आयरसिकरायनिकटलईहैभुजनि

अदभुतजोतिकोचहुंओरमंडलजाल ॥ दासनागरद्दगरहेअुकिप्रिया ध्यांनरसाल ॥ १ ॥ इकताल ॥ गईहूंआजदुपहरीवरियां ॥ सुंदर स्यांमगहैंकरठाढोजमुनांकूलकदंवकीडरियां ॥ पीतांबरवनमालअ लकजुगमंदपवनकैंवसफरहरियां ॥ नागरियालपिजकिरहिगईफि रनहिंसपींपिंडीथरहरियां ॥ २ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैं दैने ए ॥ दोहा ॥ जवतैंचितयेनैंनभरि, तवतैंछिननहिंचैंन ॥ मनमोहनगोहनपरयो, जागतसुपनैंसैंन ॥ १ ॥ मोहनलपिमोह नभई, कहालग्योयहहौंन ॥ सवसूझतमोहनमई, दईभईगतिकौंन॥ ॥ २ ॥ सुधिवुधिसवहीहरिलई, मनमोहनमुसकाय ॥ येदइयाकै सीवनी, लागीबिरहवलाय ॥ ३ ॥ लगिलगानिहरिमुपानिरपि, डा रयोसवसुपरूंद॥ जोहूंऐसोजानती, रहतीनैंननिमूंद॥ ४ ॥ कौनघ रीकीलगनियह, अरीभरीनहिंजात ॥ मिटतनांहिदिनरातिजिय, स्यांमरूपउतपात ॥ ५ ॥ घरवनहूनहिंलगतमन, रहतस्यामतन लीन॥अरीढटौंनांनंदकैं, कछुटौंनापढिदीन ॥ ६ ॥ नैंननिदुपनें ननिलगैं, तनमनदुपदुपगेह ॥ एदइयाकौंनैंदयो, दुपकोनामसनेह ॥७ ॥ हरिसौंलगनिलगायकैं, भरीरहतनितनीर, रिझवारनअंपियां निसौं, हौंहारीरीबीर ॥ ८ ॥ नागरसैंननिसैंनमिलि, वनीजुनैंनानि नैंन ॥ वनतवनतऐसीवनी, कहतवनैंनहिवैंन ॥ ९ ॥ पद रागसारं ग ॥ इकताल ॥ नैंननिसैंनतैंहूथकी ॥ देपिपंकजद्दगनिकीदिशद्द गनिलागीजकी ॥ टरतनहिंछिनचुभीचितवनिप्रेमगहवरछकी ॥ दासनागरिरूपहरिकीमिटतनाहिंधकधकी ॥ १ ॥ इकताल ॥ भई रीस्यांमसौंपहिचांन ॥ तादिनतैंसुपासिगरोविदाभयोलैंपांन ॥

ह्हैंमंडलचहुंफेर ॥ ३ ॥ पुलिवैंनोसुभवासबस, लईअलिसैंनीघेर॥ सारंगनैंनोंफिरतवन, सारंगहीकीबेर ॥ ४ ॥ नागरियाद्रुमलत निमैं, दमकतगऊरसरीर ॥ मनुहेरतघनस्यांमकौं, दामिनिफिरत अधीर ॥ ५ ॥ पदरागसारंग ॥ इकताल ॥ तरवरछांहतीरजमु नांकी, कीरपढावतडोलैं ॥ रूपरासिकोऊनवलकिसोरी, मोहन कहिकहिबोलैं ॥ झमकिझुकावतिडारकुंजकीबैंनीपीठभवंगकलो लैं॥ नागरीदासध्यांनरसमातीमूंदिमूंदिद्रगपोलैं ॥ १ ॥ इकताल ॥ भूलीसघनबनफिरतअकेली ॥ स्यांमस्यांमकहिटेरतहेरतदेषिद सारोवतद्रुमबेली ॥ ह्हैंगयोबदनकंवलकुमिलौंहौंठोकदुपहरीसंग नसहेली ॥ नागरियाअकुलायमनोहरआयअचांनकभुजभरि झेली ॥ २ ॥ तिताल ॥ चलेजातगहबरवनकौंमिलिगरबांहींदी नेंदोऊजन, ठीकदुपहरीश्रमितजांनिमनमुरलीसौंलपटायपीतवसन छांहकरतमुष घरस्यांमघन ॥ झलकतस्वेदअरुनईतियमुपफूंकदेत पियसुंदरअधरनिप्यारीजूहसतलवैंमनहीमन ॥ नागरियामृगवृंद मनोहरनिरपतरूपाफिरतसंगवनबनइकटकह्हैमनौंचित्रलिखेतन ॥ ॥ ३ ॥ चौताल ॥ बैठेआयकुंजकीछहियां ॥ ढुरवतपवनपीत पटसौंपियप्रियागहतहसिबहियां ॥ तनमनसिथलकरतस्यांमघनछ बिबाढीतिहिठहियां ॥ नागरीदासद्रुमनिदुरिदेषतरीझतहैंमनमांहियां ॥ ४ ॥ रागसारंग ॥ इकताल ॥ चलत ॥ रीकिपटकीप्रीतिसौंड रियैं॥मनऔरसुषऔररूपछिनऔरऔरलषिहियमांहिहहरियैं॥ नाग रियागुनसमझिस्यांमकेअबपरबसक्यौंपरियैं ॥ अरीजानदैंवहो नायकसौंभूलिनेहनहिकरियैं ॥ ५ ॥ इकताल ॥ ब्रजकेलोगहैं

झोलिमेलिकरतकेलिपरसतसुपअंगअंगअंग ॥ जुरतनैंनतुटततहार अंचलउरछुटतबारचालिकटाछिभ्रृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ ताघरिया देपिदुहनिनागरियालतनिओटतनमनगतिश्रवननैंनपंगपंगपंग॥२॥ ॥ याअनुक्रमकी अलापचारीमैंदैने एदोहा ॥ दांनकेलिजो मनवसैं, ताहिनकछूसुहाय ॥ तजिवृंदावनमाधुरी, अनतनकब-हूजाय ॥ १ ॥ मेरेनिताचितमैंबसो, दंपतिदांनविहार ॥ सुपपर झूठीझगरई, नैंननिकरतजुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहुंनकी, दांन केलिबतरांनि ॥ नैंननिहाहाषांनइत, उतभौंहैंसतरानि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उनईनीरसनेह ॥ पौरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरसमांगतकरतदोउ, नैंनसैंनसनमांन ॥ नागरियाकेहियबसो, दांनरंगबतरांन ॥ ५ ॥ पदरागसारंग ॥ ॥ तिताल ॥ तजिदीजैंगोहनसोहनमनमोहनगुमांनी ॥ परीतुरिय हटेवानिडरअतिअंचरछुवतनयेदाधिदांनी ॥ झूटैंझगरतडगरतजतन हिंअहाकहालंगराईठांनी ॥ नागरकुंवरतिहारेमनकीमैंअबसब जानीजूजानी ॥ १ ॥ तिताल ॥ जोतोअबइनाहिंछुवोगेदाधिदांनी॥ तोएगोपकुंवारिहमहूतैंनांहींरहैंगीसतरांनी ॥ ज्यौंतुमनंदनंदनत्यौं एऊअपनेकुलअभिमांनी ॥ जाहुचलेनागरगुणआगरसूधैंगैलगु मांनी ॥ २ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने एदोहा ॥ तियअ धीरदुमभीरतहां, डोलतजमुनांतीर ॥ कीरपढावतनीरदृग, स्यांम मिलनहियपीर ॥ १ ॥ छुटेबारडगमगतपग, श्रमबससिथलअं गेट ॥ फिरतदुपहरीदुमानिमैं, मोहनमिलनसहेट ॥ २ ॥ सघन कुंजअतितिमरतउ, मगपावततिहिंबेर ॥ राधारूपउजासको,

सिरबिधनांलिपदोनों ॥ १२ ॥ तिताल ॥ बीरारेषेवटियाल्याव
ल्यावनावरियापाररेउतार ॥ देहूंतोहिकंकनाहाथकोस्यामबिनव्या
कुलभइहौंनकरिरेअवार ॥ वहिंधुनिसुनिवंसीबिनबाजतकहाकरौंद
इयाबिचगहरीधार ॥ जैहौंपारचलिभेटिहौंभांवतोअबहौंरहौंगीनां
हिनागरियावार ॥ १३ ॥ तिताल ॥ मनमोहनाहोलगीछूटतनां
हिं ॥ तुमतोनषसिषकपटभरेपैंनैंननिसौंनवसांहि ॥ जितिततचारच
वावचलतजवसुनिसुनिमनपछितांहिं ॥ नागरइनअंखियनकीघाली
तुमहिकहोकितजांहिं ॥ १४ ॥ तिताल ॥ कँवलकेपातमैंलैआयेप्री
तमपांनी॥ अंजुरानिपीवतहैंप्यारी ॥ गईप्यासअ्राईनैंननिमैंदोऊदीठ
टरतनहिंटारी ॥ ठीकदुपहरीनिरजनबनजलकूलछांहसुषकारी ॥
नागरियाश्रममेटतमोहनमहामदनमनुहारी ॥१५॥ इकताल ॥ अ
रीपियचंदनलगावैंतबप्यारीसतरावैं ॥ मिसहीमिसरंसफंदडारिकैंमं
दमंदवतरावैं ॥ पुनगुलाबसीसीकरलैंलैंतनछिरकैंछिरकावैं ॥ नाग
रियादंपतिग्रीषमरितुसषीनिकेनैंननसिरावैं ॥ १६ ॥ चौताल ॥ दंप
तितनचंदनपटपहिरैं ॥ चंदनषौरऔरलेपचंदनकोउरचंदननहिंठ
हिरैं ॥ दोउमुषचंदनमैंछिरक्योगुलाबमांनौंसोहतसुधाकीबूंदैंअति
छबिछहरैं ॥ नागरियानागरबिहारचारुचंदनकैंचहलैंपरचोहैंमेरो
निकसैंनमनगजगहिरैं ॥ १७ ॥ तिताल ॥ महलटसीरदोऊबैठे
मोजमैंहोजमैंपायझुलायैं ॥ गरबाहियांझुकिलेतफुंहारानिमुषाढिगमु
षहिंजुलायैं ॥ स्वेतमिंहोंडपरैंनानिमैंछबिसोहतबारपुलायैं ॥ नागरि
यादंपतिग्रीषमरितुसषियनकेनैंनासिरायैं ॥ १८ ॥ इकताल ॥ स
षिसुंदरमंदिरसीरेविछौनांसमीरसुबासनहींहरषैं ॥ तहांदंपतिरंग

कपटी॥ चलेजानदैंबातकरैंमतिकहापरतरपटी॥

॥ ६ ॥ इकताल ॥

मरमबिनजांनैंहौंजुरहौंगहिमौंनां॥

हसिटौंनां ॥

इकताल ॥

नी॥ सैंननिहींदैंउत्तरतूलपिचितवनिचाहसनी॥

बावरीसीषमांनिइतनी ॥ नागर

अनीं ॥ ८ ॥ तिताल ॥ होसांवरेग्वारमेरीसौंइत

याउठतिनमोपैंताहितूदैहुउठाय ॥

यैंतूजाय ॥

तिताल ॥ चलत ॥

कदुपहरीघामघनेरीघरीकरहोनैंमृगनैंनी ॥

छबिसैंबलिबैठीहैंचलिगजगैंनीं ॥

पोलिपीतउपरैंनीं ॥ १० ॥ इकताल

तमालतीगहिरंगभरीअलबेली ॥

तहैंफूलचंबेली ॥

वतमधुरकंठसारंगधुनिगहबरकुंजअकेली ॥

निस्यांमांआयभुजनभरिझेली ॥ ११ ॥

मैंअपनौंमनभावनलीनौं ॥

भयोसबकैंमुखमोरैंमैंपायोपीयप्रवीनौं ॥

दोहा ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउत वाढीदुहुंनिमन, फूलनिबीनतफूल ॥ १ ॥ झूंमिझूकावतद्रुमलता, उघरतउरउरमाल ॥ फूलनितोरतदेतफल, मनमोहनकौंवाल ॥ २ ॥ दोऊमिलिफूलनिबीनहीं, जमुंनाकूलनिसांझ ॥ रंगरलीअतिव्हैरही, कुंजगलिनकेमांझ ॥ ३ ॥ फूलनिसौंबैनींगुहत, रचतफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोउ, भुजभरिदृढअंकवारि ॥ ४ ॥ कौतिकलागेबालके, संगडोलतनंदलाल ॥ छुवतजुहीकेफूलकौं, होतजुहीकीमाल ॥ ५ ॥ दुरिदुरिभेटतद्रुमनिमैं, फूलभरीसुकँवार ॥ लंपटमधुपनवांवहीं, पीतजुहीकीडार ॥ ५ ॥ बनफूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिरांम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगौरीस्यांम ॥ ७ ॥ फूलनिमिसुतियसौंमिलत, सषीरूपरचिछैल ॥ नागरियाकेहियबसो, फूलरंगीलीसैल ॥ ८ ॥ पद राग फूरबी ॥ इकताल ॥ आईहैंगेहस्यांमांउपबनतैंलियैंभांवतोसंग ॥ डोलनिकोश्रमदूरिकरनहितमंजनकाजचलाकुंजकौंएरीविगरायेहैं बारसिंवारपीठपरकारेसचिक्कनरंग ॥ न्हावतअहाकहाछबिपावतगोरीढिगनईबालसांवरीटहलकरतश्रीअंग ॥ नागरिसषीओटलीयैं ठाढीकंवलचरनकीचंदनपावरीएरीदुरिदेषतवावरीसीरहीजकिभई नैननिगतिपंग ॥ १ ॥ अरीयहकौंनजमुनांकूल ॥ जुवतिमंडलमध्यमांडित ॥ द्रुमनिबींनतफूल ॥ १ ॥ ललितभालबिसालबैंनीगुहीसिथलसंवारि ॥ ज्यौंबचंदनलताप्रतिरहिअरुझिपन्नगनारि ॥ २ ॥ हावभावकेभवनभूदृिगदुरिमुरतलजात ॥ जालघूंघटमैंपरेजुगमीनज्यौंअकुलात ॥ ३ ॥ उच्चनासापरिसुबेसरिबिमलमुक्ता

विनोदकैंललितादिप्रमोदनिसौंपरपैं ॥ छविसौंजहांछूटतहैंजल जंत्रसुयौंमनकौंउपमांकरपैं ॥ यहनागरबादरकैंवदलैंअवनोमनौं ऊरधकौंवरपैं ॥ १९ ॥ इकताल ॥ अरीघूंघटमैंतेरेमनमोहनमंडरा वैंरी ॥ मुपमैंमौंनिनैनैंननिमैंपीरनकाहूजनावैंरी ॥ नवतननेहसुगं धकीचोरीकोकिहिंभांतिदुरावैंरी ॥ नागरियातरवनितैंलागीलगन आगिदरसावैंरी ॥ २० ॥ इकताल ॥ रेरेपैरइयातनकराहिभारिदेमे रीगगरी ॥ रहिगईओघटघाटअकेलीगईऔरसगरी ॥ भूलीमग आवनद्रुमनिजलपूरितविषमगरी ॥ नागरपीयभीजेतनभेटी भुजभरिरूपअगरी ॥ २१ ॥ चौताल ॥ सोहतरंगभरेदोऊम हलउसीरमधिभीजेहैंफूहारनिगुलाबनीर ॥ वरुनींअलकभौंहबूंदैं फबीहैंमांनौंसरदकंमलपरओसजैसैंगौरस्यांमअंगनिलपटेचीर ॥ गावैंतहांदंपतिवजावैंहैंबिसापावीनबैठीहैंप्रवीनसपीसभासरतीरती र॥नागरीदाससुषनिवासग्रीषमविहारचारुसांवनसोलगिरह्योरसझर पुंजकुंजधीरसमीर ॥ २२ ॥ इकताल ॥ ढौरीलागीरहैंइनअंषियन कौंनपरीयहबांन॥ नीरभरीतऊप्यासीचहैंछविसागरस्यांमसुजांन ॥ वासरगतरजनीआगमरहैंआसाअरुझेप्रांन ॥ नागरमुषससिसुधा लोभलगिछुवतनहींकछुआंन ॥ २३ ॥ तालचौताल ॥ हमदेपिआ वतक्यौंआएकतराइतैंठाढेअबरोकिकैंकदंबानिकीछांहींहो ॥ क हांधौंभयोज्योव्रजराजकेकुंवरतुमसुनौंजूकाहुकेपरमेसुरतोनांहीं हो ॥ हमतुमएकजातिपांतिकेहैंबृजबासीकौंनकैंभरोसैंलालाभूले मनमांहीहौं ॥ नागरमांगतदानराषतहैंमांनयांतैंबाबाव्रषभानह्यां बसायेदेकैंबांहीहो ॥ २४ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए

जूराचूरापीतपट, लसतिकाछकटिलाल ॥ नागरियाकेहियबसो, नटवररूपरसाल ॥ ४ ॥ पदरागनट ॥ तालचरचरी ॥ सपीदेषिन घनटभेषधरैंगुपाला ॥ गावतनटरागमुपकंवलधरिमुरलिकापरसिचर ननिकँवलकँवलमाला ॥ नटनअरीचालिसुफलकराहिकिंनद्दगानिकों नवलनटनागरअतिरूपजाला ॥ नागरीदासछबिदेषिइकटकरहीव हुरिलगीनटहिनटरटरसाला ॥ १ ॥ इकताल ॥ एअंषियांकाहूकी नभई ॥ हैंप्रसिद्धसंसारकहांनीकहतहौंनांहिंनई ॥ कहियेकहामहा अरबीलीबरजीतितहींगई ॥ नागरीदासलालगिरधरकरमोकौंबांधि दई ॥ २ ॥ इकताल ॥ गईहुतीबेचनगोरसकैंरोकीआंनिदांनमिस मोहनवाकीचितवनिमेरेहियमांझकसकैं ॥ अंचरागहिफिरिबहियां गहीरीकरमेरोमसक्योसुअबलौंचसकैं ॥ नागरीदासकठिनमोहिबी तंतउंहितोमनलीनौंहसिहसिकैं ॥ ३ ॥ या अनुक्रमकीअलापचा रीमैं दैंने ए दोहा ॥ सांझभोरचितचोरको, तहांदुरिमिलन बिहार ॥ पौरिसांकरीसुपदगिर, गहबरबनअंधियार ॥ १ ॥ मिलतछैलभुजभरिप्रिया, पौरिसांकरीसैल ॥ कबहूनछाडतानि तपरैं, उहींगैलकीगैल ॥ २ ॥ फिरतगउश्रीरागकी, होतबंसु रियनिटेर ॥ गहबरागिरदुरिमिलतदोऊ, सांझसमैंतिंहिंबेर ॥ ३ ॥ अंकमालद्दढदुहुनिमैं, परीसुछूटतनांहि ॥ महाप्रेमगहवरछके, गहबर गिरकैंमांहिं ॥ ४ ॥ गहबरागिरकेतिमरमैं, परीचमकिचकचौंधि ॥ सही स्यामघनसौंमिली, भामिनिदांमिनकौंधि ॥ ५ ॥ इतआवतिंबररसिकि नी, उतैंरसिकसिरमौर ॥ नागरियादुरिमिलतदोऊ, गहबरगिरकी ठौर ॥ ६ ॥ पदश्रीराग ॥ तालचपक ॥ गहबरागिरसांकरीगली ॥

लोल॥ निरपिमोमनसंगताकैंरह्योआतुरडोल ॥४॥ अरुनअधरनिद सनदमकतकरतजबबतरांनि ॥ मनहुविद्रुमआलवालमैंप्रगटिहीरा पांनि ॥ ५ ॥ कामक्यारीसुभगश्रवननिप्रतिप्रसूंनझराय ॥ अलक ढिगासिंगारिवेली ॥ पवनलगिडिगुलाय ॥ ६ ॥ रतनझांईविंवकपो लनिपरीनहिंठहरात॥किधौंमेरीदीठवहठांफिरतपगरपटात ॥७॥ चि वुककूपकेंरूपपांनिपपरतलोयनमीन॥देपिमुपसोभावढीगोभासुकां मनवीन ॥ ८ ॥ कंठकंचननालउपमांयहसमहैंन ॥ जलजलरछ विसिंधुलहरनिधारपगटहरैंन ॥ ९ ॥ अैंचअंचरलेतआंननलाजछि नछिनभोय॥वदनाविधुपटनीलवनदुरिदुरिप्रगटपुनिपुनिहोय॥ चाल चितइनपरतजवउतहोतबांहसचाल ॥ पीतनवलासीकिधौंहैंकनक कमलमृनाल ॥ ११ ॥ सर्वअंगसुढारसुखमांकहीनआवतवैंन ॥ नंदकीसौंज्यौंबवीततजांनहैंमनमैंन ॥ १२ ॥ हारभूपनभारभां मनिडुलतचारुसरीर ॥ मनहुंदीपकलोयलहकतपरसमंदसमीर ॥ ॥ १३ ॥ स्वासवसआमोदतैंचहुकोदआलिभंकार ॥ तैंसियैंफेरानि कंवलछविपगनिझंझंकार ॥ १४ ॥ भेदगतिसंगीतसहजईपायपद्म निवास ॥ चरननखमनिचंद्रिकाबनिअवनिकरतउजास ॥ १५ ॥ कौंनहैंकहानांवइनकोहरयोमोमनवांम ॥ कह्योनागरीदासतबहसि कुंवरिराधानांम ॥ १६ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने एदोहा॥ नटनागरकलगांवहीं, बीचरागनटवैंन ॥ सुंदरतननटवरचलत, न टचेटकसेनैंन ॥ १ ॥ नटानटीतूकरतही, अवलपिरूपरसाल ॥ समैंभईनटरागकी, आवतनटवरलाल ॥ २ ॥ नटनागरलषिकैंउतैं, वेऊगुनसरसात ॥ घूंघटहीमैंनैंननट, उलटपलटकरिजात ॥ ३ ॥

जैंबराजोरी ॥ ठाढेंझगरतसांझभईअवहारिपसारतझोरी ॥ थहरत देहनठहरतसिरपरगरइलगतकमोरी ॥ टरतनहींहोडरतनहींहोकरत नहींहोथोरी ॥ जिनकौंतुमयहअंचरागहतहोसोहैंकुंवरिकिसोरी ॥ हियेओरकछुलालचललकैंपलकैंकरतनिहोरी ॥ प्यारेकुंवरछबीले नागरपाईचितकीचोरी ॥ ४ ॥ तिताल ॥ छांडिछांडिदैंरेअंचल चंचलछैला ॥ इतीकरतलंगराईललाक्यौंरोकिमहीकोगैला ॥ जां ननदेतदांनमांगतहठिठाढोव्हैंआडोअरैला ॥ सीपेकहांअनोपेना गरएजोबनकेफैला ॥५॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ कंवलमालहियकरकँमल, कँवलनैंनसंगधैंनु ॥ प्रफुलितकँवलपरा गजुत, यौंमुषमंडितरैंन ॥ १ ॥ घटकीसटकीलाजसब, गोधनसंग लषिलाल, अटकीनटकीदृगनिमैं ॥ वहलटकीलीचाल ॥ २ ॥ आ छैंकाछैंबेषनट, गायनिपाछैंलाल ॥ चलैंकटाछैंफूलसर, भूलतिसु धिव्रजबाल ॥ ३ ॥ आवतलषिनंदलालकौं, झूंमिझरोषानिझांक॥ फलीफूलडारतअली, लिषिलिषिहितकेआंक ॥ ४ ॥ गोधूरिकबि रियांभई, मिट्योबिरहदुषदंद ॥ प्रफुलिततियकुमदावली, लषिना चंद ॥ ५ ॥ पदरागगौरी ॥ तिताल ॥ गोवर्द्धनगिरसिपर चढिफेरतपीतपिछोरी ॥ बोलीबहुरिगऊबंसीमैंलैंलैंनांमधूंम री ॥ सुनिधुनिधैंनुवैंनश्रवनानिमैंमोहँमगनआतुरउठिदोरी ॥ बिधिभांतिभूषननिअलंकृतरुंनकझुंनकबजसब्दछयोरी ॥ उतरि गिनतुधनअपअपनौंबोलतमोहनबचनठगोरी ॥ नागरीदासच लेनदासुरगोपकुंवरिमिलिगावतगोरी ॥ १ ॥ इकताल ॥ रूपसिंह जीकृत ॥ बनतेवांनिकबनिव्रजआवत ॥ वैंनबजायरिझायजुवति

रहीनसंभारदेहसुधिविसरीमिलीऔचकन्नपभांनलली ॥ दच्छिन करगेंदुककुसमनिकीबांमअंसभुजसुहृदअली ॥ अंचरडारैंआधैंसिर छबिमत्तदुरदगतिआवतिचली ॥ गुनप्रयोगसहचरिसंभरावतिहृदै रूपमूर्छासुचली ॥ नागरीदासमिटायललकरतिमिलतउरजउरग तिबदली ॥ ७ ॥ चौताल ॥ व्हैंगईभैंटअचांनकबनमैंगहवरठौरअनु पममगमाईं ॥ गिरतरुसघनसांझअंधियारोतहांदोउलपटांनैंभुजभ रानिसुहाई ॥ सुपनौंसमझिनैंनमूंदिरहेंइतउतछुटातिनअंकमालसुधे बिसराई ॥ अतिआशक्तअमलमूर्छितमनकंपितदेहसिथलसियरा ॥ आयसषीसंभरायनिवारेतबलोकलाजगुरजनसुधिआई॥नागरिदै व लेचितवतफिरिफिरिलगनिअगाधाराधाकुंवरकन्हाई॥८॥या अ कुने मकीअलापचारीमैंदेंनें ए दोहा ॥ दांनकेलिजोमनबसैं, ताहिनक छूसुहाय ॥ तजिवृंदावनमाधुरी, अनतनकबहूंजाय ॥ १ ॥ मेरे नितचितमैंबसो, दंपतिदांनबिहार॥ मुषपरझूठीझगरई, नैंननिकरत जुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहुंनिको, दांनकेलिबतरांनि ॥ नैंननि हाहापानइत, उतभौंहैंसतरांनि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसां ,उन ईनीरसनेह ॥ षोरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेहें ॥ ४ ॥ गोरस मांगतकरतदोऊ, नैंनसैंनसनमांन॥ नागरियाकैंहियबसो , दांनरंग बतरांनि ॥ ५ ॥ पदरागगौरी ॥ तिताल ॥ दांनदैंरीब्रष भांनकुंवा रि, छाडिदेहुअबचाराबिचारकरतझगरईहोतअवार ॥ ह गोरस प्यारीकरतझगरईहोतअवार ॥ हाहागोरसप्यारीपाय ॥ प्यौंझकि झिझकतहैंअनपाय ॥ नागरिनैंननिकरिसनमांन ॥ ह सिबसकरि लयेस्यामसुजांन ॥ २ ॥ तिताल ॥ लालनैंकमारगदै जैंपतीनकी

नौं ॥ मोतनमृदुमुसकायभायसौंचितवनिमैंकछुकीनौं ॥ इतउतच लतनचरनथकीबिचटौंनासोपढिदीनौं ॥ नागरियाग्वारनिमोहैमिग प्रगटचोहैंनेहनवीनौं ॥ ४ ॥ इकताल ॥ आयआयहरिगलीहमा री ॥ गायगायनिकसतगोरीमुनिबौरीमतिनहिंजातसंभारी ॥ राग रूपकीडारिठगोरीलयोसुलयोमनमानिकभारी ॥ नागरियाहमतो अतिभोरीबेजगतकेबठगियाबडेबटपारी ॥ ५ ॥ इकताल ॥ आजु सषीभेटभईमोहनसौं ॥ आयअचानकभुजभरिलीनीफिरनसकीगौ हनसौं ॥ अजहुंकंपधकधकीहियमैंकहततोहिसौंहनसौं ॥ अबकैसैं नितिवचूंरोकिमननागरवृजजौंहनसौं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ आजुसषी यातैंभईअबेर ॥ गईहुतीहूंपारिकनंदकैंगोदोहनकीबेर ॥ तहांठाढो हुतोकुंवरसांवरोभईदृगनिभटभेर ॥ घूंघटबिसरिगईरहिइकटकनट नागरमुखहेर ॥ ७ ॥ या पदके गायबेकेबीचवीचमैंदैने ए दोहा ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाढीदुहुनिमन, फूलनिबीनतफूल ॥ १ ॥ दोऊमिलिफूलनिबींनहीं, जमुनाकूल निसांझ ॥ रंगरलीअतिव्हैरही, कुंजगलिनिकेमांझ ॥ २ ॥ बन फूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिराम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगोरीस्यांम ॥ ३ ॥ नीलपीतपटछोरछबि, उरझेद्रुमकीभी र ॥ मुरिसुरझावनिदुहुंनिकी, मेरैंउरझिबीर ॥ ४ ॥ फूलनिमिस तियसौंमिलत, सषीरूपरचिछैल ॥ नागरियाकेहियबसो, फूलरं गीलीसैल ॥ ५ ॥ पद ॥ जमुनांकैंकूलकूललतारहीझूलरी ॥ तहां देसषीहैंनीलेपियरेदुकूलरी ॥ गोधूलकबेरहूतैंव्हैंगईअबेरमैं ॥ देष तठगीसीरहीदोऊतिहिंबेरमैं ॥ सांवरीओगोरीछबिसोहैंअलबेलीहैं॥

जनगौरीरागनिगावत ॥ वारिजवदनलालगिरधरकोनिरषिसपीस चुपावत ॥ रूपकटाछिकरतप्यारीपररूपसिंहअलिभावत ॥ २ ॥ तिताल ॥ आवतसषाअंसपरधुके ॥ फेरतकँवलकँवलदलसेट्ट गमदआलसवसझुके ॥ उरझतचरनमालबैजंतीचलतमंदगतिरुके ॥ नागरियामनलोचनसबकेहरिहीकेव्हैचुके ॥ ३ ॥ इकताल ॥ सब व्रजकोजीवनिसांवरोसपिआवतहैंचालिदेषिरी ॥ जोनिरपतसोरहत ठगींसहिद्दगनहिंलगतानिमेषरी ॥ नैंनकुसमसरभौंहधनुपसीतापैंकन कक्तरेपरी ॥ नागरीदासगउनकेंपाछैंकाछैंनवलनटबेपरी ॥ ४ ॥ ॥ इकताल ॥ लालमनमोहनरी ॥ आवतगोधनसंग ॥ लाल ॥ ल लितअमैंठाझुकिरह्यो ॥ मन० ॥ फैंटापियरेरंग ॥ लाल० ॥ फैंटा पियरैरंगरंगभरे ॥ अंबुजनैंनबिसाल ॥ छबिसौंकरचकडोरफिरावैं॥ आवैंमदगजचाल ॥ सोहतसषासमूहचहूंदिसएकदेतमुपवीरी ॥ गो कुलवधूनिरषिरहिइकटकलागतपलआधीरी ॥ १ ॥ देषिपौरिहिय हिलगको ॥ मन० ॥ जहांठाढेठहिराय ॥ लाल० ॥ मुक्तमालतो रीतहां ॥ मन० ॥ सबकीद्दष्टबचाय ॥ लाल० ॥ सबकीद्दष्टिबचा यकियोमिसस्यांमसुघररंगभीनैं ॥ चितवतआपपरोपिरकीदिसऔर मोतियनिबीनैं ॥ स्वेदकंपघनस्यांमपुलकितनफुरतनहींकछुबैंना ॥ उतगईगइयांउतैंउरझिरहेनागरनागरिनैंना ॥ २ ॥ राग गौरीका ख्याल ॥ तिताल ॥ बडडेमोतिनवारीलालमेरीबेसरिदे ॥ घरसासु लरैंगीमतिहीनी ॥ बेसरिअतिरंगभीनी ॥ कहिकौंनकारनतैंलीनी ॥ परतहैंसांझकन्हाई ॥ मनकीमैंसबपाई ॥ चाहोसोनाहिंहैंनां ॥ प्या रेनागरस्यांमसलौंनां ॥ ३ ॥ तिताल ॥ अरीइनवंसीवारेमेरोमनली

हर्जीकृत ॥ अनियारेलोयनमोहन ॥ माधुरीमूरतिदेषतहीलालच लागिरह्योमनगोहन ॥ हटकतमाततातयौंभाषतलाजनआवततौंह न ॥ हौंअपनैंगोपालरंगरातीकाहिदिवावतसौंहन ॥ संध्यासमैंषरि कतैंनिकसीलियैंदूधकोदौंहन ॥ रूपसिंघप्रभुनगधरनागरवसकी नैंभौंहन ॥ २ ॥ तालचपक ॥ इनअंषियनहौंहारिकौंबेची ॥ परब सभईदईकहाकीजैंपरिगईबातकुपेची ॥ प्रेमदांमतैंबांधिलईहौंआ तुरमदनंदलाल ॥ क्यौंछूटौंब्रजचारुचौंहटैछापदईकरभाल ॥ ना गरीदासजगतसुपियारोमोहिनांहिछिनचैंन ॥ जानैंसोईलगीहोयजा कैंमुसकानिचितवनिसैंन ॥ ४ ॥ इकताल ॥ फिरिफिरिजातहैंलो यनभारे ॥ रूपगरबसौंभरेछबीलेप्रीतमाहितमतवारे ॥ मृदुमुसक निसौंभीजिरहेबिचघूंमतमदनअपारे ॥ नागरियारहिजातचित्रसे चितवतनंददुलारे ॥ ४ ॥ या अनुक्रमकीप्रपचारीमैंदैने ए दोहा ॥ पिलतकमोदनिकुसमज्यौं, निरषिचंदकीकोद ॥ त्यौंजियसुनत प्रमोदव्हैं, मधुमयरागकमोद ॥ १ ॥ छैलछलीपनघटरह्यो, रागक मोदहिगाय ॥ मगमोहीपानिहारिनी, प्रेमबारुनीपाय ॥ २ ॥ प निहारीहारीपनहिं, लषिमोहनमुसकात ॥ पनघटिगोसबकोसषी, इंहिमगपनघटजात ॥ ३ ॥ बिषसानियांदृगसरनिजिय, हरतचिक नियांलाल ॥ कनियांव्हैंआवतसषी, जातसुपनियांबाल ॥४ ॥ ना गरिसिरगागरिधरत, हरिलषिरहीलुभाय ॥ परीरूपबेरीपगनि, डगभरिचल्योनजाय ॥ ५ ॥ पदरागकमोद ॥ इकताल ॥ मतवा रोठाढोबाटमांझ ॥ कठिनभयोघरजैबोसजनीडरलागतत्यौंत्यौंप रतसांझ ॥ सोहतसीसलटपटीपागियां,छुटेबंदउरमदकेफैल ॥ नाग

सबहीसौंन्यारीन्यारीडोलतअकेलीहैं ॥ वीनतहैंफूलफलहिलहतुहैं॥ झमकिझुकावैंझूंमिडारनिगहतुहैं ॥ बेसरिअलकमालउरझतपातुरी॥ वाकीसुरझांवनिमैंउरझीहीजातुरी ॥ मेरीसौंकपटतजिपोलिमुपमौं नहैं ॥ नागरियामोसौंकहिसपीवेकौंनहैं ॥ १ ॥ तिताल ॥ अर्णामें जोगनहोयकित्थांजावांमनलैगयावंशीवाला ॥ इनगैलरियांआय कें ॥ मुजपरफूलचलाय ॥ इस्कलपेटीबातसौंकछुकहिगयामुरिमु सक्याय ॥ १ ॥ जबतैंकलपावांनहींपलनलगैंदिनरैंन ॥ कहरकले जेमैंलगीउनननैंनौंदीसैंन ॥ २ ॥ मनमोहनदेकारनैंफिरांउबाहिनपा य ॥ ढूंढांगभरूसांवला ॥ गयामनमथअलखजताय ॥ ३ ॥ रूपउजागरयारबिन ॥ रहिदानहींसयांन ॥ आवगलैंलगि भावते ॥ येनागरादिलज्यांन ॥ ४ ॥ इकताल ॥ जोगियाते रेकौंनटेवपरी ॥ भिछादैंदीलैंदानाहींआवतघरीघरी ॥ पलन हिंटारतहेरिरहतमुषआंपैंलोभभरी ॥ नागरस्यांमचवावचलैंगो यहज्जुरीनगरी ॥ ६ ॥ १६ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमें दै ने ए दोहा ॥ रूपधारघनस्यांमकी, छवितरंगकीझोक ॥ प्रेम प्यासकैसैंमिटैं, नैननिनांन्हीओक ॥ १ ॥ पतिकुटंबदेषतसबैं, घूं घटपटदियैंडारि ॥ देहगेहबिसरेतिन्हैं, मोहनरूपनिहारि ॥ २ ॥ दृगपौंछतअंतरअधिक, सहीनजातनिमेष ॥ पलपलजलभरिआव हीं, रूपमाधुरीदेषि ॥ ३ ॥ बडोमंदअरिबिंदसुत, जिहिंनप्रेमप हिचांनि ॥ पियमुखदेखतदृगनिकौं, पलकरचीबिचआंनि ॥ ४ ॥ मनमोहनमुषनिरषिकैं, अंषियांनांहिअघात ॥ नागरिदृगनिचको रकैं, सबससिकहांसमात॥५॥पदरागकल्यांण ॥ तिताल ॥ रूपसिं

अबकरदेमुठमरदी॥अपनेसुषस्वारथकेलोभीनजांनतऔरकदरदी॥
नागरीदासमोहनांप्यारेभलेकढेबेदरदी ॥ तिताल ॥ नैंनांयैंहोंल
गेरीआछेनीकेजीयराकौंपरचोरीजंजाल ॥ काहेकौंगईआजुपनि
यांहूंहसिचितयेनंदलाल ॥ बिनजांनैंभईभेटअचांनकालिषीटरतनहीं
भाल ॥ नागरियामेरेदृगनिकरीअबसबसुषकीहठनाल ॥६॥ याअ
नुक्रमकीअलापचारीयेंदैने ए ॥ दोहा ॥ अंधियारीघूंघटलियैं, नव
जोबनछकपूर ॥ गजगौंनीचलिकैंकरत, गजगरूरकौंचूर ॥ १ ॥
अतिगतिरूपसकौंनकहि, मत्तअदांहनिगौंन ॥ पीठिकटाछिनसौं
गिरैं, दीठसहारैंकौंन ॥ २ ॥ ललनारिझायेचलनिमैं, कलनपरत
दिनरैंन ॥ गतिकउतगलागेफिरैं, पाइनकेसंगनैंन ॥ ३ ॥ लांवनि
ढिगचमकतजरी, पायजेबपन्नांनि ॥ बसीपीयकैंहीयपग, ठुमकि
धरनकीबांनि ॥ ४ ॥ जहांजहांपगप्यारीधरत, तहांपियनैंनाबिछा
य ॥ नागरियासुधिस्यांमकी, चलनिदेषिचालिजात ॥ ५ ॥ पद रा
गईमन॥चौतालताल॥ आलीमदनमोहनतैंमोहेरीवाकेनैंनानितैंचलत
नतेरीयेचलनि ॥ मंदमंदहसिपगधरनिरहीहैंपागिहालिहालिउठैंलट
कुंडलहलनि ॥ हौंहीआईतेरैंगतिकौतिगकैंहितप्यारीछाडिअैंडदैरी
पैंडगलनिगलनि ॥ नागरीदासलालतलपरचतसघननिकुंजमांझ
कंवलदलनि ॥ २ ॥ चौताल ॥ सोयेदोऊसुपसेजरगमगेस्यामा
स्यामपरमसुषदाई ॥ नेहविबसघुलिनींदघरीघरीचौंकिपरतभुजभर
तकह्नाई ॥ मुंदिमुंदिषुलतिमहाछबिपावतदंपतिआंषियांअतिअल
साई ॥ नागरीदासरैंनियोंबितईनाहींबितईछबिहियमैंछाई ॥ ३ ॥
इकताल ॥ बृंदाबनसरदरैंनराकाअभिरांम ॥ रचिहैंरुचिररसिकके

रियाअतिनिडरनंदको, नवजोबनछकिरह्योछैल ॥ १ ॥ इकताल॥ कैसैंकैंजांऊंपनियांभरनमगबिचठाढ़ोकन्हैया ॥ भरीगगरियाआइकैंरितवैडरतहैंनांहिज्जुदैया॥ हौंभोरीवैसीनहिंजांनौंउतवहछैलछलैया ॥ नागरियाडरधरकतछातीहैंब्रजलोगचवैया ॥ २॥ इकताल॥ पनियांभरनगईअैसैंपनघटपनिहार ॥ ठाढोईरहैंजहांअरीनितलंगरनंदकुंवार ॥ छलसौंछलीचुराईइंडुरियादईसलिलबिचडार ॥ सकीनधरिकैंसीसगगरियाअतिव्है्गईअवार ॥ आयनिकटउरलायलईकरिअधरपांनतिहिंवार ॥ नागरियामनलैमोहनकोव्हैंआईउरहार ॥ ३ ॥ इकताल ॥ अरीआजमोहिमोहनअतिभायेउन्हैंहौंहींगईरीज्जुभाय ॥ हौंहूंरहीलषिथकितइतैंउतवेऊरहेलुभाय ॥ लोगकुटंबसबकछुकहोअबजियधरिभावकुभाव ॥ नागरियाह्टगलगनिलालसौंलगिगईसहजसुभाय ॥ ४ ॥ इकताल ॥ मीतपियारोमेरैंचोरीचोरीआवैं ॥ जोसोऊंदुरिअपनीअटातऊअचांनकआंनिजगावैं ॥ लोकलाजडरडरीजातहौंमतिकोऊलषिपावैं ॥ नागरियानिधरकमोहनजियरसबसरैंनिबितावैं ॥ ५॥ रागईमनकाष्याल ॥ तिताल॥ मींतमिलनकीमोहिपुमारीलगीरहैंदिनरैंन ॥ अंगअजकजकपरतनहींजियभरिभरिआवैंनैंन ॥ जबतैंमनमोहनभेटीहूंबिसारिगईसुषसैंन ॥ नागरियाफिरिअधररसासवपियैंबिनांनहिंचैंन ॥ ३ ॥ इकताल ॥ वाठगियाकाहिवालमेरोमनबांधिलीनौंसाथ ॥ नेहडोरिदृढबंधीगरैंइतउतमोहनकैंहाथ ॥ मनपरबसपरिगयोबिचारोजैसैंकोऊअनाथ ॥ नागरियाकहतनबनैंकछुकाठिनाहिलगकीगाथ ॥४ ॥ तिताल ॥ जालिमयारहोअैसीकिनवदी॥ इस्कलगायषबरनहिलीती

सिया ॥ मोहिभलेलगतइतेपैंनागरअंगअंगरसमासिया ॥ २ ॥
॥ तिताल ॥ माईइनिश्रंपियनिलगानिलगाई ॥ पहलैंआपजा
इकैंउरझीफिरिमोकौंउरझाई ॥ बिनदेषैंमुषकँवलकांह्नकैंअवन
हिंपरतरहाई ॥ नागरीदासआगिरुईबिचिकैसैंदवैंदबाई ॥ ३ ॥
॥ तिताल ॥ सांवरेमोहितेरीसौंरे ॥ बिनदेषैंछिनकलनपरतहैंनैंनानि
हाथबिकांनीहैंरे ॥ ठगताफिरतगोरीभोरनिकौंकछुहसिचितैंयौंयैंरे ॥
नागरियाअपनैंबसकारिकैंबहुरिचलततूअपनीगौंरे ॥ ४ ॥ तिताल॥
एरीनैंनाअटकेहटकनमांनैं ॥ घूंघटओटलाजगुरजनकीतनकनहीं
जियआंनैं ॥ जबहीदृष्टिपरतमोहनमुषइकटकव्हैंउररानैं ॥ नागरी
दासप्रीतिअंतरकोरहनिदेतनहिंछांनैं ॥ ५ ॥ तालचपक ॥ येरी
कांह्नैंजुकहाकरिजान्यौंतराकितरकिउत्तरदेतउतावरी ॥ घोषराज
श्रीनंदसुवनसौंझुकिझुकिझमकतहैंतूबावरी ॥ कोटिकांमबिजईमन
मोहनताकीतूबलिजावरी ॥ नागरियाअनषावनिकोछिनछाडि
छाडिसुभावरी ॥ ६ ॥ ताल ॥ कह्नइयातुमराधेजूकैंआवतहोनिक
टनिकटचलेऐसेकबतैंभयेहोधीट ॥ याबनघनबिचरोकिरहतानित
अंगुरीगहतफिरिगहतहौं पहुंचाचलिनदेतमगनीठ ॥ ऊपररिस
अंतररसपूरतमुखझूठीबातैंजुरेनैंनबसीठ ॥ नागरीदासहिलिमिलि
दोऊएकभएरहेहैंकुंजनिनिसरच्योअतिरंगमजीठ ॥ ७ ॥ इक
ताल ॥ दुरतनहींपटवोटआंपैंकनांवडी ॥ मोहनतनदैरहीपीठयहईठ
पंगपगपांवडी ॥ झुकीलाजकैंभारपरतहैंउमडिनिनेहअमांवडी ॥
सबदिसिसूधैंचलतनागरीउहिंदिसिआंवडीबांवडी ॥ ८ ॥ याअनु
क्रमकीअलापचारीमैंदैंने ए दोहा ॥ लगेरूपकेलोभसौं, रोकेनैंक

लिराधासंगभांम ॥ बैंनाबीनवलयमिलेकिंकिनीमृदंग ॥ नूपुरादि गांनघोषछयोहैंसुधंग ॥ अंसअंसबाहुबंध्योमंडलअपंढ ॥ गोपिनि विचिविचगुपालधरैंसिषीसिपंड ॥ नितेहोतअंचलचलतलसतपहुप रैंन ॥ ज्यौंधुजासमूहफहरातमैंनसैंन ॥ मनहुंपवनप्रेरकामिलिगउर स्यांमसंग ॥ मेघचक्रचंचलाबिलासरासरंग ॥ वासबसअधीरसंग संगभौंरभीर ॥ झुलतहारपुलतबारनहींसह्मारचीर॥ गिरतकुसमकव रिनितैंबिबसरसावेस ॥ लटपटायलगतकंठपुलकतनसुदेस ॥ नींवी कुचपरसपांनचुंबनउगार॥ हावभावलहरबढ्योसिंधुरसअपार ॥ मु रछपरयोमदनवजीदुंदुभीअकास ॥ पहोपवृष्टिहौंनलगीजहांबिला सरास ॥ बिथकतलषिरहीरैंनहोतहैंनभोर ॥ नागरनटनिरषिभयो चंद्रमाचकोर ॥ १ ॥ तिताल ॥ थेईतथेईथेईथेईथेईथेईथेईथेई ॥ उघटतलालरसिकमनमोहनरंगभरीनिर्ततहैंप्यारी ॥ मुरजमृदंगट कोरमिलावतगावतसषीसुघरदैंतारी ॥ ललितअंगभुवभंगचितैंपिय बिवसभयेबोलतबलिहारी ॥ जगमगरहीरासमंडलमैंनागरियामुषचं दउजारी ॥ २ ॥

## अथ राग कानराका ष्याल ॥

॥ तिताल ॥ राधाप्यारीतैंसांवरेकोमनहरयो ॥ तेरैंहींरसलीन रहतनितज्यौंजलमीनपरयो ॥ मदनमोहनपरतैंजुमोहनीमोहनमं त्रकरयो ॥ इतउतचितनाहिचलतनागरीरूपजालजकरयो ॥ १ ॥ ॥ तिताल ॥ एहोप्यारेनंदलालरसियाकौंनबालउरबसीतिहारैं तुमज्जुकौंनउरबासिया ॥ इतीरैंनिबितईजुकहांपियप्यारीबाहुजुगक

बहोछंदबंदकरिल्यावरीकिसोरीअंषियांरहतनहिबोरी ॥ ल्याइब होदाईनलिवाईअलीगलीगलीधरकतउरलोकलाजभोरी ॥ नागरी दासराधामोहनचकितदोऊपरीहैंरूपठगोरी ॥ १ ॥ ताल चपक॥ प्यारेहसिभेटीदुलही ॥ किहिंबिधिछूटैंमधुपपीयसौंतियलताफूल उलही ॥ बदनदुरावतघूंघटपटमैंझलकतअंषियांछबिजुलही ॥ नागरियामोहनमुषषोलतसुंदरतातुलही ॥ २ ॥ इकताल ॥ आजुरंगहैंनिहोरनांपैंछहरिछहरिउठैंलहरिनेह ॥ प्रथममिलनप्यारी मुषघूंघटापियषोलतनिजकंपदेह ॥ झीनेचीरझुकौंहींअंषियांसकुच भरीसुषस्यामगेह ॥ ताहिनिरषिइकटकमनमोहननागरीदासबलइ यालेह ॥ ४ ॥ इकताल ॥ आजुसुषरैंनबिहाई ॥ घूंघट षोलनिकामकलोलनिरसिगईनिसातिहाई ॥ सुरतरंगरसबसअल सौंहींमुदतिषुलतिअंषियांरिझहाई ॥ स्यामास्याममिलायसुवायसे जनागरिसषीसिहाई ॥ रागअडाणौं ॥ अपनीअटारीपरिप्यारी छूटेबारठाढ़ीबासबसभुलेभौंरभ्रमतहैंकोरकोर ॥ मोहनचकोररहेदे षिमुषचंदवोरचंदमुषिराधाझुकीदेषतचकोरओर ॥ उतपीतपटगि रिगईबनमालइतनीलपटउरउडतनजांनैंछोर ॥ नागरियानागर निहारैंरसरूपमातेसैंनांनितैंहाहाकारिडारैंतृनतोरतोर ॥ ५ ॥ ताल॥ सीतलसुगंधपवनमनकौंहरनलाग्योचंद्रमाढरनलाग्योसूचतबिहांन कौं ॥ रहीरैंनिथोरीरिरंगबोरीकौंननींदपरीउठीअकुलायकैंरिझांवन सुजांनकौं ॥ चातुरीपरमप्रीतआतुरचितनागरीसुजाकेकंठदीजैं कहाकोकिलासमांनकौं ॥ आयगीअटारीपरछायगीसुगंधतबगाय गईतांनांनिरिझायगईप्रांनकौं ॥ चौताल ॥ आजुराधेजूमोहन

रुकैंन ॥ कहाकहौंइनकीदसा, महालालचीनैंन ॥ १ ॥ रूपराशिधनपांवहीं, छिनकनतऊअघांनि ॥ नागरियाह्टगलालची, तजतनलालचबांनि ॥ २ ॥ पदरागनायकी ॥ तालचपक ॥ अहोनैंनमेरेरूपमदिरापियैं ॥ इकटकऔकरहतहैंलायैंपरतनांहि बिनचैनलियैं ॥ नंदनंदनरसछकेरैंनिदिनऔरतनकछविनांहिंछियैं ॥ नागरीदासमहामतवारेहोयकहातिन्हैंअटककियैं ॥ १ ॥ तिताल ॥ नवलनिकुंजकांन्हरचितहैंसज्याइतउतकौंरहेरीलगि सुरतिश्रवननैंन ॥ नूपुरकीझांईसुनिबनकेचकोरमोरकुहकिकुहकि सबलागेहैंबधाईदैंन ॥ स्यांमचलेसौंहैंस्यामालईहैंभुजानिभारिटरत ननैंननैंनअधरअधरलैंन ॥ आनंदअपारकेलिकोककीकलानि बढीनागरीदासमोपैंकहीनपरतबैन ॥ २ ॥ ताल चौताल ॥ बारासिवारसेमांझचंदसुपहारनबीचबंदहैंछूटे ॥ लटपटायदोऊरहे लपटिकैंअस्तबिस्तपटभूपनपूटे ॥ पौढेस्यामास्यामश्रमितसुपबलयपंडबिपरेकहूंफूटे ॥ नागरियाएकांतविपुनमौंनिसबटपारमदनलरिलूटे ॥ ३ ॥ याअनुक्रमकोअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ नैंनभंवरभयभारतैं, बैठिनसकतिनिसांक ॥ नवतदीठिकैंलगतही, लौंगलतासीलांक ॥ १ ॥ दुरेदुरायैंक्यौंकुंवारि, भौंनअंध्यारैंसांझ ॥ दिपैंअंगफानूसज्यौं, संगसषिनकैंमांझ ॥ २ ॥ नपासिषलौंअति सौंहनी, नांहिनकछुसमतूल ॥ रूपलतालागेमनौं, मुसकनिचितवनिफूल ॥ ३ ॥ नागरियालषिथकितहृग, मतिबरनतभईपंग ॥ छविउलहनिजातनकही, नवदुलहनिकेअंग ॥ ४ ॥ पदरागनायकी ॥ चौताल ॥ मोमनकुंवरिदेषिबेकीलागिरहीअतिढोरी ॥

थेमुसकायनैंनभारिकहतजोरिकरप्यारो ॥ नागरियाहितसौंनाहिंऊ रनहौंनितरिनीतिहारो ॥ ११ ॥ तिताल ॥ रासरच्योनंदलाला ॥ लीनैंसंगसकलव्रजबाला ॥ अदभुतमंडलकीनौं ॥ अतिकलगांनस रससुरलीनौं ॥ लीनौंसरससुररागरंजितबीचमिलिमुरलीकढी ॥ हौं नलाग्योनृत्यबहुबिधिनूपुरानिधुनिनभचढी ॥ डुलतकुंडलषुलतबैं नीझुलतमोतिनमाला ॥ धरतपगडगमगाबिबसरसरासरच्योनंद लाला ॥ चितहावभावनिलूटैं ॥ अभिनयदृगभौंहानिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुकअंकमालभरिझेलत ॥ झेलतभुज निभरिअंकनिसंकतमगनप्रेमानंदमैं ॥ चारुचुंबनअरुउगारहिधर ततियमुखचंदमैं ॥ उडतअंचरप्रगटकुचबरग्रंथपटकसिछूटैं ॥ ब ढचोरंगसुअंगअंगचितहावभावनिलूटैं ॥ पगनिगतिकउतिगमचैं ॥ कटिमुरमुरिमध्यलचैं ॥ सिथलकिंकिनीसोहैं ॥ मुकटलटकमनमो हैं ॥ मोहैंजुमननटमुकटलटकनिमटाकिगतिपगधरनकी ॥ भंवरभर हरचहूंदिसिछबिपीतपटफरहरनकी ॥ गिरचोलषिमनमथमुराछिलै भजिरतिमुषमधुअचैं ॥ नचतमनमोहनतृभंगीपगनिगतिकउतिग मचैं ॥ बृंदावनसोभाबढचो ॥ तापरव्यौंमबिमांनानिसौंबढचो ॥ दुं दभीदेवबजावैं ॥ फूलनिअंजुलिबहोबरषावैं ॥ बरषैंजुफूलनिअंजु लीबहोअमरगनकउतगपगे॥ बिबसअंकानिजबधूहियानिरषिमनमथ सरलगे ॥ व्हैगयेचरथिरसुथिरचरसरदपूरनससिचढचो ॥ दासना गरिरासऔसरबृंदावनसोभाबढचो ॥ १२ ॥ इकताल ॥ रह्योरंगषे लतरासरसाला ॥ नूटिगयेहारछूटिगयेअंचरुश्रमडगमगनिमराला ॥ जुवतिजुथजुतधसेजमुनांबिचिमदनमोहनातिहिंकाला ॥ क्रीडतजनु

संगरंगभरीगावैं ॥ सुनितांनानिकीझांईकहाकांननिकौंआवैं ॥ आधीरातचनकमूंदिविमलचंदचांद्रिकामैंहैंरहीथकितकुंजकोकिला लजावैं ॥ तैसियैंमृदंगकीटकोरहैंसुधंगरंगदेवीजूकेहाथकीसोभ्र वनसुहावैं ॥ नागरियानागरकेजीलकीतरंगानिसौंरंगभरेवृंदावन मोरकुहकावैं ॥ ७ ॥ इकताल ॥ नवलनिकुंजअटारीपरवृंदाव नकीसोभादोऊगावत ॥ निसउजियारीकहादूरतैंरागअडानेंकी धुनिआवत ॥ सुनतगांनविथकतद्रुमबेलीपवननपातडुलावत ॥ पियनागरहूतैंप्यारीकीतांनरंगसरसावत ॥ ८ ॥ इकताल ॥ नंदनंदनचंद्रमावल्लवकुलकुमदबृंद ॥ जलदसघनकुंजचारुश्र वतसुधावेणुगानविपुनविपुनप्रतप्रकासअनुपमछविदुतिअमंद ॥ अद्भुतस्वयंरूपदिव्यविमलजौंन्हप्रव्रतरासकेलिकलाकोविदआनंद कंद ॥ नागरव्रजपतिकुमारपस्यतमुषसंबरारिविस्मयज्ञुतनम्रग्रीव चरनकमलबंदवंद ॥ ९ ॥ इकताल ॥ हरिसंगहुतीसोअकेलीवह ठाढी ॥ दामिनिसीदेहकोप्रकासआसपासदेषिरहीद्रुमबेलनिमैंचि त्रकीसीकाढी॥ क्वासिक्वासिपियपियपियकहिकहिटेरतमहाविरहकी बेदनिबाढी ॥ नागरीदासरासरसबरसायहायहायाकितदुरेघनस्यांम दुषितहैंगाढी ॥ १० ॥ ताल ॥ बैठेजायपुलिनमैंरासिकविहारी ॥ बीचिआपव्रजचंदमनोहरउडमंडलव्रजनारी ॥ नवनिचोलअपअ पनैंसबमिलिआयबिछायदये ॥ तनथिरदामिनसेनिकसेपटबदराउ तारिगये ॥ बंकभौंहनैंनारसमातेछुटिअलकैंअलबेली ॥ प्रेमबिबस बूझतपियकौंतियहसिहसिप्रेमपहेली ॥ इकभजतेकौंभजतएकविन भजतेभजई ॥ कहाकुंवरतेकौंनजेबइानिदुहूनिकौंतजई ॥ समझिअ

+ परजतिताल ॥ चौपरिचतुरनिपेलकीबाजीरंगलेरही ॥ कुंजमहलरसकउतकसपियांसवमनअंषियांदेरही ॥ १ ॥ यौंसुषहीसुषवीतिगईनिससूचतसमैंसवैंराहि ॥ नागरियापासनिउरझेपियक्यौंसुरझैंइहिवेरही ॥ २ ॥ दोहा ॥ रगमगरहींचौपरिचहुल, प्रीतमरहे निहारि ॥ दीपकढिगजागिमगिरही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ १ ॥ नथलटकनिकुंडलहलनि, हारनिझुलनिनिहारि ॥ जवझुकिपासे डारहीं, लडकीलीसुकुंवारि ॥ २ ॥ दोहा ॥ रूपलोभपकेपिया, कच्चेहोतहैंसारि ॥ त्यौंत्यौंचितवतसतरव्हैं, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ॥ ३ ॥ वचननिरादरपेलमैं, लालहिलगतसुप्यार ॥ चालिरुगटी हंसकहतयौं, लड़कीलीसुकुंवारि ॥४॥ दोहा ॥ समझिदावपियचूकिकैं, सारिहिचलतसह्मारि ॥ पकरिपिछौंहौंदेतकर, लडकीली सुकुंवारि ॥५॥ वेसरिवंसीपीतपट, हारदयेपियहारि ॥ मनहूलीनौं जीतिकैं, लढकीलीसुकुंवारि ॥ ६ ॥ दोहा ॥ लालचलेजुगजोरि

---

सूचना-

+ यह चिन्ह किया है सो (परज तितालका) पद ओर १ से लगाके ८ तक आठ दोहे इस पदके चौफेर चौपडकी आकृतिमें मूल ग्रंथमें था. परंतु स्थानके अभावसे इस पुस्तकके इस पृष्ठ मे स्पष्ट आशका नहीं इस लिये सीधा लिया सो इस मुजबहै विचमें परज तितात उस्के ऊपर १-२-अंकका दोहा. वामे तर्फ ३-४ का दोहा दहने तर्फ ५-६ का दोहाओर नीचे ७-८ का दोहा इस मुजव जानना चाहिये।

करनीसंगलीनैंमत्तद्विरदनंदलाला ॥ गौरैंअंगमहाछबिपावतभीजे बारिबिसाला॥मनौंसीतलचंदनपुतरीनसौंलगीलपटिआहिमाला॥ छबिसौंछीटनिषेलमचावतप्रेमबिबसब्रजवाला ॥ जनुउच्छवकालिंद्रीग्रहउछरतमुक्तनिकेजाला ॥ बाहुसुंडअवगाहिनीरबलवीरचलेगजचाला ॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरामिआयेगेहगुपाला ॥ १३ ॥ याचोपरिकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ प्यारीपियसंपियनसहित, चोपरिपेलतबैठ ॥ मनौंमदनपुरचोहटै, लगीरूपकीपैठ ॥१ ॥ छल झनककुरियांझनक, पासेठनकतसंग ॥ व्रजवतगुनीअनंगमनु, जलतरंगजुतरंग॥२॥ स्यांमसारिगोरीचलत, चांपिचहुंटियनिचार॥ मनहुंकवलकेअग्रव्है, आवतभृंगकुमार ॥३ ॥ जरदनरदघनस्यांमपिय, द्वैअंगुरिनगहिलेत॥मनौंकोयलकीचंचुमैं, पीतअंबछबिदेत॥ नागरिपासपरानिकी, इहउपमादरसांन ॥ हाथरूपसरतैंमनौं, लह रैनिकसतजांनि ॥ ५ ॥ तिताल ॥ रागपरज ॥ मैंजांनेहोसुघरजैसें चोपरिपेलतरावरे ॥ सीपेहोकहांतुमसारिपासेएदेतअटपटेदावरे ॥ मांनतएकसारजुगव्हैबोअपनीचौंपकेचावरे ॥ नागरपियवरजोरीजीत्योचहोरंगीलेछबीलेअरबीलेलालकरिकारिकपटउपावरे ॥ २ ॥

दिनिरपिलुभांनी ॥ २ ॥ सबकीपलकलागतनांह ॥ आएतियमंड लकैंमांह ॥ पियमुषफैंटाछौरिदियैं ॥ प्यारीघूंघटझुकनिलियैं ॥ लियैंघूंघटझुकनिलषिमतिथकीकरनिप्रसंसकी ॥ नंदसुतवृषभांनत नयाचलतगतिकलहंसकी॥लेतभांवरिगउरसांवरकलपद्रुमकीछांह॥ दुलहीदूलहदेषसबकीपलकलागतनांह ॥ ३ ॥ दोऊब्याहानिसकेर समसे ॥ सषीनिकेनैंननिमांझबसे ॥ राजतजुगलनेहकेभरसौं ॥ जो रनिअंचरअरुकरकरसौं ॥ करसौंजुकरजोरैंपरसपरपहुपबरषावैंस षी ॥ कुंजकौतकरूपगहमहभईअंषियांमधुमषी ॥ रचीफूलनितल पदिसचलिचितैंचितवनिमैंहसे ॥ रहोनागरहियबसेदोऊब्याहनिस केरसमसे ॥ ४ ॥ इकताल ॥ चितवनिहीयहऔरपरमअनुरागकी ॥ उमडीहैंमैंनसैंनसैंनानिमैंबनीबनाकेभागकी ॥ अबचालिओटनिराषि येनीकैंलीलालोचनलागकी ॥ नागरीदासधन्यबृंदाबनधनियहरी तिसुहागकी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ गिरधरदूलहपरमसलौंनां ॥ वाकीह सिचितवनिमैंटौंना ॥ दुलहदुलहनिरूपलुभाये ॥ प्यारीजूकछु कचितैंमुसकाये ॥ प्रीतमअंकमालकरिलीनी ॥ बाढीहैंमनमथकेलि नवीनी ॥ टूटेहारउरडोरी ॥ दुलहनिसुरतिसिंधुझकझोरी ॥ दोऊश्र मितसेजामिलिसोये ॥ अधषुलेनैंनमैंनरंगभोये ॥ प्यारीजूनिद्रावसि व्हैंजावैं ॥ तबउठिपियपायनिसहरावैं ॥ इहिंविधिसुषहीसुषनिस बितई ॥ नागरीनवलकेलिदुरिचितई ॥ ६ ॥ या अनुक्रमकी अ लापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ नितदुलहनिनवनागरी, हरिदूलह नितहेत ॥ नितविवाहबृंदाविपुन, नितचौंरीसंकेत ॥ १ ॥ दूलह दुलहनिकैंवलमुष, रहतनिहारिनिहारि ॥ अलिदृगचितवनिभांवेर,

कैं, नीलपीतरंगसारि ॥ समुझिसकुचिहसिझुकिरही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ७ ॥ बाजीबाजीउठिचली, बाजीलगनिविचारि ॥ हियवाजीनागरिमिली, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए ॥ दोहा ॥ नितदुलहनिनवनागरी, हरिदूलहनितहेत॥ नितबिबाहबृंदाबिपुन, नितचौरीसंकेत ॥ १ ॥ दूलहदूलनिकंवलमुष, रहतानिहारिनिहारि ॥ अलिहगचितवनिभावरैं, भरतदोऊरिझवार ॥ २ ॥ दुलहनिझीनैंचीरहग, झांईछबिझलकात ॥ लालजालघूंघटरुके, षंजरीटअकुलात ॥ ३ ॥ रसबिबाहसुषनिरषिकैं, लोचनसमझिसिहात॥ मनामनोहीराषिये, बनाबनीकीबात ॥ ४ ॥ फूलनकेसिरसेहरे, झलकतप्रगटसुहाग ॥ बसनसहानेतनफबे, मनुपहरचोअनुराग॥५॥मंगलरैंनिसुहागको, गावतसषीप्रवीन॥ब्याहविलासअनंगरस, बाढ्योरंगनवीन॥६॥मंगलकुंजाबिबाहनित, दंपतिबितनबिलास ॥ व्हैअलिनितिप्रतिलहतसुष, नवलनागरीदास ॥६॥ पदरागबिहागरो ॥ श्रीबृंदावनसुषदाई ॥ तामधिनवलनिकुंजसुहाई ॥ झुकिरहेबहोद्रुमफूलनिफूले ॥ डोलतमधुपबासबसभूले ॥ भूलेमधुपबसबासडोलतत्रीबिधिबहतसमीरहैं ॥ घुमंडिरहीधुंधरिकुसमरजमनहुमंडपचीरहैं ॥ कोकिलाकलकीरगावैंनित्यविहारनिकाई ॥ नृत्तकारीमोरतहांश्रीबृंदावनसुषदाई ॥ १ ॥ ललितादिनिरषिलुभांनी ॥ अतिछबिपुंजकुंजदरसांनी ॥ आनंदउरनसमावैं ॥ मिलिमिलिगीतमनोहरगावैं ॥ गावैंमनोहरगीतमिलिजहांबनीचौरीचारुहैं ॥ परममंगलरैंनराकारच्योब्याहबिहारहैं ॥ मोरमोरीसीससजिकैंजोरसुंदरआंनी ॥ बसनमूहेतनलसनललिता

बिपुंजकुसमितमहाकरतअलिगुंजमनुरुंजबाजैं ॥ जौंहूजगमगसुम नवासरगमगतहांमदनडरढगमगतलाजभाजैं॥ कमलसैंनीयपरकम लनैंनीकमलनैंनचैंनीरंगेरंगरैंनी ॥ लालकीअलकपरबालफूलहिध रयौंफूलसौंलालरचीबालबैंनी ॥ हारमैंहारपियकरतमनुहारकर हारटूटैंबिथुरिबारछूटैं ॥ सुरतसुखसुभटदोऊलिपटहीनिपटहृढकं चुकीपटकपटग्रंथपूटैं ॥ गउरसांवरअंगसंगअतिरंगभुवभंगहृगहृग निमैंपंगकीनैं ॥ मंदबतरानिमैंदामिनीरदनदुतिछबिसदनबदनर समदनभीनैं ॥ मधुरमधुअधररसनांरसतहसतमुषहसततांबोलदैंहीं॥ बंधेभुजपाससुभबासपुलकितअंगनागरीदाससुषरासलैंहीं ॥ ४ ॥

## मंगल चौंरी ॥

+ रागषंभावची ॥ताल॥ नवलरंगभीनीराति ॥ देषिदेषिमंगलकुंज सिहाति ॥ राधामोहनब्याहचाहजुतमुपसोभाउफनात ॥ देषिथकी निससमैंमनोहरभयोनचाहैंप्रात॥ नागरीदासकुसमद्रुमफूलेमनहुजौं

---

## सूचना–

यह मंगल चौंरीका पद तथा दोहे मूल ग्रंथमें गोलाकार प्रकारथा. बिचमें पद राग षंभावची ताल ओर चाहुं ओर गोलाकृतिमें दोहे ६ थे सो स्थाना भावसे आया नहीं सो इस प्रकार जानिये इस पदके आस पास जो जो अंक सो सोही दोहे ।

| ४ | १ | २ |
|---|---|---|
| | पद | |
| ५ | ६ | ३ |

भरतदोऊरिझवार ॥ २ ॥ दुलहनिनैंचीरट्टग, झांईछबिझलकात ॥ लालजालघूंघटरुके, पंजरीटअ‍ऊात ॥ ३ ॥ रसविवाहसुष निरषिकैं, लोचनसमाझिसिहात ॥ गांमनिहीरापिये, वनांवनीकीवात ॥ ४ ॥ फूलनकेसिरसेहरे, झकतप्रगटसुहाग ॥ बसनसहांनैंतनफब्यो, मनुपहरचोअनुराग ॥ ५ ॥ मंगलरैंनिसुहागको, गावतसषीप्रवीन॥ब्याहबिलासअनंग, वाढ्योरंगनवीन ॥ ॥ ६ ॥ मंगलकुंजबिबाहनित, दंपतिबितनलास ॥ व्हैअलिनितप्रतिलहतसुष, नवलनागरीदास ॥ ७ ॥ राग ॥ तालचंपक ॥ रहसिमंगलरा ॥ आजप्रगट्योहेहरिराधानेहबृंदवनत्रधाईयां ॥ रचनायेमाईरचीहैंबिवाहब्रजदेवीपधराईयां ॥ गामाईमंगलगीतजुवतीसबैंउमाहियां ॥ फूलेहैंद्रुमनानाभांतिवनभाधुमडाईयां ॥ नाचैंयेमनमगनमयूरकोकिलकोहकसुनाईयां ॥दूलहयेनवदुलहनिजोररुचिरसिंगारवनाईयां ॥ मौरीयेनवमंञमौरदुहूंनिसीसछबिछाईयां ॥ ल्यायोहेवरविप्रमनोजलगनमंत्रमिलाईयां ॥ चौरीयेनवनिभ्रतकुंजसुवनसेजबैठाईयां ॥ तहांनयेकोऊऔरसमीपसवसषीसमझिदुराईयां ॥ करसौयेकरिपांनग्रहनअंचरप्रीतिजुराइयां ॥ भांवरियेदईकुंजकुटीरजमुनांसाखिकराईयां ॥ चुंबनयेकरदयोउगारमदनदच्छिनांपाईयां॥ बिथुरेहैंवरवारविशालमनहुंचँवरफहराईयां ॥ किंकनीयेकलबजतानिसांननूपुरधुनिमनभाईयां ॥ सुंनिसुंनियेललितादिकओटलेनहैंअलछबलाईयां ॥ इहिंवनयेंनितराधाकंतलीलाकरतसुहाईयां॥ नागरियाकहीबातनजातपैंउरमैंउरराईयां ॥ ३ ॥ रागषंभावचीचर्चरी ॥ सषीदेषिनवकुंजछ

नैंगरबांहीतनफूलनिकेसोहतसिंगाररी ॥ फूलनिकीफूंहीहलिवरषं लताईहेंहोतैसीफूलनिकीवहतबयाररी ॥ फूलीहैंजुन्हाईफिरीमदनदु हाईरहेअरुझिगउरस्यांमगातरी ॥ फूलनिसफलकरीनागरियाआ जमईपरमसलौंनीयहरातरी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ आंनकाविक्तत ॥ सु रंगीसेजांरगमगरह्यासुषसैंण ॥ हारांउलझ्याहारहियारानैणांउल झ्यानैंण ॥ मनमथअमलअगाधाबोलैंआधाआधाबैंण ॥ रसिकवि हारीप्यारीमिलिआनंदमैंसोहतबितईछैरैंण ॥ ६ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ रापेनैंनबिछायकैं, लालपहोपदलगो द ॥ पायमहावरदैंनकौं, बढ्योमहाउरमोद ॥ १ ॥ रमापलोटतच रननित, जाकेसहजसुभाय ॥ सोवृषभांनकुमारिकैं, देतमहाउरपा य ॥ २ ॥ कंवलचरनापियचतुरलषि, इकटकरहेलुभाय ॥ लियैंम हाउरहाथमैं, रंगभरयोनहिंजाय॥३॥रंगभरतपगदुहुनिअति,वाढ्यो रंगअनंग॥ नागरियाकेदृगनिवह, लग्योसुछुटतनरंग॥४॥पदरागवि हागरो॥तालचपक॥बीनबीनफूललालजावकबनायराष्योअैहैंप्यारी राधारंगपायनिमैंलगैहैं॥मंदपौंनपातकुंजआहटतैंचौंकपरैंजानैंकब देषिनैंननैंननिमैंषगैहैं॥आयमिलीबालअंकमालभरिबैठेलालपौंछत चरनआछैपीतांबरछोरसौं॥आधैंमुषघूंघटमैंआंगुरीदसनधरिनागरि निहारिरहीनैंननिकीकोरसौं ॥ १ ॥ इकताल ॥ लालरंगेरंगजावक सौंचरननिहारैं ॥ लीनैंकरकँवलमैंभीनैंरंगपायप्यारोताहिदेषिरीझि रीझिमनधनवारैं ॥ तबपियसीसनायनैंनानिछुवायोचहैंदोऊमुषझे लिपगननिकारैं ॥ नाहिंनसम्हारैंअंगनागरनिहारैंरंगआधीरातकुंज वीरचंदउजियारैं ॥ २ ॥ तिताल ॥ दोऊमिलेपगेप्रेमरसघातनि॥ हं

न्हमुसक्यात दोहा ॥ दुलहनिगोरीराधिका, दूलहस्यामसुजांन ॥ व्याहसमैंसंकेतमैं, ललितारचतवितांन ॥ १ ॥ दोहा ॥ चहलपहल आनंदमहल, रंगरलीसुषहेत॥नेहग्रंथजोरैंबसन,दोऊभांवरैंलेत॥२॥ दोहा ॥ पवनपरसघूंघटहलत, रुचिररूपदरसात ॥ दुलहनिकोमुषनिरषिकैं, पियइकटकव्हैंजात॥३॥ दोहा ॥ दूलहदुलहनिकंवलमुष, रहतनिहारिनिहारि ॥ अलिद्दगाचितवनिभांवरैं, भरतदोऊरिझवार ॥ ४ ॥ दोहा ॥ करसौंकरजोरेदोऊ, करतहंसगतिगौंन ॥ गावतमंगलगीतमिलि, चलेभांवतेभौंन ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कुसमसेजबिहरतदोऊ, तहांनकोऊपास ॥ व्हैंभँवरीदेषतजुगल, नवलनागरीदास ॥ ६ ॥

आंनकविकृत ॥ रागषंभावची तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदुलहनिरंगभरेपियस्यांमसुंदरसुखदैंन ॥ रंगभरीसैंनरचीजहांरंगभरयोउलहतमैंन ॥ रसिकबिहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसुषसैंन ॥१॥ आंनकविकृत ॥ या पदके बीच बीचमैं दैने ए दोहा ॥ गहगडसाजसमाजजुत, अतिसोभाउफनात ॥ चलिबिलसोमिलिसेजसुष, मंगलगलतीरात ॥ १ ॥ रहीमालतीमहकितहां, सेवतकोटिअनंग ॥ करोमदनमनुहारमिलि, सबरजनीरसरंग ॥ २ ॥ चले दोऊमिलिरसमसे, मैंनरसमसेनैंन ॥ प्रेमरसमसीलालितगति, रंगरसमसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीसुखसदन, आयेरससरसात ॥ प्रेमबहुतथोरीनिसा, व्हैआयोपरभात ॥ ४ ॥ रागपरजतिताल ॥ सषीआज्ञनिराषिसुषपुंजरी ॥ तहांमैंनगांनअलिगुंजरी ॥ दंपतिहियफूलनिलियैंहो॥बहुफूलनिसौंफूलीनवकुंजरी॥ फूलनिकीसैंनीपरदी

नकीप्रेमपहेली ॥ ८ ॥ तिताल ॥ होमेरोमनमोहिलयोस्यांमसुजा
न ॥ नैंननिनैंनांमिलायभायसौंचितवनिकरिसनमांन ॥ तबतैंकलन
परतव्याकुलनितभावतषांननपांन ॥ नागरीदासप्रीतिकीबेदनिजा
नैंनलोगअजांन ॥ ९ ॥ इकताल ॥ कन्हैयानांजांनौंकहाकीनौं ॥
तेरोमुषदेषतहीतेरैंव्हैंगयोमनआधीनौं ॥ भौंहनिमैंकिनैंनबैंननिमैं
टौंनासोपढिदीनौं ॥ नागरीदासमोहनांप्यारेमोमनतैंहरिलीनौं १०॥
आंनकविकृत ॥ इकताल ॥ तिताल ॥ रतनालीहोथारीआंषडियां॥
प्रेमछकीरसबसअलसांणींजांणिकंवलकीपांषडियां ॥ सुंदररूप
लुभाईगतिमतिहोइगईज्यूंमधुमाषडियां ॥ रसिकबिहारीवारीप्यारी
कौंणबसीनिसकांषडियां ॥ ११ ॥ आंनकविकृत ॥ ताल ॥ मोह
नजीह्मारैंथेकांईहठलाग्याछोजी ॥ जाबाद्योघरछोडोछेहडोथेरसबा
तांपाग्याछोजी ॥ आंप्यांथांकीछैरतनालीसारीनिसराजाग्याछो
जी ॥ रसिकबिहारीप्याराह्मांनैंथेओरांसूंअनुराग्याछोजी ॥ १२ ॥
आंनकविकृत ॥ तिताल ॥ रंगिरह्याजुगलरूपरंगमांहीं ॥ कुंजमह
लमैंदर्पणसाह्मैंदियांरहैंगलबांही ॥ कदेकसंभ्रमव्हैंस्यामारैनेडैंस्यां
मछतांहीं ॥ कदेकरीझिरहैंरसिकाबिहारीदेषिदेषिपडछांहीं ॥ १३ ॥
आंनकविकृत ॥ तिताल ॥ चिरतालीतैंनंदकुंवरमनमोह्योहेकांमण
गारी ॥ बसिकरिवारामंत्रतोजिसासीपीकुंणवृजनारी ॥ दिनअर
रैंणसैंणरैंकारणअंगअंगरहैंसंवारी ॥ भलोकियोआधीनआपणैंप्री
तमरसिकबिहारी॥१४॥आंनकविकृत ॥ तिताल॥ येबांसुरियावारे
ऐसैंजिनबतरायरे ॥ यौंनबोलियेअरेघरबसेलाजनिदाविगईहायरे॥
हौंधाईयागैलहीसैंरेनैंकचल्योधौंजायरे ॥ रसिकबिहारीनांवपायकैं

सिहांसिकरतभांवतीबातनि ॥ दोऊचितचतुरलगावतचोरी॥देहैंपगभूपनचोरीगोरी ॥ दुहुनिमैंप्रीतझगरैंयौंपरहीं ॥ प्रियजियप्रेमउमगिभुजभरहीं ॥ दुहुंनिमैंरसदुरिघुरिघुरिआवत ॥ मुरिमुरिअधरानिसैंनवतावत ॥ दुहुंनिकेउरझेतनमननैंना ॥ कहाकहूंनैंनानिकैंनाहिबैंना ॥ दुहुंनिकौंअंगसह्मारभुलांनी ॥ रंगमैंसबनिसिजातनजांनी॥ दोऊजहांआईअमलजुन्हाई ॥ सोएलपिनागरिकुंवरकन्हाई ॥ ३ ॥ रागपरजकाष्याल ॥ इकताल ॥ एअंषियांनाहिंदुरैंदुराई ॥ क्यौंरहैंदबीप्रीतिअंतरकीहोयकहाकीनैंचतुराई ॥ हटकीरहतनांहिलापनिमैंप्रेमछकीउरझैंरीमाई ॥ औरहीदसाभईतेरीसौंसुंदरसांवरैंरूपलुभाई ॥ प्रगटहौंनकैंहेतसपीमैंएअंषियांवहौबिधिसमझाई ॥ नागरीदासअंतमोमनकीतैंपाईसोपाईहीपाई ॥ ४ ॥ तिताल ॥ एरीमनसुंदररूपलुभायो ॥ गयोहुतोताहीछिनहूतैंबहुरिनमोपैंआयो ॥ घरघरैंरुसह्योयाकाजैंसबग्रहकाजछुटायो ॥ नागरियामनजनमसंगातीव्हैंगयोमीतपरायो ॥ ५ ॥ तिताल ॥ चतुरहसिचितवनिमैंमोही ॥ गिरतसंभारिलईहूंभुजानिभारिसोसुधिनांहिंनकोही ॥ ताछिनतैंचितवढीचटपटीनिपटअटपटीगांस ॥ नागरीदासचुभीक्यौंनिकसैंवकाबिलोकनिफांस ॥ ६ ॥ इकताल ॥ भुराईहौंरेठगोरेनैंना ॥ देषतिहीरहिजांऊंभूलिकैंउडतउरजउपरैंना ॥ करतबिवसमोहभरीदृगनिमैंमदनमोहनीसैंना ॥ नागरीदासरूपकीआतिगतिकहींनपरतकछुबैंना ॥ ७ ॥ इकताल ॥ काहितनबनैंनिपटअटपटीबातहेली ॥ चिततैंछिनइतउतजुटरतनाहिंमोहनछबिअलबेली ॥ चढौनेहचितवनिकीलहरैंधीररहतनहिंपीरनवेली ॥ नागरीदासनवरानिसकौंकछुम

॥ जमुनांविचझिलमिलकीसोभाकँवलकूलसुषकारी ॥ नावडगमगैं डरलपटावैंरसिकबिहारीजीसौंप्यारी ॥ २२ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ करिभौंहैंवांकीकहौं, तनगौंहैंक्यौंवैंन ॥ इतराजीअबकीजियैं, इतराजीकेनैंन ॥ १ ॥ चितचिंताचाहतधरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसषीकिहिंकारनैं, पहरेपलटिसिंगारि ॥ २ ॥ तुमहीसर्वसकांन्हकैं, मांनकरोवेकाज ॥ राधाबल्लभनांमकी, प्यारीनिबहोलाज ॥ ३ ॥ छाडिइतोअनषावरी, अहेबावरीबांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भयेतृभंगीस्याम ॥ ४ ॥ पदरागपरज ॥ इकताल ॥ मानगयेहैंछुटिसुंदरसांवरेसौंनेह ॥ सषीबचनसुनिगवनकीनौंमंगलरवनअछेह ॥ रूपकीआगरीनागरियावलिपुंहचीहैंआनंदगेह ॥ मिलीहैंगोकुलचंदसौंचंद्रिकाकौतिककुंजबिदेह ॥ १ ॥ तिताल ॥ कुंजतैंआवतहैंजमुनातटिनागरनागरिसंगलियैं ॥ चंदकीचांदनीछायरहीहैंतैसेईस्वेतसिंगारकियैं ॥ गावतरागजमावतसहचरिआवतआसवप्रेमापियैं ॥ देषिलगीनवकासलितातटनागरियाआनंदहियैं ॥ २ ॥ ति० ॥ विहरतनवकावैठिबिहारी ॥ जमुनांजगमगजौंन्हिजामिनीकँवलकूलसुषकारी ॥ मिलवतबीनप्रवीनसहचरीगावतपरजपियारी ॥ कबहुकनीरनीरजकरलेतहैंभांमिनस्यांमसहारी ॥ उरकरपरसतचौंकिचाहिमुषनैंननिकांमकेलिबिसतारी ॥ अदभुतसुषसलितामैंषेलतनागरियाबलिहारी ॥ ३ ॥ तिताल ॥ वृंदावनकीतलहटीडौलैंजमुनातीरतीर ॥ जटितश्वेतनगनाववैठिदोऊसांवलगौरसरीर ॥ चलवतचपलचारुचंपावलिसजिसहचरितनसषाचीर ॥ गावतजातस्यामसुंदरगुनपूरि

क्योंइतनौंइतरायरे ॥ १५ ॥ रागसोहनी ॥ इकताल ॥ अमांनोअं षियांदरसदिवांनी ॥ रूपआगबिचब्रेसकहूईगिरदीहैंउररांनी॥इस्क अमलसौंझुकीरहैंदींछिनछिनवरषतपांनी ॥ नागरनवलइतेपरादिल बरहूवारहतगुमांनी॥१६॥तिताल॥ मनमेरोरीवरज्योनहिंमांनैं॥प्रगट करतहैंअंतरकीसवरहिनदेतनाहिंछानैं॥ नेहबायबौरांनेकीगतिजोजा नैंसोजानैं ॥ पैंच्यौरहतनजायलगतहैंनागररूपनिसांनैं ॥ १७ ॥ ॥ चौताल ॥ अरीइनिअंषियनसौंपचिहारी ॥ एमेरैंबसनांहिभई हौंअपनैंबसिकारिडारी ॥ इतउतउझकतरहतचकितव्हैंदेषैंबिनां दुप्यारी ॥ जबहिदृष्टपरतमोहनमुषजातनतनकसह्मारी ॥ कबल गिलैंनिबहौंइनिभांतिनगृहकुलकांनिबिसारी ॥ नागरिदासभईये बैरनिदैंहुंकहाकहिगारी ॥ १८ ॥ आंनकविक्रत ॥ तिताल ॥ प्यारीजीरासाल्हूडामैंआवैछैंसुगंधीरूडीवास ॥ अंगमरगजीगंधलु भायांभंवरभवैंआसपास ॥ लटपटैब्रेसआणिऊभारह्याआंगणाकुंज निवास ॥ रसिकविहारीपवनढुलावैंषासाहोयषवास ॥ १९ ॥ आ नकविक्रता ॥ तिताल ॥ होरंगीलीबाजीलागिरहीछैनैंणांमैं ॥ जांणींकामकटाछांहींकादेपिदावदैंणांमैं ॥ कांपैंअंगअनंगरंगसुर भंगहुवोबैणांमैं ॥ रसिकाविहारीमनफूलबढीहुईहारजीतसैंणांमैं ॥ ॥ २० ॥ तिताल ॥ देपोसषीरीदेषोदोऊबैठेनावमैं ॥ गावतआवत चपलचलावतसहचरचंपाचावमैं ॥ स्यामास्यामादियैंगरबहियांन वकांबिचरसभावमैं ॥ नागरनवलसषीनिकीअंषियांलगिलपटील पटावमैं ॥ २१ ॥ तिताल ॥ आंनकविक्रत ॥ आजकीरात आछीलागैछैंउजारी ॥ बिहरैंस्यामास्यामचावसौंसुंदरनावसिंगारी

जमनकौंअगम, सेवतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअ षंडितरंग ॥ १ ॥ प्रेमरासिदोऊरसिकबर, बिलसतानित्तबिहार ॥ ललितादिकनितलेतहैं, तिहिसुषकोरससार ॥ २ ॥ नैंननिनैंनसिराव ही, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुहांचहींजियज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतंत्र ॥ ३ ॥ कहूंउजारोचंदको, कहुंपातनकीछांह ॥ रंगभरेराजततहां, पियप्यारीगरबांह ॥ ४ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचवृंदाबनवाग ॥ नागरियाहियमैंबसो, स्यामास्यामसुहाग ॥ ५ ॥ पद राग परज तिताल ॥ राजतदोऊदीनैंगरबांही ॥ रहींछायनिससरदजुन्हैयानवनिकुंजकैंमांही ॥ अरुझिरहेतनमनआनंदमैंआधीरातिद्रुमनिकीछांहीं ॥ नागरीदासलतारंध्रनिलषिरीझिरीझिबालिजांही ॥ ६ ॥ तिताल ॥ सोहतहैंअलसौंहेंनैंना ॥ लटकिलटकिपियपरअरसावतसिथलकहतमुषआधेआधेवैंना ॥ वहोतगईनिसिप्रियाजंभावतचुटकीदेतलालसुषदैंनां ॥ नागरीदाससषीछबिदेषतबिसरिबिसरिजातउरउपरैंनां ॥ ७ ॥ तालतिताल ॥ अंषियनिभावभरथोहैंरसको ॥ घुरिघुरिसनमुषरहतरसीलीरूपबढ्योआरसको ॥ आधेआधेबचनकहतकछुमंत्रपढतमांनौंपियबसको ॥ नागरिनवलरासिकनहींपौढतनींदभरीदेषनकोचसको ॥ ८ ॥ तिताल ॥ आईअबदुहुनिपैंजौंह्निजगमगरी ॥ गईपरछांहीपाछैंदेतहैंदिषाईआछैंह्यांईरहोचंदआगैंधरोजिनपगरी ॥ तनतनसौंमनमनसौंअरुझेदेषिअधषुलेनैंनरहेनैंननिमैंपगरी ॥ रसबसपागेनवनागरियास्यांमजागेआधीरैनिहुतीसोऊबीतगईसिगरी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ चंदचंद्रिकामंदकी, दंपतिअंगउजास ॥ लताकुंजरंध्रनिकढ्यो, किरननिनिकरप्रकास ॥

रहोउरप्रेमपीर ॥ निसउजियारीफूल्योवनद्रुमलतारहीझुकीपरासि नीर ॥ मुदितस्यामलषिबैंनबजावतसुनिकुहकिउठतमोरनिकीभीर ॥ नवलविहारनवलनवकाविचनवलप्रियागिरधरनधीर ॥ नागरी दासरैंनिकछुबितईबहुरिवसेमिलिधीरसमीर ॥ ५ ॥ याअनुक्रमकी अलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ जबतैंचितयेनैंनभरि, तबतैंछिननहिं चैंन ॥ मनमोहनगोहनाफिरत, जागतसुपनैंसैंन ॥ १ ॥ मोहनल षिमोहनभई, कहालग्योयहहौंन ॥ सबसूझतमोहनमई, दईभईग तिकौंन ॥ २ ॥ सुधिबुधिसबहीहरिलई, मनमोहनमुसकाइ ॥ एदइयाकैसीबनी, घरअंगनानसुहाइ ॥ ३ ॥ लगीलगानिहरिमुप निरषि, डारचोसबसुषरूंद ॥ जोहूंऐसोजानतीरहतीनैंनानिमूंद ॥ कौंनघरीकीलगनियह, अरीभरीनाहिंजात ॥ मिटतनांहिंदिनराति जिय, स्यांमरूपउतपात ॥ ५ ॥ घरबनहूनहिंलगतमन, रहत स्यांमतनलीन ॥ अरीढटौंनानंदकैं, कछुटौंनांपढदीन ॥ ६ ॥ नैंन निदुषनैंननिलगैं, तनमनदुपदुषगेह ॥ एदइयाकौंनैंदयो, दुषको नांवसनेह ॥ ७ ॥ हरिसौंलगनिलगायकैं, भरीरहतानितनीर ॥ रिझवारनिअंखियांनिसौं, हौंहारीरीबीर॥८॥ नागरसैंननिसैंनमिलि, बनीजुनैंननिनैंन ॥ बनतबनतऔसीबनी, कहतबनतनहिंबैंन ॥ ॥ ९ ॥ पदरागपरज ॥ तिताल ॥ घाइलमारसुमारभईहियम दनमोहनदृगबानलगे ॥ सुधिनरहीहैंघटपटकीकछुइकटकनैंन निनैंनपगे ॥ मूर्छितहोतागिरतगहिभुजभरिअधरसुधारसपांनप गे ॥ नागरियाआसक्तअमलमैंदोऊमिलिकैंसबरैंनिजगे ॥ ॥ १ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ नवनिकुं

पारसरैन ॥ १७ ॥ नागरिनैंननिरूपव्है, दोहापढिनैंनांनि ॥ अछरनहूकेनैंनभये, कहिनसकतबैंनांनि ॥ १८ ॥ यारूपारसरैंनिकौं तवहीसकैंनिहारि ॥ तनकेनैंननिमूंदिदैं, मनकेनैंनउघारि ॥ १९ ॥ नागरिनैंननिजिहिंलष्यो, यहरूपारसरैंन॥ तिनकेनैंनसुनैंनहैं, और नैंननहिनैंन ॥ २० ॥ इतिरैंनरूपारस ॥ १० ॥ तिताल ॥ हेमाती नींदकीअंपियांसोहैंलाल ॥ कांमकेलिकैंरंगरसमसीछुटीअलकतु टीमाल ॥ लपटांनेबनवारीप्यारीअरुझेबाहुमृनाल ॥ नागरियाढि गभंवरनिवारतलीनैंहाथरुमाल ॥ ११ ॥ इकताल ॥ अंषियांअरुन रसमसीघुरहीं॥लाजभरीछबिभारभरीरूपछकीआलसजुतढुरहीं ॥ अमितवदनपियचिबुकउठावतकहीनपरतजवहंसिहसिमुरहीं ॥ र हीघरीहैंरातिजुह्वैयानागरीछैलतऊनविछुरहीं ॥१२॥ रागसोरठका ष्याल ॥ इकताल ॥ रेसांवलियोसाजनह्मारो ॥ रूपठगोरोकांमणगारो ॥ मोहैंमनसगलांरो ॥ हियमैंबसियोरसियोलोभीमदनमंत्रवैं णांरो॥नागरीदासहुवोमनचेडोमतवालानैंणांरो ॥१॥ तिताल॥होसां वलियोह्मानैंसैंनांहींसमझावैं ॥ लाजमरांछांसारांमांहींमनरीबातज णावैं॥प्रेमछक्योप्रीतममतवालोतिणसौंजियसकुचावैं ॥नागरीदास देषिनैंणाबिचपडवादिसीबतावैं॥॥ तिताल॥हेलीह्मारोमोहनमीतामि लाय ॥ अलवलियोसांवालियोसुंदरराषौंकंठलगाय॥ पियरसियोउर अंतरबासियोउणाबिनरह्योनजाय ॥ नागरीदासछैलसुखबागांजागां रैंणबिहाय॥३॥तिताल॥कलनपरतादिनरातियांअहोपियनैंननिकीनी बोरी ॥ सोवतजागतचलतफिरतअबमोहितलफतहीबीततछिनैंछिन लगीइहिंमुषकीडोरी ॥ इननैंननिकैंहाथबिकांनीदेषनकौंउठिदोरी॥

॥ १ ॥ मैंनरंगरससरगमगे, जगेउजारीरैंन ॥ षगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसौंहैंनैंन ॥ २ ॥ अंषियनिआरसछबिलषैं, अमलउजारी मांहि ॥ बहुरिचंदकीडीठडरि, करतमुकटकीछांहि ॥ ३ ॥ पलकैं पांननपीकसौं, रंगीजुरंगनवाल ॥ रीझिरहेसोईनिरषिनिस, नींदभ रेदृगलाल ॥ ४ ॥ सहजछकेसेरसछके, छकेनींदअरसांन ॥ छके छकावैंपीयकौं, नैंनरूपमदपांन ॥ ५ ॥ जुरैंजुरैंफिरिहसिमुरैं, घुरैं दुरैंरहिजांहिं ॥ लोइनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहिरैंनांहिं ॥ ६ ॥ श्रवननिछ्वैंछबिसौंफिरैं, लोयनवंकविसाल ॥ षुलैंनआरसअधषुले, करतलालपरहाल ॥ ७ ॥ अरसांनैंघूंमतझुकत, सरसांनैंछबिअैंन ॥ बिहसिदुरांनैंपीयपैं, नींदघुरांनैंनैंन ॥ ८ ॥ रैंनिघटैंत्यौंत्यौंवढैं, आरसरूपझकोर ॥ नींदभरेपियउरअरैं, नैंननिपैंनीकोर ॥ ९ ॥ जवपलआवैंझुकतापिय, दरपनदेतदिषाय ॥ तवअपनीअंषियांनप र, अंषियांरहतलुभाय ॥ १० ॥ नींदझुकीपलनिरषिपिय, देतहैं पांनबनाय ॥ उतनैंननिकेषुलतही, इतबीरीछुटिजाय ॥ ११ ॥ भौं रनिवारतबदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगावतलालतव, षुलैंनैंनमुसकात ॥ १२ ॥ सषीलषैंदुरिदुमनिमैं, व्हैगईचित्रसरीर ॥ निसउनदौंहैंदृगनिपैं, भईदृगनिकीभीर ॥ १३॥ अरसांनीनिरषत प्रिया, जातविहांनीरैंन ॥ नैंननिलषिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ॥ १४ ॥ घरैंचिवुकतरहाथदृग, देषतनींदषुमार ॥ लगेरूपकेंरह चटैं, पौढतनहिंरिझवार ॥ १५ ॥ लषिउरझेसुरझैंनहीं, सबनिस गईविहाय ॥ आरसउरझेदृगनिपैं, पीयरहेउरझाय ॥ १६ ॥ क्यौं सुरझैंआरसभरे, नैंननिउरझेनैंन ॥ नागरियाकेहियवसो, यहरू

तहां, दीठनहींठहरांती ॥ ५ ॥ मनमोहनमुषनिरषिकैं, अंषियांन हींअघात ॥ नागरिदृगनिचकोरकैं, सबससिकहांसमात ॥ ६ ॥

॥ पदरागसोरठ ॥ तिताल ॥ रीमुषअंबुजअटकहमारी ॥ लगीरह तितहांसौंतिमुरलियादेंहिंकहाकहिगारी ॥ वहसुनिछकीअधरआस वसौंआवतधुनिमतवारी ॥ नागरियासहनौंनपरैंजियदैंहिउराहनौं भारी ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ आतुरबैंनधुनिसुनिचली ॥ करनिकुं जनिवारतीद्रुमलतागहबरगली ॥ दृगनिदेष्योदूरिपियबनातिमरमां झप्रकास ॥ श्रवनधुनिनूपुरनिछाईनासिकासुभवास ॥ ब्रजचंदनि यरैंझूमिआईनवचकोरीबाल ॥ दासनागरिरहीइकटकलषित्रिभंगी लाल ॥ २ ॥ इकताल ॥ बोलैंत्तत्तथेईतथेईतथेईरसरासरसरदैंन ॥ निरषतभयोचंदचकितथकितरह्योगैंन ॥ गांनतांनमांनपरनिमिलि मृदंगबीन ॥ उरपतिरपअलगलचकतकटिछीन ॥ नचतरवनीरव नमदनमथतअंगअंग ॥ चलिकटाच्छभृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ प्रेमम गनभरतअंकलंकलागिनिसंक ॥ छाडतनाहिंलालहिंतिहिंकालहिं निधिरंक ॥ उरबिहारतुटतहारछुटतबारवास ॥ बिवसरस बिलासदासनागरिसुषरास ॥ ३ ॥ तिताल ॥ दोऊमिलिमंडल नृत्यतडोलैं ॥ इकादिसकुंडललोलएकादिसलगेकपोलकपोलैं ॥ गर बहियांतनअरुझेपियरेनीलनिचोलैं ॥ नागरियागतिमैंगतिबदलैंबद लैंबदनतमोलैं ॥ ४ ॥ तिताल ॥ मनमोहनत्रिभंगीनवरंगीनंदलाला॥ हसिलीनीहैंभुजनिभरिनवदामिनिसीबाला ॥ तनमनहिलनिमिलनि बनबादीहैंरंगरलियां ॥ तहांफूलपुंजफूलेअलिगुंजकुंजगलियां ॥ उ रहारबंदडोरीजियलाजटूटिटूटैं ॥ षुलिअंचरसुवनासिरबरबैंनीछूटैं

नागरियाघरबराजितराजिरहीहौंनरहीजियलराजिडारीतुमसुंदररूपठ गोरी ॥ ४ ॥ आंनकबिक्कत ॥ तिताल ॥ बहिमनबासियेरसियेरी मोहनलालनगीनौं ॥ बृजकोभूषनरतनअमोलकअतिसुंदररंगभी नौं ॥ मैंपायोमेरैबडभागनिसिरबिधनांलिषदीनौं ॥ रसिकबिहारी पियसुषकारीकंठलायमैंलीनौं ॥ ५ ॥ आंनकबिक्कत ॥ तिताल ॥ बिचब्रजनारयांरझुंडराधारूपहैंरूडो ॥ ग्रीवझुकायांझूंमकनाचैंसी सकेसांरोजूडो ॥ केसरिरंगरंगीसाडीमैंझलकिरह्योछैंचूडो ॥ देषि छक्यापियरसिकबिहारीरह्याधीरधरकूडो ॥ ६ ॥ सूरफाषत ॥ दई कीजैंकहामेरीअंपियांबैरनिभई ॥ बरजीनरहैंबुरीटेवइनलई ॥ कां न्हमुषचंदमधुपांनमातीरहैंहोतअतिछिनहिंछिनचाहाचितनई ॥ ओ टघूंघटदियेंहूंनमांनतहटकतजिदईलाजहरिरूपठगठई॥ नागरीदास उपचारलागतनकछुमाधुरीनिराषिभईकृष्णतनमई ॥ १०॥ तिताल॥ वहघरीकौंनहीलागेमेरेहोनैंन ॥ जबलागेतबकछुनहिंजांन्यौंअबला गेदुषदैंन ॥ चितवनिबिषकीलहारिचढीरहैंजागतसुपनैंसैंन ॥ नाग रनवलरूपकोबेदनिमिटंतनहींदिनरैंन ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकोअलाप चारीमैंदैने ए दोहा ॥ रूपधारघनस्यामकी, छबितरंगकीझोक ॥ प्रेमप्यासकैसैंमिटैं, नैंननिनांन्हीओक ॥ १ ॥ पतिकुटंबदेषतसबैं, घूंघटपटदियैंडारि ॥ देहगेहबिसरेतिन्हैं, मोहनरूपनिहारि ॥ २ ॥ दृगपौंछतअंतरअधिक, सहीनजातनिमेष ॥ पलपलजलभरिआव हीं, रूपमाधुरीदेष ॥ ३ ॥ वडोमंदअरबिंदसुत, जिहिंनप्रेमपहिचां नि ॥ पियमुषदेषनदृगनिकैं, पलकरचीबिचिआंनि ॥ ४ ॥ झल ककपोलनिकहाकहौं, मुषपांनिपबहोभांति ॥ आंषियांरपटतांचितैं

पियप्यारीनसह्यारीपरैंश्राजुयाहीकुंजरहोनैं ॥ सुरतसिथलगतिमत वारीसीमोहनबहियांगहोनैं ॥ बिथुरिअलकआईश्रांननपरियहछ बिदृगनिचहोनैं ॥ रहीरैंनथोरीनागरमिलिअबसुषसैंलहोनैं ॥ ५ ॥ तिताल ॥ रह्यादेपिपियचिबुकउठायवोनैंणामैंअलसांणघणीछैं ॥ घुलिरहीनींदलोयणांलालीकाजलरेषवणीछैं ॥ अलकांसिथलसिथ लहुईपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारीप्यारीजीरीचितवनि मिलिरहीश्रणीअणीछैं ॥ ६ ॥ ताल ॥ प्रीतमसंगपौढीप्यारीअर सांनी ॥ पलकैंमुंदीषुलीढिगअलकैंअधरथकितमुसिक्यांनबेसरपर सांनी ॥ बैंनासिथललिलतमोतीलरढरकिबदनपरआईछबिसरसां नी ॥ नागरियाहियमांझबसोयहकौतिककेलिअनंगजोरीरंगबरसां नी ॥ ७ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ करिभौंहैं बांकीकहौं, तनगौंहैंक्यौंबैंन ॥ इतराजीअबकीजियैं, इतराजीके नैंन ॥ १ ॥ चितचिंताचाहतधरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसं पीकिंहिंकारनैं, पहरेपलटिसिंगार ॥ २ ॥ तुमहीसर्वसकांन्हकैं, मांनकरोबेकाज ॥ राधावल्लभनांमकी, प्यारीनिबहोलाज ॥ ३ ॥ छाडिइतोअनषावरी, अहेबावरीबांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भये तृभंगीस्यांम ॥ ४ ॥ पदराग रायसो ॥ इकताल ॥ बिलसतकुंजसद नसुषसुंदरिनायकनंदनंदनरंगभीनौं ॥ सरदचंदप्रफुलितद्रुमवेली बिबसमदनमनकीनौं ॥ छूटेबारहारउरटूटेषुलेबंदबिगलितपटझी नौं ॥ लटपटायदोऊरहेलपटिकैंतनगुलाबजलमहाकिनवीनौं ॥ या रसहीरसबीतिगईनिसिफिरफिरिअधरसुधारसलीनौं ॥ इहिंबिधिछूट तनहिंश्रेसैंनागरियाजैसैंजलमीनौं ॥ १ ॥ तिताल ॥ कुसमकँवल

छूटैं ॥ मचीहैरंगभीनीआनंदकेलिहेली ॥ सषीदुरिदेषतनागरिया मनदेहसौंअकेली ॥ ५ ॥ इकताल ॥ आवरीदेषिजोरीपियसांवरो राधागोरी ॥ सुरतश्रमितदोऊमिलिसोये ॥ अधषुलेनैंनमैंनरंगभोये॥ अरुझिरहीबाहियांमैंबाहियां ॥ फूलेतरवरकीपरछहियां ॥ इहिंवनये विलसोइनचैंनंनि ॥ नागरियाकेबसोहियनैंनंनि ॥ ६ ॥ याअनुक्रम कीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ नीलपीतमानिक्रांततन, नाहिंदूरेइं हिंरात ॥ वेदनउजेरैंरूपकैं, सघनकुंजमैंजात ॥ १ ॥ तनसुगंधडो रैंलगी, भँवरभीरचहूंओर ॥ देषिदुहुंनिधोषैंपरे, बोलतमोरचकोर ॥ ॥ २ ॥ नीलपीतपटछोरछबि, उरझेद्रुमकीभीर ॥ मुरिसुरझांवनि दुहुनिकी, मेरैंउरझीवीर ॥३॥ चलिहुसंगनागरसषी,नूपुरझांईपाय॥ सुपदेषैंदुरिद्रुमानिमैं,अपनौंअंगदुराय॥४॥रागसोरठ ॥ रीहौंचाहिरही दोऊइतनिकसेआय ॥ पियघनस्यांमअंगढिगभामिनिदामिनिदुति दरसाय ॥ अतिसुंदरमुषचंदकिरनबनडारचोतिमरामिटाय ॥ नाग रियाचलिकुंजओटदुरिदेषैंरैंनाबिहाय ॥ १ ॥ तालचपक ॥ प्यारी जूकोवदनआनंदकंद ॥ पियकिसोरचकोरहितनितप्रगटिपूरनचंद॥ गंभीरकारेचिकुरबरबदरांनिबीचअमंद ॥ पीवतइकटकवोकअमृत नवनागरनंननंद ॥ २ ॥ ताल ॥ अबसुनिकांनदैदेवतरांन ॥ नूप रकिंकिनीकंकनरनकतझनकहोतबलयांन ॥ मैनमंत्रसेवैंननसुनि सुनिछुटतधीरठहरांन ॥ नागरियाहियमांझरहोनितियहसुरतसनमां न ॥ ३ ॥ तिताल ॥ पुलिगएसौंधैंभीनैंवार ॥ देषिसषीयहरीतिअ नोषीवंधिगयोमनरिझवार ॥ झूलिरह्योवैनोग्रीवाढिगटूटिरहेउरहार॥ नागरयहछविहिएबसीबिचमननमथरंगबिहार ॥ ४ ॥ ताल ॥ अहो

नांतोहांतोकारिकितराहियैं ॥ नागरीदासमीतकपटीभयैंकहूंठौरनां लहियैं॥ ८॥ तिताल ॥ नैंनालागेबेपरवाईदेनाल ॥ एकप लकभीकलनहिंपावांरहदाहरदमहाल ॥ दिनदिनजीदाज्यांन असाढाउसनागरदेष्याल ॥ नागरियाबंसीवालेदाइस्कनहींजंजा ल ॥ ९ ॥ तिताल ॥ अषियांलागिगईमोहनप्यारेसौं ॥ तव गरजीबरजीनरहीरीअबकहाहोयपुकारेसौं ॥ पीवनकौंपियबदन माधुरीलगीरहैंसांझसवारेसौं ॥ नागरीनवचकोरज्यौंअटकीपियत्र जचंदउजारेसौं ॥ १० ॥ तिताल ॥ रेलगनिकोपैंडोन्यारो ॥ चा तिगस्वातिवूंदरुचिमांनैंसरसरिताजलषारो ॥ नेहनगरकीडगरन पावैंनैंमीअंधबिचारो ॥ नागरीदाससीसबकसीसैंतऊनांहिनिरवा रो॥११॥तिताल ॥ रीकांसौंकहियैंवीररीपीर ॥ बिनदेपैंतलफतयेअ पियांनांहिधरतचितधीर ॥ निकसनहूदूभरभयोअंगनाघरगुरजन कीभीर ॥ नागरीदासप्रेमबसजाकैंसोधौंनिपटबेपीर ॥ १२ ॥ ति ताल ॥ नवजोवनलाडगहेलीप्यारीतूरहतमदनमदछाकी ॥ रूपरं गरसश्रवतमाधुरीबदनबिलोकनिवाकी ॥ अतिआशक्तअमलमोजैं प्रेमपियालेपीयैंरहतलालमदछाकी॥नागरीदासनवरंगबिहारीबिहार निनेहनिसाकी ॥ १३ ॥ तिताल ॥ अलमस्तभयेअलबेलेलालला डलीकेरसमाते ॥ छकीछबिसौंपलकैंबरबसनीनैंनानिमैंमुसकाते ॥ मुषअंबुजबरस्यांममधुपमकरंदपीवतनअघाते॥दासनागरीरूपरंगर सअंगपीयालेराते ॥ १४ ॥ तिताल ॥ लीनौंहठहेरीमेरोकाह्नम हीरी ॥ आवतदेपिबैठिमारगमैं अचांनकआंनगहीरी ॥ दीनौं नहींमोलकीनोंबरजोरीकहाकरौंसबहीसहीरी॥ नागरीदासभईसुभई

दलसज्यारचीहैकुंजकैआंगनचंदकेसौंहैं ॥ मिलिपौंढेतहांप्रीतम प्यारीसुरतरंगरसबसअलसौंहैं ॥ गौरस्यांमतनसौंतनउरझेसुंदर बांहनिबांहगसौंहैं ॥ नागरीदासरहिगएइतउतइकटकनैंनानिनैंनह सौंहैं ॥ २ ॥ रागकाफीकाख्याल ॥ तिताल ॥ अरेहूंबाटनजांनूंरे कोईबतावैवाकोधांम ॥ यावनमांझअचांनकहूंउरलाइलईआभिरां म ॥ मनलैगयोनांमनहिंजांनौंहोसुंदरतनस्यांम ॥ नागरीदासठगी हौंअबलाअबनकछूवसवांम ॥ तनभयोसिथलचरनकांपतसरमार तानिर्दईकांम ॥ ३ ॥ तिताल ॥ एरीआलीसुंदरनंदकुंवारठाढोललित कदंबतरैंजमुनांतटनवघनस्यांमसरीर ॥ सोहतहैबनमालमोहातिमह किमालतीरहीचहूंदिसभईभँवरनकीभीर ॥ चलिरीचलिबलिआज नैंननिरूपअमीरसपांनकरहिंकिंनहरहिंबिरहउरपीर ॥ तूंगौरीवे स्यांमजोरीजगतबिभूषननवलनागरीवासियेधीरसमीर ॥ ४ ॥ ति ताल ॥ गौरीलटकंदीचलैंजोबनादेभार ॥ करदेकहरकमरनाज कपरसिरसटकारेबार ॥ मतवालीअंषियांज्ञानिमांणीकरैंजनरबर छींदीवार ॥ नागरीनवलअजबमहरेटीमोहनदीदिलचंगीयार ॥५॥ तिताल ॥ बांकेनैंनाबिंदुरातीभाल ॥ छुटीलटफंसीलटकीलीचाल ॥ फूलनकीबधियापतरौंहीबाल ॥ नागरीकटिकीपटलीपैंफुंदियांकी हाल ॥ ६ ॥ तिताल ॥ यारीदाकुपेचमैंडेनैंनूंदीकमाइयां ॥ देषिदे षिमैंहुईदिवांनीउसदीबेपरवाइयां ॥ रैंनिदिनांसमझायरहीहौंटुक दिलबिचनहिंआइयां ॥ नागरियामोहनसौंहनपरतोभीघोलघुमाइ यां ॥ ७ ॥ तिताल ॥ जासौंलाईप्रीतितासौंओरनिबांहीचहियैं ॥ भलीबुरीसिरधारिजगतकीकहीसुनीसबसहिये ॥ सबमैंबडोनेहकौं

दा ॥ कोईमिलावैंरसिकबिहारीनूंहैंयहकांमसबावदा ॥ २१ ॥ तिताल ॥ रीकोऊअपनींअटापरगुडीउडावतछैलसांवरैंअंग ॥ गुडियां उडावतदेषिसषीमनउडयोफिरतहैंसंग ॥ जियरारीगोतषातमेरोत्यौं त्यौंदेतहैंगोतपतंग ॥ नागरीदासऊंचीनींचीचितवनिदैंझकझोरत्र्रनंग ॥ २२ ॥ तिताल ॥ वारीस्यामाइहींकुंजमगआयजा ॥ प्रीतमनैंनचकोरतृषतहैंबदनचंददरसायजा ॥ मुषतैंनैंकानिवारनीलपटछबिसौंमुरिमुसकायजा ॥ नागरनवलकिसोरलालपरचितवनिरसबरसायजा ॥ २३ ॥ आंनकबिकृत ॥ तिताल ॥ मुरलीवारोमोहनांवहिकहिहेलीकहांपाउंरी ॥ घरबनमनलागैंनहींहौंबावरीभईकितजाउंरी ॥ सिथलअंगपगथरहरैंहौंउठिउठिकैंमुरझाउंरी ॥ रसिकबिहारीबनवारीबिनकैसैंजीवजिवाउंरी॥२४॥ तिताल ॥ मोहनामनभावनांमेरावो ॥ आंषडियांउदमादियांईरहैंमुषवेषणदाचावववनेरावो ॥ उठदीदिलबिचदुषकलमलियांजबगलियांदुकआवैंअबेरावो ॥ नागरदिलदादरदनवुझदाकौंनकरैंयहन्यावनवेरावो ॥ २५ ॥ तिताल॥ राजबनरोमैंवासह्मामैंकांईजांणैं ॥ गायचरावणहारग्वालियोसोक्यौंरतनपिछाणैं ॥ दधिदांनीचंचललोभीजीजैंरौमननहीरहैछैंठिकांणैं॥ नागरीदासकहोकपटीनैंकुंणथांसूंरंगमाणैं॥२६॥ तिताल ॥ तीपेनैंनकह्लाइतैंडेपलपलषूंनकरंदे ॥ भौंहैंतोकमांनतनींपलकैंतीरपरंदे ॥ कित्तेघायलपरेकराहैंदिलनहींधीरधरंदे ॥ रसिकबिहारीनितिवारकरंदेटारेनहींटरंदे॥२७॥ तिताल ॥सबकीहैंचोटानिसांनेपैं॥ नैंनांबांनछुटैंचहुंघांतैंचांद्रिकाबहरकबांनेपैं ॥ लाषांनिहूकीभीरलगीरहीमनलोचनपरसांनेपैं ॥ जानागरपरयहब्रजअटक्योसोअटक्यो

अबबातनजातकहीरी ॥१५॥ तिताल ॥ सांवरेकेनैंनसलौंनें ॥ जबहीदृष्टपरतमेरैंमगपरिनसकतपगपैंडआगौंनैं॥ कांननलौंअनियारेचंचलरंगभरेअतिरीझरिझौंनैं ॥ नागरियाजिनकीचितवनिबिचिचेटकनाटकटावकटौंनौं ॥ १६ ॥ रागकाफी तिताल ॥ हौंतोरहीदेषिछबिमदनगुपालकी ॥ कहाकहूंसोभाअहारसिकरसालकी ॥ सीसपैंसुमनभीरअलिनकेजालकी ॥ एकओररहीधुकिलालपावलालकी॥हसतअधरदुतिलसतप्रवालकी॥मोहिलईहेरनिहौंनैंनानिबिसालकी ॥मेरोमनझूलनिझुलायोबनमालकी ॥ चलतललितगतिगंजनमरालकी॥नागरियामेरीमतिमदनसचालकी॥ कहाकरौंकितजाऊंकासौंकहौंहालकी ॥१७॥ तिताल ॥ नैंननिमिलायमिलायमनलीनौंहेलीसौंहनैंसलौंनैंस्यांममंदमुसकायकैं॥ भूलिघरडगरियागगरियागिरीमुपमोहनकोदेंषिदेषिरहीहौंभुलायकैं ॥ पनघटभीरभईलोकलाजभूलिगईअंचरबिसरिरहीतनथहरायकैं ॥ तबतैंनचैंनपरैंलाग्योदुषदैंनमैंननागरियाऊठौंअकुलायअकुलायकैं ॥१८॥ तिताल ॥ अणीपेचदारझुलफैंवाला ॥ मैंतोरहीदेषिहैरतमैंअजबतरजकाग्वाला ॥ चाबतपांनछैलकांनपरधरैंफूलगुललाला ॥ नागरनवलसांवलासुंदरकरिगयादिलबेहाला ॥ १९ ॥ आंनकाबिक्रत ॥ तिताल ॥ मनलायक्यौंकान्हअनोषेसौं ॥ अबपाछितायेंक्याहौंदांणीभूलिप्रीतकरीओपेसौं॥निसदिनघुटिदीतूघरअंदरसासननदहोधोषेसौं ॥ गुरजनबुरेरसिकबिहारीनूंबेषणदेतनगोषेसौं ॥ २० ॥ आंनकाबिक्रत ॥ वहिसौंहनांमोहनयारफूलहैंगुलाबदा ॥ रंगरंगीलाअरुचटकीलागुलहोरनकोईजबाबदा ॥ उसाबिनभंवरज्यौंभवदाहैंयहदिलमुजबेताब

होयबदिलबेहाल ॥ रहैंधरेंहीजहांअवस, चिलतैंबगतरढाल ॥ ३ ॥ गवैंउडावैंसबंके, अजबजबंकेनैंन ॥ लगैंसोईकहिकाहिउठैं, हाय हायदिनरैंन ॥ ४ ॥ चस्मतेगनागरचलैं, इस्कतेजकीधार ॥ और कटैंनहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवार ॥ ५ ॥ तिताल ॥ अरीप्यारीरा धागतिलेतअलबेलीयसुजांन ॥ रंगभरीयौंहैंमनमोहैंचितवनिअल बेलीअलबेलीमुसकांन ॥ बदनचंदआनंदसुललकैंअलकैंअलबे लीअलबेलीबतरांन ॥ कमलनैंननागरपियमोहेरासमैंअलबेली अलबेलीलेलेतांन ॥ ३४ ॥ तिताल ॥ श्रीराधेराधेनांमठाढेस्यांम कहैं ॥ अरीअकेलेकालिंदीतटछबीलीभांतिद्रुमलतागहैं ॥ मूंदत दृगनिध्यांनमनभेटतषोलतहीमगओरचहैं ॥ नागरपुलकिप्रेमजल नैंननिफिरिफिरिडारिउसासरहैं ॥३५॥ तिताल ॥ यहमेरोरूपभयो मेरेजियकौंजंजालदुषभरयोनहींजावैं ॥ दुतियाकेससिलौंदेषनिआ वैं ॥ मिलिमिलिमोहिअंगुरीनिबतावैं ॥ घूंघटमैंनैंककहूंनैंनदरसावैं जबआंपिनपैंआंपिनकीभीरउररावैं ॥ सांवरेकोनांवलैलैश्रवनसु नावैं ॥ दियासुंनिसुंनिबोलीठोलीहीयोसकुचावैं ॥ नागरियागोकु लमैंबसिबोनभावैं ॥ अबभईहौंतमासोजियलाजनलजावैं ॥ ३६ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ करिभौंहैंबांकीकहौं, तनगौंहैंक्यौंबैंन ॥ इतराजीअबकीजियैं, इतराजीकेनैंन ॥ १ ॥ चितचिंताचाहतधरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसषीकिंहिंका रनैं, पहरेपलटासिंगार ॥ २ ॥ तुमहींसर्वसकान्हकैं, मांनकरोबेका ज ॥ राधाबल्लभनांमकी, प्यारीनिबहोलाज ॥ ३ ॥ छाडिइतोअ नपावरी, अहेबावरीबांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भयेतृभंगीस्यांम ४

बरसांनेपै ॥ २८ ॥ तिताल ॥ होप्यारीजूमोहिदीजैयहदीजैं ॥ हा
हावारीगायगायकैंगातिलीजैंअबतोगातिलीजैं ॥ दीयोबिछायपीय
पीतांबरसुलपकीजैंयापैंसुलपकीजैं ॥ बढ्योनिर्तनागररसभीजत
निसभीजैंत्यौंत्यौंनिसभीजैं ॥ २९ ॥ रागछायानटतिताल ॥ वो
लतथेइतथेईथेईरंगभरेनिर्ततहैंपियप्यारी ॥ बजवतबीनप्रबीनलीन
धुंनिगुनसलितालललितारी ॥ अरझीअलकछबिसौंबेसरिमैंअरझी
पीतपटसारी ॥ नागरनागरीरीझिपरसपरकहतवारचोहौंवारी॥३०॥
रागअडाणोतिताल ॥ आज्ञुसषीप्यारीजूस्यामाहिंसिपावहींलैंलैंग
तिभेदहिवतांवहीं ॥ चतुरसिरोमानिजांनिअजानिभयेललितसुल
पसरसांवहीं ॥ तालिमकौंदेतस्यांमांनाचतमैंरंगबढ्योसषीसुषनि
रषिसिहांवहीं ॥ नागरिकटाछनिकीलगतचमोटीचोटत्यौंत्यौंपिय
गतिहिंभुलांवहीं ॥३१॥ आंनकात्रिकृत ॥ तिताल ॥ होस्यामाप्या
रीवोमैंडीजिंदलगीहैंतैंदेनाल ॥ जबहसिबेपैंतबतबजीवांरहिंदाहो
यनिहाल ॥ तुहीअसांढेनैंनप्रांनवसपयातुसाढेवाल ॥ यौंकहिंदाक
रजोरिकुंवरिसौंरसिकविहारीलाल ॥ ३२ ॥ तिताल ॥ वोमोहना
सोहनयारदेनैंणांदीझोका ॥ सीनैंदेबिचुलगीअसाढेवारपारभईनो
कां ॥ रुकदीनहींरोकिमैंहारीलाजघूंघटदेरोका ॥ रसिकबिहारी
दानांवलेछेकरैंसवब्रजनोकांटोका ॥ ३३ ॥ तिताल ॥ नैंनौंदा म्हा
रयापंछीमरजांदामांनसकौंनबिचारा ॥ दोहा ॥ पंडितपूजापाक
दिल, येदिमागमतल्याय ॥ लगैंजरबअंषियांनिकी, सबैंगर्बउडि
जाय ॥ १ ॥ चश्मजरबसौंक्यारहैं, दीनगरबकीताब ॥ छूटिगिरैं
सबपासतैं, तसबीअसाकिताब ॥ २ ॥ लगिबरछीतिरछीनिगह,

गौंहनमोहनलाल ॥ कुंजद्वारहसिभेटिये, उठिगजगामिनिबाल २॥
दोहा ॥ येआयेनंदलालइत, देषोग्रीवउठाय ॥ करजोरैंबिनती करत, मुकटछुवावतपाय ॥ १ ॥ चितईकछुमुसकायकैं, लईअंक भरभांम ॥ नागरियाहियसेजपर, विहरतस्यामास्याम ॥ २ ॥
॥इकताल॥ रचीपियमोहनकलकेलिनवेली ॥ मचीभुजनिविच कलहमनोहरटूटतहारहमेली ॥ परिरंभनअरुझेनाहिंसुरझतज्यौंद्रुम कंचनबेली ॥ नागरीदासदुरायअपनपौंयहसुषलषतअकेली ॥१॥
॥ इकताल ॥ अबपौढनकोसमैंभयो ॥ इतआईद्रुमकीपरछांहींउत ढरिचंदगयो ॥ इंहींभांतिनिबहौंनिसबासरनितिप्रतिरंगनयो ॥ सुनि सोयेनागरियानागरअतिसुषदृगनिदयो ॥२॥ रागमलारकाष्याल ॥ तिताल ॥ बाजैंबाजैंबाजैंसुदंसीबनवाजैंरी ॥ रैंनअंधेरीघटारहीझु कितैंसीपरीगरैंलाजैंरी ॥ मोरउठतकरिसोरघोरसुनिनवमलारसुरगा जैंरी ॥ नागरीदासस्यांमसुंदरसौंकैंसैंमिलौंचलिआजैंरी ॥ ३ ॥ इ कताल॥ आजुघनगरजगरजबरसैंसरसैंनेहमिलिदंपतिकलगांवहीं ॥ कुहकतमोरमलारसुरनिसुनिबदराघिरिधरिआवहीं ॥ कांननश्रव तसुधातानिनिमैंमूर्छितमदनजिवावहीं ॥ नागरियानागरनिकुं जरसरीझनिभींजिभिजावहीं ॥ ४ ॥ तिताल ॥ कहाकरौं रेकहाकरूंदइयालाग्योबरसानिमेह ॥ जोहूंऐसोजांनतीतोछाडती नगेह ॥ बंसुरियावारेतेरीकमरियादेह ॥ भींजैंगीचुनरियामेरीचुहचु हैंरंग ॥ छतनांवनायलेकैंचलिमेरेसंग ॥ आयनीरैंस्यांमभींजिगात लपटात ॥ नागरियावनगयैंबनिगईबात ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मेरैंआ एभीजेहोगात ॥ रिमझिमरिमझिमदेहबरसैं ॥ येरीआलीसांवनसु

## मानमवास ॥

+दोहा ॥ बहोभांतिनफूलीलता, भौंरनकीअतिगुंज ॥ तहांतु लावतसांवरो, चलिरीनवलनिकुंज ॥ १ ॥ फुलकंवलकेदलनिहरि, निजकरसेजबनाय॥तुवआगमआवनअरी, रापेनैंनविछाय॥२॥

इकताल ॥ मेरोकह्योमांनिमानिनी ॥ तजिअयांनछांडियेमांनजांतिजामिनी ॥ प्यारीलालसंगबालबहुतअतिसुहामिनी ॥ १ ॥ तोसमकोऊनांहिऔरजोकीभामिनी॥प्यारीदीनजांनिवीततीमांनमंदगामिनी ॥ उठिचलिहिलिमिलिये॥ जायमतिरामकीस्वामिनी२॥

दोहा ॥ तूहीजीवनिलालकी, तोबिनरह्योनजाय ॥ उत्तरहून हिंदेतबालि, इतौनिठुरक्यौंहाय ॥ १ ॥ भूल्योहसिबोषेलिबो, परतसपिनकेपाय ॥ तुवमिलापकीआसमुष, राधाराधानांम ॥ २ ॥

दोहा ॥ नीचीचितवनिकरिरही, मांनतनांहिंअयांन ॥ उतैंसांवरोबिबसव्हैं, यहकहालोनीबांनि ॥ १ ॥ सुनिरीकछुनूपुरभनक,

---

## सूचना—

+मानमवास इकतालवाले पदके चौफेर प्रत्येक दो दो दोहा मूल ग्रंथमें हैं. परतु स्थानाभावसे उस मुजब आया नही इस लिये सीधा लियाहै सो इस मुजव, बीचमें इकतालका पद और उसके ऊपर को ( बहोभातिन फूलीलता, ) ये दो दोहा है, बामे तर्फ ( तूही जीवनि लालकी, ) ये दो दोहा है, दहने तर्फ ( नाची चितवनि करिरही, ) ये दो दोहा है. और नीचे ( ये आये नंदलालइत, ) ये दो दोहा है इस मुजव जानना.

तमदनकोराज ॥ २ ॥ बरिषाघनघहराततब, धीरनहींठहराय ॥ उठैंज्युहियहहरायमनि, तपतारीछुटिजाय ॥ ३ ॥ कीनौंमैंनिरधारसुनि, पावसघनघहरांन ॥ सबकेमनजीतेमदन, बाजतसदननिसांन ॥ ४ ॥ घुंमडिमेहचुंबतधरनि, अंधकारबाढिगैंन ॥ बिछुरिगयेचकवाचमकि, समझिद्यौसकौरैंन ॥ ५ ॥ कनकमालदामनिहलैं, श्रमजलकनबरषांन ॥ कांममेघरतिभूमिकौं, देतमनारतिदांन ॥ ६ ॥ घनधाराझरहरिकरत, अवनीफारिप्रवेस ॥ चलेबहोसरसमरमनौं, करनमूर्छितसेस ॥ ७ ॥ उतझरलाग्योमेहको, ! इतसैंननिझरनेह ॥ गउरस्यांमचढिचढिअटा, भीजतरीझिबिदेह ॥ ८ ॥ घटाबतावैंभांवती, छटाबतावैंस्यांम ॥ रसभीजेसैंननिकरैं, जलभीजेचढिधांम॥ ॥ ९ ॥ भुवधनुकचधुरवाछुटे, दसनदामिनीवृंद ॥ रूपघटाराधेअटा, गानगरजिधुंनिमंद ॥ १० ॥ घनतनदामिनीपीतपट, बगमुक्ताअभिरांम ॥ मुरलीगरजनिरंगझर, बरसतहैंघनस्यांम ॥ ११ ॥ हरिमलारपूरितअटा, घुंमडीघटाअछेह ॥ ज्यौंज्यौंबाजैंमुरलिया, त्यौंत्यौंबरषैंमेह ॥ १२ ॥ स्यांमघटाब्रजस्यामघन, गउरघटासुकुंवारि ॥ नागरियाहियभूमिबिच, नितबरसोरसबारि ॥ १३ ॥

॥ पदरागमलार तालचपक ॥ रूपसिंहजीकृत ॥ कैसैंआंऊदांमिनिमोहिडरावत ॥ जबजबगवनकरौंदिसिप्रीतमचमकनिचक्रचलावत ॥ वेचातुरआतुरअतिसजनीरजनीयौंबिरमावत ॥ गाजतगगनपवनचलिचंचलअंचलरहननपावत ॥ सुनिपियबचनचतुरचलिआयेभामनिसौंमनभावत ॥ रूपसिंहप्रभुनगधरनागरमिलिमलारसुरगावत ॥ तिताल ॥ कुंजमहलकैंआंगनमांधिपियप्यारीवां

हावनीरात ॥ रंगमहलरंगहीरंगमैंएरीआलीरैननजांनीजांत ॥ कहो कहांलैंजांयनागरीएरीआलीस्यांममिलनकीबात ॥ ६ ॥ इकताल लूहर ॥ इहिंरितुऔसरआजुसमैंछुपदाईहैं ॥ प्यारीरीघुमंडिघटाघहरा यकैंब्रजपरआईहैं ॥ रह्योदिवसअंधियारिजनूंयहजांमिनी ॥ प्यारीरीकरिरहीबदरनिमांझझमाझमदामिनी ॥ हरितभूमिपरझूंमिझूंमि द्रुमफूलेहैं ॥ प्यारीरीबोलतमधुकरमत्तवासरसभूलेहैं ॥ तैसोईमोरनसोरचहूंऔंरलायोहैं ॥ प्यारीरीसीतलमंदसुगंधसमीरसुहायोहैं ॥ मंदमंदअबबरसतमेहकीबूंदेंरी ॥ प्यारीरीतोंबिनपियकोआजुमदनमनरूंदेंरी ॥ डारतलालउसासधीरनांहींधरैं ॥ प्यारीरीदामिनिकीदुतिदेपिदेषिदृगजलभरैं ॥ हौंपठईअबलैंनिबेगिचलिभांवती ॥ प्यारीरीछिनछिनआवतहैंबरपासरसांवती ॥ वाहिसुनिमिलीमल्हारबैनधुनिआवहीं ॥ प्यारीरीकहिकहिराधेतोहिंबुलावहीं ॥ सुनत अंगअंगरायकछूमुसकायकें ॥ प्यारीरीभीजतहीघनमांझचलीअकुलायकैं ॥ सनमुषआएस्यामभुजनिभरिझेलीहैं ॥ प्यारीरीलपटीतरुनितमालयनूंछबिबेलीहैं ॥ यौंदंपतिनितिकरतहैंतहांविलासकौं ॥ प्यारीरीबृंदावनदयोबाससोनागरीदासकौं ॥ ७ ॥ आंनकविकृत ॥ ॥ तिताल ॥ आयाबृजपरछायाजीजलबादलझारिया ॥ हरियातरवरचूवैंपाणीबहोसरवरभरिया ॥ इणसमयेसुषलेणामनोरथदंपति हियधरिया ॥ मिलियारसिकबिहारीप्यारीसहकारजसरिया ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ जडअवनीरतवलव्है, रसमैंनीरसठौर ॥ भीजीपावसरितुरची, रूपीरितुसबऔर ॥ १ ॥ आवैंबदराकांमदल, मोरनकीबअवाज ॥ फिरैंदुहाईसबसदन, हो

नौंव ॥ फिरिदेपेदांमिनिकैंझमकैंसोरसनांसकतनहिंछींव ॥ ७ ॥
॥चौताल॥सोयेदोऊमिलिमूलकदंबकैंकालिंदीकूलहैंभायो॥एकओ
रघनघटाआईझुकिएकऔरषुलीचंदचांदिनीवृंदावनछबिछायो ॥
बोलतमोररहीनिसिथोरीअदभुतसमैंसुहायो॥नागरीदासराधामोहन
विपुनबसिपावसरितसुषपायो ॥ ८ ॥ पुनःमलारकोचतुर्थअनुक्रम॥
गउरस्यांमबिलसतसुषसैंनी ॥ वाजतबूंदैंद्रुमपातनिपरश्रवनलगत
सुषदैंनी ॥ सीतलपवनतनपरसतत्यौंत्यौंभुजदृढहोतगहैंनी ॥ नाग
रियापावसनिसराजतरंगेसुरतरंगरैंनी ॥ ९ ॥ पुनः मलारकोपंचम
अनुक्रम ॥ सोयेसुरतसेजअरसाय ॥ कांमउदधिअवगाहिप्रियापिं
यनेहमेहबरसाय ॥ षुलीअलकअरुपलकअधषुलीरहेरूपसरसाय ॥
नागरिसर्पीओटकरिठाढीजितघनकीघरसाय ॥ १० ॥ पुनः मला
रकोछठोअनुक्रम ॥ बरसतमेहनेहसरसाई ॥ बिछुरींदांमिनघनपैंआ
ई ॥ धाइजायतियकंठलगाई ॥ प्रीतममनहुंरंकनिधिपाई ॥ हंसिह
सिरसिकनिचोवतसारी ॥ लईउढायकमारियाकारी ॥ झुकीरैंनिपाव
सअंधियारी ॥ विहरतनागरनागरियारी ॥ ११ ॥ बाढ्योवनघनमें
अतिनेह ॥ कांमारितांनिबितांनबनायोलाललतानितरगेह ॥ सुरति
रंगरसपागतफिरिफिरित्यौंत्यौंआवतमेह ॥ दांमिनितिमरमिटावत
निसदृगनागरिचैंनअछेह ॥ १२ ॥ सोयेदोऊमिलिमूलकदमकैंका
लिंदीकूलहैंभायो ॥ एकओरघनघटाआईझुकिएकओरषुलीचंद
चांदिनीवृंदावनछबिछायो ॥ बोलतमोररहीनिसथोरीअदभुतसमैंसु
हायो ॥ नागरीदासराधामोहनविपुनबसिपावसरितसुषपायो ॥ १३ ॥
पुनः मलारकोसातमोअनुक्रम ॥ उमगिमिलीइतउतदुहुंदिसतैंगउर

हांजोरीबिहरतरगमगे ॥ अरुनवसनधारैंमोतिनकीमालगरैंचिंहुटे सरीरचीरनीरसौंसगबगे ॥ छुटेबारभीजिलगेललितकपोलनिसौंकुं डलबिमलनगभूषनजगमगे ॥ नागरीदासघनबरषतपांनीतामैंरूप केजिहाजमांनौंडोलतडगमगे ॥ २ ॥ पुनः मलारकोअनुक्रम ॥ ब रसतमेहअतिआईघटाकारीहैं ॥ तामैंचलीप्यारीउतआवतबिहारीइ तदुहुंनिकेमिलिवेकीचाहचितभारीहैं ॥ सूझतनपंथद्रुमलतारहीझूं मिझूंमिसबजलमईभूमिझुकीअंधियारीहैं ॥ दांमिनीदमाकिगईतामैं भटभेरभईनागरियादोऊहसिभरीअंकवारीहैं ॥ ३ ॥ इकताल ॥ एकछतनांतरैंदोऊरहेलपटिलपटाय ॥ कियेमनोरथसांचबिपुनब सिराधामोहनराय ॥ बरषतजलधरधारअपंडितरवरचलेचुचाय ॥ नागरियातनमनउरझेसोकिंहिंबिधिसुरझेजाय ॥ ४ ॥ ताल ॥ रा जतबंसीबटकैंनिकटदोऊरंगभरेपियप्यारी ॥ सीतलसुगंधमंदपवन गवनतहांतैंसीलूंमिझूंमिआईघटाकारी ॥ बरसतघोरिघोरिदामिनी कौंधतिजोरन्हैंरह्योचहूंओरमोरसोरभारी ॥ ऐसेसमैंनागरबिहा रीसंगप्यारीडरलपटिलपटिजातसुरतसुघरसुकुंवारी ॥ ५ ॥ पुनः मलारकोतृतीय अनुक्रम ॥ ताल चपक ॥ देषिराधेअबछबिबृंदा बनकीहरीभूमिद्रुमहरेभरेसरबोलनिपिकमोरनकी ॥ ठौरठौरस्वेत फूलनिबिचसांवलतामधुपनकी ॥ मनहुंविपुनधरनैंनकरोरनिसोभा लषतस्यांमघनकी ॥ चलिभामिनदामिनतनतूदुतिगिरधरमेघवरन की ॥ नागरियासुंनिमिलीलालसौंछाहियांनवकुंजनकी ॥ ६ ॥ ॥ ताल चपक ॥ कहाकहूंसुंदरताकीसींव ॥ रसवसनवनागरनाग रियाधरैंदोऊभुजग्रीव ॥ बरषतसघनवढततिमरनिसिदेतसुरतसुष

र इकताल ॥ होकहारंगभीनीरितुहैसांवनकी।फिरिफिरिझमकिझम
किझूंमिमेहआवें ॥ चात्रिगमोरकरतसोरतैसियेगहरीघनकीघोरका
रेकारेबदरानिबिचबिचबिज्जुरीचमचमावैं ॥ सीतलसुगंधपवनगवनप
रसपरसदेषिफूलनिसौंभरीभरीहरीहरीडारियांलहिलहावैं ॥ तैसेईवि
लासपुंजनागरियानागरनिकुंजनेहमेहभिजएमिलिमिलिमल्हारगा
वैं ॥ ३ ॥ तिताल ॥ झूलतहैंदोऊसषीझुलावैं ॥ सौंधेंकीझकोरैं
स्यांमतनगोरैंआंवैं ॥ हिंडोरैंहिलोरैंमांझथोरैंथोरैंगावैं ॥ नागरझक
झोरैंहारडोरैंउरझावैं ॥ ४ ॥ हिंडोराकेइत्यादिपदनकोअलापचारी
मैंदैने ए दोहा॥ उतरिझमकिझूलैंचढैं, रँगरँगपहारिनिचोल ॥ लाल
मुनीयनकेमनौं, झुंडनिमचीकलोल ॥ ५ ॥ नीलबसनगौरैंवदन,
झूलतातियरसकंद ॥ आवतजातबिमांनज्यौं, घटालपेटैंचंद ॥ २ ॥
रमकतप्रियाहिंडोरनैं, छबिदुरिदेषतपीय ॥ वेझूलतवेश्रमितकटि,
लचकनिलचकतजीय ॥ ३ ॥ झूलतठाढीप्रियाहिंलषि, रहेलालसु
धिभूल ॥ फहरतअंचलचंद्रिका, बैंनीबरषतफूल ॥ ४ ॥ झूलतछ
बिउमचीअधिक, मचकतदुमचीबांम ॥ उचटैंचोटीपीटमनौं, लगैं
चमोंठीकाम ॥ ५ ॥ दांवनलांवनिदुहुंनिके, बाजतआवतजोर ॥ बैं
नींहारहिलोरहीं, बढिझोटाझकझोर ॥ ६ ॥ झूलतझोटाचढिगगन,
बैंनगरजसमनूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरषतहारनिफूल ॥ ७ ॥
नागरीदासहिंडोरनैं, सोभामनअवरेपि ॥ प्रेमझुलनिझूल्योकरैं,
दंपतिझूलनिदेपि ॥ ८ ॥ रागमलार ॥ ताल ॥ झूलतरसिकमोहन
राय ॥ संगभामिनिदामिनीघनबीचमनौंदरसाय ॥ कटिलचकिम
चकनिचलतअदभुतलेतचितकौंचोर ॥ वढिगईझूलनिझननझनन

घटाअरुस्यांम ॥ गरजनिमधुरकिंकिनीनूपुरचात्रगवचनरचनमु
षवाम॥श्रमजलबरषतफुहीसुहीफबिहसानिदसनदामिनअभिराम ॥
उडिउडिचलतमनूंबगपंकतिबिलुलितमुक्तादाम ॥ कुसमसेजअ
वनीबिचलितभईअतिआनंदहियैंनृपकाम ॥ नागरियाइहिंबिधि
नितपावसबृंदाबनसुपधाम ॥ १४ ॥ आजअतिपावसराजतकुं
ज ॥ गउरसांवरीघटारहीमिलिबरसिरसपुंज ॥ नूटिहारबिथुरेओला
सेगजमुक्ताफलगुंज ॥ नागरियातहींरूपपंकदृगनिकसिसकतनाहिं
लुंज ॥ १५ ॥ सरसरसबरसिरहेपियप्यारी ॥ कछुकछुदृष्टिपरतअ
बपौंदेसांवननिसिअंधियारी ॥ दामिनिदेषिदिपावतहैंउरझीबांहिं
यांअंषियांअनियारी ॥ नागरियाहियमैंयौंरहोनितश्रीबिहारनिकुं
जबिहारी ॥ १६ ॥ गोवर्द्धनगिरवरकैंऊपरचढिदेषतब्रजसोभास्या
म॥ पीतांबरफहरातपवनबसमंदमंदलहकतबनदाम ॥ तैसीयछूटिर
हीघनमालाठौरठौरसरभरेसुठाम ॥ नागरीदासबिलोकतप्यारोनव
जोवनबृंदाबनअभिराम ॥ १७ ॥ रागहिंडोराकाण्याल ॥ सुंदरनंद
कुंवारझूलतललितकदंबतरैं ॥ जमुनांतटिनवघनस्यामसरीर ॥ सो
हतफहरतमालमोहतमहाकिमालतीरहीचहूंदिसभईभंवरनकीभीर ॥
चलिरीचलिआजुनैननिरूपअमीरसपांनकरहिंकिनहरहिंमदनतन
पीर ॥ तूंगोरीवेस्यामजोरीजगतबिभूषननवलनागरीबसियेधीरस
मीर॥१८॥तिताल॥ झूलतरंगहिंडोरैंनवलदोऊमनमोहनमोहनिछवि
पांवहीं॥द्रुमपरव्हैंव्हैंकढतबढतछबिपरसिपरसिधुरवामनौंआंवहीं ॥
पुलिबैनीउरहारटूटिपटछूटिछूटिअंचरफहरांवहीं ॥ नागरियाबढी
रमकरंगीलीतामैंझुकिझुकझोरनिमिसुलपटांवहीं ॥ २ ॥ रागमल्हा

रेसे॥ प्यारिझूटेबारबैंनाबेसरिसरांकिगयेउततूटीबनमालासिथलकिं कनीकाटिषुलेफैंटापेचसुषसुरतझकोरेसे॥ सँवारतभूषनवसनआयस पीजनमनवारैंरीझिरूपनिरपिठगोरेसे।नागरीदासदोऊश्रमितव्हैंसो येसेझदेषिछबिभुरयेरीमेरेनैंनाभोरेसे ॥१४॥ रागसोरठ ॥इकताल ॥ नितिगरजगरजगरजकैंबरसनिघटालगी ॥ पावसरितुब्रजमेंरसरंग रगमगी ॥ हरितभूमिगहवररहेनवकदंबअंब ॥ कुसमकलितभँवर भारझुकिझुकिरहीझंब ॥ निति० ॥ १ ॥ झूलैंजहांझुंडनिमिलिव ल्लबकुलनारि ॥ जिनमधिनायकवृषभानकिकुमारि ॥ गांनकरतच हूंऔरजुवातिनकीभीर ॥ पहरैंमनहरनितरुनिबरनबरनचीर ॥ नि त० ॥ २ ॥ रूपचहलपहलबिचाहिंडोरनांसलोल ॥ मांनूंमुनियनि लालकैंझुंडनिमचीकलोल ॥ केकीसुरकुहाकिकुहाकिगावैंनववाल ॥ सुंनिसुंनिमलारमेघघुंमडिआवैंतिहिंकाल ॥ ३ ॥ नित० ॥ द्रुमनि मांझझूलतवरबैंनीपुलिजात ॥ ज्यौंउडतमोरतरलपच्छपुच्छाफह रात ॥ छूटिगयेअंचरउरटूटिहारडोर ॥ मचकनिमैंलचकतकटि झोटाझकझोर ॥ ४ ॥ निति० ॥ आईश्रीराधाजबसोभाहैंबढी ॥ सांवरीसहेलीझूलैंसंगलैंचढी॥कहीनपरततासमयकीधिरसपर्योरंग॥ नागरियानिरषिभईनैंननिगतिपंग ॥ ५ ॥ नित० ॥ १५ ॥ राग विहागरो ॥ इकताल ॥ जमुनाकैंतीरबीरजुवतिनकीभीरजहांपरम रंगवोरनांरच्योहिंडोरनां ॥ बाजतमृदंगबैंनवीनसंगरागरंगपावस रितुहोतासंधुरसझकोरनां ॥ झूलतप्रियनवकिसोरझोटाझकझोरजो रझननननननाकिंकिंनीसोरछबिहिलोरनां ॥ नागरबढिनेहमेहरमक निमैंरंगरह्योचालिकटाच्छदुहूंओरदृगनिहोरनां ॥ १६ ॥ रागगोरी

निकिंकनींधुनिसोर ॥ नीलपीतदुकूलफहरततुटीनवबनमाल ॥ गयोअंचलछूटिउरडरमिलतझुकिझुकिबाल ॥ छईचहुंदिसिमेघमाला छयोरागमलार ॥ दासनागरितिहिंसमैंसुषबढ्योविपुनविहार ॥ ९॥ चौताल ॥ भिजहींभिजहींरीझिभिजहींझूलतलालभिजहींनवलनेह रसअटके॥ झोटालेतहरैंहरैंभुजमूलग्रीवधरैंहासिहसिबातैंकरैंनियरैंनिपटलूंबिलटके॥ भीजतपटलपटेप्रगटअंगअंगलषिरहेइकटकदृगनागरनटके ॥ नागरीदासमेहवरसतानिसभईचपला चिराकठईतऊनपरताचितहटके ॥ १० ॥ रागअडाणौ॥ इकताल ॥ झूलताहिंडोरैंलालनवलवृंदबालसंग ॥ चहूंओरठनकमनकजुवतानितनबानियबनकमनहुंमदनवागबसनसोहतहैंरंगरंग ॥ फूलनकेबरनबरननवलासीलीनैंकरनिप्रीतममनहरनतरुनिदीपतदुतिदामिनीअंग ॥ बजवतबींनानवीनगावततियगनप्रबीनगहगडगतिगांनतां नमांनपरानिमिलिमृदंग ॥ घहरतनभघटाकारीठहरतनाहिंचपलारीफहरतपटनील पीतानिरषतमनलोचनपंग ॥ रमकनिमैंरंगरह्योजातनांहिमोपैंकह्यो नागरियादासरसप्रवाहवह्योअतिउमंग ॥ ११ ॥ तिताल ॥ हौंतोसोभादेषिलुभाईमेरीआंषियांजलभरिआई ॥ झूलतकदंबतरैंजमुनांतट सुंदरकुंवरकन्हाई ॥ झलकतनिकसतमुकटलतानिबिचापितांबरफहरांनिसुहाई ॥ नागरियातबतैंमोजियमैंफिररहीमदनदुहाई ॥ १२ ॥ रागबिहागरो ॥ तालचपक ॥ तूंदेषिरीसोभायाबरियां ॥ बढिझुगये झोटाद्रुमपरसतअरुझिरह्योपीतांबरडरियां॥ तूटिगईबनमालाहिलोर तछूटिकिंकनींकटिढरहरियां॥ नागरीदासप्रियाअंचलचलडारिलगि जातदेहथरहरियां ॥१३॥ तालचपक॥उतरेझूलेतैंसोभासिंधुझकझो

तीनलोकमैंगाइयैं, मनमोहनकीबैंन ॥ २ ॥ नेहमुरलियाकोगिनौं, रहतजुअधरनिपास ॥ मरिबोजीबोआपको, हरिकैंसासउसास ॥ ॥ ३ ॥ मुरलीकोमालाकरी, नंदलालाबसहेत ॥ राधेराधेजपति नित, गूढमंत्रसंकेत ॥ ४ ॥ अलकचँवरचांपतकरनि, अधरउसीसा लाल ॥ कौंनपुन्यकियबांसुरी, यहसुषलहतरसाल ॥ ५ ॥ नागरि यादोऊएकरस, रहतपरसपरलीन ॥ जलमुरलीब्रजमीनहै, ब्रजज लमुरलीमीन ॥ ६ ॥ ब्रजमुरलीनांतोसुदृढ, होतनकबहूदूर ॥ नाग रमोहनमुरलिया, ब्रजकीजीवनिमूर ॥ ७ ॥ रागधन्यासरी ॥ तथा भीमपाली ॥ तिताल ॥ तूसुंनिमोहनबैंनबजावत ॥ मनमोहनबैंनब जावही ॥ उरअंतरमैंनजगावहीं ॥ सुंनिधुनिछिनुरह्योनजावहीं ॥ कहाकीजैंआलीबनमालीसैंनसुनावत ॥ सैंनसुनावतबनमालीसुं दरकरपल्लवचलचाली ॥ सुनिकोगहैंधीरतरुनिबाली ॥ कैसैंसचु पावैंफूकनिमंत्रचलावत ॥ फूंकनिमंत्रचलतबनतैंगिरवरतरुप्रे मद्रवततनतैं ॥ तरुठाढेस्यामत्रिभंगनितैंजलगवनथक्योरीपवन नपातडुलावत ॥ पवनपातडुलावतरी ॥ नागरियाधुनिसु निगावतरी ॥ कहूंषगमृगधेनुनिधावतरी ॥ धिरिटाढेइक टकमुषतैंनदृष्टिदुरावत ॥ १ ॥ पदबांसुरीकेरागजैजैवंती ॥ ॥ इकताल ॥ बांसुरीसुंनिसांवरेकीबावरीसीभईहूंहेली ॥ बिनबाजैं हींबंसीडरतैंबैठौंजायअकेली ॥ आयपरैंधुनिश्रवननिमैंजबलागिउ ठैंतलबेली ॥ बिसरतसुधिनैननिजलबरषतभीजतहारहमेली ॥ ना गरिदासनबरनिसकौंकछुमनकीदसादुहेली ॥ १ ॥ आलीकौंनैंबन मुरलीबजाई ॥ मोहनमादिकसौंभरीकाननधुनिमंडराई ॥ कांन

तिताल ॥ नईकौंनयहझूलनिहारि ॥ स्यांमांकैसंगछविभरीसोहतस
षीनवेलि ॥ अतिसुंदरतनसांवरीअरीमनहुनीलमंनिवेलि ॥ स्वेदकं
परोमांचव्हैजांनिपरतकछुतोत ॥ झुकिझुकिझोटामैंमिलैंहसिकुंव
रिलजौंहाहोत ॥ निरषौंफूलनिनेहकीसषीचतुरसिरमोर ॥ हमजांनी
जांनीसबैंअरीयहझूलनिकछुओर ॥ सबैंछकायेनागरीदृगनिसुधा
सौंप्याय ॥ कपटरूपधरिमोहनौंअरीप्रगटिभईव्रजआय ॥१७॥ आं
नकविकृत ॥ रागसोरठ ॥ इकताल ॥ हूंतोवारिहौंवारीगईदेपिहि
डोलैंहेलीरंगरह्योसरसाय ॥ झूलणमैंझुकिझूमिरह्यापियप्यारीजीरैं
रूपलुभाय ॥ भीजैंतनतरवरचुवैंलागागलवांहींलपटाय ॥ रसिक
बिहारीकोयौंझूलिबोम्हारामनमैंझोटापाय ॥ १८ ॥ रागअडाणो
॥ तित ल ॥ येहोलालझूलियैंनैंकधीरैंधीरैं ॥ काहेकौंइतनीरमकव
ढावतहुमडरझतचीरैंचीरैं ॥ क्यौंतुमझुकिझुकिझोटाकैंमिसआवत
होनीरैंनीरैं ॥ येवरजतत्यौंत्यौंबेनागरलेतभुजनबिचभीरैंभीरैं ॥१९॥
रागसोरठ॥तिताल॥दोऊमिलिझूलतरंगहिडोरैं॥ नीलपीतअंचलच
लचंचलबेनीहारहिलोरैं॥ भंवरभीरलपटतसंगआवतलगिसुगंधकैंडो
रैं ॥ नागरियानागररमकनिमैंमिलिगावतथोरैंथोरैं ॥ २० ॥ रागव
डहंस ॥ ब्रह्मताल ॥ वालविनोदीमेरेहियमैंझूलतनित्तवसो ॥ रतन
जटितकैंललितहिंडोरैंवछियासहितलसो ॥ रमकनिमैंलडुवामांष
नकोबिचिबिचिलेतगसो ॥ नागरियाछुसरारिकीकोऊहसैंसुभलैंह
सो ॥२१॥ बांसुरीकेपदगावनेतिनकोअलापचारीमैंदैनें ए दोहा॥
वंसवंसमैंप्रगटभइ, सबजगकरतप्रसंस ॥ बंसीहरिमुषसौंलगी, ध
न्यबंसकोबंस ॥ १ ॥ जिनमोहीसबब्रजबधू, बिसरिगईगृहचैंन ॥

विबसमोहिअधरसुधारसप्याइ ॥ ६ ॥ इकताल ॥ बाजैंबाजैंमधुर धुनिवंसीरीबाजैं॥जोसुनिहालहियेमैंबीतैंसोकहतजुश्रावैलाजैं।लगी पीयमुषसौंतिमुरलियानिसदिनासिरपरगाजैं ॥ नागरीदासकहांलगि निवहैंइनवातनिग्रहकाजैं॥७॥तिताल॥एरीबंसीश्रधरसुधारसराची। लायेरहतसुंदरमुपसौंमुषतूंहीसुहागनिसाची ॥ पियकैंसासउसासति हारेतेरेप्रीतिनाहिंकाची॥ नागरियाहरिअधरअमृतहितबहोतनाचह मनाची ॥ ८ ॥ निलजबंसीलगीपियमुषगाजैं ॥ लाजभरीनकी लाजछुडावततऊआवतनहिंलाजैं ॥ करनहुतोसुतोपहिलैंकीनौंकर नमतैंकहाश्राजैं ॥ नागरकुंवरकैंप्रेमगहेलीतूमतिबाजैरीमतिबाजैं ॥ ॥ ९ ॥ तिताल ॥ दईयाआवैरीधुंनिवार ॥ बीचिबहैंनदियागहरी रीकैसैंउतरौंपार ॥ यहमुरलीमनलीयैंजातहैंनांहींअंगसह्मार ॥ ना गरियाकछुबसनचलतअबकीजैंकौनबिचार॥१०॥ तिताल ॥हेलीमु रलीधुंनिसंकेतमैंवाहीवरकीछांह ॥ श्रवनसुनतहीमोहिलईरीधी रनहींमनमांह ॥ नवलकह्नाईसांवरोबिनदेपैंकलनांह ॥ गुरजनड रजरिजाहुसबैंरीकोऊगहोजिनबांह ॥ मोहिबुलावतकांनदैंरीलैलै राधानांम ॥ चपलाज्यौंचलिनागरीमिलीजायघनस्यांम ॥ ११ ॥ ॥ तिताल ॥ कान्हबांसुरीबजावैंनिसदिननींदनश्रावैं ॥ सुनिसुनि रह्योनपरतसदनमैंमदनसंतावैं ॥ हियरैंअचूकनिकेपढिपाटिफूंकनि केमंत्रचलावैं ॥ नागरियाकरूंमुरलीकीसैंननमैंमोहिबुलावैं ॥१२॥ ॥ इकताल ॥ मुरलियास्यांमकीबाजैं॥इनहिंवरजोरीकोऊआजैं ॥ चढीसिरसौतिसीगाजैं ॥ लगीदुपदैंनकैंकाजैं ॥ भयीहैंकामहिय छौहन ॥ करतहैंकरेजासौहन ॥ लगाईपीयमुषमोहन ॥ परीहैं

नधुनिमंडराईकंपपगडगभारिचल्योनजाई ॥ थिरव्है नीररह्योजमुनांकोथथितभईबनराई ॥ थथितभईबनराई रैनिमैंचंदरह्योठहराई ॥ नागरीदासचकितपगमृगकुलमैंनव्यथासरसाई ॥ मैंनव्यथासरसाईसपीसुनिनांहिनपरतरहाई ॥ २ ॥ तिताल ॥ एरीमाईदेपिरीतूदेषिस्यामैंमनकौंहरतुहैं ॥ मुरलीअधरधरैंसोहैंबनमालगरैंठाढोव्हैंतृभंगीलषिरह्योनपरतुहैं ॥ चहूंओरपगमृगठाढीगऊतृनतजिइकटकलायैंदृगअंसुवाढरतुहैं ॥ नागरीदासगोपीधुनिसुनिमत्तभईध्यांनरूपमाधुरीकौंअंकनिभरतुहैं ॥३॥ तिताल ॥ अणीसिरधुंणिधुंणिरहांकैंनूंकहांसहांपीरजमुनांदेतीरहैंसुनैंदीवंसीबाजदी ॥ सांवलासौंहनाग्वालालैंदामनमुरलीवालासुनिबीतैंहालासोगलकैंनूंआपांलाजदी॥अधरौंदाअमृतरसलैंदीछिणुभीबैंननमौंनिगहैंदीसुंणिसुणिहमनसहैंदी ॥ वहसोतिसीसपरगाजदी ॥ नागरियाजिंददुहेलीसीनेंदेविचतालाबेलीचैंननुपावांरीनिअकेलीदुभरघरीआजदी ॥४॥ रागकाफी बांसुरी ॥ तिताल ॥ मोहनबंसीधुनिउचरी ॥ शिवसमाधिछुटिगईश्रवनसुंनिबिवसजटाबिपरी ॥ जकिथकिचकिरहिगयोमदनकरधुनहीछूटिपरीनिभबिमांनभईभीरसुरबधूउरअंचरबिसरी ॥ नागरियासुंनीतांनकांनजाकीधीरजलाजटरी ॥ ब्रजगोपिनकैंहेतमुरलियासबजगबिजईकरी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ बांसुरीबनबाजैंदईकीजैंकौंनउपाइ ॥ मैंनतीरबेधीगईहौंधीरबिनांअकुलाइ ॥ सिथलदेहपगकांपहीमोपैंडगभारिचल्योनजाइ ॥ थक्योपवनरविरथथक्योसवपगमृगरहेलुभाइ ॥ श्रवतप्रेमजलजडनिकैंरह्योजमुनांजलठहराइ ॥ बंकनैंनभुवतरुनतृभंगीपीतबसनफहराइ ॥ नागरियाधरबदत

तनकभनकधुंनिसुनितविमलचंदाथकिरह्योगैन ॥ आजलौंरहीरी लाजराषीपारिपरिपइयां ॥ नागरीनवसकहाकोजैंगुसइया ॥ २०॥ तिताल ॥ बंसीमनमोहनीबाजैं ॥ बंसीबाजैंसुनिरीआजैंटूटतलाज कीपाजैं ॥ ठाढोहैंरंगीतृभंगीसषीमुषअंबुजबैंनाविराजैं ॥ नागरीनं दललाबनमालीसौंआलीमिलौंकैसैंआजैं ॥ २१ ॥ तिताल ॥ बैंन बाजैंजमुनांकैंतीर ॥ उमगिचलीसांवनसरित्ताज्यौंजुवतिनकीभीर॥ हाइदईनिदईमोहिरोकीकितजांऊवीर ॥ नागरीदासप्रेमपथआगैंपं हुंचीछांडिसरीर ॥ २२ ॥ रागपरजकीबांसुरी ॥ हेलीमोहनमुरली धुंनिसुनीमोहितबतैंकछुनसुहाइ ॥ वहरववीषज्यौंरमिरह्योहोंलहर निलईदवाइ ॥ घायलज्यौंघूंमतफिरौंधरपरतडगमगेपाइ ॥ कुंवर सजीवनिसांवरोवाहीपैंमंत्रपढाइ ॥ वहमुषमोहनमाधुरीनिसदिनउर बिचउरराइ ॥ भरिभरिलोचनआंवहींजियबिनदेषैंअकुलाइ ॥ पी रपूरनपासिपरहीछबिगडीतृभंगीआइ ॥ नागरियाप्रियप्रांनजांनम निजिंहिंतिंहिंभांतिमिलाइ ॥ १ ॥ इकताल ॥ मुरलियाकौनैंण्याल परी ॥ काजकरनसुनिथकीद्वारइतउतपगडगनधरी ॥ मातपितापि तुबंधसबनिमैंप्रीतिहिप्रगटकरी ॥ नागरियाब्रजजुवतीजनसबप्रेम जालकरी ॥ २ ॥ तिताल ॥ बंसीधुनिमनलियैंजाय ॥ बिरहबिथा कीपीरबढीसुनिधीरनहींठहराय ॥ नैंनजलमईश्रवनबैंनमईहियैंठई हरिमूरतिआय ॥ नागरियामुरलीमोहनकीगोहनलागीहाय ॥ ३ ॥ ॥ इकताल ॥ बनबाजैंमुरलियास्यामकी ॥ सुनतहीहौंजकिरहीस सौंहींसुधिभूलीधामकामकी ॥ घरीएकबीततनांहींदिनरैंनचैंनबि श्रामकी ॥ श्रवनमूंदिहूरह्योजातनहिंनागरमोमतिवामकी ॥ ४ ॥

मारैंगोहन ॥ नागरियावहतहैंअंसुरी ॥ उठतहैंकसकविचपंसुरी ॥ अरीबंसुरीअरीबंसुरी ॥ अरीनूंछिमाकरिवंसुरी ॥ १३ ॥ तिताल ॥ गईकरिबीरबांसुरी ॥ गरैंकटीनैंकडरैंनदईतैंढरैंआंसुरी ॥ तांननकेतीरमारतपीरपांसुरी ॥ तूंनागरअधरारसलैंहमलैंउसासुरी ॥ १४ ॥ इकताल ॥ सुनिरीआईधुंनिहैंबनबंसीबाजैं ॥ रुक्योपवनअरुगवनचंदाथिरजमुनाउलहतपाजैं ॥ मनमथमनहिमरोरैंमारतअबनरहतकछुलाजैं ॥ नागरनवलतृभंगीसौंसपीकैसैंमिलैंचलिआजैं ॥ १५ ॥ राग बंगालाकी बांसुरी ॥ इकताल ॥ आवैंआवैंहोबांसुरीधुनिआवैं ॥ सुंनिसुंनिमनबौरावैं ॥ अबमोहिगृहअंगनांनसुहावैं ॥ मेरोमिलनप्रांनअकुलावैं ॥ मनमथलहरिघुमावैं ॥ हियेहरिमूरतिमंडरावैं ॥ नागरीदासचल्योनाहिंजावैं ॥ उठिउठिफिरिमुरछावैं १६ ॥ तिताल ॥ सीतलकदंबतरैंबंसीवाजैंधीरैंधीरैं ॥ सुनियतहैंजमुनांकैंरीजमुनांकैंतीरैंतीरैं ॥ मनहुतृभंगीसनमुषठाढोसनमुषठाढोनीरैंनीरैं॥ नागरियाभुजबीचनआवैंनभरीभुजभीरैंभीरैं ॥ १७ ॥ तिताल ॥ बनमालियारेबंसीवजाईसुनियतबूरिजमुनांपार ॥ मुरलीअधरधरीपरीजियषरभरीसुंदरतृभंगीरेरंगीकीनौंकौंनउचार ॥ अगमविषमबनबीचजलधाराअनपारलंघईयोरेस्वामीमारैंसरमार ॥ चल्योईचहतमगपगनचलतदईनागरीरिझ्ईरीहूंस्यांमैंनाहींअंगसम्हार ॥ १८ ॥ तिताल ॥ गहरैंगहरैंमुरमुरलीसुनिदूरिबाजैं ॥ मैंनभरीधुनिसैंनसुनावैंरहिवोनआजैं ॥ तरुनतनइयातीरवाहीबनछईया ॥ नागरीनवलतृभंगीवनमालीविचअमरईया ॥ १९ ॥ तिताल ॥ सुंनिवंसीबाजैंबंसीबाजैंसरदजुन्हइयारैंन॥

तिबिसारी ॥ बिस्वबिजईबितनगर्वषंडनकरनवरहरनघोषजन कीजियारी ॥ नागरीनवलब्रजगोपिकनिहितकुंबरधराधरधरनानित बैनधारी ॥ ३ ॥ चर्चरी ॥ जयतिबनमालनवलसतहुलसतप्रभावस तबिहरतसदाउरबिसाला ॥ फूलफलमंजरनिदलनिमयदेहआनंद आमोदभारंभ्रमरजाला ॥ बिपुनतनयातरुननितिछबिलहलहाति पिलियसुषझेलिझुकिझुलियमाला ॥ दासनागरिआळीयाकेहितलो चनबिसालीनांवबनमालीभयेनंदलाला ॥ ४ ॥ चर्चरी ॥ जयतिल लितादिदेबीयब्रजश्रुतिरिचाकृष्णप्रियकेलिआधारअंगी ॥ जुगल रसमत्तआनंदमयरूपनिधिसमरसुषसमयजिमछांहसंगी ॥ गउरमु षहिमकरनिकीजुकिरनावलीश्रवतमधुगांनहियहरितरंगी ॥ नागरी सकलसंकेतअधिकारनीगनतगुंनगननिमतिहोतिपंगी॥५॥ चर्चरी ॥ जयतिबृंदाविपुनबिस्वबंदनमहीमहिमाअद्भुतनिगमगाजगाजैं ॥बन निबनराजब्रजराजसुतप्रियतहांसहजसुषनित्तरितुराजराजैं ॥ कथ तश्रीमुषकथाकृष्णबलिप्रतियथाफूलफलझूमिछबिछाजछाजैं ॥ कोशदसदोयअनुरागरैंनीरचीपरसिमनत्रिरंगताभाजिभाजैं ॥ जुग लकलकेलिविचकुंजरचनांरुचिरनूपुरनिशब्दप्रतिबाजबाजैं ॥ दा सनागररंगवागराधासदानिरषिदृगकांमरतिलाजलाजैं ॥ ६ ॥ च र्चरी ॥ जैतश्रीगांवगोकुलरमणानंदसुतअवनिउच्छवरूपअतिआभि रांम ॥ भीरआभीरबढिधेनुसागररह्योजितहिंतितहोतगुनगांनस्यां म ॥ रहतधुनिछईतहांमेघमथनांनिकीफिरतहरिहरतदधिवांमधांम॥ सबनरनारिगोपाललीलामगनदिवसनिसजातजांनतनजांम ॥ पारि कसुषसंपदानिरषिचितचकितसुरलोकतजिचहतभुवबासग्रांम ॥ ना

रागकेदाराकीबांसुरी ॥ इकताल ॥ अरीबांसुरीपरीहैंकौनटेवतिहा री ॥ पैठतआंनिआंनिकांनानिमगप्रानिगहतकहारी ॥ लोकला जग्रहकाजछुटावतसुधिबुधिहरतहमारी ॥ काहेकौबैरकरतव्हैकैंतू नागरपियकीप्यारी ॥ १ ॥ इनपदकीअलापचारीमै दैने ए ॥ दोहा ॥ नीलांबरासिरचंद्रिका, गउरअंगअभिरांम ॥ सोमेरेहि यमैंबसो, मोहनमोहनभांम ॥ १ ॥ साधोकोरिकजतनतउ, सरैंन एकोकांम ॥ राधाआधोनांमहूं, लियैंहोतबसस्यांम ॥ २ ॥ राधा रजपदपअतब, आराधैंसुषरास ॥ जबवृंदावनप्रेमरस, लहतनाग रीदास ॥ ३ ॥ तालचर्चरी ॥ जयतिश्रीकृष्णनवनीलआनंदघन रूपसिंगाररसबनाबिलासी ॥ मदनमदमथनव्रजगोपकुलरतनतन परमसुंदरप्रियाउरनिवासी ॥ बेणुमुषधरनचितबधूव्रीडाहरनचंद्रि काधरननिसरासबासी ॥ दासनागरप्रणितनंदसुतरसकंदराधिका चंदमुषदृगउपासी ॥ १ ॥ चर्चरी ॥ जैतिश्रीचंद्रिकाचारुकलधूत केसूतकृतचित्रवहुरंगअंगे ॥ कृष्णचूडारुचिररूपविस्तारनोबरहित नयामूलमुक्तिसंगे॥ सर्वअवतंसपरउच्चआरूढपदघोषजनदृगकरपि करनपंगे ॥ चढियमनुसिषरासिंगारमंदिरधुजाउठतफरहरानिबिचछ बितरंगे ॥ प्रियापदजुगलजावकभरतकरततबइंद्रधनुरंगअभिमान भंगे ॥ नागरीदासचितचढियनैननिचढीचढीहरिसीससुंदरउछंगे॥ ॥ २ ॥ चर्चरी ॥ जैतिश्रीमुरलीकाबपुधरनभारतीलालमृदुअधरस ज्यानिहारी ॥ कँवलमुषमधुरमकरंदसींचतसदाछिनकाबिनप्रानत जिदैंनहारी ॥ कृष्णप्रियपरससंकेतहितदूतिकारासरसकेलिघन कौसतारी ॥ अपिलब्रह्मंडधुनिभेदव्यापकभईअमरनरनारिधृतिम

यारे ॥ बिचरतकरतपुनीततीरथनिअगनितजीवउधारे ॥ अबक रिक्रुपादासनागरिकहैंमेटोतापहमारे ॥ २ ॥ इकताल ॥ मुनिसब लोकपावनकरे ॥ प्रगटिश्रीभागौतकौनौंकरुनांसागरढरे ॥ ल्याय भागीरथसुरसुरीपापपूरबहरे॥ तुमजुसबउरभवनमैंभक्तिदीपकधरे॥ कृष्णचरिताबिचित्ररसमदप्रेमगहबरभरे ॥ सहजश्रीसुकचरननव कादासनागरतरे॥३॥ रेपता जुबानके इन धुरपदौं षियालौंकी अला पचारीमें दैनें ए दोहा॥उसहीकीसुंनिसिफ्तकौं, किसीजुबामैंहोय॥का दरनादरहुन्नका, कृष्णकह्रायासोय ॥ १ ॥ उजलेमैलेषलकमें, फै लेमज्बअनेक ॥ इस्कबाजसिरताजकौं, इस्कपियाराएक ॥ २ ॥ इस्कबाजवैसानकोउ, वैसासूरतषूब ॥ नागरमोहनसांवला, कद रदांनमहबूब ॥ ३ ॥ मजामज्बजोषलकमैं, सोदिलकछुनसुहाय अज्बउसीकेइस्कका, परैंगजबजबआय ॥ ४ ॥ राग इकताल ॥ अज्बसषसजिंदबक्सबेनजीरदस्तगीराहितनिबाहवाहसबषूबियोंका भारासा ॥ इस्कबाजदरदबंदकदरदांनजांनमनजांनप्रानप्याराच स्मौंकातारासा ॥ नंदकाफरज्यंदषूबनागरसलौंनास्यामफैल रह्याब्रजमैंउसहुस्नकाउजारासा ॥ कादरअज्बरूपनादरगुसांई अैसादेषानसुनाहैंकहूंसाहिबहमारासा ॥ १ ॥ रागइकताल ॥ जिसनैंनहींपीयाहैंउसइस्ककापीयाला ॥ तिसनैंआयषल्कमैंअब स्कैंपायडाला ॥ दीनवोदुनियांकेदिलदिमाकसौंवहन्यारा॥इस्कसौं न्यारानहींआसिकनिवाजप्यारा ॥ जुल्फकीजंजीरसप्तादिलकौं दस्तगीरकीया ॥ उस्कौंषुदाबंदहरेकफंदसौंछुटायलीया ॥ अब्रू यदुकजतेगचस्मषंजरमदहोस ॥ इनसौंकतलहौनैंबिनजोंनांअफसो

गरीदासधनधन्यसोकुलजहांगांवहींरसनांगोकलसुनांम ॥ ७ ॥ चचंरी ॥ जयतिगिरराजकृतछत्रब्रजराजसुतसहजसुरराजगतिगर्वहारी॥ वर्यहरिदासजनघोषसुषरासरितुसर्वदाहरितहुल्लासकारी ॥ सकलरसवर्द्धनंदेवगोवर्द्धनं प्रणतिइंद्रादिसुरलोकचारी ॥ बिपुनमधिनायकंभूमिछाबिभायकंपायकंनीलमणिपीतप्यारी॥परमप्रियहेतसंकेतसुपकंदरातहांनिसदिवसबिहरतबिहारी ॥ नागरीदासलघुबुद्धिबरनैंकहाउतहिंनगप्रगटजगमहिमांभारी ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥जपतपसंजमनेमव्रत, जोगजग्यकरिपूर ॥ भक्तिभागवतसंगबिनु, भक्तिनउपजतमूर ॥ १ ॥ सुनैंभागवतभक्तिव्हैं, भक्तिमयैंव्हैचैंन॥ जक्तमांझआशक्तक्यौं, दुषबितवैंदिनरैंन ॥ २ ॥ संमृतबेदपुरानहैं, सबहीहरिकेअंग ॥ रंगनलागैंभक्तिको, बिनाभागवतसंग ॥ ३ ॥ जक्तभक्तबहौभांतिकहि, नानामतकेमांहि ॥ सुकसुषकेबिनफलद्रवैं, ब्रजरसपावैंनांहि ॥ ४ ॥ नागरीदासाबिचारिजिय, अफलजायनहिंदेह ॥ चाषिभागवतअमृतफल, जनमसफलकरिलेह ॥ ५ ॥श्रीमत भागवतकी कथाके समैं ए पद गांवनें राग प्रभातकेमैं तथा सारंगमैं गांवनें ॥तिताल॥ आरतीश्रीभागौतकीकीजैं ॥ श्रवनसुनतजीवनफललीजैं ॥ गोघृतरचितकपूरकीबाती ॥ निरषतजोतिजोतिभईछाती ॥ जनमजनमकेबंधनजारे ॥ भवसागरमैंवहतउबारे॥ तीनतापकरिडारेमंदे॥ नागरीदासफिरतआनंदे ॥ १ ॥ तिताल ॥ जैंजैंश्रीसुकमुनिमतवारे ॥ कृष्णरूपगुनमत्तबारुनीउनमीलतदृगभारे ॥ सीतलसुषदप्रसन्नवदनाबिधिलषिहियमिटतअंधारे ॥ जगमगातनवक्रांतिमाधुरीप्रेमपुंजउजि

निसस्तगाहकीया॥ इककश्रभीवाहिरकेआयेक्यौंकिजायजीया॥ नागरदिलपुसनांपुसअपियांदुषजिमैकरिलीया॥ श्रांसूपल्करुमाल इसारतबोलैंवीयाबीया॥ ७॥ राग सोरठ तिताल॥ उसहुस्नके तकाबलकरनांबयांनक्याहैं॥ फिरिचस्मविनविचारीसायरज़ुबांन क्याहैं॥ महताबमुपकौंदेषैंवेताबहोतदिलहैं॥ उसआगूंकिसकेम नकारहतासयांनक्याहैं॥ हररोजवासजनकीमुजमारतीअदाहैं॥ इसतर्जवेतकुल्लहफजीकाजियांनक्याहैं॥ नागरअगरगिरफतैं दरदस्ततेगषूंनी॥ श्रवइस्कपेतउसकूंलेनांमियांनक्याहैं॥ ८॥ ॥ इकताल॥ निगाहकेमिलतैंहौंचस्मौंपैगांमाकिया॥ रिसवतमुस क्यायदियादिलकौंलुभायलिया॥ पुकारतीथीयारकोंमिजगांकि विया॥ सुरझैंनहींइस्कनज़रउरझीमुझवीचहिया॥ सांवलासाहि बजमालछैलछलनिवालतिया॥ नागरकहाओपियाउसबिननहीं जायजिया॥ ९॥ इकताल॥ श्रांषियोंसौंमैंकहाथाकरोमतहुस्न परस्ती॥ जबतौंनहींरहीविचसोषअसरमस्ती॥ अबविरहकीअ वाईदिलपरपरीहैंताजी॥ मुजकौंसलाहक्याहैंमुस्कलहैंइस्कबाजी॥ ॥ १॥ दोहा॥ नैंननबेहुकमींनकौं, वहोतरहीसमुझाय॥ हायइ स्कश्राफतअबस, सिरपरडारीलाय॥ १॥ अपनेंजांनिनसिहिन किए, बहोतबहोतदिनरैंन॥ मैंअपनीसीकारिथकी, अपनेहुएननैं न॥ २॥ मनाकिस्तीहैंसिकस्तीदरियालगनमेंगहरैं॥ तुजरूहरु यरुपौंहीउठतीहैंकहरलहरैं॥ श्रपसोसकेभंवरमैंरंण्यूंसदादियाजी॥ मुजकौंसलाहक्याहैं॥ मुस्कलहैंइस्कबाजी॥ २॥ दोहा॥ परीइ स्कदरियावदिल, नावनपावतओर॥ बेपरवाईरावरी, पुरवाईझक

स॥ गुलगुलाबसदंसंदलल्याताक्याअंग॥ सनमकोहुस्नरोसनोंपरहो कैंजलपतंग ॥ नागरहौंउसगलीकापायषाकपूव ॥ सबेपुसअदाह सौंजहांचलतामहबूब ॥ २ ॥ राग तिताल ॥ सुंदरसलौनेंबदनके वलपरएअंषियांहैंभंवरगिरीक्यौं ॥ फेरिरहीमैंनासियतकरकरगज बकीमारीफिरनाफिरीक्यौं ॥ हायअबसमैंजायपरीदिलहुस्नलाय कीलपटलगीहैं ॥ इस्ककीआफतलिषीहमनासिरसोअबहरदमरहैंत गीहैं ॥ छुटैंनजियसौंवजैंललनकीचिमनमैंपुसदिलहोनिकलनकी॥ कलगीमालाजुल्फहलनकीअदाहउसकेलटकचलनकी ॥ कहौंसंदे सजहांवहपीयातुजाफिराकसौंजलताहीया ॥ जहरजुदाईप्यालादी याजायनहींबिनदेषैंजीया ॥ अरेपीयारेमुझेंजिलारेगलीहमारीतोटु कआरे ॥ तजीसहेलीरहूंअकेलीजिंदद्हुहेलीदरसदिषारे ॥ करीदि वानीदरदद्दुण्यारीजाहरहुईसबनिपरयारी ॥ एमनमोहननागरवारी लाजतजैंकीलाजहमारी ॥ ३ ॥ इकताल ॥ कीहैंहसियारनिगाह अज्बइमरोजरस्मौं ॥ जीयादेंइस्ककीआमदसराबमस्तचस्मौं ॥ दीयाभरिरुपपीयालौंहीय्रासरसारवस्मौं॥ कीयादिलनागरबेअषत्या रउसीदिलदारकीकस्मौं ॥ ४ ॥ राग हमीर ॥ तिताल ॥ अजों मददेंजिगरइस्ककयाहकीममरजपावैं ॥ चस्मकेदारूनअबसन ज्बदस्तलवैं ॥ मनगकेदराफिराककुछाजिकरपुस्नआवें॥ दिलकौर फाहोयतवनागरदरसदिषावैं ॥ ५ ॥ राग इकताल ॥ फीराकदि लसौंदरहरतरीकजुदानहोस्यायत ॥ लिषीहैंइस्ककीआफतनसी बमन्नकवायत ॥ नहींहैंदुकगीदिलदर्दरफायत ॥ सांवलानागरबे परवाहनिहायत ॥ ६ ॥ राग बंगला तिताल ॥ हीयामन्नमहबूब

सिकदिलअंषियौंकीजगमैंसबसैंअकहकहांनीहैं ॥ फिरनफिरैंमहबूबकरैंजबहांसिचितवनिमहमांनीहैं॥ बेसकबदनपरहेजनिहायतइनहिंनलालचहैंजीका ॥ हुस्नजहरकागिजामुकररऐसीअजबअयानीहैं ॥ उनात्रिनसनमऔरनहींसूझैं ॥ हरदमएकउसीकूंबूझैं ॥ इसमतलबमैंनिपटसयांनी ॥ औरनकहूंलुभांनीहैं ॥ मस्तहालसबसुधिविसरांनीप्यासीमरैंपरीबिचपांनी ॥ एगरीबउसरूपदिवांनीउहिनागरअभिमांनीहैं ॥ २ ॥ देषामनमोहनसौंहनप्याराफैंटासिरवासजकजदार ॥ तिसपैंधरेबनायगुलगुलाबनौबहार ॥ हैंरहैंरदुजुल्फबदरौंमैंरोसनमुषचंद ॥ ज्यांनडसैंकालीकालियांसीमतवालियांभौंहबुलंद ॥ महरभरेचस्मौंकीसहरसीनिगाह ॥ स्यामरंगअंगअंगअजबषुसअदाह ॥ बदास्तनीलोफरफिरावताआवताविचउमंग ॥ उसकीकिरनमैंफिरतादिलहैंहुंनराफिरंग ॥ चालमौंचितचालडालडालाजंजाल ॥ हुवानिहारनागरछबिइस्कमस्तहाल ॥ ३ ॥ तिताल ॥ कौकरांमैरांनीबिहांनीनींदनआवैं ॥ वहीरूपआंपडियांआगैंआंनिआंनिमंडरावैं ॥ मैंडाहालनबुझदामोहनसौंहनबेपरवाहकहावैं॥ नागरियासांईनकिसीकौंइस्कफंदबिचलावैं ॥ इकताल ॥ हुवाहैंइस्कदामनगीर ॥ स्यायतभीनरफायतदेतादिलकौंदुगनीपीर ॥ सुबैंस्यामसोतैंजगतैंसंगलगीरहैंबिरहबहीर ॥ नागरकुल्फकरीअंषियांअबजकरिजुल्फजंजीर ॥ इकताल ॥ मोहिक्यौंपिलायानींइस्ककापियाला ॥ ल्यावल्यावस्याकीमहबूबांहायहायमतवाला ॥ अबधीरजकेपायनठहरैंजायनअमलसंभाला ॥ नागरियावहरूपमोहनदागलबिचपयाजंजाला ॥ ५ ॥

झोर ॥ १ ॥ परिगईनावकुदावचित, किससैंकरूंपुकार ॥ प्रीतम भंवरकेपेचतैं, कौंनउतारैंपार ॥ २ ॥ मेरीदसादुहेलीयहकिसकौं कहिसुनाऊं ॥ परीप्रीतकेसमदमैंकहूंपारभीनपाऊं ॥ नागरनवल पियारेतुमतोहोषुसमिजाजी ॥ मुजकौंसलाहक्याहैंमुसकिलहैंइस्क वाजी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ अकथकहांनीप्रीतकी, कहीनमानैंकोय ॥ कोइयकजांनैंपलकमैं, जिससिरबीतीहोय ॥ १ ॥ रहैंहालहरदम लगा, छुटताहैंजियधीर ॥ पीरनपावैंइतेपर, यारनिपटवेपीर ॥ ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ इकताल ॥ अन्नरूमहरावपानैंमिजगांअं सवौंकाफरंगफव्वाराकिया॥ पुतलीमसनदमुलायमकाजिनहारकि सींनैंनसफसछिया ॥ तुजइस्कहीकारोसनसमेजहांजिनजुलनातनि कासदिया ॥ पुकारैंनिगाहसबोरोजनागरबियारेवियाएपियारेपि या ॥१॥ इकताल ॥ लवआवकियाषसपांनांपंषावंधावाजगस्तीफ हिरैंफहिरैं ॥ परदेदरफरसएसंदलकेसबरंगरंगेगहिरैंगहिरैं ॥ जल चादरहोजजहांआवसारैंफवारेचलैंनहिरैंनहिरैं ॥ इहांनागरिनागर साहिबअैसउठैंसुषकीलहिरैंलहिरैं ॥ २ ॥ राग ललित ॥ तिताल॥ सुनिरीसषीसयांनी॥मुजइस्ककीकहांनी॥ देषामैंस्यामसलौंनां ॥ उ सकेहुस्नमैंटौंनां ॥ भौंहैंबुलंदमुषवीरा ॥ सिरजाफरांनीचीरा ॥ जो वनमैंमस्तआंषैं ॥ गोयाकंवलकीपांषैं ॥ नींमांमिहीनतंग ॥ जिस मैंझलकताअंग ॥ कसैंतनबदनजवांहिर ॥ नैवजवांउमरषुस जाहिर ॥ उसकीअजबअदायैं ॥ दिलडालतीझुलायैं ॥ अबवहि सजनजहांहीं ॥ मुजलेचलोजहांहीं ॥ तलफौंलगीतालावेली ॥ नागरबिनाजिंददुहेली ॥ १ ॥ रागभैरूं ॥ तिताल ॥ आ

यैंअदालतजुलमकी, जहांबैठामहबूब ॥ १५ ॥ आसिकपीरहमेस दिल, लगैंचस्मकेतीर॥ कियाषुदामहबूबकौं, सदासन्तवेपीर॥१६॥ आसिकसिरअपनाअरे, धरिदैंपैरूंलाय ॥ वेनिसाफमहबूबकैं, करैंदूरअनषाय ॥ १७ ॥ षूनकरैंलडवावरे, महबूवौंकेनैंन ॥ आसिकसिरकीगैंदसौं, पेलैंतबहीचैंन ॥ १८ ॥ सुरषचस्ममहबूबनैं, पंजरकियेसँवार ॥ निकलैंलोहूसौंरंगे, आसिकपंजरपार ॥ इस्कषेतसौं नहिंटलैं, अवैंबेउसवास ॥ चस्मचोटसौंसिरउडैं, धडबोलैंस्यावास २० ॥ पलककियाषालिकअरे, हसनैंहींकौंषूब ॥ सहनैंकौंआसिककिये, मारनकौंमहबूब ॥ २१ ॥ चस्मौंसौंजरब्रीकरैं, रसगस्मौंबिचपेत ॥ लटतस्मौंसौंबांधिकैं, दिलबस्मौंकरिलेत ॥ २२ ॥ पंडितपूजापाकदिल, ॥ एदिमाकमतिल्याय, लगैंजरबआंषियांनकी, सबैंगरबउडिजाय ॥ २३ ॥ पावसकैंनहिंठहरिकैं, छुरीचरमकीपीर ॥ जोजानैंजिसकेलगैं, कहरजहरकेतीर ॥ २४ ॥ तीरनिगाहूकेलगैं, दरदमुकरराहाय ॥ जरराहभीजरराहसौं, मिलैंनउरकेवाय ॥ २५ ॥ एतबीबउठिजाहुघर, अबसछुवैंक्याहाथ ॥ चढीइस्ककीकैफयह, उतरैंसिरकेसाथ ॥ २६ ॥ कस्मौंतुम्हैंकरीमकी, सुनियोसबैंजिहांन ॥ चस्मौंकीलागीगिरह, छूटैंछूटैंज्यांन ॥ २७॥ क्याराजाक्यापातसा, क्यागरीबकंगाल ॥ लागेतैंछूटैंनहीं, नैंननिवडोजंजाल ॥ २८ ॥ लगातीरजमधराछिपैं, छिपैंछिपाइसैंफ ॥ नहिंउतरैंनांहिनछिपैं, हैंफइस्ककीकैफ, ॥ २९ ॥ अरेपियारेक्याकरौं, जाहिरहोहैंलाग ॥ क्यौंकरिदिलबारूदमैं, छिपैंइस्ककीआग ॥ ३० ॥ आतसलपटैंरागकी, पुंहचींदिलबिचजाय ॥

# अथ इस्कचिमनके ॥

दोहा—उसहीकीसुनिसिफ्तकूं, किसीजुवामैंहोय॥ कादरनादरहुस्नका, कृष्णकहायासोय ॥ १ ॥ इस्कउसीकीझलकहैं, ज्यौंसूरजकीधूप ॥ जहांइस्कतहांआपहैं, कादरनादररूप ॥ २ ॥ कहूंकियानहिंइस्कका, इस्तैंमालसंवार ॥ सोसाहिबसौंइस्कवह, करिक्या सकैंगंवार ॥ ३ ॥ सरमिंदाहोयइस्कसौं, सोदेवैंसवखोय ॥ निंदासहदांनैंवजैं, सोईचुनिंदाहोय ॥ ४ ॥ दुनियांदारफकीरक्या, हैंसबजितनींजात ॥ बिगरइस्कमस्तीअरे, सबकीफिस्तीबात ॥ ५ ॥ सादेजेप्यादेसबैं, जद्यपिधनअनपार ॥ इस्कअमलमस्तीलियैं, सो हस्तीअसवार ॥ ६ ॥ सबमहजबसब्रइल्मअरु, सबैंअसकेस्वाद ॥ अरेइस्ककेअसरबिन, एसबहीबरवाद ॥ ७ ॥ आयाइस्कलपेटमैं, लागीचस्मचपेट ॥ सोईआयापलकमैं, औरभरइयापेट ॥ ८ ॥ जरवाजीबिनपलकके, कामनसंवरैंकोइ ॥ एकइस्कबाजीअरे,ज्यांबाजीसौंहोइ ॥ ९ ॥ सीसकाटिकरभूधरैं, ऊपरख्पैंपाव ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, असाहैंतोआव ॥ १० ॥ जिनपावौंसौंघलकमैं, चलैंसुधारिमतिपाव ॥ सिरकेपावौंसौंचला, इस्कचिमनमैंआव ॥ ११ ॥ कोइनपुंहचाउहांतलक, आसिकनामअनेक ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, आयामजनूंएक ॥ १२ ॥ इस्कचिमनमहबूबका, जहांनजावैंकोय ॥ जावैंसोजीवैंनहीं, जीवैंसोवौराहोय ॥ १३ ॥ अरेइस्ककेचिमनमैं, सम्हालिकैंपगधारिआव ॥ बीचराहकेबूडनां, ऊबटमांहिंवचाव ॥ १४ ॥ मारेफिरिफिरिमारिये, चस्मतीरसौंखूब ॥ कि

र ॥ ४६ ॥ इतिश्रीपुस्तकश्रीमहाराजकुंवारश्रीसांवतसिंहजीद्वुतीयहरिसमंधनांमश्रीनागरीदासजीकृतपदमुक्तावलीसंपूर्ण ॥

कवित्त ॥ छप्पै ॥ परमधर्मप्रतिपालसमरपंडितअतिभारी ॥ गुनमंडितमतिविमलभक्तिनवधाअधिकारी ॥ रसिकनिमनकौमंत्र विमोहितसिंहबाहादर ॥ स्यामास्यामसनेहगेहकरिराष्योउरबर ॥ धुरधरनिभांनसासिसक्षरिपचिरंजीवजोलौंसुपद ॥ नृपराजराजमृगराजसुवधन्यधन्यजगजसविसद ॥ १ ॥ यापदकेगावनेमैंदेने ए दोहा ॥ परमपुष्टिरसजलअमित, उर्मीप्रेमावेस ॥ नागरप्रगटिआनंदनिधि, वल्लभसुतविठलेस ॥ १ ॥ वलभाचारजकलपतरु, फललग्योविठलेस ॥ याफलकोरसरूपहैं, गोकुलनाथब्रजेस ॥ २ ॥ धनवल्लभविठलेसधन, धन्यसातसुतवंस ॥ भवनिस्तारनिहितप्रगटि, नागरजनप्रसंस ॥ ३ ॥ राग ॥ श्रीवल्लभाचारिजकुमारकुमदकुलनिसेस ॥ भक्तिजनप्रसंसितश्रीमतविठलेस ॥ बिष्णुस्वामिसंप्रदायचूडामणिचार ॥ नागरप्रणमाम्यहंअंघ्रिकल्हार ॥१॥ राग ॥ मंडितरासिकरासरससरंगे ॥ प्रफुलितविपुनव्रहतमलयानिलउदयतिससिसर्वंगे ॥ सरदबिमलराकानिसस्रुपक्तकलरववेणुतृभंगे ॥ रासारंभव्यौमधुंनिपूरतमहुवरमुरजमृदंगे ॥ गउरस्यामभुजग्रीवरचितपदसंगीतसुधंगे ॥ अंदोलितअलकावलिकुंडलगुनिमुक्तावलिभंगे ॥ रसानंदअवेसविवसपटनीवीसिथलसुअंगे ॥ रूढबिमांनअमरप्रेमातुरमुर्छितअवनिअनंगे ॥ श्रीवृंदावनराधामोहनकेलिकलपव्रहोसंगे ॥ नागरियागोलोकअषंडितकथतकथासुकसृंगे ॥ २ ॥ राग ॥ भरितुमलयसमीरमंदगतिबहतिपरासिद्रुमफूलं ॥ चंद्रोदय

दवीइस्कवारूदकी, भभकानिलागीलाय ॥ ३१ ॥ उठैंआगि उरइस्ककी, जलैंअैसअरांम ॥ चलैंनकैफीचस्मविच, घुटैंधुवैं केधांम ॥ ३२ ॥ गिरेरहैंभीजेरहैं, मुतलकभीसमलैंन ॥ हुस्न पियालेपीयकैं, हुयेहैंमदवेनैंन ॥ ३३ ॥ गिरेतहांहींगिरिरहे, पलभीपलउघरैंन ॥ पूरेमदवेहुस्नके, मजनूंहींकेनैंन ॥ ३४ ॥ चली कहांनीपलकमैं, इस्ककमायाखूब ॥ मजनूंसेआसिकनहीं, लैलीसीमहबूब ॥ ३५ ॥ मजनूंकौंकहैंसबअसल, औरनकलकेभाय ॥ कछूहोयदिलमैंअसल, तबसकैंनकलभीलाय ॥ ३६ ॥ नकलसांचसौंसरसकरि, करिलीनैंदिलदस्त ॥ हरिदासकेहालमैं, दरदिवालभीमस्त ॥ ३७ ॥ इस्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय ॥ हरिदाससबकौंगया, चेटकरूपदिपाय ॥ ३८ ॥ इस्कहुस्नकीबात क्यौं, सकैंसुषनमैंआय ॥ दिलचस्मौंकेजुबानहोय, तबकछुकहैं सुनाय ॥ ३९ ॥ कहोजायकहांइस्ककी, कहेनमांनैंकोय ॥ जानैंसोजांनैंअरे, जिससिरबीतीहोय ॥ ४० ॥ पलकनमांनैंएकभी, अबसकियैंबकवाद ॥ खूबकमावैंइस्ककौं, तबकछुपावैंस्वाद ॥ ४१ ॥ मजाअजायबहुस्नका, चष्पैंचस्मजुवांन ॥ इस्कचिमनरष्पैंसोई, आवादांनसुजांन ॥ ४२ ॥ चस्मौंकेचस्मांझरैं, झरनाआवफिराक ॥ इस्कचिमनतबसब्जरहैं, दिलजमींनहोयपाक ॥ ४३ ॥ इस्कचिमनआवादकरि, इस्कचिमनकौंगाव ॥ नागरवरमहबूबके, इस्कचिमनमैंआव ॥ ४४ ॥ जिगरजष्मजारीजहां, नितलोहूकाकीच ॥ नागरआसिकलुटिरहे, इस्कचिमनकेबीच ॥ ४५ ॥ चलैंतेगनागरहरफ, इस्कतेजकीधार ॥ औरकटैंनहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवा

बिहाइ ॥ बारबारसुपनैंहूंसूचतसुरतरंगकेभाइ ॥ यहसुषनिरषिसषी जनप्रमुदितनागरीदासबलिजाइ ॥ ८ ॥ राग ॥ सटपटातकिरननि कैंलगैं ॥ उठिनसकतलोचनचकचौंधतऔंचिऔंचिओढतबसनदो उजागैं॥ हियसौंहियमुषमिलवतहसिलपटातसुरतरसपागैं ॥ नागरी दासनिरषिअंषियनिसुषमतिकोऊबोलहुजाहुजिनिआगैं॥९॥ राग॥ प्रातसमैंदोऊउठेपरजंकपरसौरभसरसस्वादलपटात ॥ लोचनललि तअरुणनिसिजागेसुरतअंतपुनिललचात॥अतिरसमत्तसुरतसुषसाग रवचनरचनकहिमृदुमुसकात॥ नागरीदासदंपतिसंपतिबिलासिविल सिसुषएनअघात ॥ १० ॥ राग ॥ स्यांमाजूसँवारतहैंबेसरि बिहारीजूकीबिहारीजूचंद्रिकासंवारैंमुषवारहार ॥ पीतपटपौंछैंपिय मुषश्रमप्यारीजूकोप्यारीनीलअंचलचंचलकैंकरैंबयार ॥ एककर छबिसौंबलैयालेतलालरीझरीझरीझबालतृनतोरगहिडारैंवार ॥ ना गरियावारीवारचौंकहतपरसपरबिहरतअंकमाललेतहासिबारबार ॥ ॥ ११ ॥ राग ॥ प्यारीजोरीजोरिकरजतनुमोरति ॥ बंकबिसालछ बीलेलोचनभुवबिलासचितचोरति ॥ कनकलतासीआगैंठाढीमनअ रुदृष्टिअगोरति ॥ उघरीबरकुचतटीपटीतैंछबिमरजादहिफोरति ॥ अतिरसबिबसपियहिंउरलावतिकेलिकलोलझकोरति ॥ नागरीदास ललितादिनिरषिसुषलैंलैंबलाइतृनतोरति ॥ १२ ॥ राग ॥ अबदेषो देषोरीदोऊप्रातरंगीलेदृगउनमीलेबसनरसनढीलेढीले॥ गउरस्याम रसीलेसोहतलटपटीलेछुटिरहेचिकुरछबीले ॥ लताभवनतैंनिकसि सकतनहींसकुचिलेतनमनउरझीले ॥ नागरिसषीसुसीलेसोहैंठाढी आरसीलेलषिमुषलजतलजीले ॥ १३ ॥ राग ॥ रीदोउऊठेभोर

नभअमलचांद्रिकाव्यापकजमुनांकूलं ॥ राधामाधवकेलिसमर
रसमत्तग्रीवभुजमूलं ॥ परिरंभनअधरासवतंद्रागतिसुधिगलितदुकू
लं ॥ निभ्रतकुंजास्थितकामातुरजुगलरूपसमनूलं॥नागररमणसुआ
श्रयपस्यतिकदलीषंभस्थूलं ॥ ३ ॥ रागतिताल ॥ श्रीबंसीधरजैव
लवीरे ॥ हरेहरेविहारीधीरसमीरे ॥ सजलजलदसमस्यांमसरीरे ॥
विज्जुलताचलचीरे ॥ सस्मितबिंबाधरवेणारदहोनंदसुवस्थितजमु
नांतीरे ॥ वेपथअंगअतनआकुलकृतहोनागरीप्रेमपुलकदृगनीरे॥४
रागईमन ॥ तिताल ॥ श्रीकृष्णचंद्रचारुवदनमदविभंग ॥ दामि
निदुतिवसनसजलमेघस्यांमअंग ॥ कुणितवेणुअधरबिंबकुंवरव्र
जमहंस ॥ कुंडलमनिकिनैंअलकसिपिसिपंडसीस ॥ सव्यअरुअ
सव्यकुसमदामभव्यअंस ॥ भ्रंगारवकरतनिकटकामजयप्रसंस ॥
भूपनव्रजतरुनीनैंनरसिकवरकदंब ॥ नागरियाउरासिअवासिबसहु
बिनाबिलंब ॥ ५ ॥ रागईमन ॥ तिताल ॥ जयव्रषभानसुताचंदा
ननवृंदाकाननअवनिविहारी ॥ नवतनतडितलतासमसंभ्रमसजल
जलदनीलांबरधारी॥ पृयअहलादकल्पद्रुमगोभारासोत्सवानिधिरस
विस्तारी ॥ प्रणतनागरीदासेस्वरीश्रीराधाकृष्णानंदकारी ॥ ६ ॥
पदचर्चरी ॥ यथासमैंराग ॥ वेईगायगोपवृंदगोकुलमधिसंततसुष
संपदांनिघोषमोषपगनिपेलिडारी ॥ वेईनंदवल्लवसुतभएहैंप्रगटिब
ल्लभगृहसोभितदुजकुलललांमधांमव्रजविहारी॥ वेईप्रेमपरकरनिति
गोबिंदकुंभनादिसंगललितलुब्धलीलारसपुष्टिकोसतारी ॥ वेईदास
नागरकेप्रेरकमनमनसुवेसवेईबिठ्ठलेसवेईगोवर्द्धनधारी ॥७॥ राग
अवहींनैंकुसोयेहैंअलसाइ ॥ कामकेलिअनुरागरंगभरेजा[ग] [तरे]

के ॥ गौरगरबगंभीरगुनवतेंमंडनममउरमंगलजीके ॥ उदितउदोतनैनमनसषीरीनषछबिपरबलिनगरंगफीके ॥ नागरीदासचरणजुगजीवनिप्यारीकेरोंमरोंमप्रांनंनिपीके ॥ १७ ॥ राग ॥ अलमस्तरहैंअलबेलेलालल्लाडिलीकेरसमाते ॥ छकीछबिसौंपलकैंबरबरुणीनैंननिमैंमुसिकाते ॥ मुषअंबुजवरस्यांममधुपमकरंदपिवतनअघाते ॥ दासिनागरिरूपरंगरुचिअंगप्रीतिभएराते ॥ १८ ॥ राग ॥ प्यारीकेपाइलगेलालजावकदैंनचरनकमलचितहितलगाइ ॥ सीकसनेहसंवारिस्यामघनलिषतचित्रबहुबिधिबनाइ ॥ नषमनिजोतिनिराषिथकितभयेसिथलभयेरंगरंग्योनजाइ ॥ नागरीदासिहसिकहतिकुंवरियैंरहौजूरहोजूरहोपगरहीहैंछिपाइ ॥ १९ ॥ राग ॥ जवतैंजावकचरणदयो ॥ तनमनचितवितिहकौंजुभयौ ॥ हियराहिलगाफिरतसंगलाग्योजियराललाकिरह्यो ॥ नागरीदासितनमनधनजीवनिमंगलयहबिढयो ॥ २० ॥ दोहा ॥ अद्भुतपदपल्लवप्रभा, मृदुसुरंगछबिअैंन ॥ छिनछिनचूंवतप्यारसौं, रहतलाइउरनैंन ॥ ॥ २१ ॥ ठौकरहतनहिंलीकपर, फैलतरंगसुजांन ॥ व्हैअवेरउरझेरपिय, जियजितीकललचांन ॥ २२ ॥ प्रथममाधुरीकुंजलैं, छहरसभोजनपांन ॥ पुनिइहिंरसगासिसेजलस, करहुसैंनसुषदांन॥२३॥ जैंवतस्यामास्यामामिलि, नागरियासुषदैंन ॥ कोजनकाबिबरननकरैं, दौंजनभोजनलैंन ॥ २४ ॥ देतगसामिलिपीयकैं, चितईकरिभुवभंग ॥ रह्योकौरहीहाथमैं, भईदृगनिगतिपंग ॥ २५ ॥ सरसपरसकौंतरसजिय, लालकौरकरलेत ॥ चतुरचौंकितवलाडिली, अधरछुवननहिंदेत ॥ २६ ॥ कौंरलेतकरकंपव्हैं, देतबीचछुटिजात ॥

लषिलताभवनमैंआरसअरझेअंग ॥ रैंनरसमसेआननराजतपांनन
फीकेरंग ॥ स्यामासोहैंनैंनलजौंहैंभौंहैंचापअनंग ॥ चिबुकउठाय
निरषिरहेनागरभईदीठगतिपंग ॥ १४ ॥ राग ॥ सोरहीनिकुंजतैंउ
ठिचलीहैंकुंवरिराधा ॥ अरुननैंनसिथलबसनरूपछबिअगाधा ॥
बिथुरेबारहारउरझिआलसबसगोरी ॥ मनहुंमधुपकनकलतानिधर
कझकझोरी ॥ सारदासचीसीलुठतसहचरीनचरनैं ॥ तिनकीचक्र
चूडामनिकैसैंकहिबरनैं ॥ रंगभरीभांमानिसबसंगसुघरसुपसमाज ॥
कमलासीकरनिलियैंअपनैंअपनैंसाज ॥ काहूपैंअतरबरगुलाबजुत
सुगंधसीसी ॥ काहूपैंबिमलदर्पनकलकांतिचंद्रकीसी ॥ काहूपैंसु
ठिसुगंधसहतपांनदांनबीरा ॥ काहूपैंहारधरेउतारिझलमलातहीरा ॥
काहूपैंचँवरचारुचपलभँवरनिनिरवारैं ॥ काहूपैंकुसमकलिताबिजनां
मंदमंदढारैं ॥ काहूपैंमालयरगजीहैंसुरतसेजटूटी ॥ घ्यावतसुघिसमैं
बासमदनपुरीलूटी ॥ काहूपैंबनकबानियठनियकनकपीकदांनी ॥
काहूपैंधूपदांनजरतबहुसुगंधसांनी ॥ काहूपैंसूरजमुषीसुच्छमोरपि
च्छवारी ॥ मुकटभावउदैंहेतनांहिंनकरतन्यारी ॥ काहूपैंसुघरसारो
सूवामधुरबचनबोलैं ॥ काहूपैंबीनअंससोनवीनबरअमोलैं ॥ आवत
धुनिजंत्रमैंनमंत्रसेबजावैं ॥ रैंनकेबिहारगायमादिकसोपावैं ॥ रंग
रागनवसुहागआनंदरसबोरी ॥ नागरियाहूदैंबसोभांनकीकिसोरी ॥
॥ १५ ॥ राग ॥ देषिदेषिचितवततौंही ॥ इतउतदृष्टिनहोतनिरंत
रवातकहतहासिगौंही ॥ मालसुधारतकेससंवारतचोजमनोजनयेल
सचौंही ॥ बसिश्रीनागरीदासकिस्वामिनीस्यामैंदैसुषस्यामायौं
ही ॥ १६ ॥ राग ॥ एकसरचूराअरुघुघरुजावकजुतलागतपगनी

सुरकांननिछकायेपियप्रांननिओळूटिगिरयोअंसजंत्रस्यामनैंसंभारयोहैं ॥ रीझमुरिछावैंमुरछायठहरावैंअंगनागारितरंगतांनमनबोरिडारयोहैं ॥ जाहिकियोबिबसधुजायगतिमतिडारीजाकीवांसुरीनैंव्रजबडोसोरपारयोहैं ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ संगमृदंगसुधंगगति, रागरंगअभिराम ॥ स्यांमरिझाईनागरी, नागरिरिझयेस्यांम ॥ ३४ ॥ ॥ राग ॥ प्यारीजूप्रवीनवीनमधुरबजावैं ॥ तांनकीतरंगनिचितस्यांमकौंघुमावैं ॥ १ ॥ रागरसमादिकसौंचढिगईभौंहैं ॥ रीझिरीझिनावैंसीसलालप्रियासोहैं ॥ २ ॥ कुंजकेबिहंगमसबजंकिथाकिसुनैं ॥ नागरियामौंनिगहैंसषीसीसधुनैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जदपिकहावतहेबहुत, प्यारेस्यामसुजांन ॥ पैइनतैंअतिबढिपरयो, प्यारीजूकोगांन ॥ १ ॥ कबहुचेतबलिहारकहि, कबहूहोतअचेत ॥ प्यारीतांनतरंगमैं, पियमनबूडैंलेत ॥२॥ धुकेधरनिकौसांवरे, ललितागहेसंभारि ॥ रागरूपकीचोटसौं, गिरैंक्यौंनरिझवार ॥ ३ ॥ जीतीमेरीस्वांमिनी, गुननिधिराधालाम ॥ मीनकेतरसषेतमैं, मुरछितपौढेस्याम ॥ ४ ॥ ३६ ॥ राग ॥ कुंजमैंमूर्छितस्यांमजगाए ॥ आतुरआयपियायअधरमधुभुजभरिकंठलगाये॥ अलकमालसुरझावतपौंछतनैंननिनैंनपगाए ॥ नागरियाचितएबडभागनिइहरसप्रांनपगाये ॥ ३७ ॥ राग ॥ लाडतलाललडैंतेसौंलाडिलीरीदेषिबैठेहैंभरिअंक ॥ निकुंजभवनरसिकरवनप्रांनप्रियप्रेमभरेमुदितमदनमयंक ॥ हसतबिलसतपरस्परसुषमुषविलोकतवंक ॥ बलिनागरीदासिकीस्वामिनीस्यांमसदाबिहरैंरसनवनेहनिसंक ॥ ३८ ॥ रागगौरी ॥ दोहा ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥

स्वेदसिथलसियराततन, छुवतअधरमुसकात ॥ २७ ॥ राग ॥ जैंव तरासिकरासिकनसिंग ॥ पियहाठिकौंरदेतप्यारीमुषपरसतअधरहो तभुवभंग ॥ बीचिबीचिबतरांनिमधुरईअतिरसभोजनबाढथोरंग ॥ नागरिसषीसौंजालियैंठाढीइकटकभईहगानिगतिपंग ॥ २८ ॥ राग॥ गांनकियोचहैंपांननषातछुटिलटआंनिकैंरंगभरचौंई ॥ मोनहींमैंभ्र लकीसुघराईहियेगुनकौंमनकौंसौंधरचौंई ॥ पीचितचंचलकौंप्या रीनागरिघेरिअदायनमैंपकरयौंई ॥ लैंनतमूराहीकीमैंलयोमनगाय बोधौंरह्योआगैंधरचौंई ॥ २९ ॥ दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गांनतांनरसरहसिकी, वहसिबढीदुहुंओर ॥ १॥ होतरागसारंगधुनि, दंपतिकुंजनवीन ॥ बिचिबिचिगायबजावहीं, बीननिपरमप्रवीन ॥ २ ॥ धीरजपगठहरैंनहीं, सुरगहैंगुन गांन ॥ रागरसासवसिंधुकी, लहरैंउपजततांन ॥ ३ ॥ कहावी नजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर ॥ हलहलातनीकीउठैं, तांननिरंगाहिलोर ॥ ४ ॥ ३० ॥ नागरिहसौंहैंमषसौंहौंबिथरौंहैंबार उरजउठौंहैंसोभाहारनिसमेतहैं॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंस्या मकिधौंमंत्रधुनिमीनकेतकेनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचोकाकीच कहोतअछिनितिरीछैंतैंकटाछिसरदेतहैं ॥ बेरबेरओटदेतंबूराहसिहे रिहेरिफेरिफेरितांननिफिरायमनलेतहैं ॥ ३१ ॥ श्रीराधामोहनकुं जभवनमैंकरतविहसिकलगांन ॥ छायरह्योसारंगरंगमैंलेतपरसपर तांन ॥ अनाघातआवतदुहुंघांतैंजैसीसुनीनकांन ॥ कोघटिबढिगुन निधिनागरिगुनआगरस्यामसुजांन ॥ ३२ ॥ राग ॥ दोऊसीसजू रासौहैंहाथनितंबूराबीनपरमप्रवीनगोरीगांनलैंउचारचोहैं ॥ छायो

सुषकारी ॥ मिलवतबीनप्रवीनसहचरीगावतपरजापियारी ॥ कब हुकबहुझुकिनीरनीरजकरलेतहैंभाांमिनिस्यांमसहारी ॥ २ ॥ उरक रपरसतचौंकिचाहसुषनैंनानिकांमकेलिबिस्तारी ॥ अदभुतसुषसालि तामैंषेलतनागरीदासनिरषिबलिहारी ॥ ३ ॥ ४१ ॥ राग ॥ देषो सषीरिदेषोदोऊबैठेनावमैं ॥ गावतआवतचपलचलावतसहचरिचंपा चावमैं ॥ स्यामास्यामदियेगरबहियांनवकाबिचरसभावमैं ॥ नाग रनवलसषीनकीअंषियांलगिलपटीलपटावमैं॥४२॥ राग॥आंनकवि कृत ॥ आजकीरातिआछीलागैछैंउजियारी॥बिहरैंस्यामास्यामचा वसौंसुंदरनावसिंगारी ॥ जमुनांबिचिझिलिमिलिकीसोभाकंवलकूल सुषकारी॥नावडगमगैंडरिलपटावैंरसिकाबिहारीजीसौंप्यारी४३ राग ॥ सरितासैरप्रवाहमाधिउज्जलमंडलदेष॥ उतरेनवकालगायचितचढे जुचावबिसेष ॥१॥ तहांपियप्यारीमनकियो ॥ निरषिउज्यारीरैंन ॥ नृत्तिगांनआरंभमिलिकीजैंसबसुषदैंन ॥ २ ॥ रसबिलासनवकुंज सुषरासकरनकैंकाज ॥ कितियकसहचरिकरालियैंअपनेंअपनेंसा ज॥३॥बीनतमूराषंजरीबाजनलगेसुधंग॥ एकतालसुरसांचमिलिमि लिमृदंगमुहचंग॥४॥ अंगसजीलेछरहरे ॥ बंकलजीलेनैंन॥मनउम हेछबिलहलहे॥रंगगांनगतिलैंन॥कबहुकप्रियमंडलकढत॥ अतिगति बढतसुधंग ॥ हरिकेमनलोचनफिरत, उरझेपायनसंग ॥ ६ ॥ ला ललईउरलाइलषि, रीझेगतिसरसांनि ॥ मंडलमैंसुरझैंनहीं, अंकमा लउरझांनि ॥ ७ ॥ उतअरुझीकुंडलअलक, इतबेसरिबनमाल ॥ गउरस्यांमअरुझेदोऊ, मंडलरासरसाल ॥ ८ ॥ गरबहियांगतिलेत मिलि, श्रमबससिथलतपाय ॥ डारेमनलैसबनिके, डगमगडगनिडु

इतउतबाढीढुहुंनमन, फूलनबीनतफूल ॥ १ ॥ झूमिझुकावतद्रुमल
ता, उघरतउरउरमाल॥फूलनतोरतदेतफल, मनमोहनकौंवाल॥२॥
दोऊमिलफूलनबीनहीं, जमुनांकूलनिसांझ॥रंगरलीअतिव्है़रहीं, कुं
जगलीकेमांझ॥३॥फूलनसैंबेंनीगुहत, रचतफूलकेहार॥फूलभरेलप
टातदोऊ,भुजभरिदृढअंकवार॥४॥कौतिकलागेवालकैं, संगडोलत
नंदलाल ॥ छुवतिजुहीकेफूलकौं, होलजुहीकीमाल ॥५॥ दुरिदुरिभे
टतद्रुमनिमैं, फूलभरीसुकुंवारि ॥ लंपटमधुपनवावहीं, पीतजुहीकी
डार ॥ ६ ॥ बनफूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिराम ॥ सबैंकरी
फूलनिसुफल, मिलिकैंगौरीस्यांम ॥ ७ ॥ धरतप्रियाकेश्रवनपर,
लालकुसमकमनीय ॥ बहुरिबलैयालेतपिय, निरपिबदनरमनी
य ॥ ८ ॥ छवैंकपोलछबिसौंरहे, नहिंउपमांकोऊमूल ॥ हालहाल
दिलहालकरि, करनफूलपरफूल ॥ ९ ॥ फूलनकीबेंनीगुही, रचत
फूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोऊ, भुजभरिदृढअंकवारि ॥ १० ॥
दोऊलटककलहंसगति, निसआगमगतसांझ ॥ आयेबिपनबिहार
करि, कुंजजुन्हैयामांझ ॥ पद ॥ रागकामोद ॥ आजऊजियारी
रैंनफुलीहैं ॥ जागिरहीउज्जलदुतिजिततितकोउउपमांनतुलीहैं ॥ तैं
सीयेफूलफूलद्रुमसापाजमुनांकूलझुलीहैं ॥ नागरियाब्रजचंद्रचंद्र
कातहांभरिभुजनजुलीहैं ॥ ३८ ॥ रागपरज ॥ कुंजतैंआवतहैंजमु
नांतटनागरनागरिसंगलियैं ॥ चंदकीचांदिनींछायरहीहैंतैसेईसेत
सिंगारकियैं ॥ गावतरागजमावतसहचरिआवतआसवप्रेमपियैं ॥
देषिलगीनवकासलितातटनागरियाआनंदहियैं ॥ ३९ ॥ राग ॥ बि
हरतनवकाबैठेबिहारी ॥ जमुनाजगमगजोन्हजांमिनीकंवलकूल

नतजीभधरोकिधौंआंषिनितहां ॥ चितबिततरुवनितरातिरीछौंतनत किकियेंफिरतछहां ॥ नागरीदासिचरनजुगजीवानियहसुषमोकौंअ नतकहां ॥ ५ ॥ राग ॥ मोहिकाजयाहीइकजियसौं ॥ सबेसुअर्पि निपटमनअटक्योप्रानभांवतीप्रियसौं ॥ मर्मबिथाममडरकीसजनी गुदरिचतुरबरतियसौं ॥ सुनतसजललोचननागरीदासउमगिलगा वताहियसौं ॥ ६ ॥ राग ॥ मोपरकरतहैंसपिनेहु ॥ हौंतोउरजबधरौं मृदुलपटमांनतधनिकारिदेहु ॥ तूकहिमोअनुचरआतुरकौंअधरसु धादैलेहु ॥ नागरीदासअकुलायअंकभरीआंषियनबरष्योमेहु ॥ ७ ॥ ॥ राग ॥ मेरेनैंनाहींयहजांनैं ॥ जेतिकभीरपरतअवलोकतठौरठौर छबिमांझबिकानैं ॥ रूपअगाधअवधिसषीअंगरसनाबपुरीकहाब षानैं ॥ तनमनबूडिजातदेषतहीकहाहोयउरभीतरआंनैं ॥ सुधिबुधि बलबितचतुरचातुरीकछुनसरैकोटिकजोठांनैं ॥ प्रांनप्रियासंभराये समुझियेंकहाकहायेंआपसयानैं ॥ हौंतोदारुपुतरीयाकरनचवताहितु करजैसैंजांनैं ॥ सरबसुसुषथितजीवनिबलबितनागरीदासहमहाथ बिरानैं ॥ ८ ॥ राग ॥ छुटीचुरीएकसिरचूरानूपुरमंडितजावकजुत पग ॥ अबअबअमितरूपगुनसागरछबिआगरमेरेमनहिलगैं ॥ गौ रचरनजुगचालचंद्रनषअतिरुचिराचिपचिचितचातुरषग ॥ नागरी दासिज्यौंफनिमनिजीवनिपाइप्रियापरकासकममजग ॥९॥ राग ॥ रूपनिधांनभांवतीअतिलडजोईछिनजोईपलनिकटपाईयतुहैंजीव निजनसोईभागनिबड ॥ भांतिभांतिकीठौरठौरछबिममआंषियांनमैं परीरहतगड ॥ नागरीदासयहअकहबातहौंहियहसिमुझैंचौंपचायच ड ॥ १० ॥ राग अडानो ॥ ललितसुडोरीकसिउकसीहैंनाभिठौर

लाय ॥ ९ ॥ लेतबलइयारीझिदोउ, दोउपौंछतश्रमबारि ॥ नचत सनीअतिरंगसौं, बनीमदनमनुहारि ॥ १० ॥ उतैंभ्रकौंहौंनवमुकट, इतैंचंद्रिकाचारु, ॥ भयेरासरसमगनतन, सरकेसकलसिंगार ॥ ॥ ११ ॥ षूटिषूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेबार ॥ श्रमितरासरससरंगमैं, टूटिटूटिगयेहार ॥ १२ ॥ नागरियाकहांलागिकहैं, कविमति मंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहबिलासमैं, कोरिकोरिव्हैंरास ॥ १३ ॥ रागकेदारो ॥ रासमंडलमधिछकेस्यामास्यामलैंलैंगातिलपटिलपटि जातभरेरंग ॥ गांनधुनिनूपुररह्योहैंरंगपूरितैसैंमधुरमधुरबीनांबाजत मृदंग ॥ चंद्रिकासिथलइतमुकटझुकौंहौंउतव्हैंगयेबिबसरससुधिन रहींहैंअंग ॥ नागरीदासगतिनैंननिकीभईपंगसुरछिगिरचौंहैंरतिसहितअनंग॥१॥राग परज॥थकेरासकेचावलषि,छकेआसकेभाव॥सैंनमहलकीअरजसुन, पुनचढिचालेनाव॥२॥राग॥बृंदाबनकीतलहटीडोलैंजमुनांतीरतीर॥ जटितस्वेतनगनावबैठिदोऊसांवलगौरसरीर॥१॥ चलवतिचलपचारुचंपावलिसजिसहचरितनसषाचीर ॥ गावतजात स्यांमसुंदरगुनपूरिरहीउरप्रेमपीर ॥ २ ॥ निसउजियारीफूलेंद्रुम लतारहीझुकिपरसिनीर ॥ मुदितस्यामलषिबैंनबजावैंसुनिकुहाके उठतमोरनकीभीर ॥ ३ ॥ नवलबिहारनवलनवकाविचनवलप्रिया गिरधरनधीर ॥ नागरीदासरैंनकछुबितईबहुरिबसेमिलिधीरसमीर ॥ ४ ॥ रागकेदारो ॥ पियाकेलोभछोभउपजायो ॥ धीरजकहां मधुपकौंमधुतैंकैसैंजातझुठायो ॥ इतलजिबाकीमनतनदुहुंदिसारि सपरतनधायो ॥ नागरीदासहासमुषरोक्यौलैंउसासासिरनायो ॥४॥ ॥ राग ॥ परतप्रेमनिधिपाइरुचिरजहां ॥ सुनिरीसषीमेरोज्योजां

वहुतगईनिसिप्रियाजंभावतचुटकीदेतलालसुपदैंनां॥ नागरीदाससपीछविचितवताबिसरिबिसरिजातउरउपरैंनां ॥ ॥ १७ ॥ राग ॥ यहजोबनयहरूपमनोहरयहसमांनजोरीरंगबोरी ॥ यहवृंदावननवनिकुंजयहकुसमितपवनवहतथोरीथोरी ॥ यहअनुरागरागपूरितधुनिसषीसुघरबिथकतचहुंओरी ॥ यहलडकीलीबिधिनागरकैंग्रीवधरिरहीनिवहियांगोरी ॥ १८ ॥ राग ॥ झुकिझुकिरहीद्रुमडार ॥ चहुंदिसतातरबिछईसुंदरसैंनी ॥ ललिताजूलतनिओटदुरिदेषतपौढेहैंकंवलनैंनमृगनैंनी ॥ तनसौंतनमनसौंमनउरझेमिलिरहीअंषियनिअंषियांपैंनी ॥ नागरियासुषदेतदृगनिकौंसांवरगउरजोरमनलैंनी ॥ १९ ॥ रागपरज ॥ राजतदोऊदीनैंगरबांहीं ॥ रहीछायनिसिसरदजुन्हैयानवनिकुंजकेमांहीं ॥ अरुझिरहेतनमनआनंदमैंआधीरातीद्रुमनिकीछांहीं ॥ नागरीदासलतारंध्रनिलषिरीझिरीझिबलिजांहीं ॥ २० ॥ राग ॥ अंषियांनिभावभरयोहैरसको ॥ घुरिघुरिसनमुषरहतरसीलीरूपबढयोआरसको ॥ आधेआधेबचनकहतकछुमंत्रपढतमांनौंपियबसको ॥ नागरियापियरसिकनपोढतनींदभरीदेषनकोचसको ॥ २१ ॥ राग ॥ आईअबदुहुंनिपैंजौंन्हिजगमगरी॥ गईपरछांहींपाछैंदेतहैंदिषाईआछैंश्यांईरहीचंदआगैंधरोजिनपगरी ॥ तनतनसौंमनमनसौंअरुझेदेषिअधपुलेनैंनरहेनैंनानिमैंषगरी ॥ रसबसपागेनवनागरियास्यांमजागेआधीरैंनिहुतीसोउबीतिगईसिगरी ॥ २२ हेमातीनींदकीअंषियांसोहैंलाल ॥ कांमकेलिकैरंगरसमसीछुटीअलकतुटीमाल ॥ लपटांनैंबनवारीप्यारीअरुझेबाहुसृनाल ॥ नागरियाढिगभैंवरनिवारतलीनैंहाथरुमाल ॥२३॥

लचकतलंकलोललहगाकोघेरहैं ॥ सारीसेतपटलीचुनावटचुनोहै चोटमानौंषीरसागरतरंगकोउरेरहैं ॥ कंचुकीकेकसकोकसनउकस नकुचनचनमनोजकोटदामनीउजेरहैं ॥ मंदगतिआवतठठकिहसि हेरहेरपीयमनहोतमहाआनंदकेढेरहैं ॥ ११ ॥ रागपरज ॥ हेआज रंगहैंनिहुरनापैं ॥ चिहुरचिहुरउठिलहरिलेह ॥ प्रथममिलनप्यारीमु षघूंघटपियषोलतनिजकंपदेह ॥ झीनैंचीरझुकोहिअंषियांसकुचभरे उरस्यांमगेह ॥ ताहिनिरपिइकटकमनमोहननागरीदासबलइयाले ह ॥ १२ ॥ रागबिहागरो ॥ अांनकविकृत ॥ दंपतिरंगमहलमधि गावत ॥ तांननमैंहांननकोबातियांसुनतसषीसुषपावत ॥ कबहुकअ धरनिअधरछुवाकेंमंदमंदमुसकावत ॥ विबसहोयमोहनप्यारीकूंभु जभरिउरलपटावत ॥ श्रीरसिकविहारीकोंसुघरंगीनिरषतनेंनसिरा वत ॥ १३ ॥ कजराधुरिरह्योऔरबेंदीरोरीकी ॥ पियसुहागकीझल कनिमुषपरललकनिनेहदसागोरीकी ॥ सहजसिंगारसलोंनीभामि नकहाकहौंबातनिभोरीकी ॥ नायकनंदनंदनकोजीवनिनागरियाब लिरसबौरीकी ॥ १४ ॥ राग ॥ हसिहसिदोऊबातनिकरहीं ॥ अध रपुलनिचमकनिचौंकाकोलाडभरीबतरानिउचरहीं ॥ कबहुकबहुर हिजातएकटकबहुरिछकीअंषियांढुरहीं ॥ नागरीदासमोहनीमोहन रीझिपरसपरअंकनिभरहीं ॥ १५ ॥ राग ॥ छबीलेदृगघुरिघुरिह सिमुरिजांहि ॥ नेहरूपचितवनित्यौंनारोंपियदेषतनअघांहि ॥ इककरलेतबलइयांबिथकतइककरचिबुकउठांहि ॥ बलिहारीकहत बिहारीनागरजबप्यारीमुसकांहिं ॥ १६ ॥ राग ॥ सोहतहैंअलसोहैंनैंना ॥ लटकिलटकिपियपरअरसावतिसिथलकहतमुषआधेआधेबैंना ॥

क्योंप्रेमसुमारसमारेचपलनैंनचितचोर ॥ अधरसुधाप्यावतहीचे त्योऔरहीनहीनिहोर ॥ हौंन्यौंछावरिवेगिसुन्यौंनूपुरकिंकिनकी घोर ॥ देषौंमदगजचालछबीलीअलबेलीबैशकिशोर ॥ मृदुमुस क्यांनचुभिरहीजियमैंनांकजलजमानिढोर ॥ नागरीदासिउठिमि लीअचांनकपोषेपियतृषितचकोर ॥ ३० ॥ रागपरज ॥ रचीपिय मोहनकलकेलिनवेली ॥ मचीभुजनिबिचकलहमनोहरटूटतहारह मेली ॥ परिरंभनअरुझेनहिंसुरझतज्यौंद्रुमकंचनबेली ॥ नागरी दासद्दुरायअपनपोयहसुषलपतअकेली ॥ ३१ ॥ राग ॥ मेरोझू मतहथियामदको ॥ पियहियहिलगपरीपगसांकलमैंमतअपनींसद को॥सुरतनदीमरजादाढाहतमांनगुमांनअनुरागउलदको ॥ नागरी दासिबिनोदमोदमृदुआनंदबरबिहारबेहदको ॥ ३२ ॥ राग ॥ जी वतपरसपररूपरहचटैं॥ विवसभूषनजुतअवअवछबिपरसरसरससेझ समाजठटैं॥ भोगसंजोगीभोगीबिलसतप्रमुदितपुलकिअनुरागअटैं॥ चुंबनचषमुषमधुपीनागरीदासलोभीलालललकनघटैं ॥३३॥ राग॥ पलपलपांनिषअधिकबढीरी ॥ हासहुलासआलिंगनचुंबननवनव चाइचढीरी ॥ बरबिहारकेरससमाजसजिगुनगनफेरगढीरी ॥ नागरीदासिबलिकोतिककोबिदयहबिधिकहौंधौंपढीरी ॥ ३४ ॥ राग ॥ लाडगरबकीफूलगातमैं ॥ ईषदस्यांमदसनमुषदमकतउदि तउदोतसुभगउरजातमैं ॥ चंचलहारअलकदृगकुंडलमत्तहोतमन इष्टपातमैं ॥ नागरीदासिलालउरआसनवैठीबिचामिलिअनेकघा तमैं ॥ ३५ ॥ राग ॥ नैंननिमैंनैंनमिलिमनसौंमनसपितनसौं तनरूपछयो ॥ जियसौंजियाहियसौंहियलसिगासिहासिहासिमुष

राग ॥ अंषियांअरुनरसमसीघुरहीं ॥ लाजभरीछबिभारभरीएरूपछकीआलसजुतदुरहीं ॥ अमितबदनपियचिवुकउठावतकहीनपरतजबहंसिहंसिमुरहीं ॥ रहीघरीद्वैरातिजुन्हैयानागरिछैलतऊनबिछुरहीं ॥ २४ ॥ राग ॥ नवजोबनलाड़गहेलीप्यारीतूरहतमदनमदछाकी ॥ रूपरंगरसश्रवतमाधुरीबदनबिलोकनिबांकी ॥ अतिआसक्तअमलमोजेंप्रेमपीयालेपीयैंरहतलालमदछाकी ॥ नागरीदासनवरंगबिहारीबिहारनिनेहनिसांकी ॥ २५ ॥ अलमस्तभयेअलबेलेलाललाडलीकैंरसमाते ॥ छकीछबिसौंपलकैंवरवरुनीनैंननिमैंमुसकाते ॥ मुषअंबुजवरस्यांममधुपमकरंदपीवतनअघाते ॥ दासनागरीरूपरंगरसअंगपियालेराते ॥ २६ ॥ रागकछुमोपैंकह्योजातनहेलीरमिरह्योरागसुहात ॥ पियप्यारीतांनानिरसबरसतनवनिकुंजमैंभीजरहीअधरात ॥ चनकमूंदमैंबीनझनकधुनिमंदमधुरसुरगात ॥ नागरनागरिगांनकरतहीरीझिरीझिलपटात ॥ २७ ॥ राग ॥ तनकतनकबाजैंझनकचुरीनकीओगरैंहरवाइबातमनकसुहांवती ॥ टूटेहारफूलनकेछूटेउरबंधनिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभासरसांवती ॥ लटपटीमूरतिगुलाबजलभीजिरहीबिगलितबारबासमदनबढांवती ॥ रूपबसरासिकाबिहारीहासिहारिहारिफेरिफेरिभेटतभुजांनभरिभांवती ॥ २८ ॥ राग ॥ मेरीतूचतुरचिंतामानि ॥ सुनिसुकुंवारिममसुकृतपुंजफलपलकनिकीओटहोहुतिनि ॥ सर्वसुप्रांनअधाररसिकनीयाहीतैंमांनतआपुनधानि ॥ नागरीदासियहमंत्रमनोरमिरसनांश्रीराधानामरुचिरगानि ॥ २९ ॥ सुनिसाषिउरजअन्यारेकोर ॥ ममवछस्थलभेदिछेदिकैंनिसरतपैलेओर ॥ कहि

दपवनलागतहैंसियरी ॥ द्रुमनकुंजकुंजनमैंपंछीहूजागे ॥ हार
नकेमोतीतनसीतलकछुलागे ॥ करनकरषिकंचुकीकसनैंकबांधि
दीजैं ॥ देहुमेरोनीलवसनपीतबसनलीजैं ॥ तुमतोमगनस्वारथस
नैंकहूंनअरसौं ॥ काहेकुंवरकंवलसेदृगपायनसौंपरसौं ॥ बहुतप्रेम
थोरीनिसिसुरझिसकतनांहीं ॥ नागरियारंगबढचोपातनकीछांहीं ॥
॥ ४१ ॥ राम कली ॥ प्यारीजुतैंमोहिमोललियो ॥ तेरीकृपामद
नदलजीत्योतेरोजिवायोजियो ॥ उमडीसैंनमहामनमथकीतैंअधरा
मृतदियो ॥ श्रीरसिकबिहारीकहतदीनव्हैंधनिस्यांमाकोहियो ॥
॥ ४२ ॥ राग ॥ अलकलडीअलबेलीनवरंगछबीली ॥ सुरतरंगअं
गासिथलअलबेलेलालसंगपेली ॥ अलबेलीमौजानिलोकेबिहारीबि
हारनिनेहनवेली ॥ श्रीनागरीदासतबकुंजमहलअलबेलीसंगसहे
ली ॥ ४३ ॥ कवित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिआंननपैंआधें
सीसससिफूलवैंनांझुकिगोतहा ॥ टेढीभईबेंदीहारसरकेसिंगारलषि
मोहूसूंव्हैंन्यारेमैंरेलोयनकरैंहहा ॥ नागरियास्वेदमुषअरुनाईपिय
राईआईअबकैसेंनैंनसिथलदुरैंअहा ॥ रूपहैंकिछोरीहैंकिनैंनानिठ
गोरीहैंकिसुपनौंकिसंभ्रमाकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ ४४ ॥ राग ॥ मरग
जीबासबसआसपासभौंरभीरभ्रमतअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांद
नीमैंसोयेमिलिसुरतअमितअंगआनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥
झीनौंपटफारिफैलीबाहरिवदनकांतिमानौंजोन्हिजीतिबेकौंचलीहै
उमाहिकैं ॥ महारूपसीवग्रीवअरुझेमृनालभुजपुलिजातआर्षेजब
रहिजातचाहिकैं ॥ ४५ ॥ तिताल ॥ प्रीतमसंगपौढीप्यारीअरसां
नी ॥ पलकैंमुंदीपुलीढिगअलकैंअधरथकितमुसकयांनबेसरपरसां

मधुपानदयो ॥ रीझिभीजिछबिदरसिपरसपरनेहसहजसबढाकि
लयो ॥ बिमलबिनोदमोदमतिदोऊनागरीदासिगुनपलटुभयो ॥
॥३६॥राग॥ बिलसतकुंजसदनसुषसुंदरनायकनंदनंदनरंगभीनौं ॥
सरदचंदप्रफुलितद्रुमबेलीबिबसमदनमनकीनौं ॥ छूटेबारहारटूटेषु
लेबंदविगलितपटझीनौं ॥ लटपटायदोउरहेलपटिकैंतनगुलाबजल
महकिनवीनौं ॥ यारसहीरसबीतिगईनिसिफिरिफिरिअधरसुधारस
लीनौं ॥ इहिंनिधियेछूटतनहिंऐसैंनागरियाजैसैंजलमीनौं ॥ ३६ ॥
॥राग सोरठ॥षुलिगयेसौघैंभीनेबार॥देषिसषीयहरीतिअनोषीबंधिग
योमनरिझवार ॥ झूलिरह्योवैंनाग्रीवांढिगटूटिरहेउरहार॥ नागरयह
छबिहियेबसीबिचमनमथरंगबिहार ॥३७ ॥ राग ॥ अहोपियप्या
रीनसह्यारीपरैं ॥ आजुयाहीकुंजरहोनैं ॥ सुरतसिथलगतिमतवारी
सीमोहनवहियांगहोनैं ॥ बिथुरिअलकआईआंननपरियहछबिदृग
निचहोनैं ॥ रहीरैनथोरीनागरमिलिअबसुषसैंनलहोनैं ॥ ३८ ॥
॥ राग ॥ रह्यादेषिपियचिबुकउठायवोनैंणामैंअलसांणघणीछैं ॥
घुलिरहीनींदलोयणांलालीकाजलरेषबणीछैं ॥ अलकांसिथल
सिथलहुईपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारीप्यारीजीरी
चितवनिमिलिरहीअणीअणीछैं ॥ ३९ ॥ राग ॥ सौंधैंसगब
गीरगमगीसेध्रसुषकैसीफबीहैंफैलीआंननपैंअलकैं ॥ नीकेमुषचंद
मैंअभीकेमनुश्रमकनफीकेभयेअधररंगीहैंपांनपलकैं ॥ अंषियांझु
कौंहिंहैंलज्यौंहीतिरछौंहीदीठचितदतस्यांमतनआतिछबिछलकैं ॥
हियरेआनंदभीनेनियरेनागरतहांपवनढुरावैंपियपियरेअंचलकैं ४०
॥ राग भैरुं ॥ अबतोस्यामसोवनदैंहोतहैंपहपियरी ॥ यहसुगंधमं

लियपलकचितवतमुषमोरिमोरि॥ मंदमंदचलतचारुचरननमंजीरश ब्दडगनिकउतकलपिमदनलुटतकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभूमिझूं मिझूंमिललित।दिकलतनिओटदेपतदुरिडारततृनतोरितोरि ॥ नाग रियासंगसुषस्वेदपेदचिहुंटिचीरसुषवतप्रियछबीलीपीठिबिजनांपव नढोरिढोरि५१॥ आंनकाविक्रत॥लूर॥पावसरितवृंदावनकीदुतिदिन दिनदूनीदरसैंहे ॥ छबिसरसैंहे ॥ लूमझूमसावनघनोवनवरसैंहे ॥ ॥१॥ हरियातरवरसरवरभरिया ॥ जमुनानीरकलोलैंहे ॥ मनमो लैंहे ॥ प्यारीजीरोबागसुहावणोंमोरबोलैंहे ॥ २ ॥ आभाआभा वीजचीमकैं ॥ जलधरगहरोगहरोगाजैंहे ॥ रितुराजैंहे ॥ स्यामासु रमूरलीरली ॥ वनबाजैंहे ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीजीरोभीज्योंपितां बर ॥ प्यारीजीरीचूनरसारीहे ॥ सुषकारीहे ॥ कुंजांकुंजांझिलर यापियप्यारीहे ॥ ४ ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ रिझवारनकैंबससदा, रीझ वारासिरदार ॥ बातरीझहारेनपैं, रीझहारव्हैंहार ॥ १ ॥ बिधिबात नपुहुंचतनहीं, विधिबातनपुहुंचात ॥ बिधेबातवल्लभरसिक, ति न्हैंबातकीबात ॥ याबोलनकेंरसबसे, याहीमैंदिनरात ॥ डोलैंडुलैं नऔरदिस, मोलअमोलसिहात ॥ ५२ ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ रा गनायकीकाण्याल ॥ तथा पद छूटक तिताल ॥ आजमोहनमिलेरी मगमहियां॥येरीतरुनिकरसघनपरछहियां ॥ सुगरसलौंनैंपियनंददु लारेहंसिलीनीगहिवहियां ॥ परगइपरबसबसनचल्योकछुभलीबुरी सबसहियां ॥ नागरियाकीनींमनमांनींहोंकरतरहीनाहियांनाहियां ॥ ॥ १ ॥ तिताल ॥ अरीहूंलइलगाय ॥ लालनउरदेपिदेपिललचाय ॥ दिनअरुरैंनचैंननहिंअबमोहिबिनमिलैंरह्योनजाय ॥ जिहिंतिहिं

नी ॥ बैंनांसिथलललितमोतीलरढरकिबदनपरआइछविसरसांनी॥ नागरियाहियमांझवसोयहकौतिककेलिअनंगजोरीरंगञरसांनी ॥ ॥ ४५ ॥ राग ॥ भोरव्हैंआयोनभायोदुहूंनिकौंबोलेविहंगमबांनी सुहाते ॥ बीननिमांझप्रबीननिरागविभाससुनायजगायेजहांते ॥ बैठेतबैंउठिआरसअंगकहाकहूंरूपमहाउफनाते ॥ नींदभरेलगिआवतलोचनरूपकेलोभपुलैंरसमाते ॥ ४७ ॥ राग बिभास ॥ तालचर्चरी ॥ आलसरससंजितरमनीयरूपरासिमिथुनलटपटातप्रातजगेबिथुरतवरवैंनी ॥ चंचरीकचहूंओरबिचरतसुषमदंधमहकतसुगंधअंगछलकतरंगरैंनी ॥ प्रबलपवनरवनकेलिविलुलितापियकनकवेलिदृगसिथलदेहसुलसतसुपसैंनी ॥ बिसमयहुयरहतकुंवरनिरषवदनछबिअभूतपौंछतपलपीकपांनप्रीतमसृगनैंनी ॥ घुरतदुरतजुरतसुरतनैंनमीनसिंधुसुरतिथकिछकिचकिचलतचारुचितवनिमनलैंनी ॥नागरियानेहउरझिबिवससकतनहिंनसुरझिउठिउठिचालिमिलतमगनमुरिमुरिद्दुरिबैंनी ॥ ४८ ॥ राग ॥ बनिदुकूलबैठेपरजंक ॥ कमलनैंनअंगअंगछबिनिरषतप्यारीभरेंजुअंक॥ धन्यधन्यापियमांनिअपनपौज्यौंनिधिपायेरंक ॥ श्रीरासिकबिहारीयहसुषबिलसततहांनिकटनिरसंक॥४९॥ तालचर्चरी॥पियकेसुषसंगतैंचलीभौरकुंजआवतप्रियामरगजेउरहारहियैंबारपीठछूटे॥ सिथलरसनवसनहसनमंदमंदअधरानिमनौंचंचलदृगरंजनपियषंजनजुगजूटे॥ अस्तबिस्तअभरनबरबाजूबंधढरनतैंसेलगिलगिरहेकरानिंनिकरबलयषंडफूटे॥ नागरीचहूंओरभौंरभंवरनिटारतअधीरऔरचकोरमोरनिरषिपरतटूटे ॥ ५० ॥ तालचर्चरी ॥ चलेहैंभौरनवाकिसोरसंगलगेललाचेताहिरसबसअधषु

तमआंनिगहीकरघात ॥ ८ ॥ तिताल ॥ अटकेराधारूपकन्हाई ॥
हाथचिवुकधरिबदनबिलोकतसगरीरैनबिहाई ॥ नैंननैंनमिलिरहेर
समांतेफिररहीमैंनदुहाई॥नागरियाद्रुमतरदोऊराजैंजिंहिंठांअमलज्यु
न्हाई ॥ ९ ॥ इकताल ॥ अनोपीमांननीमांनैंकाहूकेप्रीतकीनजां
नैं ॥ सहजकहुंकोईबातरावरीत्यौंत्यौंआतिरिसठांनैं ॥ रुषरूषीसौंहैं
नाहिंचितवतफिरिफिरिभौंहैंतानैं ॥ नागरीकांन्हतिहारीप्यारीकोब
हियांगहिआनैं ॥ १० ॥ चौताल ॥ आतुरलालरसिकसुषदायक ॥
सषीबचनसुनिचलेचपलगतिपीडतमनमथसायक ॥ कहूंउरझिरहि
गयोपीतपटकहुंबनमालमुरलिकाभायक ॥ नागरियाढिगआयकहत
पियपरमप्रेमभीजेबायक॥ रागतिताल॥अरझिरहेहैंबिहारीप्यारीरंग
मैं॥पंगभईअंपियनिबिचआंषियांअधषुलीअमलअनंगमैं॥तंद्रारूपनैं
नदेषनिकौंनैंनभयेसबअंगमैं ॥ अतिरसछकनिछकीछबिउछरतअ
धरदबानितैंनागरियाभुवभंगमैं॥ तालजात्रा ॥ आजसखीरसिकनीर
सिकनिर्त्ततभलभलैं॥जुवतिजनमंडलाकारबृंदाविपुनबीचघनस्यांम
प्रियदामिनीझलमलैं॥बींनरसलींनबाजिरुणितकलाकिंकनीमैंनकेमंत्र
सीजंत्रधुनिधुनिरलैं॥भ्रमततनचपलमिलिपरतनाहिंदृष्टिजबदरसहित
परसमननैंनदोऊकलमलैं ॥ मुकटसिरझलकअरुरलकहारावलीझुल
तबिबअलकलषिपरतनांहिनकलकलैं ॥ नागरीदासभुजअंसधरि
दोऊचलतकोटिकंदर्पतबचरनतरदलमलैं ॥ १२ ॥ इकताल ॥ अ
रीरासमैंरंगभरीनचतसरसस्यामाप्यारी ॥ चितवतचक्रतरहिगईच
पलामींडतहाथबिचारी ॥ गांनसुनतपगमृगमनमोहेलज्जितभईको
किलानारी ॥ नागरीदासचकोरसांवरोदेषतइकटकबदनचंदउजि

भांतिमिलायमोहनकौंतिहारीलैंहूंवलाय ॥ नागरिदुपदेतसुपनमैं बैरीउरलपटाय ॥ २ ॥ तिताल ॥ आधीरातिउजियारीगावतरंगी लीचढिअपनीअटारी ॥ सुनतहीतांनगयोचैंनसुपभीनीरैंनसोवत हीचौंकिपरेचतुरबिहारी ॥ तूटीफूलमालगयोगिरिउपरैंनाआली लीनैंवैरवांसुरीकोबिवसकियेहैंप्यारी ॥ नागरीदासबृजमोहनी सीपूरिरहीसुनींजींहितिंहिंतबसुधिलैंबिसारी ॥ ३ ॥ इकताल तथा चौताल तथा चपक ॥ अरीयहकौनहैठगवारठाढोआगैंतापैं तुमोहिलैआई ॥ कहाकहौंमेरीयामतिकौंतेरेकहैंवौराई ॥ उल टिजाहुंगीघरअपनैंवीरहौंइनवार्तानिधाई ॥ नागरियाइहिंचौथचंद कीभलीकलादरसाई ॥४॥ रागअडाणो ॥ तिताल ॥ अंपियांमेरीभ ईसांवरेरूपकीचेरी ॥ इकटकदरसटहलमैंअटकीतनकनहोतअने री ॥ पावतरीझिअधिकमनमांनीमृदुमुसकानिधनिढेरी॥नागरियाल गिआपलोभवसमनहूकीगतिफेरी ॥ रागअडाणो ॥ तालचपक ॥ अरीमोहिब्रजगोपिनरिझयो ॥ उनकीरीतिप्रीतिअंतरकीविनगथै मोलिलयो ॥ जिनकैंरूपवदनबारिजपरमोमनअलिगेधयो ॥ ति नमैंराधानामकुंवरिजिहिंटौनांदृगानिदयो ॥ ताकोनांममंत्रमुरलीमैंर टरटादिनबितयो ॥ नागरियानागरिविनभेटैंसबसुपबिसरिगयो ॥६॥ तालचपक ॥ अरीतोहितनकहूसुधिनरही ॥ डगमगाततनदेपींबि व्हलतबमैंदौरिगही ॥ जोगतिभईनिरापिमोहनसुपसोनाहिंपरतकही॥ नागरियामोहितासौंचलितोहिमिलांऊंसही ॥ ७ ॥ तिताल ॥ अ छनपगधरतअंधेरीरात ॥ ललिताकिंकरपरकरधरैंकरतहरैंहरैंबात ॥ झांकीकरउचावहासिप्य,रीलताकुंजद्रुमपात ॥ नागरियापाछैंव्हैंप्री

सषीकुंजमहलमैंरंगभरीरातडलीहोसुहाई ॥ सेजडिलीरंगमांगिरह्या दंपतजालरंध्रजहांआईजुन्हाई ॥ नहींसुलक्षैतनमनआनंदमैंसगलीरें णविहाई ॥ रसिकबिहारीप्यारीप्यारीप्राणसूंमनमांनीनिधिपाईसुष दाई ॥ दोहा ॥ आवतराधेसषिनमैं, निरषरसिकासिरमौर ॥ पर निलगीडगडगमगत, गतिबदलीकछुऔर ॥ १ ॥ २० ॥ दोहा ॥ आलीकालोतैंअधिक, बंसीबिषउतपात ॥ वहकाटेतैंचढतहैं, यह फूंकैंचढिजात ॥ १ ॥ २१ ॥ दोहा ॥ अहेबांसकीबैंसुरिया, तैंत पकीनैंकौंन॥अधरसुधापियकौंपियैं, हमतरफतबिचभौंन॥१॥२२॥ अथ बंसीका दोहा ॥दोहा॥अहेबांसकीबंसुरियां, तैंतपकीनैंकौंन॥ अधरसुधापियकोपियैं, हमतरसतबिचभौंन ॥ १ ॥ अरीछिमांक रिमुरलिया, परततिहारेपाय॥औरसुषीमुंनिहोतसब, महादुषीहमहा य ॥ २ ॥ कियोनकरिहैंकौंनल्हिं, पियसुहागकोराज ॥ अहेबाव रीबंसुरिया, मुंहलागीमतिगाज ॥ ३ ॥ तोकारनगृहसुपतजे, सह्यो जगतकोवैर ॥ हमसौंतोसौंमुरलिया, कौंनजनमकोबैर ॥ ४ ॥ एअभिमांनोमुरलिया, करीसुहागनिस्यांम ॥ अरीचलायेसबनि पैं, भलेचांमकेदांम ॥ ५ ॥ मुषमूदैंरहुमुरलिया, कहाकरतउतपात॥ तेरैंहांसीघरबसी, औरनकेघरजात ॥ ६ ॥ हरिचितलियोचुराइकैं, रह्योपरतनाहिंभौंन ॥ तापरिबंसीबाजमति, देतकटेपरलौंन ॥ ७ ॥ तूहूब्रजकीमुरलिया, हमहूब्रजकीनारि ॥ एकबासकीकांनिकरि, पढिपढिमंत्रनमारि ॥ ८ ॥ मतिमारैंसरतांनिकैं, नांतोइतोविचारि॥ तीनलोकसंगगाईये, बंसीअरुब्रजनारि ॥ ९ ॥ सबकोमनलैहाथ मैं, पकारिनचाईहाथ ॥ एकहाथकीमुरलिया, लगिपियअधरनि

यारी ॥१४॥ राग ॥ तालचपक ॥ अलछलपेदोऊकुंजकुटीमें ॥ मैं
वरानिभीरछायरहीऊपरनूपुंरसुंनिमैंनसैंनजुटीमैं ॥ गउरस्यांमतनजो
तिबिमलकेसोतरहेकढिछिपाछुटीमैं ॥ नागरीदाससुरतबांनोंकीभन
कपरतहीधरानिलुटोमैं॥१५॥इकताल॥अरीमोहिठगिगयोछैलकन्हा
ई ॥ तोसौंकहादुरांऊंसषीरीदुरतनकछूदुराई ॥ हौंअबलावसकहा
रीमेरोवहिकीनींमनभाई॥ नागरियाअववापियविनाछिननांहिनपरत
रहाई ॥ १६ ॥ राग षंभायची ॥ ताल ॥ आज वरसांनैंअतिओप
बाढीनई ॥ देषिसषीव्याहकोरीतमंगलमई ॥ मिलनिसमधांनिकी
भीरगहमहठई ॥ गांननीसांनधुनिभेदसुरपुरगई ॥ परमसुंदरसुघर
स्यांमदूलहबन्यौंदुलहनोंरूपनिधिकुंवरिकीरतजई ॥ सेहरासीसन
गजटितजगमगरहेछोरसुपदियैंदुंहूंओरअतिछबिछई ॥ भरतभांवर
भलेलगतसांवरगउरचलेकलहंसगतिसबनिमनकीभई ॥ दएमहा
राजवृषभांनवहोदांनतहांनागरीदासिकौंमहलकीटहलदई ॥ १७ ॥
॥ ताल ॥आइहैं सरदसुहाई॥ फूलनिबिपुनमाल्लिकाछाई॥ सीतसुगं
धपवनबहेंमद ॥ निसमुषप्रगटितपूरनचंद ॥ चंदनिसप्रगटतद्रुमानि
मैंअरुनकिरनैंरगमगी ॥ छईवृंदाबनछिपाछबिपुलिनजलतटज
गमगी ॥ निरषिसोभासमैंवेबरदैंनवीतैंसुधिकरी ॥ मदनमोहन
तनतृभंगीबेणबिंबाधरधरी ॥ सुनिबंसीबनबोलैं ॥ जियरातानन कैं
संगडोलैं ॥ कांननअमृतसौंप्यावैं ॥ प्रांननमुरछितमैंनजगावैं ॥ मैं
नमुरछितकौंजगावैंमधुरमादिकसुरालिया ॥ भौंनैंछुटावतभरीटौनैं
अरीमोहनमुरलिया ॥ लोकवेदाबिसारिकैंसबउठीताजिसुधिनेमकी॥
दासनागरिकौंनरोकैंनदीउमडतप्रेमकी ॥ १८ ॥ तिताल ॥ आज

की, अनबोलीरहुबीर ॥ २६ ॥ गांठगंठीलेबंसकी, महाद्रोहकीषांन ॥ मतिमारैरीमुरलिया, तांननिबिषकेबांन ॥ २७ ॥ हमहारीगारोझुदैं, जडसौंकहाबसाय ॥ मौंनगहतनहिंमुरलिया, हायहायफिरिहाय, ॥ २८ ॥ मुरलीसुनितनमैंभई, आसूदृगनिबिसाल ॥ मुषत्र्यावैंसोईकहैं, प्रेमबिबसब्रजबाल ॥ २९ ॥ नागरिहियहरिहिलगकी ॥ दारूधरीदबाय ॥ आगरागबंसीलपटि, पुहचिउठीभभकाय॥३०॥ रागसोरठ॥इकताल॥ इस्कबाजीमुसकिलहैंवोज्योकोईइस्ककमायालोडै ॥ सिरधरिसूलीअंगनमोडै ॥ १ ॥ ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ इतैंउतैंइकटकरहे, फसेनेहकेपंक ॥ नागरनैंननिमीतदोऊ, अंकानिभरतनिसंक ॥ ३२ ॥ रागचौताल ॥ उज्जलमहलउच्चसुच्छचंद्रकाप्रकासमंदगतिसीतलबयारसुषकारीजू ॥ कसतसुडोरीसेझचौसरिचमेलीबेलीफैलिरहीफूलनिकीबासमनुहारीजू ॥ चौकीचारुअतरगुलावसीसेचमकतससिकीमयूषैंमिलीकौतकउजारीजू ॥ पूरनसरदरैंनिबिलसतसुषसैंनीकोककलानागरबिहारनिबिहारीजू ॥ ३३ ॥ ॥ इकताल ॥ उरांहनींदैंहासिंचितैंरही ॥ मनमोहनसैंहनप्यारेतबसुंदरबांहगही ॥ करतकेलिकलअमलअटाचढिसुषसलिताज्ञबही ॥ नागरियादंपतिहितकीगतिनैंकुनजातकही ॥ ३४ ॥ तिताल ॥ उणींदाछैजीरातरा ॥ बैणसिथलअरनैंणझुक्याहीआवेलगिवैठापरभातरा ॥ पलकांपीकअधरफीकैंरँगरसअलसायागातरा ॥ रसिकबिहारीप्यारीपूरणकरीमदनदेवरीजातरा ॥३५॥ दोहा ॥ उभैंसरोवररूपके, हंससपिनकेनैंन ॥ अद्भुतमुक्ताचुगतहैं, मुसकनिचितवनिसैंन ॥ ३६ ॥ उर्हींगलीठाढोअली, छलीछबीलोछैल ॥ ति

साथ ॥ १० ॥ पीयहमारेकौंलियो, अधरसुधातैंछीन ॥ हमतलफ
तसुंनिबांसुरी, ज्यौंबिनजलकीमीन ॥ ११ ॥ बोलचलावतमुरलि
या, कहासुहागकोतोत ॥ तोसौंपियटेढेरहैं, हमसौंसूधेहोत ॥
॥ १२ ॥ हमहींकीतूदूतिका, मुरलीसबजगसापि ॥ हमहींपर
गाजतभली, जूठहमारीचापि ॥ १३ ॥ बाजैंमतिमतिबांसुरी,
मतिपियअधरनिलागि ॥ अरीघरबसीदेतक्यौं, रोंमरोंममैंआगि ॥
॥ १४ ॥ फूंकनिकेचलतीरतन, लगैंपरतनहिंचैंन ॥ अँगअँगआ
पबिधायकैं, हमहूवेधतबैंन ॥ १५॥ हाहाअ्रनरहुमौंनगहि, मुरली
करतअधीर ॥ मोसीव्हैजोतूसुनैं, तबकछूपावैपीर ॥ १६ ॥ सब्द
सुनावतहमहिंतू, देतनहींछिनचैंन ॥ अनबोलीरहुतनकतो, एबक
बादीबैंन ॥ १७ ॥ अमलचलायोआपनौं, मुरलीगरजगुमान ॥
हियसूंनकरतियनिके, कौंनबसायेप्रान ॥ १८ ॥ घूमैंभूमैंधुकिउठैं,
तुवबंसीसुरलाग ॥ कहरजहरलहिरैचढी, डसीभुवंगमराग ॥ १९ ॥
जिहिंमोहीसबब्रजबधू, ॥ मोहनमृदुमुसकाय, ॥ सोमोहोतैंमुर
लिया, बनघनमैंलैजाय ॥ २० ॥ अ्रहेमुरलियामोहनी, तोसौंकहा
बसाय ॥ अधरसुधारसपायकैं, प्रीतमलियोछिनाय ॥ २१ ॥ पीय
लियौपियमनलियो, लियोअधररसझूंम ॥ इतोलियोतैंकहादियो,
बैरनबंसीसूंम ॥ २२ ॥ बंसीबंसीनामयह, काहूधरयोप्रवीन ॥ तां
नतांनकीडोरसौं, बेधतहैंमनमीन ॥ २३ ॥ बडकटेगुनबांसुरी, बां
वनसीलघुवेस ॥ भलीनचाईनाचहम, तोकौंहैंआदेस ॥ २४॥ आ
पपुदीतूकरतरी, भईमुसद्दीमैंन ॥ गुद्दीपरक्यौंचढतहै, सुद्दीव्हैकरि
बैंन ॥ २५ ॥ कहाजानैंतूबांसुरी, भीजेमनकीपीर ॥ कोरीसूकेहीय

जलकनिमुखश्रवतसुधारी ॥ ४४ ॥ रागकेदारो ॥ तिताल ॥ किन बिरमायोमनमोहनासुंदरसुघरातियायेरी ॥ परीबिरहकौरौरापिया बिनठौरनहींमतिमेरी ॥ हाहाकहिमोसौंरीहेलीलैंऊबलैयातेरी ॥ को नागरिऐसीरूपकीआगरिजिंहिबसिस्यांमकरेरी ॥४५॥ रागबिहाग रो॥इकताल॥कठिनलगनदाहालनीमैंकैनूंआषां॥ जेहीकुछादिलअंद रबितैंसोदिलदीदिलहीबिचराषां ॥ मोहनदीगल्लांबिनकहियांघूंटघु टनदीचाषां ॥ नागरियाकोईमहरमनांहींबेमहरमहलाषां॥४६॥ताल चपक ॥ कुंजसदनकीकनकभूमिबिचसहचरिचौपरिचारुरची ॥ हंसिहंसिपेलतहाथकगहिठेलतदांवनिचांवनिचौंहलमची ॥ स्यामा स्यामइहींरसअटकेफिरिफिरहोतहैंनरदकची ॥ नागरियाचतुरनि कोपेललपिहौंजकिरहीजैसैंचित्रपची ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कंजनहूतैं डहडहे, बिनअंजनछबिऐंन ॥ षंजनगतिगंजनमहा, पियमनरंज ननैंन ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ कुंजसर्बब्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत ॥ आईदेपनसगुनमतु, निगुनब्रह्मकीजोत ॥ ४९ ॥ कीनेमृगमदआड रचि, गोरैंवदनमयंक ॥ मनुपियमोहनमंत्रकी, राजतअवलीअंक ॥ ॥५०॥ दोहा ॥ कीनोंमृगमदआडरचि, नागरियानवबाल ॥ मानौंर ससिंगारकी, लहिरैंउपजतभाल ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ परोपरिकमुषसां वरो, चरनलकुटलपटाय ॥ मोमनलीनौंफेरिकैं, कंवलफिरायफि राय ॥ ५२ ॥ इकताल ॥ गोकुलगांवकोपैंडोन्यारोयहसांचकहा वतहौंदरसाई ॥ कौनैंदांनलयोब्रजमैंतुमऊबटबाटचलाई ॥ अंचर छुयोकुंवरिकोतोअबनिकसैंगीठकुराई ॥ समझिजाहुनागरजियअप नैंराषैंहैंनैंकबडाई ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ राहरेरूंपनबीचवह, स्वेतअटा

यअंपियांकौतिगझुकी, रुकीपारिककोगैल ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ उं हींगलीठाढोअली, छलीछबीलोछैल ॥ तियअंपियांकौतिगझुकी, रुकीपरिककोगैल ॥ ३८ ॥ तिताल ॥ एकब्रजबसतमोहनोंवाल अरीजिंहिंकीनैंलालबिहाल ॥ मोहनहूकौंमोहिलयोहासिचितवनि नैंनबिसाल ॥ अतिअभिमांनीभएरहतहेफसेरूपकैंजाल ॥ ताहित नकदेपैंबिनव्याकुलबढतबिरहजंजाल ॥ मुरलीमैंताकेगुनगावतलै लैनांमरसाल ॥ निसदिननहींसुरझतनागरवेपरेरसिकरसण्याल ॥ ॥ ३९ ॥ राजसिंहजीकृत ॥ तिताल ॥ एअंपियांप्यारेजुलमकरैं ॥ एमहरेटीलाजलपेटीझुकिझुकिघूंमैंभूंमिपरैं ॥ नगधरप्यारेहोहुनन्या रेहाहातोसौंकोटिररैं ॥ राजसिंघकोस्वामीश्रीनगधरताबिनदेपैंदिन कठिनभरैं ॥ ४० ॥ तिताल ॥ एरीराधेतैंरिझसेनंदनंद ॥ हौंसुनि आईउनकेहियकीबतियांमधुरसुछंद ॥ याहीरूपपागिरहेआलीमद नमोहनरसकंद ॥ नागरियातेरोमुपदेपैंफीकोलगतहैंचंद ॥ ४१ ॥ ॥ राग ॥ कौनकुसमसज्यासैंन ॥ गउरसांवरोअंगमिलिरहेमहाछ बिकेऐंन ॥ खुलीअलकैंमुदीपलकैंबदनललकैंचैंन ॥ सपीनागरि निकटचरननिकहैंकहांनोमैंन ॥ ४२ ॥ तिताल ॥ कैसीलागतसमैं सुहाइ ॥ दौऊजहांकुसमछबिछाई ॥ महकिगुलाबरहीभिजएउरतै सीयेअमलजुन्हाई ॥ भौंरभीरगुंजतचहुंओरानिफिररहीमदनदुहाई॥ नागरियातनगउरस्यांमकीउरझनिहियउरझाई ॥ ४३॥ इकताल ॥ कुंजसदनबढीविमलचांदिनीमिलीचंदसौंचंद्रिकारी ॥ कोमलस्वेत सुपेसलसज्याबिहरतमृगरथपरापियप्यारी ॥ दरपनभूमिअकासबि मलबिचबिथुरितउरमुक्तातारारी ॥ नागरीदाससुरतिरसदोऊश्रम

लतरह्योरंग॥ दोऊहरिदोऊतनमनजीतेबाजीरसनिसबितईसंग॥ सेजबिसांतसलौटरसमसीभईठईकलकेलिअनंग॥ सोईसारैंनागारियासोयेजुगमिलिगउरसांवैरअंग॥ ६१॥ दोहा॥ चलतदायरेपैंच पलचारूंअंगरियनिरूप॥ अछियांमछियांसीनचैंमनौंअमृतकेंकूप॥ ६२॥ दोहा॥ चंगैंमुंहमुंहचंगतियबजवातिहैंगतिकार॥ बैठ्योकँवलदराबिच, मनौंअलिकरतगुंजार॥ ६३॥ दोहा॥ चितैंवदनब्रजचंदको, रीझिचंदभयोचूर॥ छिपाकिधौंवहिजोतिमय, कुंजनिबिखरयोबूर॥ ६३॥ दोहा॥ चितवतइकटकहीरहैं, नागरियाएनैंन॥ कीनौंचेटकचंद्रिका, परननदैंचितचैंन॥ ६५॥ दोहा॥ चौंपरमिससंकेतराचि, करतझगरईतोत॥ हितपक्केनांहिंउठैं, फिरिफिरिकच्चेहोत॥ ६६॥ तालचपक॥ छईबनचंद्रचंद्रकाचार॥ पत्रपत्रप्रतिचंद्रचांद्रिकाभयोबिस्तार॥ गोकुलचंदकीगउरचंद्रिकाचितैंकियोअभिसार॥ तनभूपनजगमगतचंद्रिकचांद्रिकासीससुढार॥ मिलतलालसैंबढ्योकुंजमैंचंद्रिकापुंजअपार॥ नागरियाबातनिमैंफैलतदसनचांद्रिकाजार॥ ६७॥ दोहा॥ छबिसैंठाढोसांवरो, हौंनिकसीतहांजाय॥ परीरूपबेरीपगनि, गिरीअंधेरीआय॥ ६८॥ छईछिपाछबिदेतछित, पत्रीबपुनइहिंभाय॥ ससिकारीगररूपहरी, अफसांकियोबनाय॥ ६९॥ छुटीअलकमालातुटी, मैंनलुटीसीअंग॥ एसपिफीकेअधरक्यौं, लग्योकपोलनिरंग॥ ७०॥ छबिझलकैंअलकैंसिथल, सबतनसिथलसिंगार॥ सूचततेरीसिथलता, निसद्दलगनबिहार॥ ७१॥ पद॥ जैसेहोमोहनतुमचातुरऐसीनामिलीकोऊतुह्मैंनारि॥ यहमहरेटीलाजलपेटीकोऊछछंदनिगो

। कढततहांतैंगांनधुनि, प्रांनहरैंहीलेत ॥ ५४ ॥ गांनक
छबिदेत
रदोऊ, दूररहेहैंगाय ॥ सुरधारानटवरतज्यौं, चढिमनपहुं
लानाग
जाय ॥ ५५ ॥ गहगहाटबरबदनपर, स्यांममिलनकीचाड ॥
च्यो
बातकरतहसिहरतचित, परतकपोलनिगाड॥५८॥तालचर्चरी॥चली
हैंभोरभांमिनउठिनवकिसोरसंगताहिरसबसअधषुलीयपलकाचितव
तमुषमोरिमोरि॥ मंदमंदचलतचारुचरनानिमंजीररवडगनिडगनिक
उतिकलषिमूर्छितरतिकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभूंमिझूंमिझूंमिल
लितादिकलतनिओटदेषतदुरिडारततृनतोरितोरि ॥ नागरियासंग
मसुषस्वेदपेदचिंहुटेचीरसुषवतापियछबीलीपीठविजनांपौंनढौरिढो
रि ॥ ५७ ॥ चौताल ॥ चुभेईरहतपीयहियमैंअरीतेरेनैंनऐसेअ
तिअनियारे ॥ नवजोबनषरसांनचढायेबिनकाजरकजरारे ॥ दि
नअरुरैंनचैंननहिंदैंहींमिहामैंनबिसहारे ॥ नागरीदासमदनमोहन
कौंइनघाइलकरिडारे ॥ ५८ ॥ चर्चरी ॥ चलीसिंगारसजिसहज
अभिरांमिनी ॥ हारअरुबारकैंभारलचकतलंकडगनिडिगुलात
आनंदभरिभामिनी ॥ सुनतझंकारनिजदाबिरसनांदसनसकुचि
फिरधरतपगमंदगजगामिनी ॥ उरसिअंचलउडतसरसपरसतपवन
रवनपैंगवनबिचषिलियमधुजामिनी ॥ कुंजघनद्रुमनकीपांतितर
जातिछिपिछांहछाडतनहींचतुरिमानिस्वामिनी ॥ नागरीदाससुष
रासमाधवमिलीअंगप्रतिअंगछबिमनहुंघनदामिनी ॥ ५९ ॥ तालच
पक ॥ चलीराधानिकुंजभवन ॥ ठटकिठटकिद्रुमडारगहतफिरिमदग
जराजगवन ॥ घूंघटपटउघरतअंधियारीपरसतमंदपवन ॥ नागरी
दासमदनगढतोरानिजोरानिप्रीतरवन ॥ ६० ॥ तिताल ॥ चौपरिषे

निरषिलुभांनी ॥ २ ॥ सबकीपलकलागतनांह ॥ आयेतियमंड
लकैंमांह ॥ पियमुपफैंटाछोरादियें ॥ प्यारीघूंघटझुकनिलियें ॥ लि
येंघूंघटझुकनिलषिमतिथकीकरनिप्रसंसकी ॥ नंदसुतबृषभांनतन
याचलतगतिकलहंसकी॥ लेतभांवरगउरसांवरकलपद्रुमकीछांह ॥
दुलहनींदूलहदेषिसबकीपलकलागतनांह ॥ ३ ॥ दोऊव्याहनिसके
रसमसे ॥ सषीनिकेनैंननिमांझबसे ॥ राजतजुगलनेहकेभरसौं ॥
जोरनिअंचरअरुकरकरसौं ॥ करसौंजुकरजोरैंपरसपरपहुपबरषां
वैंसषी ॥ कुंजकौतकरूपगहमहभईअंषियांमधुमषी ॥ रचीफूलनि
तलपदिसचलिचितैंचितवनमैंहंसे ॥ रहोनागरहियबसेदोऊव्याह
निसकेरसमसे ॥ ४ ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ तियलषिमगमोहनरही, गो
हनपरैंनपाव ॥ दुहुंओरसुरझैंनहीं, नैंननिकोउरझाव ॥ ७८ ॥ ति
ताल ॥ देषिरीकोऊग्वारनिगोरीनितिजसुमतकैंघरआवैं ॥ जोवन
जोतिजगमगैंघूंघटबाहिरव्हैंदरसावैं ॥ ललितअंगगतिदीपकलोय
ज्यौंपवनलगैंझिकुरावैं ॥ भूलीतनसुधिज्यौंमदपीयैंउरअंचरांहिभु
लावैं ॥ मोहनकीदिसअंषियांछाकीइकटकरहिरहिजावैं ॥ सुधिआ
यैंतैंलाजानिभीजतघटपटओटाछिपावैं ॥ फिरवैसैंहींरूपबिबसव्है
लोकलाजबिसरावैं ॥ रौंमरौंमचितवनिबिषचाढिगयोमनमथलहरि
घुमावैं ॥ स्वेदकंपभएसिथलचरनगतिघरलगिकोपहुंचावैं ॥ देषत
हसतओरबृजनारीनयोनेहउफनावैं ॥ इतयहउतवेनंदनंदनरासि
यारससरूपलुभावैं ॥ औंडीलगनकनौंडीअंपियांडौंडीप्रगटबजावैं ॥
नागरियायहप्रीतनिगोडीतनकदवनिनहींपावैं ॥ ७९ ॥ चौताल ॥
दोनैंगरबांहींगतिलेतडोलैंमंडलमैंबोलैंतत्तथेईथेईमुषरूपललकैं ॥व्है

पकुंवारि ॥ नैंनवैंनतुमबाढतपरतनकाहूकेफंद ॥ जदपिचको
रीएसबगोरीआपप्रकासिचंद ॥ रीझभीजकरिदयाछवीलेतरफतहैं
व्रजबाल ॥ राजसिंघकोस्वामीश्रीनगधरकाहियतहैंप्रतिपाल ॥७१॥
दोहा ॥ ज्यौंज्यौंधुनिकांनानिपरैं, त्यौंत्यौंछूटतधीर ॥ नागरियासु
निबांसुरी, बाजैंजमुनांतीर ॥७२॥ दोहा ॥ ठाढोव्रजकीपौंरि
हरि, कीनेचंदनपौंरि॥ उहींठौरलषिहियपरी, अरीमदनकीरौंरि७४
तिताल ॥ तोसौंनवोलूंगीहोनंदढुलारे ॥ काहेकौंइतनीबातबनावत
काहेकौंकरतहाहारे ॥ तोहिपियारीओरुभांवतेहोओरनिकेप्यारे ॥
नागरमोहनसौंहातिहारीजांनतसबैंकलारे ॥ ७५ ॥ चौताल ॥ तेरे
नैंनबांनउरमोहनकेलगेआंनितबतैंनवाकेवीरधीरठहरायहैं ॥ पल
कनिमूंदिमूंदिगहरैंउसासलेतहोतनसचेतमुपरटैंहायहायहैं ॥जमुनां
कोकूलकुंजसीतलकुसमपुंजलागैंतनतातेतेजाविपमवलायहैं॥ एरीच
लिनागरीतूसींचसुधाचाहनिसौंआंपिनकेघाइनकौंआंपैंहींउपायहैं
॥ रागकेदारो ॥ तिताल ॥ श्रीवृंदावनसुषदाई ॥ तांमधिनवलनिकुं
जसुहाई ॥ झुकिरहेद्रुमवहौफूलनिफूले ॥ डोलतमधुपवासबस
भूले ॥ भूलेमधुपबसबासडोलतत्रिबिधिवहतसमीरहैं ॥ घुमडि
रहीधूंधरिकुसमरजमनहुंमंडपचीरहैं ॥ कोकिलाकलकीरगांवैनित्य
विहारनिकाई ॥ नृत्तकारीमोरतहांश्रीवृंदावनसुषदाई ॥ ललिता
दिनिरपिलुभांनी ॥ अतिछबिपुंजकुंजदरसांनी ॥ आनंदउरनसमा
वैं ॥ मिलिमिलिगीतमनोहरगावैं ॥ गावैंमनोहरगीतमिलिजहांब
नींचौंरीचारुहैं ॥ परममंगलरैंनराकारच्योव्याहविहारहैं ॥ मौर
मौरीसीसराजिकैंजोरसुंदरआंनी ॥ बसनसूहेतनलसनललितादि

न ॥ ताहीछिनहूतैंभईऔरदसामेरीआलीनागरीदासगृहनींदनपरत रैंन ९० तिताल॥प्यारीजूकीजेतोएकसमैंसिरअवहठनकरियैं॥सुघर सलौंनैंपियस्यामसुंदरसौंरससहीरसढरियैं॥ यहनिकुंजयहबिमलचां दनींऔसरअनुसरियैं ॥ नागरिपियकैंअंसरइंहिंसमैंहासिबहियांधरि यैं ॥ ९१ ॥ चौताल ॥ प्यारीरीजूतुममेरैंमूरतिआनंदकी ॥ तेरोई आनंदरैंनदिनतोबिनांछिनदुषदंदकी ॥ यौंकहिकामकेलिबिस्तारी जहांचांदनीचंदकी ॥ नागरियादृढकसेमनोहरकसनबाहुजुगफंद की ॥ ९२ ॥ इकताल ॥ प्यारीनिधिपाईहैंपियारैं ॥ मदनबिव सछकेबदननिहारतगउरअंगउजियारैं ॥ नागरीदासकिंकिनीधुनि सुनिबिधिगयेपगमृगमैंनबांनअँनियारैं ॥ ९३ ॥ तालचपक ॥ प हिरैंकलझूमकसारीझूंमिरह्योपियकोलोभीमन ॥झूंमतकंचनचलदल घूंमतनैननिपलालगनिलीनौंपन॥स्यांमबसनबिचचौकासितदुतिफै लिरहीसोभासंपतिघन ॥ नागरीदाततोरितृनप्यारोवारतज्योजोब नसर्वसधन ॥ ९४ ॥ इकताल ॥ प्यारीनिहारियैंरीरतिमतिवारी ॥ इकदिससषीदियेंकरकांपियांइकदिकरसिकबिहारी ॥ नूटय्योहारछु टयोअंचरछबिछकनिबढीहैमहारी ॥ नागरियाआगैंफैलतआवैबद नचंदउजियारी॥९५॥ तिताल॥प्यारीअलबेलीकैसैंठाढीह्वैरहीरी ॥ ललिततृभंगअंगछीनकटिछूटेबारद्रुमडारिगहीरी ॥ हरीलतनिमैंकन कसीछबिहियैंफूलउलहीरी ॥ नागरपियरहेरझिलेतफलनैंननि बहीरी॥९६॥दोहा॥पियप्यारीकीमधुरधुनि, आवतसुनिबनओ र, ज्योंज्योंगावैंउच्चसुर, त्योंत्योंबोलैंमोर ॥९७॥ पीतफूलतुवबर न, मालापहारिसुजांन ॥ तेरोमगजोवतकरत, तेरोईगुनगांन९८

गयेबिबसमनश्रमितभयेरीतनपिसैंफूलसीसतैंसिथलभई अलकैं ॥ इ
तकिंकनीछूटीउतबनमालतूटीलोलहारकुंडलकपोलझांईझलकैं ॥
नागरीदासराधामोहननचतदेपिभूलीसपीगांनतांनलागतनपलकैं ॥
॥ ८० ॥ चौताल ॥ देपिस्यामाजूश्रमितभईरासमैं ॥ वहोनृत्तभेद
षेदसरकेसिंगारहारासिथलकुसमकेसपासमैं ॥ रसिकरवनानिजक
रतैंपवनकरैंहरैंहरैंल्यायेनिवासमैं ॥ नागरियासोयेकुंजकंवलनिकी
सैंनीपरबैंनीत्रिथुरैंनीहींविलासमैं ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ दंपतिढिगनवकुं
जसपि, करतगांनसारंग ॥ बीनतमूरापंजरी, वजिदायरमुहचं
ग ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ धुकीरहतनितचंद्रिका, मोहनसीससु
ढार ॥ बडीबढाअंपियांनकि ॥ बहोतदीठकैंभार ॥ ८३ ॥
धांमनिमैंबल्लभचन्हैं, तुवसंकेतसुधांम ॥ अतिबल्लभनिजनांममैं, रा
धावल्लभनांम ॥ ८४ ॥ नागरितुवहितकारनैं, बिसरेसुपधनधाम ॥
हांसीघरघरहोतहैं, अहोविसासीस्याम ॥ ८५ ॥ नवनिकुंजराकारु
चिर, अतिसितअमलउजास ॥ लसतफटिकफांनूसनभ, बिचसासि
दीपप्रकास ॥ ८६ ॥ नागरियामुषछबिलषैं, अमलउजारीमांहि ॥
बहुरिचंदकीडीठडारि, करतमुकटकीछांहि ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ निस
सदोत्फुलमल्लिका, ककुभकिरणराकेस ॥ गहीबैणहरिनिरषिबन,
रासरवणआवेस ॥ ८८ ॥ नागरिउरझीस्यांमसौं, आरसउरझैबैंन ॥
तेरीउरझीअलकमैं, मेरेउरझेनैंन ॥ ८९ ॥ तिताल ॥ पनघटटा
कोऊसांवरोसलौंनोंढोटादीनौंरीउठायघटबिनहींकहैतैंबैंन ॥ हौंत
देषिवदनाबिमोहितठगीसीरहीनागरिकेनीचैंव्हैंरह्योरीमिलायनैंन
औरबःतकहाकहौंकहतसकुचआवैंदईहंसिहोटानिसौंनिलजनईसैं

तबृंदाविपुन, धारेअगनितनैंन॥१०७॥फूलमईसबवनभयो, चंदजोतिमइरैंन॥तीयभईमोहनमई, चलीमिलनसुपलैंन१०८फूलेफूलेफिरतहैं, दोऊदियैंगरबांह॥लपिफूलनिागरसपी,फूलीकुंजनमांह१०९फटकिसारगहिलटकसौं, घरतछबीलीबाल॥ परतझगरईपेलबिच, होतश्वेततेंलाल॥ ११० ॥ पद ॥ बदनहसैंहैंवैठीसोंहैंप्यारीप्रीतमकैंउरजउठैंहैंसोभाहारनिसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंश्रौनकिधौंमंत्रधुनिमीनकेतकैंनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचौंकाकीचमकहोतअछनिअलछितकीकटाछसरदेतहैं ॥ नागरियाओटदैंतंमूराहसिहेरिहेरिफेरिफेरितांनानिफिरायैंमनलेतहैं ॥ ११ ॥ तालचपक ॥ वेदेपिद्रुमगहवरबनकेनीरैंचलिमिलिकहाजोपैंरजनीजुन्हाई ॥ बिपुनअंध्यारोपरमपियारोतहांकहौंकहौंकुंजकुटीसुखदाई ॥ सुनतवचनजियमैंरूचिवाढीहियमेंपियमूरतिमंडराई ॥ नागरीदासबिहारनिवनिठनिगवनकियोजितरवनकन्हाई ॥ ११३ ॥ रागबिहागरो ॥ ॥ तिताल ॥ बंसीबाजैंकालिंदीतीर ॥ भईमैंनमईपरीधुनितहोंसीसदईकछुनबसायबिनधीर ॥ रजनीबिहांनीनबिहांनीधुनिप्रांनहरिलीयैंजायरीबीर ॥ नागरियारंगीमिलिभेटिहौंतृभंगीजायकैसैंरहूंजायउरपीर ॥ ११४ ॥ तिताल ॥ बंसीहमसौंवैरकियो ॥ पियकोअधरसुधारसबनमैंनिधरकजायपियो ॥ याबेदनिकोदुपजानैंजवदेखैंपैंठिहियो ॥ नागरियाब्रजजुवतिंनकोतैंसरबसछीनालियो॥११५॥ दोहा ॥ बडेबारछबिसौंछुटे, अंसबीनकटिछीन ॥ सबरिझवारनिकेमनौं, मनभरिकावरिलीन ॥ ११६ ॥ विचवटपारेनागज्यौं, कोइककारैंगात ॥ उहींबाटजोजाततिय, खाटधरीघरआत ॥ ११७॥

पूरनससिनिसिसरदकी, चलिवनमलयसमीर ॥ होतवैणरवरास हित, तरुनतनैयातीर ॥ ९९ ॥ परमप्रेमआरूढरथ, विषमपंथधुनि बैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहित, चलीमदनगढलैंन ॥ १०० ॥ पीतसारघनस्यांमकैं, स्यांमसारसुकुंवार ॥ पेलसारललितादिलपि, मन धनडारतवारि ॥ १०१ ॥ पियजीतैंनागरिसलज, चितईजुतअंगरांनि ॥ बाजीबाजीलपिउटी, बाजीठहरीजांनि ॥ १०२ ॥ पद तिताल ॥ फूलेफूलेललितद्रुमनितरकरतस्य.मधुपसंग ॥ आईअंतरलतनजुन्हाईदरसाईद्युतिअंग ॥ चितवतउजियारीवदननकीऔरैंओपउमंग ॥ दृगनअनंगतरंगवढीभुवभंगभंगमैंरंग ॥ कसेवाहुएकांतकुंजनिसफसेरूपचहलैंमनपंग ॥ नागरीदासकिंकनीधुनि सुनिउठतिहिंबोलिविहंग ॥ १०३ ॥ रागविहागरो ॥ तालचपक ॥ फूल्योबहुफूलनिसौंवृंदावनसोभादेततामैंफूलीराकानिसअतिछाविछाईहैं ॥ कुंजकुंजफूलगुंजगुंजतमधुपमातेफूलनिमिलीमंदपौंनसियराईहैं ॥ सौंहैंस्यामास्यामपैंसिंगाररसजफूलनिकेफूलभईहियेंलपिफूलीबनराईहैं ॥ नागरियाहिलिमिलिफूलनिसुफलकरीभुजधरिअंसफूलेफिरैंसुपदोईहैं ॥ १०४ ॥ तालचपक ॥ फूलमहलफूलीजौंन्हजगमगी ॥ तामैंफूलेकरैंकेलिस्यामास्यामसुपझोलिफूलनिमरगजीबासरगमगी ॥ फूलनकीसैंनीपरराजतबिथुरीवैंनीफूलीहैंवदनजोतिमदनअगमगी ॥ फूलसरअरसांनैंफूलरंगभोयेसोयेनागरियामोहेमनरीझनडगमगी ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ फैलीचमकतचंद्रिका, बिचनिकुंजवनबाग ॥ कतरस्वेतपुहुकेसमनौं, रतिपतिपेल्योफाग॥१०६॥फूलेफूलनिस्वेतबिच, अलिबैठेमधुलैंन॥ दंपतिहि

मुक्ताहलदांम॥ नागरीदासहौंनलागीवृजमैंयेअतिगातिकितजैंहैंबांम ॥१२७॥तिताल॥ मेरोमनआपबसिकरलीनौंस्यांमसलौंनां ॥ देषिबदनमनगयोहाथवाकैंहसिचितवनिमैंटौंनां ॥ सुंदरपियमनमोहनसौंहनअंगअंगरूपरिझौंनां ॥ नागरियाकछुऔरनभावतभावतनंदढटौंनां ॥ १२८ ॥ तिताल ॥ मेरीमतिसुंदरस्यांमहरीहैं ॥ चितैंचतुरमुसकायभायसौंदृगडौरनिजौरनिजकरीहैं ॥ अबछिनहूछूटतनहिंहेलींनिपटदुहेलीगतिपकरीहैं ॥ नागरियाहरिललितरूपकीअतिदृढवेरीपरीहैं ॥ १२९ ॥ तालचपक ॥ मीतमिलनिमैंरंगरह्योरी ॥ नैंननिनैंनबैंनबैंननिसौंमनसौंमनतनतनहिंलह्योरी ॥ कोककलांनिकुंवरकोविदअतिलीलासिंधुप्रवाहवह्योरी ॥ नागरीदासरहसिरसदंपतिसुषमोपैंनहिंजातकह्योरी ॥ १३० ॥ तालचपक ॥ मोरबोलहींबिमलचंदउजियारी ॥ पुनप्रातिसब्दहोतवृंदाबनगरजतागिरकंदिरासारी ॥ अतिआनंदभयोकोलाहलरहीपाछिलीपहरनिसारी ॥ नागरीदासस्यामस्यामारतिसमैंअनूपमऊंचीअटारी ॥ १३१ ॥ इकताल ॥ मोहनमोहलईब्रजबाला॥ गईहुतीजलभरनिअकेलीसुंदरनैंनाबिसाला॥ नागरचलीसीसलैंगागरिउतआयेनंदलाला॥ थकितरहीलषिबदनमाधुरीभुलिगईगजचाला ॥ १३२ ॥ दोहा ॥ मनलूटतअवलांनिको,अहेचंद्रिकामीत ॥ सीसचढाईस्यांमतू, यातैंकरतअनीत ॥ १३३ ॥ मनमोहनसिरचंद्रिका, मंदमंदफहरात ॥ परसतलोयनबालके, कंपभयोमजुगात ॥ १३४ ॥ मुषतेरोईनामरटि, तोछबिहियसुकुंवार॥तोतनआवैंपरासिसो, आंकौंभरतबयार १३५ मृगमदआडलिलाटतिय, कीनीसरससुधारि ॥ मनुमधुपावलिकैंव

ब्रजमोहननागरिनिरषि, मगबिचबिसरीदेह ॥ वहुरिदईकागतिभई, कोमोल्याईगेह ॥११८॥बिनांसंवारेंईसहज, बांनप्रहारैंमैंन ॥ नाहिं उबारैंदृष्टमैं, ॥ मौरेंडारैंनैंन ॥ ११९ ॥ वंसीधुनिदूतीपठैं, वोलिलईब्रजवाल ॥ समरबिजैंआरंभरस, रासकरनिनंदलाल ॥ १२० ॥ बिमलजुन्हैयाजगमगी, गईबैंनधुनिछाइ ॥ प्रेमनदीतियरगमगी, वृंदाकांननआइ ॥ १२१ ॥ इकताल ॥ भरीभीरमैंमिलीरीनैंननि सौंदूरजाइफिरचितईकनपिइनकीनैंविवसजूमार ॥ तबहीतहांतैं लाईकुंजमांझसषियांसुहाथदीयैंकषियांडगमगचरनसुमार ॥ नाम सुनिराधेराधेषोलतहैंनैंनआधेकहांतैंमंत्रसाधेमूर्छितनंदकुमार ॥ नागरीदाससुनितेरोक्ततेरेकांनऔरहूकहैंगीआंनिबाढीदृगबांनपुमार ॥ १२२ ॥ दोहा ॥ भलेप्रहारततियनकौं, वांनतिहारेनैंन ॥ हायहायकहिकहिउठत, स्यांमानिसासुपसैंन॥१२३॥भामिनिदामिनि स्यांमघन, गावतसमैंसुहात ॥ बरसरहेहैंरंगए, भीजिरहीहैंरात ॥ ॥ १२४ ॥ भांनभवनभईभीरमिलि, झुंडनिझूलतबाल ॥ सषीवेषतहांदेषिहौं, रूपलालचीलाल॥१२५॥ तिताल ॥ मनमोहनसौंहन रिझवार ॥ गौंहनलाग्योनंदकुमार ॥ बाटघाटव्हैंआडोआंन॥ नैंननिकरतमैंनसनमांन ॥ छौंहनव्हैंचितऊउहिंओर ॥ तोहुनरहतचतुरचितचोर ॥ अपनींअलकछुवनकैंभाय ॥ इककरसैंननिलेतवलाय॥कहाकरूंदैयाकितजाऊं ॥ चंचलकुंवरचवाईगांऊं ॥ मेरैंहूउपजतललचांनि ॥ नागरियारोकतकुलकांनि ॥ १२६ ॥ इकताल॥ मेरीइंढुरियालैंराषीऔरहूकीनींलंगरायौस्याम ॥ गईहुतीतैसोफल पायोबहुरिनलैहूंपनघटकोनांम ॥ डारिदईहैंधरानिमटुकियाअरुतोरे

छोरछनकतछला ॥ नागरीदासदोऊनिर्तश्रमडगमगेरगमगेबारपुलि उरनिचलिअंचला ॥ १४५ ॥ इकताल ॥ रासरंगबरसुधंगनिर्ततहैं प्यारी ॥ तत्तरंगधुमकाटितकथेइतथेइतथेईथेईथेईथेईउघटतजुवतीस मूहबाजतसमतारी ॥ बीनपरनआवतमिलिगावतललिताप्रवीनछीन सुकटिभंगसीन्हैंभंगभुवअंन्यारी॥ नागरिछबिलखिरसालइकटगपिय दृगबिसालवारतमनमाललालबोलतबलिहारी ॥ १४६ ॥ तिताल॥ रेकन्हैयानैंनानिकोपैंडोन्यारो ॥ ज्यौंज्यौंहटकतत्यौंत्यौंअटकतचल तनचारौंहमारो ॥ दीसतहीकछुऔरनदोसैंदीसतरूपतिहारो ॥ ना गरियाहमकौंतुमप्यारेतुमकौंकपटपियारो ॥ १४७ ॥ इकताल ॥ रंगीलीसबप्रेमभरीब्रजनारि॥ अतिआतुरचितनंदनंदनपरिरिझईफि रतरिझवारि॥ बिसरिबिसरिघूंघटनैंननिसौंभरतरूपअंकवारि॥ अट कपरीहियनागरनटकीसकैंकौननिरवारि ॥ १४८ ॥ इकताल ॥ रीनूपुरधुनिप्यारीश्रवनपरीसुषदैंन ॥ हरबरायआतुरउठिआयेपिय मोहनमनमैंन ॥ कुंजद्वारहसिलईभुजनिभरिमिलेमीतदृढहितकेअैं न॥नागरियादैचलेअंसभुजकरनिकुंजसुषसैंन॥१४९॥ दोहा ॥ रस संपतिमिलिविलसहीं, दंपतिदैंगरबांह ॥ ढिगबीनांवीनांसपी, व्रज वतिद्रुमकीछांह ॥ १५० ॥ रैंनजातहैंचैंनकी, चलिनागरिसुकुंवा रि ॥ लैंनमईपियव्हैरहे, तेरेनैंननिहारि ॥ १५१ ॥ रचेलालपलपां वडे, तुवआंवनिकैंहेत ॥ नागरियाहियसेझपर ॥ बिहरोमिलिसंके त ॥ १५२ ॥ रँगरँगभूषनफूलके, रहेफूलतनझूल ॥ अंतरकीबाहि रमनौं, प्रगटीअंगअंगफूल ॥ १५३ ॥ इकताल ॥ लग्योरहैंअंषि यनिमैंपररंभनपलअंतरनपरैं ॥ अधपुलीचितवनिअधरउचैंहासिमैं

लपर, बैठीसभासंवारि ॥ १३६ ॥ मृगमदआडसुनीलमैंनि, मनुसं वारिकैंसाज ॥ बदनरूपसरपररची, पैरीमनमथराज ॥ १३७ ॥ मृगमदआडलिलाटतिय, कीनीहैंछबिअैंन ॥ बदनरूपसरवीचमैं, मनूसतेसामैंन ॥ १३८ ॥ मैंतिमारैंसरतांनिकैं, नातोइतोविचारि ॥ तीनलोकसंगगाइये, बंसीअरुब्रजनारि ॥ १३९ ॥ मनहींमनज्ञसि हातसी, मनहींमनमुसकात ॥ तूमनमोहनसौंमिली, पाईमनकीबा न ॥ १४० ॥ यहजमुनावृंदाविपुन, यहउजियारीरैंन ॥ यहदंपति कलगांनधुनि, बरनतबनैंनबैंन ॥ १४१ ॥ पद ॥ इकताल ॥ राधि काआनंदरूपपियकौंआनंददीनौं॥ रचीहैंअतिआनंदकेलिबाहुजुग निझेलिझेलिमेलिमेलिउरसौंउरआनंदभीनौं॥ आनंदसषीश्रवननैंन आनंदनिकुंजअैंनमिलिकैंआनंदघनसौंदामिनआनंदकीनौं॥ पूरना नंदबढ्योजातिनांहिमुषतैंकढ्योनागरियादासिभयैंआनंदरसलीनौं ॥१४२ ॥ तिताल ॥ रेकांन्हांजबतबछबिनिरषतहींहूंतोबावरीभई ॥ तनकलषैंजाकीजायलाजछुटियहगतिकठिनदई ॥ बनतनभवनका जमोपैंछिनसुधिबुधिबिसारिगई ॥ नागरीदासभईयेअंषियांमोहनरू पमई॥१४३॥चोताल॥राजतहैंजोरीघनदामिनीबरनकी ॥ केलिक लाकुसलकांन्हकेलनिकीकुंजबीचबातैंकरैंघातनिसौंमनकेहरनकी॥ सुषहिंसकेलिबेकौंबैठेहैंअकेलेदोऊबनीबिधिआजलाजगढबिषरन की ॥ नागरीदासरतिकेलिकेलिकेनिकेतउभैंउरनिमैंचाहकलकेलि केकरनकी ॥ १४४ ॥ ताल चर्चरी ॥ रसिकरसरासनवरंगनिर्तत लला ॥ संगउरंगगरवांहछबिदेतप्रियसजलघनमांझमनुचमकिरही चंचला ॥ बलयकंकनकुणितछीनकटिकिंकिनीपगनिछिगुनींनिके

कहासिफूलडारतकइककांकरीकइकमगछाडिरहीसांकरीलगमगी ॥ नागरीदासहरिमाधुरीपांनकरिरहिनकछुठौरमतिमदनवसडगमगी ॥ १६० ॥ चौताल ॥ सपीरीअंषियनिसौंअंषियांमिलीबतियनिसौंबतियांमिलींअतिरसबसरसिकलालबाल ॥ सबतनतनमिलेमनसौंमनमिलेरीभुजनिसौंभुजमृनाल ॥ फूलनिकोसैंनीसौंमिलीहैंबैनीबिथुरैंनीनूपुरनिनादसौंमिलीहैंकिंकिनीजाल ॥ नागरीदाससुषसुरतिमिलनिमांझलैलैउरबीचतैंबिहारीप्यारीन्यारीकरीमुक्तमाल ॥ ॥ १६१ ॥ तिताल ॥ स्यामतलपरचीहैंसुषसुरतिसचीहैंतामैंकोककीकलानिकेलिमोहनमचीहैं ॥ हावभावअंगसंगअमलअनंगमातेअधषुलेनैंनसैंनभृकुटीनचीहैं ॥ अधरनिहरैंहरैंबचनविलासहोतदसननिजोतिदेषिदांमिनीलचीहैं ॥ नागरीदासजुगबाहुबिचघनस्यांममांनौंनीलमनिकलकुंदनषचीहैं ॥१६२॥ तिताल ॥ सोयेस्यामास्यामसेजसुषअंगअंगसुरतिरंगललकैंहो ॥ तैसोहीसननुपअमलचंद्रमाबदननिदुतिझलकैंहो ॥ टूटिरहीगजमोतिनकीलरफैलिफबीआंननअलकैंहो ॥नागरियामनरंगडारचोइनपीकरंगीलीपलकैंहो१६३॥तालचर्चरी॥सरससुघरनवकिसोरगतिसुघंगनांचैं॥नूपुरादिमिलिमृदंगबीनलीनअनुपमधुनिसहचरिकलगानरंगचहचारिव्हैमाचैं ॥ कहिनपरतभुवबिधांननवघनतनलहलहांनिबिलुलितबनमालसृंगलपटतिसंगआवैं ॥ अभिनयजुतउरपातिरपधरनचरनचपलचारुमंजुलझुकिमुकटससिगतिमतिबिसरावैं ॥ दांवनबिचपवनपरसिफैलफैलपरतफिरतगतितरंगसागरवढिरंगमांझबोरैं ॥ नागरियानिरषिबदनश्रमजलकनझलमलातप्रेमबिबसबालनीलअंचरमुषढोरैं ॥

नानिसैंनकरैं ॥ मुषनियरैंमुपसुषफूंकनिसौंसात्विकस्वेदहरैं ॥ नागरिनागररूपअमलबसमनतंद्रानटरैं ॥ १५४ ॥ रागपरज ॥ तिलल ॥ लोइननींदभरैं॥अधपुलीपलकनिमैंमुसकातेझुकिपियऔरपरैं॥ हरिटारतमुषतैंपरछांहींकरपरलताधरैं॥ नागरीदासचंदटजियारैंद्दगनितैंद्दगनिटरैं॥१५५॥दोहा॥ ललिततमूरावालढिग, सोहतहैंइहिंभाय ॥ समरजीतिसरद्दगनिसौं, तरकसलियोछिनाय ॥ १५६ ॥ लौंनैंतिरछौंनैंचलैंकौंइनकौंनैंसाछि ॥ लगतलजौंनैंद्दगनिकी, टौंनैंभरीकटाछि ॥ १५७ ॥ लोकबावरेकहतसब, भईबावरीबाल ॥ तियनकरीक्यौंबावरी. रूपबावरेबाल ॥ १५८ ॥ पदतिताल ॥ सजनीनयेनेहकीबातकहाकहंहुायरी ॥ गहबरिआवतकंठकहीनहींजायरी ॥ मोदिसरहेलषिलालरसिकरसष्यालमैं ॥ तबउरझेयेनैंनरूपकेजालमैं ॥ मेरैंजियअकुलांनित्यौंहींउतस्यामकैं ॥ मिलनिबिनांदिनरैंनघुटैंबिचधामकैं ॥ घूमतघायलप्रांनजैसैंमदरापियैं ॥ लोकलाजगृहकाजकीबिसरीसुधिहियैं ॥ आजअचानकभेटव्हैंगईबाटमैं ॥ गईइकौंसैंन्हांवनजमुनांघाटमैं ॥ सघनद्रुमनकेंमांहिलैगयोमोहिरी ॥ मिलेदोउलपटायकहाकहौंतोहिरी ॥ नागरियारसमगनअधरआसवछकी ॥ मिटीनअबलौंदेषिहियेमैंधकधकी ॥ १५९ ॥ तालचर्चरी ॥ सुनतधुनिबैंनमधुरागगोरीरुचिरचढियनिजभवनतियरवनहितअगमगी ॥ जांनिघनस्यांमआगमनगोकुलबधूअटनिदुहूंदिसनिमांनूंदामिनीजगमगी ॥ सांझसुषसमैंआनंदगहमहठईउडिरैंनधैंनबहुगलिनबिच्चरगमगी ॥ संगगोपालनटबेषरहीदेषिसबपलकनाहिंलगतमुषअलकरजसगबगी ॥ कइ

न, अमलजुन्हाईरैंन ॥ लगतसुहाईदृगानिकौं, कुंजनिछबिसुषदैन ॥ १७३ ॥ श्वेतफूलफूलेलतानि, बिलुलितहीराहार ॥ जौन्हओढिपटरुपहरी, कुंजनकरेसिंगार ॥ १७४ ॥ सुनतबैंनबनतियचली, मुनिमनभयेअधीर ॥नागरलषिरसरासनभ, भईबिमांननिभीर१७५ पदतितात ॥ होलालझूठीझूठीबातनिचितचोरचो ॥ मनओरमुषओरकहतओरकीओरडारतक्यौंमोपैंतुमकपटनेहउरझेरो ॥ सीवेकहोकहांठगहौंनांबैंननमांझघनेरो ॥ नागरियासबजानतहौंतउरहतनांहिभनमेरो ॥ १७६ ॥ रागअडाणो ॥ चौताल ॥ होकाजरबिनकारेरीतेरेनैंनमतवारेभारेढरारेहावभावचातुरीनिमदनसंवारे॥सुंदरताछायेछकेजोबनमदअरसायेरसनिधिस्यामरिझायेलागेनैंननिनैंनपियारे ॥ षंजनअरुमीनमृगअमलकँवलकलइनहूतैंआलीअतिसरससुढारे ॥ नागरीदासपियसहिनसकतस्यामपलकनिओटभयेन्यारे ॥ १७७॥ चौताल ॥ हौंतोदोऊदेषतदेषरही ॥ स्यामतमालप्रियाछबिबेलीलगिलपटायरही ॥ फूलपरैंहलिलतालिलितऊपरझुकिझूमिरही ॥ नागरीदासकुंजबिचतैंसीजगमगजौंन्हरही ॥ ॥ १७८ ॥ दोहा ॥ हरिचितलयोचुरायकैं, रह्योपरतनहिभौंन ॥ तापरवंसीबाजमति, दतकटेपरलौंन ॥ १७९ ॥ राग ॥ ॥ तिताल ॥ झूलतहैंदोऊसषीझुलावैं ॥ सौंधेकीझकोरैंस्यामतनगोरैंआवैं ॥ हिंडोरैंहिलोरैंमांझथोरैंथोरैंगावैं ॥ नागरझकझोरैंहारडोरैंउरझावैं ॥ १८० ॥ राग ॥ बंगालाकी ॥ तिताल ॥ बैंनबाजैंजमुनांकैंतीर ॥ उमगिचलीसांवनसरिताज्यौंजुवतिनकीभीर ॥ हायदईनिदईमोहिरोकीकितजांऊंबीर ॥ नागरीदासप्रेमपथआगैंप

॥ १६४ ॥ तिताल ॥ सरदनिसरासासिंधुबढ्योअनूपमउपजततांनतरंग ॥ सुघटसंगीतसुधंगसुलफगतिहोतदुहुनिमैंहावभावभुवभंग ॥ मधिमंडलश्रीराधामोहनलषिमुरछितरतिअवनिअनंग ॥ नागरीदासअकासचंद्ररथचलतचक्रगतिपंग ॥ १६५ ॥ तिताल ॥ सिगरीनिसाबितईरीकुंजकुटीकैंद्वार ॥ करतसैंनपुलिजातनैंनतबइकटकरहतनिहारउरझैबाहुमृनालपरसपरउरहारनसौंहार ॥ नागरीदाससोयेरसभोयेहरिब्रषभांनकुँवारि ॥ तालचपक ॥ सषीसुषदाईस्यामभिलायेफेरिकैं ॥ सघनकुंजछाँत्रिपुंजकीछहियांलीनैंरंगभीनैंहरिहेरिकैं ॥ मिलनहींबाललालसौंबांकेबैंनकहततिहिंबेरिकैं ॥ नागरियातबतैंअबपायेकौंनैंविरमायेघरघेरिकैं ॥ १६७ ॥ इकताल ॥ सुनिमुरलीकीटेरचपलचली ॥ निरजनबनतहांऔरनकोऊश्रीब्रषभांनलली ॥ मिलीजायघनस्यामलालसौंदांमिनरंगरली ॥ लताओटरंध्रनिअविलोकतनागरीदासअली ॥ १६८ ॥ तिताल ॥ सषीसुनिबांसुरीबनबोलैं ॥ समरषेतसंकेतमैंहेलीरहीहैंनिसांनवजायअकेलीहमारेपउरपप्रेमाहिंतोलैं ॥ लोकलीकसबश्रुतमजांदारहानिदेतनहिंआज ॥ लाजकियैंअबलाजनराहिहैंलाजतजेंरहैंलाज ॥ नागरियासुनिबैंनचलीयौंवृजजुवतिनकीभीर ॥ ज्यौंदुंदभिसुनिसनमुषनिकसैंमहासुभटरनधीर ॥ १६९ ॥ दोहा ॥ सषीरूपकीमंजरी, पंजरीटसेनैंन ॥ बजैंकरनिमैंपंजरी, लजैंपरेवाबैंन ॥१७०॥ सिंघपौरिठाढेकुंवर, नैंननिसरबरसात ॥ उहींबाटआवतजोई, पाटधरीघरजात ॥ १७१ ॥ श्रवनलगायोबैंनरव, दृगनरूपसंताप ॥ घेरवढायोघरानिमैं, निठुरइतेपैंआप ॥ १७२ ॥ सरसाईवृंदाविपु

॥ दोहा ॥ गतधीरजवढिचौंपअति, परतनांहिचितचैन ॥ व्है आतुरचातुरलगे, पायमहावरदैन ॥ १९१ ॥ कँवलचरनपियच तुरलषि, इकटकरहेलुभाय ॥ लियैंमहावरहाथमैं, रंगभरयोनहिंजा य ॥१९२॥ रंगभरतपगदुहुंनअति, वाढयोरंगअनंग ॥ नागरियाके दृगनवह, लग्योसुछुटतनरंग ॥ १९३ ॥ होतरागसारंगधुनि, दंप तिकुंजनवीन ॥ विचिविचिगायवजावहीं, वीननिपरनप्रवीन॥१९४॥ ॥ दोहा ॥ धीरजपगठहरैंनहीं ॥ सुरगहरैंगुनगांन ॥ रागरसासव सिंधुकी, लहिरैंउपजततान ॥ १९५ ॥ कहावीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर ॥ लहलहातनीकीउठैं, तांननिरंगहिलोर॥१९६॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचबृंदावनबाग ॥ नागरियाहियमैंवसो, स्यामास्यामसुहाग॥ १९७॥ राग सारंग ॥ ताल चपक ॥ प्यारी जूबजावैंबीनगावतहैंपियप्रवीनप्रीतमबजावैंतबगावैंसंगप्यारी॥प्या रीजूसराहैंजबप्रीतमनँवावैंसीसप्रीतमसराहैंतबमुसक्यातप्यारी ॥ प्यारीजूरिझायैंप्रियरंगभरीतांननसौंप्रीतमरिझाईरूपगुनभरीप्यारी ॥प्यारीजूदईहैंरीझचितबनमांनमांनीपियलईलायउरनागरियाप्या री ॥ १९८ ॥ इतीश्रीनागरीदासजीकृतपदमुक्तावलीसंपूर्ण ॥

॥ राग सोरठ ॥ होझालोदेछैरसियानागरपनां ॥ सारादेपैंला जमरांछांआंवांकिणजतनां ॥ छैलअनोषाकह्योनमांनैंलोभीरूपस नां ॥ रसिकविहारीनणदबुरीछैंहोलाग्योझांरोमनां ॥ १ ॥ राग ॥ अरीयहकौंनजमुनांतीर ॥ द्रुमलतागहिदेषिठाढोललितस्यामसरी र ॥ चरनपरचरनसोभितबहुनषनकांतउदोत ॥ मनहुपंकजदलि नपरजगमगतजगनूजोति ॥ लपटरहीहैंपगनिव्हैंव्हैंजलजलरछविपुं

हुंचोछाडिसरीर ॥ १८१ ॥ दोहा ॥ मैंनरंगरसरगमगे, जगेउजा रीरैंन ॥ पगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसौंहेंनैंन ॥ १८२ ॥ राग ॥ ॥ तिताल ॥ प्यारीराधेजूअहाकहाछविपावतगावतचंदकेसौंहेंकि येमुष ॥ सिरजूराढिगफव्योहैंतमूराकरमुंदरीचूराचमकतचमकत चौकापानरंगमुष ॥ प्रीतमभेंवरानिवारतनियरैंपियरैंपटछविछोरगहैं करद्दगचकोरअरझेहैंसासिमुष ॥ नागरव्हैंरहेरूपमईमुष ॥ १८३ ॥ ॥ दोहा ॥ उदौफैंटासिरफबैं, जरतारीकीभांति ॥ सोहतअलवेली कुंवरि, हसतिलसतिकिलकांति ॥ १८४ ॥ दोहा ॥ लालधरैंअलि वेषमुष, अग्रनचतसुषदैंन ॥ देतरीझमुसकनिप्रिया, जगमगायरहि रैंन ॥ १८५ ॥ दोहा॥ लेतउछंगनिभुजभरैं, सषीसांवरीगात ॥ अ-द्भुतकउतकमाचिरह्यो, देषैंहींवनिआत ॥ १८६ ॥ दोहा ॥ रतनष चितकुरसीलसैं, नागरियाअवरेषि ॥ कहाकहूंछविआजकी, सषी देषिरीदेषि ॥ १८७ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ तिताल ॥ आजसषीदे षिरीदेषिनैंननिभरिभरिकेसीलगतहैंजगमगायरहीरात ॥ हीरनष चितकनककुरसीपरलसीहैंकुंवरिराधेजरतारीफैंटावांधैंसिरकलगी छविसरसात ॥ १८८ ॥ रहैंनीरीललितावीरीदेवातकरतप्यारीमुस कात॥ नागरस्यामसषीनिर्त्ततआगेंगांनघुमंडिरह्योकउतिगकुंजसुहा त॥ ताल चपक ॥ झुन्हैयाआयरहीहैंदुहनपरअवदुतिनिरषिअमंद॥ इतएहैंपरछांहद्रुमनकीफिरउतजैंहैंढरिचंद ॥ मंदमंदकलगानकर तसुनिछकेमदनआनंद ॥ नागरिनागरवसेकुंजनिसलसेसेजमेंकसे जुगलभुजफंद ॥ १८९ ॥ दोहा ॥ ठीकरहतनहिंलीकपर, फैलत रंगसुजांन ॥ व्हैंअवरेउरझेरपिय, जियजितीकललचान ॥ १९० ॥

रिताऐंसैल ॥ झोपिणछिणाआडीहुवां, आलाडील्योछैल ॥ १ ॥ औसरइणनरपंचसर, चौसरहरपरधार ॥ सतरअतरवशाकरअडर, कंवरभँवरबरवार ॥ २ ॥ कंवरिकेलिरीकामिसी, कोमलवैसशरीर छांदैंलाडलडीतणैं, होलौझालौधीर ॥ ३ ॥ दुजतीछणातासहिरहै, गहैंचरणमृदुबोल॥करसणप्रतिसुपजोगकरि, भोगलहैंवहुतोल ४॥१

---

श्रीगोपीजनबल्लभायनमः ॥

# अथ श्रीनागरीदासजी कृत उत्सवमाला ॥




## प्रथम श्रीकृष्ण जन्मोत्सव ॥

दोहा ॥ जसुदाकैंसुतहोतभयो, गहगडगाननिशान ॥ गयोछा यपुरमोपलौं, मंगलघोपवितान ॥ १ ॥ ब्रजथिरचरआनंदमय,

ज ॥ ढिगमहावरस्यांमतामिलहोतमुक्तागुंज ॥ ३ ॥ लसतपटकंच
नतरैंजुगजानजंघसुढार ॥ ज्यौंब्रजमुनांनोरपररविझलकाकिरनन
जार ॥ ४ ॥ वज्रकनहाटिकजटितकटिकिंकनींयहभाय ॥ जांनि
कैंव्रजचंदउडिगनचढेकाटितटिजाय ॥ ५ ॥ उरसपीनउतंगपरनग
त्रिविधिहारबिहार ॥ नीलगिरमनिसिपरतैंनिरझरतात्रिवेनीधार ॥
॥ ६ ॥ बाहुजुगसांचेभर्जीसिलेपचंदनगरैं ॥ जुवतिधीरजधर्मकोव
लदूरहीतैंहरैं ॥ ७ ॥ कामध्वजफहरातअंचलपीतपटफहरात ॥ नि
रषनहिंठहरातहैंमनलाजहियहहरात ॥ ८ ॥ कंठद्योतसुदेसमोतील
रनविचदरसाय ॥ गिरचोलपिछतांचिबुकऊपररूपतृषतसुभाय ॥
॥ ९ ॥ अधरमृदुमुसक्यातसेबिचदसनकोचकचौंध ॥ अरुनफूली
सांझमैंजानौंउठतचपलाकौंध ॥ १० ॥बिमलदर्पनसेकपोलनलग्यो
मनललचाय ॥ अलकमनमथफांसकुंडलपरीझांईआय ॥ ११ ॥
उच्चनासापरसुबेसररह्योमुक्ताझूल ॥ ताहिलपिउपमानआवेंपरतम
नभ्रमभूल ॥ १२ ॥ मदविधुर्नितनैंनसौंहैंसहजभौंहैंवंक ॥ जुवति
मनवसमंत्रकीज्यौंलिषिभालअवलीअंक ॥ १३ ॥ फव्योफैंटासीससुंदर
दाहनेदिसढरयो ॥ निरषपेचकुपेचमैंमनजातहैंधौंपरयो ॥ १४ ॥
रतनअवलीमोरचंदासुमनगुच्छसुरंग ॥ बासवसचहुंधांमधुपलषिलु
टतकोटिअनंग ॥ १५ ॥ निकटमूरकदंबकैंतरमहामूरतमैंन ॥ दास
नागरनिरपइकटकरहतनांहिंननैंन ॥ १६ ॥ राग सोरठ ॥ लाडी
हठमाड्योजीमांझलरात॥ तिरछीलषैंलजीलानैंणांवैंणबांकीवात॥
छिपीसौंहसुणिभौंहांझिझकैंबिझकिदुरावैंगात॥ नागरीदासआसउ
मंगैंपियहियैंऊकलापात ॥ दोहा ॥ आउजियालीऐंमहल, आस

गमगरह्योनंदग्रहपूरनप्रगटोहैंगोकुलचंद ॥ लोचनतृषितचकोरनके चितमिटिजुगयेदुषदंद ॥ नागरीदासजुरीकमलासंगावतजुवतीवृंद ॥ ५ ॥ इकताल ॥ अबहींनेकपोढीहैंब्रजरानी ॥ पुत्रजन्मउत्सवरससानीआनंदितअरसांनी ॥ लालनहूपालनमेंसोयेकमलनैंनपयपांनी ॥ नागरिगोपीगांनमनोहरफिरिकरियोसुषदानी ॥ ६ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ नंदजीरैंचालोनैंधरां ॥ महामनोहरपुत्रहुवोलखिलोयणसुफलकरां ॥ दहीष्यालसोंभरांभरांभरांवाहंसिहंसिफेरिभरां ॥ रसिकबिहारीनांवकुंवरजीरोआगमजांणिधरां ॥७॥ रागषमायची तिताल ॥ बधाईबधाईबधाईहोआजब्रजछायरही ॥ जसुदाकेसुतभयोसुनिउतकानदैंदैमेघसेनिसानबाजिसहनाइरही ॥ ठाढीनंदआंगनमैंमंगलकलशलियेमंगलरसओपीगोपीसबगायरही ॥ नागरियासुखसांनीदधषेलनअरसानीपटभीजिअंगरंगझरिलायरही ॥ ८ ॥ आनकविकृतरागसोरठइकताल ॥ कांनपडीनसुणीजैनंदघरआजैं ॥ घुरैंनिसांणाघणांमंगलमयजाणैंनभभादौंघणगाजैं ॥ गोपीगीतगावतीआवैंचालंताछविछाजैं ॥ गोकुलरागलियांरांचहुंवांबहुवांरांरमझोलबाजैं ॥ श्यामवरणसुतजायोराणीरूपअनूपमराजैं ॥ होसीरसिकाबिहारीनांवयांरोअबहीमदनवदनलखिलाजैं ॥ ९ ॥ ताल चर्चरी ॥ गोकुलआजपरमरंगरली ॥ भयोहैंसुतनंदरानीजूकैंसुभसुनियेबातभली ॥ ब्रजबधूनिकैंहियेंवाढीमोदमनकलमली ॥ मनुउमगिसलितारूपकीआनंदआतुरचली ॥ लंकलचकतथारकरभरभारहारावली ॥ गांनमंगलनूपुरनिधुनिछायरहीसबगली ॥ छिरककैंदाधिनाचतमगनजहांनंद

आनंदाबिस्वअमंद ॥ आजप्रगटभयोनंदग्रह, रूपधरैंआनंद ॥२॥ दीपकप्रगटयोनंदघर, निर्मलजोतिअभंग ॥ उडिउडिपरनलगेज हां, दानवदुष्टपतंग ॥ ३ ॥ श्रीजसुदाकैंसुतभयो, नषसिषसुंदर सर्ब ॥ रससिंगारकैंबरनतन, करनकांमगलितगर्ब ॥ ४ ॥ नागरसुत भयोनंदकैं, मनमोहनसुकवांर ॥ यामोहनहितमोहनी, अबब्रजप्र गटनिहार ॥ ५ ॥ पदरागषट्तालजात्रा ॥ आजब्रजराजकैंसुत भयोसुनिसखीउमगिउपहारलैंलैंचल्योमहरांवनौं ॥ थारकरहारभ रिभारलचकतलंकबसनअतिभारउरफब्योफहरांवनौं ॥ इतहिंधुनि गानअरुमंगलनिशानधुनिउतहिंनौंकोलगतघननघहरांवनौं ॥ ना गरीदासब्रजचंदप्रगटतभयोनंदनिधिहियैंआनंदलहरांवनौं ॥ १ ॥ ॥ राग गौरी ॥ तिताल ॥ आजभयोनंदभवनआनंद ॥ ब्रजजन उमंगिचकोरचलेमिलिप्रगटयोपूरनचंद ॥ गावतमंगलगीतगलिनमैं आवतियुवतीवृंद ॥ नागरीदासउत्साहछकेसबमिटज्युगयेदुषदंद ॥ ॥ २ ॥ राग अडाणौं चौताल ॥ नंदगोपराजअहोऔरैंब्रजओप आजतेरैंपुत्रभयोभैयापुन्यफलजापको ॥ ब्रह्मारिषद्वारबहोदेवताबि माननपैंछायोसुरवेदगांनभेदकअलापको ॥ घरघरसंपदाअपारब ढीदेखियतहमपैनकीनौंजातबर्ननप्रतापको ॥ नागरियावेरवेरग्वा लकहैंटेरटेरतेरोघरमानोंपरमेश्वरकेबापको ॥ ३ ॥ राग परज ॥ति ताल ॥ बाजैंवधाईब्रजमेंनंदघरनिसुतजायो ॥ गोपीगीतमनोहर गावतआवतभावतनभतानतरंगनिछायो ॥ कौतिगमोहेदेखिदेव गनदेवलोकबिसरायो ॥ नागरीदालउछाहछकेअतिआनंदउरसर सायो ॥ ४ ॥ तिताल ॥ आजअतिब्रजमेंबढयोहैआनंद ॥ ज

रिजसोमतिकैभयोसुतफूलीअंगनमाइयां ॥ रसिकबिहारीप्रानजी वनलषिदेतअसीससुहाइयां ॥ १४ ॥

## अथ राधाजन्मोत्सव लिष्यते ॥

इनबधाइनकीअलापचारीमें देनेये दोहा ॥

दोहा ॥ प्राचीकीरतिकूषतैं, कन्याभईअनूप ॥ भानसिंधुआनंददा, चंदमंजरीरूप ॥ १ ॥ कुलमंडनवृषभानकी, भूषनजगतअभूत ॥ वारौंकोटिननृपनके, याकन्यापरपूत ॥ २ ॥ बेगवढोआरोग्यतन, भागबडोउत्साह ॥ नंदरायकेकुंवरसौं, बेगहिहोहुविवाह ॥ ३ ॥ होबृंदावनईस्वरी, गुनपूरनसुषरास ॥ बिधिनासोंमांगतइहैं, जाचकनागरिदास ॥ ४ ॥ पदरागईमन चौताल ॥ निसमेंसुमनलह्योताकेफलकीविधिबरसांनैंप्रगटीसुषदाई ॥ गउरश्यामइकजोरीअंगतसुषसोवतसुपनैंदरसाई ॥ जनोंबहुकरतबिहारबिपनमैं गानरंगबरपाबरषाई ॥ गिरतरुकुंजपुंजबनबीथनरससिंगारनंदीसरसाई ॥ नागरियासुभसुगनहोतहैंघरघरआनंदउरनसमाई ॥ लीलाललितकरनदोउप्रगटेइतराधाउतकुंवरकन्हाई ॥ १ ॥ राग परज ॥ तिताल ॥ ढाढनिनाचैवृषभानकीमंदिररसमाती ॥ गावतसरसबधाईमुंदरलटकिचलतमुसकाती ॥ नंदसुवनअरुकुंवरितिहारीबेगवढोदिनराती ॥ नागरीदासरंगीलीविचिबिचिदेतअसीससुहाती ॥ ॥ २ ॥ या बधाईके गायबेमें बीच बीच दैनेये दोहा ॥ देसदेसके गुनीजन, जाचनआयेद्वार ॥ धनघनउनयोंभानजू, वरषतरिद्धअपार ॥ १ ॥ ढाढनश्रीनंदरायकी, बधूबृंदलैसंग ॥ आईश्रीवृषभानकैं,

सदनस्थली ॥ दासनागरछकीउछवकरतकोतिकअली ॥ १० ॥
रागकाफी इकताल ॥ बाजैंवधाइयांबेसईयेनंददेदरवार ॥ हुवा
सुतसोहनांवे ॥ मनदामोहनांसुकुंवार ॥ आईंसुनिगोपियांवे ॥
हिलिमिलिगावहींषुसियाल ॥ जुरेसबलोकमंगनवे ॥ गुनीगुनबोल
दैंदैंताल॥गुनीदेतालानाचैं ॥वाहवा॥ आंगनपहपटमाचैं ॥ वाहवा ॥
नंददालालाजीवो॥ वाहवा, दूधांअमृतपीवो ॥वाहवा॥षुसीदिलपाव
झूमां ॥ वाहवा ॥ लक्षांदीनूंनीचूमां ॥ वाहवा ॥ उसदामंगलगावां
वाहवा ॥ दानदुपट्टापावां ॥ वाहवा ॥ पावांपटदानमोतीवो ॥ जा
वांदिलफूलदेघरमांह ॥ असाढाहाथटोडरवो ॥ बाजूबंधझूलदेबि
चुबाह ॥ तुजपरघोलियांवो ॥ जसोदेबोलियांदैंसुनाय ॥ धनिध
निआजदादिनवो ॥ दैंदीदानक्यौंनमंगाय ॥ महरनैंदानमंगाया,
वाहवा॥ कंचनझरबरषाया, वाहवा॥हैंवडभागनतूरी॥वाहवा ॥करी
मुरादापूरी ॥ वाहवा ॥ बीचषुसीदिलगाढे ॥ वाहवा ॥ मंगलमुषी
तुसाढे ॥ वाहवा ॥ जन्मजनमगुनगावां ॥ वाहवा ॥ नागरदरसन
पावां ॥वाहवा॥११॥तिताल॥ नंदजूकैंबाजतबधाईआजद्वारैं ॥ गह
महमंगलमहागानधुनिछायरहीब्रजसारैं॥ अतिआनंदभयोसुनिसज
नीबनतनकछूउचारैं ॥ नागरियाजसुमतिसुतजायोचलोरीबदन
निहारैं ॥ १२ ॥ तिताल ॥ होघरनंदकैंबाजतआजबधाइयां ॥ झां
झझनकमिलिमधुरटकोरानिपूरिरहीसहनाइयां ॥ आंगनझूंमिझूंमक
दैंदैंगोपीगावतआइयां ॥ नागरबृजघनश्यामप्रगटभयोसुषबरषा
बरषाइयां ॥१३॥ आनकबिक्रत॥रागकाफी ॥ बाजैंआजनंदभवन
बधाइयां ॥ गहमहआनंदरंगरलीअतिगोपीसबमिलिआइयां ॥ मह

गिमुपदेषैं ॥ तुममिलितनककरोबिश्राम॥ माईमनबांच्छितभयेका
म ॥ अबभईनिद्रावसश्रीरानी ॥ ढिगसषीनागरिकहतकहानी॥८॥
रागसोरठतिताल ॥ भईभानजूकैंकन्याबधाईबधाईचलिदेपितूनि
करकैं॥ किधौंकीरतकोकीरतप्रगटोस्वरूपधरिकैं ॥ बरसानैंआ
जुहेलीमहामंगलधुनिछाई॥ सुनिकांनदैंनिसांनसंगबाजतसहनाई ॥
निकसिभवनभवनतैंतियलागतभलीहैं ॥ उपहारथारलैंलैंसबगावत
चलीहैं ॥ नहिंअंचरासंभारैंउरहारडोरटूटैं ॥ गिरैंफूलबहोगलिनमैं
सिरकेसपासछूटैं ॥ मिलपेलतश्रौनाचतदधिकादौंभयोहैं ॥ आनं
दकोकुलाहलबढिब्यौंमलैंगयोहैं ॥ सुपकोचहलपहलअतिव्हैरही
महलमैं ॥ तहांडोलतहैंउमगीनागरसषीटहलमैं ॥ ६ ॥ इकताल ॥
रीबृषभानकैंबधाईसुनिबाजैंधुनिपूरिरहीसहनाय ॥ हैंकहासषीश्रा
जुरावरमैंरंगरह्योसरसाय॥ बेरबेरपूछतनंदरानीमोहिनीकोबातसुना
य ॥ नागरतुवसुतश्यामकीजोरीप्रगटीहैंगोरीआय॥१०॥राग भैरूं
तथा सोरठ इकताल ॥ बाजैंबधाईबधाईवृषभानजूकीपोरि ॥ रा
वरिमेंरंगहोतदेषिसषीदोरि ॥ भईकीरतिकैंकन्यकासुलोचनाबिसा
ल मनहुंचंद्रजोतिरूपमंजरीरसाल॥१॥ जसुधाश्ररुनंदहुवैआनंद
मैंअधीर ॥ आयेरनवासकैंनिवासभईभीर ॥ सुनतनाहिंतहांतन
ककानिलगिरह्यो ॥ गोपिकासमूहगानगरजिवृजरह्यो ॥ २ ॥ हौं
नलगेमंगलकौतूहलनिबिधान ॥ सबहीआवेसचितभूलेहैंसयान ॥
नाचतवृषभाननंदजोरैंदोउबाह ॥ पुलतपैंचहलततोंदआनंदहिय
मांह ॥ ३ ॥ महरांनीहस्तसबैंकोतिगनिहार॥दोरिदोरिदुहुंनिपैंघट
ढोरतबृजनारि ॥ दधिकादौंमांझनिकरभामिनीसलोल ॥ मनौंक्षीर

रावरमाच्योरंग ॥२॥ नाचैंगावैंढाढनी, कहैंवधाईपांउ ॥ हुलरावति श्रीराधिका, लैलैकुलकोनांउ ॥३॥ कीरतिरानीयौंकह्यो, गोपराज सिषमोर ॥ येजाचकनंदरायके, जोदीजैसोथोर ॥४॥ पूछोढाढनि नांवकौं, कहोकीरतिमुषषोलि॥नवलायाकीनांवहैं, बिजैंसखीकह्यो बोलि ॥ ५ ॥ तिताल ॥ हेलीआजकीघरीछिनभलियां ॥ घनआनंदसकलबृजबरषतकीरतबेलसुफलियां ॥ इतप्रगटीगोरीउतश्याम हिहियआनंदकलमालियां ॥ नागरियाजोरीअतिलौंनीहौंनीहिंरंगरलियां ॥ ३ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ आजवृषभानकैंबधाई॥ ग्रहमहभीरभईरावरमैंगावतअलीसुहाई ॥ हंसिहंसिगोपीमिलतपरस्परआनंदउरनसमाई ॥ प्रगटभयेउतरसिकबिहारीइतप्यारीनिधिआई ॥४॥ आनकबिकृत ॥ तिताल ॥ वधावणोंहेहेलीआजरली ॥ भईभीरवृषभानभवनमैंकीरतिबेलिफली ॥ जुवतीवृंदघरघरतैंमंगलगावतआवतचली ॥ रासिकबिहारीचंदहेतजनुप्रगटीकुमुदकली ॥ ॥ ५ ॥ आन कवि कृत राग षमायच तिताल ॥ होछैवृषभानरैंघरलाषांरीबधाईआज ॥ कुंवरिलाडिलीजनमलियोछैंमोहनरैंसुषकाज ॥ हुलरावैंमंगलगावैंढाढनिलीयांसुघरसमाज ॥ रसिकबिहारीमनआनंदहूवोप्रगटीनिजसिरताज ॥ ६ ॥ आनकबिकृततिताल ॥ होछैंवृषभांनरैंघरआनंदरलीवधावणौं ॥ जनमीराधावृजसुखसाधालिरषिनैंणासुखपावणौं ॥ आंगणग्रहमहभीडहुईछैंआजकोदिवससुहावणौं ॥ प्रगटीछैंरासिकबिहारीकीजोडीहुवोमनोरथभावणौं ॥७॥ रागबिहागरोतिताल ॥ कीरतजूकोअबहींपलकलगीहैं ॥ सबदिन इच्छवजनमजगीहैं ॥ पोढीनिकटललीलघुबेषैं ॥ मइयाजागिजा

दासभुवमंडलअकाशराजतनिसांन ॥१६॥ इनबधाईकेबीचबीचगा
यवेमेंदैने ये दोहा॥ बेटीहुईभांनकैं, रुनंदकैंफरजंद ॥ गयेहैंदुषदंद
आज, वृजमैंआनंद ॥१॥ हमसेगुनीबृजकेतुमबृजकेसिरताजा हम
सेनहींगुनीअरुतुमसेमहाराजा ॥२॥नाचैहैंग्वालिनी, नाचैंहैंग्वाल ॥
कीरतकेकन्याभई, जसोदाकैंलाल ॥ ३ ॥ वेगावैंकौतूहल, करिना
चैंवुसियाल ॥ दूधदहींहरदजरद, रंगेसबग्वाल ॥ ४॥ बैठेहैंआयकैं,
वृषभांनरायबाहिर ॥ बषसैंदिलखुसीहुवे, जरजरीजवाहिर ॥ ५ ॥
नितानितहोस्यादियां, जैसोहैंआज ॥ भांनरायनंदराय, जीयोमहा
राज ॥ ६ ॥ अरेलोगौंआ जइहांसादीसीक्याहैं ॥ गोपियांहुगोप,
दांनदेतेल्याल्याहैं ॥ ७ ॥ स्यादीबृजराजजूकैंरोसनीलगाई ॥
फिररिरिररिरिरिरि, छूटतिहवाई ॥ ८ ॥ गायबखसीबैलबखसे,
औरबखसेघोड़े ॥ हुवेनिहालअमलदार, टूटेअरुषोड़े ॥ ९ ॥ कुसी
सबहुए, वृषभानकेंउत्साह ॥ जहूजिसकेलठाजो, इनकाबदपा
ह ॥ १० ॥ ठाढ़ेहैंभट्टथट्ट, देखतेमिसर ॥ सुवासारोमोर मैंनाउड़ते
हैंफर॥११॥ तिताल ॥ आजवृषभानकेंदरबारखुसबखतियां॥लीया
जनमजिहानकीसाहिबधोलियामैंइसवखतियां ॥ परेग्वानभरिभरि
कैंआगैंकीहैंफरसफरूस ॥ नागरगुनीगवैयागावैंअजबजलूसजलू
स ॥ हुईअजबजलूसजगमगी ॥ आईगोपियांसकलरगमगीगोया
घरघरमंगलकाज ॥ बषसतजरीजवांहरआजयेहोऐसीहोयसदा
ईसादियां ॥ स्यादियांदिलउदमादियां ॥ लेलेनजरफजरउठि
आईबडडीसाहिबगोपजादियां ॥ अगरधूमअरुबटैंअरगजाअतर
वगरतम्बोल ॥ नागरअंदरमहलमहलमेंचहलपहलकल्लोल ॥ चह

सिंधुमध्यदामिनीकलोल ॥४॥ झूंमिझूंमिझूमकातियनाचतीसुहात ॥ घूंमिघूंमिलंहगनिकीलावनिलहरात ॥ जूरासिरषुलतडुलतमोतिन कीमाल ॥ चूरारहेचमकिचमकिकुंडलकीहाल॥५॥उत्सवरसमत्तमि टतनाहिंउरउमंग॥छुटतबसनतुटतहारबेसह्मारअंग॥ आनंदकैंआनं दहुवैंआनंदरह्योपूरि ॥ नागरियाप्रगटभई॥ आनंदकीमूरि६॥११॥ आन कबिकृत राग सोरठ तथा मलार तिताल ॥बृषभानकैंमंदलरा बाजैं । सुभघरीदिनसुभमहूरतगहरैंगहरैंगाजैं ॥ गावोमंगलरहसि बधाईपाग्रोंरानीकीरतकैंघरकाजैं ॥ रसिकबिहारीकीयहजोरीभये मनोरथआजैं ॥ १२ ॥ रागकाफीइकताल ॥ हाहामुबारकबादि यां ॥ अरीरानीऐसीयांनितसादियां ॥ राधाचंदमुखीप्रगटीबेटियां॥ औरतारनिसीगोपजादियां ॥ फूलियांअंगनमावैंसलौंनियांरंगभरी रसबादियां ॥नागरीदासषुसीदिलमैंआजुगोपीफिरैंउदमादियां१३ तिताल ॥ आजुझबिछाईहैंमाईबरसानौंलागतसुहावनौं ॥ भवनभव नकंचनकलशनिधुजाफहरफहरफहरांवनौं ॥ तैंसियभादौंउमाड़ि घुमड़िघटाघहरघहरघहरांवनौं॥राधाजनमउमगिनागरमनमहरमह रमहरांवनौं ॥१४॥ रागग्रसावरीतिताल ॥ अरीमाईश्रीकीरातिरां नीकैंकन्याअनूपभई ॥ सुबरिसदनकोतिमरगयोमिटिभयेप्रकाशम ई ॥ महरानैंमंगलघरघरकछुऔरेंओपठई ॥ नागरियाआनंदचंद्रि कासबबृजमांझछई ॥ १५ ॥ रागटोडीचौताल ॥ वृषभांनभवन भईभीरआंगानितनिरह्योमंगलधुनिबितांन ॥ टूटैंहारमोतिनकेछूटैं सीसजूराबारबेसह्मारआनंदमैंगोपीझूमिकदैंदैंकरतगांन ॥ कीरतज ईहैकन्याअनूपमरूपगोभासकलबृजकीसोभासुषानिधांन ॥ नागरी

तिहठांवस्योज्जुगांम ॥ ताहीतैंयाकोभयो, सुषवरसानानांम ॥ २ ॥ बिमलमहलऊंचीअटा, रतनकिरनिमिलिजोति ॥ बिविधिरंगमणि नगजटित. जगमगजगमगहोति ॥ ३ ॥ भूपतिवन्दीजननकी, भी ररहतिनितद्दार ॥ आननृपतिबंछितरहैंकरैंकृपाप्रतिहार ॥ ४ ॥ ऐ सोबरसानौंप्रगट. गावतवेदपुरान ॥ महाराजवृषभानको, सरवोप रिअस्थान ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ भयेप्रथमनृपनीपउदार ॥ तिनकेजू पप्रसिधसंसार ॥ नृपदयादितिनकेसुतजानौं ॥ अधिकप्रतापजग तजिहिंमानौं ॥ धर्मधीरतिनकेअतिधीर ॥ कुलअवतंसबंशआभीर॥ महीभाननृपतिनकेसागर ॥ सुतातिनकेनवभानउजागर ॥ २ ॥ म हीभानमहिमंडलनाथ ॥ जिनकीजगसबपावनगाथ ॥ सत्यभान सुभसत्यकीसीवां ॥ दईजगतमेंजसुकीनीवां ॥ ३ ॥ श्रीगुनभान भानसमराजैं ॥ दूरितिमिरदेखततिहिंभाजैं ॥ धर्मभानधरधर्मधुरं धर ॥ जाकोजससुनिलजितपुरंदर ॥ ४ ॥ श्रीरुचिभानरुचिरजग मंडन ॥ तासमऔरनाहिंनवषंडन ॥ श्रीबरभानमहाबरजानौं ॥ बं दीजनपंकजरविमानौं ॥ श्रीसुभांनरतिभांनमहामति ॥ अतिअनू पसमऔरनांहिछिति ॥ ६ ॥ दोहा ॥ चंद्रवंशअवतंसकुल, महारा जवृषभान ॥ सुरनरपगबंदितसदा, गावतवेदपुरान ॥ १ ॥ अष्ट सिद्धिनवनिद्धिजिहीं. टहलकरतनितधाम ॥ कंवलादासीलौंफिर ति, महलटहलदिनजाम ॥ २ ॥ मुक्तिरहतिद्दारैंपरी, आज्ञाबसक रजोर ॥ किंकरकेकिंकरसोऊ, चितवतनाहिंदृगकोर ॥ ३ ॥ जबवै भववडभागसुष, अतिऐश्वर्यउदार ॥ इनबातनकोनेकहू, पावतना हिनपार ॥ ४ ॥ ऐसेश्रीवृषभानकें, रानीकीरतिनाउं ॥ हौंवाकेवड

लंपहलकल्लोलनिडोलनि ॥ झनकमनकपगनूपरवोलनि ॥ मनमो तीपटलेहोलेहो ॥ रावरियहधुनिस्रुनियतएहो ॥ ८ ॥ तिताल ॥ कीरतिकेकन्याहोतमाचीदधकादौंअतिमानौंलोपतीरकौंचल्योसमुद्रछीरको ॥ वेदधुनिगानधुनिपटहनिसानधुनिब्रह्मलोकगईपुरभेदसनासीरको ॥ मोतिनकेभारभरीमोरतिनकेहारदेतजुरीहैंमासीगोपीपारहैनभीरको ॥ नागरियादेवलभदेपिकहैंवारवारधन्यआजअवनीमैंभवनअहीरको ॥ ६ ॥ तिताल ॥ अरीरानीतेरीचिरजीवोराधासोहनी ॥ होतहीप्रगटमहाआनंदकीडारिदईब्रजमोहनीनंदसुवनअरुकुंवरीतिहारीजोरीबढोजगजोहनी ॥ नागरीदासअसीसतडाढानिमहलमहल सुख बोहनी ॥ १७ ॥ तिताल ॥ तूंसुनिबाजतआजवधाईबाजतआजवधाईरी ॥ मोहनमंगलधुनिछाईरीबहिपूरिरहीसहनाईरी ॥ चलिबेगवधायैंकीरतिकन्याजाईरी ॥ १ ॥ छिनछिनउत्सवअवसरसांनैं ॥ उठिवेगवधूजिनअरसानैं ॥ दधकादौंमाचीबरसांनैं ॥ सुपबरसरह्योरीबरननिनजातहीकाई ॥ २ ॥ मिलिचलीचपलगजगामिनी ॥ उपहारलियेअभिरामिनी ॥ आईसालिताज्योंभामिनी ॥ रससागरउमग्योगावतगीतसुहाई ॥ ३ ॥ वृषभानभवनमैंसुपकारी ॥ माच्योकोलाहलअतिभारी ॥ झूमकदैंनाचैंबृजनारी ॥ तननाहिंसह्मारैंनागरियासुषदाई ॥ ४ ॥

## अथ वृषभानजीकी बंशावली ॥

दोहा ॥ मोहनमोहनिपदकँवल, धरउरकरनिप्रसंस ॥ वरनो श्रीवृषभानको, जगतप्रचुरबरबंस ॥ १ ॥ बरसानपरबतसुपद,

झारि ॥ पदरागदेवगन्धार ॥ चौताल ॥ मोहनमुखलखिमोहिर
ह्योनपरतघरीहूनघरमाई ॥ बीथनिमेंफेरीकरैंहरैं २ पैंडभरैंशीशपैं
दहेरीधरैंप्रेमरसछकानिछकाई ॥ संगभौंरभीरचलैंनैननमेंनीरबीर
पीरहियैंनेहबिषलहरिदबाई ॥ नागरियाकृष्णरूपभईभूलीदेहदधि
नामभूलीकहैंटेरलेहुरीकन्हाई ॥ १ ॥ यापदकीअलापचारीमें देने
ए ॥ दोहा ॥ दानकेलिजोमनबसैं, ताहिनकछूसुहाय ॥ ताजिबृन्दा
बनमाधुरी, अनतनकबहूंजाय ॥ १ ॥ मेरेनिताचितमेंबसो, दंपतिदानि
बिहार ॥ मुखपरझूठीझगरई, नैननिकरतजुहार ॥ २ ॥ मोमनला
गीदुहुंनकी, दानकेलिबतरानि ॥ नैननिहाहाषानइत, उतभौंहेंस
तरांनि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उनईनीरसनेह ॥ पौरिसां
करीगिरतहां, दानरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरसमांगतकरतदोउ, नैंन
सैंनसनमान ॥ नागरियाकेहियबसो, दानरंगबतरान ॥ ५ ॥ पद
रागबिलावलख्याल ॥ तिताल ॥ मागैंघनश्यामदानदई ॥ गोर
सदानसुन्योंनहिंकबहूंयहअबकैसीभई ॥ दीयोनहिंलेतहायहसि
हेरतनेककरतगई ॥ नागरीदासकौनबिधिबनिहैयहब्रजरीतिनई ॥ १ ॥
तिताल ॥ नितदानमांगैगहबरगैलमैंकितजांउरी ॥ सांवरोसोधोटा
अरबीलोहैंमनमोहननांवरी ॥ अंचरगहिहसिचाहिरहैंमुषहूंजियमैं
सकुचांवरी ॥ नागरीदासउतैंउरझेरोइतैंचवइयागावरी ॥ ३ ॥
पदरागसारंगतिताल ॥ तजिदीजैंगोहनसोहनमनसोहनगुमांनी ॥
परीबुरीयहटेवनिडरअतिअंचरछुवतनयेदधिदानी ॥ झूंटैंझगरतड
गरतजतनहिंअहाकहालंगराईठानी ॥ नागरकंवरतिहारेमनकीमैं
अबसबजानीजूजानी ॥ १ ॥ तिताल ॥ जोतोअबइनहिंछुवोगेद

भागको, तनकपारनहिंपाउं ॥ ५ ॥ ताकेकन्यापुत्रभए, जनप्रसि द्धहैंनाम ॥ बरणौंअबश्रीराधिका, तिनसोंमेरेकाम ॥ ६ ॥ प्राची कीरतिकुक्षितैं, कन्याभईअनूप ॥ भानसिंधुआनंददा, चंद्रमंजरी रूप ॥ ७ ॥ कुलमंडनवृषभानकी, भूषनजगतअभूत ॥ वारौंको टिकनृपनके, याकन्यापरपूत ॥ ८ ॥ वेगबढोआरोग्यतन, भागब ढोउत्साह ॥ नंदरायकेकुंवरसौं, वेगहिहोहुबिवाह ॥ ९ ॥ होवृंदाब नईश्वरी, गुनपूरनसुषरास॥ विधिनांसैंमांगतरहैं, जाचकनागरीदा स॥१०॥ इति वृषभानजीकीवंशावली ॥ आन कविकृत राग गौरी ॥ तिताल ॥ आजबरसानैंमंगलमाई ॥ कुंवरिललीकोजनमभयोहै घरघरबजतबधाई ॥ मोतिनचौकपुरावोगावोदेहुअसीससुहाई ॥ रसिकविहारीकीयहजीवनिप्रगटभईसुषदाई ॥ ११ ॥ आनकवि कृतरागनायकीतालचपक ॥ आजबधावोवृषभानकैंधाम ॥ मंग लकलशलियेआवतगावतव्रजकीबाम॥ कीरतिकैंकीरतिप्रगटीहैंरू पधरैंअभिराम ॥ रसिकबिहारीकीयहजोरीहोनीराधानाम॥२॥ इति राधाउत्सव ॥ अथ दान या यापदकी आलापचारीमे देने ए

दोहा ॥ हरिमूरतिचितमेंचुभी, नैंनविपुलकृतनीर, सोसगग रियागिरतसी, जकिरहीयमुनातीर ॥१॥ घैरुहोतजान्योंनउर, उ ड़तनजान्योंचीर ॥ गिरतनजानीगगरिया, रहतनछानीपीर ॥२॥ हरीहरीकहिलेहुरी, बिसरोदधिकोनांव॥ कृष्णमईग्वारिनभई, कौत गलाग्योगांव ॥ ३ ॥ महारूपमदिराछकी, चलतडगमगतपाय ॥ जोदेखतग्वारिनछकी, निहैंछकनिचढ़िजाय ॥४ ॥ गिरैंनग्वारिनधु किउठै, घायलमनरिझवार॥नागरियारनसुभठज्यौं, रहतसह्यारिस

लता, अंचरछुटतदुकूल॥ इतउतबाढीदुहूंनमन, फूलनिबीनतफूल १॥
दुहुंमिलिफूलनबीनही, जमुनाकूलनिसांझ ॥ रंगरलीअतिहुवै, कुं
जगलिनकैंमांझ ॥ २ ॥ बनफूल्योफूल्योज्ञमन, फूलबेसअभिराम॥
सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगौरीश्याम ॥ ३ ॥ नीलपीतपटछो
रछवि, उरझैद्रुमकोभीर ॥ मुरसुरझांवनदुहुनकी, मेरेउरझीबीर॥
॥ ४ ॥ फूलनिमिसतियसौंमिलत, सषीरूपरचिछैल ॥ नागरिया
केहियबसो, फूलरंगीलिसैल ॥ ५ ॥ राग गौरी तिताल ॥ जमुना
कैंकूलकूललतारहीझूलरी ॥ तहांहैसषीहैंनीलेपियरेदुकूलरी ॥ गोधू
लकवेरहूतैंहुवैंगईअबेरमैंदेषतठगीसीरहीदोऊतिहिंवेरमें॥ बीनतहैंफू
लफूलफलहिलहतहैंझमकिझुकावैंझूमिडारनिगहतहैं ॥ सांवरीओ
गोरिछबिसोहैंअलबेलीहैंसबहींतैंन्यारीन्यारीडोलतअकेलीहैं ॥ बेस
रिअलकमालअरुझतपातरीताकोसुरझावनिमैंअरझीहीजातरी ॥ मे
रीसौंकपटतजिखोलतमुषमौनहैं ॥ नागरियामोंसौंकहिसषीवाहिकौं
नहैं ॥१॥ श्रीराग तिलाल ॥ रंगसरसानैंबरसानैंबनबागश्यामाघेलैं
सांझीसांझबहोसाथनिसिंगारिकैं ॥ नूपुरनिनादपूरिरह्योहैद्रुमनि
मांझजहांतहांलेतलडकीलीकुसमउतारिकैं ॥ सांवरीनवेलीवालनी
लमनिवेलीसीअकेलीफिरैंवाहांजोरीसंगसुकुवारिकैं ॥ डारहीनवावैं
मिलिबीनैंफूलपावैंफलनागरियावारैंमनकौतिकहारिकैं ॥ २ ॥ श्री
राग ॥ तिताल ॥ सौहैंमुखकमलपैंभौंहैंलटभ्रंगपांतिनैंनअलसोहैंक
लगाकीजनुपषियां ॥ नासिकासरूसीक्यारीअधरदुपैरियाकीमुस
कनिमंदमकरंदसीमैंलषियां ॥ प्रीतसांझीकाजकीनीकामकाछीछ
बिआछीऔरसाछीकोहैताकीसाछीसबसषियां ॥ फूलीबयसंधिसां

धिदानी ॥ तोएगोपकुंवरिहमहूतैंनांहींरहैगीसतरांनी ॥ ज्यौंतुमनंदनंदनत्यौंएऊअपनेकुलअभिमानी ॥ जाहुचलेनागरगुनआगरसूधेंगैलगुमांनी॥२॥ राग ॥ इकताल ॥ गईहूतीबेचनगोरसकैं ॥ रोकीआंनिदानमिसुमोहनबाकीचितवनिमेरेहियमांझकसकैं ॥ अंचरागहिफिरवहियांगहीरीकरमेरोमसक्योसुअवलौंचसकैं ॥ नागरीदासकठिनमोहिंबीततउहितोमनलीन्हौंहांसिहांसिकैं ॥ १ ॥ पदरागगोरीतिताल ॥ दांनदैरीव्रपभानकुंवारि ॥ छाड़िदेहुअबचाराबिचारकरतझगरईहोतअबार ॥ हाहागोरसप्यारीकरतझगरईहोतअवार ॥ हाहागोरसप्यारीपाय ॥ क्यौंझुकिझिझकतहंघ्रनपाय ॥ नागरिनैंननिकरसनमांन ॥ हसिबसकारेलयेश्यामसुजांन ॥ ४ ॥ तिताल॥ लालनैंकमारगदीजैंएतीनकीजैंबराजोरी ॥ ठाढ़ैझगरतसांझभईअबहारिपसारतझोरी ॥ थहरतदेहनठहरतासिरपरगरईलगतकमोरी ॥ टरतनहींहोडरतनहींहाकरतनहींहोथोरी ॥ जिनकौंतुमयहअंचरागहतहोसोहैकुंवरिकिसोरी ॥ हीयेऔरकछुलालचललकैंपलकैंकरतनिहोरी ॥ प्यारेकुंवरछबीलेनागरपाईचितकीचोरी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ छांड़िछांड़िदैरेअंचलचंचलछैला ॥ इतौकरतलंगराईललाक्यौंरोकिमहीकोगैला ॥ जांननदेतदांनमांगतहठिठाढ़ेहुवैआडोअरैला ॥ सीपेकहांअनोषेनागरएजोबनकेफैला ॥ ६ ॥ रागतिताल॥ लीनौंहठहेरीमेरोंकान्हमहीरी ॥ आवतदेषिबैठिमारगमैंअचानकआंनिगहीरी ॥ दीनौंनहींमोलकोनींवरजोरीकहाकरौंसबहीसहीरी॥ नागरीदासभईसुभईअबबातनजातकहीरी ॥ ७ ॥ इतिदानं ॥

## अथ सांझिउत्सव ॥

यापदकीचलापचारी मैं दैने ये ॥ दोहा ॥ मिलतनवावतनव

कभुववंकछवीलैनैननथकीदुरनिअरुनअधरनपरवरनतबनैनबैन ॥ चिबुकचारुझलककपोलनिकुंडलरतनसुरंग॥ उरऊपरपदकनीकी पांतिकटिछीनछरहरैअंग ॥ १ ॥ मनहूलताअनुरागकीपूजलसांझीसांझ ॥ त्योंउडगनमैंचंद्रमात्योंस्यामाजूसखियनिमांझ॥ स्यामाजूसषियनमांझछबिभरीआरतीआयउतारैं ॥ सोभारहिसबदेखिति हिसमैंअपनौंमनधनवारैं ॥ बजिउठैंबीनमृदंगमहुवरगीतमहरगायैं॥ अर्चितदेवीगहिगंडिमाच्योतियनपहुपबरषायैं॥ यहसोभादुरिदेखत हेपियधरनिधुकतिहिंबार ॥ नागरिसषीहाथदैकपियांरापेस्यामसझारि ॥ २ ॥ रागपूर्वी ॥ इकताल ॥ रहेदोउबदननिहारिनिहारि फूलनबीनतस्यामसषीउतइतश्यामासुकुमारि ॥ लताकरनिमैंरहिग इतउतसकैंकौनानिरबारि॥ नागरियामिलिनैनदुहुनिकेवडेठगनिठग वारि॥३॥ आंनकबिकृत इकताल ॥ पेलैंसांझीसांझप्यारी॥ गोपकुंवारिसाथपिलियांसाथेचावसौंचतुरसिंगारी ॥ फूलभरीफिरैंफूलले एज्योंफूलरहीफुलवारी ॥ रह्यांठग्यालषिरूपलालचीप्रीतमरासिक बिहारी॥ ४ ॥ रागकामोद इकताल ॥ अरीआजसांझीमैंजमुनां कैंकूलफूललेतफलपाये ॥ हेरतहेरतसघनद्रुमनमैंचितवतहीताहि चायनचितचिकनाये ॥ महामुदितवृषभानभवनकागावतचलीब धाये ॥ नागरियासांझीकेपूजतइहिंवृंदावनभयेमनोरथभाये ॥ ६ ॥ तिताल ॥ कोऊगोपकिसोरीसांझीपूजनआवैं ॥ सांवरेअंगकवलद लनैननिसुंदरताऊफनावैं ॥ भानभवनराधेजूकेसंगमिलिमिलिगी तनिगावैं ॥ कारनकौनकुंवरिनागरिदिसिदेषिदेषिमुसक्यावैं ॥ ॥ १० ॥ राग गौरी तिताल ॥ फूलनिबीननहौंगईजहांजमुना

झराधारूपबागमांझडोलैंआजफूलभरीनागरकीअंपियां ॥ ३॥ राग गौरी तिताल ॥ दुहुंनकीअंषियांअषियनिमाझ ॥ अपियांहीसां झीपेलतहैंअंषियनिफूलीसांझरूपवगीचनिफिरतफूलभरीगरवाहि यांदैंअंपियां॥ गउरश्यामअपियनकीउरझनिउरझीनागरसांषियां४ ॥ तिताल ॥ रूपलालचीलालहुवैरूपमलनियां ॥ छविबिछियनि छनकायकैंचलीहैंछलनियां॥तिहिबिरियांडरियांलैंभरियाहारकी ॥ संगअलिंदधुनिमंदमंदगुंजारकी॥पहुंचीजायसुभायसुभायकहतमें॥ मीनकेतरसषेतसुबनसंकेतमैं ॥ उततैंगावतआवतदेषीभावंती ॥ वृ जयुवतिनजूथनिंमिलिछबिसरसावंती ॥ तरुतरुअंतरसवैंरगमगीभा मिनी॥मनुबादरवादरप्रतिदमकतदामिनी ॥ परमप्रवीननवीनसुफू लनवीनही ॥ द्रुमबंशीउरझीजनुकंचनमीनही ॥ रहिगईकुंवरिइ कौंसीश्रीवृषभानकी ॥ जगमगरहीमुखजोंतिदबीदुतिआनकी ॥ प्रेमजंजालनिमालनिलषिसुकुवारकौं ॥ नियरैंठाढीआनिलियेउप हारकौं ॥ लीमालिनिबैनमैंनअनकूलियैं ॥ बनदेवीकैंधामचढैयेफू लयैं ॥ लैंगईबनअंधियारगउरकौसांवरी ॥ बैठिअकेलेनैंननिपरसे पांवरी ॥ पहराईमालामालिनितिहिकालमैं ॥ उयरथाईसबबातकर निचलचालमैं ॥ कुंवरिसकुचिमुसकाइदसनअंगुरीधरी ॥ छलीछ बीलैंछैलरसिकअंकनिभरी ॥ नागरियादोउमीतअधरआसवपियैं॥ गउरश्यामतनउरझिनिउरझीमोहियैं ॥ ५ ॥ ॥ तिताल ॥ कुंवरि अलबेलीरीअतिसुन्दरसुकुवारि ॥ श्रीराधेकेरूपपरवारौंसुरानिनर निकीनारि ॥ वारौंसुरनरनारिनिरषिमुषतनकपलकनहिंलागैं ॥ ब दनबिमलराकेसचंद्रिकाजगमगायरहीआगैं ॥ शीसफूलश्रीमंतअल

सांझीचीत ॥ स्वेदसिथिलसियरीभईबहिरहेथाहिरथहराय ॥ छुवत छबीलीकीछांहकौंवाकोतनपिघल्योसोजाय ॥ रीझिव्यथाप्रगटन लगीजबंस्यामाश्यामनिहारि ॥ निजमंदरलैंआइकैंभरीरंगअंक वारि ॥ नागरियारसरंगरगमगेदोऊकुसमसेझकैंमांझ ॥ सांझीपू जतपियमिलेपरमसलौंनीसांझ ॥ इतिसांझीउत्सवसमाप्तम् ॥

## अथ शरद उत्सव ॥

समयवेणुगीत॥ पद राग बिलावल तथा धनाश्री तथा सोरठ ताल फिरती ॥ प्रथम चपक ॥ पाछे इकताल ॥ सुनिरीसषीसुष दाई ॥ देषिअमलसरदऋतुआई ॥ आईसरदगतिपंकभुवभइस्व च्छअंबुअकाशहैं ॥ कुंजकाननअतिप्रफुल्लितछईकुसुमसुवासहैं॥ ठौरठौरसरोवरीबिचअमलकमलनिपुंजरी ॥ तहांभ्रमतअलिंदमाते करतआतुरगुंजरी ॥ सुभगवृन्दाबनअवनिवहैंत्रिबिधिरोचकपवन हैं ॥ दासनागरदेखितिहिकरतमोहनगवनहैं ॥ १ ॥ उरमंडितबन माला ॥ डोलैंगायनिसंगगुपाला ॥ संगगायनिकैंगुपालाभेषनव नटवराकियें ॥ मोरपच्छप्रसूनपुंजप्रबालजूराशिरदियें ॥ कंजकरन निकरानिकातनधातगुंजावलिलसैं ॥ दसनिकिरननिजारकोउरहा रफैलतजबहसैं॥ मदत्रिघूर्णितनैंनसोहैंबंकभौंहैंमनहरैं ॥ दासनागर स्यामघनलखिमुरलिकाअधरनिधरैं ॥ २ ॥ पशुपंछीचहुंदिशिरी ॥ मुनिधुनिगांनदेहसुधिबिसरी ॥ बिसरीजुसुधिषगमृगचकितचितमु खनकहूंकनत्रिनछियें ॥ बैंनबरषतनीरनैननिनाहिंबछरापयपियें ॥ थक्योमंदसमीरसुनिद्रुमपातहुनपल्लवहलैं ॥ वियकिजमुनाजलर

कूलद्रुमनिकोभीर ॥ अरझिगयोअरनीकीडारियांतिहिंछिनमेरोअं चरबीर ॥ तवकोउनिकसिअचानकआयोमालतीसघनलतानिर वारि ॥ विनहीकहेमेरोपटसरुझावतइकटकमोदिसरह्योनिहारि ॥ होंसकुचनिझुकिदबिजातइतउतवाहिनैननिहाहापात ॥ मनउर झायबसनसुरझायोकहाकहौंऔरलाजकीवात ॥ नामनजान्यो श्यामअंगहैंपियरैंरंगवाकोछुतोदुकूल ॥ अववहीबनलैचलिनागरि सषीफिरिसांझीबीननिकौंफूल ॥ ७ ॥ तिताल ॥ आजूरंगहैंसां झीमांझि ॥ भईपरमसलौनीसांझि ॥ दोहा ॥ हरीभूमिसौंझूमिकैं, मिलेकुसमझुकिझौंर ॥ मिल्योजुपवनसुगंधसौं, मिलेलताअरुभौंर ॥ ॥ १ ॥ पीतजुहीकुवलैंकुसम, मिलेपेलिझिलिझेलि ॥ मिलेबिंब फलफलभलैं, अरूतमालसौंबेलि ॥ २ ॥ कदलीमिलिजुअंबसौं, अरुकदंबकचनार ॥ मिलामिलीनितहीरहो, इहिबनकरतबिहार ॥ ॥ ३ ॥ नागरिमनभायेभये, चलीभवनमिलिबाल ॥ पायोफूल नवीनतैं, रतनअमोलकलाल ॥ ४ ॥ तिताल ॥ आईहैंमालनियां कोऊफूललियैंरंगरंग ॥ नषसिषलौंअतिसोहनीमानौंमोहनीसांवरें अंगचलितललितगतिहंसकीतनऔढैझीनीचीर ॥ रूपअचंभोव्हैर ह्योधाकेंचहुंदिसमाचीभीर ॥ फूलफूलसौंभेटिकियेजहांसांझीरचैं सुकुंवारि ॥ ताहिलाडिलीरीझिकैंदईमोतिनमालउतारि ॥ बाला मालापरसिकैंभयेकंपरोमांचितगात ॥ बिस्मयव्हैंसषियांरहीलषि कनअंषियांमुसक्यात ॥ क्यौंकंपतबूझयोललीउहीकह्योजोरिवेंव पांन ॥ तुममहीद्रवृषभांनकुवरिहौदीनप्रजाभयमांन ॥ ज्यौंज्यौं करग्यारीगहेंकहेंतूमतिमानेंभीत ॥ सांझीचीतनचीतव्हैंसिसकैंन

ल ॥ समरबिजैंआरंभरसरासकरननन्दलाल ॥ ३ ॥ परमप्रेमआरूढ़रथविपमपन्थधुनिबैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहितचढ़ीमदनगढ़लैंन ॥ ४ ॥ बिमलजुन्हैयाजगमगीगईबैंनधुनिछाय ॥ प्रेमनदीतियरगमगीवृन्दाकाननआय ॥ ५ ॥ सुनतबैंनबनतियचलीमुनिमनभयेअधीर ॥ नागरलषिरसरासनभभईबिमाननभीर ॥ ६ ॥ पदरागबिहागरोइकताल ॥ जुरेकरनिकरकमलतियनके ॥ मंडलहोतनित्तचलअचलचंचलकुंडलहारहियनके ॥ वायबंध्योकलगांनबांसुरीबिवससुरबधूअंकापियनके ॥ अंगअनंगनियरिरंभनिबहोहावभावभौंहैंअंपियनके ॥ प्रियासंगलैंदुरिगयेहरिबनहेरतसघनद्रुंदसषियनके ॥नागरियाछबिसागरबिनमनौंतलफतजूथमैंनमाछियनके ॥१॥ इकताल ॥ हरिसंगहुतीसोअकेलीवहिठाढी ॥ दांमिनिसीदेहकोप्रकाशआसपासदेषिरहीद्रुमबेलिनिमैंचित्रकीसीकाढ़ी ॥ कासिकासिपियपियकहिटेरतमहाबिरहकीबेदनबाढ़ी ॥ नागरीदासरासरसबरषायहायकितिदुरेघनस्यांमदुषितहैंगाढी ॥ २ ॥ इकताल ॥ बैठेजायपुलिनमेंरासिकबिहारी ॥ बीचआपबृजचंदमनोहरउडमंडलबृजनारी ॥ नवनिचोलअपअपनेंसबमिलिलायबिछायदये ॥ तनथिरदांमिनसेनिकसेपटवदराउतरगये ॥ बंकभौंहनैंनांरसमातेछुटिअलकैंअलबेली ॥ प्रेमबिवसबूझतपियकौंतियहंसिहंसिप्रेमपहेली॥ इकभजतेकौंभजतएकाबिनभजतभजई ॥ कहीकुंवरतेकौंनआहिजेइनदोउनकौंतजई ॥ समुझिअर्थमुसकायनैंनभरिकहतजोरकरप्यारो ॥ नागरियाहितसौंनहिऊरनहौंनितरिनीतिहारो ॥ ३ ॥ तालचपकतथातिताल ॥ रासरच्योनंदलाला ॥ लीनैंसंगसकलब्रजबाल॥

ह्वोरथभांननहिंआगेचलैं ॥ नभबिमाननिगिरतसीतियपतिउछंगनिवारदी ॥ दासनागरसुनतधुनिसुरवधूदेहविसारदी ॥ ३ ॥ रीतैंकौनपुण्यतपकीन्हौं ॥ पियकोअधरसुधारसलीनौं ॥ लीनौंअधररससुधाबनमेंअरीबैरनबांसुरी ॥ हमभवनतलफतपरीपरीकियोधीरजनासुरी ॥ उडतअंचरउरजउघरतबैनधुनिसुधिहरिलई ॥ कचरिछुटिभइसिथलनींवीमदनपीडतानिरदई ॥ कहसह्यारिसह्यारिकवहूकबहुआवतसांवरो ॥ दासनागरध्यानतनमयभरतअंकनितांवरो ॥ ४ ॥

## अथ सरद रास बांसुरी ॥ राग केदारो ॥

सुनिधुनिबैंनचलींहैंबृजजुवातिनकीभीर ॥ ज्योंदुंदभिसुनिसनमुखनिखसतसमरसुभटरनधीर ॥ प्रेमषेतवृन्दाबनमगरह्योछयोघोषमंजीर ॥ नागरिनागरमिलतहींमैंचलेकामकटाछनितीर ॥ तालचरचरी ॥ चतुरअहदूतिकाबांसुरीस्यामकी ॥ नवलबृजबधुनिकेश्रायकाननलगीदूरिकरिलाजकुलकानसबबामकी ॥ भवनिप्रतिभवनितैंलैचलीबिपनकौंभुराकिदइडारिकैंमंत्रपढ़िकामकी ॥ करिकैंतियअतनमइमिलइनागरिनईदइनसुधिरहनिअपअपनैंसुखधामकी २

## सरदरासोत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ निसिसदोत्फूलिमल्लिकाककुभकिरनराकेस ॥ गहीबेणुहरिनिरपिवनरासरमणआवेस ॥ ॥ १ ॥ पूरनससिनिसिसरदकीचलवनमलयसमीर ॥ होतबेणुरवरासहिततरुनतनइयातीर ॥ २ ॥ बंसीधुनिदूतीपढ़ैंबोललईवृजबा

जनुउत्सवकालिंदीग्रहउछरतमुक्तानिकेजाल॥ बाहुसुंडअवगाहिनी रवलबीरचलेगजचाल॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरमिआयेगेहगुपाला॥५॥ रागकेदारो तालयात्रा॥ आजसषीरसिकासिरमौरनाचतभलैं॥ जुवतिजनमंडलाकारवृंदाविपिनवीचघनस्यामप्रियदामिनीझलमलैं॥बीनरसलीनबजिरुणितकलकिंकनीमैंनकेमंत्रसीजंत्रधुनिधुनिरलैं॥ भ्रमततनचपलमिलिपरतनहिंदृष्टिजबदरसहितपरसमननैंनदोउकलमलैं॥ मुकटसिरझलकअरुरलकहारावलीझुलतबिबअलकलपिपरतनाहिनकलैं॥ नागरीदासभुजअंसधरिदोउचलतकोटिकंदर्पतबचरनितरदलमलैं॥६॥ रागइमनइकताल॥ वृंदाबनसरदरैंनराकाअभिराम॥ रचीहैंरुचिररासिककेलिराधासंगभाम॥ वैंनबीनबलयमिलेकिंकिनीमृदंग॥ नूपुराधिगानघोषछायोहैंसुपंग॥ अंसअंसबाहुबंध्योमंडलाअपंड॥ गोपिनाबिचमध्यबिचगोपालधरैंसिषिसिषंड॥ नृत्यहोतअंचलचललसतपहुपरैंन॥ ज्यौंधुजासमूहफरहरातमैंनसैंन॥ मनहुंपवनप्रेरकमिलिगउरश्यामसंग॥ मेघचक्रचंचलाबिलासरासरंग॥ बासबस अधीरसंगसंगभौंरभीरझुलतहारपुलतबारनाहिसम्हारचीर॥ गिरतकुसमकबरानितैंबिबसरसावेस॥ लटपटायलगतकंठपुलकतनसुदेश॥ नीवीकुचपरसपानचुंबनउदगार॥ हावभावलहरबढ्योसिंधुरसअपार॥ मुरछपरेउमदनबाजिदुंदुभीअकाश॥ पहोपवृष्टहोनलगीजहांबिलासरास॥ बिथकितलषिरहारैंनहोतहैंनभोर॥ नागरनटनिरपिभयोचन्द्रमाचकोर॥७॥

अद्भुतमंडलकीनौं ॥ अतिकलगांनसरससुरलीनौं ॥ लीनौंसरस सुररागरंजितवीचिमिलिमुरलीकढ़ी ॥ हौंनलाग्योनृत्यबहुबिधिनूपुरनिधुंनिनभचढ़ी ॥ डुलतकुंडलपुलतबैंनीझुलतमोतिनमाला ॥ धरतपगडगमगाबिवसरससरासरच्योनंदलाला ॥ चितहावभावनिलूटैं ॥ अभिनयद्रगभौंहनिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुंकअंकमालभरिझेलत ॥ झेलतजुभरिभरिअंकनिसंकितमगनप्रेमानंदमैं ॥ चारुचुंबनअरुउगाराहिधरततियमुषचंदमैं ॥ उड़तअंचलप्रगटिकुचबरग्रंथकसपटछूटैं ॥ बढ्योरंगसुअंगअंगनिहावभावनिलूटैं ॥ पगनिगतिकउतकमचैं ॥ कटिमुरिमुरिमध्यलचैंसिथलकिंकनीसोहैं ॥ मुकटलटकमनमोहैं ॥ मोहैंयमुननटमुकटलटकनिमटकगतिपगधरनकी ॥ भंवरभरहरचहूंदिसछबिपीतपटफरहरनकी ॥ गिरयोलषिमनमथमुरछलैंभजीरतिमुषमधुअचैं ॥ नचतमनमोहनतृभंगीपगनिगतिकौतुकमचैं ॥ वृंदाबनसोभाबढ़्यो ॥ तापरव्योमबिमाननिसौंमढ़्यो ॥ दुंदभिदेवबजावैं ॥ फूलनिअंजुलीवहोबरषावैं ॥ बरषैंजुफूलनिअंजुलीवहोअमरगनकौतुकपगे ॥ बिबसअंकनिब्रजवधूहियनिरषिमनमथसरलगे ॥ व्हैंगयेचरथिरसुथिरचरसरदपूरनससिचढ़्यो॥दासनागररासओसरबृन्दाबनसौभाबढ्यो ॥४॥

इकताल ॥ रह्योरंगषेलतरासरसाला ॥ तुटिगयेहारछूटिगयेअंचरश्रमडगमगनमराला ॥ जुवतिजुथजुतधसेजमुनाबिचमदनमोहनतिहिंकाला॥क्रीड़तजनुकरनीसंगलीनैंमत्तद्विरिदनंदलाला॥गोरेअंगमहाछबिपावतभीजेवाराविसाला ॥ मानौंसीतलचंदनपूतरीनिसौंलगीलपटिअहिमाला ॥ छविसौंछींटनिषेलमचावतप्रेमविवसब्रजबाला॥

॥ राग अडाणौं ॥ चौताल ॥ रासमंडलमधिछविछकेस्यामास्याम लैंलैंगतिलपटपलटिजातभरेरंग ॥ गानधुनिनूपुररह्योहैंरंगपूरितैंसों मधुरमधुरबीनावाजतमृदंग ॥ चंद्रकासिथलइतमुकुटझुकौंहौंउतन्हैं गयेविवसरससुधिनरहींहैंअंग ॥ नागरीदासगतिनैननिकीभईपंग मुरछिगिरयोहैंरतिसहितअनंग ॥ १ ॥ तिताल ॥ दोनैंगरबाहियांग तिलेतडोलैंमंडलमैंबोलैंततथेईथेईमुपरूपललकैं ॥ न्हैंगयेबिवसमन श्रमितभयेरीतनपिसेंफलसीसतैंसिथिलभईअलकैं ॥ इताकेंकिनीछू टीलोलहारकुंडलकपोलझांईझलकैं ॥ नागरीदासराधामोहननचत देपिभूलीसखीगांनतांनलागतनपलकैं ॥ २ ॥ चौताल ॥ देखिस्या माजूश्रमितभईरासमैं ॥ वहोनिर्तभेदषेदसरकेसिंगारहारसिथलकुस मकेसपासमैं ॥रसिकरवननिजकरतेंपवनकौंरहरैंहरैंल्यायेनिवासमैं॥ नागरियासोयेकुंजकंवलनिकीसैंनीपरबैंनीबिथुरेंनाहैंबिलासमैं ॥३॥ तिताल ॥ आजुसषीप्यारीजूस्यांमाहिंसिपावहीं ॥ लैंलैंगतिभेदनिव नावहीं ॥ चतुरासिरोमनिजांनिअजांनभयेडुलतसुलपसरसावहीं ॥ तालिमकौंदेतस्यांमानाचतमैंरंगवढयोसषीसुपानिरापिसिहावहीं॥ ना गरिकटाछनिकीलगतचमोठीचौटत्योंत्योंपियगतिहिंभुलावहीं ॥४॥ राग केदारो ॥ ताल चर्चरी ॥ सरससुघरनवकिशोरगतिसुधंगनां चैं ॥ नूपरादिमिलमृदंगवीनलीनअनुपमधुनिसहचरिकलगांनरंग चहचरिन्हैंमांचैं ॥ कहीनपरतभुवविधांननवघनतनलहलहांनाविलु लितवनमालभृंगलपटतिगतिआवैं ॥ अभिनयजुतउरपतिरपधरन चपलचारुमंजुलझुकिमुकटसीसगतिमतिबिसरावैं॥ दांवनविचिपवन परसिफैंलिफैंलिजातफिरतगातितरंगसागरबढिरंगमांजवोरैं ॥ नाग

# अथ निकुंजरासोत्सव ॥

## या पदकी अलापचारीमें देने ये ॥

दोहा ॥ कबहुकप्रियमंडलकढत, अतिगतिबढतसुधंग ॥ हरिकेमनलोचनफिरत, उरझेपायनसंग ॥ १ ॥ लाललईउरलायलषि, रीझेगतिसरसांन ॥ मंडलमैंसुरझैंनहीं, अंकमालउरझांन ॥२॥ उतउरझीकुण्डलअलक, इतबेसरवनमाल ॥ गउरस्यामउरझेदोऊ, मंडलरासरसाल ॥ ३॥ गरबहियांगतलेतामिलि, श्रमवशसिथिलितपाय ॥ डारेमनलेसबनिका,डगमगडगनिडुलाय ॥४ ॥ लेतिवलैयारीझिदोऊ, दोउपूछतश्रमवारि ॥ नचतसर्नीअतिरंगसों, वनींमदनमनुहारि ॥ ५ ॥ उतैंझुक्यौंहैंनवमुकुट, इतैंचन्द्रिकाचार ॥ भयेरासरसमगनमन, सरकेसकलसिंगार॥ ६ ॥ खूटिखूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेवार ॥ श्रमतरासरसरंगमैं, टूटिटूटिगयेहार ॥ ७ ॥ नागरियाकहांलगिकहैं, कबिमतमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहाबिलासमैं, कोरिकोरिन्हैंरास ॥ ८ ॥ पद राग ईमन ॥ तिताल ॥ थेईतथेईथेईथेईथेईथेईथेई ॥ उघटतरासरसिकमनमोहनरंगभरीनिर्ततहैंप्यारी ॥ मुरजमृदंगटकोरमिलावतगावतसखीसुघरदैंतारी ॥ ललितअंगभुवभंगचितैंपियबिवसभयेबोलतबलिहारी ॥ जगमगरहीरासमंडलमैंनागरियामुषचंदउज्यारी ॥ १ ॥ राग छाया नट तिताल॥ बोलतथेईतथेईथेईरंगभरेनिर्ततहैंपियप्यारी ॥ बजवतवीनप्रवीनलीनधुनिगुनिसलितालललितारी ॥ अरझीअलकछबिसौंबेसरिमैंअरझीपीतपटसारी ॥ नागरिनागररीझिपरसपरकहतवारवारेउहौंवारी॥२

त्यौंनिसभीजैं ॥ १ ॥ तालचचरी ॥ करतसुपसंगनवरंगललनाल
लन ॥ स्यांमजुगभुजांनबिचगउरतनभांमिनीसजलघनमांझमनौं
दांमिनीझलमलन ॥ छुटतवरवारअरुतुटतहारावलीपोलिहीबिमल
विधुवदनघूंघटवलन ॥ नैंनहसिहसिमिलतरसछकीदृष्टसौंतैंसियेछ
विभरीवंकभृकुटीचलन ॥ महकिरहीमालतीकुंजकुसमितमहलटह
ललिताद्तिहांभूलिलागतपलन ॥ नागरीदाससुपरासलीलालि
तकोरकोरकनिमदमदनदलदलन ॥ २ ॥ तालचचरी ॥ कुंजरस
केलिकवनीयदंपतिकरत ॥ परस्परहितबिबसरूपमादिकछकेदूरि
करबसनउरदृढअंकनिभरत ॥ पियतमधुअधरसुपसिंधुमैंमगनमन
निकटतिहिंसमैंचपच्यारखंजनलरतकबहुंभुवभंगजुतसीकरतरंगसौं
अंगप्रतिअंगपियपरसदैंमनहरत ॥ बिथुरेबिचकचनमुपगउरानिकस
तश्रमितचंदतैंसघनमनुंस्यांमवादरटरत ॥ सुरतसुपस्वेदतैंमहकिके
सरिचलीवासलहिनागरीदासधीरनधरत ॥ ३ ॥ इकताल ॥ नंदनं
दनचंद्रमांबल्लवकुलकुमदवृंद ॥ जलदसघनकुंजचारुश्रवतसुधावे
णुगांनबिपुनविपुनप्रतप्रकाशअनुपमछबिदुतिअमंद ॥ अद्भुतस्वयं
रूपदिव्यबिमलजोहनप्रवतरासकेलिकलाकोबिदआनंदकंद ॥ ना
गरब्रजपतिकुमारपस्यतसुपसंवरारिविस्मयजुतनम्रग्रीवचरनकमल
बंदवंद ॥ ४ ॥ तिताल ॥ अ िब्यारीराधागतिलेतअलबेलीयसुजां
न ॥ रंगभरीयौंहैंमनमोहैंचितवनिअलबेलीअलबेलीमुसक्यांन ॥ व
दनचंदआनंदसुललकैंअलकैंअलबेलीअलबेलीव्रतरांन ॥ कमलनैं
ननागरपियमोहेरासमैंअलबेलीअलवेलीलेलेतांन ॥ ४ ॥ राग ॥
क्रीडतरासिकरासरससंगे ॥ प्रफुलितबिपुनबहतमलयानिलउदयातिस

रियानिरषिवनश्रमझलकनझलमलातप्रेमविवसबालनीलअंचरमुख ढोरैं ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ रसिकरसरासनवरंगनिर्ततलला ॥ संगगउरंगगरबांहछबिदेतपृयसजलघनमांझमानौंचमकिरहीचंचला ॥ बलयकंकनकुणितछीनकटिकिंकिनीपगनिछिगुनीनिकेछोरछनकतछला ॥ नागरीदासदोउनिर्तश्रमडगमगेरगमगेवारफुलिउरानिचलिअंचला ॥२ ॥ इकताल ॥ रासरंगवरसुधंगनिर्तितहैंप्यारी ॥ तत्तरंगधुमकटितकथेईतथेईथेईथेईथेईथेईउघटतिजुवतीसमूहबाजितसमतारी ॥ बीनपरनआवजामिलिगावतललिताप्रवीनछीनसुकटिभंगसीव्हैंभंगभुवअन्यारी ॥ नागरिछबिलषिरसालइकटगपियदृगबिसालबरसतमनिमालललालबोलतबलिहारी ॥ ३ ॥ राग सोरठ ताल चर्चरी ॥ बोलततत्थेइत्थेईरच्योरसरासमरदरैंन ॥ निरषितभयोचंदचकितथकितरह्योगैंन ॥ गांनतांनमानपरनिमिलिमृदंगबीन ॥ उरपतिरपअलगलागलचकतकटिछीन ॥ नचतरवनीरवनमदनमथतअंगअंग ॥ चलिकटाछिभृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ प्रेममगनभरतअंकलंकलगिनिसंक ॥ छाडतनाहिंलालहिंतिहिकालहिनिधिरंक ॥ उरबिहारतुटतहारछुटतबारबास॥ बिबसरसबिलासदासनागरसुषरास ॥ १ ॥ तिताल ॥ दोउमिलिमंडलनिर्ततडोलैं ॥ इकदिसकुंडललोलएकदिसलगेकपोलकपोलैं ॥ गरबहियांअरझेअरझेपियरेनीलनिचोलैं ॥ नागरियागतिमैंगतिबदलैंबदलैंबदनतमोलैं ॥ २ ॥ रागकाफी तिताल ॥ होप्यारीजूमोहिदीजैयहदीजैं ॥ हाहावारीगायगायकैंगतिलीजैंअबतोगतिलीजैं ॥ दयोबिछायपीयपीतांबरसुलपकीजैयापैंसुलपकीजैं ॥ बढयोनिर्तनागररसभीजतानिसभीजैंत्यौं

गरीदाससुपरासमाधवमिलीअंगप्रतिअंगछविमनहुंघनदामिनी॥९॥
इति रासोत्सव ॥

## अथ गोवर्धनोत्सव ॥

समय या पदकी अलापचारीमें देनें ये दोहा॥ प्यारीढिगपियर सपगे, गिरकरधरैंतृभंग ॥ रंगभरेकेसंगमैं, विपतमांझहूरंग॥ १ ॥ जेवंशीकेभारसौं, झुकेजातसुकुंवारि ॥ तिनप्रियब्रजजनकैंलियैं, करपरधरचोपहार ॥ २ ॥ गयोतिमरऊपरजहां, बरसतहैंघनजोर॥ गिरतरचदउदैंभयो, भामिनभईचकोर ॥ ३ ॥ नागरिसोंललिता कहत, सबब्रजागिरकीछांह ॥ तुमचितवतपियओरउत, त्यौंत्यौं कंपैबांह ॥ ४॥ रागअडानौंइकताल ॥ हमारोगोपाललालवल्लभ कुलतिलकभालबृजजनसुपदाईकुंवरसांवरतनरूपजाल ॥ इंद्रको पिमेवमालपवितलषिगोपीग्वालरापिलीनौंगिरकरधरछत्रछांहभुज मृनाल ॥ सतघोसगोवर्द्धनतररूपउत्सवभीरबालमनुचकोरमं डलीमधिसरदचंदनंदलाल ॥ नागरीदासनगानिवासइतकतूहल बढ्योरंगमघवाउतमनभंगव्हैंरह्योसमैंरसाल ॥ १ ॥ चौताल ॥ दे षिकैंसैंधौंछबीलोठाढोसुढारसौं ॥ एककरगिरधरैंएककरकटितट नाचतज्यौंनटवासह्मारसौं ॥ गोबरधनतरैंचंदमुषकैंउजारेमांझदीठ नटरतइकतारसौं ॥ नागरियासबकीभईहैंइकठोरीआषैंयाहीतैंतृभं गभारसौं ॥ २ ॥ ताल ॥ कुंवरिकिसोरीकहूंदरसीकुंवरकाह्नजाछिन तेंमिलिबेकीमातियहठानीहैं ॥ गोपिनकीमतिफेरिमघवाकीबलमे टीबरष्योपुरंद्रतवप्रलयपौनपानीहैं॥छूटिगयीसहजैंबिपतमांझलोक

सिसबंगे ॥ सरदबिमलराकानिससुपक्तकलरववेणुतृभंगे ॥ रासारंभब्यौमधुनिपूरतमहुवरमुरजमृदंगे ॥ गउरस्यांमभुजग्रीवराचिपदसंगीतसुधंगे ॥ अंदोलितअलकावलिकुंडलगुनिमुक्तावलिभंगे ॥ रसानंदआवेसबिबसपटनीवीसिथलसुअंगे ॥ रूढविमानअमरप्रेमातुरमुर्छितअवनिअनंगे ॥ श्रीवृन्दाबनराधामोहनकेलिकलपबहोसंगे ॥ नागरियागोलोकअषंडितकथतकथासुकभृंगे ॥ ५ ॥ राग केदारो॥ रासमंडलमधिछकेस्यांमांस्यांमलैंलैंगतिलपटिलपटिजातभरेरंग ॥ गांनधुनिनूपुररह्योहैंरंगपूरितैंसेमधुरमधुरबीनांबाजतमृदंगचंद्रिकासिथलइतमुकटझुकौहैंउतव्हैगयेबिबसरससुधिनरहीहैंअंग ॥ नागरीदासगतिनैंनानिकीभईपंगमुरछिगिरचोहैंरतिसहितअनंग ॥ ६ ॥ इकताल ॥ अरीरासमैंरंगभरीनचतसरसस्यामाप्यारी ॥ चितवतचकतरहिगईचपलामोंडतहाथविचारी ॥ गांनसुनतषगमृगमनमोहेलज्जितभईकोकिलानारी ॥ नागरीदासचकोरसांवरोदेषतइकटकवदनचंदउजियारी ॥७॥ तिताल ॥ सरदनिसरासासिन्धुबढ्यौअनूपमउपजततांनतरंग ॥ सुघटसंगीतसुधंगसुलफगतिहोतदुहूंनिमैंहावभावभुवभंग ॥ माधिमंडलश्रीराधामोहनलखिमुरछितरातिअवनिअनंग ॥ नागरीदासअकासचंद्ररथचलतचक्रगतिपंग ॥७॥ चर्चरी ! चलीसिंगारसजिसहजअभिरांमिनी ॥ हारअरुबारकैंभारलचकलंकडगनिडिगुलातआनंदभरिभामिनी ॥ सुनतझंकारनिजदाबिरसनांदसनसकुचिफिरधरतपगमंदगजगामिनी ॥ उरसिअंचलउडतसरसपरसतपवनरवनपैंगवनाबिचाषिलियमधुजामिनी ॥ कुंजघनद्रुमनकीपांतितरजातिछिपछांहछाडतनहींचतुरिमानिस्वामिनी ॥ ना

गटिजगमहिमाभारी ॥ १ ॥ रागसारंगतिताल ॥ कैसैंरहोंदेपिवृप भानकीकिसोरीनैननिपलनिलगावैं ॥ वेउकरगिरधरैंसवनिकी चौंरचितैंफिरद्रिगइतठहरावैं ॥ दुहुंनिकैंदुहूंवोरस्वेदरोमकंपहोत चहूंओरभारपैंपरमकौंनपावैं ॥ नागरीदासउतइन्द्रकोपिवरषत इतगिरधारीप्यारीरंगवरपावैं ॥ १ ॥ रागटोडी ॥ गोवर्द्धनधारीना मकुंवरकोअवहीतैंहमलीनों ॥ सातादिवसगिरिवरकरराष्योइन्द्रमां नभंगकीनों ॥ भलेंपावोचोरिदधिवृजमेंभलदानदधिछीनों ॥ ना गरियाघरघरकोमांपनआजुसुफलकरदीनों ॥ २ ॥ इति गो वर्द्धनउत्सव ॥

# अथ दीपमालका ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ औंरठौरदीपावली, धरैंदीवारीहोत ॥ सदादिवारीस्यामकैं, प्यारीजगमगजोत ॥ १ ॥ दीपमालस्यांमासहज, विहसजवैंवतरात ॥ हसतलसतऐसेजनूं, फू लझरीछुटिजात ॥ २ ॥ दीपमालप्रियहारउर, लसतसुमुक्ताआब ॥ पियचपलपिचपवोधव्हैं, छुटतमनौंमहताब ॥ ३ ॥ दीपमालनव नागरी, नवनागरसुपरास ॥ उरमैंबसोहियभवनये, नित्यनागरी दास ॥ ४ ॥ रागईमनतिताल ॥ कुहूकचचूनरीसितारेदारसोईनभ अंगआभासहजप्रकाशपुंजधारीहैं ॥ मनिगनभूपनसुदीपकजगीहैं जोतिमोतिनकीआवमहतावउनहारीहैं ॥ फूलझरीहासमैंनिवास महामोहनीकोकुंजनिकैंपुंजचपिचोंधिबिसतारीहैं ॥ ओरठोरदीप निकीदुति दिवारीहोतनागरबिहारीकैंदिवारीनितप्यारीहैं ॥ १ ॥

लाजराषीगिरधारीनीरैराधारससांनीहैं ॥ विषमउपायकरिसींची हितबेलीऐसैंलगनलगेकीहेलीअहकहांनीहैं ॥ ३ ॥ ताल ॥ जांनैं रीबलैयाकितबरपैंप्रबलपांनीकितपरैंओलाकितमेघमालाअनीकी॥ पायोप्रांनपीतमनिहारैंछबिगिरधरैंचंदाहिचकोरीजिमनेहचितवनीं की ॥ नागरीमुषवीरीदेतलेतरूपनैंनसुधापगिरहेवातनिपरमाहितस नींकी ॥ नागरादिनसातरैंनचैंनमैंनजानेजातघनींघनवरषामेंवनीब नांबनींकी ॥४॥ राग ॥ मतमोरचंद्रिकारतनपेंचपगियापैंसुन्दरसुम नगुच्छसोभानवभालकी ॥घुर्नितनयनबंकभुवमुषमंदहासपरसतपीं नज्ञुगअलकसचालकी ॥ ठाढोव्हैंतृभंगानिसौंगिरराजकरधरैंतैसी झूकिझलनिललितबनमालकी ॥ होतमदभंगमनमथराजसुरराज देषिसषीदेखिआजुछबिनंदलालकी ॥ ५ ॥ राग ॥ सजनीनिराषि नंदकुमार॥ धरैंगिरकरवढीछबिलषिमदनवोहवलिहार ॥ ललित अंगतृभंगकटितटिकनककिंकिनीजाल ॥ बंकभुवद्रिगअलकथर सतचरनपरसतमाल ॥ उदितबिचबृजचन्दपूरनतिमरमेटयोघोर ॥ तहांगोपीगनतरइयांभानकुंवरिचकोर ॥ उहांवाहिरइन्द्रवरपतप्र बलघनलियैंसंग ॥ दासनागरगोवर्द्धनतरइहांबरपतरंग ॥ राग जथासमयअनुसारगावनौतालचर्चरी ॥ जयतिगिरराजकृतछत्र ब्रजराजसुतसहजसुरराजगतिगर्वहारी ॥ बर्यहरिदासजनधोपसु षरासीरतुसर्वदाहरितहुल्लासकारी ॥ सकलरसवर्द्धनंदेवगोवर्द्धनं प्रणितइन्द्रादिसुरलोकचारी ॥ विपुनमाधिनायकंभूमिछबिभायकं पायकंनीलमानिपीतप्यारी ॥ परमप्रियहेतसंकेतसुषकंदरातहांनिस दिवसबिहरतबिहारी ॥ नागरीदासलघुबुद्धिवरनैंकहाउताहिंनगप्र

यांझनक, पासेठनकतसंग ॥ बजवतगुनीअनंगमनु, जलतरंग ज़ुतरंग ॥२॥ स्यांमसारिगोरीचलत, चांपिचहुंटियनिचार ॥ मनहुं कँवलकेअग्रव्हैं, आवतभृंगकुमार ॥ ३ ॥ जरदनरदघनस्यांम पिय, हैंअंगुरिनगहिलेत ॥ मनोंकोयलकीचंचुमैं, पीतअंबछबिदेत ॥ ४ ॥ नागरिपासेपरनिकी, इंहउपमादरसांनि ॥ हातरूपसरतेंमनों, लहरेंनिकसतजांनि ॥५॥ दोहा ॥ रगमगरहिचोपरिचहुल, प्रीतमरहेनिहारि॥दीपकढिगजगिमगिरही, लड़कीलीसुकुवारि॥६॥ नथलटकनिकुंडलहलनि, हारनिझुलनिनिहारि ॥ जबझुकिपासेडारही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ७ ॥ दोहा ॥ रूपलोभपक्केपिया, कच्चे होतहेंसार ॥ त्यौंत्यौंचितवतसतरव्हैं, लडकीलीसुकुंवारि॥८॥वचन निरादरपेलमें, लालहिंलगतसुप्यार॥ चलिरुगटीहंसकहतयों, लड़कीलीसुकुंवारि ॥ ९ ॥ दोहा ॥ समझिदावपियचूकिकैं, सारहिचलतसह्मारि॥ पकरिपिछौंहोंदेतकरि, लडकीलीसुकुंवारि॥१०॥ वेसरिबंसीपीतपट, हारदयेपियहार ॥ मनहूंलीनोंजीतिकैं, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ११ ॥ दोहा ॥ लालचलेजुगजोरिकें, नीलपीतरंगसारि ॥ समुझिसकुचिहसिझुकिरही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ १२ ॥ वाजीवाजीउठिचली, वाजीलगिनिबिचारि ॥ हियवाजीनागरिमिली, लडकीलीसुकुंवारि ॥ १३ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ होरंगीलीबाजीलागिरहीछैनैणामैं ॥ जांणीकामकटाछांहीकादेपिदावदैंणामैं ॥ कांपेअंगअनंगररंगसुरभंगहुओबैणामें॥रसिकबिहारीमनफूलबढीहुईहारजीतनैणामें ॥ १ ॥ इतिदीपमालिकाउत्सव॥

## अथ श्रीगुसांईजीको उत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ परमपुष्टिरसजलअमि

इकताल ॥ धरिदैंदीपसंवारोंजिनवाती ॥ दीपनिकीदुतिफीकीलग तहैंलुवमुखचन्दजोतिसरसाती ॥ निकसिआवदीपकमंडलतैंदीप मालिकातुहीसुहाती ॥ नागरीदासकरीन्यारीप्रियलाइलईउरमोह नघाती ॥ २ ॥ कवित्त ॥ सुन्दरसुघरस्यामराधाठकुरायनजू जोरीजगभूपनसुआनंदअगमगी ॥ तारकसीवसनजवाहिरकीजे बलसांबैठेकुरसीपैंप्रीतनौतनसगमगी ॥ जरवफ्तीसामियानैंसमैंदा नकिस्तसोजनागरअगरधूमिधूंधरिरगमगी ॥ दिपैंदीपमालछबिछूटै अम्रजंत्रजालअजवजलूसजोतिजीनतजगमगी ॥ १ ॥ कवित्त ॥ जसुदाकेफिरेंमुकतानकीबेलीसीनागरिराधेसिंगारकरें ॥ बरबेनीके भारऔहारनिकेडगपाइनकीडिगुलातधरैं ॥ अतिआननजोतिमईअं गनाभयोरूपकथाकहिकोउचरें ॥ जितजायसंवारतबातीबधूतित दीपनकीदुतिफीकीपरैं ॥ २ ॥ कवित्त ॥ नवकुंजकैंचोकदिवारीकी रातिसुप्यारीजहांअतिसोभासची ॥ जरतारीकीसारीऔअंगजवां हिरसीसमुकैसकीपौररची ॥ इहिबांनकनागरिसंगसपीलपैलाल निकीमनसाललची ॥ सबपांतिन्हैंछोड़तफूलझरीतहांहोजपैंरूप कीमोजमची ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ जहांतहांदीपनकोदीपतादिपतदु नीज्योंजरीसजीवनिकेपोधालैंलगाएहैं ॥ कैंधोंदिपिदंपतिकीसंपालै बिहारचारइंद्रपारजातकेपहुपवरषाएहैं ॥ कैंधौंपुषरागनिकेनागर परेहैंओलाकैंधोंअंगअवनिसुनैंनसरसायेहैं ॥ कैंधौंनभमंडलतेंवृन्दा वनचन्दजूनंन्हैंकैंपांतिपांतिमिनछत्रछुरिआएहैं ॥४॥ या पदकी अ लापचारीमें दैंने ये दोहा ॥ प्यारीपियसषियनसहित, चोपरिषेल तबैठ ॥ मनोंमदनपुरचोहटैं, लगीरूपकीपैठ ॥१॥ छलाझनकचुरी

नमअभिरामदिन, वृंदाधामलसंत ॥ हरिराधावंदततहां, मंगलकलसवसंत ॥ १ ॥ सुभकारिकवृंदाबिपिन, नवबसंतदिनआज ॥ आगममंगलगानधुनि, होतलगनकोराज ॥ २ ॥ इहिंबसंतरितुउठतवहो, द्रुमनवपल्लवलागि ॥ जडहूंकैरोमांचव्है, व्यथामदनतनजागि ॥३॥ कुसमितद्रुमगहवरनिअति, रितुवसंतअभिराम ॥ छबिछाईवृंदाविपुन, मनुसरपंजरकाम ॥४॥ फूलभरेमंजुलकलस, पियप्यारीरसवंत॥नागरनितवृन्दाविपिन, मूरतवंतबसंत ॥ ॥ ५ ॥ रागहिंडोल इकताल ॥ पेलतवसंतवृजपतिकुंवार ॥ विच्वृंदाविपुनविहारिचार ॥ झुकिद्रुमनवपल्लवकुसमभार ॥ उडिरजप्रसूनविचअलिगुंजार ॥ तहांसपासंगगावतधमार ॥ बाजैंमृदंगडफझांझरतार ॥ इतलियेवंदनकलसनारि ॥ मिलिदेतमधुरसुरसगारि ॥ चलैंविवधिरंगपिचकारिधारि ॥ गयेचहुंटिचीरसबतनसुढार ॥ द्रिगपलनलगतलगेसरहैंमार ॥ भयेरौंमकंपलोयननिवार ॥ रहेललितपरस्परछबिनिहार ॥ नागरनागरिनहींप्रीतपार ॥ १ ॥ तिताल ॥ कहिहोहोहोपेलतवसंतपियसंगराधेसुकुमारि ॥ गावतहिंडोलबाजतमृदंगडफझांझरतारकठतार ॥ चलतपीतपहुपनिकीपंपुरीसोभारहीनिहार॥नागरियानागरिवृन्दावनमधुरातिरंगविहार ॥ २ ॥ चौताल ॥ फूलेद्रुमबल्लीवनझूलैंअलिगंधबोलैंमदनसदनमानौंमंगलबधावनौं ॥जहांतहांआवतधुनिगांनहिंढोलतैंसोकोकिलांनिकोयलकोसोरमनभांवनौं ॥ उमहींसकलबालआंईवृषभानजूकैंसीसलैंकलस [illegible] ॥ हियेहुलसंतविकसंतकुंजातियमुपनागरबसंतब[illegible]वनौं ॥ ३ ॥ तिताल ॥ अतिसुपदाईरीद्रुमनिकोयलि

त, उर्मप्रेमावेस ॥ नागरप्रगटआनंदनिधि ॥ वल्लभसुतविठलेस ॥ १ ॥ वल्लभाचारजकलपतरु, फललाग्योविठलेस ॥ याफलकोरससरूपहैं, गोकुलनाथव्रजेस ॥ २ ॥ धनवल्लभविठलेसधन, धन्यसातसुतबंस ॥ भवनिस्तारनहितप्रगटि, नागरजक्तप्रसंस॥३॥ राग ॥ श्रीवल्लभाचारिजकुमारकुमदकुलनिसेस ॥ भक्तिजनप्रसंसितश्रीमताविठलेस ॥ बिष्णुस्वामिसम्प्रदायचूरामंडिचार॥नागरप्रणमाम्यहंअंर्घ्रिकल्हार॥१॥पदचर्चरी ॥यथासमेंराग ॥ वेईगायगोपवृन्दगोकुलमधिसन्ततसुखसंपदानिघोषमोपपगनिपेलिडारी ॥ वेईनंदवल्लभसुतभएहैंप्रगटिवल्लभग्रहसोभितदुजकुलललामधामव्रजबिहारी ॥ वेईप्रेमपरकरनितिगोबिंदकुंभनादिसंगललितलब्धलीलारसपुष्टकोसतारी ॥ वेईदासनागरकेप्रेरकमनमनसुवेसवेईविठलेसवेईगोवर्द्धनधारी ॥ १ ॥ राग ॥ प्रगटिविठलेसदिनकरकिरनससुतभक्तकुलकेवलआनन्ददयने ॥ नरानिउरनिविध्वंसमंगलकरनकृष्णप्रतिबिंबजगमगतनयने ॥ विटपपंडनकठिनकाठमायावादपुष्टरसबरषहीविमलबयने ॥ नागरीदासदुजराजजानौवेइसमेंसुरराजगिरराजलयने ॥ छप्यय ॥ धनिश्रीवल्लभविदितधन्यधनिकुंवरबिभूषन ॥ बिठ्ठलेससुतसातधन्यहरिअंसबंसधन ॥ धनचौरासीभक्तजक्तहितपुरुसरूपछित ॥ धनिगोबिंदकुंभनादिप्रीतगिरधरनअपरमित ॥ धन्यभानभुवभागवतनागरियाहियतमहरन ॥ धन्यधन्यफिरधन्यहैंमहामंत्रकेवलसरन ॥ ३ ॥ इति श्रीगुसांईजोकोउत्सव ॥

## अथ वसंतोत्सव ॥

बसंत उत्सवका या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ काम ज

तनकहूहवोनहेत ॥ पालओढिसोमनुषकी, कियोमुलम्माप्रेत॥ ६॥ फागमासरितुउठतवहो, द्रुमनवपल्लवलागि॥जडहूकेरोमांचव्हैं, व्यथामदनतनजागि ॥ ७ ॥ इहिंरितुश्रोसरफागकैं, होतलगनकोराज ॥ डफमोहनमुरलीसुनत, छुटतवधुनकीलाज ॥ ८ ॥ इहिंहोरीकेपेलकी, जगसौंउलटीरीति ॥ ज़ीतनहींमेंहारहैं, हारनहींमैंजीति ॥ ९ ॥ सुनिरींड़फबाजनलगे, सिरपरआयोफाग ॥ अबकैंसैंदाविहैंदई, अंतरकोअनुराग ॥ १०॥ सुलगीलगनहियेनमें, जुलगीहोरीश्राय॥ पुलगीग्रन्थबिचारकी, मीतमिलनदरसाय॥ ११॥ छिनदेपैंविनदेतदुप, लोयनपरैंजुगैल ॥ फागवावरोदिननमैं, रूपवावरोछैल ॥ १२॥ ग्रहकोनैंजातनरह्यो, परतअगोनैंपाव ॥ नितहोरीकेपेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ १३ ॥ बरसानैंनन्दगांवश्रति, उमगेदलदुहुंओर ॥ समरपेतसंकेतमैं, आजफागजुधजोर ॥ ॥ १४ ॥ ढोलकिढोलमृदंगबजि, मुरलीडफसहनाय ॥ गहगडगांनधमारधुनि, रह्योकुलाहलछाय ॥ १५ ॥ उडिगुलालआंधीपहल, डफगरजनअभिरांम ॥ रंगधारबरसनलगी, गउरघटाअरुस्यांम ॥ १६ ॥ मचीदुहुंनिमैंफागइत, राधेउतनन्दलाल ॥ जमुनाघरगिरतरुलता, पगमृगभरेगुलाल ॥ १७ ॥ लालमईसबदेपियत, घुमडयोगगनगुलाल ॥ मनुदंपतिअनुरागको, डारयोबृजपरजाल ॥ १८ ॥ राजतधूंधगुलालमैं, भरिभरिभाजतवाल ॥ मानौंफूलीसांझबिच, चमकतचपलाजाल ॥ १९ ॥ दृगहीचाहतलालकौं, तनचहउड़योगुलाल ॥ धूंघरिमैंदुरिओछकां, भुजभरिलीजैंवाल ॥ २० ॥ सकैंनदृगभरिदेपिकैं, तिनकोवदनमयं

याकुहकमचाईनवबसंतारितुसरसाई ॥ छईसुवासभ्रमतमधुकरामिलिनूतमंजरनिकीडारियांकदलीकुंजगहबरिआई ॥ अंबसोरनवबालबालललैंलालहिबहासिवंदाई ॥ पियप्यारीनागरिनागराहियफागपेलिसुधिआयछाई ॥ ४ ॥ इकताल ॥ होधुंधुंकारडफबाजततालमृदंगझांझिमिलिबिचिमुरलीधुंनिथोरी ॥ वूकाबंदनचंदनाछिरकतकुंमकुंमरंगकेसरिलैंघोरी ॥ दिनबसंतगावतनाचततहांबनितागनिदुहुंवोरी ॥ नागरियाषेलतवृन्दावनपियघनस्यामप्रियातनगोरी ॥ ५ ॥ इकताल ॥ बनमदमातेपियप्यारीषेलतबसंतहसिहसिछकिछकिडारिगरबांही ॥ कँवलपरागलियेकरकंवलनिकँवलबदनलपटाही ॥ परसपरआनदंतमनमाहींसषीकंजकिंजल्कनिषेलनगावतसासिसरसांहीं ॥ नागरिनागरबनबिहरतफूलमनिनकीछांहीरंगभरेअंगअंगउरझांही ॥ ६ ॥ इतिबसंतसमाप्त ॥

## अथ होरी उत्सव ॥

यापदकी अलापचारी मैं दैने ये दोहा ॥ कुसलनंदवृषभांनकी, तिनकेहैंजगबंद ॥ होरीडांडोआजसुभ, ओप्योवृजआनंद ॥ १ ॥ नागरिनागरभावतैं, मंगलरूपरसाल ॥ नितमंगलवृन्दाविपन, नित्यफागरसप्याल, ॥ २ ॥ प्यारेनाहिंप्यारेलगैं, सोफीसदाउदास ॥ इस्कश्रैंसमदिरापियें, कैफीफागुनमास ॥ ३ ॥ किथैंरंगीलेफागमैं, हियेंरंगीलेअैंन ॥ महारंगीलेदिनसवैं, महारंगीलीरैंन ॥ ४ ॥ फागजुरसिकनहितभयो, रसिकफागकेहेत ॥ चंदाबिननिससांवरी, निसबिनचंदासेत ॥ ५ ॥ जाकौंहोरीषेलसौं,

तिताल ॥ तैंऊन्नटबाटचलाईवहुतदिनअन्नक्यौंनारिनवइयां ॥ आईहमवरसांनैंवारीनिकसिअरेनंदगइयां ॥ आगेआयरुहाहापायकैंपरिसपियनिकेपइयां॥२॥ यौंकहिनागरअैंचिलयेगहिउडिगुलालनभछइयां॥ २ ॥ रागषट तिताल ॥ इतमतनिकसिचोथकेचंदादेषतकलंकमोकौंलगिजायगोरे ॥ दूरितैंगुलालभरिजिनक्छुवैंछैलमोहितेरोंस्यामरंगमेरैंलगिजायगोरे ॥ पायपरौंहाहाअवानियरैंनआवकरनिचवावगांवलगिजायगोरे ॥ नागरनूलोभीफागस्वारथहीकोहैंमीतमोमननिगोडोभूलिजायगोरे ॥ ३ ॥ तिताल ॥ सांवरेछैलछबीलेपिलारसौंगोरीकिसोरिजूहोरीमचावैंहोहोकहैंइततारीबजायजबैंउतप्यारीगुलाललैंधावैं ॥ जाहिसबैंअवसांनजकोलगिकंपव्हैंलालहियेहहरावैं ॥ नागरिकीनअवाईथंभैंजबरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं ॥ ४ ॥ रागटोडी ॥ इकताल ॥ अरीयहकौनहैंरोनंदगांववारेनिमैंपेचहीपेचभरीवातैंगावैं ॥ ओटकियेंउतकौंडफकोइतकौलषिकैंअंपियांठहरावैं ॥ सांवरेअंगकंवलसेनैंननिसैंनानिहाहाभावैं॥नागरिहोरीभईतोकहाइन्हैंकोऊसपोसमुझावैं ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ इकताल ॥ होरियावगरमैंमाचिरहीहैंपनियांभरनिकैंसैंजाउं ॥ लाजालियेमेरीघूंघटपटसौंकिंहिंविधनिवहानिपाउं ॥ दौरिदौरिरंगभरतपरसपरतिनसौंकहावसाउं ॥ नागरिकान्हक्छुवोमोहितोफिरिनांवधरैंसबगांउं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ छैलवहिकाहूसौंनडरैं ॥ आधीरातवृंदाबनमांहीठोकदुपहरीकरैं ॥ आयनिकटललचायलालचीऔरहीढारढरैं ॥ नागरीदासरंगभरिभरिफिरिभुजभरिअंकभरैं ॥ ७ ॥ इकताल ॥ मोहनलयेहैंदबायलंगरहोरीकी ॥ मुरलीमालाछीनवहुरिडारिसौंज

क ॥ जिनकौंहोरीषेलमिस, अंकनिभरतनिसंक ॥ २१ ॥ कौंधि उठत्यौंदामिनी, भरतभामिनीआय ॥ पियमनलैकैंपलटिफिरि, मिलैंझुंडमैंआय ॥ २२ ॥ आवतमुठीगुलालकी, छबिसौंछैलब चात ॥ पैंअचूकिद्रिगलगिहियैं, बारपारभयजात ॥ २३ ॥ रोकतघूंघटओटसौं, मुरिपिचकारीधार ॥ यहैंबचावनदेषउत, बचतनहोंरिझवार ॥ २४ ॥ अजूकहाआंषैंभरो, कौनरीतिकोषेल ॥ इनबातनिरहिहैंनहीं, हमसौंतुमसौंमेलि ॥ २५ ॥ लगैंसुफिरनिकसैं नहीं, करीनभावतओटि॥होरीमैंअंषियांनकी, आंषनिहीपैंचोटि ॥ ॥ २६ ॥ आंषैंभरतगुलालसौं, यहधौंकौंनसुभाय ॥ मदनमाधुरीपानमैं, अंतरपारतहाय ॥ २७ ॥ चतुराईकरिकैंदयो, पौंछनिद्रिगनिगुलाल ॥ कहतचलावतउतगयो, भरैरेछूटिरुमाल ॥ २८ ॥ चलतगुलालनिझोरियां, माचीधूमधमारि ॥ फागकेलिझकझोरियां, फिरतगोरियांग्वारि ॥ २९ ॥ हारछुटतछूटतनहीं, रहे पेलिरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपरत, हारनमानतकोय ॥ ३० ॥ नागरियागतिरीझिकी, क्यौंहूंजातकहीन ॥ दंपतिफागबिहाररसर, भयोलीनमनमीन ॥ ३१ ॥ राग भैरू ॥ ताल चरचरी ॥ होरिषेलिषेलतजबरहेरैंनथोरी ॥ सोयेहैंरसिकलालसंगलैंकिसोरी ॥ पियरीयहजगिलगिदोऊचलेहैंरंगभीनैं ॥ सगवगेगुलालबसनअंसनिभुजदीनैं ॥ अस्तव्रिस्तअभरननगटूटेहाररहीके ॥ अलकभौंहमूलरंगअधररंगफीके ॥ फागभरेलागभरेरजनीकेजागे ॥ फिरफिररस उरझतनहींसुरझतअनुरागे ॥ गउरस्यामललितअंगभुजलतांनिकसिया ॥ नागरियाहीयबसेफागुनकेरासिया ॥ १ ॥ रागरामकली ॥

पदकी अलापचारीमैं दैंने ये दोहा॥ उडिगुलालघूंधरभई, तनर ह्योलालबितांन॥ चौरीचारुनिकुंजमैं, ब्याहफागसुपदांन॥१॥ फूलनकोसिरसेहरा, फागरगमगेवेस॥भांवरहींमेंचलतदोऊ,लैंगतिसुलपसुदेस॥२॥ भीजेकेसररंगसौं, लगेअरुनपटपीत॥ डोलैंचाचरचौकमैं, गहिवहियांदोउमीत॥३॥ रच्योरंगीलीरैंनमैं, होरीकेबिचब्याह॥ वनींबिहारनरससनीं, रसिकबिहारीनाह॥४॥ आनकविकृततिताल॥कुंजमहलमैंआजुरंगहोरीहो॥फागपेलमैंबनांबनींकीन्हैंरहीपटगठजोरीहो॥ मुदितव्हैंनारिगुलालउडावैंगावैंगारिदुहुंओरीहो॥ दूलहरासिकबिहारिसुंदरदुलहनिनवलकिसोरीहो॥ १५॥ राग धनाश्री॥ इकताल॥ मेरैंलाग्याईआवैं॥ साथरीनंदनंदनमनमोहनां॥ वृजबीथननिकुंजनिकुंजमैंआननतनद्युतिजोहनां॥ सैंननिहाहापातलालचाछीडतनहींछिनगोहनां॥ नागरनवलछैलहोरीकौंचितललचतलपिसोहनां॥ इकताल॥ फागनपेलतफागरह्योक्यौंजायरी॥सासननदडरआगैंपरतनहिंपायरी॥ अरीनंदनंदनसौंनेहसुनैंदुपकौंनरी॥ क्यौंचितवैंदिनरैंनअकेलैंभौंनरी॥ सूनौंसदननिहारिमदनपायोदावरी॥ मारतबाननिसंककरतउरघावरी॥ डफमुरलीधुनिआंनिपरतजबकांनरी॥ श्रवनरहतठहरायचलतयेप्रानरी॥ अरीनांहिंरह्यूंघरघरीवह्रुरिकबफागरी॥ फिरिमोहनसौंभईद्रगनिकीलागरी॥ तोरिकैंलाजकपाटचलीगजगामिनी॥ मिलीनागरीदासमनौंघनदामिनी॥ १८॥ तिताल॥ फेरीदैंदैंबोलहींराजवैदगुनवैद॥ विरहबिथावसएकवृजबधूताहिकुटंबकोकैद॥ दोरिपोरिलैंझांकिसकतनांहिंभयेदिवसदसबीस॥ डफमुरलीधुनिसुनिसु

झटकिझोरीकी ॥ षैंचतझपटिपीतपटिकटिसौंदैंभाजतवैंदीरोरीकी॥ जीतीनांहिजातहैंक्यौंहूंनागरनवनागरओरीकी ॥ ८ ॥ तिताल ॥ षेलैंहोरीमनमोहनां॥ फैंटासीसकेसरीसुन्दरछूटीअलकमुषसोहनां॥ भरतरंगमनहरतफिरतलाग्योरसबसव्हैंतियगोहनां ॥ नागरिकंव लकंवलप्रतिलपटतभंवरकंवरव्रजजोहनां ॥ ९ ॥ इकताल ॥ फूटैंकरकीचूरियांमोहिहाहालंगरदैंजान ॥ होरीमैंभलीयेकरतबर जोरीमच्योहैंकौनषेलिसुषदान ॥ तरकतकसदरकतहैंअंगियांधर धरधरकतप्रांन॥दूरिहीतैंजुभलोपियनागरनैंनानिकोसनमांन ॥१०॥ ॥ तिताल ॥ छैललंगरघनस्याममगमेरोरोकिरह्योरी ॥ उरपरडा रिरंगपिचकारीअंचराआनिगह्योरी ॥ नैंनलगेअरुदिनहोरीकेयातैंस वैंसह्योरी ॥ नागरियाछिनकलनपरतअवचारबिचारबह्योरी॥११॥ ॥ तिताल ॥ नसहिहोरीयाकीइतनीएलंगराई ॥ अरीयेअतिहीढीठ हैंकान्हहमसोंकारिबरजोरीधूममचाई ॥ सबयाकीलैलकुटीबंसीउ रमालाछीनलेहुपिचकाई॥ अबतुमसकलसिमटिलैंलैंकरगागारिनाग रिभरोरीकन्हाई ॥ १२ ॥ आनकबिकृतरागषंभायची ॥ तिताल ॥ आजबरसानैंहेलीलागैंसुहांवणौं ॥ फागगातिगीतसुरछायोसुहायो आजुनंदकुंवरआयोपाहुंणो ॥ उठोजीकिसोरीगोरील्योनैंगुलाल ओलीभरहोलीअबसुषसरसांवणौं ॥ गहगडषेलधूमधूंधरअबीरमां हींरसिकबिहारीकंठलगांवणौं ॥ १३ ॥ आनकबिकृत ॥ तिताल ॥ फागुणियारोघुमडिरह्योछैंष्याल ॥ कुंजभूमिसोलाललालहुइहुवाला लतमाल ॥ उडिगुलालकीलालधूंधारिमैंभलकैंबैंणाभाल ॥ सषीला लअरुलालबिहारनिरसिकबिहारीलाल ॥१४॥ आनकबिकृत ॥ या

टिलटैंझुकिझूलतवेसरिकेसारिपोरिसंवारी ॥ भौंहैंकसौंहैंहंसोहैंसेओं ठनिकेंबिचदामिनकौंधैं ॥ अंचरछोडिचलैंगजज्यौंदरसैंअंगियारंग सौंधैं ॥ होरीमैंरूपठगोरीभरीमुसकायकरीचितचोरी ॥ सांवरेकील गवारिबडीठगवारिहैंगवारानिगोरी ॥ फागभरीअनुरागभरीनिकसैं जबघूंघटमारी ॥ नागरियालषिलाग्योफिरैंरंगमोहनरिझवारी २३॥ आनकविक्रत तिताल ॥ होराजथेछोडोजीकिशोरीजीरोछेहडो ॥ रापोरापोमनमेंचारबिचारि ॥ थेफागुणरसबावलाऐलाजभरीसुकुं वारि ॥ कांईहुवोहोलीहुवांसुणहसर्सीसोहसंसारि ॥ थेगायांकाग्वा लियाछौअरऐछैंराजकुंवारि ॥ थांहरीयांहरीनहींछैंबराबरीजायपर सोदूजीनारि॥रसिकबिहारीथांरोनांवछैंकाईपेलोण्यालगंवारि॥२४॥ तिताल ॥ अणोकोईसांवलापेलनवाल ॥ सोहनांमुषसोभाजगमागि यांलागियांरंगगुलाल ॥ कर्नफूलपरफूलझुलफबिचहालहालकरैंहा ल ॥ नागरियामेरेआगेंअदबसौंलैंग्रांवदाहाथरुमाल ॥ २५ ॥ इ कताल ॥ सइयोमैंनूंकान्हबुलावें ॥ चढिकेंअपनीऊंचीअटारीनैंनौं दीसैनचलावें॥ केसरिदारंगभीनाचोलाहोरीदाछैलकहावें ॥ नागरी सासकहाकहौंरीलषिमैंडाभीजीललचावें ॥२६॥इकताल ॥ घेलिहीं नहींहोरीहौंहोरीरी ॥ लैंउरसौंमसकीकसमैंससकीभरिनाकसकोरी कीनीहैंबरजोरी ॥ छैलकैंहाथपरीछलसौंनहिंछूटिसकीविचपोरी रससिंधुझकोरी ॥ बेन्नहोछंदभरेगुनआगरनागरहौंमतिभोरीकोअ धरारसचोरी ॥ २७ ॥ इकताल ॥ नंदकुंवरदेपिकेंकछुभीनरही ताव ॥ छूटिगयाघूंघटपटहुईबेहिजाव ॥ जोबनमदहोसहुस्नजादु हैंनिगाह ॥ लियैंपिचकारीदस्तअजबपुसअदाह ॥ इस्कबाजहोली

निकाननिपरोधुनतहैंसीस ॥ तापैल्याईस्यामतबीबैंएकसषीहितपाइ ॥ इतउततैंअंसुवनिजलभरिभरिमिलेनैनअकुलाइ ॥ छिनंसियरेछिनताततोतनहैंचमकिचल्योमुषस्वेद ॥ कंपतिहाथनारिकैंदेषतकोसमुझैंयहभेद ॥ ओपदकैमिसलैंमुषदीनौंकरतैंपानउगार ॥ बहुरिकह्यौंयहनीकीव्हैंहैंबतकीलगैंबयार ॥ नागरियाइहिफागमैंहरिसवविधिपूरेकाम ॥ तपतबुझाईबालकीबनिनयेगुनीघनस्याम १९॥ ॥ राग काफी ॥ तिताल ॥ कोईइकजोगीरूपकियैं ॥ भौंहैंवंकछकौंहैंलोयनचलिचलिकोयनिकांनछियैं ॥ देषिस्यामतनवेषमनोहरबारबारजलबारिपियैं ॥ नागरमनमथअलषजगावतगावतबांधैंबीनलियें ॥ २० ॥ इकताल ॥ स्यामघनघेरयोनवलकिसोरीदामिनतनद्युतिगोरी ॥ करिविचारपिलवारिनारिसबदुरिसांकरीषोरी ॥ तहांगह्योचितचौरआपुनौंकरतप्रेमझकझोरी ॥ उडतगुलाललालगहवरबनधुनिसुनियतहोरीहोरी ॥ मनकौंहरनितहांअंकभरनव्हैंअधरपानकीचोरी ॥ बढिगयोरंगषेलिहोरीमैंक्यौंबरनौंमतिथोरी ॥ बृजजीवनिनंदलालनागरीचिरजीवोयहजोरी ॥ २१ ॥ तिताल ॥ नकीजियेंनजरभरिदिलइस्ककीनिगाहैं ॥ देषैंसबखेलिबीचिछूवोमतिवांहैं ॥ क्यापूंछनागुलालकारुमालकीअदाहैं ॥ नागरियानेहकीनजाहरीसलाहैं ॥ लगैंगाकलंकफेरबनैंगीनिवाहैं ॥ २२ ॥ तिताल ॥ जांनदैंतेरैंपईयांपरतहौंरेकन्हइया ॥ टुटिगयेहारछूटिगयोअंचरभीजिगईअंगियारेदइया ॥ यामगमांझनकरबरजोरीहैंगोकुलकोलोगचवइया ॥ नागरियाधननीतितिहारीधन्यषेलितूधन्यकन्हैया ॥ २३ ॥ इकताल ॥ अंपियांरंगरातीजोबनमतवारी ॥ छु

वैं ॥ १ ॥ सुनिचलीचपलजवभामिनीं ॥ हौरीअभिसारिकाका मिनीं ॥ बिचपिलीबिमलमधुजामिनीं ॥ चलिमिलीस्यामघनदा मिनीं ॥ अतिरसव्ररस्योहैंफागचैतामिलिगावैं ॥ २ ॥ बिचरचीरा समंडलहोरी ॥ मिलबाहुनिबाहुलताजोरी ॥ पियस्यामसुघरराधा गोरी ॥ गतिलैंलैंलेपतिमुखरोरी ॥ अतिरंगबढ्योरीकहतकह्योन हिंआवैं ॥ ३ ॥ बजमृदुलमुरजटंकारतार ॥ किंकिनिनूपुरझंझं झंकार॥ चंचलकलकुंडलअलकहार॥ छुटिछुटिअंचरगयेपुलेवार॥ मनुतियछविवेलीपवनलगैंडिगुलावैं ॥ छिरकैंकेसरकुमकुमासंग॥ चिउटेपटउघरेअंगअंग ॥ लपिसुरछिगिरचोआतुरअनंग ॥ रसरा सफागमिलिवढ्योरंग ॥ थकितरह्योचंदनभपवनगवनबिसरावैं ॥ ॥ ५ ॥ उडिगुलालवनभईघुमडानिपलटितगातिलैंलैंभरिरंगनिबढ कामतरंगनपियसंगानि ॥ लपिगउरस्यामउरझेअंगअंगानि ॥ नैंन निगातिभूलीवैंननिमैंनसमावैं ॥ ६ ॥ नितदंपतिसंपतिसुषसुहाग ॥ नितरासरहसिअरुनित्तफाग ॥ नितबृंदाबनआनंदबाग ॥ नितके लकनूहलहियअनुराग ॥ नागरियनागरइहिंसुखसमैंबितावैं ॥ ७ ॥ ॥ ३४ ॥ इकताल ॥ रंगहोहोहोहोहोरीउल्हयोफागसुपलागसंग॥ बेगआवसखीदौरिदौरिकैंदेषिअटाचढिकैंउतंग ॥ सुनियैंगानगहि रीधुनिआवतबरसानैंकीओरआज ॥ यानन्दगांवकेसांवरेऊपरगउर घटाआईगाज ॥ हैंबिचकुंवरिकिसोरीगोरीदामिनसोद्युतिचमच मात ॥ प्रीतपवनइतप्रेरिचलाईउमडीआवतउत्तरकौंआत ॥ नंदी सुरतैंहैंआनिरगमगीबनउपवननिसरनिकैंकूल ॥ पीतरंगसबरंगीदे षियतसरसौंसीरहीफूलफूल ॥ गलीगलीमैंअलीरलीसबसमघ्यानें

बाजसांवलाछछंद ॥ दुदांमेइकतईपोसेबसंतीफैंटाकजबंद ॥ तिसपैंचलैमूठउसकीसोहामस्तहाल ॥ गोयापढिपढिकैंसिरडालतागुलाल ॥ मुझकौंकछुकियाहैंउसनैंत्रेलिवीचिआय ॥ पायपरौंहायवहीनागरदिषलाय ॥ २८ ॥ तिताल ॥ हुस्नतमासेकाहैंअजायबहोलीकाषिलवार ॥ पिचकारीदरदस्तअजायबसजिफैंठाकजदार॥ रंगसांवलाजर्ददुपट्टाउरमरवारिदाहार ॥ हैंनागरस्यांमासाहिवकेयहफरमांवरदार ॥ २९ ॥ इकताल ॥ दइयारेसवलोगजागैं ॥ धरकैंहियरातनकांपैंजियडरअतिलागैं ॥ मकरचांदनींरातहैंमोहिआवतलाजैं ॥ सेझमोहनकीनचढौंपायलमेरीबाजैं ॥ फागरंगीलेरैंनदईमोहिमैंनसंतावैं ॥ नागरसुन्दरस्यांमकौंअधरारसभावैं ॥३०॥ ॥ इकताल ॥ रसियातेरेकारनैंनैंनानिभईहौंकनौंडी ॥ अपनैंस्वारथरीतिमगनतूप्रीतिरीतिअतिऔंडी ॥ तैंसोईफागनतैंसीयेवृजकीचारचुवायानिभौंडी ॥ नागरघरघरडगरवगरमैंबजीनेहकीडौंडी ॥३१॥ ॥ तिताल ॥ षेलिनजानैंनयेहोरीकोषिलवार॥ उररानींहोंगैंपरतनहिंसमझतचारबिचार ॥ पुन्यबडनकैंसीष्योयहढंगयानीतकीहौंबलिहार ॥ नागरवाघरजाहुचल्योकिनआतुरनिलजउतार ॥ ३२॥ ॥ इकताल ॥ चूरियांझनकैंगोरीबाहुवहुरियां ॥ बाजूवंदफफूंदनिफुंदवाअंगियांगडरहीगाढीमऊरियां ॥ आजारीमिलिसांवरेसोंगोरीडारिदैंरीदिवरानीलहुरिया ॥ नागरियापियठाढेगरीदुरीभईजातहैंपीरीपहुरियां ॥ ३३ ॥ तिताल ॥ तूसुंनिमोहनवैंनबजावैं ॥ मनमोहनवैंनबजावैं ॥ रितुफागलागसरसांवहीं ॥ मुखनांवतिहारोगांवहीं ॥ दूतीधुनिसैंनबुलांवहीं ॥ चलवेगछबीलीअबनहींभवनसुहा

लमानेहारनी ॥ लालचुरीदुहुंऔरस्यामचुरियांलियैं ॥ कंपतरोमकटथातकरनिजवकरछियैं ॥ चुनिचुनिछोटीचवारिचांपपहिरातरी ॥ कासिकसासिकसतरातसुकुचमुसकातरी ॥ थकीदीठमैंदीठबिथामनमथवढी ॥ समझितवैंयहभेदिसर्पाढिंगतैंकढी ॥ वलयाकरकोरीझिदैंनचितमेंठई ॥ देपिइकौंसीवेरअंकमालादई ॥ भयेमगनसुषसिंधुअधररसपानमैं ॥ तनमनसुरझतनांहिरंगउरझांनमैं ॥ वोहोभांतिनिचितचोरकरतचितचोरियां ॥ लालरूपआसाक्तिभईब्रजगोरियां ॥ करतमनोरथसांचसवनिकेफागमैं ॥ नागरियानंदलालभरेअनुरागमैं ॥ ३८ ॥ राग ॥ दिठाग्वारगारिसुरमिठागावतइस्कलपेटा ॥ मदअलसौंहीनैंनसैंनदैंमारतमैंनचपेटा ॥ पियगोरीदाछैलहोरीदासुंदरअंगअंगेटा ॥ नागरीदासदिवानीहुइयांदेषिअजबमहरेटा ॥ तिताल ॥ नैंनासोहनैंरंगपुमार ॥ दोहा—कामकेलिरसरगमगी, सवनिसजगीबिहार ॥ हमजानीमनमोहनां, तेरोहैलंगरलगवार ॥ १ ॥ आवैंआधीरातउठि, अगवारैंपिछवार ॥ तूबकंवलअलिसांवरो, रसलंपटरिझवार ॥ २ ॥ रहेतुटेहीहारउर, छुटेछबीलेवार ॥ पीककपोलनिहीरहैं, सबतनसिथिलसिंगार ॥ ३ ॥ हायपरीनूछैलकैं, नागरियासुकुंवारि ॥ तनझकझोरीसीरहैं, रंगहोरीकीयार ॥ ४ ॥ तिताल ॥ हौंजमुनाजलभरनगईतहांदुहुंदिसरीद्रुमगहवरगैल ॥ निकस्योहैंतहांआयअचानकरंगभीनौंहोरीकोछैल ॥ चलनिसकीलषिकेपगकंपतरहिझुगईतबह्रौंसिरनाय ॥ मदगजराजकीचाललालधुकिगहिलीयोरीअंचरमुसकाय ॥ तबघूंघटपटछूटिगयोहैंनिलजरहेनैंनामुपचाहि ॥ मींडतदुहुंनिकपोलगुलाल

कीगारिगाय ॥ रुकीडगरमहरावनमैंआनंदकुलाहलरह्योछाय ॥
पहुंचिआयराजमंदिरमैंजसुमतिभीतरिलईगेह ॥ उडिगुलालछूटी
पिचकारीबरसिपरयोअतिमेह ॥ मिलिमिलिदेतझमकिझूमकतहां
वाजतचंगमुहचंगउपंग ॥ छूटतबसनहारउरटूटतिरावरिमैंमचिप
रयोरंग ॥ दुरेलाललषिलयेसबनिमिलिपकरेतोरिरिकिंवार ॥ भई
मनोहरभीरभुजनबिचभरिलाईअंकवारिनारि॥नंदजसोदाहसतदुरि
ठाढेदेषिरहेरसरीतप्रीत॥सुन्दरकुंवरलाडिलोनागरफगुवामैंलैंगईजी
त॥इकताल॥ कहाकरौंरेकहाकरौंदइयादिनकठिनबिहाय॥ जबतैंल
ग्योहैंमासफागुनआय ॥ भरननदैंनंदियापनघटपांनी ॥नाहरसी
वैठीरहैंबाहरजिठांनी ॥ हौंहिएकरूपवंतवैसकिसोरी ॥ औरहुनको
ऊकहागोकुलमैंगोरी ॥ बंसीडफसुनिसुनिहियोअकुलावैं ॥ मेरेघ
रआसपासछैलमंडरावैं ॥ नागरिकुंवरआयोतोरिरिकिंवार ॥ होरीके
षेलमिसिमिल्योलगवार॥३६॥ इकताल ॥होरीकेषेलमैंगुमानकैंसोगु
मानगुमानकीठोर ॥ कोरांनांकोरंकफागमैंजहांप्रेमकीरोर ॥ हिल
गजहांनहींबिलगिमांनिबोलैंअबीरफिरिओर ॥ नागरीदासनिसंक
स्यांमकौंभरहुकुंवरिदौरिदौरि ॥३६॥ इकताल ॥ दइयातैंकन्हैंइया
करडारीहोंनकबानीकररे ॥ आछैंहाथधोयपाछैंपरयोनैंकदईतैंड
ररे ॥ चुरियाफोरगढायोकेकनअंकनिभरभररे ॥ यहनागरताहोरी
षेलिकोसीष्योकानैंघररे ॥ ३७ ॥ रागगौरी ॥ तिताल ॥ मानिहार
निबनिस्यांमदेतफिरैंफेरियां ॥ संगलीनैंवहोरंगचुरिनकाढेरियां ॥
नैंनलगेजिहिंगलीसुफिराफिरबोलहीं ॥ पीयवचनपहिचांनप्रियाचि
तडोलहीं ॥ भईआतुरीचितरहीनसंम्हारनी ॥ भींतरलईबोलायनव

हैदेपिफिदाहैंज्यान॥ कियाघरघरइस्कउजागरनागरस्यामसुजान॥

रागईमन ॥ इकताल ॥

इसहोरीपेलिबीचइतनीइजूतराबीक्या ॥ टुकरोकचलोदिलकौं इहांरुकतानहिक्या ॥ छूवोमतदेपतेहैंनिजरबाजलोग ॥ जाहिरजहांनबीचइश्ककरनाहैक्या ॥ आपहीगुलालसाथआतेहोक्या ॥ लिपटेहीजातेहोक्याजीयहक्यामस्तहालसाहिवहोतुमकौंनहींनंग ॥ नागरपियारेजानदेपोइतनाभीक्या ॥ ४६ ॥ रागअडानौ ॥ इकताल ॥ गांसगंसीलियेबातैंछिपाइयेइस्कनगाईयेगाईयेहोलियां ॥ गैंदवहानैंनवीराचलाइयैं ॥ सूधैंगुलालचलाइयैंझोलियां ॥ लोगबुरेचतुरेलपियांवैंगेदावैंरहोदिलप्रीतकलोलियां ॥ पांयपरौंजिनडरोपियनागरहायकरोमतिवोलियांठोलिया ॥ ४७ ॥ तिताल ॥ भरिभाजतइहिंओरसबनिमिलिगहिलीनौंचितचोर ॥ उरझिगयोपियवाहुलतनबिचपरेप्रेमझकझोर ॥ अपअपनौंमनभायोकरलईपिचकारीकरनमरोर ॥ नागरियालैआईप्यारीढिगबांधिपीतपटछोर ॥ ४८ ॥ इकताल ॥ जातांकितैंकतरायैंलालरंगहोरीहैं ॥ व्हैंरहेयाबृजबीचदुवहियांआईनवलकिशोरीहैं॥ठाढेरहोअवबचैवहुतदिनकहाचाचरमैं चोरीहै ॥ नागरछैलछछंदछलीतुमभैंकरियेसोथोरीहैं ॥४९॥ रागबिहागरोइकताल ॥ रंगहोहोहोहोरीपेलैंलाडिलीवृषभानकी ॥ दामिनअंगरूपअभिरामिनिस्वांमिनितियरसषानकी ॥ माससमाघसुंदिराकानिसमुषप्रथमपेलिआरंभहैं ॥ होरीडांडोरुप्योग्वैरवैंमनौंमदनरनपंभहैं ॥ बाजतडफदुंदभिसहनाईगोमुषआनकभेर ॥ सरसानौंफागसुखऔसरबरसांनौंतिहिंबेर॥नवसतअंगसिंगारसाजिजेरंगभरी

निआयोअतिउरमदनउमाहि ॥ लईभुजनिकैंबीचसषीकसिकंपत सीतासिथिलभयोगात ॥ धीरजहरीहरथ्योमनमेरोकहाकहोंओरला जकीबात ॥ गुरजनलईकछुवातिजांनिअबनिकसनदेतभवनकेंवा र॥ अतिब्याकुलजियमरतमसोसनिसुनिसुनिमुरलीडफधुंकार॥ ला जसौंकाजसरथ्योनाहिंमेरोस्यांमअंगव्हैहौंबनमाल ॥ जिहितिहिंवि धिलैंचलिनागरियाजहांहोरीपेलतनंदलाल ॥ ४२ ॥ तिताल ॥ प नियांनजाउंरींआगैंमचिरह्योप्यालरी ॥ बीचवटपारोठाढोमदनगु पालरी ॥ तैसेईउपाधीहैंरीनिलजसंगुबालरी ॥ हाथनिमैंपिचकारी फैंटनिगुलालरी ॥ वहिदेषिआवैंछैलामदगजचालरी ॥ अबकित जाऊंरीदइयादुरिइहिंकालरी॥नागरियाकंपैंपगहोतहैं विहालरी ॥ मे रोरूपभयोमेरेजियकोजंजालरी ॥ ४३ ॥ इकताल ॥ सुंदरसांवरी कोउआइहैनइनियांआज ॥ बैंदीदियेंजरायकीहैंलियेंद्रगनिमैंला ज ॥ घूंघटझीनौंचीरकोपहिरैंहारहमेलि ॥ अंगजोतिजगमगरही मानूंरचीनीलमानिबेलि ॥ झवामहाबरउबटनौंलियैंधरतमंदगतिपां व ॥ रूपअचंभोव्हैरह्योवाकैंकौतुकलाग्योगांव ॥ समझिनैंनकीसैं नमैंघरलईविसाषाबोलि ॥ नायननायोसीसपायनिकौंकह्योभेदस बखोलि ॥ लैंआईजबनिकटकुंवरिरहीनिरषिरूपअभिरांम ॥ ना गरियाढिगबसीमहलमैंपूरेमनकेकाम ॥ ४४ ॥ इकताल ॥ अरीदे षियेमुरलीवालाप्रानजान ॥ फैंटाजरदअमैंठातिसपरतुररानाफरवां न ॥ जुलफकेपैचपरेलषिआंननपांनचवांन ॥ भौंहैंकसौंहैंचस्मछ कौंहैंमारतहैंमुसकान ॥ दिलकूंभावतगैंदचलावतगावतहोरीतांन ॥ ढोरीलगीदिलदोरीभईमनमोहनपरकुरबान ॥ होयसदाहैंअंगअदा

मैंप्यारीकरनफूलपायेलालकीअलकमैं ॥ ५२ ॥ तिताल ॥ चलं मिलिभावतेरसअैंन ॥ पेलिभागभुजअंसमेलिदोऊमत्तद्विरदगतिगैंन ॥ सोहतबसनगुलालसगमगेअरुआलसवसनैंन ॥ नागरीदासदोऊनमिलिकीनोंनवनिकुंजसुषसैंन ॥ ५३॥ रागपरज ॥ इकताल ॥ आजुहोरीषेलतसांवरो ॥ पिचकारनिधारनिबूकाबंदनउड़िछायरह्योनंदगांवरो ॥ निरषिमदनजोरीरंगबोरीआयागिरचोतनतावरो ॥ नागरीदासचतुरहसिढारतचितवनिमेंउरझांवरो ॥ ५४ ॥ तिताल ॥ होरीषेलैंमोहनीमोहनसंग ॥ धांवनिभरनियचावनिरीरह्योचाचरमेंमचिरंग ॥ बीननिपरनिप्रवीनामिलावैंनूपुरमधुरमृदंग ॥ गावतगारिधमारिनारिनवनित्ततस्यांमसुधंग ॥ रंगभरेलपटातभुजनिबिचरुकतनप्रेमउमंग ॥ नागरीदासभईअंपियनिकीनिरषिनिरषिगतिपंग ॥ ५४ ॥ तिताल ॥ रंगीलीगलिनबिचहोहोहोरी ॥ इतनंदनंदनरसिकलाडिलोउतवृषभानकिसोरी ॥ उड़तगुलालकछूनहिंसूझतझकझोराझकझोरी ॥ नागरीदासपरसपरढारतभरभरकनककमोरी ॥ ५५ ॥ इकताल ॥ गलेबिचइस्कपयाजंजाल ॥ क्यौंमैंगईदिवानीपेपनिनंदनंदनदाप्याल ॥ मुहगुलालपूछणनूंमेरेलायारिंदरुमाल ॥ नागरीदासहुईउसाछिणतैंसबसुषदीहटनाल ॥ ५६ ॥ तिताल ॥ अरीबृजमंडलपरमसुहावनौंइहांसदासहजरसरीत ॥ नंदगांववरसानैंकीअबवोहोविधिबाढ़तप्रीत ॥ उतैंकुंवरनंदरायकोइतश्रीवृपभानकुमारि ॥ लगनलाजउरझौंहैंदोउनाहिसकतानिरवारि ॥ गनतरहतादिनफागकेयहआयोसोफाग ॥ ठौरठौरडफबाजहीअबदवतनहीअनुराग ॥ आजुपेलिआरंभहैंउमग्योहियैंहुलास ॥ येइतउ

षिलवारीहो॥ अपअपनैंभवननितेंनिकसीबिचवृषभांनिकुंवारिहो ॥ कुंवरिकिशोरीजूकीसोभालषिसबहीतृणतोरैं ॥ सूरजमुषीझुकिजातफिरकंवलमनौंचौंरढोरैं॥ बाबाओकीरतिजूताछिनवारेरतनअमोलहैं ॥ षेलनचलीराजमन्दिरतेंकुण्डलहारसलोलहैं ॥ देषीप्रियाजबैंआवतउतमनमोहनअतिसुषबनैं ॥ सावधानभयेगोपसिमटिसबबाजिउठेबाजेघनैं ॥ दुहूंदिसिआरिघमारिनकोसुरमिलिमंडपगयोछायकैं ॥ शिवसमाधिछुटिगईश्रवनिसुनिमुनिमनरहेलुभायकैं ॥ उतनंदनंदनरसिकसिरोमनिइतराधाअभिरामिनी ॥ उडतअबीरगुलालगगनचढिभईदिवसतेंजामिनी ॥ वृजनारीपिचकारीधारादैंरोकीअंचरपांनकैं॥ मुरिमुरिभरनिबचावनिछबिसौंकोकारिसकैंबषानकैं॥ रूपलालचीलालबालकौंभरतहैंनियरैंआयकैं ॥ गहिलीनैंघनस्यांमसबनिमिलिदामिनीसीलपटायकैं ॥ अंगपरासिमैंरंगबढ्योदोउपरिरंभनिउरझानैं ॥ नागरियाजबफिरीजोतिकैंबजतचलेसहदानैं ॥ ॥ ५० ॥ तिताल ॥ रंगहोहोहोहोरीमची ॥ अगनितछुटतकरनपिचकारीदुहूंदिशिचमकतरतनषची ॥ लालगुलाललयोमुखमोडनिमृगनैंननिकीभौंहनची ॥ लिपटिगईघनस्यामलालसौंचमकिचमकिचपलाललची ॥ दुरतगहतफिरकरतमनोरथदंपतिअंषियांपीकरची॥नागरीदासमिलनिझकझोरनिहोहाबोलनिकोउनबची ॥५१॥ इकताल ॥ होरीषेलिठाढेदोऊकेसरिकीकिचबीचमोतीबेशुमारपरेहारनिरलकमैं ॥ रंगनिबसनिभीजेअंगनिलपटिरहेसरकेसिंगारदेषिविसरीपलकमैं ॥ स्यामाकेसह्मारतहैंनागरियाभूषनकौंत्यौंहीसपीस्यामकीसुआनन्दललकमैं ॥ लालनकेबेसुरीसुपाईप्यारीबेसरि

वेंव्रजनारिगारिगहिमहिभरिभईउमग्योहुलास ॥ होरीकोत्योंहार फिरिमिल्योसमधानौंतामेंआनंदकुलाहलव्हैबीचरानिबास ॥ नंद कोकुंवरवृषभानगोदलियेंवैठेलीयेनन्दवृषभानकीकुमारि ॥ दुहुनि कैंहाथदैंगुलालहिपिलायेजवनागरियावहुतनिदीनैंप्रांनवारि ॥६०॥ आनकत्रिकत ॥ तिताल ॥ रह्योरंगहोलीसरसाय ॥ एकणादिसि प्यारीहुईहुवाएकणदिसपियआय ॥ गावैंसपीसुहावणीसाथेरुंजमु रजसोहैंसाज ॥ कुंजसदनरेंआंगणैंरह्योमदनझुझाउवाज ॥ फागु णासमैंसुहावणौंपेलैंनवलरंगीलापेल ॥ उडिगुलालघुमडीघणौंवहि चलीधरणिरंगरेल ॥ लूंमझूमिलपटाइयादोन्योंसुषमांडणरैंप्याल ॥ रसिकविहारनिलाडिलीपियरसिकबिहारीलाल ॥ ६१ ॥ राग सोरट ॥ कान्हानिलजगारिजिनदैंरे ॥ हौंहारिहाहाअबतोसोंनैं कलाजमुपलैंरे ॥ अबयाबगरभूलिनहिंऐहौंसौंहवबाकीहैंरे ॥ नाग रियानवबधूविगोईहोरीमांझसबैंरे ॥ ६२ ॥ इकताल हौंपियनैंननि कीनीवोरीकहाकहौंकलनपरतदिनरातियां ॥ सोवतजागतचलतफि रतअवमोहितलफतहीवीनतछिनछिनलगीइहिंमुपकीढोरी ॥ इननैं ननिकैंहाथबिकानीदेपनिकौंउठिदोरी ॥ नागरियाघरवरजितर जिरहीहौंनरहीजियलरजिडारीतुमहेरीमैंरूपठगोरी ॥ ६३ ॥ इकताल ॥ मोहनवारीत्रसिकीजैं ॥ हसिलीजैंहोरीमैंहोहारिऐसीगा रिक्योंदीजैं ॥ हाहापायपरतहैंप्रीतममोजियलाजनभीजैं ॥ नागर नवलबिहारीप्यारेजोचाहैंसोलीजैं ॥ ६४ ॥ तिताल ॥ प्यारीजूकेपुलिगयेसौंधैंभनिंवार ॥ देषिसषीयहरीतअनोषी बंधिगयोमनरिझवार ॥ झूलिरह्योवैंनाग्रीज्ञाढिगटूटिरहेउरहार ॥

ततें आयेदोऊविचसंकेतनिवास ॥ गांनरंगगहगडमच्योबृजरहोकु
लाहलछाय ॥ उड़तअबीरगुलालसौंनभदिनमनिनहिंदरसाय ॥ छै
लछलीछिपसांवरोफिरचल्योप्रियाभरिभाजि ॥ तबजुवतनिमिलि
गहिलयोइतउठीदुंदुभीवाजि॥ शोकिदियेबिचकुंजकैंरहीढिगश्यामा
मीति ॥ नागरियाइहिबिधिरहोनितबरसानेकीजीति ॥ ५७ ॥ ति
ताल ॥ रगमगेबसनगुलालरंगदोउछबिसौंलगिलपटायपरे ॥ प्रति
बिंबिततनमौजह्वोजपरछुटतफंवारेरंगभरे ॥ कुंजमहलरसफागमनौं
हररूपरीझिभीजिउधरे ॥ नागरिनागरबदनचंदमैंद्रगचकोरफिरि
फिरिनटरे ॥ ५८ ॥ इकताल ॥ दुहुंनिमैंआजुरहसिरसफाग ॥ ता
लतांनबंधांनगांनधुनिपरजगरजिरह्योराग ॥ बीनरबाबमृदंगमुरज
मिलिचल्योझमकिझंकार ॥ सषिनसहितदंपतिगतिलैंलैंचलिछोड
तपिचकार ॥ दुहूंघांतेंआवनिउलटनिकीछबिबरनीनहिंआवैं ॥ अ
लबेलीसहचरिचाचरमैंचहचरिचहूलमचावैं ॥ नूपुरनादसुनतबिथ
कितरहेकोकिलमधुपमराल ॥ उड़तगुलालगगनआंगनसबहरित
कुंजमईलाल ॥ हुईअरुनसगबगेबसनतनरगमगेनेहनबीनैं ॥ लटप
टायलपटानैंतिंहिंछिनगउरश्यामरंगभीनैं ॥ सिथलअलकटूटीउर
मालागरबहियांमुसकातेनागरियाहियबसेमहलमैंहोरीकेमदमाते ॥
रागपंभायची तिताल ॥ आजुफागसुपसरसांनौंबरसांनौंशोभादेत॥
आयेश्रीवृषभानजूकेगोपराज ॥ सुंदरसिंगारेसबबीचबलरामश्या
मसोहैंसंगरंगभरचोकुंवरसमाज ॥ कीरतिजशोदामिलिजारिनमैं
झांकैंझूमिमिलेबृजराजादोउउरलपटान ॥ होतरसरीतिनकेबिबि
धिबिनोदतहांधनघनबरषैंमइंद्रवादावृषभान॥ ठौरठौरबाजैंडफगा

टपीतपैंचिलीनौं ॥ वनमालाकौंउतारतवनमालहोतप्यारी ॥ यह छबिनागरियाटरैंनाजियसौंटारी ॥ ६७ ॥ आनकाबिक्कत ॥ तिताल ॥ बिचवृजनारचांरैंझुंडराधारूपहैंरूडो ॥ ग्रीवझुकायांझूमकनाचैंसीसकेसांरोजूडो॥ केसरिरंगभीजीसाडीमैंझलकरह्योछैंचूडो॥ देपिछक्यापियरसिकविहारीरह्याधीरघरकूडो ॥ ६८ ॥ इकताल॥ वृजफागुनआजसुहायो ॥ आनंदरूपधरिआयो ॥ हुल्लासहियेनसमावैं ॥ नटनागरिधमारगावैं ॥ इतबधूवृंदसुषरासी ॥ उतरंगभरेवृजवासी ॥ दोहा ॥ वृजवासीरहेरंगभरि, मोहनकैंअनुराग ॥ जुवतिजुत्थसनमुपचले, मुदितमचावतफाग ॥१॥ मुदितव्हैंफागमचावैं ॥ डफकुंजगुंजारितआवैं ॥ भीनैंरंगसौंभातिभलीहैं ॥ मनुकामकीफौजचलीहैं ॥ सबकरतकतूहलग्वाला ॥ माधिनायकनंदकेलाला ॥ २ ॥ दोहा ॥ माधिनायकनंदलालउत, इतराधेसुकुवारि॥ संगछिपाकरिकैंमनौं, उडगनिसबवृजनारि॥उडगनसबवृजनारी॥ उमडीआवैंगावतगारी ॥ मुषतैंकछूघूंघटटारे ॥ सोहैंसुंदरश्यामनिहारे ॥ चलीअछनिअलच्छकटाछैं ॥ मांच्योनैंनषेलिअतिआछैं ॥ दोहा ॥ नैंनपेलिआछैंमच्यो, दुहुंदिशिचतरषिलार ॥ रहेजुइतउतरीझिकैं, गउरश्यामरिझवार ॥ ३ ॥ रिझवारश्यामअरुगोरी, महामचीपरस्परहोरी ॥ पिचकारिनकोझरलायो, घनसांवनसौंदरसायो ॥ भयोउडिगुलालअंधियारो ॥ विचझलकतलालटिपारो॥ दोहा ॥ लालटिपारोझलकहीं, घूंघरिमांझगुलाल ॥ तिहिंसुधधावतभरनमन, हरनतरुनवृजबाल ॥४ ॥ मनहरानितरुनिवृजबाला॥ मनुपेलतिदांमिनमाला ॥ इकभरतअंकघनश्यामैं॥इकषेचतमुक्ता

नागरियायहछबिहियेंबसिबिचमनमथरंगाबिहार ॥ ६५ ॥
इकताल॥ बोलैंरंगहोरीहोरीहोरीडोलैंरसमत्तगोपवृंद॥तामाधिमाधि
नायकवृजचंदनंदनंद ॥ निकसतजहांजहांहोजकेसरिकीकीच॥
करतहैंकुलाहलवृजबीथिनकैंबीच ॥ भरतहैंनिसंकजायतोरिकैंकि
वार॥ छांडतमनभायोकरिफागमग्गवार॥सुनिसुनिडफदुंदुभिबि
चमुरलिकारसाल ॥ झुंडनिमिलिझूंमिझूंमिआईवृजबाल ॥ गाइ
उठिगारिगरजिरूपकीघटा॥ उडिगुलालदुहुंओरअटिगईअटा॥२
होताबिबिधषेलिबढ्योसिंधुरसहिलोर ॥ गिरिगिरितहांपरतगलिन
मांझहारडोर॥ नीकैंनाहिंसकतलषिजिनकेमुषमयंक॥ तिनकौंला
लधूंधिरमैंनिसंकभरतअंक ॥ ३॥ छूटिछूटिअंचारिगयेपूटपूटबार॥
हारटूटपगनिपरतमानतनहींहार ॥ राधेसैंनपायसिमाटिधाईसबबा
ल॥ कहिहोहोहोरिहोरीपकरेनंदलाल॥४॥ पैंचतइकाकिंकिनी
कटिफिरतसंगसंग॥ रोरीलपटातएकलपटतअंगअंग॥ गउररयां
मउरझनिछबिबढ्यौरंगरंग॥नागरियानिरषिनैंनभयेपंगपंग॥५॥
॥ ६६॥ इकताल॥ रसफागआजुबाजेंडफदुंदभिसहनाई॥ कल
गारनिधमारनिधुंनिगानरंगछाई॥ सबषेलनिकोउल्हयेउतकंठतम
ननैंना॥ वोहोसाजिकैंचलीहैंमानौंअनंगसैंना ॥ उतमोहनांरंगी
लोइतराधेरंगबोरी॥ वृजबांथनिपरसपरमांचीहैंरंगहोरी॥पिचकारीरं
गधारावोहोछूटतसुहाई॥घुंमडिगुलालधूंधरिकछुदेतनादिषाई॥ भरि
भाजतपकरिलैंसिरनावतकमोरी॥दुहूंओरव्हैंरहीहैंझकझोराझकझो
री॥पटअंचरउसारिगेउरहारडोरटूटे ॥ झुकिझूलतहैंवैनाबरबारपी
ठछूटे॥ तियदामिनीनघेरचोघनस्यांमरंगभीनैं॥कोऊलैंगईहैंवंसीप

लापनिहूकीभीरलगिरहीमनलोचनपरसांनपैं ॥ जानागरपरयहबृ
जअटक्योसोअटक्योबरसानेपैं ॥ आंनकबिकृत ॥ रागनाइकी ॥
तिताल ॥ होहोहोरीकहिबोलैंसबबृजकीनारि ॥ नंदगांवबरसांनेषे
लमैंगावतइतउतरसकीगारि ॥ उड़तगुलालअरुनभयोअंबरचल
तरंगपिचकारकोधारि ॥ रसिकबिहारीभानदुलारीमाधिनायकदोऊ
पिलारि ॥ ७२ ॥ आनकबिकृत ॥ इकताल ॥ एजुनीकैंतुमजाहु
चलेजिनभरोमेरीसारी ॥ सुंनिस्यांमसुंनिस्यांमसोहैंतिहारीयाहीबे
रछिनायलैंहुकरतैंपिचकारी ॥ अवकछुमोपैंसुन्यौंचाहतहोगारी ॥
घरमेंईसीपेढंगरसिकबिहारी ॥ ७३ ॥ तिताल ॥ क्यौंसतरानैंहो
रीहैंजूसुकुंवार ॥ गरैंपरैंबिनन्यारोरहौंक्यौंतिहारेहियकोहार ॥ पं
डितमदनदयोमोकोंयहफागुनमंत्रबिचार ॥गारतिहारीप्यारीप्यारी
लागतहैएनागरियाइहिंबार ॥७४॥ रागनाइकी इकताल ॥ सांवरो
पेलअटपटोपेलैं ॥ कोंपेलैंवाकैंसंगसजनीबरवटधीटभुजनभरिझेलैं॥
मोहीसोंकछुवैरपरयोतकिपिचकारीउरबिचपेलैं ॥ नागरीदासलाज
होंभीजौंबडडेनैंननैंनसोंमेलैं ॥ ७५ ॥ आनकबिकृत ॥ घासाचाक
ररहस्यांजीम्हेराजराचाकररहस्यांराजकुंवरकिसोरीजी ॥ फूलबि
छाताजास्यांआगैंलियांपीतपटझोरीजी ॥ सूरजमुषीहाथलियांफि
रस्यांछांहिकियांमुखगोरीजी ॥ रसिकबिहारिरह्याटहलमैंहोसीरंग
रलीभरिहोरीजी ॥ ७६ ॥ आनकबिकृत ॥ तिताल ॥ भजिंआरीचू
नरीहोनन्दलाल ॥ मतिनाषौंकेसरिपिचकारिहाहामदनगुपाल ॥
भीजबसनउघडयासीअंगअंगकौंणनिलजयहप्याल॥रसिकबिहारी
छैलनिडरथेमानैंतोजंजाल ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ मतिटोकोरोकोमती,

दामैं ॥ इकपौंछतिहैंमुपपानन ॥ इकलेतउगारहिंआनन ॥ दोहा॥ आननलेतउगारइक, घायलबांननभैंन॥ इतउतदोऊरसपगे, पगेनैंन बिचनैंन ॥ ५ ॥ पगेनैंनबिचनैंना ॥ रंगकह्योपरतनाहिंबैंना ॥ टूटे हारडोरमनिमाला ॥ छूटेछबीलेबारबिसाला ॥ फूटिचुरियानीबी पुटीसी ॥ठाढीमैंनकीसैनलुटीसी॥दोहा॥ लुटीमैंनकीसैनसी, थकीषे लिरसफाग ॥ जीतिलालकोंलैंचली, भरीमहाअनुराग ॥ ६ ॥ अनु रागभरीरंगमाहीं ॥ दईगउरस्यामगरबांहीं ॥ सौंहैंफागषेलिगठजो री ॥ मनमोहनसंगकिसोरी ॥ आयेकामकेकुंजनिबासनि ॥ सुप दीनोंनागरीदासनि ॥ ७ ॥ आलकबिक्कत ॥ राग ॥ मनमोहनसो हनस्यांमनंदढटोनांरी ॥ बिनदेषेपलकलनपरतहैंमेरोजीबलगोनां री॥होरीमैंमोपैंठगोरीसीडारीहोंरिझईरीझिरिझोनांरी॥पेलौंगीमिलि रसिकबिहारीसौंबाबिनषेलअलोनांरी ॥ ६६ ॥ रागधनाश्री ॥इ कताल ॥ तूहीकहकैंसैंकरूंमेरोरूपदुराऊंकिहिंभांतरी ॥ घूंघटमैं नाहिंदबतनिगोडीमेरेगउरबदनकीकांतरी ॥ निकसनसकौंभौंन तैंबाहरकौंनबन्यौंयहजोगरी॥हौंसुन्दरअरुयाब्रजकेहैंरूपबाबरोलो गरी ॥ मोहनकुंवरलग्योंहैंआतुरअधिकअधीररी ॥ मोहिरूपील पिनारिनायरहीजातनैंनभरिनीररी ॥ बिनहोरीयहगतिजासौंकैंसै रहूंबचायरी ॥ अबनागरडफफागझुझाऊमेरेसिरपरबाजेआयरी७० राग ॥ मोहिहोरीषेलनदेनंदबारेसौं ॥ छाड़िछाडिबहियांननंदीय हउधमदेतसांवरेसौं॥ लैलांवनकासिलागवंसगाहिपेदअाउगोद्दारेसौं॥ नागरियेअबतोटारिवानाहिंफागुनरंगअपारेसौं ॥ ७१ ॥ राग ॥ सब कीहैंचोटनिसांनेपैं ॥ नैंनांबांनछुटैंचहुधांतैंचांद्रिकाबहरकवांनेपैं ॥

फिरतप्रेमझकझोरी ॥ ८१ ॥ बादणो ॥ प्रथमबीजनैननिबयेसु
सकनिअंकुरजागेरी ॥ नेहबेलिरहीफूलकैंभरहोरीफललागेरी ॥
पेलोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ १ ॥ प्रगटहोनलगियारयांब्रजफागअ
मलसरसानौंजू ॥ नागरियाउरझेनंदीसरसुबसबसोबरसानौंजू ॥
पेलोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ २ ॥ बरसानैंनंदगांवमैंफागपेलव्है्गर
वारीजीतिरहीवृजनागरीहारेहरिभरिवाभरवारी ॥ ३ ॥ ८२ ॥ षे
लोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ अथ होरी ॥ राग ॥ आज्ञुषेलतहोरी
सांवरो ॥ पिचकारनिधारनिबूकाउठिछारझोनंदगांवरो ॥ १ ॥ नि
रपिमदनजोरीरंगबोरी ॥ आयगिरचोतनतांवरो ॥ नागरीदासचतु
रहसिडारतचितवनिमैंउरझावरो ॥ २ ॥ राग ॥ होरीषेलेमोहनी
मोहनसंग ॥ धावनिभरनबचावनरीरहोचाचरिमैंमचिरंग ॥ १ ॥
बीनानिपरनप्रवीनमिलावैंनूपुरमधुरमृदंग ॥ गावतगारिधमारिनारि
नर्ततश्यामसुधंग ॥ २ ॥ रंगभरेलपटातभुजनबिचरुकतनप्रेमउ
मंग ॥ नागरीदासभईअंपियनकीनिरषिनिरषिगतिपंग ॥ ३ ॥
॥ राग ॥ रंगमोहनकेअनुरागी ॥ लोचनकहादुरावतहेलीनवलरैं
नमिलिजागी ॥ झलकतउरआनंदरंगतुवअंगअंगरसपागी॥याहोरी
मैंनागरियाद्दगप्रीतश्यामसौंलागी ॥ ३ ॥ राग इमन ॥ मुरवारी
वेसरिकान्हसुधारी ॥ नैंनमिलायसकुचिउरझावतउरझेबालविहा
री ॥ उरझिगयेबनमालपीतांकिंकनिउरझीसारी ॥ नागरीदासफा
गमेंउरझेहियउरझेपियप्यारी ॥ इतिश्रीहोरीउत्सव ॥

## अथ फूलरचना ॥

॥ दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेतबिच, अलिबैठेमधुलैंन ॥ दंपति

चलाजाहुइणगैल ॥ रंगभरोमतिभांवता, मतिजीमतिपियछैल॥१॥ मनहांमैंएरहणघो, इसाअटपटाफैल ॥ रंगलग्योछिपसीनहीं, मति जीमतिपियछैल ॥ २ ॥ चुगलचवाईगांवयो, बुरालोगअणपेल ॥ कांईपेलोष्यालए, मतिजीमतिपियछैल ॥ ३ ॥ रसिकाविहारीप्या लए, सीष्याभलाअडैल ॥ पगांपडांछांहाथजी, मतिजीमतिपि यछैल ॥ ४ ॥ राग ॥ कन्हैयामाईआंपिनहोरीमचावैं ॥ अंषियन मैंअनुरागअरुनईअंषियनिरंगरचावैं ॥ अंषियनमैंललचायलालची अंषियनमैंललचावैं ॥ नागरीदासपैठअंषियनिमैंफिरअंषियन तरसावैं ॥ ७८ ॥ राग झंझोटी ॥ राग झुरमटरा ॥ अनी हाहोनंदमहरदानागरमैंनरंगभरैवरबटरा ॥ क्योंकरपनींयांजा उंसजनीराहठाढोपनघटरा ॥ हाहाकरतभरतजूवतनकौरसिकबिहा रीनटरा ॥ आन कबिकृत ॥ रागकाफी ॥ कैसैंजलजाउमैंपनघ टजाऊं ॥ होरीपेलतनन्दलाडिलोरीक्योंकरनिवहनपाऊं ॥ वेतोनि लजफागमदमातेहौंकुलबधूकहाऊं ॥ जोछुवैंअंचररसिकबिहारीतो हुंधरतीफारसमाऊं ॥ ७ ॥ रागकाफी ॥ आन कबिकृत ॥ मनमो हनमेरीआंगियांरंगडारीरे ॥ याहोरीमेंलाजरहैक्यूंसासनणंदडरभा रीरे ॥ तुमतोछैलगैलनितरोकोहोंआउंसंगनारीरे ॥ काहेनिडरधीट बटपारेहुवारसिकबिहारीरे ॥ ८० ॥ तिताल ॥ हरिसौंअटकोंग्वार निगोरीलगिरहीरूपसुरतचितडोरी ॥ मदमोकलगजज्यौंगोकुलमैं कुलसंकुलगहितोरी ॥ बिनदधिहींदाधिबेचतबीथनिकछुसुधिरहीन थोरी ॥ बिरहबिबसजानीनगईकहूंसिरतैंगिरतकमोरी ॥ नागरिया कौंतिकसवलागीवालकवैसाकिसोरी ॥ पुलिगयेबारसुधिनअंचरकी

हंसघुहलाईफिरिमदनदुहाईहोइरहेआरातिगउरश्यामगातरी ॥ फूलनिसफलकरीनागरियाआजुहोभईपरमसलौनीयहरातरी. ॥ १ ॥ राग पंभायची ॥ ताल जात्रा ॥ सपीदेपिनवकुंजछबिपुंजकुसमितमहाकरतअलिगुंजमनुरुंजवाजैं ॥ जौन्हजगमगसुमनबासरगमगतहांमदनडरडगमगतलाजमाजैं ॥ कमलसयनीयपरकमलनयनीकमलनैंनचैंनीरंगेरंगरैंनी ॥ लालकीअलकपरवालफूलहिधरचोफूलसौंलालरचेवालवैंनी ॥ हारपियकरतमनुहारकरहारटूटैंबिथुरवारछूटैं ॥ सुरतसुपसुभटदोऊलिपटहींनिपटद्रढकंचुकीपटकपटग्रंथषूटैं ॥ गउरसांवरअंगसंगअतिरंगभुवभंगक्रगद्रगनिमैंपंगकीनैं ॥ मंदवतरानिमैंदामिनीरदनदुतिछबिसदनवदनरसभीनैं ॥ मधुरमधुअधररसरसनांरसतहसतमुखहसततांबोलदैंहीं ॥ बंधेभुजपाससुभवासपुलकतअंगनागरीदाससुखरासलैंहीं ॥ १ ॥ राग केदारो ॥ तिताल ॥ फूलभरेपियप्यारीफूलनिसौंपेलिहीं ॥ फूलनिकेहारझूलतझवाफूलनिकेफूलनिचलायझुकिझेलिहीं ॥ फूलाईजुन्हइयाकूंजफूलकेबिछौनातहांदोऊचढेआनन्दअलेलिहीं ॥ नागरियासबीसबफूलभरीआंषिनिमैंफूलनिकीकेलिहिलकेलिहीं ॥ १ ॥ इकताल ॥ महकिरहीफूलनिकीनवलनिकुंजसुवास ॥ फूलनिकीरचनालषिहैंजहांमहकिकामहुलास॥फूलनिकेभूपनदंपतितनचंद्रिकारहीप्रकास॥नागरियागावतकेदारोतहांसपीसुघरआसपास ॥ राग अडानो ॥ ॥ इकताल ॥ एकगुलावकेफूलनिकीपंषुरीविपुरीसुपसेझझकोरैं ॥ एकहीमालागुलावकेफूलकीझूलिरहीतनसांवरेंगोरैं ॥ एकगुलावकोसीसीलसीकररंगसौंअंगसुढारनिढोरैं ॥ एकगुलावकेफूलकौंना

हितवृंदाविपिन, धारेअगनितनैंन ॥ १ ॥ रंगरंगभूषनफूलके, रहे फूलतनझूल ॥ अंतरकीबाहिरमनौं ॥ प्रगटीअंगअंगफूल ॥२॥ बनफूल्योफूल्योझुमन, फूलवेसअभिराम ॥ सवैंकरीफूलनिसफल ॥ मिलिकैंगौरीस्याम ॥ ३ ॥ फूलेफूलेलसतहैं, दोउदियेगरबांह ॥ लषिफूलीनागरसषी, फूलीकुंजनिमांह ॥ ४ ॥ पद राग विहागरो ॥ ताल चपक ॥ फूलेवहोफूलनिसौंवृन्दावनसोभादेत ॥ तामैंफूलीराकानिसअतिछविछाईहै ॥ कुंजकुंजफूलपुंजगुंजतमधुपमाति फूलनिसौंमिलीमंदपौनासियराईहैं ॥ सोहैंस्यांमास्याममपैंसिंगारसजैंफूलनिकेफूलभईहियेंलषिफूलीबनराईहैंनागरियाढुहुंफूलनिसफलकारिभुजधारिअंसफूलरहेसुखदाईहैं ॥ १ ॥ इकताल ॥ फूलनिकेवेषनववसनबनायलियेफूलनकोक्यारीसीकुंवरिअलबेलीहैं ॥ फूलनिकेभूषणबसनभांतिफूलनिकेफूलभरीछविभरीहरीयेनचेलीहैं ॥ अधरमधुरमकरंदलैंनफूलनिकौंफूलसौंअलिंदस्यामभुजानिसकेलीहैं ॥ फूलीहैंजुन्हाईतामैंफूलपंकवानिनकीनिरषैंअकेलीनागरिसहेलीहैं ॥ २ ॥ ताल चपक ॥ फूलमहलमैंफूलीजौन्हिजगमगी ॥ तामैंफूलेकरैंकेलिस्यांमास्यामसुषझेलिफूलनिमरगजीवासरगमगी ॥ फूलनिकीसैंनीपरराजतबिथुरीबैंनीफूलीहैंवदनजोतिमदनअगमगी फूलसरअरसांनौंफूलरंगभायेसोवेनागरियामोहेमनरीझनडगमगी ॥ ॥ ३ ॥ राग परज तिताल ॥ सषीआजुनिरषिसुषपुंजरी ॥ तहांमैंनगांनअलिगुंजरी ॥ दंपतिहिथफूलनिलियैंहैवहोफूलनिसौंफूलीनांवकुंजरी ॥ फूलनिकीसैंनीपरदीन्हेगरबांहीतनफूलनकेसोहतासिंगाररी ॥ फूलनिकीफूहीहलिबरषैंलताहैंहोततैसीफूलकीबहतबयाररी ॥ फूली

# अथ राम जनम बधाई ॥

॥ दोहा ॥ बढिगहगहगहमहमची, घनसेघुरतनिसांन ॥ उदयाचलअवधेसपर, प्रगटयोरघुकुलभांन ॥ १ ॥ कोलाहलकलगांनलपि, आनंदचहुलउतंग ॥ इतछितकेरहेछकिउतैं, छकेविमानीपंग ॥ २ ॥ जनमसमयआयेजिते, विप्रगुनीवृन्दवाल ॥ लोकपालसेतेकिये, दशरथअवधिनृपाल ॥ ३ ॥ विधिनांतोसौंकहतहौं, एपुरवोममआस ॥ वेगबढोफूलोफलो, जाचतनागरीदास ॥ ४ ॥

॥ राग बिलावल ॥ ताल जात्रा ॥ उदधिअवधेसअर्धंगप्राचीदिसाप्रगटेश्रीराकेसजगतमहरन ॥ गीतबहोवाद्यवेदादिआनंदरवपूरिरह्योनादसुजसकृतगगनमंडलधरन ॥ बरषैंनृपनगरपरअमरपहुपांजुलीकनकमणिमहलकैंसिपरसुपमांपरन ॥ नागरीदासरघुवीरवरजनमदिनडरतनिध्वंसबिचविश्वमंगलकरन ॥ १ ॥ रागबिलावल ॥ ताल जात्रा ॥ अवधिपुरधामआरामबिश्रामप्रुनिप्रगटेजहांरामअभिरामनयनं ॥ श्यामतनबरनमनहरनमंगलकरनधरनिबिचउरनिनितिअमलअयनं ॥ हंसकेबंसमैंहंसहीउदितअवतंसजगयोग्यप्रसंसवयनं ॥ नागररघुनंदसुरवृंदबरवंदसोसच्चिदानंदकरैंपलनांसयनं ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ तिताल ॥ भयोहैंआजअवधिआनंदभ्ररभीजिरहेनरनारि ॥ रामजन्मसुपसिंधुबढ्योसबभूलेअंगसह्मारि ॥ गांननिसानदांनमंगलधुनिछईभवनिप्रतिद्वारि ॥ नागरदेवाविमांननिबिथकितआयेलोगबिसारि ॥ ३ ॥ इकताल ॥ रामजनमदशरथघरबाजैंवधाई ॥ इतैंअवधिअरुउतैंअमरपुरदुहुंनिकीमिलिधुंनिछाई ॥

गरसूधैंदोउसुपसौंसुषजोरें ॥ १ ॥ तिताल ॥ फूलनिकीसैंनीपैंपि यप्यारीमदनरंगरगमगे ॥ फूलनिकेहारमरगजेव्हैंरहेउरगुलाबसग मगे ॥ काननफूललगिरहेआननपरमप्रेमअगमगे ॥ फूलीसषीना गरिकेनैंनसुभेदंपतिमैंफिरिनतहांतेंडगमगे ॥ २ ॥ तिताल ॥ फूल महलकालिन्दीकूलि ॥ फूलभरिद्रुमलतालतिजहांजलपरसत झुकिझूलि ॥ फूलनिमैंफलमैंननिकेदोऊधरैंग्रीवभुजमूलि ॥ नाग रियानागररसवससषीनिराषिरहीसुधिभूलि ॥ ३ ॥ आंनकविक्त ॥ ॥ राग पंभायची ॥ तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदु लहनिरंगभरेपियस्यांमसुन्दरसुखदैंन ॥ रंगभरीसैंनीयरचीजहांरंग भरयोउलहतमैंन ॥ रसिकबिहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसुषसैंन ॥ १ ॥ आनकविक्त ॥ यापदकोअलापचारी मैं दैने ए दोहा ॥ गहगडसाजसमाजजुत, अतिसोभाउफनात ॥ चालिविलसोमिलि सेजसुष, मंगलगलतीरात ॥१॥ रहीमालतीमहकितहां, सेवतकोटि अनंग ॥ करौमदनमनुहारमिलि, सबरजनीरसरंग ॥ २ ॥ चलेदो ऊमिलिरसमसे, मैंनरसमसेनैंन ॥ प्रेमरसमसीललितगति, रंगर समसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीसुषसदन, आएरससरसात ॥ प्रे मवहुतथोरीनिसा, व्हैंआयोपरभात ॥ ४ ॥ आनकविक्त ॥ ॥ तिताल ॥ सुरंगीसेजांरगमगरह्यासुपसैण ॥ हारांउरझ्याहाराहि यारानैंणांउलझ्यानैंण ॥ मनमथअमलअगाधावोलैंआधाआधा वैंण ॥ रसिकबिहारीप्यारीमिलिआनंदमैंसोहतीबितईछैरैंण ॥ १ ॥ इतिफूलरचना ॥

# अथ हिंडोराउत्सव ॥

## या पदकी अलापचारीमें देनेंये

दोहा ॥ मानभवनभईभीरमिलि, झुंडनिझूलतवाल ॥ सर्षीवेष तहांदंपिहों, रूपलालचीलाल ॥ १ ॥ झूलतझूंडउमंडवहु, रंगरंग पहरिदुकूल ॥ वालालालाकोमनौं, रह्योवगीचाफूल ॥ २ ॥ उत रिझमकिझूलेंचढें, रंगरंगपहरानिचोल ॥ लालमुनीयनकोमनौं, झुंड निमचीकलोल ॥ ३ ॥ नीलवसनगोरेंवदन, झूलततियरसकंद ॥ आवतजातबिमानज्यौं, घटालघेटैंचंद ॥ ४ ॥ रसकतप्रियाहिंडोर नैं ॥ छविदुरिदेपतपीय ॥ वेझूलतयेश्रमितकटि, लचकनिलचकत जीय ॥ ५ ॥ झूलतठाढीप्रियाहिलपि, रहेलालसुधिभूलि ॥ फहरत अंचरचंद्रिका, बेंनीवरपतफूल ॥ ६ ॥ झूलतछाविउमचीअधिक, मचकतद्रुमचीवांम ॥ उचटैंचोटीपीठमनौं, लगैंचमोटीकांम ॥७॥ दावनलावनदुहुंनिके, वाजतआवतजोर ॥ वैनीहारहिलोरहीं, बढि झोटाझकझोर ॥ ८ ॥ झूलतझोटाचढिगगन, वैनगरजसमतूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, वरषतहारनिफूल॥९॥ वरजैंदुनींहठचढैं, नास कुचनसंकाय ॥ तूटतकटिद्रुमचींमचकि, लचकिलचकिवचजाय ॥ ॥ १०॥ नागरीदासहिंडोरनैं, सोभामनअवरोपि ॥ प्रेमझुलनिझूल्यो करैं, दंपतिझूलनिदोपि ॥ ११ ५ रागमल्हार ॥ ताल ॥ झूलतरसिक मोहनराय ॥ संगभामिनदामिनीघनवीचमनोंदरसाय ॥ कटिलच किमचकानिचलतअद्भुतलेतचितकौचोर ॥ बढिगईझूलनिझननि किंकिनीधुंनिसोर ॥ नीलपीतदुकूलफहरततुटीनववनमाल ॥ गयो

षोजतरहेसदाशिवसुरमुनिजाकीरूपरसायनहाथनआई ॥ नागरध न्यअयोध्याबासीसोघरबैठेनिधिपाई ॥ ४ ॥ रागकाफी ॥ तिताल चलिरीआजुहैंमंगलचार ॥ राजादशरथकेंदरवार ॥ अतिसुन्दर श्रीरामस्यामतनप्रगटेराजकुमार ॥ पावतगुनीदानबोहकंचनअरुम निमुक्ताहार ॥ नागरीदासअमंगलमिटिगयेमंगललोकअपार ॥ ॥ रागकाफी ॥ तिताल ॥ अवधिपुरबाजतआजबधाई ॥ भई नगरपरभीरबिमांननप्रगटभयेरघुराई ॥ बरषतकुसुमधुजाकलसनि परअतिशोभाउफनाई ॥ नागरीदासगांनमंगलधुनिछायरहीसुषदा ई ॥ ६ ॥ इतिश्रीरामजनमउत्सव ॥

## अथ श्रीमहाप्रभुजीको उत्सव ॥

राग ॥ राधाकृष्णगोवर्द्धनधारी ॥ बृन्दावनयमुनातटवारी ॥ ललितादिकवल्लभबिटलेस ॥ मोमनकरोकृपाआवेस ॥ १ ॥ श्रीन गेंद्रधरनागरनायक ॥ निजवल्लभरसपुष्टिप्रदायक ॥ तस्यकृपाव्र जभक्तउपासी ॥ सांवतेसवृन्दाबनबासी ॥ २ ॥ राग ॥ प्रगटेहैंश्री वल्लभदेव ॥ वहोजीवनकेंभयेसुगनसुभसोंसमुझोमैंभेव ॥ गोकुलहर षहरषगिरराजहिन्हैंहीबृजबड़ेभवसुषसेद ॥ नागरीदासगोवर्द्धनधा रीहरषेनेहलाडकीटेव ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ समैंघोरकलिकालधर्मपद छेदनकीनैं ॥ बिफलक्रोधकंदर्पजीतिजीवनिकौलीनैं ॥ लोभमोह तैंकरीप्रवर्तिमारगमतिपंगी ॥ चितचंचलअतिअजितनीचसंगीबहो रंगी ॥ नागरीदासनऔरकहुत्रिबिधतापसीतलकरन ॥ प्रगटितवल्ल भवदनतिंहिसरनमंत्रकोहैंसरन॥४॥इति श्रीमहाप्रभुजीकोउत्सव ॥

अंग ॥ वजवतबीनांनवीनगावततियगनप्रवीनगहगडगनिगांनतान परनामिलिमृदंग ॥ घहरतनभघटाकारीठहरतनहिंचपलारीफहरत पटनीलपीतनिरपतमनलोचनपंग ॥ रमकनिमैंरंगरह्योजातिनाहिं मोपैंकह्योनागरियादासरसप्रवाहवह्योअतिउमंग ॥ १ ॥ तिताल ॥ एहोलालझूलियेनैंकधीरैंधीरैं ॥ काहेकोंइतनीरमकवढावतद्रुमउर झतचीरैंचीरैं ॥ क्योंतुमझुकिझुकिझोटाकेंमिसआवतहोनेरैंनीरैं ॥ यहबरजतत्योंत्योंवेनागरलेतभुजभीरैंभीरैं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ हौंतौ सोभादेषिलुभाई ॥ मेरीअंषियाजलभरआई ॥ झूलतकदंबतरैंजमु नातटसुंदरकुंवरकन्हाई ॥ झलकतनिकसतमुकटलतनिबिचपीतां वरफहरानिसुहाई ॥ नागरियातवतैंमोहिजियमैंफिरिरहीमदनदुहा ई ॥ ७ ॥ राग अडानौ ॥ तिताल ॥ बैठेहैंहिडोरैंबीचतपतमुरसैन कारीजेबसरदारीकीमजेजनभुलावही ॥ दुहूंओरचंवरचलावैंसषी चौंरदारसायवानसंगसोझुकायेहीझुलावही ॥ फुलेवारहारनिजबाहिं रजगमगातिदेषिसोहैंलालठाढेदीठनडुलावही ॥ नागरसुगंधकीझ कोरउठैंझोटासंगझूलैंस्यामासाहिबमुसाहिबझुलावहीं ॥ ८ ॥ इक ताल ॥ सषीसांवरीगोरीयेझूलतकौंनहैंझूलतदेषिहियोहहरैं ॥ ढर क्योअतिस्वेदरोमांचभयेलषिनैंननिलाजछटाछहरैं ॥ थहरैंतनफू लदुकूलषिसैंनसंभारैंदोऊअंचराफहरैं ॥ करकंपतडोरीनजायगही नाहिंनागरयापटुलीठहरैं ॥ ९ ॥ इकताल ॥ झूलतरंगभरीअलवे ली मानौंपवनपरसतैंलहकततकंचनलतानवेली ॥ छूटिगयोउरअंच रफहरतदरसतहारहमेली ॥ नागरपियलपिरीझिरीझिकैंबीचभुज निभारझेली ॥ १० ॥ राग बिहागरो ॥ इकताल ॥ जमुनांकैंतीं

अंचरछूटिउरउरमिलतझुकिझुकिबाल ॥ छईचहुंदिसिमेघमालाछ योरागमलार॥ दासनागरतिहसमैंसुपबढ्योविपुनविहार ॥ चर्चरी ॥ नवकदम्बअंबकेलिचंपागहबरतमालपरसतझुकिजमुनातीरलगिस मीरलहर ॥ रच्योहैंतहांवरहिंडोलबल्लवीनकृतसलोलनवानिचोलरं गरंगरमकतरहेफहरफहर ॥ पावसरितबनविहारगानरंगधुनिमलार बीचरलीमुरलीसुनिआवतघनघहरघहर ॥ राधाहरिझूलतलपिबर पैंकुसमसुरबिमानछबिनिहारनागरमनरतिपतिरहेहहरहहर ॥ २ ॥ ॥ राग गौरी ॥ तिताल ॥ नई कौन हैं झुलनि हारि ॥ टेक ॥ दो हा ॥ स्यामाकैंसंगछबिभरी, सोहतसषीनवेलि ॥ अतिसुन्दरतन सांवरी, अरीमनहुंनीलमनिबेलि ॥ १ ॥ स्वेदकंपरोमांचव्हैं, जां नपरतकछुतोत ॥ झुकिझुकिझोटामैंहसहि, कुंवरलजोंहींहोत ॥ २ ॥ निरषौंफूलनिनेहकी, सषीचतुरसिरमोर ॥ हमजानीजानीसबैंअरी, यहझूलनिकछुऔर ॥ ३ ॥ सबैंछकायेनागरी, द्रगनिसुधासोंप्या य ॥ कपटरूपधरिमोहनी, अरीप्रगटभईवृजआय ॥ ४ ॥ ३ ॥ राग इमन ॥ चौताल ॥ भीजहींभीजहींरीझिभीजिहींझूलतलाल भीजहींनवलनेहरसअटके ॥ झोटालेतहरैंहरैंभुजमूलग्रीवधरैंहसिह सिबातैंकरैंनियरैंनिपटलूंबलटके ॥ भीजतपटलपटेप्रगटअंगलषिर हेइकटकद्रिगनागरनटके ॥ नागरीदासमेहबरसानिसिभईचपलाचि राकठईतउनपरतबीचिहटके ॥ ४ ॥ राग अडानौं ॥ इकताल ॥ झूलतहिंडोरेलालनवलवृंदाबालसंग ॥ चहूंओरठनकमनकछुवतानि तनठनियबनकमनहुंमदनबागबसनसोहतहैंरंगरंग ॥ फूलनकेबरन वरननवल्लासीलीनैंकरनिप्रीतममनिहरनतरुनिदीपतिद्युतिदामिनी

टिझोटाझकझोर ॥ ४ ॥ नित० ॥ आईश्रीराधाजवशोभाहैंवढी ॥ सांवरीसहेलिझूलैंसंगलैंचढी ॥ कहीनपरततासमयकीबरसपरचोरंग ॥ नागरियानिरपिभईनैंननिगतिपंग ॥ नित० ॥ ५ ॥ ॥ तिताल ॥ दोऊमिलिझूलतरंगहिंडोरैं ॥ नीरपीतअंचलचलचंचलवेनीहारहिलोरैं ॥ भंवरभीरलपटतसंगआवतलगिसुगंधकैडोरैं ॥ नागरियानागररमकानिमैंमिलिगावतथोरैंथोरैं ॥ १५ ॥ आनकविकृत ॥ राग सोरठ ॥ इकताल ॥ होप्यारीजीनैंरसियोपीवझुलावैछैं ॥ रंगभरयाझोटादेसांम्हैंनैंणांनैंणमिलावैछैं ॥ बरसरह्योरससरंगहिंडोरैंमिलिमलारसुरगावैछैं ॥ यांवातासूंसांवलियोह्यानैंरसिकाबिहारीवरभावैछैं ॥ १६ ॥ आनकविकृत ॥ इकताल ॥ हिंडोरैहेलीरंगरह्योसरसाय ॥ टेक ॥ हौंतौंवारीजीवारीगईदेषि ॥ झूलनिमैंझुकिझूमिरह्यापियप्यारीजीरोरूपलुभाय ॥ भीजैतनतरवरचूवैंलागलवांहीलपटाय ॥ रसिकबिहारीजीरोझूलवो ह्यांरांमनमैंझोटापाय ॥ १७ ॥ ख्याल ॥ तिताल ॥ सुन्दरनंदकुंवारझूलतललितकदम्बतरैंजमुनातटनवघनश्यामसरीर ॥ सोहतफहरतमालमोहतमहकिमालतीरहीचहूंदिसिभईभंवरनकीभीर ॥ चलिरीचलिवलिआजनैंननिरूपअमीरसपानकरहिकिनहरहीमदनतनपीर॥ तूगोरीवेश्यामजोरिजगतविभूषननवलनागरीबसियैंधीरसमीर ॥ १८ ॥ ॥ तिताल ॥ झूलतहिंडोरैंनवलदोउमनमोहनमोहनीछाबिपावहीं ॥ द्रुमपरव्हैंव्हैंकढतवढतछविपरसिपरसिधुरवामनौंआंवहीं ॥ पुलिवैंनीउरहारटूटिपटछूटिअंचरफहरांवहीं ॥ नागरियाझोटाबढिरसकरंगीलीतामैंझुकिझकझोरानिमिसिलपटावहीं ॥ १९ ॥ तिताल ॥

रवीरजुवतिनकीभीरतहांपरमरंगबोरनां रच्योहिंडोरनां ॥ बजतमृदं गबैंनबीनसंगरागरंगपावसरितुहोतसिंधुरसझकोरनां ॥ झूलतप्रियन वलकिसोरझोटाझकझोरजोरझननननकिंकिनसिोरछविहिलोरनां ॥ नागरबढिनेहमेहरमकनिमैंरंगरह्योचलिकटाछदुहुओरदृगनिहोर नां ॥ १ ॥ ताल चपक ॥ तूटेषिरीसोभायावरियां ॥ बढिझुगये झोटाद्रुमपरसतअरझिरह्योपीतांबरडरियां ॥ तूटिगईबनमालहिलो रतछूटिकिंकिनीकटिढरहारियां ॥ नागरीदासप्रियाअंचलचालिड रिलगिजातदेहथरहरियां ॥ १२ ॥ तालचपक ॥ उत्तरेझूलेतैंसोभा सिंधुझकझोरेसे ॥ प्यारीछूटेबारबैंनाबेसरिसरकिगएउततूटीबनमा लासिथलकिंकनीकटिषुलेफैंटापेचसुपसुरतिझकोरेसे ॥ सँवारतभू पनबसनआयसपीजनमनवारैंरीझिरूपनिरषिठगोरेसे॥ नागरीदास दोऊश्रमितव्हैंसोसेजदेपिछविभुरयेरोमेरेनैंनभोरेसे ॥ १३ ॥ रा गसोरठ इकताल ॥ नितगरजगरजगरजकैंबरसनिघटालगी ॥ पा वसरितुब्रजमैंरसरंगरगमगी ॥ हरितभूमिगहबररहेनवकदंबअंब ॥ कुसमकलितभंवरभारझुकिझुकिरहीझंब ॥ १ ॥ नित० ॥ झूलैंज हांझुंडनिमिलिवल्लभकुलनारि ॥ जिनमधिनायकवृषभानकीकुमा रि ॥ गांनकरतचहूंओरजुवतिनकीभीर ॥ पहरैंमनहरनितरुनिवरन बरनचीर ॥ नित० ॥ २ ॥ रूपचहलपहलविचहिंडोरनांसलोल ॥ मांनूंमुनियनलालकैंझुंडनिमचीकलोल॥ केकीसुरकुहकिकुहकिगावैं नवबाल ॥ सुनिसुनिमलारमेघघुंमडिआवैंतिहिंकाल ॥ नित०॥३॥ द्रुमनिमांझझूलतवरबैंनोसुलिजात ॥ ज्यौंउडतमोरतरलपछपुछाफ हरात ॥ छूटिगयेअंचरउरटूटिगयेहारडोर ॥ मचकनिमैंलचकतक

श्री॰

# अथ रसिकविहारजी कृत पद लिख्यते ॥

तिताल ॥ नंदजीरैंचालोनैंघरां ॥ महामनोहरपुत्रहुवोलपिलोय णसफलकरां ॥ दहीण्यालसौंभरांभरांवांहसिहसिफेरिभरां ॥ रसि कविहारीनांवकुंवरजीरोआगमजांणिधरां ॥ १ ॥ रागसोरठ ॥ इकताल ॥ कांनपडीनसुणीजैंनंदघरआजैं ॥ घुरैंनिसांणघणांमंग लमयजांणैंनभभादौंघणगाजैं ॥ गोपीगीतगावतीआवैंचालंताछवि छाजैं ॥ गोकुलरागलियांरांचहुंवांवहुवांरांरमझोलबाजैं ॥ स्यामब रणसुतजायोराणींरूपअनूपमराजैं ॥ होसीरसिकविहारीनांवयांरो अवहीमदनवदनलपिलाजैं ॥ २ ॥ राग काफी ॥ बजैंआजनंद भवनवधाइयां ॥ गहमहआनंदरंगरलीअतिगोपीसवामिलआइयां ॥ महरिजसोमतिकैंभयोसुतफूलीअंगनमाइयां ॥ रसिकाविहारीप्रान जीवनलपिदेतअसीससुहाइयां ॥ ३ ॥ तिताल ॥ आजवृषभानकें वधाई ॥ गहमहभीरभईरावरमैंगावतअलीसुहाई ॥ हसिहसिगोपी मिलतपरसपरआनंदउरनसमाई ॥ प्रगटभयेउतरासिकाविहारीइत प्यारीनिधिआई ॥ ४ ॥ तिताल ॥ वधावणोंहेहेलीआजरली ॥ भईभीरवृषभानभवनमेंकीरतिवेलिफली ॥ जुवतीवृंदघरघरतैंमंगल गावतआवतचली ॥ रसिकाविहारीचन्दहेतजनुप्रगटीकुमुदकली ॥ ॥ ५ ॥ तिताल ॥ होछैंवृषभानरैंघरलापांरीवधाईआज ॥ कुंवरि लाडिलीजनमलियोछैंमोहनरेंसुपकाज ॥ दुलरावैंमंगलगावेंढाढनि

झूलतहैंदोऊसषीझुलावैं ॥ सोधैंकोझकोरैंश्यामतनगोरैं आवैं हिंडोरैंहिलोरैंमांझथोरैंथोरैंगावैं॥नागरझकझोरैंहोरैंडोरैंडरझावैं २०॥ आंनकबिकृत॥राग काफी॥धीरांझूलोजीराधाप्यारीजी ॥ मचकरंगीलीथांरीमानैंबालीलागैं ॥ झुलावतहैंसषीसारीजी ॥ फरहरातअंचलचलचंचलल्लाजनजातसंभारीजी ॥ कुंजतओटदुरेलषिदेपतप्रीतमरसिकबिहारीजी ॥ राग मल्हारा ॥ इकताल ॥ होकहारंगभीनीरितुहैंसावनकीफिरफिरझमाकिझमाकिझमिमेहआवैं ॥ चात्रिगमोरकरतसोरतैंसियेगहरीबनकीघोरकारेकारेबादरनिबिचबिचविज्ञुरीचमचमावैं ॥ सीतलसुगंधपवनगवनपरसपरसदोषिफूलनिसौंभरीभरीहरीहरीडारियांलहिलहावैं ॥ तैसेईबिलासपुंजनागरियानागरनिकुंजनेहमेहभिजएमिलिमिलिमल्हारगावैं ॥ राग बड हंस ॥ ब्रह्मताल ॥ बालबिनोदीमेरेहियमैंझूलतनितबसो ॥ रतनजटितकेललितहिंडोरैंबछियासहतलसो ॥ रमकनिमेंलडवामारवनकोबिचबिचलेतगसो ॥ नागरियासुसरारिकीकोऊहसैंसुभलेहसो ॥२२॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजसांवतसिंहजी द्वितीयहरिसंबंधनाम नागरीदासजी कृत उत्सव माला संपूर्णम् ॥

रमांहिरसिकाविहारीकंठलगांवणो ॥ १३ ॥ तिताल ॥ फागुणियारो घुंमडिरह्योछैःयाल ॥ कुंजभूमिसोलाललालहुइहुवालालतमाल ॥ उडिगुलालकीलालधूंधरिमैंमलकैवैणाभाल ॥ सपीलालअरुलाल विहारनिरसिकविहारीलाल ॥ १४ ॥ या पदकी आलाप चारीमें दंने ये ॥ दोहा—उडिगुलालधूंधरभई, तनरह्योलालवितान ॥ चौरी चारुनिकुंजमें, व्याहफागसुखदान ॥ १ ॥ फूलनकेसिरसेहरा, फागरगमगेवेस ॥ भावरहींमेंचलतदोऊ,लैं गतिसुलपसुदेस ॥ २ ॥ भीजेकेसररंगसों, लगेअरुनपरपीत ॥ डोलैंचाचरचौकमैं, गहिव हियांदोऊमीत ॥ ३ ॥ रच्योरंगीलीरैंनमैं, होरीकेविचव्याह ॥ वनीविहारनरससनी, रसिकविहारीनाह ॥४॥ १५ ॥ तिताल ॥कुंज महलमैंआजुरंगहोरीहो ॥ फागपेलमैंवनांवनीकोंव्हैरहोपटगठजो रीहो ॥ मुदितव्हैनारिगुलालउडावैंगावैंगारिदुहुंओरीहो ॥ दूलहर सिकविहारीसुंदरदुलहनिनवलकिसोरीहो ॥ १६ ॥ तिताल ॥ होरा जथेछोडोजीकिशोरीजीरोछेहडो ॥ रापोरापोमनमैंचारविचारि ॥ थेफागुणरसवावलाएलाजभरीसुकुंवारि ॥ कांईहुवोहोलीहुवांसुणह ससीसोहसंसारि ॥ थेगायांकाग्वालियाछोअरअैछैराजकुंवारि ॥ थांहरीयांहरीनहींछैवरावरीजायपरसोदूजीनारि ॥ रसिकविहारीथां रोनावछैकांईपेलोण्यालगंवारि ॥ १७ ॥ तिताल ॥ रह्योरंगहो लीसरसाय ॥ एकणदिसप्यारीहुइहुवाएकणादिसपियआय ॥ गावै सपीसुहावणीसाथेसंजमुरजसौहैसाज ॥ कुंजसदनरैंआंगणैंरह्याम दनझुझाउवाज ॥ फागुणसमैंसुहावणोपेलैंनवलरंगीलापेल ॥ उ डिगुलालघुंमडीघणींवहिचलीधरणिरंगरेल ॥ लूमझूमिलपटाइया

लियांसुघरसमाज ॥ रसिकविहारीमनआनंदहुवोप्रगटीनिजासिरता ज ॥ ६ ॥ तिताल ॥ होछैंवृषभानरैंघरआनंदरलीवधावणौं ॥ जनमीराधावृजसुषसाधानिरषिनैंणांसुषपावणौं ॥ आंगणगहमहभीड हुईछैंआजकोदिवससुहावणौं ॥ प्रगटीछैंरसिकबिहारीकीजोडीहुवो मनोरथभावणौं ॥ ७ ॥ राग सोरठ ॥ तथामलार ॥ तिताल ॥ वृष भांनकैंमंदलराबाजैं ॥ सुभघरीदिनसुभमहूरतगहरैंगहरैंगाजैं ॥ गावोमंगलरहसिवधाईपावोरांनीकीरतकैंघरकाजैं ॥ रसिकबिहारी कीयहजोरीभयेमनोरथआजैं ॥ ८ ॥ तिताल ॥ आजबरसांनैंमं गलमाई ॥ कुंवरिललीकोजनमभयोहैंघरघरबजतबधाई ॥ मोति नचोकपुरावोगावोदेहुअसीससुहाई ॥ रसिकाविहारीकीयहजीवनि प्रगटभइसुषदाई॥९॥राग नायकी ॥ ताल चपक ॥ आजबधावोवृष भांनकैंधांम ॥ मंगलकलसलियैंआवतगावतवृजकीबांम ॥कीरातिकैं कीरतिप्रगटीहैंरूपधरैंअभिरांम ॥ रसिकबिहारीकीयहजोरीहैंांनी राधानांम॥१०॥इकताल ॥ पेलैंसांझीसांझप्यारी ॥ गोपकुंवारिसाथ णिलियांसाथेचावसोचतुरासिंगारी॥फूलभरीफिरैंफूललेणज्योंफूलर हीफुलवारी ॥ रह्यांठग्यालषिरूपलालचींप्रीतमरसिकविहारी॥११॥ तिताल ॥ होरंगीलीबाजीलागिरहीछैनैंणांमें ॥ जांणींकांमकटाछां हींकादेपिदावदेंणांमें ॥ कांपें अंगअनंगरंगसुरभंगहुवोवैंणांमैं रसि कबिहारीमनफूलबढीहुईहारजतिसैंणांमैं ॥ १२ ॥ रागषंभायची ॥ तिताल ॥ आजबरसानौंहेलीलागेंसुहांवणौं ॥ फागगातिगीतसुरछायो सुहायोआजुनंदकुंवरआयोपाहुणौं ॥ उठोजोकिसोरीगोरील्योनैंगु लालओलीभरहोलीअबसुपसरसांवणौं ॥ गहगडषेलधुंमधूंधरअबी

इसाअटपटाफैल ॥ रंगलग्योछिपसीनहीं, मतिजीमतिपियछैल ॥
॥ २ ॥ चुगलचवाईगांवयो, बुरालोगअणवैल ॥ कांईपेलोण्यालए,
मतिजीमतिपियछैल ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीण्यालए, सीण्याभलाअ
डैल ॥ पगांपडांछांहाथजी, मतिजीमतिपियछैल ॥ ४ ॥ राग
झंझोटि ॥ रंगझुरमटरा ॥ अनोहाहोनंदमहरदानोघरमेंतुरंगभरैब
रवटरा ॥ क्योंकरपनियांजांउंसजनीरहेठाढोपनघटरा ॥ होहोकर
तभरतजुवतनिकोंरसिकविहारीनटरा ॥ ५ ॥ २६ ॥ रागकाफी ॥
कैसेंजलजाउंमेंपनघटजांऊ ॥ होरीपेलतनंदलाडिलोरीक्यौंकरनि
बहनपांऊ ॥ वेतौनिलजफागमदमातेहौंकुलवधूकहांऊं ॥ जोछुवें
अंचररसिकविहारीतोहुंधरतीफारसमांऊ ॥ २७ ॥ राग काफी ॥
मनमोहनमेरीअंगियारंगडारीरे ॥ याहोरीमेंलाजरहैक्युंसासननणद
डरभारीरे ॥ तुमतोछैलगैलनितरोकोहोंआवूंसंगनारीरे ॥ काहेनि
डरधीटअटपारेहुवारसिकविहारीरे ॥ २८ ॥ राग पंभायची ॥
तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदुलहनिरंगभरेपियस्या
मसुंदरसुपदैंन ॥ रंगभरीसैंनीयरचीजहांरंगभरचोउलहतमैंन ॥ र
सिकबिहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसुषसैंन ॥ २९ ॥ या पदकी
आलाप चारीमें दैंने ए दोहा—गहगड़साजसमाजजुतअतिसोभाउ
फनात ॥ चलिविलसोमिलिसेजसुष, मंगलगलतीरात ॥ १ ॥
रहीमालतीमहकितहां, सेवतकोटिअनंग ॥ करोमदनमनुहारमिली.
सवरजनीरससरंग ॥ २ ॥ चलेदोऊमिलिरसमसे, मैंनरसमसेनैंन ॥
प्रेमरसमसीललितगति, रंगरसमसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीसुषस
दन, आएरससरसात ॥ प्रेमवहुतथोरीनिसा, व्हैंआयोपरभात ॥

दोन्यौंसुषमांडणरैंष्याल ॥ रसिकविहारनिलाडिलीपियरसिकबिहारीलाल ॥ १८ ॥ तिताल ॥ विचलूजनारचांरैंझुंडराधारूपहैंरूडो॥ ग्रीवझुकायांझूंमकनाचेंसीसकेसांरोजूडो ॥ केसरिरंगभीजीसाडीमैं झलकरह्योछैंचूडो ॥ देषिछक्यापियरसिकविहारीरह्याधीरधरकूडो ॥ १९ ॥ राग ॥ मनमोहनसोहनस्यामनन्दढटोनांरी ॥ विनदेषेंपल कलनपरतहैंमेरोजीवलगोनांरी॥होरीमैंमोपैंठगोरीसीडारीहौंरिझईरी झिरिझोंनांरी ॥ षेलौंगीमिलरसिकविहारीसौंवाविनषेलअलोनांरी ॥२०॥ रागनाइकी ॥ तिताल ॥ होहोहोरीकहिवोलैंसबवृजकीनारि ॥ नंदगांववरसानैंषेलमैंगावतइतउतरसकोगारि ॥ उडतगुलालअरु नभयोअंबरचलतरंगपिचकारकीधारि ॥ रसिकबिहारीभांनदुलारीमधिनायकदोऊपिलारि ॥ २१ ॥ इकताल ॥ एज्युनीकैंतुमजाहुच लेजिनभरोमेरीसारी ॥ सुनिस्यामसुनस्यामसैंहैंतिहारीयाहीबेरा छिनायलैंहुंकरतैंपिचकारी॥ अबकुछमोपैंसुन्यौंचाहतहोगारी ॥ घरमैं ईसीषेढंगरसिकविहारी ॥ २२ ॥ ॥ षासाचाकररहस्यांजीह्मेराज राचाकररहस्यांराजकुंवराकिसोरीजी ॥ फूलविछाताजास्यांआगेंलियांपीतपटझोरीजी ॥ सूरजमुषीहाथलियांफिरस्यांछाहिंकियां मूषगोरीजी ॥ रसिकविहारीरह्याटहलमैंहसिरंगरलीभरिहोरीजी ॥ ॥ २३ ॥ तिताल ॥ भीजैंम्हारीचूनरीहोनंदलाल ॥ मतिनांषोकेसर पिचकारीहाहामदनगुपाल ॥ भीजवसनउघड्यासीअंगअंगकौंण निलजयहण्याल ॥ रसिकविहारीछैलनिडरथेमानैंतोजंजाल ॥ ॥ २४ ॥ दोहा—मतिटोकोरोकोमती, चल्याजाहुइणगैल ॥ रंग भरोमतिभांवता, मतिजीमतिपियछैल ॥ १ ॥ मनहीमैंएरहणद्यो,

लसलोनैंजिनकारिनिठुरसुभाव ॥३७॥ राग सारंग ॥ तिताल ॥ मैं अपनौंमनभांवनलीनौं ॥ इनलोगानिकोकहाकीनौं ॥ मनदैमोलल योरीसजनीरतनअमोलकनंदद्दुलारोनवललालरंगभीनौं ॥ कहाभ योसवकेंमुपमेरैंमेंपायोपीयप्रचीनौं ॥ रसिकबिहारीप्यारोप्रीतमासि रविधनांलिपदीनौं ॥ ३८ ॥ इकताल ॥ तिताल ॥ रतनालीहोथा रीअांपडियां ॥ प्रेमछकीरसवसअलसांणींजांणिकंवलकीपांपडि यां ॥ सुंदररूपलुभाईगतिमतिहोइगईज्यूंमधुमांपडियां ॥ रसिक बिहारीवारीप्यारीकौंणबसीनिसकांपडियां ॥ ३९ ॥ ताल ॥ मोहनजीम्हारैंथेकांईहठलाग्याछोजी ॥ जावाद्योघरछोडोछेहडो थेरसवातांपाग्याछोजी ॥ आंप्यांथांकीछैरतनालीसारीनिस राजाग्याछोजी ॥ रसिकबिहारीप्याराम्हांनैंथेओरांसूंअनुराग्याछो जी ॥ ४० ॥ तिताल ॥ रंगिरह्याजुगलरूपरंगमांहीं ॥ कुंजमहलमैं दर्पणसाम्हैंदियांरहैंगलवांहीं ॥ कदेकसंभ्रमव्हैस्यामारैंनेडैंस्यामछ तांहीं ॥ कदेकरीझिरहैंरसिकबिहारीदेषिदेषिपटछांहीं ॥ ४१ ॥ तिताल ॥ चिरतालीतैंनंदकुंवरमनमोह्योहेकांमणगारी ॥ वसिकारि वारामंत्रतोजिसासीषीकुणबृजनारी ॥ दिनअररैंणसैंणरैंकारणअंग अंगरहैंसंवारी ॥ भलोकियोआधीनआपणैंप्रीतमरसिकबिहारी ॥ तिताल ॥ येवांसुरियावारेऐसेजिनबतरायरे ॥ यौंनबोलियेअरेघर वसेलाजनिदबिगइहैंायरे ॥ हौंधाईयागैलहीसौंरेनैंकचल्योधौंजाय रे ॥ रसिकबिहारीनांवपायकैंक्यौंइतनौंइतरायरे ॥४३॥ तिताल ॥ प्यारीजीरासालूडामैंआवैछैसुगंधीरूडीबास ॥ अंगमरगजीगंधलु भायांभँवरभँवैंआसपास ॥ लटपटैंवेसआंणिऊभारह्याआंगणकुंज

॥२०॥तिताल ॥ सुरंगीसेजांरगमगरह्यासुपसैण ॥ हारांउलझ्याहार हियारानैणांउलझ्यानैण ॥ मनमथअमलअगाधावोलैआधाआधावैण ॥ रसिकविहारीप्यारीमिलिआनंदमैंसोहतवितईछैरैण ॥ २१ ॥ राग सोरठ तिताल ॥ होप्यारीजीनैंरसियोपीवझुलावैछै ॥ रंगभरयाझोटादेसांह्नैनैणानैणमिलावैछै ॥ वरसरह्योरसरंगाहिंडोरैमिलिमलारसुरगावैछै ॥ यांवातांसूसांवलियोह्मांनैंरसिकविहारीवरभावैछै ॥ २९ ॥ इकताल ॥ हिंडो रैहेलीरंगरह्योसरसाय ॥ टेक ॥ हौंतोवारीजीवारीगईदेपिझूलनिमैंझुकिझूमिरह्मापियप्यारीजीरोरूपलुभाय ॥ भीजैतनतरवरचूवैलागागलवांहीलपटाय ॥ रसिकविहारीजीरोझूलवोमांरामनमैंझोटापाय ॥ ३० ॥ राग काफी ॥ धीरांझूलोजीराधाप्यारीजी ॥ मचकरंगीलीथांरीमानैंवालीलागैझुलावतहैंसषीसारीजी ॥ फरहरातअंचलचलचंचललाजनजातसंभारीजी॥कुंजनओटद्रुरेलषिदेषतप्रीतमरसिकविहारीजी ॥ ३१ ॥ रागललित ॥ ष्याल ॥ जीनैणांनींदघुलैछैं ॥ आयरहीछैंथोडीरात ॥ कांईकेडैलाग्याछोनंदलाल ॥ अतिअलसायोम्हांरोगात ॥ घरघरचारचवावचलैलोनिपटवुरीछैयाबात ॥ रसिकबिहारीथेरसलुब्धाव्हैंआसीपरभात ॥ ३५ ॥ तिताल ॥ होकांह्लजीरातराउणींदारंगराता ॥ निसरैंध्यानएमुंदीपलकआवैंललकमदनमदमाता ॥ अलकमांहिअणवटप्यारीरोल्याथेउलझाता ॥ रसिकविहारीलागोछोप्यारामुसक्यातामलसाता ॥ ३६ ॥ राग आसावरी ॥ तिताल ॥ प्यारेयेइनिगलियांआव ॥ नैंननिजलसौंधोयसंवारीअछनअछनधरिपाव ॥ व्याकुलतृषतचकोरद्दगनिकौंवदनचंददरसाव ॥ रसिकबिहारीला

धीरधरंदे ॥ रसिकबिहारीनितिवारकरंदेटारेनहींटरंदे ॥ ५१ ॥
॥ राग अडाणों ॥ तिताल ॥ होस्यामाप्यारीवोमैंडीजिंदल
गीहैंतैंदेनाल ॥ जबहसिवेपैंतबतबजीवांराहिंदाहोयानिहाल ॥ तु
हीअसांढेनैंनप्रांनवसपयातुसाढेवाल ॥ यौंकाहिंदाकरजोरिकुंवरि
सौंरसिकबिहारीलाल ॥ ५२ ॥ तिताल ॥ वोमोहनासोहनयारदेनैं
णांदीझोकां ॥ सीनेंदेबिचुलगीअसाढेवारपारभईनोकां ॥ रुकदी
नहींरोकिमैंहारीलाजघूंघटदेरोकां ॥ रसिकबिहारीदानांवलेलेक
रैंसबब्रजनोकांटोकां॥५३॥तिताल॥ आयाबृजपरछायाजीजलबाद
लझरिया ॥ हरियातरवरचूवैंपाणींबहोसरवरभरिया ॥ इणासमयेसु
पलेणमनोरथदंपतिहियधरिया ॥ मिलियारसिकबिहारींप्यारीसहु
कारजसरिया ॥ ५४ ॥ राग रामकली ॥ प्यारीजुतैंमोहिमोललि
यो ॥ तेरीकृपामदनदलजीत्योतेरोजिवायोजियो ॥ उमडीसैंनम
हामनमथकीतैंअधरामृतदियो ॥ श्रीरसिकबिहारीकहतदीनव्हैंन
निस्यामाकोहियो ॥ ५५ ॥ राग ॥ बनिदुकूलबैठेपरजंक ॥ कम
लनैंनअंगअंगछबिनिरपतप्यारीभरैंजुअंक ॥ धन्यधन्यपियमांनि
अपनपौंज्यौंनिधिपायेरंक ॥ श्रीरसिकबिहारीयहसुषविलसततहां
निकटनिरसंक ॥ ५६ ॥ लूर ॥ पावसरितुवृंदाबनकीदुतिदिनादिन
दूनीदरसैंहैंछाविसरसैंहे ॥ लूंमझूंमसावनघनोघनबरसैंहे ॥ १ ॥ ह
रियातरवरसरवरभरिया ॥ जमुनांनीरकलोलैंहे ॥ मनमोलैंहे ॥
प्यारीजीरोबागसुहावणोंमोरबोलैंहे॥२॥ आभाआभाबीजचिमंकै॥
जलधरगहरोगहरोगाजैंहे ॥ रितुराजैंहे ॥ स्यामासुरमुरलीरली ॥
बनबाजैंहे ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीजीरोभीज्योपितांबरप्यारीजीरी

निवास ॥ रसिकबिहारीपवनढुलावैंषासाहोयषवास ॥ ४४ ॥ तिताल ॥ आजकीरातआछीलागैछैंउजारी ॥ बिहरैंस्यामास्यामचावसौंसुंदरनावसिंगारी ॥ जमुनाविचझिलमिलकीसोभाकँवलकूलसुषकारी ॥ नावडगमगैंडरलपटावैंरसिकबिहारीजीसौंप्यारी ॥४५॥ राग सोरठ ॥ तिताल ॥ बहिमनवसियोरसियोरीमोहनलालनगीनौं ॥ वृजकोभूषनरतनअमोलकअतिसुंदररँगभीनौं ॥ मैंपायोमेरैंबडभागनिसिराबिधनांलिषदीनौं ॥ रसिकबिहारीपियसुषकारीकंठलायमैंलीनौं ॥ ४६ ॥ तिताल ॥ रह्यादेषिपियचिवुकउठायवोनैंणांमैंअलसांणघणींछैं ॥ घुलिरहीनींदलोयणांलालीकाजलरेषवणीछैं ॥ अलकांसिथलसिथलहुइपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारिप्यारीजीरीचितवनिमिलिरहीत्र्यणीअणीछैं॥४७॥ राग काफी॥ तिताल ॥ मनलायाक्यौंकान्हअनोषेसौं ॥ अवपछितांयैंक्याहोदांणीभूलिप्रीतकरीओषेसौं ॥ निसदिनघुटिदीतूघरश्रंदरसासननददेहोषेसौं ॥ गुरजनवुरेरसिकबिहारीनूंबेषणदेतनगोषेसौं ॥ ४८ ॥ तिताल ॥ वहिसौंहनांमोहनयारफूलहैंगुलाबदा ॥ रंगरँगीलाअरुचटकीलागुलहोरनकोईजबाबदा ॥ उसबिनभँवरेज्यौंभवदाहैंयहदिलमुजबेताबदा ॥ कोईमिलावैंरसिकबिहारीनूंहैंयहकामसवाबदा ॥ ४९ ॥ तिताल ॥ मुरलीवारोमोहनावहिकहिहेलीकहांपांउंरी ॥ घरवनमनलागैंनहींहौंबावरीभईकितजांउंरी ॥ सिथलअंगपगथरहरैंहौंउठिउठिकैंमुरझांउंरी ॥ रसिकबिहारीबनवारीबिनकैसैंजीवजिवांउंरी ॥ ४७ ॥ तिताल ॥ तोपैनैंनकन्हाईतैंडेपलपलघूंनकरंदे ॥ भौंहेंतोकमांनतनींपलकैंतीरपरंदे ॥ कित्तेघायलपरेकराहैंदिलनहीं

श्रीनाथजी ।

# नागरसमुच्चयका शुद्धाऽशुद्धपत्र ॥

| पृष्ठ. | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | १७ | ॥ चौपाई ॥ | यहचौपाईसि श्रीभागवत याहीकीचाहिये । |
| २ | ५ | कंप्ल | कल्प |
| ४ | १६ | संप्रदायकैं | संप्रदायकारि कैं |
| ५ | १३ | इहितैं | इंहिंतैं |
| ८ | ९ | कछु | कछू |
| ९ | १६ | पक्त | सक्त |
| १० | २१ | मुहि | मुंहिं |
| १२ | १४ | यांतैं | यातैं |
| १३ | १९ | सर मापते | स रमापते |
| १५ | ११ | जीनके | जिनके |
| १९ | २ | श्रुद्रा | शूद्रा |
| २१ | ४ | हतवः | हेतवः |
| २२ | २२ | सिंधु | शंभु |
| २३ | १ | ग्रनी | ग्रमी |
| २४ | १ | राजन | राजन् |
| २५ | १५ | ज्यै | ज्यौं |
| २५ | १९ | तिनहीपैं | तिनहिंपैं |
| २६ | ८ | विधिवतरकरत | विविक्तकरतु |
| २६ | १० | मिटी | मिटि |
| २६ | १७ | सुछम | सुच्छम |
| २७ | १४ | घाम | धाम |
| २७ | १४ | किहि | किंहिं |
| २८ | १ | उटि | उठि |
| २८ | १३ | जनसेवा | जन; सेवा |
| २९ | १० | वास | वासि |
| २९ | ११ | उाठ | उठि |
| २९ | १३ | जान | जानै |
| २९ | १९ | मेत्यान | मेत्यानि |
| ३० | १३ | क्वचिच्च | क्वचिच्च |
| ३१ | ५ | जोईढिगसोई | जोइढिग-सोइ |
| ३४ | ४ | घुरसौं | धुरसौं |
| ३४ | १५ | ग्रव | ( ग्रव ) |
| ३५ | १ | तेई | तेइ |
| ३५ | ५ | प्वारी | ख्वारी |
| ३५ | २० | कलोलैंपै वे कौं | कलोलैपैवे कौं |
| ३६ | ४ | टेर | ढेर |
| ३८ | १८ | मतवार | मतवारे |
| ३९ | १० | घने | घने |

चूनरसारीहे ॥ सुषकारीहे ॥ कुंजांकुंजांझिलरयाप्रियप्यारीहे ॥ ४ ॥ ५७ ॥ तिताल ॥ आजसषीकुंजमहलमैंरंगभरीरातडली होसुहाई ॥ सेजडिलीरंगमांगिरह्यादंपतजालरंध्रजहांआईजुन्हाई ॥ नहींसुलझैंतनमनआनंदमैंसगलीरैंणबिहाई ॥ रसिकबिहारीप्यारीप्यारीप्राणसूमनमानींनिधिपाईसुषदाई ॥ ५८ ॥ तिताल ॥ उणींदाछैजीरातरा ॥ वैंणसिथलअरनैंणजुक्याहीअ वैलगिवैठापरभातरा ॥ पलकांपीकअधरफीकैंरंगरसअलसायागातरा ॥ रसिकविहारीप्यारीपूरणकरीमदनदेवरीजातरा ॥ ५९ ॥ राग सोरठ ॥ होझालोदेछैरसियानागरपनां ॥ सारादेषैंलाजमरांछांआंवांकिणजतनां ॥ छैलअनोषाकह्योनमानैंलोभीरूपसनां ॥ रसिकविहारीनणदवुरीछैंहोलाग्योम्हारोमनां ॥ ६० ॥ जाण्यांजाण्यांरेहोलोभीथाराछिछंदपणां ॥ नैंणलगायदिषायदयासीलेरउदासीमकरघणां ॥ यांबातांपलपलकुंणपडपैंबोलोछोसुणझूटघणां ॥ रसिकविहारीनावकहावोसोभापावोछोजीराजयहांलषणां ॥ ६१ ॥

॥ इति श्रीरसिकविहारीजी कृत पद संपूर्ण ॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ११२ | ६ | नगर | वगर |
| ११२ | १२ | नये ॥ मिले | नये मिले |
| ११२ | २० | सभ | सम |
| ११३ | ६ | कौम | कौल |
| ११६ | ६ | पौकों | पयकौं |
| ११७ | २ | करान | करानि |
| ११८ | ३ | अनचरनि | अनुचरनि |
| ११८ | २० | पताख | पताक |
| ११९ | १० | पटहि | पटह |
| १२० | १३ | जडावत | जुडावत |
| १२१ | १ | रघुवारि | रघुवीर |
| १२१ | १२ | कव | (कव) |
| १२३ | ३ | रूपको | रूपकी |
| १२४ | ३ | ाम | मि |
| १२४ | १६ | दास चतुर्भुज | चतुर्भुज दास |
| १२७ | १२ | सुप | सुप |
| १२८ | ९ | भक्तिन | भक्तनि |
| १२९ | १० | कुसंसग | कुसंग |
| १३० | ४ | विनु | विन |
| १३० | १६ | पतिननि | पतनिनि |
| १३१ | ११ | धुराई | घुराई |
| १३१ | १८ | रित | ललित |
| १३२ | ६ | हिति | हित |
| १३२ | १६ | सरोवरि | सरोवरी |
| १३२ | १६ | भ्नम | भ्रम |
| १३५ | १९ | अर्वै | अर्चै |
| १३७ | ६ | धने | घने |
| १३७ | ९ | स्याभ | स्याम |
| १३९ | ८ | धट | घट |
| १४० | १२ | अगर | अगर् |
| १४० | १३ | कर्त्तार | कर्त्तार् |
| १४० | १३ | निर्धारनिर्धार | निर्धारनि-र्धार् |
| १४० | १४ | गदद्वारगज | गद्द्वारगज् |
| १४० | १७ | दर विलायत | दर् विला-यत् |
| १४० | १७ | तकिया | तक्या |
| १४० | १८ | फरस | फर्स |
| १४० | २० | चांरं | चारं |
| १४० | २१ | अदवहीत इ-तमाम | अद्वहोत इत्माम |
| १४१ | ७ | विमल | विमल् |
| १४१ | १५ | गोकुल | गोकुल् |
| १४१ | १६ | झालर | झालर् |
| १४१ | १८ | परक्रमा | पर्क्रमा |
| १४१ | १९ | हरि | हरि्-यह व्यं-जनकाचिन्ह शीघ्र वोलके (हरि) इन |

| पृष्ट | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४१ | २१ | ज्यौं | (ज्यौं) |
| ४२ | १६ | गति | गत |
| ४८ | १० | भई | भइ |
| ५० | ४ | परानन | पुरानन |
| ५० | २१ | श्रीष्ण | श्रीकृष्ण |
| ५१ | ८ | दूमनि | द्रुमनि |
| ५३ | १९ | अधावनौं | अघावनौं |
| ५७ | ९ | ठगन | ठगत |
| ५८ | ५ | तेरी | नेरी |
| ५८ | १९ | मृति | मृत्ति |
| ६२ | २ | विखै | विषय |
| ६४ | ८ | हरख | हरष |
| ७१ | २ | धोप | घोष |
| ७१ | २० | चटकरू | चटकरु |
| ७२ | १६ | रेचवात | हरेचवात |
| ७५ | २१ | वई | वेई |
| ७७ | ७ | रुचिरर | रुचिर |
| ७८ | १६ | वसी | वासि |
| ८० | १६ | न्यौहर | न्यौहार |
| ८१ | १२ | नहीं | नाँहिं |
| ८२ | १५ | रितु | रितु |
| ८२ | १९ | जात्त | जात |
| ८३ | १२ | अमृत | अम्मृत |
| ८३ | १४ | सव | (सव) |
| ८३ | २० | ल्यौं | लौं |
| ८४ | १ | तत्र | (तव) |
| ८४ | ७ | राऊ | राज |
| ८४ | १० | तत्र | तत्व |
| ८४ | १४ | वहौत | वहु |
| ८६ | ११ | साभिलाख | साभिलाष |
| ८९ | ३ | पद्धरि | पद्धरी |
| ८९ | १७।१६ | तहांपद॥ गाये | तहांपदगाये |
| ९० | १ | गनै | गनत |
| ९२ | १७ | मेत | समेत |
| ९९ | १६ | कई | कइ |
| १०१ | १३ | कै | (कै) |
| १०२ | ८ | दुहूं | दुहुजु |
| १०२ | १४ | निपठ | निपट |
| १०२ | १६ | कवि | फवि |
| १०४ | ६ | सुनैं | सुनत |
| १०४ | ७ | अरू | अरु |
| १०४ | १७ | चहूंचां | चहूंधां |
| १०६ | ६ | भीरा | भीर |
| १०६ | १९ | धरि | धीर |
| १०७ | ९ | हाल | हार |
| १०८ | १३ | पदार्थ | पदार्थ |
| १०९ | ९ | अंवु | अंव |
| ११० | १ | तरुनी | तरणी |
| १११ | ८ | सिंध | सिंह |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १६३ | १२।१३ | सगीत | संगीत |
| १६३ | १६ | सां | सी |
| १६३ | १७ | पुनिरास-लीलाखंड | यहबडे अक्षरोंमें चाहिये |
| १६३ | २१ | किसत | पिसत |
| १६४ | ४ | पुनिरास लीलाखंड | वडे अक्षरोंमें चाहिये |
| १६४ | ९ | गिरिगिर | गिरिगिरि |
| १६४ | १८ | यावई | पावई |
| १६४ | १९ | आवई | आवईं |
| १६७ | १५ | अंक | अंश |
| १७० | १८ | उधौ | ऊधो |
| १७३ | ९ | न्है | वह |
| १७३ | १९ | ऊतर | उत्तर |
| १७५ | ११ | न्नूवावत | छ्वावत |
| १७६ | ४ | धिंत | धीर |
| १७८ | १३ | निरापि | निराधि |
| १८१ | ९ | मारमा | रमारमा |
| १८१ | १८ | सवामि | बसामि |
| १८२ | २२ | तन्वित | तान्वितव |
| १८३ | ४ | दिनेशं | निदेशं |
| १८५ | ६ | सुप | सुख |
| १८५ | ६ | गति | गत |
| १८५ | १० | पतिति | पताति |
| १८५ | १९ | हृदये | हृदयं |
| १८५ | २१ | रीझि | रीझि |
| १८७ | १९ | पाग्र निपरे | पायनि परे |
| १९२ | ५ | यह पद | यह पद पुस्तकमें नहीं था जिससे यहां नहीं लिखा |
| १९३ | १ | ईला | इस अनुप्रासकी दूसरी तुक पुस्तकमें नहीं थी जिससे यहां भी नहीं है |
| १९५ | १५ | गिधर | गिरिधर |
| २०० | १८ | मठाई | मिठाई |
| २०८ | ४ | उताारि | उतारि |
| २०९ | १५ | गंघु | गंधु |
| २०९ | १९ | झुको | जूको |
| २१० | ८ | पपप्रसंग | पदप्रसंग |
| २१० | १३ | नामां | नाभा |
| २१२ | १३ | सांजियो | सजियो |
| २१३ | २२ | धान | धातु |
| २१४ | ११ | सुत आगन | सूत आंगन |
| २१५ | १४ | कफूर | कपूर |
| २१६ | १७ | गोधूलिक-वारियां | गोधूलिकवि-रियां |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| | | | दोनों अक्षरोंका एक गुरु समझने-को है। |
| १४१ | २० | अमरावती | अम्‌रावती |
| १४१ | २१ | सिरं | सिर् |
| १४२ | १ | कंवल | कंवल् |
| १४२ | २ | पुर | पुर् |
| १४२ | २ | अवर | अवर् |
| १४२ | २ | दुजवर | दुज्वर् |
| १४२ | ३ | हरि | हरि् |
| १४२ | ३ | गुनधुनि | गुन्धुन् |
| १४२ | ३ | तनकी | तन्की |
| १४२ | ४ | टहल | टहल् |
| १४२ | ४ | वहो विधि | व्हो विधि् |
| १४२ | ५ | करराय | कर्‌राय |
| १४२ | ७ | भजन | भज्‌न |
| १४२ | ८ | उत्सव | उत्सव् |
| १४२ | ९ | प्रथम | प्रथम् |
| १४२ | ९ | अर्पण | अर्पण् |
| १४२ | ९ | हरि | हरि् |
| १४२ | १० | रुचिर | रुचिर् |
| १४२ | १० | तुलसी | तुल्सी |
| १४२ | १० | सहज | सहज् |
| १४२ | १०।११ | सीतल | सीतल् |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १४२ | ११ | रिषि | रिषि् |
| १४२ | १२ | कलि | कलि् |
| १४२ | १३ | विविधि | विविधि् |
| १४२ | १३ | तिनको | तिन्को |
| १४२ | १९ | पंडव | पांडव |
| १४५ | ६ | तथा समय | यथा समय |
| १४६ | १७ | संनि | मुनि |
| १४७ | ८ | वासरे | वासर |
| १४७ | ९।१० | वहुतक | वहुत |
| १४९ | १५ | त्रानतन | तनत्रान |
| १५० | २ | मायाकैं | माया |
| १५१ | २ | हरप | हरष |
| १५२ | १३ | पट्ट | पढ |
| १५२ | १५ | कना | करुना |
| १५७ | ६ | नंद गृह | प्रथम नंद गृह |
| १५८ | ६ | पांनादिक | पानादिक |
| १५८ | ७ | पांन | पान |
| १५८ | १९ | अरू | अरु |
| १५९ | ५ | अवरोपिहिं | अवरोपिहीं |
| १५९ | १३ | घामकैं | धामकैं |
| १६१ | ३ | सुधो | सुधि |
| १६१ | १० | रहो | रहि |
| १६१ | १८ | जन | जल |
| १६१ | २१ | विहासि | विहसिकैं |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २५४ | ४ | कवल | कमल |
| २५४ | २० | तदनांतर | तदनंतर |
| २५५ | ११ | घीरज | धीरज |
| २५६ | ६ | तदनांतर | तदनंतर |
| २५६ | १५ | भररि | भरि |
| २५७ | २ | है | ह्वै |
| २५७ | ६ | सुरतात | सुरतांत |
| २५९ | ५ | पक्षि | पष |
| २५९ | ५ | उडिराज | उडराज |
| २६० | ५ | चित | चित्त |
| २६० | ८ | फारी | फ़ारि |
| २६१ | ८ | ऊचैं | ऊंचैं |
| २६१ | १२ | हाटिक | हाटक |
| २६१ | १५ | जोति | जोती |
| २६२ | १७ | विविस | बिवस |
| २६३ | ४ | तीर | नीर |
| २६६ | २२ | वारियां | विरियां |
| २६७ | ११ | झुकाति | झुंकनि |
| २७१ | ६ | पीन | वीन |
| २७२ | २ | वाडी | वादी |
| २७२ | ५ | छ्वै | ह्वै |
| २७२ | २० | लषी | लखि |
| २७४ | ४ | लग्नाष्टक | लगनाष्टक |
| २७४ | १५ | वनि | वनो |
| २७४ | २० | सोभाग | सोभाफाग |
| २७५ | ४ | वोढि | ओढि |
| २७६ | १८ | फाग बिहार | फाग बिलास |
| २७७ | ११ | भीजी | भीजि |
| २७८ | २ | पलटे | लपटे |
| २८० | १५ | वघू | वधू |
| २८३ | ५ | राकेसि | राकेस |
| २८३ | १६ | माति | गांति |
| २८४ | २२ | दय | दये |
| २८५ | १ | रासलता | रासरसलता |
| २८५ | ५ | ज्यौन्ह | जौन्ह |
| २८५ | ५ | रूपहरी | रुपहरी |
| २८५ | १७ | छाहि | छांहि |
| २८५ | १८ | रीझिर हे सोइनिराषि निसि | रीझिरहेसो-इ निराषि निस; |
| २८५ | २१ | छ्वै | ह्वै |
| २८६ | १९ | पक्वे | पक्के |
| २८७ | १ | सुप | सुष |
| २९० | ७ | जुवांहोय | होयजुवां |
| २९० | ११ | रच्यैं | रच्यैं |
| २९० | १२ | सज्व | सज्ज |
| २९१ | १७ | रही | रहि |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २१८ | ८ | एक अपनौं | अपनौं |
| २१८ | १९ | तृभंगानिपर | तृभंगनि अंगनिपर |
| २२१ | ५ | विवेष | विवेक |
| २२२ | १ | एकौं नहैं | एकौंन हैं |
| २२२ | १७ | वाकीन | वाकी न |
| २२३ | ११ | वैष्णानव | वैष्णवन |
| २२३ | १९ | घाऊं | धांऊं |
| २२६ | ५ | द्रव्य लियो | द्रव्य लियें |
| २२६ | १० | हरि वंसजी | हरिवंसजी |
| २२६ | २० | अनूराग | अनुराग |
| २२७ | ६ | इषद | ईषद |
| २२७ | १५ | एकंठी | ए कंठी |
| २२८ | १३ | अव लौंकरैं हैं | अवलौं करैं हैं |
| २३० | १२ | पर करमैं | परकरमें |
| २३० | १७ | तत्तथेई | तत्तत्थेई |
| २३१ | १७ | निधान | निदान |
| २३१ | २१ | समझाय वेकौं | समझायवे कौं |
| २३२ | २ | अव लौंभी | अवलौं भी |
| २३३ | ३ | परस | परस |
| २३३ | १३ | वहिमाला | वहि माला |
| २३४ | १४ | दोपे | देपो |
| २३६ | १७ | झुलावत | झुलावन |
| २३६ | १९।२० | घटां | घटा |
| २३८ | ११ | स्यामनदी | स्यामानदी |
| २३८ | २२ | अथ पद | अथ अन्यपद |
| २३९ | १ | वल्लभ रसिकजू | वल्लभरासिक जू |
| २३९ | ९ | रीझनि बाही | रीझ निबाही |
| २४० | १३ | यारी | यारि |
| २४२ | ६ | याते | (यातें) |
| २४३ | ८ | छिनदू | छिनद्दू |
| २४३ | १९ | नागरन | नागर |
| २४४ | ८ | रमां | रमा |
| २४४ | १४ | व्है | व्है |
| २४५ | ७ | करुनामैं | करुनामय |
| २४५ | ७ | करइ | करै |
| २४५ | १७ | सुरभीत | सुरभीन |
| २४८ | १ | जव | जवै |
| २४८ | ३ | भरत | भरन |
| २४८ | ३ | त्यागावहिनैं | त्याग वाहिनैं |
| २४९ | ९ | धूंधिराति | धूंवराति |
| २५० | १६ | तदनांतर | तदनंतर |
| २५१ | ३ | प्रत्य | प्रति |
| २५२ | १३ | तदनांतर | तदनतर |
| २५३ | ४ | पठ | पट |

| पृष्ठ. | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३१७ | ७ | चित्त | चित |
| ३१७ | ८ | कुंड | झुंड |
| ३१७ | १० | ॥ पेल | कवित्वं॥पेल |
| ३१७ | १४ | ॥ देवनि | सवैयो ॥ देवनि |
| ३१७ | १७ | कहीयैं | कहींपैं |
| ३१७ | १८ | ॥ आई | कवित्वं॥ अई |
| ३१७ | २२ | मसुरैं | मसूरैं |
| ३१७ | २२ | ॥ लाल | सवैयो॥ लाल |
| ३१८ | ४ | वादी | ठाढी |
| ३१८ | १० | ॥ सिर | कवित्वं॥सिर |
| ३१८ | १२ | रूमाल | रुमाल |
| ३१८ | १३ | कित | किन |
| ३१८ | १५ | ॥ कीनी | सवैया ॥ कीनी |
| ३१८ | १८ | ॥ आँच | कवित्वं ॥ आँच |
| ३१८ | २१ | छवाय | छ्वाय |
| ३१९ | १ | ॥गांस | सवैया ॥ गांस |
| ३२० | २ | वचनकवित्वं॥ | वचन सवैया ॥ |
| ३२१ | ४ | ॥ आवते | सवैया ॥ आवतहे |
| ३२१ | ११ | कवित्त | सवैया |
| ३२१ | १३ | जुवतिनि | जुवतीने |
| ३२२ | ३ | तउ | तऊ |
| ३२३ | ४ | वहि | वही |
| ३२३ | ७ | हल्चल | हलचल् |
| ३२४ | ५ | छवैं | छ्वैं |
| ३२६ | १० | इत उतैं | इतैं उतैं |
| ३२६ | १७ | गोरिनिकी श्रमसौंछ विवादीगु लालनिवा लसनीसि गरीजे । | गोरिनिकी श्रमसौंछ-विवादीओ केसरिनीर सनीसिग रीजे । |
| ३२८ | ७ | धन्यव्रज-धन्य | धनव्रजधन |
| ३२८ | ७ | धन्यव्रजप-रम | धनव्रजपरम |
| ३२८ | २१ | ॥छैल | ॥१॥छैल |
| ३२९ | ७ | पेलि | पोलि |
| ३२९ | ११ | छवाय | छ्वाय |
| ३२९ | २० | धमारि घ-मारि | धमारि धमारि |
| ३२९ | २१ | उदंगल | उदंगल |
| ३३० | ७ | हीयो | हियो |
| ३३० | ७ | कदंवतर | कदंवतरैं |
| ३३० | ७ | वरसत्तहैं | वरसतहैं ॥१॥सवैया॥ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २९२ | १५ | इह | इंह |
| २९५ | १७ | विंवैं | विंवैं |
| २९५ | १८ | ह्वैकें | ह्वैके |
| २९५ | २२ | ज | जा |
| २९६ | १ | पैं | (पैं) |
| २९६ | ५ | अंधेरे | अंधेर |
| २९६ | २० | कोऊन | कोउन |
| २९७ | ११ | सव | (सव) |
| २९७ | १२ | उततनैंकन्हू | उततनकन्हू |
| २९८ | २ | कहूंवै | कहुंवै |
| २९८ | १६ | दूलह | दूलह |
| २९९ | २ | सुरें | सुरे |
| २९९ | ११ | कन्हू | कहूं |
| २९९ | १४ | ढुहूंयां | ढुहुंयां |
| ३०० | ३ | नागरी | नागरि |
| ३०४ | ११ | पुंन्य | पुन्य |
| ३०४ | २२ | वधाई वधाई वधाई वधाई | वधाइ वधाइ वधाइ वधाई |
| ३०६ | १३ | राधा | राधा |
| ३०६ | १७ | ॥लषिकैं | सवैया॥ लषिकै |
| ३०६ | १९ | नागरी | नागरि |
| ३०६ | २१ | ॥कीरतदा | कवित्वं ॥ कीरतदा |
| ३०७ | ९ | देवा | देव |
| ३०७ | ११ | कुमेर | कुवेर |
| ३०८ | ४ | सम्हार | सम्हारैं |
| ३०८ | १७ | ॥ फूलन | सवैयो ॥ फूलन |
| ३०८ | १८ | कई | कइ |
| ३०८ | २० | साझी फूल | कवित्वं ॥ सांझीफूल |
| ३०९ | ३ | याय | पाय |
| ३१० | २२ | होर | हार |
| ३१२ | १८ | ॥ छाई | सवैया॥ छाइ |
| ३१२ | १८ | चितचितैं | चितैं चित |
| ३१२ | २१ | ॥ आई | कवित्वं ॥ आई |
| ३१३ | १ | जोत | जोन्ह |
| ३१३ | ९ | ॥ छाई | सवैयो॥ छाइ |
| ३१३ | १४ | कुह | कुहू |
| ३१३ | १८ | ॥ जसुदा | सवैयो ॥ जसुदा |
| ३१३ | २१ | ॥ जहां | कवित्वं॥जहां |
| ३१४ | ५ | ॥ नव | सवैयो॥ नव |
| ३१५ | १२ | भारीहैं गोव र्द्धन | गोवर्द्धन |
| ३१६ | १ | छवैं | छ्वैं |
| ३१६ | १२ | अनूंठी | अनूठी |
| ३१७ | ३ | ॥ होरीमैं | सवैया ॥ होरीमैं |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३४२ | ७ | ॥ ५१ ॥ | ॥५१॥कवित्वं ॥ |
| ३४२ | ११ | ॥ ५२ ॥ | ॥५२॥सवैया ॥ |
| ३४२ | १२ | सुघराई | सुघराई |
| ३४२ | १५ | ॥ ५३ ॥ | ॥५३॥कवित्वं ॥ |
| ३४२ | १९ | ॥५४॥ | ॥५४॥सवैया ॥ |
| ३४३ | ११ | ॥५८॥ | ॥५८॥कवित्वं ॥ |
| ३४३ | १५ | ॥५९॥ | ॥५९॥सवैयो ॥ |
| ३४३ | १७ | आवैरू | आवैरु |
| ३४४ | ६ | ॥६३॥ | ॥६३॥कवित्वं ॥ |
| ३४५ | ९ | तवहैं | तवन्हैं |
| ३४५ | ११ | ॥ ६९॥ | ॥६९॥सवैया ॥ |
| ३४५ | २१ | वंघे | वंधे |
| ३४६ | १४ | हैं | न्हैं |
| ३४६ | १४ | जैसीप | जैसीरूप |
| ३४८ | ९ | उछारैह॥ | उछारैहैं ॥ |
| ३४९ | ६ | लछन | लच्छन |
| ३४९ | १८।१९ | मुसक्यातहैं | मुसकातहैं |
| ३५० | २१ | षरम | परम |
| ३५१ | १३ | हूलासतैं | हुलासतैं |
| ३५१ | १६ | हूलासतैं | हुलासतैं |
| ३५१ | २० | व्रजरैं | प्रजरैं |
| ३५३ | १६ | कछु | कछू |
| ३५४ | ७ | दोहा ॥ सोरठा ॥ | ॥ सोरठा ॥ |
| ३५५ | १५ | ऊंठ | ऊंट |
| ३५५ | १७ | तामैं | तापैं |
| ३५५ | २१ | कहत; सुनौं | कहत सुनौं |
| ३५७ | ५ | ब्रह्मादे | ब्रह्मादिक |
| ३५७ | ८ | श्रुकल | शुक्ल |
| ३५७ | ९ | ग्रंस | ग्रंथ |
| ३५८ | १५ | आंनांदित | आनंदित |
| ३५८ | २० | मनमैना | मननैना |
| ३५९ | १७ | निहारे | निहारैं |
| ३६० | ८ | राहिगईसुष | राहिगइसुष |
| ३६० | २१ | मैंटत | मेटत |
| ३६१ | २ | धांई | धाइ |
| ३६१ | १२ | डुलनिमैं ॥ | डुलनिमैं॥४॥ |
| ३६१ | १७ | कंवनीय | कवनीय |
| ३६२ | १३ | तांलनि | तालनि |
| ३६२ | १४ | किंकिनींकुणित | किंकिनीकुणित |
| ३६३ | ९ | उठैं | ऊठैं |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३३० | ८ | सषीसांवरी गोरी | साषिसांवरि गोरि |
| ३३० | ११ | ॥ २ ॥ | ॥२॥कवित्वं॥ |
| ३३१ | ३ | मुरसै | मुरस्सै |
| ३३१ | ७ | ॥६॥ | ॥६॥सवैया॥ |
| ३३१ | १२ | जामिंनी | जामिनी |
| ३३१ | १६ | ॥ १ ॥ | ॥१॥सवैया ॥ |
| ३३२ | २ | ॥ २ ॥ | ॥२॥कवित्वं॥ |
| ३३२ | ११ | आई | आइ |
| ३३२ | १४ | ॥६॥ | ॥६॥सवैया॥ |
| ३३२ | १५ | झुकी | झुकि |
| ३३२ | १७ | दोष | दीप |
| ३३२ | १८ | ॥ ७ ॥ | ॥७॥कावि· त्वं |
| ३३२ | २२ | तरवरत | तरवरतर |
| ३३३ | १८ | यौंन | पौंन |
| ३३४ | ७ | साचही | सांचहीं |
| ३३४ | १० | ॥५॥ | ॥५॥सवैया॥ |
| ३३४ | ११ | छवे | छ्वै |
| ३३४ | १४ | व्है | ह्वै |
| ३३४ | १४ | पृय | प्रिय |
| ३३४ | १७ | ॥ ७ ॥ | ॥७॥कवित्वं॥ |
| ३३५ | २ | जागी | जागि |
| ३३५ | ६ | धूमैं | घूमैं |
| ३३५ | ८ | ॥११॥ | ॥ ११ ॥ सवै या॥ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३३५ | १८ | अंषिय | अंषियां |
| ३३५ | १८ | ॥ १४ ॥ | ॥१४॥कवि- त्वं ॥ |
| ३३६ | १४ | ॥ १८ ॥ | ॥१८॥सवै- या ॥ |
| ३३७ | २ | ॥ २१ ॥ | ॥२१॥ कवि- त्वं ॥ |
| ३३८ | ५ | ॥ २७ ॥ | ॥२७॥ सवै- या ॥ |
| ३३८ | ७ | टारीटरैंनड रैंनागर | नागरटारीट- रैंनडरैं |
| ३३८ | १४ | रिझिरिझा ईहैं | रीझिरिझा- ईहैं |
| ३३९ | ३ | ॥ ३२ ॥ | ॥३२॥कवि- त्वं ॥ |
| ३३९ | १६ | (अथअष्टक) | ( अथअष्ट कसवैया ) |
| ३४० | २१ | ॥ ४३ ॥ | ॥४३॥कवि- त्वं ॥ |
| ३४१ | ३ | ॥४४॥सषी | ॥४४॥सवै- या ॥ साषि |
| ३४१ | ७ | ॥४५॥ | ॥४५॥कवि- त्वं |
| ३४१ | २० | ॥४८॥ | ॥४८॥सवै- या ॥ |
| ३४२ | १ | वाव नैन | वा वनैं न |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३९७ | १४ | चालनि | चालनि ॥ |
| ३९८ | १ | ईहि | इंहिं |
| ३९८ | ९ | तनकत | तनक |
| ३९९ | ४ | रही | राहि |
| ३९९ | १६ | दीध | दधि |
| ४०० | ८ | तऊ | तउ |
| ४०२ | ६ | थां मैं | थां मैं |
| ४०२ | १४ | तटी | ताटि |
| ४०२ | १६ | दुपटे | दुपट्टे |
| ४०२ | २० | घीर | धीर |
| ४०३ | १२ | चवईया | चवइया |
| ४०५ | ६ | वित्तन | वितन |
| ४०५ | ६ | रही ढुम | राहि द्रुम |
| ४०५ | १७ | दूरिककारि | दूरिकारि |
| ४०६ | २ | ढ्हूं | ढुंढुं |
| ४०६ | ५ | मृद्दंग | मृदंग |
| ४०६ | १४ | कीयैं | कियैं |
| ४०७ | ४ | कईक | कइक |
| ४०७ | ४ | कई | कइ |
| ४०७ | ४।५ | कईक | कइक |
| ४०७ | १९ | कुहकी | कुहाकि |
| ४०८ | १० | लगि | लगी |
| ४०८ | २२ | ताहि | ताही |
| ४०९ | १ | गागरिया | नागरिया |
| ४०९ | २२ | सुवामत्त | सुवासमत्त |
| ४१० | ३ | नागीरय | नागरिया |
| ४११ | १ | लई | लइ |
| ४११ | ३ | गऊर | गउर |
| ४१४ | ११ | कंमल | कमल |
| ४१५ | १३ | फूरवी | पूरवी |
| ४१५ | २१ | द्दिग | द्दग |
| ४१७ | १६ | कवहून | कवह्रुन |
| ४१७ | १७ | गउ | गऊ |
| ४१८ | १६ | मेठै | मेह |
| ४२० | ९ | लाल | लाल० |
| ४२१ | ११ | घूंवट | घूंघट |
| ४२१ | १८ | उराझि | उरझी |
| ४२२ | ५ | ॥ इन | ॥ दोहा ॥ इन |
| ४२२ | ६ | कह्ु | (कह्ु) |
| ४२२ | ९ | गया | (गया ) |
| ४२८ | २० | भई | भइ |
| ४२९ | २ | दाईन | दाइन |
| ४३१ | १५ | भजि | भजी |
| ४३३ | ४ | मगरही | मगरहिं |
| ४३३ | १३ | लढकीली | लडकीली |
| ४३३ | १९ | तितात | तिताल |
| ४३४ | १६ | धुं | धूं |
| ४३५ | २२ | भांवेर | भांवरे |
| ४३६ | ९ | रहासिमंग-लश | इस पदमें तुकके अंतमें (ई) है वह (इ) है। |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३६५ | ५।६ | भई | भइ |
| ३६६ | १ | लखिं | लखि |
| ३६६ | ४ | भई | भइ |
| ३६८ | ७ | रहैं | रही |
| ३६८ | १४ | दामिनी | दामिनि |
| ३६८ | १५ | कूंज | कुंज |
| ३६८ | २० | दोऊ | दोउ |
| ३६९ | १२ | विथरां हैं वौंर | विथरोहैं वार |
| ३७० | १३ | दोऊ | दोउ |
| ३७० | १६ | की | कि |
| ३७१ | ४ | छवैं | छवैं |
| ३७१ | १३ | व्रह्म | ब्रह्म |
| ३७३ | २ | अवत | आवत |
| ३७३ | ७ | थह | थाह |
| ३७४ | १ | दोऊ; दोऊ | दोउ; दोउ |
| ३७४ | १३ | छुटैं | छुटे |
| ३७४ | २१ | उरझाहिं | उरझांहिं |
| ३७५ | ८ | झूकत | झुकत |
| ३७६ | २० | पेली | पेल |
| ३७७ | १ | पाछ | पाछैं |
| ३७७ | १४ | सिंद्यु | सिंधु |
| ३८१ | १६ | घन | धन |
| ३८३ | ३ | सास्त्र | शास्त्रसु |
| ३८४ | १ | वृंदावन | वृंदावनकी |
| ३८४ | ९ | जेवि | जेवी |
| ३८३ | ११ | आसाजात्री | आसामनु-जात्री |
| ३८४ | १२ | काह्न | काह्नकौं |
| ३८३ | २० | पर | परम |
| ३८५ | २२ | रांज | राज |
| ३८६ | १३ | जंवूनींवू | जंवुफलनीवू |
| ३८६ | १७ | पोवतमाला | पोवतनितप्र-तिमाला |
| ३८६ | २० | फै रंगहो | फैटा रंगहीं |
| ३८८ | २१ | हहां | इहां |
| ३९० | १ | वह्नतव | वह्नत |
| ३९० | ४ | सरसायो | सवायो |
| ३९१ | ११।१२ | रासिक-ही रासिकही | रासिकाहि |
| ३९१ | १३ | कुज | कुंज |
| ३९१ | १४ | निसान | निस्सान |
| ३९१ | १५ | विरंद | विरद |
| ३९२ | १४ | भियारी | विहारी |
| ३९३ | ४ | मलातं | मलात |
| ३९३ | ८ | काहु पैं | काहूपैं |
| ३९५ | १ | सूरत | सुरत |
| ३९५ | १९ | सकुजीले | सकुचीले |
| ३९६ | १२ | पय | पिय |
| ३९७ | ३ | कीनौं | कीनौं ॥ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४८० | १ | प्रीतम | प्रीत |
| ४८० | १० | नैनसफस | नैनफस |
| ४८० | १९ | नैव | नव |
| ४८१ | ११ | वदास्त | वदस्त |
| ४८२ | १५ | अेसा | अैसा |
| ४८४ | ५ | हूस्न | हुस्न |
| ४८४ | ८ | तव | (तव) |
| ४८४ | १२ | जुवान | जुवां |
| ४८५ | २ | छप्पे | यह छप्पय महाराज श्री नागरीदास-जीकी प्रशं-साकी है। और इनके भतीज महा-राज श्रीवि-रदसिंहजी की बनाई है। |
| ४८७ | २१ | सकुचिले | सकुचीले |
| ४८९ | १९ | दौ | दोउ |
| ४९० | ५ | त्रुटि | त्रुटी |
| ४९० | १४ | मप | मुख |
| ४९० | १६।१७ | चक | चमक |
| ४९२ | २ | दोऊ | दोउ |
| ४९२ | ११ | छवै | छवैं |
| ४९२ | ११ | कोऊ | कोउ |
| ४९२ | १४ | दोऊ | दोउ |
| ४९३ | ११ | नवका | नाव |
| ४९४ | २१ | हियहसि | हियही स |
| ४९८ | १० | रागकछु | राग ॥ क |
| ५०० | ८ | सौंघैं | सौं घैं |
| ५०१ | ११ | परै ॥ आजु | परैंआ |
| ५०३ | ९ | चीमंकैं | चिमं |
| ५०३ | १० | मूरली | मुर |
| ५०३ | १४ | पहुंचात ॥ | प |
| ५०४ | ६ | जीं हिं | |
| ५०६ | ८ | समधानि | |
| ५०६ | १५ | मद | |
| ५०७ | २१ | गोईये | |
| ५०८ | २२ | मूके | |
| ५०९ | ४ | आसू | |
| ५१० | १ | दो | |
| | | र | |
| ५११ | ९ | ह | |
| ५११ | २२ | | |
| ५१३ | ४ | | |
| ५१३ | १७ | | |
| ५१६ | १० | | |
| ५१६ | १ | | |
| ५१७ | | | |
| ५१७ | | | |
| ५१९ | | | |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४४० | १ | चौरी | चौंरी |
| ४४० | २ | चोरी गोरी | चौंरागोरी |
| ४४३ | ११ | आनंदैं | आनंद |
| ४४३ | २१ | श्वेत | स्वेत |
| ४४६ | ४ | सोई | सोइ |
| ४४६ | ८ | छवैं | छ्वैं |
| ४४६ | १६ | गई | गइ |
| ४४७ | ११ | गारो ॥ मोहैं | गारो मोहैं |
| ४४९ | १० | वोलैंत्तत्त | ब.लैं तत्त |
| ४५० | ८ | चहूं | चहुं |
| ४५० | १७ | नंन नंद | नंदनंद |
| ४५१ | ३ | सैलहोनैं | सैनलहोनैं |
| ४५२ | १४ | जनर | नजर |
| ४५२ | २२ | घारि | धारि |
| ४५३ | ४ | नागरदे | नांगरदे |
| ४५४ | २ | आगोनैं | अगौनैं |
| ४५४ | ४ | टौनौं | टौनैं |
| ४५४ | १९ | होघोषे सौं | घोषे सौं (होघेसौं) इत्यपि |
| ४५५ | १६ | जीजैरौं | जैरो (जीरो) इत्यपि |
| ४५८ | ७ | वीतती | वीनती |
| ४५८ | ८ | मिलिये ॥ | मिलियेजाय |
| ४५८ | २० | नाची | नीची |
| ४५९ | १५ | घिरिधारि | घिरिघारि |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४५९ | २२ | वरसैं ॥ | येरी वरसैंयेरी |
| ४६० | २० | रतवत | रतिवंत |
| ४६१ | १२ | दामिनी | दामिनि |
| ४६२ | १० | अखंडि· तरवर | अखंडितत· रवर |
| ४६४ | १५ | तरैं ॥ जमुना | तरैं जमुना |
| ४६८ | १४ | हिंडोरौं ॥ | हिंडोरैं ॥ |
| ४६९ | १६ | पषग | षग |
| ४७० | १२ | सहैंदी ॥ वह | सहैं दीवह |
| ४७२ | २१ | छईया ॥ | छइया ॥ |
| ४७२ | २१।२२ | अमर ईया॥ | अमरइया ॥ |
| ४७३ | १९ | हंरि | हरि |
| ४७४ | ९ | आनंदधन | आनंदघन |
| ४७४ | १९ | मुरलीका | मुरलिका |
| ४७७ | ७ | सित्प | सित्फ |
| ४७७ | १५ | पूव | षूव |
| ४७८ | २० | दरहरतरी-क | दरदहरतरी-क |
| ४७९ | ७ | तकुल्लहफ | तकल्लुफ |
| ४७९ | २० | रण्यूं | रप्पूं |
| ४७९ | २१ | क्याहैं ॥ मुस्कल | क्याहैं मुस्कल |
| ४८० | १ | गई | गइ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४१७ | १९ | राझि | रीझि |
| ४१९ | १२ | रूचि | रुचि |
| ४१९ | २२ | धर | घर |
| ४३१ | १७ | मुलि | भूलि |
| ४४ | १० | श्रवन | श्रवन |
| ४४६ | २१ | संगउरंग | संगगउरंग |
| ४४६ | १० | कहंह्लायरी | कहुंहायरी |
| ४४६ | ५ | तितात | तिताल |
|  |  | मन | मन |
| ४४७ | १ | दत | देत |
|  |  | विधुर्नित | विघूर्नित |
| ४४९ | १० | रप | निरष |
| ४५० | ८ | ्हल | श्रैमहल |
| ४५० | १७ | ेल | अैसैल |
| ४५१ | ३ | सैादाल | नागरीदास |
| ४५२ | १४ | ज॰ | घरां |
| ४५२ | २२ | घारिरांवा | भरांभरांवा |
| ४५३ | ४ | नागरदे | सइयें |
| ४५४ | २ | आगौनैं | पावां |
| ४५४ | ४ | टौनौं | ह्लौ |
| ४५४ | १९ | होवोषे | अदभुत |
|  |  |  | याको |
|  |  |  | है |
| ४५५ | १६ | जीजैरौं | भईआनंद |
|  |  |  | सावरी |
| ४५८ | ७ | वीतती |  |
| ४५८ | ८ | मिलिये ॥ | ी ॥ |
| ४५८ | २० | नाची | ॥ |
| ४५९ | १५ | घिरिधारि | ि |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५४१ | १८ | जिहीं | जिहिं |
| ५४२ | ७ | नागरी | नागरि |
| ५४२ | १२ | घाम | धाम |
| ५४२ | १५ | या पद | पद |
| ५४२ | १६ | विपुलकृत | विपुलकित |
| ५४२ | २१ | तिहिं | तिन्हैं |
| ५४३ | १ | म्हारि | म्हारि ॥५॥ |
| ५४३ | १९ | मनसोहन | मनमोहन |
| ५४४ | ३ | ह्लूती | हुती |
| ५४४ | १७ | हुवै | ह्लै |
| ५४४ | २२ | सांझि | सांझी |
| ५४४ | २३ | च ाप | आलाप |
| ५४५ | १ | दहूंन | दुहुंन |
| ५४५ | २ | हुवै | ह्लैरही |
| ५४५ | ९ | हुवैं | ह्लै |
| ५४६ | २ | अषियानि | अंषियानि |
|  |  | माझ | मांझ |
| ५४६ | २ | अषियांही | अंषियांही |
| ५४६ | ३ | सांझ | सांझ ॥ |
| ५४६ | ४ | अषियनकी | अंषियनकी |
| ५४६ | ५ | हुवैं | ह्लै |
| ५४६ | १६ | उयरचाई | उघरचाई |
| ५४७ | १ | नैन | नैन ॥ |
| ५४७ | २ | पदकनीकी | पदकानिकी |
| ५४७ | ८ | धुकतिहि | धुकतितिंहिं |
| ५४७ | १० | रहिग | रहिगइ |
| ५४७ | १९ | कवल | कंवल |
| ५४७ | २० | ऊफनावैं | उफनावैं |
| ५४८ | ४ | दाविजात | दवीजात |